सूक्ति सागर



संकलनकर्ता
रमाशंकर गुप्त

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

सूक्ति सागर

८७

zlitt

on

taire

nymous

ly Dickenson

ी डिकिन्सन

ert

W. Beecher

रिज

dezon

kes them seem

ne

सूक्ति सागर

(राष्ट्रभाषा हिन्दी के गौरव का प्रतीक, विश्व वाङ्मय से संकलित, युग-युग के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों की अमरवाणी का अनुपम सूक्ति-कोश)

संग्रहकर्ता
रमाशंकर गुप्त
बी.ए., सी.एल.एस–सी.



उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
६, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ

ग्रन्थमाला संख्या.२६

प्रकाशक
डॉ० सुधाकर अदीब
निदेशक
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
लखनऊ

हिन्दी समिति प्रभाग की प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित।

ISBN-978-93-82175-01-8

प्रथम संस्करण	–	१९५६
द्वितीय संस्करण	–	१९६८
तृतीय संस्करण	–	१९८३
चतुर्थ संस्करण	–	२००४
पंचम संस्करण	–	२००८
षष्टम् संस्करण	–	२०१२

प्रतियाँ – ५००

मूल्य : ₹ २३०=००

मुद्रक :
प्रकाश पैकेजर्स,
गोलागंज,
लखनऊ

प्रकाशकीय

जीवन संघर्षो से न घबराने की मनुष्य मात्र की साहसपूर्ण प्रवृत्ति के पीछे प्रमुख प्रेरक तत्व होता है ज्ञान। प्रेम, दया, धैर्य और अहिंसा जैसे मानवीय गुण हों या "अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलने" की कामना जैसे लक्ष्य प्रायः ज्ञान ही मनुष्य को हमेशा से आवश्यक समझ और विवेक देता रहा है। ज्ञान सभी मनुष्यों तक अनिवार्य रूप से पहुंचे, विभिन्न कारणों से विकास की लम्बी परम्परा में यह सम्भव नहीं हो सका। कुछ महान व्यक्तित्व ही ज्ञान के उच्च शिखरों को छू सके और सीमित वर्ग ही उनकी रचनाओं और विचारों का रसास्वादन कर सका। व्यावहारिक अर्थो में भी यह सम्भव नहीं था कि विश्व की विभिन्न भाषाओं में समय-समय पर संकलित असीमित ज्ञान भण्डार का पूरी तरह रसास्वादन सम्पूर्ण समाज द्वारा एक साथ सम्भव हो। ऐसे में उसकी सूक्तियों ने, जिन्हें रचना-विशेष के प्रमुख और उल्लेखनीय संक्षिप्त विचार अथवा आर्ष विचार भी कहा जा सकता है, अप्रतिम भूमिका निभाई।

भारतीय साहित्य में ऐसी हृदयग्राही, प्रेरक, उदात्त और कालजयी सूक्तियों का समुचित भण्डार है। संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश व अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओं की साहित्यिक रचनाओं में इनका सौन्दर्य देखते ही बनता है। इनकी सूक्तियों का संग्रह भी इन भाषाओं में कम या अधिक मिलता है, पर दुर्भाग्य से हिन्दी में सूक्तियों व कहावतों आदि का समुचित भण्डार होने के बावजूद उनके संग्रह नगण्य प्रायः रहे हैं। भक्तिकाल में तो कबीर, नानक, तुलसी, रैदास, दादू और रहीम आदि के रूप में यह सूक्ति परम्परा चरम पर थी, पर इनका कोई भी चयनित संग्रह प्रकाश में नहीं आया। लगभग ५० वर्षों पूर्व यह जड़ता 'सूक्ति सागर' के रूप में तोड़ी मनीषी श्री रामशंकर गुप्त ने, जिसका यह छठा संस्करण आपके समक्ष है।

इसके रचना काल के समय कई दशक तक उन्होंने सूक्ति-संकलन के लिए दिन-रात कार्य किया था, हिन्दी में सूक्ति संग्रह के लिए सभी प्रमुख भाषाओं के उपलब्ध साहित्य और अन्य ज्ञान भण्डार को आधार बनाया था, उन्हें वैज्ञानिक आधार पर व्यवस्थित रूप दिया और इस तरह यह 'सूक्ति सागर' मूर्त रूप ले सका। एक ऐसा अद्भुत सूक्ति संग्रह जो वास्तव में सूक्तियों का सागर है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के गौरव ग्रंथों में अत्यंत उल्लेखनीय –– सूक्ति सागर –– के इस संस्करण के प्रकाशन पर हमें गर्व है और इस पुनीत अवसर पर एक बार फिर इसके संकलनकर्ता स्वर्गीय श्री रमाशंकर गुप्त की पुण्यस्मृति को नमन करते हैं। यह संस्करण हम हिन्दी समिति प्रभाग की प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। लगभग ६०० पृष्ठों के इस अनुपम ग्रन्थ में विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित सूक्तियों की खोज में कठिनाई से बचने के लिए प्रारम्भ में ही विषय सूची दी गयी है। इसी तरह, विश्व के जिन प्रमुख रचनाकारों की सूक्तियों का इसमें समावेश किया गया है, उनका भी अन्त में संक्षिप्त परिचय इसे अतिरिक्त महत्ता प्रदान करता है।

आशा है, इस व्यापक उपयोगिता के चलते सूक्ति सागर का यह छठा संस्करण लोकप्रियता की न केवल नई उंचाइयों तक पहुंचेगा, अपितु नये सूक्ति संग्रहों के संकलन के लिए भी विज्ञ जनों को प्रेरित करेगा।

डॉ० सुधाकर अदीब

निदेशक

पुस्तक परिचय

सूक्तियाँ साहित्य-गगन में देदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र के समान हैं। इनकी आभा देश और काल की संकुचित सीमा पार करके सर्वदा एक समान और एक रस रहने वाली है। मानव जीवन के विविध क्षेत्रों में सहस्रों वर्षों की अनुभूतियों ने इनको अमरता प्रदान की है और करोड़ों कण्ठों से निकलने के कारण इनमें माधुर्य और कोमलता का यथेष्ट परिपाक हुआ है। ये सूक्तियाँ यदि न हों तो साहित्य में रस की कोई स्थिति ही न रहे और कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध और वक्तृता की कला विफल हो जाय। दस-बीस वाक्यों को ही नहीं, पूरे पृष्ठ और संदर्भ को भी सजीव बनाने की इनमें अद्‌भुत क्षमता होती है और वक्तृत्व कला को चमकाने में ये तो अपनी अद्वितीय स्थिति रखती हैं। बहुधा लेखकों, कवियों एवं साहित्यकारों के समान ही इनकी आवश्यकता सामाजिक कार्य करने वालों को एवं राजनीतिज्ञों को भी हुआ करती है तथा महापुरुषों, उपदेशकों एवं कथावाचकों के समान ही गृहस्थी के विभिन्न झंझट में रहने वाले लोगों को भी इसकी आवश्यकता पड़ती है। मानव जीवन का ऐसा कोई कोना बचा हुआ नहीं है, जिस पर अमर सूक्तियों के कण अमृत के समान शीलता एवं प्रेरणा प्रदान करने की शक्ति न रखते हों और संसार की ऐसी कोई जटिल समस्या नहीं है, जिसको बात-की-बात में सुलझाने की सूझ इनसे न मिलती हो।

अनेक प्राचीन साहित्यकारों के सम्बन्ध में ऐसी किंवदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं कि उनकी किसी एक सूक्ति से बड़े-बड़े अनर्थ एवं दुर्घटनाएँ रुक गयी हैं और निविड़ अन्धकार में भी पथ का प्रदर्शन हुआ है। यही नहीं, केवल एक सूक्ति को ही लाखों सुवर्ण मुद्राओं में क्रय करने की मनोहर किंवदन्तियाँ भी पायी जाती हैं और उनके द्वारा क्रय करने वाले का सर्वविधि कल्याण भी सुना जाता है। तात्पर्य यह है कि ये सूक्तियाँ अमूल्य रत्न हैं और उनकी आवश्यकता प्रत्येक सहृदय को सर्वदा पड़ा करती है।

सूक्तियों में शिक्षा एवं सदुपदेश की जितनी अमोघ शक्ति रहती है उतनी ही आत्ममंथन एवं अनुभूतियों को झंकृत करने की भी इनमें क्षमता होती है। सद्‌ग्रंथों के सैकड़ों पृष्ठ अथवा किसी सदुपदेशक के घंटे दो घंटे के मनोहर व्याख्यान भी उतना प्रभाव नहीं डालते जितना गम्भीर प्रभाव किसी एक सूक्ति का हमारे हृदय पर पड़ता है। इसका कारण यह है कि सूक्तियों का प्रभाव सीधे हृदय पर पड़ता है। कर्णकुहरों में पड़ते ही ये विद्युत तरंगों की भाँति समूचे शरीर की

अन्तरात्मा को विमुग्ध कर लेती हैं। मानस की गहराई में व्याप्त आनन्द की लहरों को उद्वेलित बना देती हैं और क्रियत्क्षणों के लिए ऐसा ज्ञात होने लगता है कि हृदय को ब्रह्मानन्द का साक्षात्कार हो रहा है और अकस्मात् बहुत दिनों तक सँजोकर रखने योग्य कोई बहुमूल्य मणि मिल गयी है। ऐसी अद्‌भुत एवं विचित्र शक्ति से भरी हुई इन सूक्तियों पर आदिम काल से सहृदयों की लोलुप दृष्टि रही है और अधिक से अधिक इन बहुमूल्य रत्नों की माला से अपने कण्ठ को अलंकृत करने की इच्छा भी सदा से पायी जाती है।

साहित्य का आनन्द संसार में सर्वोपरि माना जाता है। उसकी संज्ञा ब्रह्मानन्द सहोदर ही हैं किन्तु सत्य तो यह है कि यदि ये सूक्तियाँ न हों तो साहित्य के उस अमन्द आनन्द को आत्मसात् करना सुगम नहीं होता। बहुत बार तो ऐसा भी होता है कि कठिन संदर्भों एवं जटिल शब्द-समूहों को भी ये सूक्तियाँ अत्यन्त प्रसाद गुणयुक्त कर देती हैं और अपनी मोहिनी प्रभा से अन्धकाराच्छन्न वातावरण को प्रभाषित कर देती हैं। एक ओर इनमें गम्भीर घाव करने की यदि अटूट सामर्थ्य रहती है तो दूसरी ओर बज्र के समान क्रूर-कठोर एवं मरुस्थल के समान नीरस हृदय को भी सरस, स्निग्ध और रसाप्लुत करने की इनमें अपार क्षमता रहती है। इनमें वे पोषक तत्त्व रहते हैं, जो निर्बलों में भी अपार बल भर देते हैं और निराशा से थके हुए चरणों में पवन की गति डाल देते हैं। नीरस एवं बकवादी भी सूक्तियों की चमक से चमत्कृत हो उठता है और गर्वीले से गर्वीले स्वभाव वाला भी इनकी अमृतस्यन्दिनी धारा में नहाकर अपने ताप-संताप को दूर कर देता है। दु:ख एवं वेदना के असह्य भारों को क्षण भर में ही दूर कर देने की तो इनमें वह करामात है जिसका अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकता है। तात्पर्य यह है कि विधाता की इस मानव सृष्टि में ये सूक्तियाँ कल्पतरु के समान हैं। इनकी सुविस्तृत सघन छाया में जीवन पथ की थकान को ही दूर करने की शक्ति नहीं है, प्रत्युत भविष्य की दुर्गम यात्रा को सुखपूर्वक समाप्त करने का इनमें अक्षय तथा दैवी सम्बल भी रहता है। किंबहुना मानव कर्त्तव्यों की ऐसी कोई अज्ञात दिशा अथवा अँधेरी गली नहीं है जिनमें इन सूक्तियों की किरणों का शुभ्र प्रकाश न पड़ता हो। सुख-दुख, सम्पत्ति-विपत्ति, अनुराग-विराग, सज्जन-दुर्जन, योग-भोग एवं प्रशंसा-निन्दा से भरे इस द्वन्द्वात्मक जगत् में इन सूक्तियों की गति सर्वत्र है। ब्रह्म की भाँति ये सर्वव्यापी बन गयी हैं और इनके कारण अनादि काल से मानव जीवन को सब प्रकार से सुख-सन्तोष और सम्बल मिलता आया है।

किन्तु इन सूक्तियों का आनन्द उठाने की पात्रता भी सहृदयों में ही रहती है। संस्कृत साहित्य में इनके अपूर्व संग्रह पाये जाते हैं और सत्य तो यह है कि उनकी तुलना में विश्व का सुविशाल वाङ्मय अब भी बहुत कुछ रिक्त ही मिलेगा। सूक्तियों एवं सुभाषितों के जैसे विशाल भण्डार संस्कृत साहित्य में पाये जाते हैं वैसे अन्यत्र दुर्लभ हैं। इधर हिन्दी में भी इस प्रकार के दो-चार प्रकाशन देखने में आये हैं, किन्तु उन्हें उतना महत्त्व नहीं प्राप्त हुआ। उसका मुख्य

कारण वही रहा है कि उनके संग्रहकारों ने पाश्चात्य विदेशी साहित्य एवं हिन्दी की पुस्तकों से ही उनका संग्रह किया है। संस्कृत के रससिद्ध कवीश्वरों की अमरवाणी को देखने का एवं उनसे लाभ उठाने का कष्ट उन्होंने नहीं उठाया है। यदि किसी ने किया भी है तो वह बहुत ही अल्प मात्रा में है।

गुप्त जी के इस 'सूक्तिसागर' का हमने साद्यन्त अवलोकन किया है। मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि यह हिन्दी में अपने ढंग की अद्वितीय पुस्तक है। इसमें न केवल संस्कृत, फारसी, उर्दू, हिन्दी, बाँग्ला, गुजराती, मराठी आदि भारतीय भाषाओं के विद्वानों एवं लेखकों की सूक्तियाँ ही संग्रहीत हैं वरन् इसमें विदेशी विद्वानों, लेखकों, महापुरुषों एवं राजनीतिज्ञों की भी सूक्तियाँ हैं। देववाणी संस्कृत में सूक्तियों का अक्षय भण्डार है, गुप्त जी ने उनमें से चुनकर प्राय: अति सरस, सरल तथा गेय पदावली की सूक्तियाँ ली हैं, उनका मूल भी जहाँ तक सम्भव था, उन्होंने दे दिया है। इसी प्रकार अँग्रेजी सूक्तियों का भी मूल पाठ देने की उन्होंने चेष्ठा की है। उनके इस महान् परिश्रम का सदुपयोग छात्र, वक्ता, विद्वान एवं लेखक – सभी कर सकते हैं।

मैं यह तो नहीं कह सकता कि जिन-जिन विषयों पर सूक्तियों का संग्रह गुप्त जी ने किया है, उन पर ऐसी सूक्तियों का मिलना कठिन है, जो इसमें नहीं संग्रहीत की गयी हैं, किन्तु मैं यह कह सकता हूँ कि इतने विभिन्न विषयों पर सूक्तियों के संग्रह का जो श्रमसाध्य कार्य गुप्त जी ने उठाया था-उसका दायित्व उन्होंने बड़े मनोयोग, निष्ठा और तत्परता से पूरा किया है। यह पुस्तक उनके प्राय: दस वर्षों के परिश्रम का फल है। मधु के संचय की भाँति उन्होंने न जाने कितने ग्रंथों एवं पत्र-पत्रिकाओं को छाना है। आधुनिक लेखकों, कवियों एवं कथाकारों की कृतियों का भी उन्होंने भलीभाँति परिशीलन किया है। हिन्दी में एकाध सूक्तियों की पुस्तकें अभी कुछ दिनों पूर्व प्रकाशित हुई हैं, किन्तु उनमें आधुनिक लेखकों एवं महापुरुषों के विचारों का संग्रह प्राय: नहीं के बराबर है। इस दृष्टि से गुप्त जी का यह संग्रह अनुपम है। जहाँ तक हो सका है, उन्होंने अगाध परिश्रम और प्रतिभा के इस प्रासाद को सर्वांग सुन्दर बनाने की चेष्टा की है। यद्यपि कुछ ऐसे शब्द आपको मिल जाएँगे, जिनके पर्यायवाची प्रत्येक शब्द पर सूक्तियों का संकलन इस पुस्तक में अलग-अलग किया गया है, किन्तु ऐसा करने का कारण यह था कि गुप्त जी ने मूल शब्द को ही ध्यान में रखा है। उदाहरण के लिए रमणीयता, सुन्दरता, सौन्दर्य आदि शब्दों की सूक्तियाँ इसलिए पृथक्-पृथक् उपनिबद्ध हैं कि उनके नीचे दी गयी सूक्तियों में उन्हीं-उन्हीं शब्दों का प्रयोग हुआ है।

एक विशेषता इसकी यह भी है कि इसमें विषयों की अनुक्रमणिका के साथ-साथ लेखकों की सूची भी दे दी गयी है और उनकी सूक्तियों के संदर्भ भी बता दिये गये हैं। इससे

पाठकों एवं जिज्ञासुओं को विशेष सुविधा मिलेगी – ऐसी आशा है।

हमें परम प्रसन्नता है कि श्री रमाशंकर गुप्त जी ने अपने इस संग्रह को सब प्रकार से उपादेय तथा अपूर्व बनाया है। श्री गुप्त जी बड़ी लगन के व्यक्ति हैं। ज्ञान के प्रति उनमें अविचल निष्ठा है। अपने इस दीर्घ प्रयत्न में उन्होंने जो धैर्य और सुरुचि दिखायी है वह सब प्रकार से प्रशंसा के योग्य है। मुझे आशा है कि हिन्दी-जगत् उनकी इस उज्ज्वल निधि से विशेष लाभ उठायेगा। हम उनकी इस परिश्रम एवं खोजपूर्ण रचना का हृदय से स्वागत करते हैं।

२४-७-५६

– रामप्रताप त्रिपाठी, शास्त्री

प्रथम संस्करण का आत्म-निवेदन

सर्वप्रथम अपने आराध्य देव भगवान श्रीकृष्ण को, जो नित्य सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, महान मंगलमय, महान मधुमय, महान ममतामय एवं महान महिमामय हैं और जिनकी असीम कृपा और निरन्तर प्रेरणा और संकेत से इस सूक्तिसागर ग्रंथ का निर्माण हुआ, मैं बारम्बार नमन करता हूँ।

मानव जीवन अथाह सागर की भाँति रहस्यमय है और सदा से ही उसकी उलझनों को सुलझाना सुगम नहीं रहा है। समय-समय पर विश्व के महान् विद्वानों, सन्तों, महापुरुषों तथा जन-नायकों ने जीवन-सागर की अतल गहराई में पैठ कर और उसका मंथन कर जिन रत्नों का संचयन किया है, वे अमूल्य हैं और उनके द्वारा मानव जीवन का उचित पथ-प्रदर्शन होता आया है। जीवन-पारखी उन्हीं महापुरुषों के अनुभवों का सारांश हमको उनकी साहित्यिक रचनाओं एवं सूक्तियों से प्राप्त होता है जिन्हें वे इस नश्वर जगत् में अपनी अमरता के प्रतीक के रूप में छोड़ जाते हैं। महापुरुषों के इन्हीं विचारों एवं सूक्तियों का सहारा लेकर हम मानव-जीवन की गूढ़ समस्याओं को पूर्णत: नहीं तो अंशत: हल करने का प्रयत्न कर सकते हैं।

इन सूक्तियों में संसार के अनुभव हैं, जीवन के बहुमूल्य सिद्धान्त हैं। इनमें शाश्वतिक सत्य, उद्‌बुद्ध चिंतन और गम्भीर अनुशीलन की ज्योति अन्तर्निहित रहती है। इनमें युगों-युगों की मानव चेतना तथा अनुभूतियाँ ही नहीं हैं, तर्क हैं, युक्तियाँ हैं, निर्देशन हैं तथा इन सबसे बढ़कर अटूट विश्वास और गहरी निष्ठा है, जिससे वे हमारा पथ-प्रदर्शन करती हैं। इन सूक्तियों का हमारे नित्य प्रति की जीवनचर्या से लगाव रहता है और इनको हम अपने ही जीवन की निधि मान लेते हैं। अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने का सफल सुझाव इन सूक्तियों द्वारा हम सदैव प्राप्त कर सकते हैं और हमारे लिए वे सभी स्थितियों में माननीय एवं आदरणीय हैं। ये सूक्तियाँ यह भी सिद्ध करती हैं कि मानव-हृदय सभी देशों में एवं सभी युगों में एक-सा रहा है और समान अनुभव मनुष्यों में समान विचार प्रसूत करते हैं।

भारत में जैसे वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराणों तथा धर्मशास्त्र का, संस्कृत के कालिदास, माघ, भारवि आदि अमर कवियों का तथा कबीर, तुलसी, गांधी, रवीन्द्र और प्रेमचन्द की सूक्तियों एवं विचारों का बड़ा आदर है उसी प्रकार यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू के, चीन में कन्फ्यूशस के, जर्मनी में शोपेनहावर और गेटे के, रूस में टालस्टाय तथा लेनिन के, इंग्लैण्ड में शेक्सपियर बेकन और मिल्टन के और अमेरिका में एमर्सन तथा लिंकन के विचार बड़े प्रसिद्ध हैं।

विद्यार्थी जीवन से ही सूक्तियों के पीछे मैं दीवाना रहा हूँ एवं अच्छी पुस्तकों का

अध्ययन मेरा प्रिय व्यसन रहा है। मेरी आदत रही है कि जहाँ कहीं भी उनमें कोई सुन्दर सूक्ति मिली उसको अपनी नोटबुक में लिख लिया। धीरे-धीरे ऐसी सूक्तियों की संख्या में वृद्धि होती गयी और अब तक के मेरे परिश्रम का परिणाम सूक्तिसागर के रूप में आपके सामने है।

अंग्रेजी में इस प्रकार के एक से एक अच्छे ग्रंथ एवं विचार-कोश हैं, परन्तु उनके सम्पादक सम्भवत: भारतीय विद्वानों के विचारों से अनभिज्ञ होने के कारण उनकी सूक्तियों को अपने संग्रहों में स्थान न दे सके। उनको कदाचित् यह ज्ञान ही नहीं कि भारत आदि काल से विश्व का आध्यात्मिक गुरु रहा है और अपनी गिरी से गिरी दशा में भी उसने सारे विश्व को आध्यात्म, दर्शन एवं सात्त्विक जीवन की शिक्षा दी है और उसके ग्रन्थों में इतने ऊँचे विचार हैं जहाँ पहुँचकर पाश्चात्य प्रतिभा, फ्रेंच दार्शनिक विक्टर कजिन्स के शब्दों में, 'भारत के तत्त्व-ज्ञान के आगे घुटने टेक देती है।'

संस्कृत साहित्य तो सूक्तियों का अक्षय भंडार है। इसमें उत्तम सूक्ति-कोश भी हैं, किन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस प्रकार के किसी अच्छे सूक्ति-कोश का अभाव देखकर मुझे खेद हुआ। मैंने अपने पास उपलब्ध सामग्री को ही संकलित करने का निश्चय किया। सूक्तिसागर उसी निश्चय का फल है। मैं चाहता तो पाश्चात्य संग्रहकर्त्ताओं की भाँति सूक्तिसागर में केवल भारतीय विद्वानों के ही विचार संग्रह करता, किन्तु अनुभव के क्षेत्र में काले-गोरे का यह भेद-भाव मुझे अच्छा नहीं लगा, क्योंकि महान् विचार सार्वभौम तथा शाश्वत होते हैं और वे भौगोलिक अथवा जाति-पाँति की सीमाओं में बाँधे नहीं जा सकते।

अस्तु, यह सूक्तिसागर भिन्न-भिन्न देशों के विद्वानों के विचारों एवं सूक्तियों का संग्रह है। इसमें जहाँ एक ओर वाल्मीकि, वेदव्यास, गौतम बुद्ध, कालिदास, शंकराचार्य, भर्तृहरि, चाणक्य, तुलसी, कबीर, रहीम, रामकृष्ण परमहंस, रामतीर्थ, विवेकानन्द, तिलक, गांधी, रवीन्द्र और प्रेमचन्द के चुने हुए विचार हैं वहाँ दूसरी ओर कन्फ्यूशस, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, वर्जिल, गेटे, बेकन, बर्क, शेक्सपियर, टालस्टाय, लेनिन, एमर्सन, लिंकन आदि विदेशी विद्वानों की सर्वमान्य सूक्तियाँ भी दी गयी हैं। संकलित सूक्तियों में प्राच्य बुद्धिमत्ता तथा अध्यात्मवाद के चमत्कार के साथ-साथ पाठकों को पाश्चात्य व्यावहारिकता एवं भौतिकवाद की आभा भी दृष्टिगोचर होगी।

साहित्य-मर्मज्ञ पद्मभूषण डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डी०लिट०, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने सूक्तिसागर के पूर्व संस्करण की भूमिका लिखकर इसे गौरवान्वित किया।

हिन्दी के उन अन्य विद्वानों - डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० दीनदयाल गुप्त, पं० रामनरेश त्रिपाठी और श्री रामचन्द्र वर्मा का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर सूक्तिसागर की पाण्डुलिपि देखने और अपनी सम्मति लिखने की कृपा की है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सहायक मंत्री, संस्कृत और हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान, सुविख्यात लेखक एवं सूक्ति-पारखी श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री का मैं हृदय से आभारी हूँ

प्रथम संस्करण का आत्म-निवेदन

सर्वप्रथम अपने आराध्य देव भगवान श्रीकृष्ण को, जो नित्य सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, महान मंगलमय, महान मधुमय, महान ममतामय एवं महान महिमामय हैं और जिनकी असीम कृपा और निरन्तर प्रेरणा और संकेत से इस सूक्तिसागर ग्रंथ का निर्माण हुआ, मैं बारम्बार नमन करता हूँ।

मानव जीवन अथाह सागर की भाँति रहस्यमय है और सदा से ही उसकी उलझनों को सुलझाना सुगम नहीं रहा है। समय-समय पर विश्व के महान् विद्वानों, सन्तों, महापुरुषों तथा जन-नायकों ने जीवन-सागर की अतल गहराई में पैठ कर और उसका मंथन कर जिन रत्नों का संचयन किया है, वे अमूल्य हैं और उनके द्वारा मानव जीवन का उचित पथ-प्रदर्शन होता आया है। जीवन-पारखी उन्हीं महापुरुषों के अनुभवों का सारांश हमको उनकी साहित्यिक रचनाओं एवं सूक्तियों से प्राप्त होता है जिन्हें वे इस नश्वर जगत् में अपनी अमरता के प्रतीक के रूप में छोड़ जाते हैं। महापुरुषों के इन्हीं विचारों एवं सूक्तियों का सहारा लेकर हम मानव-जीवन की गूढ़ समस्याओं को पूर्णत: नहीं तो अंशत: हल करने का प्रयत्न कर सकते हैं।

इन सूक्तियों में संसार के अनुभव हैं, जीवन के बहुमूल्य सिद्धान्त हैं। इनमें शाश्वतिक सत्य, उद्बुद्ध चिंतन और गम्भीर अनुशीलन की ज्योति अन्तर्निहित रहती है। इनमें युगों-युगों की मानव चेतना तथा अनुभूतियाँ ही नहीं हैं, तर्क हैं, युक्तियाँ हैं, निर्देशन हैं तथा इन सबसे बढ़कर अटूट विश्वास और गहरी निष्ठा है, जिससे वे हमारा पथ-प्रदर्शन करती हैं। इन सूक्तियों का हमारे नित्य प्रति की जीवनचर्या से लगाव रहता है और इनको हम अपने ही जीवन की निधि मान लेते हैं। अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने का सफल सुझाव इन सूक्तियों द्वारा हम सदैव प्राप्त कर सकते हैं और हमारे लिए वे सभी स्थितियों में माननीय एवं आदरणीय हैं। ये सूक्तियाँ यह भी सिद्ध करती हैं कि मानव-हृदय सभी देशों में एवं सभी युगों में एक-सा रहा है और समान अनुभव मनुष्यों में समान विचार प्रसूत करते हैं।

भारत में जैसे वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराणों तथा धर्मशास्त्र का, संस्कृत के कालिदास, माघ, भारवि आदि अमर कवियों का तथा कबीर, तुलसी, गांधी, रवीन्द्र और प्रेमचन्द की सूक्तियों एवं विचारों का बड़ा आदर है उसी प्रकार यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू के, चीन में कन्फ्यूशस के, जर्मनी में शोपेनहावर और गेटे के, रूस में टालस्टाय तथा लेनिन के, इंग्लैण्ड में शेक्सपियर बेकन और मिल्टन के और अमेरिका में एमर्सन तथा लिंकन के विचार बड़े प्रसिद्ध हैं।

विद्यार्थी जीवन से ही सूक्तियों के पीछे मैं दीवाना रहा हूँ एवं अच्छी पुस्तकों का

अध्ययन मेरा प्रिय व्यसन रहा है। मेरी आदत रही है कि जहाँ कहीं भी उनमें कोई सुन्दर सूक्ति मिली उसको अपनी नोटबुक में लिख लिया। धीरे-धीरे ऐसी सूक्तियों की संख्या में वृद्धि होती गयी और अब तक के मेरे परिश्रम का परिणाम सूक्तिसागर के रूप में आपके सामने है।

अंग्रेजी में इस प्रकार के एक से एक अच्छे ग्रंथ एवं विचार-कोश हैं, परन्तु उनके सम्पादक सम्भवतः भारतीय विद्वानों के विचारों से अनभिज्ञ होने के कारण उनकी सूक्तियों को अपने संग्रहों में स्थान न दे सके। उनको कदाचित् यह ज्ञान ही नहीं कि भारत आदि काल से विश्व का आध्यात्मिक गुरु रहा है और अपनी गिरी से गिरी दशा में भी उसने सारे विश्व को आध्यात्म, दर्शन एवं सात्त्विक जीवन की शिक्षा दी है और उसके ग्रन्थों में इतने ऊँचे विचार हैं जहाँ पहुँचकर पाश्चात्य प्रतिभा, फ्रेंच दार्शनिक विक्टर कजिन्स के शब्दों में, 'भारत के तत्त्व-ज्ञान के आगे घुटने टेक देती है।'

संस्कृत साहित्य तो सूक्तियों का अक्षय भंडार है। इसमें उत्तम सूक्ति-कोश भी हैं, किन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस प्रकार के किसी अच्छे सूक्ति-कोश का अभाव देखकर मुझे खेद हुआ। मैंने अपने पास उपलब्ध सामग्री को ही संकलित करने का निश्चय किया। सूक्तिसागर उसी निश्चय का फल है। मैं चाहता तो पाश्चात्य संग्रहकर्त्ताओं की भाँति सूक्तिसागर में केवल भारतीय विद्वानों के ही विचार संग्रह करता, किन्तु अनुभव के क्षेत्र में काले-गोरे का यह भेद-भाव मुझे अच्छा नहीं लगा, क्योंकि महान् विचार सार्वभौम तथा शाश्वत होते हैं और वे भौगोलिक अथवा जाति-पाँति की सीमाओं में बाँधे नहीं जा सकते।

अस्तु, यह सूक्तिसागर भिन्न-भिन्न देशों के विद्वानों के विचारों एवं सूक्तियों का संग्रह है। इसमें जहाँ एक ओर वाल्मीकि, वेदव्यास, गौतम बुद्ध, कालिदास, शंकराचार्य, भर्तृहरि, चाणक्य, तुलसी, कबीर, रहीम, रामकृष्ण परमहंस, रामतीर्थ, विवेकानन्द, तिलक, गांधी, रवीन्द्र और प्रेमचन्द के चुने हुए विचार हैं वहाँ दूसरी ओर कन्फ्यूशस, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, वर्जिल, गेटे, बेकन, बर्क, शेक्सपियर, टालस्टाय, लेनिन, एमर्सन, लिंकन आदि विदेशी विद्वानों की सर्वमान्य सूक्तियाँ भी दी गयी हैं। संकलित सूक्तियों में प्राच्य बुद्धिमत्ता तथा अध्यात्मवाद के चमत्कार के साथ-साथ पाठकों को पाश्चात्य व्यावहारिकता एवं भौतिकवाद की आभा भी दृष्टिगोचर होगी।

साहित्य-मर्मज्ञ पद्मभूषण डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डी०लिट०, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने सूक्तिसागर के पूर्व संस्करण की भूमिका लिखकर इसे गौरवान्वित किया।

हिन्दी के उन अन्य विद्वानों - डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० दीनदयाल गुप्त, पं० रामनरेश त्रिपाठी और श्री रामचन्द्र वर्मा का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर सूक्तिसागर की पाण्डुलिपि देखने और अपनी सम्मति लिखने की कृपा की है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सहायक मंत्री, संस्कृत और हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान, सुविख्यात लेखक एवं सूक्ति-पारखी श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री का मैं हृदय से आभारी हूँ

जिन्होंने अपने व्यस्त दैनिक जीवन से पर्याप्त समय निकाल कर सूक्तिसागर के प्रत्येक पृष्ठ को पढ़ा और अनेकानेक सुझाव दिये तथा 'परिचय' लिखने की कृपा की। उनकी सहृदयता और उदारता को मैं कभी भूल नहीं सकता।

इसी सिलसिले में मैं अपने अनुज डॉ० केदारनाथ, एम०डी० (रीडर इन मेडिसिन, मेडिकल कालेज, लखनऊ) के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ तथा अपनी सहधर्मिणी के छोटे भाई श्री वीरेन्द्र कुमार, एम०एस-सी० को भी आशीर्वाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने संग्रह तैयार करने में पूर्ण सहयोग दिया है।

अंत में मैं उन समस्त संतों, महात्माओं, ऋषियों एवं साहित्यकारों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनकी अमूल्य रचनाओं से मैंने सूक्तियाँ संग्रह कर सूक्तिसागर को अलंकृत और सुसज्जित किया है।

एक प्रार्थना अपने विज्ञ पाठकों से है। पुस्तक में जो अपूर्णता और त्रुटि उन्हें खटके उसे वे संग्रहकर्त्ता को सूचित करने का कष्ट करें जिससे अगले संस्करण में उनसे लाभ उठाया जा सके।

रमाशंकर गुप्त
(संग्रहकर्ता)

बी/३, राधा बिल्डिंग
इलाहाबाद बैंक के सामने
चौक, लखनऊ

विषय सूची

अंतःकरण

सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तः ।
सन्देह की स्थिति में सज्जनों के अंतःकरण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है ।

—कालिदास (अभिज्ञान शाकुन्तलम्)

The foundation of true joy is in the conscience. **—Seneca**

सच्चे आनन्द का आधार हमारे अंतःकरण में ही है । **—सेनेका**

जिस प्रकार दीपक दूसरी वस्तुओं को प्रकाशित करता है और अपने स्वरूप को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार अंतःकरण दूसरी वस्तुओं का भी प्रत्यक्ष करता है और अपना भी प्रत्यक्ष करता है । **—डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)**

Man's conscience is the oracle of God. **—Byron**

मानव का अंतःकरण ईश्वर की वाणी है । **—बायरन**

In matters of conscience, the law of majority has no place.

—Mahatma Gandhi

अंतःकरण के मामले में बहुमत के नियम का कोई स्थान नहीं है ।

—महात्मा गांधी

The torture of a bad conscience is the hell of a living soul.

—Calvin

पापी अंतःकरण की यंत्रणा जीवित मनुष्य के लिए नरक है । **—कालविन**

निर्मल अंतःकरण को जिस समय जो प्रतीत हो वही सत्य है। उस पर दृढ़ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है । **—महात्मा गांधी**

दयाशील अंतःकरण प्रत्यक्ष स्वर्ग है । **—स्वामी विवेकानन्द**

Conscience is the voice of the soul as the passions are the voice of the body. No wonder they often contradict each other.

—Rousseau (Emile)

अंतःकरण आत्मा की वाणी है, जैसे कि वासनाएं शरीर की । इसमें आश्चर्य ही क्या यदि वे एक दूसरे का खंडन करती हैं । **—रूसो**

पवित्र अंतःकरण ही वह दर्पण है जिसमें आत्मा का दर्शन, प्रकृति का प्रदर्शन और ब्रह्म का सदर्शन होता है। **—स्वामी विद्यानन्द विदेह**

शुद्ध अंतःकरण में बुद्धि आकाशवत निर्मल और स्वच्छ रहती है, मन गंगा जैसा पवित्र रहता है, चित्त ऐसा स्थिर रहता है जैसे बिना वायु के अविचल दीपक की ज्योति और अहंकार भगवान में मिलने के लिये ऐसा बहता है जैसे समुद्र में मिलने के लिये नदियाँ। **—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

ज्ञाताज्ञात पाप ही अंतःकरण की मलिनता है। जब तक अंतःकरण मलरहित, पापरहित नहीं होगा, तब तक वास्तविक दृष्टि—दिव्य दृष्टि—का उदय नहीं होगा। **—स्वामी शंकराचार्य**

Conscience, though ever so small a worm while we live, grows suddenly into a serpent on our death-bed. **--Jerrold**

अंतःकरण, यद्यपि जब तक हम जीवित रहते हैं, एक तुच्छ कीड़े के रूप में रहता है, तथापि वही मृत्यु-शय्या पर अकस्मात् सर्प का रूप धारण कर लेता है। **—जेरोल्ड**

There is no witness so terrible—no accuser so powerful as conscience which dwells with in us. **--Sophocles**

कोई साक्षी इतना विकट और कोई अभियोक्ता इतना शक्तिशाली नहीं है, जितना कि अपना ही अंतःकरण। **—सोफोक्लीज**

वही मनुष्य ईश्वर के दर्शन कर सकता है, जिसका अंतःकरण निर्मल और पवित्र है। **—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)**

अंतःकरण जब प्रेमानुभूति से आप्लुत हो जाता है, तभी जीवन की गति सरल हो जाती है। **—लावण्य प्रभा राय**

Cowardice asks, Is it safe ? Expediency asks, Is it politic ? Vanity asks, Is it popular ? but Conscience asks, Is it right ?

--Punshon

कायरता पूछती है—क्या यह भयरहित है ? औचित्य पूछता है—क्या यह व्यावहारिक है ? अंहकार पूछता है—क्या यह लोकप्रिय है ? परन्तु अंतःकरण पूछता है—क्या यह न्यायोचित है ? **—पुन्शन**

Conscience is a coward, and those faults it has not strength to prevent, it seldom has justice to accuse.

—Goldsmith (The Vicar of Wakefield)

अंत:करण डरपोक होता है, और जिन दोषों को रोकने की उसमें शक्ति नहीं होती, उन्हें अपराधी ठहराने की उसमें प्राय: न्यायबुद्धि भी नहीं होती।

—गोल्डस्मिथ (विकर आफ वेकफील्ड)

Conscience does make cowards of us all. **—Shakespeare (Hamlet)**

अंत:करण हम सब को कायर बना देता है। **—शेक्सपियर (हैम्लेट)**

भगवान के नाम का साबुन लगा लगा कर जब गुरु के हाथों से बारम्बार शिष्य का अंत:करण धुलता है तब कहीं निर्मलता में उस परम तत्व की प्रतिष्ठा होती है, तभी जीवन पर आब आती है। **—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

कितने ही पुरुष परमात्मा को शुद्ध अन्त:करण से ध्यान के द्वारा अपने में ही देखते हैं। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

The soft whispers of the God in man. **—Young**

ईश्वर का मानव से कोमल संलाप ही अंत:करण है। **—यंग**

मनुष्य के अन्दर ईश्वर की उपस्थिति को अन्त:करण कहते हैं। **—स्वेडन बोर्ग**

केवल निष्काम कर्मयोग के साधन से भी अन्त:करण की शुद्धि होकर अपने आप ही परमात्मा के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। **—जयदयाल गोयन्दका**

जैसे नेत्रों में जरा भी कण पड़ जाने से कोई वस्तु ठीक-ठीक नहीं दीख पड़ती, ऐसे ही अंत:करण में थोड़ी भी वासना रहने से आत्मा के दर्शन नहीं हो पाते।

—स्वामी भजनानन्द

जैसे कपड़े को साफ करने के लिए साबुन, सोडा, रेह तथा रीठा आदि अनेक वस्तुएँ हैं, इसी प्रकार अंत:करण को शुद्ध करने के लिए कर्म, भक्ति, ज्ञान, जप, तप, प्राणायाम व सत्संग आदि अनेक साधन हैं। **—स्वामी भजनानन्द**

मनुष्य का अंत:करण उसके आकार, संकेत, गति, चेहरे की बनावट, बोलचाल तथा आँख और मुख के विकारों से मालूम पड़ जाता है। **—पंचतंत्र**

जैसे शीशे में अपना चेहरा तभी दिखलाई पड़ता है जब कि शीशा साफ व स्थिर हो, इसी प्रकार शुद्ध अन्तःकरण में ही भगवान् के दर्शन होते हैं।

—स्वामी भजनानन्द

अन्तःकरण को 'मैं, मेरा' ये भावनाएँ बहुत तकलीफ देती हैं। इनके निकल जाने से अन्तःकरण को उसी प्रकार सुख होता है जैसे काँटा निकल जाने से शरीर को। **—स्वामी भजनानन्द**

मैले शीशे में सूर्य की किरणों का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता। उसी प्रकार जिनका अन्तःकरण मलिन और अपवित्र है उनके हृदय में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता। **—रामकृष्ण परमहंस**

अन्तःकरण की पवित्रता से निष्काम कर्म होता है। कर्म-धर्म और सब साधनों की मूल भूमि अन्तःकरण की पवित्रता है। **—दीनानाथ दिनेश**

Conscience is the chamber of justice.

अन्तःकरण न्याय का कक्ष है। **—कहावत**

The voice of conscience is the voice of God.

अन्तःकरण की वाणी ईश्वर की वाणी है। **—कहावत**

शब्द-श्रवण की साधना में, योगीजन अपने अंतःकरण में वंशी-ध्वनि सुनते हैं।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

अंत

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्॥

सभी संग्रहों का अन्त क्षय है, बहुत ऊँचे चढ़ने का अन्त नीचे गिरना है। संयोग का अन्त वियोग है और जीवन का अन्त मरण है।

—वाल्मीकि रामायण

अंधकार

It is always darkest just before the day dawneth.

—Thomas Fuller

उषा से पूर्व घोर अंधकार होता है। **—फुलर**

Conscience is a coward, and those faults it has not strength to prevent, it seldom has justice to accuse.

—Goldsmith (The Vicar of Wakefield)

अंतःकरण डरपोक होता है, और जिन दोषों को रोकने की उसमें शक्ति नहीं होती, उन्हें अपराधी ठहराने की उसमें प्रायः न्यायबुद्धि भी नहीं होती।

—गोल्डस्मिथ (विकर आफ वेकफील्ड)

Conscience does make cowards of us all. **—Shakespeare (Hamlet)**

अंतःकरण हम सब को कायर बना देता है। **—शेक्सपियर (हैम्लेट)**

भगवान के नाम का साबुन लगा लगा कर जब गुरु के हाथों से बारम्बार शिष्य का अंतःकरण धुलता है तब कहीं निर्मलता में उस परम तत्व की प्रतिष्ठा होती है, तभी जीवन पर आब आती है। **—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

कितने ही पुरुष परमात्मा को शुद्ध अन्तःकरण से ध्यान के द्वारा अपने में ही देखते हैं। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

The soft whispers of the God in man. **—Young**

ईश्वर का मानव से कोमल संलाप ही अंतःकरण है। **—यंग**

मनुष्य के अन्दर ईश्वर की उपस्थिति को अन्तःकरण कहते हैं। **—स्वेडन बोर्ग**

केवल निष्काम कर्मयोग के साधन से भी अन्तःकरण की शुद्धि होकर अपने आप ही परमात्मा के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। **—जयदयाल गोयन्दका**

जैसे नेत्रों में जरा भी कण पड़ जाने से कोई वस्तु ठीक-ठीक नहीं दीख पड़ती, ऐसे ही अंतःकरण में थोड़ी भी वासना रहने से आत्मा के दर्शन नहीं हो पाते।

—स्वामी भजनानन्द

जैसे कपड़े को साफ करने के लिए साबुन, सोडा, रेह तथा रीठा आदि अनेक वस्तुएँ हैं, इसी प्रकार अंतःकरण को शुद्ध करने के लिए कर्म, भक्ति, ज्ञान, जप, तप, प्राणायाम व सत्संग आदि अनेक साधन हैं। **—स्वामी भजनानन्द**

मनुष्य का अंतःकरण उसके आकार, संकेत, गति, चेहरे की बनावट, बोलचाल तथा आँख और मुख के विकारों से मालूम पड़ जाता है। **—पंचतंत्र**

जैसे शीशे में अपना चेहरा तभी दिखलाई पड़ता है जब कि शीशा साफ व स्थिर हो, इसी प्रकार शुद्ध अन्तःकरण में ही भगवान् के दर्शन होते हैं।

—स्वामी भजनानन्द

अन्तःकरण को 'मैं, मेरा' ये भावनाएँ बहुत तकलीफ देती हैं। इनके निकल जाने से अन्तःकरण को उसी प्रकार सुख होता है जैसे काँटा निकल जाने से शरीर को। **—स्वामी भजनानन्द**

मैले शीशे में सूर्य की किरणों का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता। उसी प्रकार जिनका अन्तःकरण मलिन और अपवित्र है उनके हृदय में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता। **—रामकृष्ण परमहंस**

अन्तःकरण की पवित्रता से निष्काम कर्म होता है। कर्म-धर्म और सब साधनों की मूल भूमि अन्तःकरण की पवित्रता है। **—दीनानाथ दिनेश**

Conscience is the chamber of justice.

अन्तःकरण न्याय का कक्ष है। **—कहावत**

The voice of conscience is the voice of God.

अन्तःकरण की वाणी ईश्वर की वाणी है। **—कहावत**

शब्द-श्रवण की साधना में, योगीजन अपने अंतःकरण में वंशी-ध्वनि सुनते हैं।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

अंत

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्॥

सभी संग्रहों का अन्त क्षय है, बहुत ऊँचे चढ़ने का अन्त नीचे गिरना है। संयोग का अन्त वियोग है और जीवन का अन्त मरण है।

—वाल्मीकि रामायण

अंधकार

It is always darkest just before the day dawneth.

—Thomas Fuller

उषा से पूर्व घोर अंधकार होता है। **—फुलर**

तमसो मा ज्योतिर्गमय ।—मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो ।

आरोह तमसो ज्योतिः । —अंधकार (अविद्या) से निकल कर प्रकाश (ज्ञान) की ओर बढ़ो । **—वेद**

धूप का ऐसा तना वितान अंधेरा कठिनाई में फँसा ।
भागने को न मिली जब राह आदमी के भीतर जा बसा ॥

—रामधारी सिंह 'दिनकर' (चक्रवाल)

अंधा

को वा महान्धो, मदनातुरो यः ।

बड़ा भारी अंधा कौन है, जो काम-वश व्याकुल है । **—स्वामी शंकराचार्य**

Darkness travels towards light, but blindness towards death.

R. N. Tagore

अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, परन्तु अंधापन मृत्यु की ओर ।

—रवीन्द्र

कंजूस आदमी अंधा होता है, क्योंकि वह धन के सिवाय और किसी सम्पत्ति को नहीं देखता । फिजूलखर्ची करने वाला अंधा होता है, क्योंकि वह आज को ही देखता है, कल को नहीं देखता । रिझाने वाली नारी अंधी होती है क्योंकि वह बुढ़ापे की झुर्रियाँ नहीं देखती । विद्वान् अंधा होता है क्योंकि वह अपने अज्ञान को नहीं देखता । **—विक्टर ह्यूगो**

एक काली होती अंधता, ज्योति से जो पलती है दूर ।
एक उजली होती जो सदा, ज्ञान से ही रहती है चूर ॥

—रामधारी सिंह 'दिनकर' (चक्रवाल)

न पश्यन्ति च जन्मान्धाः कामान्धो नैव पश्यति ।
मदोन्मत्ता न पश्यन्ति अर्थी दोषं न पश्यति ॥

जन्म से अंधे नहीं देखते, काम से जो अंधा हो रहा है उसको सूझता नहीं, मदोन्मत्त किसी को देखते नहीं, स्वार्थी मनुष्य दोषों को नहीं देखता । **—चाणक्य**

अतिक्रोधी मनुष्य आँख वाला होते हुए भी अन्धा ही होता है ।

—वाण (हर्ष चरित्र)

अंधत्व अपने आप से एक बहुत बड़ी साधना है। विद्या की लाठी ऐसे साधक के हाथ में रहनी ही चाहिये। **—अमृत लाल नागर (खंजन नयन)**

नई बीबी पाकर आदमी अन्धा हो जाता है। **—प्रेमचन्द (निर्मला)**

अन्धे पेट के बड़े गहरे होते हैं इन्हें बड़ी दूर की सूझती है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

अंधा वह नहीं है जिसकी आंखें फूट गयी हैं, वरन् वह है जो अपने दोष छिपाता है। **—एक संत**

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ।।

शास्त्रों द्वारा नाना प्रकार के संशयों का निराकरण और परोक्ष विषयों का ज्ञान होता है। इसलिए शास्त्र सभो के नेत्ररूप हैं। इसी लिए कहा जाता है कि जिसे शास्त्रों का ज्ञान नहीं, वह एक प्रकार से अंधा है। **—हितोपदेश**

अन्धा आदमी अपने आप में ही सन्नाटा है।

—अमृत लाल नागर (खंजन नयन)

स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया।

—कालिदास (अभिज्ञान शाकुन्तलम्)

अन्धे के सिर पर यदि माला भी डाली जाय तो वह उसे सांप समझकर गिरा देता है।

अकर्म में कर्म

एक स्थिति ऐसी होती है जब मनुष्य को विचार प्रकट करने की आवश्यकता नहीं रहती। उसके विचार ही कर्म बन जाते हैं, वह संकल्प से कर्म कर लेता है। ऐसी स्थिति जब आती है तब मनुष्य अकर्म में कर्म देखता है, अर्थात् अकर्म से कर्म होता है। **—महात्मा गांधी**

जो कर्म में देखे अकर्म, अकर्म में भी कर्म ही।
है योग-युत ज्ञानी वही, सब कर्म करता है वही। **—गीता ४।१८**

अकर्मण्य

पुरुषार्थी मनुष्य सर्वत्र भाग्य के अनुसार प्रतिष्ठा पाता है, परंतु जो अकर्मण्य

है, वह सम्मान से भ्रष्ट होकर घाव पर नमक छिड़कने के समान असह्य दुःख भोगता है। —**वेदव्यास (महाभारत, अनु०)**

अकर्मण्यता

Nature knows no pause in her progress and development, and attaches her curse on all in action. —**Goethe**

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नहीं जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —**गेटे**

Inactivity is death. —**Mussolini**

अकर्मण्यता मृत्यु है। —**मुसोलिनी**

अकृतज्ञ

अकृतज्ञ मानव से एक कृतज्ञ कुत्ता बेहतर है। —**शेख सादी**

Ingratitude is treason to mankind. —**Thomson**

अकृतज्ञता मानवता के प्रति विश्वासघात है। —**टामसन**

Not to return one good office for another is inhuman; but to return evil for good is diabolical. —**Seneca**

नेकी का बदला न देना क्रूरता है और उसका बदी में जवाब देना पिशाचता है। —**सेनेका**

Ungratefulness is the very poison of manhood. —**Sir P. Sidney**

अकृतज्ञता ही मनुष्यत्व का विष है। —**सर पी० सिडनी**

Brutes leave ingratitude to man. —**Colton**

पशुओं ने अकृतज्ञता मानव के लिए छोड़ दी है। —**कोल्टन**

अकेला

प्राणी अकेला ही उत्पन्न होता है, अकेला ही मृत्यु को प्राप्त होता है। अकेला ही वह अपने पुण्य और पाप के फलों को भोगता है। —**श्रीमद्भागवत**

The strongest man of the world is the one who stands most alone. **—Ibsen**

संसार में सबसे शक्तिशाली मनुष्य वही है जो अकेला (आत्म-निर्भर) रहता है। **—इब्सन**

They walk with speed who walk alone. **—Napoleon**

जो अकेले चलते हैं वे तेजी से बढ़ते हैं। **—नेपोलियन**

एकेनापि हि शूरेण पदाक्रान्त महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फुरिततेजसा ।।

जिस प्रकार सूर्य अकेला ही अपनी किरणों से समस्त संसार को प्रकाशमान कर देता है, उसी प्रकार एक ही वीर अपनी शूरता और पराक्रम-साहस से सारी पृथ्वी को अपने पैरों तले कर लेता है। **—भर्तृहरि**

अग्नि

अग्नि का प्रताप तभी सराहनीय है जब वह समुद्र में भी वैसे ही भड़ककर जले जैसे सूखी घास के ढेर में। **—कालिदास (रघुवंश २ ७५)**

अज्ञ

अकामान्कामयति यः कामाश्च यः परित्यजेत्।
बलवन्तञ्च या द्वेष्टि तमाहु मूढचेतसम ।। **विदुर० १/३७**

जो करने के कर्म न करता, दुष्कर्मों का करता ध्यान।
बलवानों से द्वेष बांधता, उसे अज्ञ कहते विद्वान ।।

—पद्यानुवादक दीनानाथ दिनेश

अज्ञान

Ignorance is the night of the mind but a night without moon or star. **—Confucius**

अज्ञान मन की रात्रि है, लेकिन वह रात्रि जिसमें न तो चांद है और न तारे।

—कनफ्यूशस

बार-बार शरीर धारण करना जीव के अज्ञान का परिणाम है।
—डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

अज्ञान हठधर्मी की जननी है। **—पोप**

अज्ञान की अवस्था में सर्वस्व खो जाने पर भी वेदना सोयी रहती है।
—अज्ञात

आरंभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः॥

अज्ञानी मनुष्य थोड़ा ही आरंभ करते हैं और बहुत व्याकुल होते हैं, परन्तु ज्ञानी बड़ा कार्य आरम्भ करने पर भी नहीं घबड़ाते। **—हितोपदेश**

Better be unborn than untaught, for ignorance is the root of misfortune. **—Plato**

अशिक्षित रहने से पैदा न होना अच्छा है, क्योंकि अज्ञान विपत्तियों का मूल है। **—प्लेटो**

To be proud of learning is the greatest ignorance.
—Jeremy Taylor

अपनी विद्वत्ता पर अभिमान करना सबसे बड़ा अज्ञान है। **—जैरेमी टेलर**

To be ignorant is not the special prerogative of man; to know that he is ignorant is his special privilege.
—Dr. S. Radhakrishnan

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नहीं है, वरन् अपने को अज्ञानी जानना ही उसका विशेष अधिकार है। **—डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्**

There are times when ignorance is bliss, indeed. **—Dickens**

कभी-कभी ऐसा भी होता है जब अज्ञान ही वस्तुतः, आनन्दप्रद हो जाता है।
—डिकेन्स

अज्ञान के समान दूसरा बैरी नहीं है। **—चाणक्य**

There is no darkness but ignorance.
—Shakespeare (Twelvth night)

अज्ञान ही अंधकार है। **—शेक्सपियर (ट्वेल्थ नाइट)**

Where ignorance is bliss,
'Tis folly to be wise. —**Gray**

जहाँ अज्ञान परम सुख हो वहाँ ज्ञानी होना मूर्खता है। —**ग्रे**

अज्ञान को ज्ञान ही मिटा सकता है। —**स्वामी शंकराचार्य**

Ignorance is the mother of fear. —**H. Home**

अज्ञान भय की जननी है। —**एच० होम**

अज्ञानी

हितहू की कहिये नहीं, जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध॥ —**वृन्द**

निपट अबुध समझै कहा, बुध-जन-वचन-विलास।
कबहू भेक न जानई, अमल कमल की बास॥ —**अज्ञात**

रूपयौवनसंपन्ना विशालकुलसंभवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥

सुन्दर, तरुण और बड़े कुल में उत्पन्न भी विद्याहीन (अज्ञानी) मनुष्य ऐसे नहीं शोभा पाते जैसे बिना गन्ध वाला पलाश का फूल। —**चाणक्य**

अछूत

'हरिऔध' छलछंद छोड़ो लो बदल आँखें,
छीजी जाती जाति के ए सच्चे बलबूते हैं।
छाती से लगा लो कौन छूत इनमें ही लगी,
छूते क्यों नहीं हो ये अछूत तो अछूते हैं।

—**अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (मर्मस्पर्श)**

अट्टहास

I like the laughter that opens the lips and the heart that shows at the same time pearls and the soul. —**Victor Hugo**

मुझे ओठों एवं हृदय को खोल देने वाला एवं तत्काल दाँतों तथा आत्मा के दर्शन कराने वाला अट्टहास प्रिय है। —**विक्टर ह्यूगो**

अति

अतिरूपेण वै सीता अति गर्वेण रावणः ।
अतिदानाद्बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत् ।। —**चाणक्य**

अति सुन्दरता के कारण सीता हरी गयीं, अति गर्व से रावण मारा गया, अति दान के कारण बलि को बँधना पड़ा, अति को सब जगह छोड़ देना चाहिए ।

Excess generally causes reaction, and produces a change in the opposite direction, whether it be in the season, or in individual or in government. —**Plato**

अति प्रायः प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है और विपरीत दिशा में परिवर्तन लाती है, चाहे यह ऋतु में हो अथवा व्यक्ति या शासन में । —**प्लेटो**

There can be no excess to love, to knowledge, to beauty, when these attributes are considered in the purest sense. —**Emerson**

प्रेम में, ज्ञान में और सौन्दर्य में कभी अति नहीं होती, जब ये गुण पूर्ण शुद्ध अर्थ में समझे जायँ । —**एमर्सन**

प्रकृति का नियम यही है एक,
कि अति का होगा ही विध्वंस । —**रांगेय राघव (मेधावी)**

अति संघरषन जो कर कोई ।
अनल प्रगट चंदन ते होई ।। —**तुलसी (मानस, उत्तर)**

अधिक हर्ष और अधिक उन्नति के बाद ही अधिक दुःख और पतन की बारी आती है । —**जयशंकर प्रसाद**

अतिथि

अतिथि को खिला लेने पर ही स्वयं खाये । —**अथर्ववेद**

'अतिथि देव' का अर्थ है समाज-देवता ।
समाज अव्यक्त है, अतिथि व्यक्त है । अतिथि समाज की व्यक्त मूर्ति है ।
—**विनोबा**

अकर्मण्य, बहुत खाने वाले, क्रूर, देश-काल का ज्ञान न रखने वाले और निन्दित वेश धारण करने वाले मनुष्य को कभी अपने घर में न ठहरने दे । —**विदुर**

The first day, a guest, the second, a burden, the third, a pest.
—**Laboulaya**

पहले दिन अतिथि, दूसरे दिन बोझ और तीसरे दिन कंटक है। —**लेबोया**

अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है। अतिथि के रूप में समाज हमसे सेवा माँग रहा है; हमारी यह भावना होनी चाहिए। —**विनोबा**

अतिथि सत्कार

अतिथि-सत्कार से मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है। —**बाइबिल**

जो मनुष्य योग्य अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, उसके घर में निवास करने से लक्ष्मी को आह्लाद होता है। —**संत तिरुवल्लुवर**

पुष्प सूंघने से मुरझा जाता है, मगर अतिथि का दिल तोड़ने के लिए एक निगाह ही काफी है। —**संत तिरुवल्लुवर**

किसी को भी भूख-प्यास अगर न लगती तो हमें अतिथि-सत्कार का मौका कैसे मिलता। —**विनोबा**

True friendship's laws are by this rule expressed : welcome the coming; speed the parting guest. —**Pope**

सच्ची मित्रता के नियम इस क्रम से सूचित होते हैं—आने वाले का स्वागत करना, जानेवाले को शीघ्रता से विदा करना। —**पोप**

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए॥ —**कबीर**

यदि कुछ न हो तो प्रेमपूर्वक बोल कर ही अतिथि का सत्कार करना चाहिए।
—**हितोपदेश**

अतिथि सत्कार मनुष्य का परम कर्तव्य है। —**बाइबिल**

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान-मान सनमान।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहिं करिय पयान॥ —**रहीम**

प्रेम रीति से जो मिलै, तासों मिलिए धाय।
अंतर राखे जो मिलै, तासों मिलै बलाय॥ —**कबीर**

आवत ही हर्षे नहीं, नयनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह ॥ —तुलसी

An honest, hearty welcome to a guest works miracles with the fare, and is capable of turning the coarsest food to nectar and ambrosia. —**Hawthorne**

अतिथि के साथ सच्चे और हार्दिक स्वागत में वह शक्ति है जो कि साधारण से साधारण भोजन को अमृत और देवताओं का भोजन बना देती है। —हाथोनी

शत्रु-अतिथि का मान मित्र-अतिथि से अधिक है। —पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र

अति भोजन

(देखो—पेटू)

बहुत खाने वाले मनुष्य का कभी आदर नहीं होता। —सादी

Their kitchen is their shrine, the cook their priest the table their altar, and their belly their God. —**Buck**

उन (पेटू मनुष्यों) की पाकशाला उनका तीर्थ-स्थान, रसोइया उनका पुरोहित, मेज उनकी वेदी और पेट उनका ईश्वर है। —बक

अतीत की स्मृति

The music of the far-away summer flatters around the autumn seeking its former nest. —**R. N. Tagore**

ग्रीष्मकाल का संगीत, शरत्काल के आस-पास, अपने पुराने निवास की खोज में फड़फंड़ा रहा है। —रवीन्द्र

I desire no future that will break the ties of the past.

—**George Eliot**

मैं ऐसे भविष्य को नहीं चाहता, जो अतीत से मेरा सम्बन्ध छुड़ा दे।

—जार्ज इलियट

अतीत चाहे दुःखद ही क्यों न हो, उसकी स्मृतियाँ मधुर होती हैं। —प्रेमचन्द

Study the past if you would divine the future. —**Confucius**

भविष्य का अनुमान लगाने के लिए अतीत का अध्ययन करो —**कनफ्यूशस**

अतृप्त

The bird wishes it were a cloud
The cloud wishes it were a bird.

—**R. N. Tagore**

पक्षी चाहता है—'मैं बादल होता'।
बादल चाहता है—'मैं पक्षी होता'। —**रवीन्द्र**

धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु चाहारकर्मसु।
अतृप्ताः प्राणिनः सर्वे याता यास्यन्ति यान्ति च ॥ —**चाणक्य**

धन, जीवन, स्त्री और भोजन के विषय में सब प्राणी अतृप्त होकर गये, जाते हैं और जायंगे।

The desire of the moth for the star
Of the night for the morrow,
The devotion to something afar
From the sphere of our sorrow. —**Shelley**

पतिंगे की नक्षत्र के लिए इच्छा, रात्रि की दिवस के प्रति और अपने दुःख से एक अज्ञात सुख की कामना—यही तो जीवन की चिर-अतृप्त इच्छा है। —**शेली**

अत्याचार

Cruelty and fear shake hands together. —**Balzac**

अत्याचार और भय परस्पर हाथ मिलाते हैं। —**बालजक**

अत्याचार-परायण राज-सत्ता जब अपनी शक्ति बढ़ाती हुई अत्याचार की मात्रा बढ़ाती जाती है, तब उसकी गति को रोकना अनिवार्य हो जाता है। ऐसी अवस्था में छल, बल और कौशल से काम लिये बिना काम नहीं चलता।

—**हिन्दू पंच (बलिदान अंक १९३०)**

अनाचार और अत्याचार को चुपचाप सिर झुका कर वे ही सहन करते हैं जिनमें नैतिकता और चरित्र का अभाव हुआ करता है। **—पं० कमला पति त्रिपाठी**

Man's inhumanity to man
Makes countless thousands mourn ! **—Robert Burns**

मानव का मानव के प्रति अत्याचार असंख्य मनुष्यों को दुःख में डाल देता है।
—राबर्ट बर्न्स

अत्याचार जब निरंकुश होकर नग्न ताण्डव करने लगता है, तब बलिवेदी पर **चढ़ने को तैयार होने के सिवा और कोई भी** उपाय नहीं रह जाता।
—हिन्दू पंच (बलिदान अंक १९३०)

All cruelty springs from hard-heartedness and weakness.
—Seneca

समस्त अत्याचार क्रूरता एवं दुर्बलताओं से उत्पन्न होते हैं। **—सेनेका**

अत्याचारी

Kings will be tyrants from policy, when subjects are rebels from principle. **—Burke**

जब प्रजा सिद्धान्त के लिए विद्रोह करती है तब राजा अपनी नीति से अत्याचारी हो जाता है। **—बर्क**

बद अख्तर तरज मरदुमाजार नेस्त।
कि रोजे मुसीबत कसरा भार नेस्त॥

अत्याचारी से बढ़कर अभागा आदमी और कोई नहीं है, क्योंकि विपत्ति के समय उसका कोई मित्र नहीं होता। **—सादी (गुलिस्ताँ)**

अन्यायी और अत्याचारी की करतूतें मनुष्यता के नाम खुली चुनौती है, जिसे वीर पुरुषों को स्वीकार करना ही चाहिए। **—श्री राम शर्मा आचार्य**

Rebellion to tyrants is obedience to God. **—Franklin**

अत्याचारी के प्रति विद्रोह करना ईश्वर की आज्ञा मानना है। **—फ्रैंकलिन**

जो अत्याचारी है उसका सोना जागने से अच्छा है, सच तो यह है कि उसके जीवन से उसका मरण ही अच्छा है। **—सादी (गुलिस्ताँ)**

अत्याचार करने वाले से सहने वाला अधिक पापी है।

—कंचनलता सब्बरवाल (त्रिवेणी)

अत्याचारी के न्याय विवेक पर भरोसा करना राजनीति के विरुद्ध है। इतिहास इसका ज्वलंत प्रमाण है। **—हिन्दू पंच (बलिदान अंक १९३१)**

That sovereign is a tyrant who knows no law but his own caprice. **—Voltaire**

वह शासक अत्याचारी है जो अपनी इच्छा के अतिरिक्त कोई नियम नहीं जानता। **—वाल्टेयर**

अधर्म

अधर्म की सेना का सेनापति झूठ है, जहाँ झूठ पहुंच जाता है वहाँ अधर्म राज्य की विजय-दुन्दुभी अवश्य बजती है। **—सुदर्शन (पुष्पलता)**

अधर्म साम्राज्य-लोलुपता की तरह बर्बर और स्वार्थमय है। **—रस्किन**

The most complete injustice is to seem just, when not so.

—Plato

अपने को न्यायी दिखलाना, जबकि ऐसा न हो, सबसे बड़ा अधर्म है।

—प्लेटो (रिपब्लिक)

जो अधर्म करते हैं चाहे उन्हें उसका फल तत्काल न मिले, पर धीरे-धीरे वह उनकी जड़ काट डालता है। **—वेदव्यास (महा० आ० प०)**

A kingdom founded on injustice never lasts. **—Seneca**

अधर्म पर स्थापित राज्य कभी नहीं टिकता। **—सेनेका**

जैसे बुढ़ापा सुन्दर रूप-रंग का नाश कर देता है उसी प्रकार अधर्म से लक्ष्मी का नाश हो जाता है। **—स्वामी भजनानन्द**

अधिकार

अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है।

—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

Power corrupts, absolute power absolutely. **—Lord Acton**

अधिकार भ्रष्ट करता है, पूर्ण अधिकार पूर्ण रूप से । **—लार्ड आक्टन**

Power, like a desolating pestilence
Pollutes whatever it touches. **—Shelley (Queen Mab)**

अधिकार विनाशकारी प्लेग के सदृश है । यह जिसे छूता है उसे ही भ्रष्ट कर देता है । **—शेली**

संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं ।
—प्रेमचन्द (गोदान)

अधिकार और बदनामी का तो चोली-दामन का साथ है ।
—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है ।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दंड देना धर्म है ॥
—मैथिलीशरण गुप्त (जयद्रथ वध)

अधिकारों की सृष्टि
और उनकी यह मोहमयी माया
वर्गों की खाई बन फैली
कभी नहीं जो मुड़ने की । **—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)**

अधिकार में स्वयं एक आनन्द है, जो उपयोगिता की परवाह नहीं करता ।
—प्रेमचन्द (काया कल्प)

अधिकार न सीमा में रहते ।
पावस निर्झर से वे बहते ॥
—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

अधिकारमदं पीत्वा को न मुह्यात् पुनश्चिरम् ।

अधिकाररूपी मदिरा का पान कर कौन है जो चिरकाल तक उन्मत्त नहीं बना रहता । **—शुक्राचार्य (शुक्रनीति)**

अपनत्व की अनुभूति ही तो अधिकारों की जननी है । **—अज्ञात**

नहर यह सोचना पसन्द करती है कि नदियाँ केवल उसे जल देने के लिए हैं । **—रवीन्द्र**

अधिकारों की भी सीमा होती है और शासन का समय। सीमा लाँघने के बाद अधिकार, अधिकार न रहकर तानाशाही बन जाता है, समय लाँघने के बाद शासन अत्याचार की भयानकता बन जाता है। **—अज्ञात**

अध्ययन

Studies serve for delight, for ornament and for ability.

—Bacon

अध्ययन आनन्द का, अलंकरण का और योग्यता का काम करता है।

—बेकन

Read not to contradict and confute, nor to believe and take for granted, nor to find talk and discourse, but to weigh and consider. **—Bacon**

अध्ययन खंडन और असत्य सिद्ध करने के लिए न करो, न विश्वास करके मान लेने के लिये करो, न बातचीत और विवाद करने के लिए करो, बल्कि मनन और परिशीलन के लिए करो। **—बेकन**

There are more men ennobled by study than by nature.

—Cicero

प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन से अधिक मनुष्य श्रेष्ठ बने हैं। **—सिसरो**

मनुष्य मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोष नहीं है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिये जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम हैं वैसे ही मानसिक रुकावटों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं। **—बेकन**

The more we study, the more we discover our ignorance.

—Shelley

जितना ही हम अध्ययन करते हैं, उतना ही हमको अपने अज्ञान का आभास होता जाता है। **—शेली**

Crafty men condemn studies, simple men admire them, and wise men use them. **—Bacon**

धूर्त मनुष्य अध्ययन का तिरस्कार करते हैं, सरल मनुष्य उसकी प्रशंसा करते हैं और ज्ञानी पुरुष उसका उपयोग करते हैं। —**बेकन**

सद्ग्रन्थ इस लोक के चिन्तामणि हैं। उनके अध्ययन से सब कुचिन्ताएँ मिट जाती हैं। संशय-पिशाच भाग जाते हैं और मन में सद्भाव जाग्रत होकर परम शान्ति प्राप्त होती है। —**स्वामी शिवानन्द**

अध्यापक

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींच-सींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं। —**महर्षि अरविन्द**

अध्यापक-जीवन का एक बड़ा भारी अभिशाप यह है कि आप को ऐसी सैकड़ों बातों को पढ़ना-पढ़ाना होगा जिन्हें आप न तो हृदय से स्वीकार करते हैं और न साहित्य के लिए हितकर मानते हैं। यहाँ आदमी को आपा खोकर ही सफलता मिलती है। —**डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी**

अध्यापक के सामने बड़े से बड़े व्यक्ति ने सिर झुकाया है। सांसारिक ऐश्वर्य एवं प्रभुता उसके महत्त्व के आगे तुच्छ हैं और शक्तिशाली उसके आगे हमेशा श्रद्धावनत हुए हैं। —**डा०अमरनाथ झा**

लब्धास्पदोऽस्मीति विवादभीरोस्तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम्।
यस्यागमः केवलजीविकायां तं ज्ञानपण्यं वणिजं वदन्ति॥

जो अध्यापक नौकरी पा लेने पर शास्त्रार्थ से भागता है, दूसरों के अँगुली उठाने पर भी चुप रह जाता है और केवल पेट पालने के लिए विद्या पढ़ाता है, ऐसा व्यक्ति पंडित नहीं, वरन् ज्ञान बेचने वाला बनिया कहलाता है। —**कालिदास**

अनन्य भक्ति

हे परंतप! मेरे सम्बन्ध में ज्ञान, मेरे दर्शन और मुझमें वास्तविक प्रवेश केवल अनन्य भक्ति से ही सम्भव है। —**भगवान श्रीकृष्ण (गीता २।५४)**

म्हारे जन्म मरण को साथी, भांवे नहिं विसरूं दिन राती।
तुम देख्यां विन कल न पड़त है जानत मोरी छाती॥ —**मीरा**

अनन्य भक्ति वह है जिससे मन एकाग्र होता है और सब में एक प्रियतम समाया हुआ दीखता है।

"ईशावास्यमिदं सर्वम्" —दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरशण बिन गोय।
तुम हो मेरे प्राणजी, कैसूं जीवण होय॥
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, अभी मारग जोय।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय॥ —मीरा

जैसे वर्षा का जल पृथ्वी की ओर ही आता है, और नदी समुद्र में मिलने के लिये दौड़ती है वैसे ही अनन्य भक्त परमेश्वर की ओर जाता है।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

अनर्थ

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥ —पंचतंत्र

यौवन, धनसम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक—इनमें से एक-एक भी अनर्थ का कारण होता है, फिर जहाँ ये चारों मौजूद हों उसके लिए क्या कहना।

अनाथ

अनाथ बच्चों का हृदय उस चित्र की भाँति होता है जिस पर एक बहुत ही साधारण परदा पड़ा हुआ हो। पवन का साधारण झकोरा भी उसे हटा देता है।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

अनादर

सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये, उपजै क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये॥

—तुलसी (मानस, उत्तर)

It is better not to live at all than to live disgraced.

—Sophocles

अनादरपूर्वक जीने से मर जाना ही कहीं अच्छा है। —सोफोक्लीज

गुरुजनों का अनादर ही उनका वध कहलाता है।

—भगवान् कृष्ण (महाभारत)

अनासक्त

तन, मन, बुद्धि और अन्तःकरण को भगवान के अर्पण करना या भगवान में रखना और फिर अन्तःकरण से या भगवत प्रेरणा से कर्म करना ही गीता का अनासक्त योग है। अनासक्तयोग का आधार समर्पणभाव है। **—दीनानाथ दिनेश**

अनासक्ति

कर्मफल और इंद्रिय-विषयों में मन न लगा कर कार्य करना ही अनासक्ति है।

—अरविन्द

अनासक्ति की कसौटी यह है कि फिर उस वस्तु के अभाव में हम कष्ट का अनुभव न करें। **—हरिभाऊ उपाध्याय**

अनिमंत्रित

जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा। जाइय बिनु बोलेहु न सँदेहा॥
तदपि विरोध मान जहँ कोई। तहाँ गये कल्यान न होई॥

—तुलसी (मानस, बाल)

Unbidden guests are often welcomest when they are gone.

—Shakespeare

अनिमंत्रित अतिथि का चला जाना ही प्रायः उसका स्वागत है। **—शेक्सपियर**

अनुकरण

अभी तक अनुकरण करके कोई भी व्यक्ति महान् नहीं हो पाया है।

—सैमुअल जानसन

Man is an imitative creature, and whoever is foremost leads the herd. **—Schiller**

मनुष्य अनुकरण करने वाला प्राणी है और जो सबसे आगे बढ़ जाता है वही समूह का नेतृत्व करता है। **—शिलर**

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता ३-२१)

सज्जन पुरुष जो कुछ आचरण करते हैं, उसी का अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। वे जिसे प्रमाण बनाते हैं, उसी का साधारण लोग अनुसरण करते हैं।

It is by imitation, far more than by precept, that we learn everything. **—Burke**

उपदेश की अपेक्षा कहीं अधिक हम अनुकरण से सीखते हैं। **—बर्क**

Imitation is the sincerest form of flattery. **—Colton**

अनुकरण पूर्ण निष्कपट चापलूसी है। **—कोल्टन**

यदि तुम भलाई का अनुकरण परिश्रम के साथ करो तो परिश्रम समाप्त हो जाता है और भलाई बनी रहती है, यदि तुम बुराई का अनुकरण सुख के साथ करो तो सुख चला जाता है और बुराई बनी रहती है। **—सिसरो**

एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितम् ।
गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः ।। **—पंचतंत्र**

संसार में भेड़ियाधसान है। एक का अनुकरण करके दूसरा भी बुरा काम करने लगता है। लेकिन परमार्थ के काम का कोई भी अनुकरण नहीं करता।

अंधानुकरण से आत्मविश्वास के बजाय आत्म-संकोच होता है।

—अरविन्द घोष

अनुग्रह

Obligation is thraldom, and thraldom is hateful.

—Hobbes

अनुग्रह दासता है और दासता घृणास्पद है। **—हौब्ज**

Man owes not only his services, but himself to God.

—Seeker

मनुष्य न केवल अपनी सेवाओं का ही, अपितु अपने लिए भी ईश्वर का ऋणी है। **—सीकर**

अनुष्ठान से अनुग्रह प्राप्त होता है।
कर्म करो और अनुग्रह प्राप्त करो। **—सत्य साईं बाबा**

किसी के अनुग्रह की याचना करना अपनी आजादी बेचना है।

—महात्मा गांधी

अनुचित

विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्।
अपने हाथ से लगाये हुए विषवृक्ष को भी अपने ही हाथ से काटना ठीक नहीं।

—कालिदास

जो लरिका कछु अनुचित करहीं। गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं।

—तुलसी (मानस, बाल)

अनुभव

ठोकर लगे और दर्द हो तभी मैं सीख पाता हूँ। **—महात्मा गांधी**

Experience is a jewel, and it had need be so, for it is often purchased at an infinite rate. **—Shakespeare**

अनुभव एक रत्न है और इसे ऐसा होना भी चाहिये, क्योंकि प्रायः यह अत्यधिक मूल्य में खरीदा जाता है। **—शेक्सपियर**

Experience takes dreadfully high school-wages, but it teaches like no other. **—Carlyle**

अनुभव-प्राप्ति के लिए अत्यन्त अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है, परन्तु उससे जो शिक्षा मिलती है वह अन्य किसी साधन द्वारा नहीं मिल सकती।

—कारलाइल

आतम अनुभव ज्ञान की, जो कोई पूछै बात।
सो गूंगा गुड़ खाइ कै, कहै कौन मुख स्वाद॥ **—कबीर**

व्यथा और वेदना की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं, वे पुस्तकों तथा विश्वविद्यालयों में नहीं मिलते। **—अज्ञात**

बिना ठोकर खाये आदमी की आँख नहीं खुलती। **—प्रेमचन्द**

कष्ट सहने पर ही अनुभव होता है। —**महात्मा गांधी**

Experience convinces me that permanent good can never be the outcome of untruth and violence. —**Mahatma Gandhi**

अनुभव हमें विश्वास दिलाता है कि असत्य और हिंसा का परिणाम स्थायी अच्छाई कभी नहीं हो सकती। —**महात्मा गांधी**

दूसरों के अनुभव जान लेना भी एक अनुभव है। —**यशपाल (दादा कामरेड)**

स्वयं अपने को लेकर मैं तो प्रति दिन यही अनुभव करता हूँ कि मेरे भीतर और बाहरी जीवन के निर्माण में कितने अगणित व्यक्तियों के श्रम और कृपा का हाथ रहा है और इस अनुभूति से उद्दीप्त मेरा अंतःकरण कितना छटपटाता है कि मैं कम से कम इतना तो इस दुनिया को दे सकूं जितना कि मैंने उससे अभी तक लिया है। —**आइंस्टाइन**

अनुभूति (देखो—अनुभव)

जीवन की गहराई की अनुभूति के कुछ क्षण ही होते हैं, वर्ष नहीं।
—**महादेवी वर्मा (दीपशिखा)**

ज्यों गूंगे के सैन को, गूंगा ही पहिचान।
त्यों ज्ञानी के सुक्ख को ज्ञानी होय सो जान॥ —**कबीर**

अनुभूति अपनी सीमा में जितनी सबल है उतनी बुद्धि नहीं। हमारे स्वयं जलने की हलकी अनुभूति भी दूसरे के राख हो जाने के ज्ञान से अधिक स्थायी रहती है। —**महादेवी वर्मा (दीपशिखा)**

कागद लिखै सो कागदी की ब्योहारी जीव।
आतम दृष्टि कहाँ लिखै जित देखै तित पीव॥ —**कबीर**

अनुभूतियों के सरोवर में आत्म-विश्वास के कमल खिलते हैं।
—**अमृत लाल नागर (खंजन नयन)**

अनुराग

अनुराग, यौवन, रूप या धन से नहीं उत्पन्न होता। अनुराग अनुराग से उत्पन्न होता है। —**प्रेमचन्द (गबन)**

रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रंग दून ।
ज्यों हरदी जरदी तजी, तजी सफेदी चून ।। **—रहीम**

अनुराग स्फूर्ति का भंडार है । **—प्रेमचन्द (गबन)**

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह ।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छांड़ति छोह ।। **—रहीम**

जो राग नित्य निरन्तर नये नये रूप में परिणत होता हुआ सर्वदा अनुभूत, सदा मिलित प्रेमास्पद को देखते ही उसमें प्रतिक्षण नये नये सौन्दर्य माधुर्य का दर्शन कराता है, ऐसे बढ़े हुए राग को अनुराग कहते हैं ।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार (श्रीराधामाधव-चिन्तन)

The affections are like lightning; you cannot tell where they will strike, till they have fallen. **—Lacordaire**

अनुराग विद्युत की भाँति होता है—आप नहीं कह सकते कि वह कहाँ टकरायेगा जब तक वह कहीं (किसी पर) गिर न जाय । **—लैकोरडेयर**

अनुराग का बुद्धि, अनुभव या तर्क से कोई सम्बन्ध नहीं है । यह तो युवावस्था की दुनिया में मस्त बहती हुई बयार है। **—अज्ञात**

We live in this world when we love it. **—R.N. Tagore**

संसार में हमारा जन्म तभी तक सार्थक है, जब तक संसार से हम अनुराग रखते है । **—रवीन्द्र (स्ट्रे बर्ड्स)**

अनुशासन

प्रति यः शासमिन्वति । **—ऋग्वेद १।५४।७**

जो अनुशासन पालता है—वही शासन करता है ।

अनुशासन विपत्ति की पाठशाला में सीखा जाता है । **—महात्मा गांधी**

अनुशासन अव्यवस्था के लिये वही काम करता है जो तूफान और बाढ़ के समय किला और जहाज । **—महात्मा गांधी**

लोकतांत्रिक समाज में आत्म-अनुशासन अति प्रभावशाली युक्ति है ।

—भारत रत्न इंदिरा गांधी

लक्ष्मण के समान अनुशासन पालन करो। भगवान राम ने कहा था "सीता को ले जाओ और बाल्मीकि आश्रम के पास छोड़ आओ।" निस्संकोच आज्ञा पालन। क्यों का नाम नहीं! यह हैं लक्ष्मण। यह है अनुशासन। **—सत्य साईं बाबा**

हम दबाव से अनुशासन नहीं सीख सकते। **—महात्मा गांधी**

बच्चों को अनुशासित रखने के लिये पूरे समाज का अनुशासित होना आवश्यक है। **—भारत रत्न इंदिरा गाँधी**

Theirs not to make reply,
Theirs not to reason why,
Theirs but to do and die. **—Tennyson**

उनका कर्त्तव्य उत्तर देना नहीं,
उनका कर्त्तव्य तर्क करना नहीं,
उनका कर्त्तव्य केवल कर्म करना और मर जाना है। **—टेनिसन**

अनुशासन किसी पर ऊपर से थोपा नहीं पाता, अपितु आत्म अनुशासन लाया जाता है। **—अटल बिहारी बाजपेयी**

अन्न

अन्नं वै प्राणाः। (अन्न ही हमारे प्राण हैं।) **—वेद**

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते।
यदन्नं भक्ष्यते नित्यं जायते तादृशी प्रजा॥

दीपक अंधकार को खाता है और काजल को जन्म देता है। प्राणी नित्य जैसा अन्न खाता है उसकी वैसी ही सन्तति होती है। **—चाणक्य**

कलावन्नगताः प्राणाः

कलियुग में प्राण अन्न के ही अधीन हैं। **—अज्ञात**

अन्न पर स्वत्व है भूखों का, और धन पर स्वत्व है देशवासियों का। प्रकृति ने उन्हें भूखों के लिए रख छोड़ा है। वह उनकी थाती है। **—जयशंकर प्रसाद**

अंधे, लूले और लँगड़े भी जो काम कर सकें वह काम उनसे लेकर उन्हें रोटी देनी चाहिए। इससे श्रम की पूजा होती है और अन्न की भी। **—विनोबा**

जो पुरुष हितकारी भोजन करता है उसके लिए वह अन्न अमृत रूप हो जाता है। **—वेदव्यास (महा० शा० प०)**

जैसा अनजल खाइए तैसा ही मन होय ।
जैसा पानी पीजिये तैसी बानी सोय ।। **—कबीर**

छ्वस्मन्वत् पाथः त्वा समभ्येतु । **—ऋगवेद १२।११८**

वह अन्न खाओ जो पाप की कमाई का न हो ।

अनाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते ।
अन्नेन जातानि जीवन्ति ।।
—तैत्तिरीय उपनिषद् ३/२

अन्न से ही इस जगत के सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, अन्न से ही जीते हैं ।

'प्राणो वा अन्नम्'

अन्न ही प्राण है क्योंकि अन्न से प्राणों में बल आता है ।

अन्न, बल से श्रेष्ठ है । राष्ट्र में अन्न नहीं होगा तो बल कहाँ से आयेगा । पहले अन्न का प्रबन्ध होगा, तब ज्ञान, दान का प्रबन्ध हो सकेगा । **—उपनिषद्**

अधर्मी राजा का अन्न खानेवाले विद्वानों की भी बुद्धि मारी जाती है ।
—वेदव्यास (महाभारत)

अन्नदाता

जिसके पेट में भूख है और जो उस भूख को मिटाना चाहता है, उसका तो पेट ही परमेश्वर है । जो आदमी उसे रोटी का साधन देगा, वही उसका अन्नदाता बनेगा । **—महात्मा गांधी**

अन्याय

अन्याय सहकर बैठ रहना,
यह महा दुष्कर्म है ।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी
दण्ड देना धर्म है । **—मैथिलीशरण गुप्त**

He who commits injustice is ever made more wretched than he who suffers it. **—Plato**

अन्याय सहने वाले की अपेक्षा अन्याय करने वाला अधिक दुःखी होता है।
—प्लेटो

अन्याय को मिटाइए, पर अपने को मिटा कर नहीं। **—प्रेमचन्द (गोदान)**

अन्याय के आगे माथा टेक देने का परिणाम प्रायः उतना ही भयंकर होता है जितना कि स्वयं अन्याय करने का। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

अन्याय के सामने जो छाती खोल कर खड़ा हो जाय वही सच्चा वीर है।
—प्रेमचन्द

अन्याय के विरुद्ध लड़ते रहना एक बड़ी ही सम्माननीय वीरोचित जीवन-प्रणाली है। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

अन्याय में सहयोग देना अन्याय करने के ही समान है। **—प्रेमचन्द**

अन्याय को सह जाने में ही यदि कोई महत्त्व होता तो कसाई की छूरी तले पड़ी हुई गाय संसार में सबसे अधिक महत्त्वशालिनी होती।
—कंचनलता सब्बरवाल (त्रिवेणी)

न्याय पर आघात जब लगते कड़े,
सुप्त शव भी जाग, हो उठते खड़े।

—बलदेवप्रसाद मिश्र (साकेत संत)

यदि राज-शक्ति के केन्द्र में ही अन्याय होगा, तब तो समग्र राष्ट्र अन्यायों का क्रीड़ा-स्थल हो जायगा। **—जयशंकर प्रसाद**

No one will dare maintain that it is better to do injustice than to bear it. **—Aristotle**

अन्याय सहने से अन्याय करना ज्यादा अच्छा है। इस सिद्धान्त को स्वीकार करने का साहस कोई नहीं कर सकता। **—अरस्तू**

अन्याय का राज्य बालू की भीत है। **—जयशंकर प्रसाद (विशाख)**

अन्वेषक

The investigator should have a robust faith, yet not believe.
—Claude Barnard

अन्वेषक में दृढ़ निष्ठा होनी चाहिए, विश्वास नहीं। —क्लाड बर्नर्ड

अपकीर्ति

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।

सम्मानित पुरुष के लिए अकीर्ति मरण से भी बुरी है।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता २।३४)

No one can disgrace us but ourselves. —J. G. Holland

अपनी अपकीर्ति के जिम्मेदार हम स्वयं हैं। —जे०जी०हालेंड

Disgrace is not in the punishment, but in the crime.

—Alfieri

अपकीर्ति दंड में नहीं, अपितु अपराध में है। —एलफिरी

मृत्युश्च को ? वापयशः स्वकीयम्।

मृत्यु क्या है ? अपनी कीर्ति। —स्वामी शंकराचार्य

Disgrace is immortal and living even when one thinks it dead. —Plautus

अपकीर्ति अमर है और जब कोई उसे मृतक समझता है तब भी वह जीवित रहती है। —प्ल्यूटस

संभावित कहुँ अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू॥

—तुलसी (मानस, अ०)

अपमान

वरं प्राणपरित्यागो मानभङ्गेन जीवनात्।

प्राणत्यागे क्षणं दुःखं मानभङ्गे दिने दिने॥ —चाणक्य

मानभङ्गपूर्वक जीने से प्राणत्याग श्रेष्ठ है। प्राणत्याग में क्षण भर दुःख होता है, मानभङ्ग होने पर प्रतिदिन।

तलवार का घाव भर जाता है, पर अपमान का घाव नहीं भरता।

—एक कहावत

जद्यपि जग दारुन दुःख नाना। सब ते कठिन जाति अपमाना।

—तुलसी (मानस, बाल०)

पवित्र नारी का अपमान संसार में क्रान्ति का अग्रदूत है।

—डा० रामकुमार वर्मा

ठोकर खाकर सांप-जैसा नाचीज कीड़ा बदला लेता है, चींटी-जैसी तुच्छ हस्ती काट खाती है, मनुष्य भी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देता है।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

धनुष से छूटा हुआ तीर और मुख से निकला हुआ शब्द कभी वापस नहीं लौटता। एक बार सहा हुआ अपमान भुलाया नहीं जा सकता। —अज्ञात

मानव प्रकृति सब कुछ सहन कर सकती है, परन्तु अपमान का, बेइज्जती का घूंट गले से नहीं उतार सकती। —श्रीराम शर्मा आचार्य

अपमान के हल्के झोंके से ही गर्व दावाग्नि बन कर वैभव के नन्दनवन को क्षण भर में भस्म कर सकता है। —डा० रामकुमार वर्मा

अपमान का भय कानून के भय से किसी तरह कम क्रियाशील नहीं होता।

—प्रेमचन्द

पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति ।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः ॥ —माघ (शिशु०)

जो धूल पैर से आहत होने पर उड़कर (आहत करने वाले के) सिर पर चढ़ जाती है, वह अपमान होने पर भी स्वस्थ बने रहने वाले शरीरधारी मनुष्य से श्रेष्ठ है।

जैसे सूर्यकान्त मणि जड़ होने पर भी सूर्य की किरण के स्पर्श से जल उठती है, उसी तरह चैतन्य तेजस्वी पुरुष भी दूसरों के अपमान को नहीं सह सकते। —अज्ञात

संभावित कहुं अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू ॥

—तुलसी (रा०मा०अ० ९५/७)

जब तक तुम्हें अपने सम्मान और दूसरे का अपमान सुख देता है, तब तक तुम अपमानित ही होते रहोगे। —हनुमान प्रसाद पोद्दार

मा जीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति ।
तस्याजननिरेवास्तु जननीक्लेशकारिणः ॥—माघ (शिशुपाल वध)

जो मनुष्य शत्रु के अपमान से प्राप्त दुःख से दग्ध होकर भी गर्हित जीवन

बिताते हुए अपने प्राणों को धारण करता है, उस माता को क्लेश देने वाले (गर्भ धारण और प्रसवादि के दुःखों को देने वाले) की उत्पत्ति मत हो (तभी ठीक)।

The dust receives insult and in return offers her flowers.

—R. N. Tagore

धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है, और बदले में पुष्पों का उपहार देती है।

—रवीन्द्र

मातरं पितरं विप्रमाचार्यं चावमन्य व।
स पश्यति फलं तस्य प्रेतराजवशं गतः। **—वाल्मीकि (रा०, उत्तर)**

जो माता, पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है, वह यमराज के वश में पड़ कर उस पाप का फल भोगता है।

अपमानपूर्वक हजार वर्ष जीने की अपेक्षा सम्मान के साथ एक घड़ी भर जीना अच्छा है। **—एमर्सन**

अपमान के घूंट पी-पीकर जिसने अपना पेट भरा है उसके मन, वचन और कर्म से सदा आसुरी तत्व ही निकलते रहेंगे। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

अपराध

अपराध की सहस्र जिह्वाएँ हैं, जो अग्नि-शिखा की भांति चंचल हो सकती हैं।

—डा० रामकुमार वर्मा

Guiltiness will speak though tongues were out of use.

—Shakespeare

जिह्वा के बिना भी अपराध बोलेगा। **—शेक्सपियर**

जहां धर्म, ईश्वर और सन्तों की निन्दा होती है, वहाँ बैठ कर उसे सुनना भी अपराध है। **—श्री चक्रः**

The mind of guilt is full of scorpions. —Shakespeare

अपराधी मन बिच्छुओं से भरा होता है। **—शेक्सपियर**

There you are; human nature in action, the wrong does blaming every body but himself. We are all like that.

—Dale Carnegie

अपराधी अपने सिवाय और सबको दोष देता है। हम सब उसी प्रकार के हैं। मानव प्रकृति इसी प्रकार काम करती है। —डेल कारनेगी

Suspicion always haunts the guilty mind : the thief doth fear each bush an officer. **—Shakespeare**

अपराधी मन सन्देह का अड्डा है—चोर को हर झाड़ी में पुलिस का भय बना रहता है। —शेक्सपियर

छिप कर किया गया अपराध जीवन-पर्यन्त हृदय में काँटे की तरह चुभता रहता है। —अज्ञात

Fear follows crime, and is its punishment. **—Valtaire**

अपराध करने के बाद भय उत्पन्न होता है और यही उसका दण्ड है। —वाल्टेयर

Whenever man commits a crime, heaven finds a witness. **—Bulwar**

जब कभी मनुष्य अपराध करता है, ईश्वर को उसका साक्षी मिल जाता है। —बुलवर

अपरिग्रह

अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम उस किसी चीज का संग्रह न करें जिसकी हमें आज दरकार नहीं है। —गांधी जी

परिग्रह की चिन्ता से अन्तरात्मा का अपमान होता है, परिग्रह की चिन्ता न करने से विश्वात्मा का अपमान होता है, इसी लिये अपरिग्रह सुरक्षित है। —विनोबा

अबला

अबला जीवन, हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आँखों में पानी॥

—मैथिलीशरण गुप्त (यशोधरा)

नहीं जानते तुम कि देखकर निष्फल अपना प्रेमाचार ।
होती हैं अबलाएँ कितनी प्रबलाएँ अपमान विचार ।।
—मैथिलीशरण गुप्त (पंचवटी)

का नहिं पावक जारि सकै, का न समुद्र समाय ।
का न करै अबला प्रबल, किहि जग काल न खाय ।। **—तुलसी**

अभय—प्रार्थना

अभय करे हमारे लिये अन्तरिक्ष ।
अभय करें दोनों ये द्यो और पृथिवी ।
हमारे लिये हो पीछे से अभय ।
आगे से अभय, ऊपर नीचे से अभय ।। (अ० १६-१५-५)

हो मित्र से अभय, अमित्र से अभय ।
हो ज्ञात से अभय, अज्ञात से अभय ।
अभय हो रात में, दिन में हो अभय ।
रहें सब दिशायें सदा मेरी मित्र ।। (अ० १६-१५-६)

अभागा

अभागा वह है जो संसार के सब से पवित्र धर्म कृतज्ञता को भूल जाता है ।
—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

अभागा मनुष्य देवता का प्रसाद प्राप्त करके भी दुःखदायक पाप-कर्म में प्रवृत्त हो जाता है । **—वेदव्यास (महाभारत)**

अभागे मनुष्य प्राप्त वस्तु की अवहेलना करते हैं । **—भारवि (किरातार्जुनीय)**

अभिमान

अभिमान सौंदर्य का कटाक्ष है । **—सुदर्शन**

We rise in glory as we sink in pride. **—Young**

ज्यों-ज्यों अभिमान कम होता है, कीर्ति बढ़ती है । **—यंग**

मान बड़ाई जगत में कूकर की पहिचानि ।
मीत किए मुख चाटही बैर किए तन हानि ॥ —कबीर

बुढ़ापा रूप को हर लेता है, निराशा में धीरज नहीं बंधता, मृत्यु प्राणों को खा लेती है, निन्दा से धर्म का पतन होता है, क्रोध से लक्ष्मी नहीं ठहरती, कुसंग से सदाचार नहीं रहता, काम निर्लज्ज बना देता है और अभिमान कुछ नहीं छोड़ता।
—अज्ञात

हम गंगोदक, हम गगन, हम दीपक, हम भान ।
यही तुम्हें लै बूड़ि है कुल-कोरी अभिमान ॥
—वियोगी हरि (वीर सतसई)

अभिमान नरक का मूल है । **—महाभारत (आदिपर्व)**

Pride that dines in vanity, sups on contempt. **—Franklin**

अभिमान जो अहंकारपूर्वक प्रातः जलपान करता है उसको सायंकाल का भोजन तिरस्कार से मिलता है । **—फ्रैंकलिन**

अभिमानी

दुर्जोधन जग में प्रगट, जरासंध शिशुपाल ।
नारायन सो अब कहाँ, अभिमानी भूपाल ॥
—नारायण स्वामी

अभियान

नीतिरापदि यद्गम्यः परस्तन्मानिनो ह्रिये ।
विधुर्विधुन्तुदस्येव पूर्णस्तस्योत्सवाय सः ।

शत्रु पर आपत्तिकाल में अभियान करना चाहिए, यह जो नीति है, वह मानी पुरुष के लिए लज्जाजनक है । राहु के लिए पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति सुस्थिर शत्रु (अभियान के लिए) आनन्ददायक होता है । **—माघ (शिशुपाल बध)**

अभिलाषा

हमारी हार्दिक अभिलाषाएँ हमारे उत्पादक अन्तर्बल को उत्तेजित करती हैं ।
—स्वेट् मार्डेन (दिव्य जीवन)

अभिलाषा तभी फलोत्पादक होती है जब वह दृढ़ निश्चय में परिणित कर दी जाती है। **—स्वेट् मार्डेन**

जिस अभिलाषा में शक्ति नहीं उसकी पूर्ति असम्भव है।

—गुलाब रत्न वाजपेयी

जिसकी हम चाह करते हैं, जिसकी सिद्धि के लिए सम्पूर्ण अन्तःकरण से अभिलाषा करते हैं उसकी हमें अवश्य ही प्राप्ति होगी। **—स्वेट् मार्डेन**

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामर्त्ति नाशनम् ॥

सुख राज्य स्वर्ग की मैं न कामना करता,
मैं नहीं मांगता अपनी मुक्ति अमरता।
सन्तप्त दुखी प्राणी दुख से छुट जायें,
मुझमें इस अभिलषा का झरना झरता।

—दीनानाथ दिनेश (मणिमाला)

(दे० "इच्छा")

अभ्यास

मनुष्य मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोष नहीं है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम हैं वैसे ही मानसिक रुकावटों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं। **—बेकन**

ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो अभ्यास से प्राप्त न हो सकती हो। कोई अभ्यास के बल से आकाश में गति प्राप्त कर लेते हैं, कोई व्याघ्र और सर्पों को आधीन कर लेते हैं, कोई विष को आहार बना लेते हैं तथा कोई अभ्यास से शब्द ब्रह्म को मात कर देते हैं। अतः अभ्यास से कुछ भी सर्वथा दुष्प्राप्त नहीं है। **—संत ज्ञानेश्वर**

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर होत निसान ॥ **—वृन्द**

अमृत

जो आदमी हमेशा अमृत ही अमृत पीता है उसको अमृत उतना मीठा नहीं लगता जितना कि जहर का प्याला पीने के बाद अमृत की दो बूँदे ।

—महात्मा गाँधी

अर्चना

अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत ।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्ण्वर्चत ॥ —ऋ० ८।६९।८

हे विद्या और बुद्धि के उपासको, उसका (परमेश्वर) अर्चन करो । हृदय से उसका अर्चन करो । उसकी स्तुति करते ही रहो और अपने बालकों को स्तुति में लगाओ । सबका पालक तथा परम आश्रय जानकर उसका अर्चन वंदन करो ।

अर्थ नीति

अलब्धम्चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः ।
रक्षितं वर्धयेच्चैव वृद्धं पात्रेषु निक्षिपेत ॥ —शुक्राचार्य

जो अप्राप्त है करो निरन्तर, यत्न उसे पा जाने का ।
प्राप्त हुए की रक्षा करके, करो प्रयत्न बढ़ाने का ॥
बढ़े हुए को रखो पात्र में, योग्य व्यक्तियों के लाभार्थ ।
करते चलो सावधानी से, जीवन में चारों पुरुषार्थ ॥

—पद्यानुवादक दीनानाथ दिनेश

साँई एता दीजिये, जामें कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ॥ —कबीर

अवगुण

हर ऐब की सुल्ताँ बेपसन्द दहुनरस्त ।
यदि राजा किसी अवगुण को पसन्द करे तो वह गुण हो जाता है । —सादी

गुण भी इस जगत में दुर्जनों के अपवाद से अवगुण समझे जाते हैं । —अज्ञात

Drink is more a disease than a vice. —**Mahatma Gandhi**

मदिरा पान करना अवगुण की अपेक्षा बीमारी अधिक है । —**महात्मा गांधी**

The road to vices is not only smooth, but steep. —**Seneca**

अवगुण का मार्ग चिकना ही नहीं, अपितु ढालू है । —**सेनेका**

अवतार

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब मैं अवतार धारण करता हूँ । साधुओं की रक्षा के लिए, पापियों के नाश के लिए और धर्म की स्थापना के लिए मैं युग-युग में अवतार लेता हूँ ।

—**भगवान् श्रीकृष्ण (गीता ६।७-८)**

हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होंहि मैं जाना ॥

—**तुलसी (मानस, अयो०)**

जो अपने कर्मों को ईश्वर का कर्म समझ कर करता है, वही ईश्वर का अवतार है । —**जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)**

जिसमें परमेश्वर के विशेष गुण—ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, त्याग, तप, शक्ति आदि असाधारण रूप में प्रकट होते हैं, वह ईश्वरीय विभूति अथवा आंशिक अवतार माना जाता है । —**दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

अवतार, तात्पर्य है शरीरधारी पुरुष विशेष । जीवमात्र ईश्वर का अवतार है, परन्तु लौकिक भाषा में सबको हम अवतार नहीं कहते । जो पुरुष अपने युग में सबसे श्रेष्ठ धर्मवान् है उसी को भावी प्रजा अवतार-रूप से पूजती है ।

—**महात्मा गांधी**

जब-जब युग का परिवर्तन होता है, तब-तब मैं प्रजा की भलाई के लिए भिन्न भिन्न योनियों में प्रतिष्ठित होकर, धर्म-मर्यादा की स्थापना करता हूँ । जब जिस योनि में अवतार लेता हूँ उस समय उसी की भाँति सारे आचार-विचार का पालन करता हूँ । —**वेदव्यास (महाभारत आ० प०)**

अवतारी पुरुष देश के प्राण हैं, वे समाज में चेतना उत्पन्न करते हैं और अपने पवित्र आचरण तथा उपयोगी उपदेशों से देश का कल्याण-साधन करते हैं।

—अज्ञात

मोक्ष-प्राप्ति के समीप पहुँची हुई आत्मा अवतार रूप है। **—महात्मा गांधी**

अवसर

The secret of success in life, is for a man to be ready for his opportunity when it comes. **—Disraeli**

मनुष्य के लिए जीवन में सफलता का रहस्य हर आने वाले अवसर के लिए तयार रहना है। **—डिजरायली**

Chance fights on the side of prudent. **—Euripides**

अवसर बुद्धिमान् के पक्ष में लड़ता है। **—यूरीपेडीज**

Do not suppose opportunity will knock twice at your door.

—Chamfort

ऐसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा द्वार दोबारा खटखटाएगा। **—शैम्फोर्ट**

Chance never helps those who do not help themselves.

—Sopthocles

अवसर उनकी सहायता कभी नहीं करता जो अपनी सहायता नहीं करते।

—सफोक्लीज

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस शृंगार न सुहात॥ **—वृन्द**

अवसर कौड़ी जो चुकै, बहुरि दिये का लाख।
दुइज न चंदा देखिए, उदौ कहा भरि पाख॥

—तुलसी (दोहावली)

There is a tide in the affairs of men, which taken at the flood leads on to fortune. **—Shakespeare**

मनुष्य के सारे व्यवहारों में ज्वार-भाटा का-सा चढ़ाव-उतार होता है। यदि मनुष्य बाढ़ को पकड़े तो भाग्य की ड्योढ़ी पर पहुँच जाय। **—शेक्सपियर**

फीकी पै नीकी लागै, कहिए समय विचारि ।
सब को मन हर्षित करे, ज्यौं विवाह में गारि ।। —वृन्द

लाभ समय को पालिबो हानि समय की चूक ।
सदा बिचारहिं चारुमति सुदिन कुदिन दिन दूक ।।
—तुलसी (दोहावली)

A word spoken in season, at the right moment, is the matter of ages. **—Carlyle**

समय और उचित अवसर पर बोला गया एक शब्द युगों की बात है ।
—कार्लाइल

तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा । मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ।
का बरषा जब कृषी सुखाने । समय चुके पुनि का पछताने ।।
—तुलसी (मानस, बाल०)

अविद्या

अविद्या का कार्य भेद की सृष्टि करना है । जीव उस पथिक की भांति है जो प्यास के मारे भटक रहा है । अविद्या तृप्ति का आश्वासन देकर उसे भवकूप तक ले जाती है ।

—पं० रामकिंकर जी उपाध्याय (मानस मुक्तावली)

अविवेक

मज्जन्त्यविचेतसः ।

अविचारशील मनुष्य दुःख को प्राप्त होते हैं । **—ऋग्वेद**

अविश्वास

To trust is a virtue. It is weakness that begets distrust.

—Mahatma Gandhi

विश्वास करना एक गुण है । अविश्वास दुर्बलता की जननी है ।

—महात्मा गांधी

अविश्वास से अर्थ की प्राप्ति नहीं हो सकती, और जो हो भी सकती है तो जो विश्वास-पात्र नहीं है उससे कुछ लेने को ज़ी ही नहीं चाहता। अविश्वास के कारण सदा भय लगा रहता है और भय से जीवित मनुष्य मृतक के समान हो जाता है। **—वेदव्यास (महा०)**

एक बार अविश्वस्त ठहराये गये का कभी विश्वास न करो। **—पंचतंत्र**

What loneliness is more lonely than distrust.**—George Eliat**

अविश्वास से बढ़ कर एकाकीपन कोई दूसरा नहीं है। **—जार्ज इलिएट**

भगवान पर अविश्वास न करो, यह सबसे बड़ा पाप है।

—हनुमान प्रसाव पोद्दार "भाई जी"

अशान्ति

अशान्ति के बिना शान्ति नहीं मिलती। लेकिन अशान्ति हमारी अपनी हो। हमारे मन का जब खूब मन्थन हो जायगा, जब हम दुःख की अग्नि में खूब तप जायेंगे, तभी हम सच्ची शान्ति पा सकेंगे। **—महात्मा गांधी**

असंतोष

असंतोष अपने ऊपर अविश्वास का फल है, यह कमजोर इच्छा का रूप है।

—एमर्सन

काल्पनिक किलों में रहने से अधिक सुख और संतोष मिलता है, परन्तु असंतोषी मनुष्यों के बनाये महलों में सुख नहीं है। **—एमर्सन**

असन्तुष्ट मनुष्य संसार में अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहते।**—शेक्सपियर**

असंतोषी से आनन्द दूर रहता है। **—अज्ञात**

असफ़लता

जितनी बार हमारा पतन हो उतनी बार उठने में गौरव है।**—महात्मा गांधी**

They never fail who die in a great cause. **—Byron**

वे कभी असफल नहीं होते जिनकी मृत्यु महान् उद्देश्य के लिए होती है।

—बायरन

असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है जितना बबूल के पेड़ से गुलाब के फूल का निकलना। —स्वेट् मार्डेन

असंभव

Asks the Possible of the Impossible, "Where is your dwelling place ?"

"In the dreams of the importent", comes the answer.

—R. N. Tagore

संभव, असंभव से पूछता है—"तुम्हारा निवास-स्थान कहाँ है ?"
उत्तर मिला—"निर्बल के स्वप्न में।" —रवीन्द्र

Impossible is a word only to be found in the dictionary of fools. **—Napoleon**

"असंभव" एक शब्द है जो केवल मूर्खों के शब्द-कोष में पाया जाता है।

—नेपोलियन

To the timid and hesitating everything is impossible because it seems so. **—Walter Scott**

कायरों और संशयशील व्यक्तियों के लिए प्रत्येक वस्तु असम्भव है, क्योंकि उन्हें ऐसी ही प्रतीत होती है। **—वाल्टर स्काट**

काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं
सर्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः।
क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता
भूपे सख्यं केन दृष्टं श्रुतं वा॥

कौवे में पवित्रता, जुआरी में सत्यवादिता, सर्प में क्षमा, स्त्रियों में काम की शान्ति, कायर में धैर्य, शराबी में तत्व का विचार और राजा में मित्रता का होना किसने देखा या सुना है। **—विक्रम चरित्रम्**

असहाय

जो जन हों असहाय अनाथ, रखो उनके सिर पर हाथ।
शिक्षित बनें अकिंचन बाल, निकलें वे गुदड़ी के लाल॥

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

अस्पृश्यता

अस्पृश्यता एक ऐसा सर्प है जिसके सहस्र मुख हैं और जिसके प्रत्येक मुख में जहरीले दाँत दिखाई पड़ते हैं। यह इतनी विस्तृत है कि इसकी परिभाषा नहीं की जा सकती। यह इतनी जबरदस्त है कि इसे अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए मनु अथवा प्राचीन स्मृतिकारों की आवश्यकता नहीं पड़ती। **—महात्मा गांधी**

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं। परमेश्वर के घर का दरवाजा किसी के लिए बन्द नहीं और यदि वह बन्द हो जाय तो परमेश्वर नहीं, ऐसा मैं मानता हूं। **—लोकमान्य तिलक**

शरीर किसी का हो स्पष्टत: गन्दगी की गठरी है, और आत्मा तो सर्वत्र एक और अत्यन्त शुद्ध है। ऐसी स्थिति में अस्पृश्यता किसकी और किसके लिए ? **—विनोबा**

अस्पृश्यता हिन्दू जाति पर कलंक है। **—महात्मा गांधी**

जिस प्रकार एक रत्ती संखिया से लोटा भर दूध बिगड़ जाता है उसी प्रकार अस्पृश्यता से हिन्दू धर्म चौपट हो रहा है। **—महात्मा गांधी**

अस्पृश्यता की खोज करने के लिए पास का अपना हृदय छोड़ कर योगशास्त्र तक दौड़ने की क्या जरूरत है। **—विनोबा**

अहंकार

Pride is at the bottom of all great mistakes. **—Ruskin**

अहंकार समस्त महान् गलतियों की तह में होता है। **—रस्किन**

अहं की भावना रखना एक अक्षम्य अपराध है। **—अज्ञात**

अहंकार नशे का मुख्य रूप है। **—प्रेमचन्द**

धनी को अपने धन का मद रहता है, घमंड रहता है, परन्तु गरीब के झोपड़े में क्रोध और अहंकार के लिए स्थान नहीं रहता। **—प्रेमचन्द**

घोड़े और हाथी के लिए व्ययसाध्य चारा चाहिए, किन्तु अहंभाव के लिए किसी रसद की आवश्यकता नहीं होती। **—रवीन्द्र**

निरहंकारिता से सेवा की कीमत बढ़ती है और अहंकार से घटती है ।

—विनोबा

Pride, like the magnet, constantly points to one object, self; but unlike the magnet, it has no attractive pole, but at all points repels. **—Colton**

अहंकार चुम्बक की भाँति सदा एक ही वस्तु का निर्देश करता है—स्व का; परन्तु चुम्बक की भाँति वह अपनी ओर आकृष्ट नहीं करता, बल्कि अपने से दूर हटा देता है । **—कोल्टन**

माया तजी तो क्या भया, मान तजा नहिं जाय ।
जेहि मानै मुनिवर ठगे, मान सबन को खाय ।। **—कबीर**

The infinitely little have a pride infinitely great. **—Valtaire**

मनुष्य जितना छोटा होता है, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है ।

—वाल्टेयर

अहंकारी

The proud are ever most provoked by pride. **—Cowper**

अहंकारी व्यक्ति अहंकार से बहुत उत्तेजित हो उठते हैं । **—कूपर**

The conceited man relates only his own great deeds and only the evil ones of others. **—Spinoza**

अहंकारी मनुष्य केवल अपने ही महान् कार्यों का वर्णन करता है और दूसरों के केवल कुकर्मों का । **—स्पिनोजा**

A proud man is seldom a grateful man, for he never thinks he gets as much as he deserves. **—H. W. Beecher**

अहंकारी मनुष्य में कृतज्ञता बहुत कम होती है, क्योंकि वह यही समझता है कि मैं जितना पाने योग्य हूँ उतना मुझे कभी प्राप्त नहीं होता ।

—एच० डब्ल्यू० बीचर

अहिंसा

अहिंसा सत्य का प्राण है। उसके बिना मनुष्य पशु है। **—महात्मा गांधी**

मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लोभ को दान से और मिथ्या-भाषण को सत्य से जीत सकेगा। **—गौतम बुद्ध**

अहिंसा में ही सत्येश्वर के दर्शन करने का सीधा और छोटा-सा मार्ग दिखाई देता है। **—महात्मा गांधी**

मनसा, वाचा, कर्मणा कभी किसी को किसी प्रकार का दुःख न पहुँचाओ। क्रोध को क्षमा से, विरोध को अनुरोध से, घृणा को दया से, द्वेष को प्रेम से और हिंसा को अहिंसा की प्रतिपक्ष भावना से जीतो। **—महर्षि दयानन्द**

पीर सबन की एक सी, मूरख जानत नाहिं।
काँटा चूभै पीर है, गला काटि को खाइ॥ **—मलूकदास**

क्या बकरी क्या गाय है, क्या अपनो जाया।
सबको लोहू एक है, साहिब फरमाया॥
पीर पैगम्बर औलिया, सब मरने आया।
नाहक जीव न मारिये, पोषन को काया॥ **—गुरुनानक**

मैं तो शुरू से यह मानता आया हूँ कि अहिंसा ही धर्म है, वही जिन्दगी का एक रास्ता है। **—महात्मा गांधी**

जीव मात्र की अहिंसा स्वर्ग को देनेवाली है। **—स्वामी शंकराचार्य**

जिस भाँति भौंरा फूलों की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है, उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थों को ग्रहण करना चाहिए। **—विदुर**

जो तुम्हारे बायें गाल पर मारे उसकी ओर दाहिना गाल भी फेर दो।
—महात्मा ईसा

हममें दया, प्रेम, त्याग ये सब प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं। इन प्रवृत्तियों को विकसित करके अपने सत्य को और मानवता के सत्य को एकरूप कर देना—यही अहिंसा है। **—भगवतीचरण वर्मा (टेढ़े मेढ़े रास्ते)**

अनेकों को जो एक रखती है, भेदों में से अभेद को ढूंढ़ती है, वही अहिंसा है।
—विनोबा

अहिंसा का अर्थ है ईश्वर पर भरोसा रखना। **—महात्मा गांधी**

जब कोई व्यक्ति अहिंसा की कसौटी पर खरा उतर जाता है तो दूसरे व्यक्ति स्वयं ही उसके पास आकर वैरभाव भूल जाते हैं। **—पतंजलि**

अहिंसा का मार्ग तलवार की धार पर चलने-जैसा है, जरा-सी गफलत हुई कि नीचे गिरे। घोर अन्याय करने वाले पर भी गुस्सा न करे, बल्कि उससे प्रेम करे, उसका भला चाहे और करे। लेकिन प्रेम करते हुए भी अन्या के वश में न हो। अन्याय का विरोध करे और वैसा करने पर वह जो कष्ट दे उसे धैर्य के साथ और अन्याय के लिए दिल में द्वेष रखे बिना सह ले। **—महात्मा गांधी**

अपने शत्रु से प्रेम करो, जो तुम्हें सताये उसके लिए प्रार्थना करो, जिससे तुम अपने दैवी पिता के बेटे कहला सको। **—महात्मा ईसा**

यदि सत्य नहीं तो अहिंसा की भी रक्षा नहीं हो सकती। **—विनोबा**

मानवों के व्यवहार में ही अहिंसा की कसौटी होती है। **—महात्मा गाँधी**

अहिंसा प्रचण्ड शस्त्र है। उसमें परम पुरुषार्थ है, वह भीरु से दूर भागती है। वह वीर पुरुष की शोभा है, उसका सर्वस्व है। वह शुष्क, नीरस, जड़ पदार्थ नहीं है, वह चेतन है। वह आत्मा का विशेष गुण है। **—महात्मा गांधी**

अहिंसक

अहिंसा की शक्ति अमाप है, वैसी ही अहिंसक की है। अहिंसक स्वयं कुछ नहीं करता, उसका प्रेरक ईश्वर होता है। **—महात्मा गांधी**

आँख (दे० 'नयन')

आँखें सारे शरीर का दीपक हैं। **—महात्मा गांधी**

आँखों में मनुष्य की आत्मा का प्रतिबिम्ब होता है। **—अज्ञात**

आँखें हृदय की तालिका हैं। **—गुलाबरत्न वाजपेयी**

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार॥ **—बिहारी**

मनुष्य की आँखें आन्तरिक भाव को ग्रहण करने में इतनी पटु हैं कि कोई लज्जास्पद बात देखी नहीं कि झुक गयीं, आनन्द का भान हुआ नहीं कि चमक पड़ीं, रोष का उदय हुआ नहीं कि जल उठीं, करुणा का उद्रेक हुआ नहीं कि नम हो गयीं—बरस पड़ीं। **—अज्ञात**

जो बात वाणी नहीं प्रकट कर पाती वह बात, आँखें आसानी से बोल देती हैं। —अज्ञात

आँखों में जादू उत्पन्न करने की वैज्ञानिक कला है। —गुलाबरत्न वाजपेयी

मनुष्य की आँखें उसके चरित्र, व्यक्तित्व और अन्तःप्रवृत्ति का दर्पण हैं। —अज्ञात

मन सों कहाँ रहीम प्रभु, दृग सो कहा दिवान।
दृगन देखि जेहि आदरैं, मन तेहि हाथ बिकान॥ —रहीम

आँख जहाँ ब्रह्मांड एवं शरीर के परस्पर आदान-प्रदान का माध्यम है, वहीं वह आत्मा-परमात्मा के अनंत प्रणय का सेतु भी है। —अज्ञात

आँखें तो जीवन के अनुभवों से भरा हुआ भंडार है। —साने गुरु (आस्तीक)

पश्यदक्षण्वान न विचेतदन्धाः।

जिसके आँख है, जो ज्ञानी है, वही देखता है, अंधा नहीं देखता। —ऋगवेद संहिता

आँसू

नारी का अश्रु-जल अपनी एक-एक बूँद में एक-एक बाढ़ लिये रहता है। —जयशंकर प्रसाद (जनमेजय का नागयज्ञ)

स्त्री—तूने अपने अथाह अश्रुओं से संसार के हृदय को उसी प्रकार घेर रखा है जिस प्रकार समुद्र पृथ्वी को घेरे हुए है। —रवीन्द्र

स्त्रियों के आँसू पुरुषों की क्रोधाग्नि भड़काने में तेल का काम देते हैं। —प्रेमचन्द

Beauty's tears are lovelier than her smiles. —**Campbell**

सौन्दर्य के आँसू उसकी मुस्कुराहट की अपेक्षा अधिक प्यारे होते हैं। —कैम्पबेल

Love is loveliest when emblamed in tears. —**Walter Scott.**

अश्रुपूर्ण प्रेम अत्यन्त लुभावना होता है। —वाल्टर स्काट

आँख के आँसू अमूल्य वस्तु हैं। प्रेम के, कृतज्ञता के, आनन्द के, दुःख के और पश्चात्ताप के आँसुओं से ही तो जीवन का बाग़ पनपता है।

—साने गुरु (आस्तीक)

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति सी छायी।
दुर्दिन में आँसू बन कर
वह आज बरसने आयी॥

—जयशंकर प्रसाद (आँसू)

दुखियारों को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नहीं होते। **—प्रेमचन्द**

नेह न नैननि को कछू, उपजी बड़ी बलाय;
नीर भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय। **—बिहारी**

मेरे छोटे जीवन में देना न तृप्ति का कण भर,
रहने दो प्यासी आँखें भरती आँसू के सागर॥ **—महादेवी वर्मा**

अपने आँसू की अंजलि,
आँखों में भर क्यों पीता।
नक्षत्र पतन के क्षण में,
उज्ज्वल होकर है जीता।

—जयशंकर प्रसाद (आँसू)

आँख का आँसू ढलता देखकर।
जी तड़प करके हमारा रह गया॥
क्या गया मोती किसी का है बिखर,
या हुआ पैदा रतन कोई नया।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

या जिगर पर जो फफोला था पड़ा,
फूट करके वह अचानक बह गया।
हाय! था अरमान जो इतना बड़ा,
आज वह कुछ बूंद बनकर रह गया।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

आकर्षण

जिन वस्तुओं में आकर्षण नहीं रहता वे उपेक्षित रहती हैं।

—यशपाल (दादा कामरेड)

यदि पुरुष के जीवन-विकास में स्त्री का आकर्षण विनाशकारी होता तो प्रकृति यह आकर्षण पैदा ही क्यों करती। **—यशपाल (दादा कामरेड)**

आकांक्षा

सांसारिक आकांक्षा मनुष्य को बाँधती और घसीटती है।

—स्वामी रामतीर्थ

हमारी आकांक्षा, जीवन-रूपी भाप को, इंद्र-धनुष का रंग दे देती है।

—रवीन्द्र

जीवन में आकांक्षाएँ होती हैं तो अपना सम्मान और आत्माभिमान भी होता है। **—अज्ञात**

Renunciation of objects, without renunciation of desire, is short-lived, however hard you may try. **—Mahatma Gandhi**

इन्द्रिय-विषयों का त्याग बिना कामना-त्याग क्षणिक होता है, चाहे हम कैसा ही प्रयास क्यों न करें। **—महात्मा गाँधी**

जो प्रकाश में अदृश्य रहता है और जिसका अंधकार में ही अनुभव होता है—उसी के लिए मेरी आकांक्षा है। **—रवीन्द्र**

आकांक्षा अयोग्यता का लक्षण है। **—जैनेन्द्र**

आक्षेप

जब तक हम स्वयं निरपराध न हों तब तक दूसरों पर कोई आक्षेप सफलता के साथ नहीं कर सकते। **—सरदार पटेल**

आग

आग आग से नहीं पानी से शांत होती है। **—प्रेमचन्द (कर्मभूमि)**

आग में पिघलकर सभी वस्तुएँ एक सी होती हैं। **—प्रेमचन्द (कायाकल्प)**

अग्नि देवताओं का मुख है, अग्नि में डाली गयी सोमरस की आहुतियाँ देवताओं को पहुँच जाती हैं। —अज्ञात

आचरण

Man is worse than animal when he is an animal. —**R. N. Tagore**

मनुष्य जिस समय पशु-तुल्य आचरण करता है उस समय वह पशुओं से भी नीचे गिर जाता है। —रवीन्द्र

Behaviour is a mirror in which every one displays his image. —**Goethe**

आचरण एक दर्पण के सदृश है जिसमें हर मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब दिखाता है। —गेटे

आचरण और सत्यता के लिए आर्य-जाति चिरकाल से प्रसिद्ध है। —मेगस्थेनीज

A beautiful behaviour is better than a beautiful form; it gives a higher pleasure than statues and pictures, it is the finest of fine art. —**Emerson**

सुन्दर आचरण, सुन्दर शरीर से अच्छा है, मूर्ति और चित्र की अपेक्षा यह उच्चकोटि का आनंद देता है। यह कलाओं में सुन्दरतम कला है। —एमर्सन

आचरण भाव का प्रकट रूप है। —यशपाल

जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान कर लिया। —विनोबा

शास्त्र पढ़कर भी लोग मूर्ख होते हैं, किन्तु जो उसके अनुसार आचरण करता है, वस्तुतः वही विद्वान् है। रोगियों के लिए भली-भाँति सोच कर निश्चित की हुई औषधि नाम उच्चारण करने मात्र से (बिना खिलाये) किसी को नीरोग नहीं कर सकती। —हितोपदेश

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

श्रेष्ठ पुरुष जो जो करता है अन्य पुरुष भी उसके अनुसार व्यवहार करते हैं। वह जो आदर्श स्थापित कर देता है, लोग उसके अनुसार चलते हैं।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता ३/२१)

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम् ।
चारित्र्यमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाशुचिम् ॥

मनुष्य का आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर है या कायर, अथवा पवित्र है या अपवित्र। **—वाल्मीकि (रा०)**

आचार

आचारादायुर्वर्धते कीर्तिश्च

आचार से आयु बढ़ती है, और कीर्ति भी। **—कौटिल्य**

विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अंधा हो जाता है। **—संत विनोबा**

आचारः परमो धर्मः

आचार ही परम धर्म है। **—अज्ञात**

शौर्य, दान, विद्या, विनय, सत्य, धर्म, व्यवहार ।
भरत खंड दिशि-दिशि विदित, भरतवंश आचार ॥

—द्वारका प्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

आज

न कश्चिदपि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति ।
अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान् ॥

यह कोई नहीं जानता है कि कल किसको क्या होगा। अतः बुद्धिमान् को कल जो करना हो सो आज ही कर लेना चाहिए। **—अज्ञात**

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब ।
पल में परलय होयगा, बहुरि करोगे कब्ब ॥ **—कबीर**

आजादी

तुम मुझको खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा। **—सुभाषचन्द्र बोस**

Freedom of speech, freedom of religion, freedom from want and freedom from fear. **—F. D. Roosevelt**

विचारों की स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता, अभावों से स्वतंत्रता और भय से स्वतंत्रता (ये चार प्रत्येक व्यक्ति को मिलनी चाहिए)। **—रूजवेल्ट**

We gain freedom when we have paid the full price for our right to live. **—R. N. Tagore**

हम आजादी पाते हैं जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। **—रवीन्द्र**

सिद्धान्त, धर्म, कुछ और चीज, आज़ादी है कुछ और चीज।
सब कुछ हैं तरु-डाली-पत्ते, आजादी है बुनियाद चीज॥
इसलिये वेद गीता कुरान दुनिया ने लिक्खे स्याही से।
लेकिन लिक्खा आजादी का इतिहास रुधिर की धारा से॥

—गोपाल सिंह नेपाली

The road to freedom is not strewn with roses. It is a path covered with thorns, but at the end of it, there is the full-blown rose of liberty, awaiting the tired pilgrim. **—Subhas C. Bose**

आजादी का मार्ग फूलों की सेज नहीं है। इस पथ पर काँटे बिछे हैं, लेकिन इसके अंत में आजादी का पूर्ण विकसित फूल, आने वाले थके यात्री की प्रतीक्षा करता है। **—सुभाषचन्द्र बोस**

No amount of political freedom will satisfy the hungry masses. **—Lenin**

कितनी ही राजनीतिक स्वतंत्रता हो वह भूखी जनता को संतुष्ट नहीं कर सकती। **—लेनिन**

आज्ञा-पालन

अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु-बैन।
ते भाजन सुख सुजस के, बसहिं अमरपति-ऐन॥

—तुलसी (मानस, अयो०)

Wicked men obey from fear; good men from love.

—Aristotle

दुष्ट स्वभाव के मनुष्य भय से आज्ञा-पालन करते हैं, और अच्छे स्वभाव वाले प्रेम से। **—अरस्तू**

Let them obey, that know not how to rule. **—Shakespeare**

जो मनुष्य शासन करना नहीं जानते, वे आज्ञापालन करना सीखें।

—शेक्सपियर

आत्म-अनुभव

अपनी आत्मा पर अपने आप को एकाग्र करो, तुरन्त ही उसी क्षण आत्मानुभव की प्राप्ति होगी। **—स्वामी रामतीर्थ**

आत्म-कथा

It is a hard and nice subject for a man to write of himself: it grates his own heart to say anything of disparagement, and the reader's ears to hear anything of praise for him.

—Abraham Cowley (*Quoted by J. Nehru in his Autobiography*)

किसी मनुष्य के लिए अपनी आत्म-कथा लिखना एक कठिन तथा नाजुक विषय है। यदि वह अपनी निन्दा करे तो उसके दिल में चोट-सी लगती है और यदि वह अपनी प्रशंसा करे तो पाठकों के कानों में उसकी बातें खटकती हैं।

—अब्राहम काउले

आत्मवृत्तात्मक लेखन सब से नाजुक लेखन होता है। हम अपने कर्म और कुकर्म सबके सामने स्वीकार नहीं करना चाहते। हम अपनी विफलताओं की अपेक्षा अपनी सफलताएं, अपनी हानि से बढ़कर उपलब्धियां दूसरों को दिखाना पसंद करते हैं। **—डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

प्रत्येक आत्मकथा पीड़ा का इतिहास है क्योंकि प्रत्येक जीवन महान् और छोटे दुर्भाग्य का क्रमिक विकसित रूप है। **—शोपेनहार**

अपने विषय में कुछ कहना प्रायः बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि अपने दोष देखना अपने आपको अप्रिय लगता है और उनको अनदेखा करना औरों को।

—महादेवी वर्मा (यामा)

आत्म-गौरव

मानवजीवन का मन्थन करने पर जो अमृत निकलता है उसका नाम आत्म-गौरव है। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

आत्मगौरव नष्ट करके जीना मृत्यु से भी बुरा है। **—भर्तृहरि**

आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षा की, आत्मगौरव की भूख शारीरिक भूख की अपेक्षा कई गुनी तीव्र, आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

बेईमानी का आचरण करके जिस प्रकार मनुष्य अपना स्वाभिमान खो देता है, उसी प्रकार अत्याचारी के आगे नाक रगड़ने से भी आत्मगौरव नष्ट होता है।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

आत्म-ज्ञान

आत्मज्ञानं परं ज्ञानम्

आत्मज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान है। **—वेद व्यास (महा० शा०)**

वेद से उत्पन्न आत्मज्ञान संसार का हरने वाला है और मोक्ष का कारण कहा गया है। **—स्वामी शंकराचार्य**

जिसने अपने को समझ लिया वह दूसरों को समझाने नहीं जायगा।

—धम्मपदं

जिस अवस्था में इसके लिए सब कुछ आत्मा ही हो जाता है, उस समय किसके द्वारा किसको देखें, किसके द्वारा किसको सूँघे, किसके द्वारा किसको सुने तथा किसके द्वारा किसको जाने। **—बृहदारण्यक उपनिषद्**

तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योः

उस आत्मा को ही जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता। **—ऋग्वेद**

जिसने समत्वरूपी योग द्वारा कर्मों का अर्थात कर्मफल का त्याग किया है और ज्ञान द्वारा संशय को छेद डाला है, वैसे आत्मज्ञानी को कर्म बन्धन रूप नहीं होते। **—भगवान श्रीकृष्ण (गीता, ४-४१)**

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्तव्य है। **—स्वामी रामतीर्थ**

हमें अपनी आत्मा का ज्ञान चरित्र से ही मिल सकता है। **—महात्मा गांधी**

केवल आत्मज्ञान ही ऐसा है जो हमें सब जरूरतों से परे कर सकता है।
—स्वामी रामतीर्थ

जैसे स्वप्न में काटे गये सिर का दुःख बिना जागे दूर नहीं होता, इसी प्रकार इस संसार का दुःख बिना आत्मज्ञान हुए दूर नहीं होता। **—स्वामी भजनानन्द**

संसार स्वप्न की तरह है। जिस प्रकार जागने पर स्वप्न झूठा प्रतीत होता है, उसी प्रकार आत्मा का ज्ञान होने पर यह संसार मिथ्या मालूम होता है।
—याज्ञवल्क्य

आत्म-तत्त्व

आत्मतत्त्व को प्राप्त करना अखिल विश्व का स्वामी बनना है।
—स्वामी रामतीर्थ

आत्म-तृप्त

जो निष्काम है, वही आत्म-तृप्त है। आत्म-तृप्त को दुःख और सुख की बाधा नहीं होती।

इस जगत में—

"सुखस्यान्तरं दुःखं दुःखस्यान्तरं सुखम्।"

सुख के पीछे है दुःख, दुःख के पीछे सुख रहता है।
मानव तू हो न निराश, सृष्टि का नियम यही कहता है॥

—दीनानाथ दिनेश (गीता-ज्ञान)

आत्म-दर्शन

पीड़ा से दृष्टि मिलती है। इसलिए आत्मपीड़न सही आत्मदर्शन का माध्यम है। **—अज्ञेय**

मनुष्य-जीवन का उद्देश्य आत्म-दर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य एवं एक-मात्र उपाय पारमार्थिक भाव से जीवमात्र की सेवा करना है। **—महात्मा गांधी**

आत्म-दर्शन अपने को ईश्वर के हाथों सौंप देने पर शून्य ध्यान द्वारा हो जाता है। **—वृन्दावनलाल वर्मा (कचनार)**

आत्म-निर्भरता

The basis of all progress is self-reliance. **—C. Humphreys**

समस्त उन्नति का आधार आत्मनिर्भरता है। **—सी० हम्फ्रेज**

आत्म-प्रशंसा

आत्म-प्रशंसा ओछेपन का चिह्न है। **—महात्मा गांधी**

जिन्हें कहीं से प्रशंसा नहीं मिलती वे आत्म-प्रशंसा करते हैं। **—अज्ञात**

आत्म-बल

आवेश और क्रोध को वश में कर लेने पर शक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्मबल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है। **—महात्मा गांधी**

जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊब कर क्षण प्रतिक्षण अपने मन बदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं—उनमें आत्म-बल नहीं। **—सुभाषचन्द्र बोस**

आत्मबल की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि इतने युद्धों के बावजूद दुनिया अभी कायम है। **—महात्मा गांधी (हिन्द-स्वराज्य)**

आत्म-रक्षा

आपदर्थे धनं रक्षेद् दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्, दारैरपि धनैरपि॥ **—चाणक्य**

आपत्ति के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए, धन से स्त्री की रक्षा करनी चाहिए, किन्तु धन और स्त्री दोनों से सदा अपनी रक्षा करनी चाहिए।

आत्म-विजय

जिसने अपने को वश में कर लिया है, उसकी जीत को देवता भी हार में नहीं बदल सकते। **—भगवान् बुद्ध**

आत्म-विजय अनेक आत्मोत्सर्गों से भी श्रेष्ठतर है। **—स्वामी शिवानन्द**

आत्म-विश्वास

आत्म-विश्वास में वह शक्ति है जो सहस्र विपत्तियों का सामना कर उन पर विजय प्राप्त कर सकती है। **—स्वेट मार्डेन**

सर्वप्रथम आत्म-विश्वास करना सीखो। **—स्वामी विवेकानन्द**

अपने ऊपर विश्वास रखो; यह विश्वास ही वह अटूट तार है जिसके सहारे हृदय स्पन्दित होता है। **—एमर्सन**

Self-trust is the first secret of success. **—Emerson**

आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है। **—एमर्सन**

Remember, you are the most necessary man on earth.
—Maxim Gorky

यह आत्मविश्वास रखो कि तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो।
—मैक्सिम गोर्की

The way to develop Self-confidence is to do the thing you fear to do and get a record of a successful experience behind you. **—Dale Carnegie**

आत्म-विश्वास बढ़ाने की रीति यह है कि तुम वह काम करो जिसे तुम करते हुए डरते हो। इस प्रकार ज्यों-ज्यों तुम्हें सफलता मिलती जायगी तुम्हारा आत्म-विश्वास बढ़ता जायगा। **—डेल कारनेगी**

आत्म-विश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं। आत्म-विश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है। **—स्वामी विवेकानन्द**

हमारी मानसिक शक्तियाँ हमारे आत्मविश्वास और धैर्य पर अवलम्बित रहती हैं। **—स्वेट मार्डेन**

जब मनुष्य स्वयं आत्म-विश्वास खो बैठता है तो उसके पतन का सिरा खोजने से भी नहीं मिलता। **—अज्ञात**

जो मनुष्य आत्म-विश्वास से सुरक्षित है वह उन चिन्ताओं, आशंकाओं से मुक्त रहता है, जिनसे दूसरे आदमी दबे रहते हैं। **—स्वेट मार्डेन**

जिस मनुष्य में आत्म-विश्वास नहीं है वह शक्तिमान् होकर भी कायर है और पण्डित होकर भी मूर्ख है। **—राम प्रताप त्रिपाठी**

आत्म-विश्वास की कमी ही हमारी बहुत-सी असफलताओं का कारण होती है, शक्ति के विश्वास में ही शक्ति है। वे सबसे कमजोर हैं, चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों, जिन्हें अपने आप तथा अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं है। **—बो वी**

आत्म-विश्वास के द्वारा दुर्गम पथ भी सुगम हो जाता है। **—राम प्रताप त्रिपाठी**

आत्म-विश्वास की मात्रा हममें जितनी अधिक होगी उतना ही हमारा सम्बन्ध अनन्त जीवन और अनन्त शक्ति के साथ गहरा होता जायगा। **—स्वेट मार्डेन**

Self-trust is the essence of heroism. **—Emerson**

आत्म-विश्वास पराक्रम का सार है। **—एमर्सन**

बांह छुड़ाये जात हो निबल जानि कै मोय।
जो हिरदै तै जाओगे सबल बदोंगो तोय॥ **—सूरदास**

Self-reverence, Self-knowledge, Self-control, these three alone lead life to Sovereign power. **—Tennyson**

आत्म-विश्वास, आत्म-ज्ञान और आत्म-संयम, केवल यही तीन जीवन को परम शक्ति-सम्पन्न बना देते हैं। **—टेनीसन**

आत्म-सम्मान

हमें सबसे पहले आत्म-सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। हम कायर और दब्बू हो गये हैं, अपमान और हानि चुपके से सह लेते हैं। ऐसे प्राणियों को तो स्वर्ग में भी सुख नहीं प्राप्त हो सकता। **—प्रेमचन्द**

जिस प्रकार दूसरों के अधिकार की प्रतिष्ठा करना मनुष्य का कर्तव्य है, उसी प्रकार से अपना मान धारण रखना भी उसका कर्तव्य है। **—स्पेन्सर**

बिना अपनी स्वीकृति के कोई मनुष्य आत्म-सम्मान नहीं गँवाता। **—महात्मा गांधी**

आत्म-सम्मान करना सफलता की सीढ़ी पर पग रखना है।

—रामप्रताप त्रिपाठी

आत्म-सम्मान के लिए मर मिटना ही दिव्य जीवन है।

—जयशंकर प्रसाद (चन्द्रगुप्त)

आत्म-हत्या

It is Cowardice to commit suicide. **—Napoleon**

आत्म-हत्या करना कायरता है। **—नेपोलियन**

Against self-slaughter, there is a prohibition so divine that cravens my weak hand. **—Shakespeare**

आत्महत्या के विरुद्ध एक दिव्य निषेध है जो हमारे कमजोर हाथों को डरा देता है। **—शेक्सपियर**

युवा पुरुष के लिए असफल प्रेम पर अपना जीवन बलिदान करना आत्म-हत्या करना है। **—भगवतीचरण वर्मा (चित्रलेखा)**

आत्महीनता

मृत्यु दुखदायी मानी जाती है, परन्तु वह जीवन में एक बार ही दुख देती है, लेकिन आत्म-हीनता ऐसी मृत्यु है जो पल-पल पर आती है और तिल-तिल करके आन्तरिक शान्ति को जलाती रहती है। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

आत्महनन करने वाले जन,
जो हैं अज्ञानी सम्भ्रान्त।
अन्धकारमय असुर लोक,
वे पाते मरने के उपरान्त॥

—(दीनानाथ भार्गव दिनेश)

पाप, अनीति और अत्याचार के सम्मुख सिर झुकाना अपनी आत्मा का अपमान और हनन करना है। **—पं० कमलापति त्रिपाठी**

आत्मा

मत्वा धीरो न शोचति —कठोपनिषद्

आत्मा को जानकर बुद्धिमान् मनुष्य शोक नहीं करता।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता २।२३)

आत्मा न कटता शस्त्र से है, आग से जलता नहीं।
सूखे न आत्मा वायु से, जल से कभी गलता नहीं।

—पद्यानुवादक दीनानाथ 'दिनेश'

आत्मैवेदं सर्वम्।

आत्मा ही यह सब है। **—छान्दोग्य उपनिषद्**

अयमात्मा ब्रह्म।

यह आत्मा ही ब्रह्म है। **—बृहदा० उपनिषद्**

मैं तो आत्मा की अमरता पर विश्वास करता हूँ। जीवन के सागर में हम सब बिन्दु-मात्र हैं और जीवन की वास्तविकता ही सत्य है, आत्मा है, परमात्मा है।

—महात्मा गांधी

हमारी आत्मा अमर है। **—सुकरात**

आत्मा को रथ में बैठा हुआ योद्धा जान, शरीर को रथ जान, बुद्धि को सारथि जान और मन को लगाम जान। **—कठोपनिषद्**

आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त शरीर का आश्रय लेता हैं और एक देह से दूसरी देह में जाता है। भौतिक शरीर आत्मा को धारण करने के लिए विवश होता है। **—गेटे**

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्, नान्यत्किञ्चन मिषत्। स ऐक्षत लोकान्नु सृजा इति। **—ऐतरेय ब्राह्मण**

छेदत शस्त्र न अनल जरावत। भिजवत वारि न वात सुखावत।
छिदत जरत भीजत नहिं सूखत। चिर पुराण नित अचल सर्वगत॥

—द्वारका प्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

यह सारा जगत पूर्व में आत्मा ही था, अन्य कोई तत्व नहीं था; उस आत्मा ने अपनी इच्छा से लोक का सृजन किया।

न जायते म्रियते वा विपश्चि—
न्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

नित्य चैतन्य रूप आत्मा न उत्पन्न होता है न मरता है; न यह किसी से हुआ है और न इससे कोई हुआ है—अर्थात् इसका कारण या कार्य नहीं है। यह अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है और पुराण है; शरीर के मारे जाने पर भी यह मरता नहीं है। **—कठोपनिषद्**

घटावभासको भानुर्घटनाशे न नश्यति।
देहावभासकः साक्षी देहनाशे न नश्यति ॥

जैसे घड़े का प्रकाशक सूर्य, घड़े के नाश हो जाने पर नष्ट नहीं होता, वैसे ही देह का प्रकाशक आत्मा देह के नष्ट होने पर नष्ट नहीं होता। **—आत्मप्रबोध उप०**

जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अलग-अलग घरों में जाकर भिन्न नहीं हो जाता, उसी प्रकार ईश्वर की महान् आत्मा पृथक-पृथक जीवों में प्रविष्ट होकर विभिन्न नहीं होती। **—प्रेमचन्द**

जितनी प्रिय वस्तुएं हैं उनमें आत्मा ही प्रधान है और भगवान् हरि ही उन सबमें आत्मारूप में स्थित हैं, अतः उनसे बढ़कर प्रिय वस्तु और कौन हो सकती है। **—नारद मुनि**

अहमिन्द्रो न पराजिग्ये।

मैं आत्मा हूँ, मुझे कोई हरा नहीं सकता। **—ऋग्वेद**

आत्मा वह अक्षय और अमर तत्त्व है जो अपनी चिरन्तनता के कारण जन्म और मृत्यु की सीमा से परे है। **—पं० कमलापति त्रिपाठी**

य आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसंकल्पः सोऽन्वेष्टव्यः स विजिज्ञासितव्यः। **—छान्दोग्योपनिषद्**

जो आत्मा पापरहित, जरारहित, मृत्युरहित, शोकरहित, भूखरहित, प्यास

रहित, सत्यकाम, सत्यसंकल्प है, उसे खोजना चाहिए, उसे जानने की इच्छा करनी चाहिए ।

आत्मा को आत्मा ही की आवाज जगा सकती है । **—प्रेमचन्द (कायाकल्प)**

आत्मा जितनी भ्रष्ट होती जाती है मस्तिष्क उतना ही संकुचित होता जाता है । **—रूसो**

जिसकी आत्मा पवित्र हो वही ऊंचा है । **—प्रेमचन्द**

आत्मा आध्यात्मिक भवन पर बहुत ऊँची चढ़ जाती है ।
—स्वेट मार्डेन (दिव्य जी०)

आदत

उपभोक्तुं न जानाति श्रियं प्राप्यापि मानवः ।
आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया ॥

मनुष्य सम्पत्ति प्राप्त हो जाने पर भी उसका उपभोग नहीं जानता अर्थात् जैसी आदत रहती है उसी के अनुसार खर्च करता है । जैसे गर्दन भर पानी में डूबा हुआ भी कुत्ता जीभ से चाट कर ही पानी पीता है । **—अज्ञात**

नीम गुड़ के साथ खाने पर भी अपनी कड़ुवाहट नहीं छोड़ती, इसी तरह नीच सज्जनों के साथ रह कर भी अपनी आदत से बाज नहीं आता ।
—रामप्रताप त्रिपाठी

आदत भी एक तरह की आंख है । **—अमृत लाल नागर (खंजन नयन)**

आदर्श

ऊँचा आदर्श क्षुद्र स्वार्थों और मूढ़-ग्राहों को भुलावा देता है ।
—डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

Great objects from great minds. **—Emmons**

महान् आदर्श महान् मस्तिष्क का निर्माण करते हैं । **—इमन्स**

Ideals are the world's masters. **—J. G. Holland**

आदर्श विश्व के पथ-प्रदर्शक होते हैं । **—जे० जी० हालैण्ड**

विचार या भाव ही मनुष्य को उत्तेजित करते हैं, आदर्श ही लोगों को मृत्यु तक का सामना करने को तैयार करते हैं। **—स्वामी विवेकानन्द**

जो आदर्श हमने सच्चे अन्तःकरण से बनाया है; मन, वचन और काया एक करके जिस आदर्श की सृष्टि की है, वह अवश्य ही हमारे सामने सत्य के रूप में प्रकट होगा। **—स्वेट मार्डेन**

जो आदर्श हमें क्रोध एवं मोह से बचने को कहता है, मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्र बनने को कहता है। वह पाप एवं दुःख से पूर्ण जीवन के थपेड़ों से व्यग्र मानव के लिए असम्भव आदर्श है। **—डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

आदर्श की ओर यात्रा करने वाला व्यक्ति सदा मुक्त रहता है, उसका स्वभाव खुलता ही जाता है। जबकि आदर्शवादी व्यक्ति अपने स्व के घेरे को और मजबूत ही बनाता है। **—जैनेन्द्र (श्रेय और प्रेय)**

आनन्द

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्—आनन्दाद् ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते—आनन्देन जातानि जीवन्ति—आनन्दं प्रयन्त्यभि संविशन्तीति। **—उपनिषद्**

आनन्द ही ब्रह्म है, यह जान; आनन्द से ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होने पर आनन्द से ही जीवित रहते हैं और मृत्यु से आनन्द में समा जाते हैं।

जो वस्तु आनन्द नहीं प्रदान कर सकती, वह सुन्दर नहीं हो सकती, और जो सुन्दर नहीं हो सकती वह सत्य भी नहीं हो सकती। जहां आनन्द है वहीं सत्य है। **प्रेमचन्द (मानसरोवर)**

सुख-दुःख देनेवाली बाहरी चीजों पर आनन्द का आधार नहीं है। आनन्द सुख से भिन्न वस्तु है। मुझे धन मिले और मैं उसमें सुख मानूं यह मोह है। मैं भिखारी होऊँ, खाने का दुःख हो, फिर भी मेरे इस चोरी या किन्हीं दूसरे प्रलोभनों में न पड़ने में जो बात मौजूद है वह मुझे आनन्द देती है। **—महात्मा गांधी**

विज्ञानमानन्दं ब्रह्म।

विज्ञान और आनन्द ब्रह्म ही है। **—बृहदारण्यक उपनिषद्**

दीपक जैसे घर को जगमगा देता है, आनन्द उसी तरह जीवन को उज्ज्वलता

से भर देता है। आनन्द की अनुभूति जीवन की समस्त जड़ता मिटा देती है। आनन्द हमारे लिए वह पारस है जिसके छूने से जीवन की प्रत्येक वस्तु सोना बन जाती है। **—गुलाबरत्न बाजपेयी**

आनन्द का स्रोत अपने अन्दर है और उसे अपने अन्दर से ही ढूंढ़ निकालना होगा। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

नित्य हँसमुख रहो, मुख को कभी मलिन न करो, यह निश्चय कर लो कि शोक ने तुम्हारे लिए जगत् में जन्म ही नहीं लिया है। आनन्द-स्वरूप में सिवा हँसने के चिन्ता को स्थान ही कहां है। **—हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी'**

आनन्द ही एक ऐसी वस्तु है, जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को बिना किसी असुविधा के दे सकते हैं। **—कारमेन सिल्वा**

पुरुष और प्रकृति के मिलन पर ही सृष्टि प्रारम्भ होती है। संगीत पुरुष है और नृत्य प्रकृति है। इन दोनों के मिलाप पर ही आनन्द की सृष्टि होती है। **—डा० राम कुमार वर्मा**

All who would win joy, must share it; happiness was born a twin. **—Byron**

उन सभी लोगों को जो आनन्द चाहते हैं, आनन्द बांटना चाहिए क्योंकि आनन्द जुड़वा पैदा हुआ था। **—बायरन**

आनन्द तो मनुष्य का अपना स्वरूप है। आनन्द तो उसके अन्दर ही है। फिर भी आनन्द को मनुष्य अपने बाहर ही खोजता है। मनुष्य नारी देह, धन-सम्पत्ति आदि में आनन्द खोजता है।

—रामचंद्र डोंगरे, शास्त्री (श्रीमद्भागवत रहस्य)

आनन्द का अन्तरण सरलता है, वहिरंग सौन्दर्य है, इसी से वह स्वस्थ रहता है। **—जयशंकर प्रसाद (एक घूंट)**

एन्थोनी ने प्रेम में, ब्रूटस ने कीर्ति में और सीजर ने साम्राज्य-शासन के विस्तार में आनन्द ढूंढ़ा। प्रथम को अपमान, द्वितीय को घृणा और तृतीय को कृतघ्नता मिली एवं प्रत्येक नष्ट हो गया। संसार की सभी वस्तुएँ जब अनुभव के तराजू पर तोली गयीं तो सबकी सब निकम्मी निकलीं अर्थात् सबके सब निस्सार

प्रतीत हुए। केवल आत्मज्ञान ही हृदय को आनन्द देने वाला निकला।

—स्वामी रामतीर्थ

जीवन का आनन्द गौरव के साथ, सम्मान के साथ, स्वाभिमान के साथ जीने में है। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

सुख या आनन्द कर्म के रूप में रहता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़केंगे उतनी ही सुगंध आपके भीतर समायेगी। **—एमर्सन**

आनन्द के उल्लास की मात्रा ही जीवन है। **—जयशंकर प्रसाद (इरावती)**

आपत्ति

पांच रूप पांडव भए, रथ-वाहक नलराज।
दुरदिन परै 'रहीम' कहि, बड़ेन किये घटि काज॥ **—रहीम**

दुनिया के जितने बड़े आदमी हुए हैं—धनिक हों, राजनीतिज्ञ हों, कलाकार हों— कठोर अनुभव और विपदाओं से गुजरे बिना उन्नति नहीं हुई है। शिल्पकार की हथौड़ी के प्रहार सहे बिना देवता की मूर्ति बनती ही नहीं।

—अनंतगोपाल शेवड़े

Gold is tired by fire, brave men by adversity. **—Seneca**

अग्नि सोने को परखती है, आपत्ति वीर पुरुष को। **—सेनेका**

विपति बराबर सुख नहीं, जो थोरे दिन होय। **—रहीम**

कसें कनकु मनि पारिखि पाये।
पुरुष परखियहि समय सुभाये॥ **तुलसी (मा०-आ०)**

हम तकलीफ में बहुत जल्द झुंझला उठते हैं। गर्म पानी को उबलने के लिए तेज आंच की आवश्यकता नहीं, हलकी सी आँच ही काफी है। **—सुदर्शन**

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी॥ **—तुलसी (मानस)**

सदा सर्वदा सहज मंगल-साधन करते हुए भी जो आपत्ति आ पड़े तो उसे ईश्वर की इच्छा ही समझ कर संतोष करना चाहिए। **—अज्ञात**

To overcome difficulties is to experience the full delight of existence. **—Schopenhauer**

आपत्तियों पर विजय पाना ही जीवन के आनन्द की पराकाष्ठा का अनुभव करना है। **—शॉपेनहावर**

आपत्तियाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वे हमें दिखा देती हैं कि हम किसी मिट्टी के बने हैं। **—जवाहरलाल नेहरू**

मनुष्य आपत्तियों का लक्ष्य बनने के लिए ही जन्मा है, अतएव बुद्धिमान् मनुष्य को आपत्ति से घबराना नहीं चाहिए। **—कन्फ्यूशियस**

आपत्तियाँ मनुष्यता की कसौटी हैं, बिना इनसे खरा उतरे कोई सफल नहीं हो सकता। **—पं० रामप्रताप त्रिपाठी**

एक आपत्ति अनेक आपत्तियों की जननी होती है। **—पं० रामप्रताप त्रिपाठी**

आपत्ति 'मनुष्य' बनाती है और सम्पत्ति 'राक्षस'। **—विक्टर ह्यूगो**

आभूषण

आभूषणों से स्त्रियाँ नहीं सजतीं, वह सजतीं हैं अपने गुणों से, अपने रूप से, अपने मन की निर्मलता से, अपने स्वभाव की पवित्रता से। **—अज्ञात**

लज्जा और विनय ही भारत की देवियों का आभूषण है। **—प्रेमचन्द**

सुन्दर आकृति वालों के लिए आभूषण की आवश्यकता नहीं है। **—कालिदास**

वाणी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो अन्य आभूषणों के सदृश कभी घिसता नहीं। **—भर्तृहरि**

नारी का सतीत्व ही उसका आभूषण है। **—अज्ञात**

नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण होते हैं। शेष सब नाममात्र के भूषण हैं। **—संत तिरुवल्लुवर**

आभूषणों से आत्मा ऊँची नहीं हो सकती। **—प्रेमचन्द**

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तपसः क्षमा बलवतां धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का वाक्संयम, ज्ञान का शान्ति, कुल का विनय, धन का सुपात्र के लिए व्यय, तपस्वी का भूषण क्रोध न करना, बलवान् का क्षमा, धर्म का निश्छलता और सब गुणों का आभूषण केवल शील है।

—भर्तृहरि

आय

अपार धनशाली कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो कंगाल हो जाता है। **—चाणक्य**

धर्म की कमाई में बल होता है। **—प्रेमचन्द**

ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। **—प्रेमचन्द**

सच्ची कमाई उन्हीं की है जो छाती फाड़कर धरती से धन निकालते हैं।

—प्रेमचन्द

आयु

अहोरात्राणि गच्छन्ति सर्वेषां प्राणिनामिह।
आयूंषि क्षपयन्त्याशु ग्रीष्मे जलमिवांशवः ॥ **—वाल्मीकि-रा० अयोध्या०**

दिन रात लगातार बीत रहे हैं और संसार में सभी प्राणियों की आयु का तीव्र गति से नाश कर रहे हैं—ठीक उसी तरह, जैसे सूर्य की किरणें गर्मी में शीघ्रतापूर्वक जल को सुखाती रहती हैं।

आयु पल-पल क्षीण हो रही है। यह न समझ कर मूर्ख मनुष्य बिना विचारे ममता करता रहता है। धन में आसक्त होकर नर अमर पुरुष की तरह रात-दिन उसके लिए परिताप करता है। यह कितना बड़ा दुस्साहस है।

—भगवान महाबीर (कृतांग सूत्र)

मैं अपने जीवन में पूर्ण आयु प्राप्त करूँ। **—अथर्व**

At 20 years of age the will reigns; at 30 the wit, at 40 the judgement. —Franklin

बीस वर्ष की आयु में संकल्प शासन करता है, तीस वर्ष में बुद्धि, चालीस वर्ष में विवेक। —फ्रैंकलिन

आयुर्वेद

शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा के संयोग को आयु कहते हैं और जिस शास्त्र में आयु का ज्ञान और उसकी प्राप्ति होती है उसे आयुर्वेद कहते हैं।

—हरिदास वैद्य

जिससे आयु के हिताहित का ज्ञान और उस का परिणाम मालूम हो उसे आयुर्वेद कहते हैं। —चरक मुनि

आरत

आरत काह न करइ कुकरमू। —तुलसी

आरत कहहिं बिचार न काऊ
सूझ जुआरिहिं आपन दाऊँ। —तुलसी

रहत न आरत के चित चेतू। —तुलसी

आरोग्य

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उत्तम साधन आरोग्य है। —चरक संहिता

आरम्भ

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्यमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

—भर्तृहरि

नीच लोग विघ्न के भय से कोई कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न पड़ने पर बीच में ही छोड़ देते हैं, किन्तु उत्तम लोग बारम्बार विघ्न पड़ने पर भी आरम्भ किये हुए काम को बीच में नहीं छोड़ते।

The beginning is the most important part of the work.

—Plato

किसी कार्य का आरम्भ उसका सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है। **—प्लेटो**

Well-begun is half-done.

यदि आरम्भ अच्छा हुआ तो समझिए कि आधा काम पूरा हो गया।

What you can do, or dream you can, begin it; boldness has genius, power and magic in it; only engage and then the mind grows heated; begin and then the work will be completed.

—Goethe (Faust)

जिस काम को तुम कर सकते हो या कल्पना करते हो कि तुम कर सकोगे, उसको आरम्भ करो; साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है। सिर्फ काम में जुट जाओ, मस्तिष्क में वेग आ जायगा। आरम्भ करो, कार्य समाप्त होगा

—गेटे (फास्ट)

आराम

आराम है हराम। **—जवाहरलाल नेहरू**

बहुत ज्यादा आराम स्वयं दर्द बन जाता है। **—होमर**

Most of our comforts grow up between our crosses.**—Young**

हमारे बहुत से आराम की उत्पत्ति विपत्ति के समय होती है। **—यंग**

आराम उनके प्रति विश्वासघात है जो इस संसार से चले गये हैं और जाते समय स्वतंत्रता का दीप सदा प्रज्ज्वलित रखने के लिए हमें दे गये हैं। यह उस ध्येय के प्रति विश्वासघात है जिसे हमने अपनाया है और जिसे प्राप्त करने की हमने प्रतिज्ञा की है। यह उन लाखों के प्रति विश्वासघात है जो कभी आराम नहीं करते। **—जवाहरलाल नेहरू**

आलस्य

आलस्य वह राजरोग है जिसका रोगी कभी नहीं सँभलता।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

आलस्य आपके लिए मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है।
—स्वामी रामतीर्थ

भूत्यै जागरणम् अभूत्यै स्वप्नम्। —यजुर्वेद

जागना (ज्ञान) ऐश्वर्यप्रद है। सोना (आलस्य) दरिद्रता का मल है।

उच्चकुलरूपी दीपक, आलस्यरूपी मैल लगने पर प्रकाश में घटकर बुझ जायगा। —संत तिरुवल्लुवर

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न सुप्ताय स्पृहयन्ति। —ऋग्वेद

देवता यज्ञकर्ता, पुरुषार्थी तथा भक्त को चाहते हैं, आलसी से प्रेम नहीं करते।

आलसियों की तरह जीने से समय और जीवन पवित्र नहीं किये जा सकते।
—रस्किन

आलस्य को अपना एकमात्र शत्रु समझनेवाला कर्तव्य-परायण व्यक्ति ही वर्तमान परिस्थिति का सदुपयोग करते हुए उसे अपने अनुकूल बना लेता है।
—अज्ञात

दुनिया में आलस्य बढ़ाने-सरीखा दूसरा भयंकर पाप नहीं है। —विनोबा

In idleness alone there is perpetual despair. —**Carlyle**

एकमात्र आलस्य में ही निरन्तर निराशा रहती है। —कार्लाइल

Idleness is the key of beggary and root of all evil.
—**Spurgeon**

आलस्य दरिद्रता की कुंजी और सारे अवगुणों की जड़ है। —स्परजन

Idleness is the burial of a living man. —**Jeremy Tayler**

आलस्य जीवित मनुष्य को दफना देता है। —जैरेमी टेलर

Idleness is only the refuge of weak minds, and the holiday of fools. —**Chesterfield**

आलस्य दुर्बल मन वालों का एकमात्र शरण है, और मूर्खों का अवकाश दिवस। —चेस्टरफील्ड

आलस्यं स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम्।
संतोषो भीरुत्वं षड् व्याघाता महत्त्वस्य॥ —हितोपदेश

आलस्य, स्त्री की सेवा, रोगी रहना, जन्मभूमि का स्नेह, संतोष और डरपोकपन ये छः बातें उन्नति के लिए बाधक हैं।

आलस्य में दरिद्रता का वास है मगर जो आलस्य नहीं करता उसके परिश्रम में कमला बसती हैं। —संत तिरुवल्लुवर

अगर तूने स्वर्ग और नरक नहीं देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है। —अज्ञात

आलस्य सब कामों को कठिन और परिश्रम सबको सरल कर देता है।

—अज्ञात

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति। —भर्तृहरि

आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहनेवाला सबसे बड़ा शत्रु है, उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नहीं है जिसके करने से मनुष्य दुखी नहीं होता।

आलस्य परमेश्वर के दिये हुए हाथ-पैरों का अपमान है। —अज्ञात

परिश्रम ऋण को चुकाता और आलस्य उसे बढ़ाता है। —विनोबा

आलस्य से ही दरिद्रता और परतंत्रता मिलती है। —अज्ञात

आलसी

आलसी मनुष्य सदा ऋणी और दूसरों के लिए भार-रूप रहता है। —अज्ञात

बरतने से कोई वस्तु इतनी जल्दी नहीं घिसती जितनी जल्दी मोर्चा लगने से घिसती है। इसी प्रकार आलस्य आलसी आदमी को निकम्मा कर देता है।

—अज्ञात

आलसी को सदा असंतोष रहता है। —अज्ञात

आलोचना

कभी-कभी मौन रह जाना सबसे तीखी आलोचना होती है। —अज्ञात

जब तक तुममें दूसरों को व्यवस्था देने या दूसरों के अवगुण ढूँढ़ने, दूसरों के दोष ही देखने की आदत मौजूद है, तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात् करना अत्यन्त कठिन है। —स्वामी रामतीर्थ

Don't complain about the snow on your neighbour's roof, when your own door-step is unclean. **—Confucius**

जब आपके अपने द्वार की सीढ़ियाँ मैली हैं तो अपने पड़ोसी की छत पर पड़ी हुई गन्दगी का उलाहना मत दीजिए। **—कनफ्यूशियस**

Criticism is futile because it puts a man on the defensive and usually makes him strive to justify himself. Criticism is dangerous, because it wounds a man's precious pride, hurts his sense of importance and arouses his resentment. **—Dale Carnegie**

आलोचना व्यर्थ होती है, क्योंकि इससे दोषी प्रायः अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न करने लगता है। आलोचना भयावह भी है, क्योंकि वह मनुष्य के बहुमूल्य गर्व पर घाव करती है, उसकी महत्ता के भाव को पीड़ा पहुँचाती है और उसके क्रोध को भड़काती है। **—डेल कारनेगी**

दूसरों में दोष न निकालना, दूसरों को उतना उन दोषों से नहीं बचाता, जितना अपने को बचाता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

आलोचना वृक्ष की शाखा से प्रायः फूल और कीड़े—दोनों को एक साथ ही पृथक् कर देती है। **—रिचर**

Judge not, that ye be not judged. **—Lincon**

किसी की आलोचना मत करो, जिससे तुम्हारी भी कोई आलोचना न करे। **—लिंकन**

स्वयं भगवान् भी मनुष्य के कर्मों का विचार उसकी मृत्यु के पहले नहीं करते। **—डा० जानसन**

Criticism is a dangerous spark—spark that is liable to cause an explosion in the powder magazine of pride,—an explosion that sometimes hastens death. **—Dale Carnegie**

आलोचना एक भयानक चिनगारी है—ऐसी चिनगारी है जो अहंकार रूपी बारूद के गोदाम में विस्फोट उत्पन्न कर सकती है और वह विस्फोट कभी-कभी मृत्यु को शीघ्र ले आता है। **—डेल कारनेगी**

कभी-कभी आलोचना अपने मित्र को भी शत्रु के शिविर में भेज देती है।

—अज्ञात

दूसरों की न तो आलोचना करो और न उनपर दोषारोपण करो। उनके साथ प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार करो। **—सत्य साईं बाबा**

आवश्यकता

I hold that to need nothing is divine, and the less a man needs, the nearer does he approach divinity. **—Socrates**

मेरा विश्वास है कि कोई भी आवश्यकता न होना दिव्य है, और जिस मनुष्य की जितनी कम आवश्यकता होती है उतना ही वह ईश्वर के निकट होता है।

—सुकरात

There is no virtue like necessity. **—Shakespeare**

आवश्यकता के सदृश कोई सद्गुण नहीं। **—शेक्सपियर**

Necessity is the mother of invention. **—Proverb**

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। **—कहावत**

आवश्यकता ही संसार के व्यवहारों की दलाल है। **—जयशंकर प्रसाद**

Necessity is the argument of tyrants; it is the creed of slaves.

—William Pitt

आवश्यकता अत्याचारियों का तर्क है; यह पराधीनों का मजहब है।

—विलियम पिट

Necessity is often the spur to genius. **—Balzac**

आवश्यकता बहुधा प्रतिभा को प्रोत्साहित करती है। **—बालजक**

आवश्यकता तर्क के सम्मुख नहीं झुकती। **—गेरीबाल्डी**

आवश्यकता कायर को भी वीर बना देती है। **—सेलहास्ट**

आवश्यकता कभी मुनाफे का सौदा नहीं करती। **—फ्रैंकलिन**

Necessity hath no law. **—Cromwell**

आवश्यकता के लिए कोई नियम (कानून) नहीं है। **—क्रामवेल**

It is necessity and not pleasure that compels us. **—Dante**

यह आवश्यकता है, आनन्द नहीं, जो हमें बाध्य करती है। **—दांते**

The mother of useful arts is necessity, that of the fine arts is luxury. **—Schopenhauer**

आवश्यकता उपयोगी कलाओं की जननी है, और विलासिता ललित कलाओं की। **—शॉपेनहावर**

आवागमन

यदि मनुष्य आवागमन के चक्कर से छूटना चाहता है तो उसे इच्छाओं का दमन करना होगा। परन्तु इन्द्रियों पर काबू पाना बहुत बड़ी तपस्या है।

—स्वामी भारती कृष्ण

जन्म और मृत्यु संसार के दो निर्विवाद सत्य हैं। आवागमन की समस्या इन्हीं दो सत्यों का स्पर्श करती है। **—अज्ञात**

जीवन तो मृत्यु और पुनर्जन्म की परम्परा की कहानी है। हमें पुनर्जन्म पाने के लिए पहले मरना होगा। **—रौम्यां रोलां**

आवागमन संसार का सहज धर्म है, इससे परमात्मा को भी अवकाश नहीं है।

—अज्ञात

हफ्त सद हफ्ताद कालिव दीदाअम्।
हम्यु सब्ज ! बारहा रोईदा अम्॥ **—मौलाना रूमी**

रूह कहती है कि मैं सात सौ सत्तर काया पलट के इस बदन में आई हूँ। मैं सब्जे यानी घास की तरह से सैकड़ों बार उगी हूँ, मिटी हूँ।

आवेश

आवेश और क्रोध को वश में कर लेने से शक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्मबल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है। **—महात्मा गांधी**

आवेश के प्रभाव से बुद्धि विपरीत हो जाती है। **—अज्ञात**

आवेश बुद्धि, बल, शक्ति, क्षमता—सबका दिवाला निकाल देता है। **—अज्ञात**

आश्चर्य

Wonder is the first cause of philosophy. —**Aristotle**

आश्चर्य दर्शन का प्रथम कारण है। —**अरस्तू**

Wonder is the daughter of ignorance. —**John Flario**

आश्चर्य अज्ञानता की बेटी है। —**जान फ्लेरियो**

Wonder is the basis of worship. —**Carlyle**

आश्चर्य आराधना का आधार है। —**कार्लाइल**

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यमसादनम्।
शेषा जीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम्। —**वेदव्यास (महा०)**

प्रतिदिन जीव मृत्यु के मुख में जा रहे हैं, पर बचे हुए लोग अमर रहना चाहते हैं, इससे बढ़कर आश्चर्य क्या होगा।

Wonder-which is the seed of knowledge. —**Bacon**

आश्चर्य ज्ञान का मूल है। —**बेकन**

उद्घटितनवद्वारे पञ्जरे विहगोऽनिलः।
यत्तिष्ठिति तदाश्चर्यं प्रयाणे विस्मयः कुतः॥ —**अज्ञात**

नव द्वार जिसके खुले हैं ऐसे देहरूप-पिंजरे में वायुरूपी पक्षी (प्राण) जो स्थित है, यानी ठहरा हुआ है यही आश्चर्य है। निकल जाने से कौन विस्मय है?

Wonder is involuntary praise. —**Young**

आश्चर्य अनैच्छिक प्रशंसा है। —**यंग**

All wonder is the effect of novelty or ignorance.

—**Dr. Johnson**

सम्पूर्ण आश्चर्य कुतूहलत्व या अज्ञानता का परिणाम है। —**डा० जानसन**

आशा

संसार में ऐसा कोई नहीं हुआ है जो मनुष्य की आशा का पेट भर सके। पुरुष की आशा समुद्र के समान है, वह कभी भरती ही नहीं।

—**वेदव्यास (महाभारत)**

आशा अमर है, उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती। **—महात्मा गांधी**

निरर्थक आशा से बँधा मानव अपना हृदय सुखा डालता है और आशा की कड़ी टूटते ही वह झट से विदा हो जाता है। **—रवीन्द्र**

आशा और आत्म-विश्वास ही वे वस्तुएँ हैं जो हमारी शक्तियों को जाग्रत करती हैं और हमारी उत्पादन शक्ति को दुगुना तिगुना बढ़ा देती हैं।

—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

Hope is good breakfast, but it is a bad supper. **—Bacon**

आशा उत्तम जलपान है किन्तु यह रात्रि का निकृष्ट भोजन है। **—बेकन**

आशा बुद्धि को धोखा दे जाती है। **—सुदर्शन (तीर्थ यात्रा)**

निराशाओं के सघन अंधकार में जो नन्हीं नन्हीं आशाओं की धुंधली किरणें खोयी सी रहती हैं, उनका भी जीवन में कम महत्त्व नहीं होता। **—अज्ञात**

आशा नाम नदी मनोरथ जला तृष्णातरंगाकुला
रागग्राहवती वितर्कविहगा धैर्यद्रुमध्वंसिनी।
मोहावर्त्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुंगचिन्तातटी
तस्याः पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वराः॥

—भर्तृहरि (वैराग्य०)

आशा एक नदी है, उसमें इच्छारूपी जल है; तृष्णा उस नदी की तरंगें हैं, आसक्ति उसके मगर हैं, तर्क-वितर्क उसके पक्षी हैं, मोहरूपी भँवरों के कारण वह सुकुमार तथा गहरी है, चिन्ता ही उसके ऊँचे ऊँचे किनारे हैं; धैर्यरूपी वृक्षों को नष्ट करने वाली है, जो शुद्धचित्त योगीश्वर उसके पार चले जाते हैं, वे बड़ा आनन्द उपभोग करते हैं।

जर जर हुए हैं अंग सब, और पक गए हैं सर के बाल।
बाकी नहीं इक दाँत भी, लठिया से भी चलना मुहाल।
आशा नहीं छुटी मगर, कैसा बुरा तेरा यह हाल।
गोविन्द भज, गोविन्द भज॥

—राधेश्याम रस्तोगी (भक्ति पीयूष)

आशा नदी है इसमें मनोरथ का जल भरा हुआ है, और तृष्णा की अनन्त तरंगें लहरें लेती हैं। **—दीनानाथ दिनेश**

घर छोड़ कर जंगल गये, आसन जमाया खाक पर।
जो कुछ मिला वह खा लिया हाथों में भिक्षा मांग कर।
फिर सो रहे पत्थर पे ही, आशा नहीं, छूटी मगर।
गोविन्द भज, गोविन्द भज ॥

—राधेश्याम रस्तोगी (भक्ति-पीयूष)

युवाकाल की आशा पुआल की आग है, जिसके जलने और बुझने में देर नहीं लगती। **—प्रेमचन्द (सेवा सदन)**

आशा में ही सुधा का वास है। **—प्रेमचन्द (गोदान)**

आशाया ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य।
आशा येषां दासी तेषां दासायते लोकः ॥ **—अज्ञात**

जो लोग आशा के दास हैं उन्हें सब लोगों का दास बनना पड़ता है और आशा जिनकी दासी है उनके सब लोग दास हो जाते हैं।

आशा नाम मनुष्याणां काचिदाश्चर्यश्रृंखला।
यया बद्धाः प्रधावन्ति मुक्तास्तिष्ठन्ति पंगुवत् ॥ **—अज्ञात**

मनुष्यों की आशा ऐसी आश्चर्ययुक्त जंजीर है जिससे बंधे हुए लोग दौड़ते हैं तथा रहित होने पर पंगु के समान खड़े रहते हैं।

जहाँ कोई आशा नहीं है, वहाँ कोई प्रयत्न नहीं हो सकता। **—डा० जानसन**

आशाएँ विष की गाँठ हैं। संसार इन्हीं इच्छाओं और आशाओं का दूसरा नाम है। जिसने इन्हें नैराश्य-नद में प्रवाहित कर दिया, उसे संसार में समझना भ्रम है। **—प्रेमचन्द**

Hope is brightest when it dawns from fears. **—Walter Scott**

आशा जब भय से उत्पन्न होती है, उज्ज्वलतम होती है। **—वाल्टर स्काट**

आशा ही जीवन है और जीवन ही आशा है। **—अज्ञात**

In all things it is better to hope than to despair. **—Goethe**

प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में निराश होने की अपेक्षा आशावान होना बेहतर है। **—गोटे**

अस्माकं संत्वाशिषः, सत्या नः संत्वाशिषः। **—यजुर्वेद**

हम आशावादी बनें हमारी आशाएँ सफल हों।

आशा की भी कितनी सख्त जान है, वह मरते-मरते भी उठ कर खडी हो जाती है। **—सुदर्शन (चार कहानियां)**

आशा अन्तिम श्वास तक साथ नहीं छोड़ती। **—सुदर्शन (तीर्थयात्रा)**

"जब लग स्वाँसा, तब लग आसा" **—कहावत**

व्यर्थ आशा केवल मूर्खों को ही प्रसन्न करती है। बुद्धिमान जन ऐसी आशा नहीं करते। **—'जीवन का सद्व्यवहार'**

आशा उत्साह की जननी है। आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालक शक्ति है। **—प्रेमचन्द (सवासेर गेहूँ)**

आशावाद

मानवस्योन्नतिः सर्वा साफल्यं जीवनस्य च।
चारितार्थ्यं तथा सृष्टेराशावादे प्रतिष्ठितम्॥ **—अज्ञात**

मनुष्य की सब उन्नति, जीवन की सफलता और सृष्टि की चरितार्थता आशावाद में ही प्रतिष्ठित है।

आशावाद प्राणियों के लिए अमृत है। जैसे सूर्य से वनस्पतियों को जीवन प्राप्त होता है वैसे ही आशावाद से मनुष्यों में जीवनशक्ति का संचार होता है। **—स्वेट मार्डेन (दि० जी०)**

आश्रय

किसी का सहारा लिए बिना कोई ऊँचे नहीं चढ़ सकता, अतः सबको किसी प्रधान आश्रय का सहारा लेना चाहिए। **—वेदव्यास (महाभारत)**

आसक्ति

फूल चुनकर इकठ्ठा करने के लिए मत ठहरो। आगे बढ़े चलो, तुम्हारे पथ में फूल निरंतर खिलते रहेंगे। **—रवीन्द्र**

आसक्ति ही मनुष्य को नीच और दुर्बल बनाने वाली है। **—स्वामी रामतीर्थ**

यदि तुमने आसक्ति का राक्षस नष्ट कर दिया तो इच्छित वस्तुएँ तुम्हारी पूजा करने लगेंगी। **—स्वामी रामतीर्थ**

आसक्त

पुत्र, मित्र और स्त्री में जो प्राणी आसक्त हैं, वे ऐसे हैं जैसे सरोवर की कीच में वन का बूढ़ा हाथी फँस कर उसी में पड़ा समाप्त हो जाता है। —अज्ञात

आह

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस सों, सार भसम ह्वै जाय॥ —कबीर

कमजोर गरीब की दुःखभरी आह अभिमान को चूर्ण करने में समर्थ होती है।
—अज्ञात

जहाँ तक हो किसी के मन को मत दुखाओ। याद रखो, गरीब की आह से संसार उलट-पलट हो सकता है। —सादी

आहार

आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः
स्मृति लम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।
—छान्दोग्य उ०-७-२६-२

आहार शुद्धि होने पर अन्तःकरण की शुद्धि होती है, अन्तःकरण की शुद्धि से निश्चल स्मृति मिलती है, स्मृति की प्राप्ति होने पर सम्पूर्ण ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं।

जब शरीर में सात्त्विक रस रूपी मेघ बरसते हैं तब आयुष्य रूपी नदी दिन-दिन बढ़ती जाती है। —सन्त ज्ञानेश्वर

आयु, ज्ञान, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले रसदार, चिकने, स्थायी, हृदय को भाने वाले आहार—सात्त्विक पुरुष को प्रिय होते हैं।
—गीता-१७।८

कड़ुवे, खट्टे, नमकीन, बहुत गरम, तीखे, रूखे और जलन पैदा करने वाले तथा दुःख, शोक और रोग उत्पन्न करने वाले आहार राजस पुरुष को प्रिय होते हैं। —गीता-१७।९

जो भोजन बहुत देर का, रस रहित, दुर्गन्धपूर्ण, बासी और जूठा है तथा जो अपवित्र भी है, वह तामसी पुरुष को प्रिय होता है। —गीता-१७।१०

इच्छा

समस्त भय और चिन्ता इच्छाओं का परिणाम है। **—स्वामी रामतीर्थ**

The thirst of desire is never filled, nor fully satisfied.

—Cicero

इच्छा की प्यास कभी नहीं बुझती, न पूर्णरूप से सन्तुष्ट होती है। **—सिसरो**

जीने की इच्छा ही सब दुःखों की जननी है, मरने की तैयारी ही सब सुखों की जननी है। **—स्वामी रामतीर्थ**

जैसी हमारी इच्छाएँ होती हैं, जैसे हमारे हार्दिक भाव होते हैं, ठीक उन्हीं की झलक हमारे मुखमंडल पर दिखाई देने लगती है। **—स्वेट मार्डेन**

किसी काम को करने के पहले आप उस काम को करने की दृढ़ इच्छा मन में कर लें और सारी मानसिक शक्तियों को उस ओर झुका दें जिससे आपको बहुत अधिक सफलता प्राप्त हो। **—स्वेट मार्डेन (दिव्यजीवन)**

इच्छाओं के सामने आते ही सभी प्रतिज्ञाएँ ताक पर धरी रह जाती हैं।

—अज्ञात

पूर्ण सत्य की प्राप्ति के लिए तुम्हें सांसारिक इच्छाओं से छुटकारा पाना होगा। **—स्वामी रामतीर्थ**

जब तक इच्छा का लवलेश भी विद्यमान है, ईश्वर का दर्शन नहीं हो सकता, इसलिए अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं और सम्यक् विचार एवं विवेक द्वारा बड़ी-बड़ी इच्छाओं का त्याग कर दो। **—स्वामी रामकृष्ण**

इच्छाओं को त्यागने वाले यतियों का गुण गाना उतना ही असम्भव है, जितना कि संसार में अब तक मरे हुओं की गिनती करना। **—संत तिरुवल्लुवर**

In moderating, not in satisfying desires, lies peace. **—Heber**

इच्छाओं को शान्त करने से नहीं, अपितु उन्हें परिमित करने से शान्ति प्राप्त होती है। **—हेबर**

पवित्र और दृढ़ इच्छा सर्वशक्तिमान् है। **—स्वामी विवेकानन्द**

यदि हमारी इच्छा-शक्ति क्षुद्र और कमजोर होगी तो हमारी मानसिक शक्तियों का कार्य भी वैसा ही होगा। **—स्वेट मार्डेन**

इच्छा ही घोड़ा बन सकती तो प्रत्येक मनुष्य घुड़सवार हो जाता।

—शेक्सपियर

The desire of the moth for the star
Of the night for the morrow
The devotion to something afar
From the sphere of our sorrow. **—Shelley**

पतिंगे की नक्षत्र के लिए इच्छा, रात्रि की दिवस की चाह और अपने दुःख से एक अज्ञात सुख की कामना—यही तो जीवन की चिर-अतृप्त इच्छाएँ हैं।

—शेली

इज्जत

Life everyman holds dear, but the greatman holds honour for more precious and dear than life. **—Shakespeare**

प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन प्रिय होता है, परन्तु महान् पुरुष को अपनी इज्जत जीवन से कहीं अधिक मूल्यवान् और प्रिय होती है। —शेक्सपियर

दरिद्रता से जीवन बिताने वाला, संसार की नजर से गिरा हुआ मनुष्य भी यदि धर्म के पथ से नहीं डिगता तो वही सच्चा इज्जतदार है।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार

Better to die ten thousand deaths than wound my honour.

—Addison

इज्जत को चोट पहुँचाने की अपेक्षा दस हजार बार मृत्यु उत्तम है।—एडिसन

जो अपनी इज्जत करते हैं, उनकी सब इज्जत करेंगे ही। —ब्रेकन्स फील्ड

इतिहास

इतिहास की पुनरावृत्ति हुआ ही करती है। —अज्ञात

इतिहास स्वदेशाभिमान सिखाने का साधन है। —महात्मा गांधी

मनुष्य के जीवन का इतिहास प्रायः अपने सगों से नहीं, परायों से बनता है।

—अज्ञात

History is little more than the register of the crimes, follies and misfortunes of mankind. —**Gibbon**

इतिहास मानव के अपराधों, मूर्खताओं, अभाग्यों के रजिस्टर के सिवाय और कुछ नहीं है। —**गिबन**

जो देखी हिस्टरी इस बात पर कामिल यकीं आया।
उसे जीना नहीं आया जिसे मरना नहीं आया॥ —**अकबर**

Histories make man wise. —**Bacon**

इतिहास पढ़ने से मनुष्य बुद्धिमान् बनता है। —**बेकन**

Biography is the only true history. —**Carlyle**

जीवनियां ही केवल सच्चा इतिहास हैं। —**कार्लाइल**

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् बित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणः वृत्ततस्तु हतो हतः॥

—**वेदव्यास (महाभारत)**

इतिहास की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता और जाता है। धन से हीन होने पर कोई नष्ट नहीं होता किन्तु इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने पर विनाश निश्चित है।

History is the school of Statesmanship —**Prof. Seeley**

इतिहास राजनीति की पाठशाला है। —**प्रोफेसर सीली**

इतिहास के अनुभवों से हम सबक नहीं लेते, इसी से इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। —**विनोबा**

इन्द्रियाँ

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।

—**भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)**

अपनी इन्द्रियाँ जिसके वश में हैं उसकी बुद्धि स्थिर है। वही विद्वान् और पण्डित है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

—श्रीकृष्ण (गीता-२।५८)

कछुआ जैसे सब ओर से अंग समेट लेता है वैसे ही जब पुरुष इन्द्रियों को उनके विषयों में समेट लेता है तब उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है।

कुरंगमातंगपतंगभृंग मीना हताः पंचभिरेव पंच।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यस्सेवते पंचभिरेव पंच ॥ **—अज्ञात**

हिरण गाने से, हाथी हस्तिनी से, पतंग दीपक से, भ्रमर गंध से, और मछलियाँ जीभ के स्वाद से मोहित होकर अपने प्राण खो देती हैं। फिर जिन्हें पाँच इन्द्रियाँ हैं और जो सभी विषयों की आसक्ति में फँसते हैं तो उनको मृत्यु क्यों छोड़ेगी ?

इन्द्रिय-दमन

इन्द्रिय-दमन का अभ्यास भविष्य जीवन को बहुत शान्त और सहनशील बना देता है। **—अज्ञात**

इन्द्रिय-भोग

शीतोष्ण या सुख-दुख-प्रद कौन्तेय ! इन्द्रिय भोग हैं।
आते व जाते हैं सहो सब नाशवत संयोग हैं ॥

—गीता-२-१४

इन्द्रिय संयम

इन्द्रिय-संयम और मनःशुद्धि ऐसी दवा है कि इनसे शारीरिक स्वास्थ्य तो मिलता ही है, पारमार्थिक स्वास्थ्य की भी प्राप्ति होती है। **—हनुमानप्रसाद पोद्दार**

जिसने इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया है, उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पड़ती है। **—चाणक्य**

ईमान

सब कोऊ साहब बन्दते, हिन्दू मुसलमान।
साहब तिनको बन्दता, जिनका ठौर ईमान ॥ **—संत मलूकदास**

ईमानदारी

मनुष्य की प्रतिष्ठा ईमानदारी पर ही निर्भर है। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

Honesty is the best policy. **—Franklin**

ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। **—फ्रेंकलिन**

ईमानदारी, वचन का पालन और उदारता—ये तीन ऐसे गुण हैं जो स्वाभिमान के साथ अनिवार्य रूप से रहते हैं। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

No legacy is so rich as honesty. **—Shakespeare**

कोई उत्तरदान, ईमानदारी के सदृश बहुमूल्य नहीं है। **—शेक्सपियर**

An honest man is the noblest work of god. **—Pope**

ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति है। **—पोप**

जिस देश के बुद्धिजीवी लोग अपनी बुद्धि का प्रयोग ईमानदारी के साथ करना छोड़ देते हैं, वह देश सब प्रकार से दीन-हीन और नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

जो मनुष्य स्वाभिमानी होगा वह अवश्य ही ईमानदार होगा। **—अज्ञात**

ईश-इच्छा

यह ईश्वर की इच्छा ही तो है, कहीं विष भी अमृत हो जाता है, और कहीं अमृत भी विष हो जाता है। **—कालिदास (रघुवंश ८-४६)**

ईश-कीर्तन

प्रभुकीर्तन और कथा मखमल का बिछौना है; उस पर नींद न आयेगी तो और कहाँ आयेगी ? नाच-रंग काँटों की कँटीली और नुकीली जमीन है, उस पर नींद कहाँ ? **—स्वामी दयानन्द**

ईश-कृपा

मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवौ सकल कलिमल-दहन॥

—तुलसी (मानस-बाल)

जिसकी पीठ पर परमेश्वर का हाथ हो उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं। भगवान् जो चाहे कर दे उसका हाथ कौन पकड़ सकता है ?

—सुदर्शन (सुदर्शन सुमन)

जा पर कृपा राम कै होई। ता पर कृपा करहिं सब कोई ॥

—तुलसी (मानस, बाल०)

जो अपना चित्त मुझमें लगा देते हैं वह मेरी कृपा से संसार के समस्त दुःखों से पार हो जाते हैं। —भगवान श्रीकृष्ण(गीता-१७।५८)

सकल विघ्न व्यापहिं नहि तेहीं, राम कृपा करि चितवहिं जेहीं ॥

—तुलसी (मानस, बाल०)

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता-१८।१६)

मेरा आश्रय ग्रहण करने वाला सदा सब कर्म करता हुआ भी मेरी कृपा से शाश्वत, अव्यय पद को पाता है।

बिनु विश्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, जीव न लह विश्राम ॥

—तुलसी (मानस, उत्तर)

पतितोऽप्यातिदुर्गतोऽपि सन्नकृतज्ञो निखिलागसां पदम्।
भवदीय इतीरयंस्त्वया दयनीयस्त्वपयैव केवलम् ॥

अत्यन्त पतित, दुर्गत, अकृतज्ञ और निखिल अपराधों का स्थान तो मैं हूँ, फिर भी मैं आपका हूँ, यही लज्जा रखने के लिए आपकी दया मुझ पर होनी चाहिए। —अज्ञात

बंदौ चरन कमल हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे को सब कुछ दरसाई। —सूरदास

विषय रूपी सर्प के लिपट जाने पर मनुष्य आपकी कृपा से मूर्च्छित न होकर निर्विष हो जाता है। यदि आप के प्रसाद-रस की तरंगों की बाढ़ आवे तो संसार-ताप किसे जला सकता है और शोक कैसे पीड़ा दे सकता है ? —सन्त ज्ञानेश्वर

प्रभु जब कृपा करते हैं तभी व्यक्ति के जीवन में भेदबुद्धि का विनाश होता है । **—पं० राम किंकर उपाध्याय (मानस मुक्तावली भाग-३)**

तुम्हरी कृपा तुमहि रघुनन्दन
जानत भगत भगत उर चन्दन

—तुलसी (मानस—अयोध्या)

कल्याण स्वरूप करुणा सागर भगवान की कृपा के बिना अपार संसार सागर को पार करना कठिन है । **—संत तिरुवल्लुवर**

ईश-चर्चा

जिन्हें दोनों वक्त भूखे रहना पड़ता है उनसे मैं ईश्वर की चर्चा कैसे करूँ ? उनके सामने तो परमात्मा दाल रोटी के ही रूप में प्रकट हो सकते हैं ।

—महात्मा गांधी

ईश-चिन्तन

जिस प्रकार औषधि शरीर के सब रोगों को दूर कर देती है, उसी प्रकार ईश-चिन्तन से मन के क्लेश दूर होते हैं । **—प्रेमचन्द (मानसरोवर)**

ईश-चिन्तन से करोड़ों पाप इस तरह नष्ट हो जाते हैं, जैसे आग की एक चिनगारी घास के ढेर को जला देती है । **—अज्ञात**

धन, दारा अरु सुतन में, रहत लगाये चित्त ।
क्यों रहीम खोजत नहीं, गाढ़े दिन को मित्त ॥ **—रहीम**

सच्चे भक्तों का एकमात्र बल भगवान् का भरोसा ही है । वे पूर्ण निर्भयता के साथ भगवान् के होकर अपना जीवन केवल भगवान् के चिन्तन में ही लगाया करते हैं । **—हनुमान प्रसाद पोद्दार**

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता-९।९२)

जो अनन्य भक्त मेरा चिन्तन करते हुए मेरी उपासना करते हैं उन नित्य मुझमें रत रहने वालों के योग-क्षेम का भार मैं उठाता हूँ ।

ईश-तुल्य

नारि नयन सर जाहि न लागा। घोर क्रोध-तम निसि जो जागा ।।
लोभ-पास जेहि गर न बँधाया। सो नर तुम्ह समान रघुराया ।।

—तुलसी (मानस, किष्किधा०)

जिसके चित्त में कभी क्रोध नहीं आता, और जिसके हृदय में सर्वदा परमेश्वर विराजमान रहता है, वह भक्त ईश्वर तुल्य है। **—रैदास**

ईश-तेज

जो जो जगत में वस्तु, शक्ति, विभूति, श्री सम्पन्न है, वह जान मेरे तेज के ही अंश से उत्पन्न है। **—भगवान श्रीकृष्ण गीता-१०।४१ (श्रीहरि गीता से)**

ईश-दर्शन

मेरे प्रभु ! तुम्हारे वियोग के क्षण मुझे शत्रुओं के बाणों की भाँति लगते हैं। तुम्हारे हाथ कब उन बाणों को मेरे शरीर से दूर करेंगे ?

—डा० राम कुमार वर्मा

ईश-दर्शन और उसमें वास्तविक प्रवेश केवल अनंत भक्ति से ही सम्भव है।

—गीता-११।५४

न तप्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्‌मो न विजानीमो।
श्रैतदनुशिव्यादन्यदेव तद्विदितादोअनिनितादधि ।। **—केनोपनिषद १-३**

उस परम तत्त्व और सत्त्व तक आँख नहीं पहुँच पाती। वाणी से भी उसका पूरा पूरा वर्णन नहीं हो सकता। वह इन्द्रियों की पहुँच से परे है। मन की भी गति उस तक नहीं है। उसे बुद्धि से भी नहीं जाना जा सकता है और किसी के बताने से भी उसे नहीं समझा जा सकता है। वह जाने हुए से भी बहुत अधिक है और न जाने हुए से भी बहुत ऊपर है।

करते हैं दर्शन योगी संयम-समाधि में सोकर।
अनुभवी मनीषी उसको पाते हैं उसके होकर ।।
आँखें मूँदे ही मूँदे देखा करती थी मीरा।
जाने कितने सूरों ने देखा है आँखें खोकर ।।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

सर्वत्र परमेश्वर का दर्शन अथवा उसकी विभूतियों का ज्ञान, पुरुष को पुरुषोत्तम में स्थित करता है और सर्वोदय के मार्ग खोल देता है।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

ईश-प्रिय

जो सब प्राणियों के साथ द्वेष न करने वाला मित्र और दया भाव वाला, ममता तथा अहंकार से भी रहित है, दुःख-सुख में समान, क्षमाशील, सन्तुष्ट, नित्ययोगी मन और इन्द्रियों को वश में रखने वाला दृढ़निश्चयी है, और मुझमें जिसने अपनी मन-बुद्धि अर्पण किया है वह मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता-१२।१३, १४)

जो न हर्ष करता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है और जो शुभ-अशुभ दोनों को त्याग देता है वह भक्त मुझे प्रिय है।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता-१२।१७)

शत्रु-मित्र में और मान-अपमान में एक समान तथा शीत-उष्ण, सुख-दुःख में समान और आसक्ति से रहित, निन्दा और स्तुति में समान, मौनी, सदा सन्तुष्ट, अनिकेत और स्थिर बुद्धि वाला भक्त मुझे प्रिय है।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता १२।१८, १९)

अमीर जो गरीबों के समान नम्र हैं और गरीब जो कि अमीरों के समान उदार हैं वही ईश्वर के प्रिय-पात्र होते हैं। **—सादी**

ईश-पूजा

ईश्वर की पूजा करना अन्तर्निहित आत्मा की उपासना ही है।

—स्वामी विवेकानन्द

जो अपने पेट का गुलाम है वह ईश्वर की पूजा कभी नहीं कर सकता।

—सादी

लोकसेवा हमारी मूर्तिपूजा है। **—विनोबा**

मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मन्दिर है। इसलिए साक्षात् देवता की पूजा करो। **—स्वामी विवेकानन्द**

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता-१८।४६)

अपने-अपने कर्मों के द्वारा ईश्वर की पूजा करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त होता है ।

I cannot conceive any higher way of worshipping God than by working for the poor.

मेरे विचार में गरीबों की सेवा ईश्वर की सबसे अच्छी पूजा है ।

—महात्मा गाँधी

ईश-प्राप्ति

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् ।
अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ।।

—महर्षि अंगिरा

यह शरीर के भीतर ही (हृदय में विराजमान) प्रकाशस्वरूप (और) परम विशुद्ध परमात्मा निस्संदेह सत्य-भाषण, तप (और) ब्रह्मचर्यपूर्वक यथार्थ ज्ञान से ही सदा प्राप्त होनेवाला है, जिसे सब प्रकार के दोषों से रहित हुए यत्नशील साधक ही देख पाते हैं ।

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ।।

—महर्षि अंगिरा

जिस प्रकार बहती हुई नदियां नाम-रूप को छोड़कर समुद्र में विलीन हो जाती हैं, वैसे ही ज्ञानी महात्मा नाम-रूप से रहित होकर उत्तम से उत्तम दिव्य परम पुरुष परमात्मा को प्राप्त हो जाता है ।

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता-११।५५)

हे पाण्डव ! जो सब कर्म मुझे समर्पित करता है, मुझमें परायण रहता है, मेरा भक्त बनता है, आसक्ति का त्याग करता है और प्राणी-मात्र में द्वेष रहित होकर रहता है, वह मुझे पाता है ।

सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब करतूति।
तुलसी सूधी सकल विधि, रघुवर प्रेम प्रसूति॥

—तुलसी (दोहावली)

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम्॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता-१२।३, ४)

सब इन्द्रियों को वश में रखकर, सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ़, अचल और अचिन्त्य, सर्वव्यापी, अवर्णनीय, अविनाशी स्वरूप की उपासना करते हैं वे सब, प्राणियों के हित में लगे हुए मुझे ही पाते हैं।

'भोले भाव मिले रघुराई' **—गुरु नानक**

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥

—भगवान राम (रामचरितमानस)

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्ण सुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता-१२।१८)

शत्रु-मित्र, मान-अपमान, शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि में जो समतावान् है और आसक्ति से रहित है वही पुरुष परमात्मा को प्राप्त कर सकता है।

ईश-प्रेम

ईश-प्रेम के द्वारा जीवन का वास्तविक अर्थ सिद्ध होता है।**—स्वामी शिवानन्द**

जहाँ ए बिरादर न मानद बकस।
दिल अन्दर जहाँ आफिरी बन्दोबस॥**—सादी (गुलिस्तां)**

भाई! यह संसार किसी के साथ नहीं जाता। इसलिए इसके साथ दिल मत लगाओ—लगाओ इसके बनाने वाले के साथ। उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने से तुम्हारा भला होगा।

भगवत्-प्रेम बिना इन्द्र के जसा ऐश्वर्य भी व्यर्थ है। —नरोत्तमदास

ईश्वरीय-प्रेम अविनश्वर तथा अपरिवर्त्तनशील है। इसकी पवित्र ज्योति कभी भी लुप्त नहीं होती। —स्वामी शिवानन्द

ईश-भक्ति (देखो—ईश-प्रिय)

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं,
यशश्चारुचित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
मनश्चेन्न लग्नं हरेरङ्घ्रिमध्ये,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥ —अज्ञात

सुन्दर शरीर, सुन्दरी भार्या, यश, सच्चरित्रता, अपार धन आदि सब कुछ रहते हुए भी यदि भगवान् के चरणों में मन नहीं लगा तो इन सब के रहने से भी क्या होता है।

भक्ति ईश्वर तक पहुँचने का सुखद, सुचिक्कण राज-पथ है।
—स्वामी शिवानन्द

हृदय के अंतरतम से ईश्वर के प्रति सतत एवं अनन्य प्रेम करना ही भक्ति है। —स्वामी शिवानन्द

ईश-रक्षक

जाको राखै साइयाँ मार न सकिहैं कोय।
बार न बांका करि सकै जो जग बैरी होय॥ —कबीर

सीम कि चांपि सकै कोउ तासू। बड़ रखवार रमापति जासू॥
—तुलसी (मानस, बाल०)

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः कृतप्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति॥ —पंचतंत्र

दैव से रक्षा किया हुआ, बिना रक्षा के भी बच जाता है, और अच्छी तरह

रक्षा किया हुआ भी, दैव का मारा हुआ नहीं बचता, जैसे माता-पिता द्वारा वन में छोड़ा गया अनाथ भी जीवित रहता है किन्तु घर में अनेक उपाय करने पर भी नहीं जीता।

पीसने वाली चक्की में भी वे अन्न के दाने जो कील से सटे रहते हैं सकुशल रहते हैं, उसी प्रकार जो भगवान् के नाम तथा उनके पादपद्मों से आसक्त होते हैं वे संसार की विपत्तियों से पीड़ित नहीं होते। —स्वामी शिवानन्द

ईश्वर

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया॥ —गीता-१८।६१

हे अर्जुन! ईश्वर सबके हृदय में निवास करता है। वह माया से सब जीवों को वैसे ही नचाता है जैसे सूत्रधार कठपुतलियों को मंच पर घुमाता है।

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता,
पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता
तमाहुरग्रयं पुरुषं महान्तम्॥ —श्वेताश्वतर उ०

बिना हाथ पकड़ने वाला है, बिना पैर तेज दौड़ने वाला है, बिना आँख के देखता है, बिना कान के सुनता है, वह जानने योग्य को जानता है, उसका जानने वाला नहीं है। उसको आदि, महान् पुरुष कहते हैं।

जिस प्रकार अक्षरों में 'अ' है, उसी प्रकार जगत् में ईश्वर है।

—संत तिरुवल्लुवर

ईश्वर न काबा में है, न काशी में है। वह तो घर-घर में व्याप्त है—हर दिल में मौजूद है। —महात्मा गांधी

God is like a circle whose centre is everywhere but circumference nowhere. —**Saint Augustine**

ईश्वर एक वृत्त है, जिसका केन्द्र तो सर्वत्र है, किन्तु वृत्तरेखा कहीं नहीं।

—सेंट आगस्टन

ईश अचल है और एक है, मन से भी आगे गतिवान।
उसे इन्द्रियां पा न सकी हैं, सर्वोपरि है महा महान ॥
स्थिर होकर भी अन्य सभी गतिशीलों को कर जाता पार।
प्राण धारता जल बरसाता वायु उसी का ले आधार ॥

—ईशोपनिषद् (पद्यानुवादक दीनानाथ दिनेश)

ज़हन में जो घिर गया लाइन्तहा क्योंकर हुआ।
जो समझ में आ गया फिर वो खुदा क्यों कर हुआ ॥ **—अकबर**

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।
ज्ञान प्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः ॥

—श्वेता० उ०

ईश्वर को आँखों से कोई देख नहीं सकता, किन्तु हममें से हर एक मन को पवित्र करके विमल बुद्धि से ईश्वर को देख सकता है।

समस्त विश्व ईश्वर से पूर्ण है। **—स्वामी विवेकानन्द**

व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी। सत चेतन घन आनंद राशी ॥
आदि-अन्त कोउ जासु न पावा। मति-अनुमान निगम यश गावा ॥
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु वानी वक्ता बड़ योगी ॥
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहै घ्रान बिनु वास अशेषा ॥
अस सब भाँति अलौकिक करणी। महिमा तासु जाइ किमि बरणी ॥

—तुलसी (मानस, बाल०)

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा। **—ऋग्वेद**

वह सब लोकों का एकमात्र स्वामी है।

जिस तरह पानी को कोई जल, कोई आब, कोई वाटर कहते हैं, उसी तरह एक ही सच्चिदानन्द परमेश्वर को कोई अल्लाह, कोई हरि, कोई गॉड पुकारते हैं।

—रामकृष्ण परमहंस

God grows weary of great kingdoms but never of little flowers. —**R. N. Tagore**

ईश्वर बड़े बड़े साम्राज्यों से विमुख हो जाता है, परन्तु छोटे-छोटे पुष्पों से कभी खिन्न नहीं होता। —**रवीन्द्र**

प्रत्येक मनुष्य मानवता की सेवा करके ईश्वर के दर्शन कर सकता है, क्योंकि न ईश्वर स्वर्ग में है, न पाताल में है, बल्कि प्रत्येक के हृदय में है।

—**महात्मा गांधी**

तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा। —**ऋग्वेद**

उस परमात्मा में ही सम्पूर्ण लोक स्थित है।

ईश्वर का दाहिना हाथ कोमल है, परन्तु बायाँ हाथ बहुत कठोर है। —**रवीन्द्र**

Nature is too thin a screen; the glory of the omnipresent God bursts through everywhere. —**Emerson**

प्रकृति बहुत महीन पर्दा है; सर्वव्यापी ईश्वर का प्रताप सब तरफ से फूट पड़ता है। —**एमर्सन**

मैं ईश्वर से डरता हूँ, ईश्वर के बाद मुख्यतः उससे डरता हूँ, जो ईश्वर से नहीं डरता। —**सादी**

A foe to God was never a true friend to man. —**Young**

ईश्वर का शत्रु कभी मानव का सच्चा मित्र नहीं हुआ। —**यंग**

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। —**ऋग्वेद**

उस एक प्रभु को विद्वान् लोग अनेक नामों से पुकारते हैं।

ईश्वर सत्य है और प्रकाश उसकी छाया है। —**प्लेटो**

If God did not exist it would be necessary to invent him.

—**Voltaire**

यदि ईश्वर का अस्तित्व न होता तो उसके आविष्कार की आवश्यकता होती।

—**वाल्टेयर**

जिधर भी जाओ, जिधर भी देखो,
उसी का प्रकाश दिखाई देता है। —**गुरु नानक**

ईश-विमुख

मित्र करै शत रिपु की करनी। ताकहँ बिबुध नदी बैतरनी ॥
सब जग तेहि अनलहु ते ताता। जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता ॥

—तुलसी (मानस, अरण्यकाण्ड)

विंध्य न ईंधन पाइए, सागर जुरै न नीर।
परै उपास कुबेर घर, जो विपच्छ रघुबीर ॥
राम दूरि माया बढ़ति घटति जानि मन माँह।
भूरि होति रबि दूरि लखि, सिर पर पगतर छाँह ॥
बरषा को गोबर भयो, को चह को करै प्रीति।
तुलसी तू अनुभवहिं अब, राम विमुख की रीति ॥

—तुलसी (दोहावली)

हर सू दवद आँकस जे दरे खश बरआनद।
बाँरा कि बख्वानद बंदरे कस न दवानद। **—सादी**

ईश्वर जिसको अपने द्वार से भगा देते हैं वह घर-घर टुकड़े माँगता फिरता है परन्तु जिसे वह अपने पास बुला लेते हैं उसे किसी के द्वार पर जाने की जरूरत नहीं रहती।

ईश-शरण

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता-१८।६६)

सम्पूर्ण धर्मों को त्याग कर केवल मेरी शरण में आ। किसी बात का शोक मत कर। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा।

मनुष्य को जब कभी प्रयत्न करते हुए भी आशा की झलक दिखाई नहीं देती तो वह अपने आपको दैव के हाथों छोड़ देता है। तैराक के हाथ-पैर थक जाते हैं तो वह तैरने का यत्न भी त्याग देता है। **—सुदर्शन**

जब मनुष्य दुःख-वेदना के मार्मिक आघात से विकल होकर परमात्मा की शरण लेता है तब परमात्मा की गहराई में मनुष्य को परमात्मा की प्रेरणा व निर्देश प्राप्त होता है। **—अज्ञात**

ईश-सुमिरन

यं मा स्मृत्वाऽगाधा गाधा भवति।
यं मा स्मृत्वाऽपूतः पूतो भवति।
यं मा स्मृत्वाऽव्रती व्रतीं भवति।
यं मा स्मृत्वाऽश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति।

—गोपालोत्तरता उप०

मैं वह हूँ, जिसका स्मरण करने से अथाह की थाह मिल जाती है,
मैं वह हूँ, जिसका स्मरण करके अपवित्र भी पवित्र हो जाता है,
मैं वह हूँ, जिसका स्मरण करके व्रतहीन भी व्रतधारी हो जाता है,
मैं वह हूँ, जिसका स्मरण करके अज्ञानी भी ज्ञानी हो जाता है।

ईर्ष्या

वह ईर्ष्या ही क्या जिसमें डंक न हो, विष न हो। **—प्रेमचन्द**

पर सुख-संपति देखि सुनि, जरहिं जे जड़ बिनु आगि।
तुलसी तिन के भाग ते, चलै भलाई भागि॥ **—तुलसी**

ईर्ष्या वह काली नागिन है जो समस्त पृथ्वीमंडल में जहरीली फुफकारें छोड़ रही है। यह गलतफहमियों की एक गर्म हवा है जो शरीर के अन्दर "लू" की तरह चलती है और मानसिक शक्तियों को झुलसाकर राख बना देती है।

—अज्ञात

ईर्ष्यायुक्त मनुष्य के हृदय में सदा जलन और दुःख बने रहते हैं। उसका मुख सदा विष उगला करता है और पड़ोसी की विजय और भाग्य उसे दुःखी करते रहते हैं। **—'जीवन का सद्व्यवहार'**

ईर्ष्यालु मनुष्य स्वयं ही ईर्ष्याग्नि में जला करता है। उसे और जलाना व्यर्थ है। **—सादी**

ईर्ष्या समस्त पापों की जड़ है, और दूसरे को धकेल कर स्वयं सत्तारूढ़ होने की महात्वाकांक्षा व्यक्ति को नीचे गिराती है। **—हरिभाऊ उपाध्याय**

दीनों के प्रति सज्जनों की ईर्ष्या भी वरदान होती है।

—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

ईर्ष्या में गुण ग्राहकता नहीं होती। **प्रेमचन्द (रंगभूमि)**

ईर्ष्या अपनी हीनता के बोध में से जन्म लेती है और वह उस हीनता को दूर नहीं करती, सिर्फ दबाती है। **—जैनेन्द्र**

ईर्ष्या करने वाले का सबसे बड़ा शत्रु उसकी ईर्ष्या ही है। दूसरे शत्रु उसका अहित करने से रह भी जायं, परन्तु ईर्ष्या उसे हानि पहुँचाकर ही रहती है।

—संत तिरुवल्लुवर

ईश्वरार्पण

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागत है मोर॥ **—कबीर**

चित्त-शुद्धि के अन्य साधनों को अगर मैं सोडा या साबुन की उपमा दूं तो ईश्वरार्पण को जल की उपमा दूंगा। सोडा साबुन जल के बिना काम नहीं देते, लेकिन बिना सोडा साबुन के भी शुद्ध जल से धोने का काम हो जाता है।

—विनोबा

जब अहंकार का विनाश होता है, निजत्व का ह्रास होता है, जब तुम अपने सर्वस्व को ईश्वरार्पण करते हो, तब भक्ति स्वतः प्रकट होती है।

—स्वामी शिवनन्द

ईश-अर्पण

यत्करोषि यदश्वासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥
शुभाशुभफलैखं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।
संन्यासयोगमुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैव्यसि॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता ९।२७-२८)

हे कौन्तेय! तुम जो कुछ करते हो, जो खाते हो, जो हवन करते हो, जो दान देते हो, जो तप करते हो वह सब मेरे अर्पण कर दो।

इस प्रकार संन्यास योग से मुक्त हुये तुम शुभ-अशुभ फल के कर्म बन्धन से मुक्त हो जाओगे और मुक्त होकर मुझे प्राप्त होगे।

उत्साह

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम् ।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम् ।।

—वाल्मीकि (रा०कि०)

उत्साह ही बलवान् होता है, उत्साह से बढ़कर दूसरा कोई बल नहीं है। उत्साही पुरुष के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

बिना उत्साह के कभी किसी महान् ध्येय की प्राप्ति नहीं हुई। **—इमर्सन**

हताश न होना ही सफलता का मूल है और यही परम सुख है। उत्साह ही मनुष्य को सर्वदा सब प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त करने वाला है और जीव जो कुछ कर्म करता है, उसे उत्साह ही सफल बनाता है। **—वाल्मीकि (रा०सु०)**

Every production of genius must be the production of enthusiasm. **—Disraeli**

प्रतिभावान् की प्रत्येक कृति उत्साह की कृति होनी चाहिए। **—डिजरायली**

Every great and commanding movement in the annals of the World in the triumph of enthusiasm. **—Emerson**

विश्व के इतिहास में प्रत्येक महान् और महत्वपूर्ण आन्दोलन उत्साह की सफलता है। **—एमर्सन**

उत्साही

उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु। **—वाल्मीकि**

उत्साही मनुष्य कठिन से कठिन काम आ पड़ने पर भी हिम्मत नहीं हारते।

उत्तम पुरुष

न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् ।

—कालिदास (शकुन्तला)

चंचल चमकवाली बिजली पृथ्वी-तल से थोड़े ही निकला करती है। (उत्तम वस्तु की उत्पति ऊँचे स्थान से ही होती है)।

उत्तम पुरुषों की गति फूल के गुच्छे के सदृश है, या तो वे लोगों के सिर पर ही विराजते हैं या वन में ही सूख कर समाप्त हो जाते हैं। —भर्तृहरि

उत्तमा स्वयमाख्याता पितुः ख्याताः च मध्यमाः।
अधमा मातुलात्ख्याताः श्वसुरख्याताधमाधमाः॥ —अज्ञात

उत्तम पुरुष वह है जो अपना नाम स्वयं पैदा करता है, मध्यम पुरुष अपने पिता के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करता है, अधम पुरुष वह है जो अपने मामा के नाम से ख्याति प्राप्त करता है, पर वह पुरुष अधम से अधम है जो ससुर के नाम पर प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

उत्तम जन

प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्न विहिता विरमन्तिमध्याः।
विघ्नैः सहस्र गुणितैरपि हन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तम जना न परित्यजन्ति॥

—विशाखदत्त (मुद्रा राक्षस)

कर्म नहीं आरम्भ अधम जन करते विघ्नों से डर कर।
बाधाओं को देख अधूरा कर्म छोड़ते मध्यम नर॥
जीवन पथ पर कोटि-कोटि पायें बाधायें या उलझन।
हाथ लगाकर कर्म बीच में नहीं छोड़ते उत्तम जन॥

—दीनानाथ दिनेश (पद्यानुवादक)

जिस प्रकार जो खेत उत्तम उपज देता है वह उत्तम माना जाता है। ठीक उसी प्रकार उत्तम स्त्री-पुरुषों को जन्म देने वाला देश भी श्रेष्ठ होता है।

—विनायक दामोदर सावरकर

उत्तरदायित्व

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है। जब हम राह भूल कर भटकने लगते हैं तब यही ज्ञान हमारा विश्वनीय पथप्रदर्शक बन जाता है। —प्रेमचन्द

Responsibility educates. —**Wendall Phillips**

उत्तरदायित्व से शिक्षा मिलती है। —**वेण्डेल फिलिप**

Responsibility walks hand in hand with capacity and power. —**J. G. Holland**

उत्तरदायित्व, योग्यता और शक्ति के साथ-साथ चलता है।

—**जे० जी० हालैण्ड**

Responsibility is a great power developer. Where there is responsibility there is growth.

उत्तरदायित्व से महान् बल प्राप्त होता है। जहाँ कहीं उत्तरदायित्व होता है वहीं विकास होता है। —**अज्ञात**

उत्तेजना

प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात् प्रतिपद्यते हि जनः। —**कालिदास**

प्रायः उत्तेजना होने पर मनुष्य अपना महत्त्व प्रदर्शित करता है।

Emotion turning back on itself, and not leading on to thought or action is the element of madness. —**J. Sterling**

ऐसी उत्तेजना उन्माद का मूल है जो स्वयं की ओर मुड़ जाती है और जिसका परिणाम कोई विचार या कर्म नहीं होता। —**जे० स्टेलिंग**

उदारता

उदार मन वाले विभिन्न धर्मों में सत्य देखते हैं; संकीर्ण मन वाले केवल अन्तर देखते हैं। —**एक चीनी कहावत**

A great mind will neither give an affront, nor bear it.

—**Home**

महान् व्यक्ति न किसी का अपमान करता है और न उसको सहता है।

—**होम**

A brave man knows no malice; but forgets, in peace, the injuries of war, and gives his dearest foe a friend's embrace.

—**Cowper**

एक वीर पुरुष किसी से द्वेष नहीं करता, युद्ध की क्षति को शांति में भूल जाता है और अपने भयंकर शत्रु का भी मित्र की भाँति आलिंगन करता है।

—काउपर

Generosity is the accompaniment of high birth; pity and gratitude are its attendants. **—Corneille**

उदारता उच्च वंश से आती है; दया और कृतज्ञता उसके सहायक हैं।

—कारनेल

अयं निजः परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम्
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।। —हितोपदेश

'यह मेरा है यह दूसरे का' ऐसा संकीर्ण हृदय वाले समझते हैं। उदार चित्त वाले तो सारी दुनिया को कुटुम्ब सा समझते हैं।

उद्यम

प्रभु ने दो दो कर दिए करो कमाई आप।
पराधीनता सम नहीं और दूसरा पाप।।

—मैथिलीशरण गुप्त

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।। —पंचतन्त्र

कार्य मनोरथ से नहीं उद्यम से सिद्ध होते हैं। जैसे सोते हुए सिंह के मुँह में मृग अपने आप नहीं चले जाते।

विश्राम में भी उद्यम की गति है।
शांत समुद्र की तरंगें गतिहीन नहीं हैं। —रवीन्द्र

उद्यम ही सफलता की कुंजी है। बिना उद्यम किये थाली की रोटी भी अपने मुँह में नहीं जाती। —अज्ञात

अगर तूने स्वर्ग और नरक नहीं देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है। —अज्ञात

उद्यमी

नात्युच्चशिखरो मेरुः नातिनीचं रसातलम् ।
व्यवसायद्वितीयानां नाप्यपारो महोदधिः ।।

व्यवसायी मनुष्य के लिए सुमेरु पहाड़ की चोटी भी बहुत ऊँची नहीं है और उसके लिए रसातल भी अधिक नीचा नहीं है और वह (उद्यमी) समुद्र को भी अथाह नहीं समझता । —अज्ञात

उद्योग

उद्योगी मनुष्य की सहायता करने के लिए प्रकृति बाध्य है ।

—स्वामी रामतीर्थ

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी-
दैंवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति ।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ? —भर्तृहरि

उद्योगी पुरुष-सिंह लक्ष्मी का उपार्जन करता है, परन्तु कायर मनुष्य भाग्य के भरोसे बैठा रहता है । भाग्य को ठोकर मारकर उद्योगी पुरुष अपने कार्य में दृढ़ता से निमग्न हो जाता है और यदि फिर भी उसे सफलता नहीं मिलती, तो वह भाग्य का नहीं वरन् अपनी कार्य-पद्धति का दोष है ।

वावृधुः सौभगाय । —ऋग्वेद

ऐश्वर्य के लिये उद्योग करो ।

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः ।
उत्तष्ठिस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन् ।। —ऐतरेय ब्राह्मण

पड़े सोते रहना ही कलयुग है, निद्रा से उठ बैठना ही द्वापर है, उठकर खड़ा हो जाना ही त्रेता है और चल पड़ना ही सतयुग है । (अतः चलते रहो, चलते रहो) ।

वर्तमानेन संतुष्टस् तथाप्युन्नत्यभीप्सया ।
समुद्योग परस्तिष्ठेत् फलं न्यस्य परात्मनि ।। —अज्ञात

मनुष्य को वर्तमान से संतुष्ट रहते हुए भी उन्नति की इच्छा से उद्योग में तत्पर होना चाहिए । साथ ही उस उद्योग के फल को परमात्मा पर छोड़ देना चाहिए ।

समुद्योगपरैर्भाव्यं जीवने मानवैः सदा ।
परमुद्योगासीमाया धीमान् ध्यानं न विस्मरेत् ॥ —अज्ञात

मनुष्यों को जीवन में उद्योग अवश्य करना चाहिए। परन्तु बुद्धिमान् मनुष्य को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि फल के विषय में उद्योग की अपनी सीमा भी होती है।

जहाँ उद्योग नहीं वहाँ सुख नहीं। जिस देश से उद्योग गया उस देश को भारी घुन लगा। —विनोबा

स्वावलम्बन और सहयोगात्मक उद्योग; दोनों नागरिक जीवन की कुंजी हैं। —सरदार पटेल

जिस घर में उद्योग की तालीम नहीं उस घर के लड़के जल्दी ही घर का नाश कर देंगे। —विनोबा

माँगना एक लज्जास्पद कार्य है। अपने उद्योग से कोई वस्तु प्राप्त करना ही सच्चे मनुष्य का कर्तव्य है। —महात्मा गाँधी

पहले अपनी परीक्षा करो, फिर ईश्वर को पुकारो, क्योंकि ईश्वर उद्योगी की ही सहायता करता है। —एमर्सन

उद्धार

उद्धार वही कर सकते हैं जो उद्धार के अभिमान को हृदय में आने नहीं देते। —अज्ञात

अगर संसार में तीन करोड़ ईसा, मुहम्मद, बुद्ध या राम जन्म लें तो भी तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता जब तक तुम स्वयं अपने अज्ञान को दूर करने के लिए कटिबद्ध नहीं होते, तब तक तुम्हारा कोई उद्धार नहीं कर सकता, इसलिए दूसरों का भरोसा मत करो। —स्वामी रामतीर्थ

उधार (दे० 'ऋण')

Borrowing is not much better than begging. —**Lessing**
उधार माँगना भीख माँगने से अधिक अच्छा नहीं है। —लेसिंग

Neither a borrower nor a lender be; for loan oft loses both itself and friend. —**Shakespeare**

न उधार लो और न उधार दो क्योंकि उधार प्रायः स्वयं को और मित्र दोनों को खो देता है। —शेक्सपियर

उधार देना ही पाप करना है। —रस्किन

उन्नति

वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है। —स्वामी रामतीर्थ

स्त्री की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। —अरस्तू

Progress—the onward stride of God. **—Victor Hugo**

उन्नति आगे की ओर ईश्वर की लम्बी डग है। —विक्टर ह्यूगो

Intercourse is the soul of progress. **—Buxton**

मेलमिलाप उन्नति की आत्मा है। —बक्सटन

Nature knows no pause in progress and development and attaches her curse on all inaction. **—Goethe**

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नहीं जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

All that is human must retrograde if it do not advance. **—Gibbon**

सभी वस्तुएँ जो मानव से सम्बन्धित हैं यदि उन्नति नहीं करतीं तो उनका ह्रास होने लगता है। —गिबन

He only is advancing in life whose heart is getting softer, whose blood warmer, whose brain quicker, whose spirit is entering into living peace. **—Raskin**

केवल वही जीवन में उन्नति कर रहा है, जिसका हृदय कोमल, रुधिर उष्ण, मस्तिष्क तीक्ष्ण होता जाता है, एवं जिसके मन को शान्ति मिलती जाती है। —रस्किन

तस्मादुन्नतिकामेन मानवेनेह जन्मनि ।
आत्मनो भावसंशुद्ध्यै सर्वदैव प्रयत्यताम् ॥ —अज्ञात

इस जन्म में जो मनुष्य उन्नति करना चाहता है उसको अपने भावों की शुद्धि के लिए बराबर प्रयत्नशील रहना चाहिए ।

जन्म-जन्मान्तरस्यैतद् विज्ञा आहुः प्रयोजनम् ।
अनुभूतिविशेषैर्यदुत्तरोत्तरमुन्नतिः ॥ —अज्ञात

विज्ञजनों का कथन है कि जन्म-जन्मातर का प्रयोजन यही है कि विभिन्न अनुभवों द्वारा उत्तरोत्तर उन्नति की जाय ।

उन्माद

जो प्रेम असहिष्णु हो, जो दूसरों के मनोभावों का जरा भी विचार न करे, जो मिथ्या कलंक आरोपण करने में संकोच न करे, वह उत्माद है, प्रेम नहीं ।
—प्रेमचन्द

O Judgment ! thou art fled to brutish beasts,
And men have lost their reason. —**Shakespeare**

अरे न्याय ! क्या तू भी जानवरों के हृदय में चला गया और मनुष्यों में ज्ञान नहीं रह गया । —शेक्सपियर

Insanity destroys reason, but not wit. —**Emmons**

उन्माद ज्ञान का नाश करता है, परन्तु बुद्धि का नहीं । —इमन्स

ज्ञान का उन्माद मदिरा के उन्माद से भयंकर है । क्योंकि ज्ञानोन्मादी अपने साथ दूसरों को भी हानि पहुँचाते हैं जब कि मदिरोन्मादी केवल अपनी ही हानि करते हैं । —रामप्रताप त्रिपाठी

उपकार

यों रहीम सुख होत है, उपकारी के अंग ।
बाँटन वारे के लगै, ज्यों मेंहदी के रंग ॥ —रहीम

अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम् ।

—कालिदास (मेघदूत)

वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सहन करता है, परन्तु अपनी छाया से दूसरों की गर्मी से रक्षा करता है ।

पर-उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ । **—तुलसी (मानस, अरण्य०)**

Men resemble the gods in nothing so much as in doing good to their fellow creatures. **—Cicero**

मनुष्य मानव के साथ केवल भलाई करके ही अपने को देवतुल्य बनाते हैं ।

—सिसरो

रहिमन पर उपकार के, करत न पारै बीच ।
मांस दियो शिवि भूप नें, दीन्ह्यो हाड़ दधीच ।। **—रहीम**

न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किम्पुनर्यस्तथोच्चैः ।

—कालिदास (मेघदूत)

अपने ऊपर उपकार करने वाला मित्र यदि दैवयोग से अपने घर आ जाय तो नीचात्मा भी भक्तिभाव-पूर्वक उसका आदर करते हैं, उससे विमुख नहीं होते— उच्चात्माओं का तो कहना ही क्या है ।

उपकुर्यान्निराकांक्षी यः स साधुरितीर्यते ।
साकांक्षमुपकुर्याद्यः साधुत्वे तस्व को गुणः ।।

जो निष्काम भाव से किसी का उपकार करता है, वही साधु कहलाता है, जो किसी वस्तु की इच्छा से उपकार करता है, उसकी साधुता में कौन गुण है ? वह निरर्थक है । **—अज्ञात**

He that does good to another, does good also to himself, not only in the consequences but in the very act, for the consciousness of well doing is in itself ample reward. —Seneca

जो मनुष्य दूसरे का उपकार करता है वह अपना भी उपकार न केवल परिणाम में अपितु उसी कर्म में करता है, क्योंकि अच्छा कर्म करने का भाव ही स्वयं उचित पुरस्कार है । —सेनेका

सद्भावार्द्रः फलति न चिरेणोपकारो महत्सु। —कालिदास

सज्जनों के ऊपर किये गये सद्भावसूचक उपकार का फल मिलते कुछ भी देर नहीं लगती।

दूसरों का उपकार करना मानो एक प्रकार से अपना ही कल्याण करना है। —अज्ञात

He who wants to do good knocks at the gate; he who loves finds the gate open. **—R. N. Tagore**

जो दूसरों पर उपकार लादना चाहता है, उसे दरवाजा खटखटाना होता है किंतु जिसके हृदय में प्रेम है उसके लिए द्वार खुला ही रहता है। —रवीन्द्र

मनुष्य जीवन की सफलता इसी में है कि वह उपकारी के उपकार को कभी न भूले। उसके उपकार से भी बढ़ कर उसका उपकार कर दे।

—वेदव्यास (महा०, आदि०)

उपकर्त्रारिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा।
उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः॥ —माघ

उपकार करने वाले शत्रु से मेल करना चाहिए, अपकार करने वाले मित्र से नहीं, क्योंकि इन दोनों के उपकार और अपकार यही दो लक्षण जानने चाहिए, अर्थात् उपकार करे सो मित्र और अपकार करे सो शत्रु।

महान् पुरुष जो उपकार करते हैं, उसका बदला नहीं चाहते। भला संसार जल बरसानेवाले बादलों का बदला किस प्रकार चुका सकता है?

—संत तिरुवल्लुवर

उपदेश

उपदेश चाहे जिसको नहीं देना चाहिए, समझ बूझ कर देना चाहिए।

—अज्ञात

मर्द बायद कि गोरद अन्दर गोश
गर नाविश्तास्त पन्द वर दीवार। —सादी

मनुष्य को चाहिए कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे ग्रहण करे।

उपदेश किसी को मैं न दिया करता हूँ।
जो कुछ कहना है आप किया करता हूँ॥ —एक ऋषि

Give every man thine ear, but few thy voice.

—**Shakespeare**

प्रत्येक का उपदेश सुनो, परन्तु अपना उपदेश कुछ ही व्यक्तियों को दो।

—**शेक्सपियर**

धर्म का उपदेश सुनने से कोई धर्मात्मा नहीं हो जाता, किन्तु उपदेशानुसार व्यवहार करने से मनुष्य धर्मात्मा हो सकता है। —**अज्ञात**

Admonish your friends privately but praise them openly.

—**Syrus**

अपने मित्रों को एकान्त में बुरा भला कहो परन्तु उनकी प्रशंसा सबके सम्मुख करो। —**साइरस**

परोपदेशवेलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति वै।
विस्मरन्तीह शिष्टत्वं स्वकार्ये समुपस्थिते॥ —**अज्ञात**

दूसरे को उपदेश देने के समय सभी सज्जन हो जाते हैं, किन्तु जब स्वयं वैसा आचरण करने का अवसर आ पड़ता है तो सज्जनता भूल जाते हैं।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे॥

—**तुलसी (मानस)**

None preaches better than the ant, and she says nothing.

—**Franklin**

चींटी से अच्छा कोई उपदेश नहीं देता, और वह मौन रहती है। —**फ्रैंकलिन**

उपद्रव

निर्विवेकतया बाल्यं, कोपोन्मादेन यौवनम्।
वृद्धत्वं विकलत्वेन, सदा सोपद्रवं नृणाम्॥ —**अज्ञात**

बचपन में अविवेकता, जवानी में क्रोध-उन्माद और बुढ़ापे में विकलता—इस प्रकार मनुष्य के पीछे सर्वदा एक न एक उपद्रव लगा रहता है।

उपनिवेशवाद

उपनिवेशवाद बीते युग की वस्तु है। —**वाल्टर पी**

उपनिषद्

उपनिषदें हमारी युग की सबसे मूल्यवान् धरोहर हैं।

—**पं० रविशंकर शुक्ल**

In the whole world there is no study so elevating as that of the Upanisads. It has been the solace of my life. It will be the solace of my death. —**Schopenhauer**

सम्पूर्ण विश्व में उपनिषदों के समान जीवन को ऊँचा उठाने वाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नहीं है। इनसे मेरे जीवन को शान्ति मिली है, इन्हीं से मुझे मृत्यु में भी शान्ति मिलेगी। —**शोपेनहार**

If these words of Schopenhauer required any confirmation, I would willingly give it as a result of my life long study.

—**Max Mullar**

शोपेनहार के इन शब्दों के लिए यदि किसी समर्थन की आवश्यकता हो तो अपने जीवन भर के अध्ययन के आधार पर मैं प्रसन्नतापूर्वक उनका समर्थन करूँगा। —**मैक्समूलर**

उपनिषदें सनातन दार्शनिक ज्ञान के मूल स्रोत हैं। वे केवल प्रखरतम बुद्धि का ही परिणाम नहीं हैं, अपितु प्राचीन ऋषियों की अनुभूति के फल हैं।

—**पं० गोविन्दवल्लभ पन्त**

Almost super human conceptions, whose originators can hardly be said to be mere men. —**Schopenhauer**

इन अतिमानवीय धारणाओं के प्रणेताओं को निरे मनुष्य कहना अति कठिन है। —**शोपेनहार**

उपनिषद् वेद का ज्ञान-काण्ड है। यह चिरप्रदीप्त वह ज्ञानदीपक है, जो सृष्टि के आदि से प्रकाश देता चला आ रहा है और प्रलय पर्यन्त पूर्ववत् प्रकाशित रहेगा। इसके प्रकाश में वह अमरत्व है, जिसने सनातन धर्म के मूल का सिंचन किया है। यह जगत्-कल्याणकारी भारत की अपनी निधि है। —**स्वामी ब्रह्मानन्द**

Philosophicals conceptions unequalled in India or perhaps anywhere in the world. **—Paul Daussaen**

(उपनिषदों की) दार्शनिक धारणाएं न केवल भारत में सम्भवतः सम्पूर्ण विश्व में अतुलनीय हैं। **—पाल डायसन**

मानवीय चिन्तन के इतिहास में पहले-पहल बृहदारण्यक उपनिषद् में ही ब्रह्म अथवा पूर्ण तत्त्व को ग्रहण करके उसकी यथार्थ व्यञ्जना की गयी है।

—मैकडानेल

Personally I regard the Upanishads as the highest product of the haman mind. **—Dr. Annie Bessant**

व्यक्तिगत रूप से मैं उपनिषदों को मानवचेतना का सर्वोच्च फल मानती हूँ।
—डा० ऐनी बीसेन्ट

Brahman or Absolute if grasped and definitely expressed for the first time in the history of human thought in the Brahdaranyaka Upanishad. **—Macdonell**

मानवीय चिन्तना के इतिहास में पहले-पहल वृहदारण्यक उपनिषद में ही ब्रह्म अथवा पूर्ण तत्त्व को ग्रहण करके उसकी यथार्थ व्यञ्जना हुई है।

—मैकडानेल

Even the loftiest philosophy of the Europeans appears in comparison with the abundant light of oriental idealism like a feeble Promethan spark in full flood of the heavenly glory of the noonday sun—faltering and feeble and ever ready to be extinguished. **—Fredrich Schelling**

(उपनिषदों में वर्णित) पूर्वीय आदर्शवाद के प्रचुर प्रकाशपुंज की तुलना में यूरोपवासियों का उच्चतम तत्त्वज्ञान ऐसा ही लगता है, जैसे मध्याह्न-सूर्य के व्योम-व्यापी प्रताप की पूर्ण प्रखरता में टिमटिमाती हुई अनलशिखा की कोई आदि किरण, जिसकी अस्थिर और निस्तेज ज्योति ऐसी हो रही हो मानो अब बुझी कि तब बुझी। **—फ्रेडरिक शेलिंग**

उपनिषदों में वे सिद्धान्त स्पष्ट रूप से दिये हुए हैं, जिनके आधार पर कोई भी विचारशील मनुष्य अपने लिए कर्तव्य का निश्चय कर सकता है। इस पथ पर चलनेवाला अपने लिए तो निःश्रेयस का द्वार खोल ही लेगा, उसके तपःपूत व्यक्तित्व के प्रकाश में मानव समाज भी अभ्युदय-पथ पर आरूढ़ हो सकेगा।

—डा० सम्पूर्णानन्द

उपन्यास

Novels are sweet. All people with healthy literary appetites love them. **—Thackeray**

उपन्यास मिठाइयाँ हैं। साहित्य के भूखे स्त्री-पुरुष इनकी चाह में रहते हैं।

—थैकेरे

Novels do not force their readers to sin, but only instruct them how to sin. **—Zimmermann**

उपन्यास अपने पाठक को पाप करने को बाध्य नहीं करते, लेकिन केवल बताते हैं कि पाप कैसे किया जाता है। **—जमीरमन**

उपवास

अग्नि आहार को पचाती है और उपवास दोषों को पचाता हैं अर्थात् नष्ट करता है। **—आयुर्वेद**

उपवास शुद्धि का एक जबरदस्त साधन है और मानव समाज में उपवास के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान अवश्य होना चाहिए। **—महात्मा गांधी**

सच्चे उपवास का अर्थ है कि हम अपनी व्यक्तिगत स्वार्थ-पूर्ण इच्छाओं और क्रिया-कलापों से मुक्त हो जायँ। **—स्वामी रामतीर्थ**

उपवास सत्याग्रह के शस्त्रागार में महान् शक्तिशाली अस्त्र है। इसको हर कोई नहीं चला सकता। केवल शारीरिक योग्यता इसके लिए कोई योग्यता नहीं। यदि ईश्वर में जीती-जागती श्रद्धा न हो तो दूसरी योग्यताएँ बिलकुल निरुपयोगी हैं। **—महात्मा गाँधी**

उपवास शब्द का अर्थ है दुर्गुणों एवं दोषों से बचकर आत्मा अथवा गुणों के साथ वास अर्थात् निवास। अनुभव से देखा जा सकता है कि पाप अथवा कलुषित भावनाओं से मुक्त होकर चित्तवृत्तियों को आत्मा अथवा सद्गुणों में सन्निविष्ट करने की प्रेरणा उपवास के समय सर्वाधिक होती है। **—रामप्रताप त्रिपाठी**

त्यागश्च संनतिश्चैव शश्यते तप उत्तमम् ।
सदोपवासी च भवेद् ब्रह्मचारी सदा भवेत् ॥ **—महाभारत**

श्रेष्ठ पुरुषों के मत में त्याग और विनय ही उत्तम तप हैं। इनका पालन करने वाला मनुष्य नित्य उपवासी और सदा ब्रह्मचारी है।

यदि शारीरिक उपवास के साथ-साथ मन का उपवास न हो तो वह दम्भपूर्ण और हानिकारक हो सकता है। **—महात्मा गाँधी**

धार्मिक आन्दोलन की सफलता उसके समर्थकों की बौद्धिक शक्ति पर निर्भर नहीं करती, एकमात्र आध्यात्मिक शक्ति पर ही सफलता निर्भर करती है, और उस शक्ति के बढ़ाने में उपवास ही अत्यन्त सुन्दर साधन है। **—महात्मा गाँधी**

असकृज्जलपानाच्च सकृत् ताम्बूलभक्षणात् ।
उपवासः प्रणश्येत दिवा-स्वापाच्च मैथुनात् ॥ **—अज्ञात**

एक से अधिक बार पानी पी लेने, एक बार भी ताम्बूल खा लेने, दिन में सो लेने तथा स्त्रीप्रसंग से उपवास का फल नष्ट हो जाता है।

अन्तरा प्रातराशं च सायमाशं तथैव च ।
सदोपवासी स भवेद् यो न भुङ्क्तेऽन्तरा पुनः ॥

—वेदव्यास (महा०, शान्ति०)

जो प्रतिदिन प्रातःकाल के सिवा फिर शाम को ही भोजन करे और बीच में कुछ न खाये, वह नित्य उपवास करने वाला होता है।

उपहार

The best thing to give our enemy is forgiveness; to an opponent, tolerance; to a friend, your heart; to your child, a good example; to a father, deference; to your mother, conduct that will make her proud of you; to yourself, respect; to all men, charity. **—Balfour**

शत्रु को उपहार देने योग्य सर्वोत्तम वस्तु है क्षमा; विरोधी को सहनशीलता; मित्र को अपना हृदय; शिशु को उत्तम दृष्टान्त; पिता को आदर; माता को अपना ऐसा आचरण जिससे वह तुम पर गर्व करे; अपने को प्रतिष्ठा; और सभी मनुष्यों को उपकार। **—बालफोर**

That which is given with pride and obstentation is rather ambition than a bounty. **—Seneca**

अभिमान और आडम्बर के साथ दी हुई वस्तु उदारता की नहीं वरन् महत्त्वाकांक्षा की सूचक है। **—सेनेका**

The manner of giving shows the character of the giver, more than the gift itself. **—Lavator**

किसी वस्तु के देने का तरीका उपहार से अधिक उपहार देने वाले के चरित्र को बताता है। **—लवाटर**

धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है, और बदले में वह पुष्पों का उपहार देती है। **—रवीन्द्र**

The heart of the giver makes the gift dear and precious.

—Luther

देने वाले का हृदय उपहार को प्रिय और मूल्यवान् बना देता है। **—लूथर**

Love's gift cannot be given, it waits to be accepted.

—R. N. Tagore

प्रेम के उपहार दिये नहीं जाते, वे स्वीकार किये जाने की प्रतीक्षा करते हैं।

—रवीन्द्र

उपहास

Time is the wealth of change, but the clock in its parody makes it mere change and no wealth. **—R. N. Tagore**

समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नहीं। **—रवीन्द्र**

मित्रों का उपहास करना उनके पावन प्रेम को खण्डित करना है।

—रामप्रताप त्रिपाठी

मृत्युः शरीरगोप्तारं धनरक्षं वसुन्धरा।
दुश्चारिणी च हसति स्वपतिं पुत्रवत्सलम् ॥ —अज्ञात

शरीर की रक्षा करने वाले को मृत्यु, धन की रक्षा करने वाले को पृथ्वी और पुत्र का दुलार करने वाले अपने पति को व्यभिचारिणी स्त्री हँसती है।

उपाधि (पदवी)

The three highest titles that can be given to a man are those of a martyr, hero, saint. **—Gladstone**

तीन सबसे बड़ी उपाधियाँ जो मनुष्य को दी जा सकती हैं; शहीद, वीर और सन्त। **—ग्लेडस्टन**

It is not titles that reflect honour on men, but men on their titles. **—Machiavelly**

उपाधि मनुष्य के सम्मान की सूचक नहीं है वरन् मनुष्य ही उपाधि के सम्मान का सूचक है। **—मैकियावेली**

उपेक्षा

प्रेम सब कुछ सह लेता है परन्तु उपेक्षा नहीं सह सकता। **—सुदर्शन**

In persons grafted in a serious trust negligence is a crime. **—Shakespeare**

ऐसे व्यक्तियों द्वारा की गयी उपेक्षा अपराध है जिन पर गम्भीर विश्वास किया जाता है। **—शेक्सपियर**

उपेक्षाभाव मनुष्य के लिए निकृष्टतर व्यवहार है। वह गालियाँ सह सकता है, मार खा सकता है परन्तु उपेक्षा नहीं सह सकता। **—सुदर्शन**

उषा

विगत रात्रि के तूफान ने आज के प्रभात को स्वर्णमयी शान्ति का ताज पहना दिया है। **—रवीन्द्र**

सूर्य, प्रकाश का सादा वेश धारण किये हुए है। बादलों की वेश-भूषा कैसी रंगीली है। **—रवीन्द्र**

प्रभात के पहले प्रकाश और अंधकार में परस्पर द्वन्द्व-युद्ध हुआ। इस युद्ध के परिणामस्वरूप प्रकाश की विजय हुई, और अब वह प्राची के प्रांगण में खड़ा मुस्करा रहा है। —अज्ञात

Night's darkness is a bag that bursts with the gold of the dawn. **—R. N. Tagore**

रात्रि का अंधकार एक थैला है जिसमें से उषा का स्वर्ण फूटकर निकल पड़ता है। **—रवीन्द्र**

ऊसर

ममता-रत सन ज्ञान-कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी।
क्रोधिहिं सम कामिहिं हरिकथा। ऊसर बीज बएँ फल यथा।

—तुलसी (मानस, सुन्दर)

जाति-सेवा ऊसर की खेती है। **—प्रेमचन्द**

ऋण

Neither a borrower nor a lender be, for loan oft loses both itself and friend, and borrowing dulls the edge of husbandry.

—Shakespeare

न हो ऋणी और न हो महाजन; क्योंकि ऋण दिया हुआ धन अपने को भी खो देता है और देने वाले मित्रों को भी और ऋण लेने की आदत मितव्ययिता की धार को मोटी कर देती है। **—शेक्सपियर**

जो ऋण लेने जाता है, वह दुःख मोल लेने जाता है। **—टसर**

अग्ने अनृणो भवामि। **—यजुर्वेद**

हे प्रभो! मैं सदा ऋण से मुक्त होऊँ।

एकता

एकता का किला बड़ा प्रौढ़ है। इसके भीतर रहकर कोई प्राणी दुःख नहीं भोगता। **—अज्ञात**

बहूनामल्पसाराणां समवायो हि दुर्जयः।
तृणैरावेष्ट्यते रज्जुः बध्यन्ते तेन दन्तिनः ॥

बहुत-से क्षुद्र और कमजोर लोगों की एकता भी अजेय बन जाती है। कमजोर तिनकों से बनायी गयी रस्सी बड़े-बड़े हाथियों को भी बाँध लेती है।

—अज्ञात

परस्पर विरोधी मतों में एकता कराने से बढ़कर दुष्कर कार्य और नहीं है।

—ओवेन डिक्सन

By uniting we stand, by dividing we fall.

—John Dickinson

एकता से हमारा अस्तित्व कायम रहता है, विभाजन से हमारा पतन होता है।

—जान डिकिन्सन

ओस की एक बूंद से चिड़िया भी नहीं भीगती मगर मेंह से हाथी भी भीग जाता है। मेंह बहुत कुछ कर सकता है। **—सुदर्शन**

मोरचगांरा चु बुवद इत्तफाक।
शेरेजियां रा बदरारन्द पोस्त ॥ **—सादी**

यदि चिड़ियाँ एका कर लें तो शेर की खाल खींच सकती हैं।

मानव जाति को एकता का पाठ चींटियों से सीखना चाहिए। **—अज्ञात**

जब तक जीव-मात्र के साथ एकता महसूस न हो तब तक प्रार्थना, उपवास, जप-तप सब थोथी बातें हैं। **—महात्मा गांधी**

सबको हाथ की पांच उँगलियों की तरह रहना चाहिए। हाथ की पांचों उँगलियाँ समान थोड़े ही हैं? कोई छोटी है, कोई बड़ी, लेकिन हाथ से किसी चीज को उठाना होता है तब पाँचों इकट्ठा होकर उठाती हैं। हैं तो पाँच लेकिन काम हजारों का कर लेती हैं, क्योंकि उनमें एका है। **—विनोबा**

एकांगी

मनुष्य का जीवन इतना एकाङ्गी नहीं कि उसे हम केवल अर्थ, केवल काम या ऐसी ही किसी एक कसौटी पर परख कर सम्पूर्ण रूप से खरा या खोटा कह सकें। कपटी से कपटी लुटेरा भी अपने साथियों के साथ जितना सच्चा है उसे देखकर

महान् सत्यवादी भी लज्जित हो सकता है। कठोर से कठोर अत्याचारी भी अपनी संतान के प्रति इतना कोमल है कि कोई भावुक भी उसकी तुलना में न ठहरेगा।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

एकांत

एकान्तवास शोक-ज्वाला के लिए समीर के समान है। **—प्रेमचन्द**

The grass seeks her crowd in the earth,
The tree seeks his solitude of the sky. **—R.N. Tagore**

दूब पृथ्वी पर अपनी सहचरियों की खोज करती है, वृक्ष आकाश में एकान्त का अनुसन्धान करते हैं। **—रवीन्द्र**

Conversation enriches the understanding, but solitude is the school of genius. **—Gibbon**

वार्तालाप बुद्धि को मूल्यवान् बना देता है, परन्तु एकान्त प्रतिभा की पाठशाला है। **—गिबन**

Solitude shows us what we should be; society shows us what we are. **—Cecil**

एकान्त हमें बताता है कि हमें कैसा होना चाहिए, समाज हमें बताता है कि हम क्या हैं। **—सिसिल**

In my solitude of heart I feel the sigh of this widowed evening veiled with mist and rain. **—R.N. Tagore**

अपने हृदय की नीरवता में मुझे निर्जन संध्या के उच्छ्वास का आभास होता है। **—रवीन्द्र**

Solitude is sometimes best society. **—Milton**

एकान्त प्रायः सर्वोत्तम संगति है। **—मिल्टन**

O solitude ! where are the charms
That sages have seen in thy face ? **—Cowper**

हे एकान्त ! तुम्हारा वह आकर्षण कहाँ है जिसे ऋषियों ने तुममें देखा है ?
—काउपर

एकान्त में रहना ही महान् आत्माओं का भाग्य है। —शोपेनहार

एकाग्रता

एकाग्रता एक कला है, जिसके आते ही सफलता निश्चित हो जाती है। कर्म, भक्ति, ज्ञान, योग और सम्पूर्ण साधनों की सिद्धि का मूलमन्त्र एकाग्रता है।
—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

अपनी अभिलाषाओं को वशीभूत कर लेने के बाद मन को जितनी देर तक चाहो एकाग्र किया जा सकता है। —स्वामी रामतीर्थ

तुम्हारी विजयशक्ति है—मन की एकाग्रता। यह शक्ति मनुष्य-जीवन की समस्त ताकतों को समेट कर मानसिक क्रांति उत्पन्न करती है। —अज्ञात

Concentration purifies and calms the surging emotions, strengthous the current of thought and clarifies the ideas.

—Swami Sivananda (Concentration and Meditation)

एकाग्रता आवेश को पवित्र और शान्त कर देती है, विचारधारा को शक्तिशाली और कल्पना को स्पष्ट करती है। —स्वामी शिवानन्द

तुम एकाग्रता द्वारा उस अनन्त शक्ति के अटूट भंडार के साथ मिल जाते हो, जिसमें इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है। —अज्ञात

Concentration without purity is of no use.

–Swami Sivananda

पवित्रता के बिना एकाग्रता का कोई मूल्य नहीं। —स्वामी शिवानन्द

मन में एकाग्र शक्ति प्राप्त करने वाले मनुष्य संसार में किसी समय असफल नहीं होते। —अज्ञात

संसार के प्रत्येक कार्य में विजय पाने के लिए एकाग्रचित्त होना आवश्यक है। जो लोग चित्त को चारों ओर बिखेरकर काम करते हैं उन्हें सैकड़ों वर्षों तक सफलता का मूल्य मालूम नहीं होता। —मार्ले

ऐक्य

हार्दिक ऐक्य के बिना दिमागी ऐक्य का उपदेश देना मानो आसमान से तारे तोड़ना है। **—रस्किन**

ऐक्य हमारी आत्मा का गुण है। **—स्वेट मार्डेन**

ऐब

लोगों के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो। इससे उनकी इज्जत तो जरूर घट जायगी, मगर तुम्हारा तो एतबार ही उठ जायगा। **—सादी**

चुप्पा ऐब वह चिकना घड़ा है, जिस पर किसी बात का असर नहीं होता। **—प्रेमचन्द**

ऐश्वर्य

Dignity consists not in possessing honours, but in the consciousness that we deserve them. **—Aristotle**

ऐश्वर्य उपाधि में नहीं वरन् इस चेतना में है कि हम उसके योग्य हैं। **—अरस्तू**

True dignity is never gained by place, and never lost when honours are withdrawn. **—Massenger**

स्थान के प्राप्त होने से कभी वास्तविक ऐश्वर्य नहीं मिलता और न उपाधि के वापस ले लेने पर कभी समाप्त हो जाता है। **—मेसिंजर**

ऐश्वर्य ईश्वर का विशेष गुण है। **—विनोबा**

ऐश्वर्य के मद से मस्त व्यक्ति ऐश्वर्य के भ्रष्ट होने तक प्रकाश में नहीं आता। **—जर्मन कहावत**

ओम्

अपने भीतर की परम निधि को पाने के लिए और स्वर्ग के साम्राज्य का ताला खोलने के लिए इसी ॐ की ताली को काम में लाना होगा। **—स्वामी रामतीर्थ**

जैसे स्वभावतः रोगी मनुष्य फैले हुए वृक्ष की शीतल छाया ढूंढ़ता है, वैसे ही हर एक व्यक्ति व्यथा की हालत में स्वभावतः इस अक्षर ॐ का आश्रय लेता है।
—स्वामी रामतीर्थ

ॐ समग्र विश्व को ढके हुए है, सारे संसार का एक भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो ॐ के बाहर हो।
—स्वामी रामतीर्थ

ॐ—यह ध्वनि उस सुन्दर वृक्ष के तुल्य है जो प्रचण्ड सूर्य के ताप से झुलसे हुए रोगी मनुष्य को शीतल छाया प्रदान करता है।
—स्वामी रामतीर्थ

सम्पूर्ण वेदान्त, वरन् हिन्दुओं का सम्पूर्ण दर्शन-शास्त्र केवल इस ॐ अक्षर की व्याख्या है।
—स्वामी रामतीर्थ

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म।
—उपनिषद्

ॐ यही एक अक्षर चराचर में व्याप्त ब्रह्म का दूसरा पर्याय है।

औरत

औरत मर्द की सबसे बड़ी कमजोरी है। जो मर्द औरत की दुनिया में जाता है, वह बर्बाद हो जाता है, और दुनिया उसें समुद्र में डूबे हुए जहाज की तरह भूल जाती है।
—सुदर्शन

औरत मर्द की सबसे बड़ी ताकत है। मर्द की जिन्दगी अधूरी है, औरत उसे पूर्ण करती है। मर्द की जिन्दगी अँधेरी है, औरत उसे रोशनी देती है; मर्द की जिन्दगी फीकी है, औरत उसमें रौनक लाती है। औरत न हो तो मर्द की दुनिया वीरान हो जाय और आदमी अपना गला घोंट कर मर जाय।
—सुदर्शन

खूबसूरत औरत रत्न है, अच्छी औरत खजाना है।
—सादी

अगर औरत स्वयं आत्मत्याग और पवित्रता की मूर्ति नहीं, तो वह कुछ भी नहीं है।
—महात्मा गांधी

There is a woman at the beginning of all great things.
—Lamartine

सभी महान् कार्यों के प्रारम्भ में औरत का हाथ रहा है।
—लामर्टिन

औरतें मर्दों से अधिक बुद्धिमती होती हैं; क्योंकि वे जानती कम समझती अधिक हैं। —**जेम्स स्टीफेन**

औरत उसी को प्यार करती है, जो दिलावर हो, निडर हो आग में कूद पड़े। —**प्रेमचन्द (रंगभूमि)**

कचहरी

कचहरी प्रोत्साहन की क्षेत्रभूमि है। यहाँ रिश्वत लेना और देना दोनों पाप नहीं समझे जाते। —**सुदर्शन**

कचहरी-अदालत उसी के साथ है, जिसके पास पैसा है। —**प्रेमचन्द (गो-दान)**

कंचन

यथा विहंगास्तरुमाश्रयन्ति,
नद्यो यथा सागरमाश्रयन्ति।
यथा तरुण्यः पतिमाश्रयन्ति,
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति॥ —**अज्ञात**

जैसे पक्षीगण वृक्ष का आश्रय लेते हैं, नदियाँ समुद्र का आश्रय लेती हैं और युवतियाँ पति का आश्रय लेती हैं, उसी तरह सभी गुण कांचन का आश्रय लेते हैं।

कंजूस

A miser is as furious about a half-penny as the man of ambition about the conquest of a kingdom. —**Adam Smith**

कंजूस आदमी एक पाई के लिए उतना ही उत्तेजित हो जाता है, जितना कि महत्त्वाकांक्षी एक राज्य की विजय के लिए। —**एडम स्मिथ**

कंजूस लोग अपने धन को न तो खाते हैं, न किसी अन्य कार्य में खर्च करते हैं और न किसी को दान देते हैं। उनका धन आखिर में चोर ही ले जाते हैं। —**अज्ञात**

कनक

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वहि खाये बौराय जग, यहि पाये बौराय॥
—बिहारीलाल

As the touch-stone tries gold so gold tries men. —Chilo

जिस प्रकार कसौटी सोने को परखती है उसी प्रकार सोना मनुष्यों को परखता है। —चिलो

कनकहु पुनि पाषाण ते होई। जारेहु सहज न परिहरि सोई॥ —तुलसी

कनक कामिनी

चलौ चलौ सब कोई कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक और कामिनी, दुरगम घाटी दोय॥ —कबीर

कनक कामिनी देखि कै, तू मति भूल सुरंग।
बिछरन मरन दुहेलरा, केंचुकि तजै भुजंग॥ —कबीर

तुलसी या संसार में, कौन भयो समरत्थ।
इक कंचन इक कुचन पर, को न चलायो हत्थ॥ —तुलसी

कनक और कामिनी को त्यागे बिना आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती। —रामकृष्ण परमहंस

कन्या

अर्थो हि कन्या परकीय एव।
कन्या सचमुच पराया धन ही होती है। —कालिदास (अभिज्ञान शाकुन्तलम्)

कपट

कपट सार सूची सदृस, बाँधि वचन परबास।
करि दुराउ चह चातुरी, सो सठ तुलसीदास॥ —तुलसी

कबिरा तहाँ न जाइए, जहाँ कपट का हेत।
जानो कली अनार की, तन राता मन स्वेत॥ —कबीर

हेत प्रीति से जो मिलै, ताको मिलिए धाय।
अंतर राखे जो मिलै, तासों मिलै बलाय ।। —कबीर

कपटी

हृदय कपट बर बेष धरि, बचन कहहिं गढ़ि छोलि।
अब के लोग मयूर ज्यों, क्यों मिलिए मन खोलि ।। —तुलसी

कपड़ा

कपड़ा अंग को ढकने के लिए है, ठंड-गर्मी से उसकी रक्षा करने के लिए है, उसे सजाने के लिए नहीं है। —**महात्मा गांधी**

अपने पुराने कपड़े भी मँगनी के कपड़ों से अच्छे हैं। —**सादी**

Eat to please thyself, but dress to please others. —**Franklin**

अपने को प्रसन्न करने के लिए भोजन करो, दूसरों को प्रसन्न करने के लिए कपड़ा पहनो। —**फ्रैंकलिन**

No man is esteemed for gay garments but by fools and women. —**Walter Raleigh**

भड़कीले कपड़ों से मनुष्य मूर्खों और स्त्रियों के अतिरिक्त और किसी का आदर-पात्र नहीं बन सकता। —**वाल्टर रैले**

कमजोरी

कमजोरी का इलाज कमजोरी की चिन्ता करना नहीं, पर शक्ति का विचार करना है। —**स्वामी विवेकानन्द**

To be weak is miserable. —**Milton**

कमजोर होना दुःखी होना है। —**मिल्टन**

कमजोरी कभी न हटने वाला बोझ और यंत्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु है। —**स्वामी विवेकानन्द**

Some of our weaknesses are born in us, others are the result of our education; it is a question, which of the two gives us most trouble. —**Goethe**

हमारी कुछ कमजोरियाँ पैदायशी होती हैं, और अन्य हमारी शिक्षा का परिणाम हैं। प्रश्न यह है कि इनमें से कौन अधिक दुःखदायी है। —गेटे

कमाई

रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम्। —अथर्ववेद

पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढ़ाये, पाप की कमाई को मैंने नष्ट कर दिया है।

कर

यथा गौ दुह्यते काले पाल्यते च तथा प्रजा।
सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा॥ —अज्ञात

गाय समय पर ही दुही जाती है, उसी तरह राजा प्रजा का पालन करते हुए समय पर उससे लाभ (कर) उठाता है। जैसे लताएँ बराबर सींची जाती हैं किन्तु उचित समय पर ही उनके फल-फूल चुने जाते हैं।

पाके पकए विटप दल, उत्तम मध्यम नीच।
फल नर लहैं नरेस त्यों, करि विचार मन बीच॥ —तुलसी

गोपालेन प्रजाधेनोर्वित्तदुग्धं शनैः शनैः।
पालनोत्पोषणाद् ग्राह्यं न्याय्यां वृत्तिं समाचरेत्॥ —अज्ञात

जिस तरह ग्वाला गाय को धीरे-धीरे दुहता है और उसका पालन-पोषण भी करता रहता है, उसी प्रकार राजा को भी प्रजारूपी धेनु से धीरे-धीरे वित्तरूपी दूध निकालना चाहिए और उसका पालन-पोषण भी करना चाहिए। कर के रूप में प्रजा का वित्त ग्रहण कर उसके बदले उसके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।

करुणा

करुणा हमें अभाव या कष्ट से ऊपर उठाने के लिये निश्चित कर्म की ओर अग्रसर करती है। —इन्दिरा गांधी

जब हमारे करुणा के नेत्र खुल जाते हैं तो व्यक्ति अपने को दूसरों में और दूसरों को अपने में देख सकने में समर्थ हो जाता है। —राजगोपालाचारी

मनुष्य के अन्तःकरण में सात्विकता की ज्योति जगानेवाली यही करुणा है।
—रामचन्द्र शुक्ल

करुणा में शीतल अग्नि होती है जो क्रूर से क्रूर व्यक्ति का हृदय भी आर्द्र कर देती है। **—सुदर्शन**

जो करुणा हमें साधारण जनों के वास्तविक दुःख के परिज्ञान से होती है, वही करुणा हमें प्रियजनों के सुख के अनिश्चय मात्र से होती है। **—रामचन्द्र शुक्ल**

सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है। **—रामचन्द्र शुक्ल**

स्त्री-हृदय में करुणा अमृत बन कर बहा करती है। **—डा० रामकुमार वर्मा**

करुणा अपना बीज अपने आलम्बन या पात्र में नहीं फेंकती अर्थात् जिस पर करुणा की जाती है वह बदले में करुणा करनेवाले पर भी करुणा नहीं करता—जैसा कि क्रोध और प्रेम में होता है—बल्कि कृतज्ञ होता है अथवा श्रद्धा या प्रीति करता है। **—रामचन्द्र शुक्ल**

The dew of compassion is a tear. **—Byron**

आँसू करुणा की बूंद है। **—बायरन**

करुणा स्वाभिमान की विवशता से फूटती है।
—अमृतलाल नागर (शतरन्ज के मोहरे)

कर्ज (दे० 'ऋण')

कर्ज दी गयी पूंजी ही सारे अनर्थों की जड़ है और अन्यायमूलक युद्धों की जननी है। **—रस्किन**

Debt is a bottomless sea. **—Carlyle**

कर्ज अथाह सागर है। **—कार्लाइल**

Debt is to a man what the serpent is to the bird; its eye fascinates, its breath poisons, its coil crushes both sinew and bone. **—Bulwer Lytton**

कर्ज मनुष्य के लिए वैसे ही है जैसा पक्षी के लिए सर्प। उसके नेत्र लुभाते हैं, उसकी श्वास विषमय बनाती है। उसकी लपेट अस्थि व मांसपेशियों को चकनाचूर कर देती है। **—बुलवर लिटन**

कर्तव्य

जो काम अभेद-भावना की ओर ले जाता है, वह सत्कर्म है, कर्त्तव्य है, करणीय है। **—डा० सम्पूर्णानन्द**

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्तव्य है। **—स्वामी रामतीर्थ**

Duty is carrying on promptly and faithfully the affairs now before you. It is to fulfil the claims of today. **—Goethe**

जो कार्य आपके सामने है उसे शीघ्रता एवं निष्कपट भाव से करना ही कर्तव्य है—यही आज के अधिकार की पूर्ति है। **—गेटे**

ईश्वर शान्ति ही चाहता है, और ईश्वर की इच्छा के अनुसार चलना मनुष्य का परम कर्तव्य है। **—टालस्टाय**

वैर लेना या करना मनुष्य का कर्तव्य नहीं है—उसका कर्त्तव्य क्षमा है।
—महात्मा गांधी

The reward of one duty done is the power to fulfil another.
—George Eliot

एक कर्त्तव्य-पूर्ति का पुरस्कार है दूसरे कर्त्तव्य को पूर्ण करने की योग्यता।
—जार्ज इलियट

बुराई से असहयोग करना मानव का पवित्र कर्त्तव्य है। **—महात्मा गांधी**

कर्तव्य कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसको नाप-जोखकर देखा जाय।
—शरत्चन्द्र (जागरण)

जिस प्रकार दूसरों के अधिकार की प्रतिष्ठा करना मनुष्य का कर्तव्य है, उसी प्रकार अपना मान धारण रखना भी उसका कर्त्तव्य है। **—स्पेन्सर**

वीर होने के लिए मनुष्य को अपने कर्त्तव्य से अधिक काम करना होता है। —रेनाल्ड्स

मानव की सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। —विनोबा

कर्त्तव्य एक चुम्बक है जिसकी ओर तेजी से आकर्षित होता हुआ अधिकार दौड़ा आता है। —उर्मिला

कर्त्तव्य का पालन ही चित्त की शांति का मूल मंत्र है। —प्रेमचन्द (कायाकल्प)

कर्तव्यनिष्ठा

संसार में जो बड़े लोग हो गये हैं, जिनकी कीर्ति से मनुष्य जाति का इतिहास प्रकाशित है, यह सब उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा का ही फल है। —अज्ञात

जिन जातियों में सच्ची कर्त्तव्यनिष्ठा पायी जाती है वह संसार में सदा संपन्न अवस्था में रहती हैं और सबसे सम्मान् प्राप्त करती हैं। —अज्ञात

कर्म

जहाँ देह है वहाँ कर्म तो है ही, उससे कोई मुक्त नहीं है। तथापि शरीर को प्रभुमन्दिर बना कर उसके द्वारा मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए। —महात्मा गांधी

Action may not always bring happiness, but there is no happiness without action. —**Disraeli**

कर्म सदैव सुख न ला सके परन्तु कर्म के बिना सुख नहीं मिलता। —डिजरायली

कर्म ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाता है। —विनोबा

The actions of men are the best interprefer of their thoughts. —**Lock**

मनुष्य के कर्म ही उसके विचारों की सबसे अच्छी व्याख्या हैं। —लॉक

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा॥ —तुलसी (मानस)

कर्म की परिसमाप्ति ज्ञान में और कर्म का मूल भक्ति अथवा सम्पूर्ण आत्म-समर्पण में है। —अरविन्द घोष

Great actions speak of great minds. —**John Fletcher**

महान् कर्म महान् मस्तिष्क के द्योतक हैं। —**जान फ्लीचर**

जीव कर्मवश दुख सुख भागी। —**तुलसी (मानस)**

That action is best, which produces the greatest happiness for the greater number. —**Francis Hutcheson**

वही कार्य सबसे अच्छा है जिससे बहुसंख्यक लोगों को अधिक से अधिक आनन्द मिल सके। —**फ्रांसिस हचिसन**

एक कर्म है बोना उपजै बीज बहूत।
एक कर्म है मूंजना उदय न अंकुर सूत॥ —**कबीर**

Action springs out of what we fundamentally desire.
—**H. A. Oversteat**

हम जिस वस्तु की मूलतः कामना करते हैं उसी से कर्म की उत्पत्ति होती है।
—**एच० ए० ओवरस्टीट**

कर्म ही पूजा है और कर्त्तव्य-पालन भक्ति है। —**सत्य साईं बाबा**

सः प्रथमः कर्म कृत्याय जातः —**अथर्व० ४।२४, ६**

सर्व प्रथम आत्मा कर्म करने के लिये प्रकट हुई है।

खेल में हम सदा ईमानदारी का पल्ला पकड़कर चलते हैं, पर अफसोस है कि कर्म में हम इस ओर ध्यान तक नहीं देते। —**रस्किन**

कर्म के प्रवाह में मन की सारी विकृतियाँ दूर हो जाती हैं। —**अज्ञात**

There is nothing more tragic in life than the utter impossibility of changing what you have done. —**Galsworthy**

जीवन में किये हुए कर्म को परिवर्तित करने की पूर्ण असम्भाव्यता से अधिक दुःखमय और कुछ नहीं है। —**गाल्सवर्दी**

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥
—**भगवान् श्रीकृष्ण (गीता २-४७)**

कर्म में ही तुझे अधिकार है, उससे उत्पन्न होने वाले फलों में कदापि नहीं। कर्म का फल तेरा हेतु न हो। कर्म न करने का भी तुझे आग्रह न हो।

To do a thing well one must do it oneself. —**Napoleon**

किसी कार्य को खूबसूरती से करने के लिए मनुष्य को उसे स्वयं करना चाहिए। —**नेपोलियन**

There is a pernnial nobleness and even sacredness in work.
—**Carlyle**

कर्म में निरन्तर श्रेष्ठता और पवित्रता भी होती है। —**कारलाइल**

Action speaks louder than words. —**Proverb**

कर्मों की ध्वनि शब्दों से ऊँची होती है। —**कहावत**

जब तुम जग में आये थे, जग हँसमुख तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसमुख जग रोये॥ —**अज्ञात**

परेषामात्मनश्चैव योऽविचार्य बलाबलम्।
कार्यायोत्तिष्ठते मोहादापदः स समीहते॥

अपनी तथा शत्रुओं की शक्ति और निर्बलता का विचार किये बिना ही जो व्यक्ति पागलपन से ऊल-जलूल काम करने लगता है वह विपत्तियों को न्योता देता है।

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥

फल की इच्छा छोड़कर निरन्तर कर्त्तव्य-कर्म करो। जो फल की अभिलाषा छोड़कर कर्म करते हैं उन्हें अवश्य मोक्ष-पद प्राप्त होता है।

—**श्रीकृष्ण (गीता) ३-१९**

सभी जगत-व्यहार कर्म है।
किन्तु एक है मर्म।
शास्त्र-विहित कर्त्तव्य कर्म ही।
कहलाते हैं कर्म।

—**दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

I multiplied myself by my activity. —**Napoleon**

मैंने कर्म से ही अपने को बहुगुणित किया है। —**नेपोलियन**

Action is eloquence. —**Shakespeare**

कर्म में वाक्शक्ति होती है। —**शेक्सपियर**

कर्म प्रधान सत्य कह लोगू। —**तुलसी (मानस)**

Deeds are fruits, words are leaves. —**Proverb**

कर्म फल हैं एवं शब्द पत्तियाँ। —**कहावत**

Good actions are the invisible hinges of the doors of heaven. —**Victor Hugo**

शुभ कर्म स्वर्ग के दरवाजे के अदृश्य कब्जे हैं। —**विक्टर ह्यूगो**

कर्म वह आइना है जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है। अतः हमें कर्म का एहसानमन्द होना चाहिए। —**विनोबा**

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust. —**Sherlay**

सच्चे मनुष्यों के ही कर्म मधुर सुगन्ध देते हैं, और मिट्टी में भी खिलते हैं। —**शरले**

केवल दृढ़-इच्छाप्रसूत कर्म ही सुन्दर हो सकता है। —**रस्किन**

What is done can not be undone. —**Shakespeare**

किये हुए कर्म को मिटाया नहीं जा सकता। —**शेक्सपियर**

करै जो कर्म पाव फल सोई।
निगम नीति अस कह सब कोई॥ —**तुलसी (मानस)**

कर्मभूमिरियं ब्रह्मन्।

यह धरती ही हमारे कर्मों की भूमि है। —**वेदव्यास (महा०)**

काम का आरंभ करो और अगर काम शुरू कर दिया है तो उसे पूरा करके छोड़ो। —**विनोबा**

Trust no future, however pleasant,
Let the dead past bury its dead.
Act-act in the living present,
Heart within and God overhead.

—Long Fellow

भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर हो विश्वास न करो—भूतकाल की भी चिन्ता न करो, जो कुछ करना है उसे अपने पर और ईश्वर पर विश्वास रखकर वर्तमान में करो। **—लांगफेलो**

कर्म से भाग्य, भाग्य से कर्म।
उभय में बीज-वृदा का धर्म।
भाग्य की बात, भाग्य के हाथ।
पुरुष का हो पौरुष से साथ॥

—बलदेव प्रसाद मिश्र (साकेत संत)

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी।
तथापि सुधियश्चार्याः सुविचार्यैव कुर्वते॥

फल मनुष्य के कर्म के अधीन है, बुद्धि कर्म के अनुसार आगे बढ़ने वाली है, तथापि विद्वान् और महात्मा लोग अच्छी तरह से विचार कर ही कोई कर्म करते हैं। **—चाणक्य**

मनःकृतं कृतं मन्ये न शरीरकृतं कृतम्।
येनैवालिंगिता कान्ता तेनैवालिंगिता सुता॥

मन से किया गया कर्म ही यथार्थ होता है, शरीर से किया गया नहीं। जिस शरीर से पत्नी को गले लगाया जाता है उसी शरीर से पुत्री को भी गले लगाते हैं, पर मन का भाव भिन्न होने के कारण दोनों में अन्तर रहता है। **—अज्ञात**

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच् शतं समाः।"

इस धरती पर कर्म करते करते सौ साल तक जीने की इच्छा रक्खो क्योंकि कर्म करनेवाला ही जीने का अधिकारी है। जो कर्म-निष्ठा छोड़कर भोग-वृत्ति रखता है वह मृत्यु का अधिकारी बनता है। **—वेद**

कर्म में अकर्म

कर्म करते करते मनुष्य को ऐसा लगना चाहिये जैसे उसने कुछ किया ही नहीं। कर्तापन का अभिमान न आये, कर्म का बोझ मन और बुद्धि को न झुकाये, उमंग और उत्साह के हाथ पैर न टूटें, प्रसन्नता न कुम्हलाये, आत्मा सदा हंसता खेलता रहे और सर्वत्र आनन्दमय ब्रह्म का दर्शन हो तो समझना चाहिये कि कर्म में अकर्म हो रहा है। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

कर्म-फल

"फलासक्ति छोड़ो और कर्म करो", "आशा रहित होकर कर्म करो", "निष्काम होकर कर्म करो" यह गीता की वह ध्वनि है जो भुलायी नहीं जा सकती। जो कर्म छोड़ता है वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोड़ता है वह चढ़ता है। **—महात्मा गांधी**

करता था तो क्यों किया, अब करि क्यों पछिताय।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते खाय॥ **—अज्ञात**

शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी।
ईश देइ फल हृदय विचारी॥ **—तुलसी (मानस)**

Unselfish work lays God under debt and God is bound to pay back with interest. **—Swami Ram Tirtha**

निष्काम कर्म ईश्वर को ऋणी बना देता है, और ईश्वर उसको सूद सहित वापस करने के लिए बाध्य हो जाता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

यथा तैलक्षायाद् दीपः प्रह्लासमुपगच्छति॥
तथा कर्मक्षयाद् दैवं प्रह्लासमुपगच्छति॥

जैसे तेल समाप्त हो जाने से दीपक बुझ जाता है, उसी प्रकार कर्म के क्षीण हो जाने पर दैव भी नष्ट हो जाता है। **—वेदव्यास (महा०,अनु०)**

शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा।
कृतं फलति सर्वत्र नाकृतं भुज्यते क्वचित्॥

—वेदव्यास (महा०, अनु०)

शुभ कर्म करने से सुख और पाप कर्म करने से दुःख मिलता है। अपना किया हुआ कर्म सर्वत्र ही फल देता है। बिना किये हुये कर्म का फल कहीं नहीं भोगा जाता।

सुशीघ्रमपि धावन्तं विधानमनुधावति ।
शेते सह शयानेन येन येन यथा कृतम् ॥
उपतिष्ठति तिष्ठन्तं गच्छन्तमनुगच्छति ।
करोति कुर्वतः कर्मच्छायेवानुविधीयते ॥

—वेदव्यास(महा०, शान्ति०)

जिस मनुष्य ने जैसा कर्म किया है, वह उसके पीछे लगा रहता है। यदि कर्त्ता पुरुष शीघ्रतापूर्वक दौड़ता है तो वह भी उतनी ही तेजी के साथ उसके पीछे जाता है। जब वह सोता है तो उसका कर्मफल भी उसके साथ ही सो जाता है। जब वह खड़ा होता है तो वह भी पास ही खड़ा रहता है और जब मनुष्य चलता है तो उसके पीछे-पीछे वह भी चलने लगता है। इतना ही नहीं, कोई कार्य करते समय भी कर्म-संस्कार उसका साथ नहीं छोड़ता। सदा छाया के समान पीछे लगा रहता है।

यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् ॥
एवं पूर्वकृतं कर्म कर्त्तारमनुगच्छति ॥

—वेदव्यास (महा०,अनु०)

जैसे बछड़ा हजारों गौओं के बीच में अपनी माता को ढूंढ़ लेता है, उसी प्रकार पहले का किया हुआ कर्म भी कर्त्ता को पहचानकर उसका अनुसरण करता है।

स्वकर्मफलनिक्षेपं विधानपरिरक्षितम् ।
भूतग्राममिमं कालः समन्तात् परिकर्षति ॥

—वेदव्यास (महा०, शान्ति०)

अपने अपने कर्म का फल एक धरोहर के समान है, जो कर्मजनित अदृष्ट के द्वारा सुरक्षित रहता है। उपयुक्त अवसर आने पर यह काल इस कर्म-फल को प्राणि-समुदाय के पास खींच लाता है।

कर्मभोग

Our riches may be taken away by fortune, our reputation by malice, our spirits by calamity, our health by disease, our friends by death; but our actions must follow us beyond the grave. **—Colton**

अभाग्य से हमारा धन, नीचता से हमारा यश, मुसीबत से हमारा जोश, रोग से हमारा स्वास्थ्य, मृत्यु से हमारे मित्र हमसे छीने जा सकते हैं, किन्तु हमारे कर्म मृत्यु के बाद भी हमारा पीछा करेंगे। **—कोल्टन**

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च।
स्वं कालं नातिवर्तन्ते तथा कर्मपुरा कृतम् ॥ **—वेदव्यास (महा०)**

जैसे फूल और फल किसी की प्रेरणा के बिना ही अपने समय पर वृक्षों में लग जाते हैं, उसी प्रकार पहले के किये हुए कर्म भी अपने फल-भोग के समय का उल्लंघन नहीं करते।

कर्मयोग

जिस यत्न से आत्मा के शरीर के बन्धन से छूटने का योग सधे वह कर्मयोग है। **—महात्मा गांधी**

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥ **—श्रीकृष्ण (गीता) ५-२**

कर्मों का त्याग और योग दोनों मोक्ष देनेवाले हैं। उनमें भी कर्मसन्यास से कर्मयोग बढ़कर है।

धृति और उत्साह मिलकर कर्मयोग बनता है। **—विनोबा**

कर्मशील

कर्मशील लोग शायद ही कभी उदास रहते हों—कर्मशीलता और उदासी दोनों साथ-साथ नहीं रहतीं। **—बोवी**

कलंक

चन्द्रमा अपना प्रकाश सारे आकाश में फैलाता है, परन्तु अपना कलंक अपने ही भीतर रखता है। **—रवीन्द्र**

जिस वस्तु के देखने में कलंक लगता हो उसे न देखो, जिस तरह चौथ के चाँद को कोई नहीं देखता। **—अज्ञात**

Done to death by slanderous tongues. **—Shakespeare**

कलंक मृत्यु का कारण होता है। **—शेक्सपियर**

निर्मल से निर्मल चरित्र पर कलंक लगना कोई बात नहीं है। बसन्त ऋतु के नये फलों में भी घुन लग जाता है और कलियाँ बहुधा खिलने के बाद पहिले ही हवा के झोंकों से मुरझा जाती हैं। —**अज्ञात**

कलम

There are only two powers in the world, the sword and the pen; and in the end the former is always conquered by the latter. —**Napoleon**

दुनिया में दो ही ताकतें हैं, तलवार और कलम, और अन्त में तलवार हमेशा कलम से हारती है। —**नेपोलियन**

कलम में तलवार की सौगुनी चोट करने की शक्ति होती है। —**अज्ञात**

The pen is mighter than the Sword. —**Bulwar Lytton**

कलम तलवार से अधिक बलवान है। —**बुलवर लिटन**

कला

समस्त कला अनुकरण-मात्र है। —**अरस्तू**

कला का सत्य जीवन की परिधि में सौन्दर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सत्य है। —**महादेवी वर्मा**

The true work of art is but a shadow of the divine perfection. —**Michale Enzillo**

सच्ची कला दैवी सिद्धि का केवल प्रतिबिम्ब होती है। ईश्वर की पूर्णता की छाया होती है। —**माइकेल एंजिलो**

जो कला आत्मा को आत्म-दर्शन करने की शिक्षा नहीं देती, वह कला ही नहीं है। —**महात्मा गांधी**

Art does not imitate but interpret. —**Mazzine**

कला अनुकरण नहीं करती परन्तु व्याख्या करती है। —**मेजिनी**

कला का सबसे सुन्दर रूप छिपाव है, दिखाव नहीं। **—प्रेमचन्द**

Art is life seen through a temperament. **—Emila Zola**

कला प्रकृति द्वारा देखा हुआ जीवन है। **—एमिल जोला**

जीवन में सबसे बड़ी कला तपस्या है। **—महात्मा गांधी**

सब कलाओं की कला यह है कि क्या पकड़ें, क्या छोड़ दें। **—प्रेमचन्द**

प्रत्येक राष्ट्र के गुणावगुण सदा उसकी कला में अंकित रहते हैं। **—रस्किन**

Art for arts sake. **—Victor Cousin**

कला कला के लिए है। **—विक्टर कजिन**

समस्त कला अन्तर के विकास का आविर्भाव ही है। **—अज्ञात**

All art is but a imitation of nature. **—Seneca**

सम्पूर्ण कला केवल प्रकृति का ही अनुकरण है। **—सेनेका**

कला का रहस्य भ्रान्ति है; पर वह भ्रान्ति जिस पर यथार्थ का आवरण पड़ा हो। **—प्रेमचन्द**

जो असुन्दर है जो अनैतिक है, जो अकल्यान है, वह किसी तरह कला नहीं है, धर्म नहीं है। कला कला के लिए, की उक्ति भी किसी तरह सत्य नहीं है।

—शरत्चन्द्र (निबन्धावली साहित्य और नीति)

True art is the reverent imitation of God.

सच्ची कला ईश्वर का भक्ति-पूर्ण अनुकरण है। **—अज्ञात**

कला की कसौटी सौन्दर्य है; जो सुन्दर है वही कला है। **—अज्ञात**

Art hath an enemy called ignorance. **—Ben Johnson**

कला का शत्रु अज्ञान है। **—बेन जानसन**

कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नहीं है। कला दीखती तो यथार्थ है पर यथार्थ होती नहीं। उसकी खूबी यही है कि वह यथार्थ मालूम हो।

—प्रेमचन्द

When love and skill work together, expect a masterpiece.

—Ruskin

जब लगन और प्रवीणता परस्पर मिलकर कार्य करें तो एक अति उत्तम कला की अपेक्षा करो। —रस्किन

ज्ञान को गलाकर सांचों मे ढालना और उससे प्रतिमाएँ रचना, यह काम कला करती है। —अज्ञात

कला विचार को मूर्ति में परिणित करती है। —एमर्सन

मानव की बहुमुखी भावनाओं का प्रबल प्रवाह जब रोके नहीं रुकता, तभी वह कला के रूप में फूट पड़ता है। —रस्किन

कला और धर्म

कला और धर्म भाई-बहन हैं। दोनों दृश्य के परे देखते हैं, दोनों सामने के परदे को हटाना चाहते हैं। सरलता दोनों की शक्ति और फालतू ज्ञान दोनों का बोल हैं। —रामधारी सिंह 'दिनकर'

कलाकार

जो अंतर को देखता है बाह्य को नहीं, वही सच्चा कलाकार है।

—महात्मा गांधी

कलाकार के निर्माण में जीवन के निर्माण का लक्ष्य छिपा रहता है।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

Every artist was first an amateur. —Emerson

प्रत्येक कलाकार प्रारम्भ में नौसिखिया होता है। —एमरसन

कलाकार न किसी को आदेश दे सकता है, न उपदेश और यदि देने की नासमझी करता भी है तो दूसरे उसे न मान कर समझदारी का परिचय देते हैं।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

कलाकार प्रकृति का प्रेमी है, अतएव वह उसका दास भी है और स्वामी भी।

—रवीन्द्र

कलाकार तो जीवन का ऐसा संगी है जो अपनी आत्म-कहानी में, हृदय-हृदय की कथा कहता है और स्वयं चल कर पग-पग के लिए पथ प्रशस्त करता है······ काँटा चुभाकर काँटे का ज्ञान तो संसार दे ही देगा परन्तु कलाकार बिना काँटा चुभाने की पीड़ा दिये हुए ही उसकी कसक की तीव्र मधुर अनुभूति दूसरे तक पहुँचाने में समर्थ है। —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

जिसने उत्तम जीना जाना, वही कलाकार है। —**महात्मा गांधी**

भारतीय कलाकारों ने अपनी कला को मंदिरों और गुफाओं में प्रकट करके सार्वजनिक कर दिया है। —**महात्मा गांधी**

कलाकार अपनी प्रवृत्तियों से भी विशाल है। उसकी भाव-राशि अथाह एवं अचिन्त्य है। —**मैक्सिम गोर्की**

कलाकार स्वयं एक साधक है, चाहे वह कला साहित्य हो, नृत्य हो, शिल्प हो या और कुछ। —**अनन्त गोपाल शेवड़े**

कलाकार का आरम्भ ही शैशव के पुनरुत्थान से होता है।

—**रामधारी सिंह 'दिनकर'**

जब समाज कलाकार के किसी भी स्वप्न का मूल्य नहीं आंकता, किसी भी आदर्श को जीवन की कसौटी पर परखना स्वीकार नहीं करता, तब साधारण कलाकार तो सब कुज धूल में फेंक कर रूठे बालक के समान क्षोभ प्रकट कर देता है, और महान समाज की उपस्थिति ही भुलाने लगता है।

—**महादेवी वर्मा (दीपशिखा)**

निर्माण युग में जो कलासृष्टि अमृत की संजीवनी देकर ही सफल हो सकती थी वही पतन युग में मदिरा की उत्तेजना-मात्र बनकर विकासशील मानी गयी।

—**महादेवी वर्मा (दीपशिखा)**

कलियुग

कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास।
गाइ राम-गुन-गन विमल भव तर बिनहिं प्रयास ॥

—**तुलसी (मानस)**

न देवे देवत्वं कपट-पटवस्तापस-जनाः।
जनो मिथ्यावादी विरलतर-वृष्टिः जलधरः।
प्रसंगो नीचानामवनि-पतयो दुष्ट-मनसो।
जनाः भ्रष्टाः नष्टा अहह कलिकालः प्रभवति। —**अज्ञात**

देवताओं में दैवी-शक्ति नहीं रह गयी, साधु लोग प्रपंच करने में चतुर हो गये; जनता झूठ बोलना ही पसन्द करने लगी, मेघ बहुत कम जल देने लगे, लोग

नीचों का संग ज्यादा पसन्द करने लगे, राजा लोग दुष्ट हृदय के हो गये; लोग भ्रष्ट हो गये, नष्ट हो गये, यह कलिकाल अपना फल दिखा रहा है।

कलियुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा॥
–तुलसी (मानस)

कल्पना

भूत या प्रेत का जामा उन्हें धारण करना पड़ता है जो अपनी ही कल्पनाओं के गुलाम होते हैं। **—स्वामी रामतीर्थ**

Imagination rules the world. **—Napoleon**

कल्पना विश्व पर शासन करती है। **—नेपोलियन**

The lunatic, the lover and the poet,
Are of imagination all compact. **—Shakespeare**

पागल, प्रेमी और कवि, इनकी कल्पनाएँ एक-सी होती हैं। **—शेक्सपियर**

कल्पना में मोहक और प्रिय प्रतीत होते हुए भी इसकी यथार्थ बातें सदा प्रिय नहीं होतीं। **—रस्किन**

कल्पना में जो आनन्द है वह यथार्थ में नहीं है। **—अज्ञात**

Imagination is the eye of the soul. **—Joubert**

कल्पना आत्मा का नेत्र है। **—जोबर्ट**

कल्याण

भद्रं भद्रं न आभर। **—ऋग्वेद**

हे प्रभो! हमें बराबर कल्याण को प्राप्त कराइये।

संत सभा झांकी नहीं, कियौ न हरि गुन गान।
नारायण फिर कौन विधि, तू चाहत कल्यान॥**–नारायण स्वामी**

कवच

परमात्मा का विश्वास ही मेरा आंतरिक कवच है। **—ऋग्वेद**

कवि

जहाँ न पहुँचे रवि, तहाँ पहुँचे कवि। —अज्ञात

कवि वह सपेरा है, जिसकी पिटारी में सर्पों के स्थान में हृदय बन्द होते हैं। —प्रेमचन्द

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आंखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान॥ —सुमित्रा नन्दन पंत

हमारी अन्तस्थ सुप्त भावनाओं को जाग्रत करने का सामर्थ्य जिसमें होता है वह कवि है। —महात्मा गांधी

कवि की पदवी कितनी महान है, कैसी उच्च है। वह दिलों के सिंहासन पर राज्य करता है, वह सोती हुई जाति को जगाता है, वह मरे हुए देश में नवजीवन का संचार करता है। —सुदर्शन

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥
—मैथिलीशरण गुप्त

कवि सृष्टि के सौन्दर्य का मर्मज्ञ है। वह ऐसा यन्त्र है जिसके द्वारा सृष्टि का सौन्दर्य देखा जाता है। —रामनरेश त्रिपाठी

जिसका आनंद बाहरी जगत् में मर्याद्रित है वह कवि नहीं है। कवि आत्मनिष्ठ है; कवि स्वयंभू है। —विनोबा

ईश्वरीय सौन्दर्य को, प्राकृतिक कविता को—भाषा की छटा द्वारा संसार को दरसाना कवि का कर्तव्य है। —पुरुषोत्तमदास टंडन

प्रेमी इश्क का उपासक है और कवि हुस्न का। —रामनरेश त्रिपाठी

कवि का सारा जीवन उपकार का जीवन है। वह गिरे हुए उत्साह को उठाता है, रोती हुई आँखों के आँसू पोछता है, और निराशावादियों के सामने आशा का दिव्य दीपक रोशन करता है। —सुदर्शन

कवि सौन्दर्य देखता है। चाहे वह सौन्दर्य बहिर्जगत् का हो, चाहे अन्तर्जगत् का। जो केवल बाहरी सौन्दर्य का ही वर्णन करता है, वह कवि है, पर जो मनुष्य के मन के सौन्दर्य का भी वर्णन करता है वह महाकवि है। —**रामनरेश त्रिपाठी**

Poets learned in suffering what they teach in song.

—Shelley

कवि जो कुछ विपत्ति में सीखता है उसकी शिक्षा कविता में देता है।—**शेली**

संसार के पदार्थों और घटनाओं को सभी देखते हैं, परन्तु जिन आँखों से उन्हें कवि देखता है वे निराली ही होती हैं। **—पुरुषोत्तमदास टंडन**

कवि माने मन का मालिक। जिसने मन नहीं जीता वह ईश्वर की सृष्टि का रहस्य नहीं समझ सकता। **—विनोबा**

The poet's eye in fine frenzy rolling.
Doth glance from heaven to earth and earth to heaven.

—Shakespeare

सौन्दर्य-मद में झूमती हुई कवि की दृष्टि स्वर्ग से भूलोक और भूलोक से स्वर्ग तक विचरती रहती है। **—शेक्सपियर**

कवि कैसी हीन दशा में क्यों न हो, वह स्वभाव में राजा और उदारता में हरिश्चन्द्र से कम नहीं होता। **—रामनरेश त्रिपाठी**

Poets utter great and wise things which they do not themselves understand. **—Plato**

कवि महान् बुद्धिमत्तापूर्ण बातें कह जाते हैं जिन्हें वे स्वयं नहीं समझते।

—प्लेटो

कवि का हृदय जल में कमलपत्र की तरह निर्लेप होता है। उस पर उसकी रचना या कल्पना का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। **—रामनरेश त्रिपाठी**

कवि के अर्थ का अन्त ही नहीं है। जैसे मनुष्य का वैसे ही महावाक्यों के अर्थ का भी विकास होता ही रहता है। **—महात्मा गांधी**

कविः करोति काव्यानि स्वादु जानन्ति पण्डिताः ।
सुन्दर्या अति लावण्यं पतिर्जानाति नो पिता ।।

कवि काव्य रचता है पर स्वाद पंडित जानता है । जैसे, सुन्दरी स्त्री के लावण्य को उसका पति जानता है, पिता नहीं । **—अज्ञात**

पामर दुनिया विषय-सुख से झूमती है, कवि आत्मानंद में डोलता है । लोगों को भोजन का आनंद मिलता है, कवि को आनंद का भोजन मिलता है ।

—विनोबा

He who, in an enlightened and literary society aspires to be a great poet, must first become a little child. **—Maucaulay**

जो व्यक्ति जाग्रत और साहित्यिक समाज में महान् कवि होने की अभिलाषा रखता है उसे पहले एक छोटा बालक बनना चाहिए । **—मैकाले**

कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभू ।
यथातथ्यतोर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः सभाभ्यः ।

—ईशावास्योपनिषद्

कवि मन का स्वामी, विश्व-प्रेम से भरा हुआ, आत्मनिष्ठ, यथार्थभाषी और शाश्वत काल पर दृष्टि रखनेवाला होता है ।

कवि विश्व-सम्राट् होता है, कारण वह हृदय-सम्राट् होता है । **—विनोबा**

कवि जिस समय कविता करता है, वह अलौकिक पुरुष बन जाता है ।

—डाक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी

तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयो ह्यर्थे विनापीश्वराः ।
कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षका न मणयो यैरर्घतः पातिताः ।। **—भर्तृहरि**

कवि लोग बिना धन के ही श्रेष्ठ हैं, और वह राजा उस जौहरी के समान मूर्ख है जो मणि को न पहचान कर उसका मूल्य घटाता है ।

पत्थर में ईश्वर के दर्शन करना काव्य का काम है । इसके लिए व्यापक प्रेम की आवश्यकता है । ज्ञानेश्वर महाराज भैंसे की आवाज में भी वेद श्रवण कर सके, इसलिये वह कवि हैं । **—विनोबा**

Poets are the unacknowledged legislators of the world.

—Shelley

कवि विश्व के अस्वीकृत विधायक हैं। **—शेली**

सत्कवि अतीत का गौरव-गायक, वर्त्तमान का चित्रकार और भविष्य का सूक्ष्म द्रष्टा होता है। **—एक रूसी आलोचक**

विज्ञान जहाँ तक घूमता-फिरता है, यदि विश्व वहीं तक समाप्त है तो मेरे कवि ! कविता बनाना अब छोड़ दे। तू विज्ञान का अनुचर नहीं, उसका पूरक है। **—रामधारी सिंह 'दिनकर'**

कवि और चित्रकार

बाहरी सौन्दर्य सुचतुर चित्रकार के चित्र में भी देखने को मिल सकता है, पर मन का सौन्दर्य कवि की वाणी में ही मिलता है। **—रामनरेश त्रिपाठी**

कवि और चित्रकार में भेद है। कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के सत्य और सौन्दर्य का राग भरता है। **—डा० रामकुमार वर्मा**

कवि और तत्त्ववेत्ता

तत्त्ववेत्ता और कवि में अन्तर है। तत्त्ववेत्ता मस्तिष्क का निवासी है और कवि हृदय का। **—रामनरेश त्रिपाठी**

काव्य में भावनात्मक सत्य की प्रधानता रहती है तथा विज्ञान में वैज्ञानिक सत्य की। वैज्ञानिक वस्तु के शरीर को देखता है और कवि उसकी आत्मा को, हृदय को। वह एक असुन्दर एवं कुरूप वस्तु को सौन्दर्य प्रदान कर उसे ग्राह्य एवं नयनाभिराम बना देता है। **—अज्ञात**

कवि में अन्तर्जगत् के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों को भी स्पर्श करने की शक्ति है, उसी प्रकार वैज्ञानिक सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथ्यों का विश्लेषण करता है। कवि के जीवन का लक्ष्य है पूर्णता की प्राप्ति। कवि का सत्य विशुद्ध वैज्ञानिक नहीं है, वह तो उसकी अनुभूति के रस में पगा हुआ होता है। **—अज्ञात**

कवि और दर्शन

धन और ऐश्वर्य, रूप और बल, विद्या और बुद्धि, ये विभूतियाँ संसार को चाहे कितना ही मोहित कर लें, कवि के लिए यहाँ जरा भी आकर्षण नहीं है, उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो बुझी हुई आशाएँ, मिटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू हैं। जिस दिन इन विभूतियों में उसका प्रेम न रहेगा उस दिन वह कवि न रहेगा। दर्शन जीवन के इन रहस्यों से केवल विनोद करता है, कवि उनमें लय हो जाता है। **—प्रेमचन्द (गो-दान)**

कवि और शब्द

कवि और शब्द की विचित्र महिमा है। शब्द कवि को अमर बना देते हैं और कवि शब्द को भाग्यवान। **—रामनरेश त्रिपाठी**

कविता

कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है। अंधकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से सम्बन्ध कौन कराती है ? कविता ही न ? **—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)**

कविता सृष्टि का सौंदर्य है, कविता ही सृष्टि का सुख है, और कविता ही सृष्टि का जीवन-प्राण है। **—पुरुषोत्तमदास टंडन**

Poetry comes nearer to vital truth than history. **—Plato**

इतिहास की अपेक्षा कविता सत्य के अधिक निकट आती है। **—प्लेटो**

कविता अमरावती से गिरती हुई अमृत की धारा है। **—अज्ञात**

कविता सच्ची भावनाओं का चित्र है, और सच्ची भावनाएँ चाहे वे दुःख की हों या सुख की, उसी समय उत्पन्न होती हैं जब हम दुःख या सुख का अनुभव करते हैं। **—प्रेमचन्द (वरदान)**

Poetry is the intellect coloured by feelings. **—Prof. Wilson**

कविता भावना से रंजित बुद्धि है। **—प्रो० विल्सन**

कविता शब्द नहीं, शान्ति है। कविता कोलाहल नहीं, मौन है। शब्दों के कलरव के परे कविता की अशब्दता का निवास है। **—रामधारी सिंह 'दिनकर'**

कविता केवल वस्तुओं के ही रंगरूप में सौन्दर्य की छटा नहीं दिखाती प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के सौन्दर्य के भी अत्यन्त मार्मिक दृश्य सामने रखती है।

—रामचन्द्र शुक्ल

कविता जीवन की समालोचना है। **—अज्ञात**

मेरे लिए तो मनुष्य एक सजीव कविता है। कवि की कृति तो उस सजीव कविता का शब्दचित्र-मात्र है, जिससे उसका व्यक्तित्व और संसार के साथ उसकी एकता जानी जाती है। **—महादेवी वर्मा (यामा)**

कविता का उद्देश्य मूर्ख और साधारण लोगों को आनन्द देने का है, विद्वानों को नहीं। **—अज्ञात**

कविता देवलोक के मधुर संगीत की गूंज है। **—अज्ञात**

कविता प्रकाश और अन्धकार की वह सन्धि-रेखा है जहाँ पहुँचकर मनुष्य का मन परिचित विश्व को छोड़कर अपरिचित जगत् से परिचय लाभ करता है।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

हृदय पर नित्य प्रभाव रखनेवाले रूपों और व्यापारों को भावना के सामने लाकर कविता बाह्य प्रकृति के साथ मनुष्य की अन्तःप्रकृति का सामंजस्य घटित करती हुई उसकी भावात्मक सत्ता के प्रसार का प्रयास करती है।

—रामचन्द्र शुक्ल

Poetry is the art of uniting pleasure with truth by calling imagination to the help of reason and its essence is in invention.

—Dr. Johnson

कविता वह कला है जिसमें कल्पना-शक्ति विवेक की सहायक होकर सत्य और आनन्द का परस्पर सम्मिश्रण करती है, और इसका सार आविष्कार में है।

—डा० जानसन

संस्कृत साहित्य में काव्य का उद्देश्य जीवन का अनुकरण-मात्र नहीं, वरन् मनोविनोद और आनंद की सृष्टि भी है।

—डा० भागीरथ मिश्र

Truth shines the brighter clad in verse. **—Pope**

कविता का बाना पहनकर सत्य और भी चमक उठता है। **—पोप**

Poetry is the record of the best and happiest moments of the happiest and best minds. **—Shelley**

कविता सुखी और उत्तम मनुष्यों के उत्तम और सुखमय क्षणों का उद्‌गार है।
—शेली

कवित्व अंधकार में दीपक है; कवित्व दरिद्र का धन है; कवित्व भूख में अन्न और प्यास में शीतल जल है; कवित्व दुःख में धैर्य और विरह में मिलन है।
–अज्ञात

कविता वह सुरंग है, जिसके भीतर से मनुष्य एक विश्व को छोड़कर दूसरे विश्व में प्रवेश करता है। **–रामधारी सिंह 'दिनकर'**

कविता अपनी मनोरंजन-शक्ति द्वारा पढ़ने या सुनने वाले का चित्त रमाये रहती है, जीवन-पट पर उक्त कर्मों की सुन्दरता या विरूपता अंकित करके हृदय के मर्मस्थलों का स्पर्श करती है। **–रामचन्द्र शुक्ल**

कविता वह सुरंग है जिसके भीतर से मनुष्य एक विश्व को छोड़कर दूसरे विश्व में प्रवेश करता है। **–रामधारी सिंह 'दिनकर'**

जो कविता रमणी के रूपमाधुर्य्य से हमें तृप्त करती है वही उसकी अन्तर्वृत्ति की सुन्दरता का आभास देकर हमें मुग्ध करती है। **–रामचन्द्र शुक्ल**

कविता मानवता की उच्चतम अनुभूति की अभिव्यक्ति है।
—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

परमाणु में कविता है, विराट् रूप में कविता है, विन्दु में कविता है, सागर में कविता है, रेणु में कविता है··· जिधर देखो कविता का ही साम्राज्य है। प्रकृति काव्यमय है, सारा ब्रह्माण्ड एक अद्‌भुत महाकाव्य है। **—पुरुषोत्तमदास टंडन**

Poetry is the music of thought, conveyed to us through the music of language. **–Chatfield**

कविता भावना का संगीत है, जो हमको शब्दों के संगीत द्वारा मिलता है।
—चैटफील्ड

कविता-हृदय कानन में खिली हुई कुसुम-माला है। **–अज्ञात**

गद्य जहाँ असमर्थ है वहाँ कविता जन्म लेती है। —अज्ञात

कविता गाकर रिझाने के लिए नहीं, समझकर खो जाने के लिए है।
—रामधारी सिंह 'दिनकर'

कविता मनोरंजन नहीं, आत्मानुसन्धान का उन्मेष है। कविता सजावट और रंगीनी नहीं, अपने आप को चीरने का प्रयास है और जो अपने आप को चीरता है वह मनुष्य की जड़ता को चीर सकता है। —रामधारी सिंह 'दिनकर'

कष्ट

आज के कष्टों का सामना करने वाले के पास आगामी कल के कष्ट आते हुए झिझकते हैं। —अज्ञात

कष्ट हृदय की कसौटी है। —जयशंकर प्रसाद

कसरत (दे० व्यायाम)

शरीर रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।
—लोकमान्य तिलक

Health is the vital principle of bliss; and exercise, of health.
—Thomson

आनन्द का मुख्य सिद्धान्त तन्दुरुस्ती है और तन्दुरुस्ती का मुख्य सिद्धान्त कसरत। —टामसन

जिस प्रकार बिजली की धारा से बिजली के तार में उत्तेजना होती है उसी प्रकार व्यायाम द्वारा खून में गर्दिश पहुंचाने से शरीर की नसें-नाड़ियाँ उत्तेजित व कार्यशील हो जाती हैं। —अज्ञात

कस्तूरी

कस्तूरी की पहिचान उसकी सुगन्धि से होती है, गन्धी के कहने से नहीं।
—सादी

कहानी

पढ़कर आनन्दातिरेक से आँखें गीली न हो जायँ, तो वह कहानी कैसी ?

—शरत्चन्द्र (पत्रावली)

कहावत

कहावतें दैनिक अनुभवों की बेटियाँ हैं। **—डच कहावत**

कागज

कागज के बिना न शास्त्र मिलते न साहित्य।
कागज हमारी सभ्यता की एक पवित्र धरोहर है।

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (नया जीवन)

कान

कानों के दुरुपयोग से मन बहुत अशान्त और कलुषित हो जाता है, कान इसका अनुभव नहीं कर पाते। **—महात्मा गांधी**

कान हमारे गुरुदेव हैं। **—अज्ञात**

कान का कच्चा होना बुरा है, वह सदा अच्छी चीजें ही नहीं देता। **—अज्ञात**

कानून

कानून ईर्ष्यालु पत्नी की तरह है जो अपने साथ और किसी को बर्दाश्त नहीं करती। **—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

काम

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते।

काम की शांति कभी काम के उपभोग से नहीं हो सकती। वह तो इससे आग में घी डालने के समान अधिक बढ़ता है। **—महाभारत**

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥ **—गीता १६-२१**

काम, क्रोध और लोभ ये तीनों नरक के द्वार हैं, ये ही तीनों आत्मा को नष्ट कर देते हैं, इन तीनों का त्यागना उचित है, काम काया रूपी चूल्हे में जलती हुई अग्नि है। —**अमृतलाल नागर (खंजन नयन)**

काम पर विजय प्राप्त होते ही ज्ञान की निधि हाथ लगती है। काम विजय गीता के ज्ञान की कुन्जी है। —**दीनानाथ विनेश (गीताज्ञान)**

सहकामी दीपक दसा सोखै तेल निवास।
कबिरा हीरा संत जन सहजै सदा प्रकाश॥ —**कबीर**

कामार्ताः हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। —**कालिदास(मेघदूत)**
काम से जो पुरुष पीड़ित हैं वे जड़ और चेतन में भेद नहीं कर सकते।

तात तीन अति प्रबल खल, काम, क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान-निधान मन, करहिं निमिष महुँ छोभ। —**तुलसी**

कामक्रोधग्राहवतीं पंचेन्द्रियजलां नदीम्।
नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर॥ —**अज्ञात**

काम और क्रोध मगर के समान हैं, पाँचों इन्द्रियाँ जलरूप हैं और जन्मों की शृंखला दुर्गरूप है। इस दुस्तर नदी को पार करने के लिए धैर्यरूपी नाव ही काम दे सकती है।

जहाँ काम तहँ नाम नहिं, जहाँ नाम नहिं काम।
दोनों कबहूँ ना मिलैं, रवि रजनी इक ठाम॥ —**कबीर**

The worst of slaves is he whom passion rules. —**Brooke**

वह निकृष्ट दास है जिस पर काम शासन करता है। —**ब्रुक**

काम क्रोध मद लोभ सब, प्रबल मोह की धार।
तिनमहँ अति दारुण दुःखद, मायारूपी नार॥ —**तुलसी (मानस)**

Passion, though a bad regulator, is a powerful spring.
—**Emerson**

काम यद्यपि एक निकृष्ट प्रबन्धक है तथापि एक शक्तिशाली स्रोत है।
—**एमर्सन**

काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान ।
तब लगि पंडित मूर्खहू दोनों एक समान ॥ —कबीर

लोभ के इच्छा दंभ बल, काम के केवल नारि ।
क्रोध के परुष बचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥ —तुलसी

ज्यों गर्भ झिल्ली से, धुएँ से आग, शीशा धूल से ।
यों काम से रहता ढका है ज्ञान भी (आमूल) से ॥
यह काम शत्रु महान, नित्य अतृप्त अग्नि समान है ।
इससे ढका कौन्तेय सारे ज्ञानियों का ज्ञान है ॥
—श्रीहरि गीता—३।३८, ३९

काम क्रोध की उत्पत्ति

पैदा रजोगुण से हुआ यह काम ही यह क्रोध ही ।
पेटू महापापी कराता पाप है वैरी यही ॥
—श्रीहरि गीता ३।३७

काम का निवास-स्थान

मन इन्द्रियों में, बुद्धि में यह वास वैरी नित करे ।
इनके सहारे ज्ञान ढ़क, जीवात्म को मोहित करे ।
—श्रीहरि गीता ३।४०

काम का नाश

इन्द्रिय-दमन करके करो फिर नाश शत्रु महान का ।
पापी सदा यह नाशकारी ज्ञान का विज्ञान का ॥
—श्रीहरि गीता ३।४१

कामदेव

Cupid is even a rogue and whoever trusts him is deceived.
—**Goethe**

कामदेव बड़ा छली है, जो उसका विश्वास करता है, वह धोखा खाता है ।
—गेटे

कामना

कामनाएँ साँप के जहरीले दाँत के समान हैं। **—स्वामी रामतीर्थ**

लोभी मनुष्य की कामना कभी पूरी नहीं होती। **—वेदव्यास(महा०, शान्तिपर्व)**

आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है। कामना से क्रोध उत्पन्न होता है।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता २।६२)

कामनाओं को इष्ट बनाना बंधन को स्वीकार करना है। **—स्वामी रामतीर्थ**

विषय-सुख की कामना मनुष्य को अंधा बना देती है। **—वेदव्यास**

कामना वाले के लिए क्रोध अनिवार्य है; क्योंकि कामना कभी तृप्त नहीं होती। **—महात्मा गांधी**

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता २।७१)

जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं का त्यागकर निस्पृह हो जाता है और ममता तथा अहंकार को छोड़ देता है, वही शाँति पाता है।

जब तक कामना है तब तक सुख के दर्शन स्वप्न में भी नहीं होंगे। **—अज्ञात**

जैसे कच्ची छत में जल भरता है वैसे ही अज्ञानी के मन में कामनाएँ जमा होती हैं। **—गौतम बुद्ध**

Desire is as insatiable as the ocean and clamorous louder and louder as its demands are attended to. **—Vivekanand**

कामना सागर की भाँति अतृप्त है, ज्यों ज्यों हम उसकी आवश्यकता पूरी करते हैं त्यों त्यों उसका कोलाहल बढ़ता है। **—स्वामी विवेकानन्द**

कामिनी

कामिनी के शब्द जितनी आसानी से दीन और ईमान को गारत कर सकते हैं; उतनी ही आसानी से उनका उद्धार भी कर सकते हैं। **—प्रेमचन्द**

कामिनी को लावण्य देने वाले यह छहो अनुपम हैं—हरिण, इन्दु, अरविन्द, करिणी, हिम और पिक। हरिण से नयन, इन्दु से मुख, अरविन्द से परिमल (अंग-सुगन्ध), करिणी से गति, हिम से तनु-रुचि और पिक से नव-यौवना कामिनी की सुललित वाणी की वर्णना की। **—निराला**

माया सांपणि सब डसै, कनक कामणी होई ।
ब्रह्मा विष्णु महेस लौं, दादू बचै न कोई । —दादू

कामी

उल्लू को दिन में नहीं दीखता, कौए को रात में नहीं दीखता। मगर कामी ऐसा अन्धा होता है जिसे न दिन में सूझता है और न रात में। —अज्ञात

कामी स्वतां पश्यति। —कालिदास (शकुन्तला)

कामी सब वस्तुओं को अपने अनुकूल ही समझता है।

कामातुराणां न भयं न लज्जा—

कामी व्यक्तियों को न भय लगता है, न लज्जा।

जे कामी लोलुप जगमाहीं, कुटिल काक इव सबहिं डेराहीं ॥ —तुलसी

कायर

Cowards die many times before their death; the valiant taste death but once. **—Shakespeare**

कायर अपने जीवन-काल में ही अनेक बार मरते हैं; वीर लोग केवल एक ही बार मरते हैं। —शेक्सपियर (जूलियस सीजर)

छोटी नदियाँ थोड़ा ही जल पाकर उतरा जाती हैं, चूहे की अंजलि थोड़ी ही चीजों से भर जाती है। इसी तरह कायर पुरुष भी थोड़े में ही संतुष्ट हो जाते हैं। —पंचतंत्र

The world has no room for cowards, we must all be ready somehow to toil, to suffer, to die. **—R. L. Stevenson**

संसार में कायरों के लिए कहीं स्थान नहीं है। हम सबको किसी न किसी प्रकार कठोर परिश्रम करने, दुःख उठाने और मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। —स्टीवेन्सन

कायरता

मनुष्य जितना ही चाहता है, उतनी ही उसकी प्राप्त करने की शक्ति बढ़ती है। अभाव पर विजय पाना ही जीवन की सफलता है। उसे स्वीकार करके उसकी गुलामी करना ही कायरपन है। —शरत्चन्द्र (तरुणों का विद्रोह)

कार्य (दे० कर्म)

मनुष्य के सम्पूर्ण कार्य उसकी इच्छा के प्रतिबिम्ब होते हैं। —अज्ञात

A life spent worthily should be measured by deeds, not years. —**Sheridan**

योग्यता से व्यतीत हुए जीवन को हमें वर्षों के नहीं अपितु कर्मों के पैमाने से नापना चाहिए। —**शेरीडेन**

विवेकपूर्ण कार्य उपयोगी होता है। उपयोगी होने पर कार्य की कठिनता की हम परवाह नहीं करते। —**रस्किन**

For men must work, and women must weep
And there is little to earn and many to keep. —**C. Kingsley**

मनुष्यों को कार्य करना और स्त्रियों को रोना है। आय करने को कम और पालन करने को बहुतेरे हैं। —**सी० किंग्स्ले**

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः॥

—**श्रीकृष्ण (गीता) ३-५**

किसी अवस्था में कोई भी प्राणी शारीरिक, मानसिक व वाचिक कर्म किये बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता, क्योंकि प्रकृति के राग-द्वेषादि गुण के वश होकर सब प्राणियों को कर्म करना ही पड़ता है।

जो नेक काम करता है और नाम की इच्छा नहीं रखता उसकी चित्त-शुद्धि होती है और उसका काम सहज ही परमात्मा को अर्पण हो जाता है। —**विनोबा**

Right action cannot come out of nothing, it must be preceded by thought. —**Jawahar Lal Nehru**

सम्यक् कार्य शून्य से पैदा नहीं होता, अपितु विचार इसका पूर्णगामी है। —**जवाहरलाल नेहरू**

याद रखो जो भी कार्य तुम प्रेम और सेवा की भावना से करते हो वह तुम्हें परमात्मा के निकट ले जाता है, और जिस कार्य में घृणा छिपी होती है वह कार्य तुम्हें परमात्मा से दूर ले जाता है। —**सत्य साईं बाबा**

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परममापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ।।

—भारवि (किरातार्जुनीयम्)

एकाएक बिना सोचे विचारे कोई कार्य नहीं करना चाहिए। सम्यक् विचार न करना परम आपत्ति का उत्पादक होता है। गुण के ऊपर अपने आप को समर्पण करने वाली सम्पत्तियाँ विचारवान् पुरुष को स्वयं मनोनीत करती हैं अर्थात् जो कुछ किया जाय उसके आगे-पीछे की सब बातों का विचार कर लेना चाहिए।

कोई काम गुप्त रूप से न करो, जिसे दूसरों से छिपाने की जरूरत हो।

—जवाहर लाल नेहरू

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः ।।

—श्रीकृष्ण (गीता ३।८)

तू निश्चित कर्म कर, कर्म न करने से कर्म करना श्रेष्ठ है और कर्म न करने से तेरे शरीर का निर्वाह होना भी कठिन हो जायगा।

प्रत्येक कार्य समय से होता है इसलिए उतावली नहीं करनी चाहिए। जिस प्रकार वृक्ष में चाहे जितना पानी डाला जाय परन्तु वह समय पर ही फल देता है। **—वृन्द**

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता।
निज कृत कर्म भोग सब भ्राता ।। **—तुलसी**

धर्म का कार्य मनुष्य के हृदय को बिशाल बनाता है। **—विनोबा**

O, work! work my passion, my joy, my delight, it is for thee to alleviate my sorrow. **—A. Dumas**

हे कार्य! तुम्ही मेरी कामना हो, मेरी प्रसन्नता हो, मेरे आनन्द हो, मुझे दुःखों से मुक्त करना यह तो तुम्हारे ही हाथ में है। **—एलेक्जेन्डर ड्यूमास**

बिना कार्य के सिद्धांत दिमागी ऐय्याशी है, बिना सिद्धांत के कार्य अन्धे की टटोल है। **—जवाहर लाल नेहरू**

कार्य उसी का सिद्ध होता है जो समय को विचार कर कार्य करता है। वह खिलाड़ी कभी नहीं हारता जो दाँव विचार कर खेलता है। **—वृन्द**

कार्यकर्त्ता

नरपतिहितकर्त्ता द्वेष्यतां याति लोके जनपदहितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन ।
इति महति विरोधे विद्यमाने समाने, नृपति जनपदानां दुर्लभः कार्यकर्त्ता ॥

—पंचतंत्र

जो शासन का साथ देता है, वह जनता का द्वेषी बन जाता है, जो जनता के हित के बारे में बोलता है वह शासन की दृष्टि में खटकता है । सर्वत्र इस विरोध के रहते शासन और जनता दोनों के लिए समान रूप से प्रिय कार्यकर्त्ता दुर्लभ हैं ।

कार्य-सिद्धि

उपायमास्थितस्यापि नश्यन्त्यर्थाः प्रमाद्यतः ।
हन्ति नोपशयस्थोऽपि शयालुर्मृगयुर्मृगान् ॥

—माघ (शिशुपाल वध)

कार्य-सिद्धि के उपायों में लगे रहने वाले भी असावधानी से अपने कार्य का नाश कर देते हैं, घात (मृगों के आने-जाने के मार्ग में शिकारियों द्वारा बनाये गये गड्ढे) में बैठा हुआ भी नींद में निरत शिकारी मृगों को नहीं मार पाता ।

काल

नाकाले म्रियते जन्तुर्विद्धः शरशतैरपि ।
कुशाग्रेणैव संस्पृष्टः प्राप्तकालो न जीवति ॥ —हितोपदेश

जो काल न हो तो सैकड़ों बाणों के बिंधन से भी प्राणी नहीं मरता और जो काल आ जाय तो कुशा की नोंक छुआए से मर जाता है ।

काव्य (दे० कविता)

सत्य काव्य का साध्य और सौन्दर्य साधन है । —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

काव्य कवि के हृदय का गान है, उसकी बुद्धि का सौन्दर्य है ।

—रामनरेश त्रिपाठी

Poetry is the sister of sorrow; every man that suffers and weeps is a poet; every tear is a verse; and every heart a poem.

—Andre

कविता विषाद की बहिन है; प्रत्येक मनुष्य जो दुःख सहता और रुदन करता है, कवि है, प्रत्येक आँसू पद्य है, और प्रत्येक हृदय एक कविता। **—एंड्री**

जैसे योगी समाधि में ब्रह्मानन्द-सुधा के पान में तन्मय हो जाता है, और अन्य विषय-व्यापार भूल जाता है, वैसा ही आनन्द काव्य से सहृदय मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होता है। **—रामनरेश त्रिपाठी**

काव्य साहित्य का उत्तम अंग है। काव्य से मनुष्य को जैसा अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है वैसा और किसी प्रकार के साहित्य से नहीं।

—रामनरेश त्रिपाठी

Poetry is the first and last of all knowledge, it is as immortal as the heart of man. **—Wordsworth**

काव्य सभी ज्ञान का आदि और अन्त है—यह इतना ही अमर है जितना मानव का हृदय। **—वर्ड्सवर्थ**

काव्य और दर्शन

दर्शन में; चेतना के प्रति नास्तिक की स्थिति भी सम्भव है, परन्तु काव्य में अनुभूति के प्रति अविश्वासी कवि की स्थिति असम्भव ही रहेगी।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

काशी

मुकुति-जनम-महि जानि, ग्यान खानि अघहानि-कर।
जहँ बस संभु-भवानि, सो कासी सेइय कस न ॥ **—तुलसी**

जसे दिल्ली का इतिहास भारतवर्ष का इतिहास है, वैसे यदि काशी का इतिहास कभी लिखा गया होता तो वह भारत के हिन्दू-धर्म और दर्शन का इतिहास होता। **—अज्ञात**

किसान

अन्न पैदा करने में किसान ब्रह्मा के समान है। खेती उसके ईश्वरीय प्रेम का केन्द्र है। उसका सारा जीवन पत्ते-पत्ते में, फूल-फूल में, फल-फल में, बिखर रहा है।
—पूर्णसिंह

वृक्षों की तरह किसान का भी जीवन एक तरह का मौन जीवन है। किसान पत्ते में, फूल में, फल में आहुत हुआ सा दिखाई देता है। —पूर्णसिंह

कीचड़

पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तः पतति मूर्धनि।
—सोमदेव (कथा सरित्सागर)

आकाश की ओर फेंका हुआ कीचड़ फेंकने वाले के सिर पर गिरता है।

कीर्ति

Fame is the perfume of heroic deeds. —**Socrates**

कीर्ति वीरोचित कार्यों की सुगन्ध है। —सुकरात

Does the river take any heed to its foam? Fame is foam on life's stream. —**R.N. Tagore**

क्या नदी अपने झाग पर कुछ भी ध्यान देती है? कीर्ति जीवन रूपी नदी का झाग है। —रवीन्द्र

What a heavy burden in a name that has too soon become famous. —**Voltaire**

वह नाम अति भार-स्वरूप है जो कि बहुत शीघ्र प्रसिद्ध हो गया।—वाल्टेयर

जीवितेनापि म रक्ष्या कीर्तिस्तद्विद्धि मे व्रतम्।
—महाभारत (वन पर्व)

जीते जी कीर्ति की रक्षा करना मेरा व्रत है।

कीर्ति-मदिरा का नशा कितना तेज कितना बल में कर लेने वाला है।
—सुदर्शन

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥ —तुलसी (मानस)

Blessed is he whose fame does not outshine his truth.

—R. N. Tagore

धन्य है वह मानव जिसकी कीर्ति उसकी सत्यता से अधिक प्रकाशवान् नहीं है। **—रवीन्द्र**

As the pearl ripens in the obscurity of its shell, so ripens in the tomb, all the fame that is truly precious. **—Landor**

जिस प्रकार समुद्र की गहराई में सीपी के भीतर का मोती परिपक्व होता है, इसी प्रकार से मनुष्य की कीर्ति कब्र में परिपक्व होती है। **—लान्डोर**

कीर्ति का नशा शराब के नशे से भी तेज है। शराब छोड़ना आसान है, कीर्ति छोड़ना आसान नहीं। **—सुदर्शन**

तुलसी निज करतूति बिनु, मुकुत जात जब कोइ।
गयो अजामिल लोक हरि, नाम सक्यो नहिं धोइ॥ **—तुलसी**

अकृत्वा हेलया पादमुच्चैर्मूर्धसु विद्विषाम्।
कथंकारमनालम्बा कीर्तिर्द्यामधिरोहति॥ **—माघ (शिशु०)**

लीलापूर्वक शत्रुओं के ऊँचे मस्तक पर पैर बिना रखे ही निरालम्ब कीर्ति कैसे स्वर्ग तक चढ़ सकती है।

That best of fame, a rival's praise. **—Thomas More**

सर्वोत्तम कीर्ति, प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गयी प्रशंसा है। **—टामस मोर**

कुकर्म

अपने कुकर्मों का फल चखने में कड़ुआ परन्तु परिणाम में मधुर होता है।

—जयशंकर प्रसाद

A few vices are sufficient to darken many virtues.

—Plutarch

कुछ कुकर्म बहुत से गुणों को दूषित करने के लिए पर्याप्त हैं। **—प्लूटार्क**

दुष्ट कार्य ईश्वर से हमें सदा अलग रखता है। —**रस्किन**

If I were sure God would pardon me, and men would not know my sin, yet I should be ashamed to sin, because of its essential baseness. —**Plato**

यदि मुझे यह विश्वास हो जाय कि ईश्वर मुझे क्षमा कर देंगे और मनुष्य मेरे कुकर्म को न जान सकेंगे तब भी मुझे इसकी सारभूत निकृष्टता के कारण कुकर्म करते हुए लज्जा आयेगी। —**प्लेटो**

प्रत्येक कुकृत्य उस तार को तोड़ देता है जो हमारे और ईश्वर के बीच में लगा हुआ है। —**रस्किन**

बुरे कर्मों का परिणाम कभी शुभ नहीं हो सकता। बुरे कर्मों के लिए पीड़ा और क्लेश अवश्य भोगना पड़ेगा। —**स्वामी रामतीर्थ**

कुकर्म मनुष्य के जीवन पर काला परदा डाल देता है। —**अज्ञात**

कुंडली

कुंडली आपका एक्स-रे है, आपके मन, मस्तिष्क एवं सम्पूर्ण शरीर का। इसके बारह भागों में आपका रूप, रंग, वर्ण-भेद, सुख-दुःख, माता-पिता, पति-पत्नी, शत्रु-मित्र, बन्धु-बान्धव, रोग-मृत्यु, आय-व्यय एवं आजीविका सम्बन्धी सब रहस्य निहित हैं। —**डा० नारायणदत्त श्रीमाली (ज्योतिष योग चंद्रिका)**

कुटिल

आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।

कुटिल लोगों के प्रति सरल व्यवहार करना अच्छी नीति नहीं है।

—**श्रीहर्ष (नैषधीयचरित)**

कुपुत्र

एकेन शुष्कवृक्षेण दह्यमानेन वह्निना।
दह्यते तद्वनं सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा॥ —**चाणक्य**

आग से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से समस्त वन इस प्रकार जल जाता है, जैसे एक ही कुपुत्र से सम्पूर्ण कुल।

ज्यों रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगै, बढ़े अंधेरो होय॥ —रहीम

जनक वचन निदरत निडर, बसत कुसंगति माहिं।
मूरख सो सुत अधम है, तेहि जनमे सुख नाहिं॥ —विदुर

कुमति

जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना। —तुलसी (मानस)

कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी। —तुलसी (मानस)

संगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध।
राखेहु मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध॥ —बिहारी

कुमारी

कुमारी ! तेरी सरलता, सरोवर की श्यामता की भाँति, तेरे सत्य की गहराई व्यंजित करती है। —रवीन्द्र

कुरीति

कुरीति के अधीन होना कायरता है, उसका विरोध करना पुरुषार्थ है।
—महात्मा गांधी

कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र है धर्मक्षेत्र, जिसमें कर्त्तव्य विधान हुआ।
कुरुक्षेत्र है यज्ञभूमि, जिसमें मानव-निर्माण हुआ॥
कुरुक्षेत्र है देवभूमि, जिसमें अनन्त का ज्ञान हुआ।
कुरुक्षेत्र है वीरभूमि, जिसमें महान बलिदान हुआ॥
सृजन और संहार हुआ है, कुरुक्षेत्र के प्रांगण में।
कृष्णचन्द्र की कर्म कला है कुरुक्षेत्र के कण-कण में॥
—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

वीरभूमि कुरुक्षेत्र, तपोभूमि कुरुक्षेत्र, तीर्थभूमि कुरुक्षेत्र, धर्मभूमि कुरुक्षेत्र, कुछ भी कहें, कर्म का क्षेत्र जैसा होता है वैसा ही निर्माण होता है, वीरता, तप, तीर्थ-भाव, राष्ट्र-भाव अथवा धर्म सबकी सार्थकता कर्म से है।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

कुरूपता

कुरूपता शीलयुता विराजते। **—चाणक्य**

कुरूपता सुशीलता से सुशोभित होती है।

कुरूपता विधाता का ऐसा अभिशाप है जिसे हम अपने सद्गुणों द्वारा दूर कर सकते हैं। **—अज्ञात**

विद्या रूपं कुरूपाणाम्। क्षमा रूपं तपस्विनाम्। **—चाणक्य**

कुरूप मनुष्यों का सौंदर्य विद्या है। तपस्वियों का सौंदर्य क्षमा है।

कुल-मर्यादा

कुल-मर्यादा में आत्मरक्षा की बड़ी शक्ति होती है। **—प्रेमचन्द**

कुल की प्रतिष्ठा भी नम्रता और सद्व्यवहार से होती है। हेकड़ी और रुखाई से नहीं। **—प्रेमचन्द**

सत्पुरुष अपनी कुल-मर्यादा के लिए अपने को बलिदान कर देते हैं। **—अज्ञात**

कुलीन

छिन्नोपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्धं।
वृद्धोपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्॥
यन्त्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षुः।
क्षीणोपि न त्यजति शीलगुणान्कुलीनः॥ **—चाणक्य**

जैसे काटा हुआ चन्दन का वृक्ष गन्ध को नहीं छोड़ देता, बूढ़ा हो जाने पर भी गजराज अपनी मन्द गति को नहीं छोड़ता, कोल्हू में पेरी हुई ईख मधुरता नहीं छोड़ देती, उसी प्रकार दरिद्र हो जाने पर भी कुलीन व्यक्ति सुशीलता आदि गुणों को नहीं छोड़ता।

Good blood—descent from the great and good, is a high honour and privilege. He that lives worthily of it is deserving of the highest esteem; he that does not, of the deeper disgrace.

—Colton

महान् और उच्च वंश से उत्पत्ति स्वयं ही एक बड़ा सम्मान और विशेष अधिकार है। जो इन्हीं के अनुसार जीवन व्यतीत करता है सर्वोच्च आदर का पात्र होता है और जो नहीं करता वह सबसे बड़ी अपकीर्ति का पात्र होता है।

—कोल्टन

वरये कुलजां प्राज्ञो विरूपामपि कन्यकाम्।
रूपशीलां न नीचस्य विवाहः सदृशे कुले॥ **—चाणक्य**

कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो; सुन्दर किन्तु नीच संस्कारों वाली स्त्री से कभी विवाह न करो।

संसार में कर्म ही मुख्य है और कुलीनता कर्म पर ही निर्भर रहती है।

—से० गोविन्द दास (कुलीन)

कुशल-क्षेम

भुतानां हि क्षयिषु करणेष्वाद्यमाश्वास्यमेतत्।

—कालिदास (मेघदूत)

काल सब प्राणियों के सिर पर है, इसलिए पहले कुशल पूछना चाहिए।

कुशलता

कार्य-कुशल आदमी के लिए यश और धन की कमी नहीं। **—अज्ञात**

The ability to deal with people is as purchasable a commodity as sugar or coffee. **—J. D. Rockefeller**

लोगों के साथ व्यवहार करने की कुशलता वैसी ही क्रेय वस्तु है जैसी कि खांड या काफी। **—जे० डी० राकफेलर**

कुशल पुरुष

विरोधि वचसो मूकान् वागीशानपि कुर्वते।
जडानप्यनुलोमार्थान् प्रवाचः कृतिनां गिरः॥ **—माघ (शि०)**

कुशल पुरुषों की वाणी प्रतिकूल बोलनेवाले बड़े-बड़े वक्ताओं को भी बिल्कुल मूक बना देती है और अपने पक्ष में बोलनेवाले मन्दमतियों को भी निपुण वक्ता बना देती है।

आत्मोदयः परज्यानिर्द्वयं नीतिरितीयती।
तदूरीत्य कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतायते॥ **—माघ (शि०)**

अपनी उन्नति और शत्रु का विनाश—यही दो नीति की बातें हैं। (इनके अतिरिक्त कोई तीसरी बात नीतिशास्त्र में नहीं है) इन्हीं दोनों को अंगीकार कर कुशल पुरुष अपनी वाक्चतुरता का विस्तार करते हैं।

कुशासक

कंटक करि करि परत गिरि साखा सहस खजूरि।
मरहिं कुनृप करि करि कुनय सों कुचालि भव भूरि॥ **—तुलसी**

That sovereign is a tyrant who knows no law, but his own caprice. **—Voltaire**

वह शासक अत्याचारी है, जो अपनी इच्छा के अतिरिक्त कोई नियम नहीं जानता। **—वाल्टेयर**

Rebellion to tyrants is obedience to God. **—Franklin**

कुशासक के प्रति विद्रोह करना ईश्वर की आज्ञा मानना है। **—फ्रैंकलिन**

कुशासन

जोर जुल्म करनेवाली बादशाहत बादल की छाँह की तरह टिकाऊ नहीं होती। **—अज्ञात**

जासु राजु प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी॥ **—तुलसी (मा०)**

Where law ends, tyranny begins. **—William Pitt**

जहाँ कानून का अन्त होता है, वहाँ कुशासन प्रारम्भ होता है। **—विलियम पिट**

राज करत बिनु काजहीं, करहिं कुचालि कुसाजि।
तुलसी ते दसकन्ध ज्यों, जैहैं सहित समाजि॥ **—तुलसी**

Bad laws are the worst sort of tyranny. **—Burke**

बुरे नियम सबसे निकृष्ट प्रकार का कुशासन है। **—बर्क**

चढ़े बधूरे चंग ज्यों, ग्यान ज्यों सोक समाज।
करम धरम सुख संपदा, त्यों जानिबे कुराज॥ **—तुलसी**

Tyranny and anarchy are never far asandar. **—J. Bentham**

अत्याचार और अराजकता में कभी अधिक पृथकता नहीं रहती।

—जे० बेन्थम

राज करत बिनु काजहीं, ठठहिं जे कूर कुठाट।
तुलसी ते कुरुराज ज्यों, जइहैं बारह बाँट॥ **—तुलसी**

कुसंग

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥ **—रहीम**

हानि कुसंग सुसंगति लाहू।
लोकहु वेद विदित सब काहू॥ **—तुलसी**

दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय।
कोटि जतन परबोधिए, कागा हंस न होय॥ **—कबीर**

भूमि परत भा ढाबर पानी।
जनु जीवहिं माया लिपटानी॥

—तुलसी (मानस-कि० १४/६)

आकाश का निर्मल जल पृथ्वी पर पड़ते ही धूल में मिलकर मैला हो जाता है, इसी प्रकार ईश्वर का अंश जीव माया के संग से विकारवान बन जाता है।

बसि कुसंग चाहत कुसल यह रहीम अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावन बसा परोस॥ **—रहीम**

को न कुसंगति पाय नसाई । रहै न नीच मते चतुराई ॥
—तुलसी (मानस, अयोध्या)

मारी मरै कुसंग की केरा के ढिग बेर ।
वह हालै वह अंग चिरै विधि ने संग निबेर ॥ **—कबीर**

रहिमन उजली प्रकृति को, नहीं नीच का संग ।
करिया बासन कर गहे, करिखा लागत अंग ॥ **—रहीम**

बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ विधाता ॥
—तुलसी (मानस)

होत सुसंगति सहज सुख, दुःख कुसंग के थान ।
गंधी और लुहार की, देखौ बैठि दुकान ॥ **—अज्ञात**

आप अकारज आपनो, करत कुसंगति साथ ।
पांय कुल्हाड़ा देत है, मूरख अपने हाथ ॥ **—वृन्द**

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि ।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहिं सब ताहि ॥ **—रहीम**

गुणा गुणज्ञषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥ **—अज्ञात**

गुणज्ञों के पास गुण ही गुण होते हैं, किन्तु वे ही निर्गुणियों के पास रहकर दोष हो जाते हैं । नदियाँ स्वभावतः मधुर जलवाली होती हैं, किन्तु समुद्र के साथ मिलने से खारे जलवाली हो जाती हैं ।

कुसमय

जेहि अंचल दीपक दुर्यो हन्यो सो ताही गात ।
रहिमन कुसमय के परे मित्र शत्रु ह्वै जात ॥ **—रहीम**

कुसमय में साहस भी साथ छोड़ देता है । **—सुदर्शन**

जो रहीम दीपक दशा, तिय राखत पट ओट ।
समय परे ते होत है, वाही पट की चोट ॥ **—रहीम**

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिला मौन।
अब तो दादुर बोलिहैं, हमें पूछिहैं कौन॥ —तुलसी

रहिमन असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय।
बधिक बधै मृग बान सो, रुधिरै देत बताय। —रहीम

रहिमन चुप ह्वै बैठिए देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं बेर। —रहीम

कूटनीति

Diplomacy is to do and say the nastiest thing in the nicest way. **—Goldberg**

घृणिततम बात को अतिसुन्दर ढंग से कहना और करना ही कूटनीति है। **—गोल्डबर्ग**

कूटनीति मानवीय गुणों के विरुद्ध एक ऐसा दुर्गुण है, जिसने दुनिया के बहुत बड़े भाग को गुलामी की जंजीरों में जकड़ रखा है और जो मानवता के विकास में सबसे बड़ी बाधा बना हुआ है। **—रोमां रोलां**

कृतघ्न

How sharper than a serpent's tooth it is to have a thankless child. **—Shakespeare**

कृतघ्न पुत्र का होना, सर्प के दांतों से भी ज्यादा तेज होता है।**—शेक्सपियर**

दत्तं देवेन तत् तुभ्यं, तदर्थं स्वकृतज्ञताम्।
ब्रूहि तं परमात्मानं, मा भूत् तेऽत्र कृतघ्नता॥

परमात्मा ने जो कुछ तुमको दिया है, तुमको चाहिए कि उसके लिए परमात्मा के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करो। इस विषय में तुम्हें कृतघ्न नहीं होना चाहिए।

कृतार्था ह्यकृतार्थानां मित्राणां न भवन्ति ये।
तान्मृतानपि क्रव्यादाः कृतघ्नान्नोपभुञ्जते॥

जो अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर अपने मित्रों के कार्य को पूरा करने की परवाह नहीं करते उन कृतघ्न पुरुषों के मरने पर मांसाहारी जन्तु भी उनका मांस नहीं खाते। **—वाल्मीकि (रा०, कि०)**

कृतज्ञता

God expects answers for the flowers he sends us, not for the sun and the earth. **—R. N. Tagore**

ईश्वर अपने दिये हुए पुण्यों के बदले में कृतज्ञता चाहता है, सूर्य और पृथ्वी के बदले में नहीं। **—रवीन्द्र**

Gratitude is the memory of the heart. **—English Proverb**

कृतज्ञता हृदय की स्मृति है। **—अंग्रेजी कहावत**

जैसे नदियाँ अपने जल को समुद्र में बहाकर ले जाती हैं जहाँ से वह पहले आया था, इसी प्रकार कृतज्ञ मनुष्य को प्रसन्नता होती है जब वह उस लाभ को वहाँ ही पहुँचा देता है जहाँ से उसने प्राप्त किया था। **—अज्ञात**

कृतज्ञता निर्धन मनुष्यों का बदला चुकाना है। **—कहावत**

The worship, most acceptable to God, comes from a thankful and cheerful heart. **—Plutarch**

कृतज्ञ और प्रसन्न हृदय से की गयी पूजा ईश्वर को सबसे अधिक प्रिय है। **—प्लूटार्क**

A grateful thought towards heaven is of itself a prayer. **—Lessing**

स्वर्ग की ओर कृतज्ञपूर्ण भावना स्वयं ही एक प्रार्थना है। **—लेसिंग**

Whenever I find a great deal of gratitude in a poor man, I take it for granted there would be as much generosity if he were a rich man. **—Pope**

जब कभी किसी निर्धन व्यक्ति में मैं अधिक कृतज्ञता पाता हूँ तो मुझे विश्वास हो जाता है कि यदि वह धनी होता तो उसमें उतनी ही दानशीलता होती। **—पोप**

Gratitude preserves friendship and procures new. **—Proverb**

कृतज्ञता मित्रता को चिरस्थायी रखती है और नये मित्र बनाती है। **—कहावत**

If you pick up a starving dog and make him prosperous, he will not bite you. This is the principal difference between a dog and a man. **—Mark Twain**

यदि तुम किसी भूख से पीड़ित कुत्ते को उठा लो और उसको देख-भाल से खुश करो, तो वह तुम्हें कभी न काटेगा। मनुष्य और कुत्ते में यही प्रधान अन्तर है। **—मार्कट्वेन**

Gratitude is not only the memory, but the homage of the heart, rendered to God for his goodness. **—N.P. Wills**

कृतज्ञता न केवल स्मृति है, वरन ईश्वर के प्रति उसके उपकारों के लिए हृदय की श्रद्धांजलि है। **—एन०पी०विल्स**

Gratitude is a duty which ought to be paid but which none have a right to expect. **—Rousseau**

कृतज्ञता एक कर्तव्य है जिसे लौटाना चाहिए किंतु जिसे पाने का किसी को अधिकार नहीं है। **—रूसो**

कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण समस्त लोकों को उत्पन्न करने वाले और समस्त भावों को जानने वाले हैं तथा साध्यों, देवताओं एवं ईश्वरों के भी ईश्वर हैं।

—देवर्षि नारद

ये देवताओं के देवता और परम पुरातन विष्णु हैं। **—भृगु मुनि**

श्रीकृष्ण यज्ञों के यज्ञ, तपों के तप और भूत-भविष्य-वर्तमान के रूप हैं।

—मार्कण्डेय मुनि

ये सब प्राणियों की रचना करने वाले हैं। **—अंगिरा ऋषि**

ये (श्रीकृष्ण) इन्द्र को इन्द्रत्त्व देने वाले, देवताओं के परम देवता हैं।

—महर्षि व्यास

इनके (श्रीकृष्ण) मस्तक से आकाश और भुजाओं से पृथ्वी व्याप्त है, तीनों लोक इनके पेट में है, ये सनातन पुरुष हैं; तप से अन्तःकरण की शुद्धि होने पर ही साधक इन्हें जान सकते हैं। आत्मदर्शन से तृप्त ऋषिगणों में भी ये परमोत्तम माने जाते हैं और युद्ध से पीठ न दिखाने वाले उदार राजर्षियों के भी ये ही परम गति हैं। **—सनत्कुमार**

कृष्णेति मङ्गलं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते।
भस्मी भवन्ति राजेन्द्र महापातककोटयः॥

—विष्णु धर्मोत्तर

हे राजेन्द्र ! परम मङ्गलमय कृष्ण का नाम जिसके मुख से उच्चारित होता है, उसके करोड़ों महापाप भस्म हो जाते हैं।

कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः।
जलं भित्त्वा यथा पद्म नरकादुद्धराम्यहम॥ **—नरसिंह पुराण**

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कहकर जो मेरा नित्य स्मरण करता है, जल का भेद करके जैसे कमल उठता है, वैसे ही मैं उसको सहज ही नरक से उद्धार कर देता हूँ।

केन्द्र

अपना केन्द्र अपने से बाहर मत बनाओ, अन्यथा ठोकरें खाते रहोगे।

—स्वामी रामतीर्थ

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य-मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्त्तव्य है। **—स्वामी रामतीर्थ**

कोयल

कागा काको धन हरै, कोयल काको देय।
मीठे बचन सुनाय के, जग को वश कर लेय॥ **—अज्ञात**

गुन के ग्राहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय।

—गिरिधर कविराय

कोकिलानाम् स्वरो रूपं नारी रूपं पतिव्रतम्।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम्॥

कोकिलाओं का रूप स्वर होता है, स्त्री का रूप पतिव्रत धर्म है, कुरूप मनुष्य का रूप विद्या होती है और तपस्वियों का रूप क्षमा है। **—चाणक्य**

आम का स्वर्गीय रस पीकर भी कोयल को गर्व नहीं होता, पर कीचड़ का पानी पीकर भी मेढक टरटराना शुरू कर देता है। **—अज्ञात**

क्रान्ति

क्रान्ति शान्ति नहीं है। उसे हिंसा में से ही चलना पड़ता है—यही उसका घर है और यही उसका अभिशाप। —शरत्चन्द्र (अधिकार)

Revolutions are like the most noxious dung-heaps, which bring into life the noblest vegetables. **—Napoleon**

क्रान्ति अति हानिकारक कूड़े के ढेर के सदृश है, जिससे अति उत्तम वानस्पतिक पैदावार होती है। **—नेपोलियन**

When economic change goes ahead too fast and the forms of government remain more or less static, a hiatus occurs, which is usually bridged over by a sudden change called revolution.

—Jawahar Lal Nehru

जब आर्थिक परिवर्तन की प्रगति बहुत अधिक बढ़ जाती है, पर शासन-तन्त्र जैसे का तैसा बना रहता है, तब दोनों के बीच बहुत बड़ा अन्तर पड़ जाता है। प्राय: यह अन्तर एक आकस्मिक परिवर्तन से दूर होता है, जिसे क्रान्ति कहते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

Political convulsions, usher in new epochs of the world's progress. **—Wendell Phillips**

राजनीतिक विप्लव विश्व के विकास में एक नया युग लाता है।

—वेन्डेल फिलिप्स

क्रान्ति का उदय सदा ही पीड़ितों के हृदय एवं त्रस्त व्यक्तियों के अन्तःकरण में हुआ करता है। **—अज्ञात**

Revolutions never go backwards. **—Emerson**

क्रान्ति कभी पीछे की ओर नहीं जाती। **—एमर्सन**

Revolutions is the larva of civilisation. **—Victor Hugo**

क्रान्ति सभ्यता की जननी है। **—विक्टर ह्यूगो**

Revolutions were always rapid. **—Valtaire**

क्रान्ति सदैव द्रुतगामिनी होती है। **—वाल्टेयर**

Revolutions are not made, they come. **—Wendell Phillips**

क्रान्ति बनायी नहीं जाती, वह स्वयं आती है। **—वेन्डेल फिलिप्स**

क्रान्तिकारी

क्रान्तिकारी—उनकी नस-नस में भगवान् ने ऐसी आग जला दी है कि उन्हें चाहे जेल में ठूंस दो, चाहे सूली पर चढ़ा दो,—कह न दिया कि पंचभूतों को सौंपने के सिवा और कोई सजा ही लागू नहीं होती। न तो इनमें दया-माया है, न धर्म कर्म ही मानते हैं। **—शरत्चन्द्र (अधिकार)**

क्रूरता

Cruelty is a tyrant that is always attended with fear.

क्रूरता अत्याचारिणी है जो सदैव भय के साथ रहती है। **—कहावत**

क्रूरता देवोपम मनुष्यों में राक्षसी प्रवृत्ति है। **—अज्ञात**

क्रूरता शैतान का पहला गुण है। **—कहावत**

क्रोध

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता) २।६३

क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति भ्रान्त हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होने से बुद्धि का नाश हो जाता है, और बुद्धि नष्ट होने पर प्राणी स्वयं नष्ट हो जाता है।

When anger rises, think of the consequences. **—Confucius**

जब क्रोध आये तो उसके परिणाम पर विचार करो। **—कनफ्यूशस**

प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भो हि महात्मनाम्। **—कालिदास**

महात्माओं के क्रोध की शान्ति उनको प्रणाम करने से होती है।

When thou art above measure angry, be think thee how momentary is man's life. **—Marcus Aurelius.**

जब तुम अत्यधिक क्रोध में हो तब यह विचार करो कि मानव-जीवन कितना क्षणिक है। **—मार्क्स आरेलियस**

दसो दिसा के क्रोध की, उठी अपरबल आगि ।
सीतल संगत साधु की, तहाँ उबरिए भागि ।। —कबीर

Anger is short-lived in a good man. **—Proverb**

क्रोध अच्छे मनुष्यों में क्षणिक होता है । **—कहावत**

अग्नि उसी को जलाती है जो उसके पास जाता है मगर क्रोधाग्नि सारे कुटुम्ब को जला डालती है । **—संत तिरुवल्लुवर**

अक्क्रोधेन जिने क्रोधं, असाधुं साधुना जिने । **—गौतम बुद्ध**

मनुष्य को चाहिए क्रोध को दया से और बुराई को भलाई से जीते ।

When angry count ten before you speak, if very angry count a hundred. **—Jefferson**

जब क्रोध में हो तो दस बार सोच कर बोलो, जब अत्यधिक क्रोध में हो तो सहस्र बार सोचो । **—जेफरसन**

क्रोध एक प्रचण्ड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है वह उसको बुझा देगा । जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर सकता वह स्वयं अपने को जला लेगा । **—महात्मा गांधी**

ते हेलो वरुण नमोभि । **—ऋग्वेद १।२४।६।१४**
क्रोध को नम्रता से परास्त करो ।

An angry man is again angry with himself when he returns to reason. **—Publius Syrus**

क्रोधी मनुष्य को एक बार पुनः अपने ऊपर क्रोध आता है, जब उसे समझ आती है । **—पब्लियस साइरस**

Anger makes a rich man hated, and a poor man scorned.

क्रोध से धनी मनुष्य घृणा का पात्र होता है और निर्धन तिरस्कार का ।

—कहावत

जिस क्रोध से अपने कुटुम्बी, अपने इष्ट-मित्र अथवा दूसरों का आचरण सुधरे, ईश्वर में पूज्य बुद्धि उत्पन्न हो, दया, उदारता और परोपकार में प्रवृत्ति हो, वह क्रोध बुरा नहीं । **—अज्ञात**

सञ्चितस्यापि महतो वत्स क्लेशेन मानवैः।
यशसस्तपसश्चैव क्रोधो नाशकरः परः॥ **—विष्णुपुराण**

वत्स ! मनुष्य के द्वारा बहुत क्लेश से सञ्चित किये हुये यश और तप को भी क्रोध सर्वथा विनाश कर डालता है।

Anger begins in folly and ends in repentance. **—Pythogoras**

क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है।
—पैथागोरस

क्रोध एक प्रकार की आँधी है, जब आती है तो विवेक को नष्ट कर देती है।
—अज्ञात

क्रोध ज्ञानी पुरुष के हृदय में झांक सकता है, परन्तु वह केवल मूर्खों के हृदय में ही निवास करता है। **—कहावत**

कोटि परम लागे रहैं, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार॥ **—कबीर**

Beware of the fury of a patient man. **—Dryden**

संतोषी मनुष्य के तीव्र क्रोध से सावधान रहो। **—ड्राइडेन**

क्रोधः प्राणहरः शत्रुः क्रोधोमितमुखो रिपुः।
क्रोधोऽसिः सुमहातीक्ष्णः सर्वं क्रोधोऽपकर्षति॥
तपते यतते चैव यच्च दानं प्रयच्छति।
क्रोधेन सर्वं हरति तस्मात् क्रोधं विवर्जयेत्॥ **—वामन पुराण**

क्रोध प्राणनाशक शत्रु है, क्रोध अपरिमित मुखवाला बैरी है; क्रोध बड़ी तेज धार की तलवार है, क्रोध सब कुछ हर लेता है, मनुष्य जो तप, संयम और दान आदि करता है, उस सब को वह क्रोध के कारण नष्ट कर डालता है। अतएव क्रोध का त्याग करना चाहिए।

कोपं न गच्छन्ति हि सत्त्ववन्तः। **—वाल्मीकि (रा०)**

सत्त्ववान् मनुष्य क्रोध नहीं करते।

ईश्वर ने जिनको प्रभुता दी है, उनको क्रोध घमंडी बना देता है।
—अज्ञात

जो मनुष्य क्रोधी पर क्रोध नहीं करता क्षमा करता है, वह अपनी और क्रोध करने वाले की महासंकट से रक्षा करता है, वह दोनों का रोग दूर करने वाला चिकित्सक है। —**वेदव्यास (महा०, वनपर्व)**

The greatest remedy for anger is delay. —**Seneca**

क्रोध की सर्वश्रेष्ठ औषधि विलम्ब है। —**सेनेका**

क्रोध भाग्यवानों को अभागा बना देता है और जो उन्नति के शिखर पर पहुँचना चाहते हैं उन्हें गढ़े में ढकेल देता है। —**अज्ञात**

क्रोध और ग्लानि से सद्‌भावनाएँ विकृत हो जाती हैं, जैसे कोई मैली वस्तु निर्मल वस्तु को दूषित कर देती है। —**प्रेमचन्द**

किसी के प्रति मन में क्रोध लिये रहने की अपेक्षा उसको तत्काल प्रकट कर देना अधिक अच्छा है, जैसे पल भर में जल जाना देर तक सुलगने से ज्यादा अच्छा है। —**वेदव्यास (महा०)**

Anger blows out the lamp of the mind. —**Ingersoll**

क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है। —**इंगरसोल**

जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है, तो अभिमान भी सिर झुका लेता है। —**सुदर्शन**

क्रोधी वैवस्वतो राजा। —**चाणक्य**

क्रोध यमराज है।

क्रोध बुरे विचारों की खिचड़ी है। उसमें द्वेष भी है, दुःख भी है, भय भी है, तिरस्कार भी है, घमण्ड भी है और अविवेकिता भी है। —**अज्ञात**

He best keeps from anger, who remembers that God is always looking upon him. —**Plato**

क्रोध से वही मनुष्य सबसे अच्छी तरह बचा रहता है जो ध्यान रखता है कि ईश्वर उसे हर समय देख रहा है। —**प्लेटो**

जो मनुष्य क्षुद्र हैं, उन्हीं को क्रोध शोभा देता है। —**अज्ञात**

बुद्धिमान पुरुषों ने अपनी लौकिक उन्नति, पारलौकिक सुख और मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्रोध पर विजय प्राप्त की है। —**युधिष्ठिर**

तेज, स्वास्थ्य, कान्ति, बल और आयु को खाने वाला क्रोध है। सद्बुद्धि क्रोधी का साथ छोड़ देती है। **—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां।
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः॥
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना।
न जात हार्देन न विद्विषादरः॥ **—भारवि**

सफल क्रोधवाले पुरुष की आपत्ति दूर करने के लिए मनुष्य स्वयं ही अनुकूल हो जाते हैं। परन्तु क्रोधरहित पुरुष को न मित्र से आदर प्राप्त होता है और न शत्रु ही डरता है।

यत् क्रोधनो यजति यच्च ददाति नित्यं।
यद्वा तपस्तपति यच्च जुहोति तस्य॥
प्राप्नोति नैव किमपीह फलं हि लोके।
मोघं फलं भवति तस्य हि कोपनस्य॥

क्रोधी मनुष्य जो कुछ पूजन करता है, नित्य जो दान करता है, जो तप करता है और जो होम करता है, उसका उसे इस लोक में कोई फल नहीं मिलता। उस क्रोधी के सभी फल वृथा होते हैं। **—वामन पुराण**

When passion is on the throne reason is out of doors.

—M. Henry

क्रोध के सिंहासनासीन होने पर बुद्धि वहाँ से खिसक जाती है।

—एम० हेनरी

क्रोध विष है क्योंकि उसके नशे में भले बुरे का ज्ञान नहीं रहता। —अज्ञात

जिस अग्नि को तुम शत्रु के लिए प्रज्ज्वलित करते हो वह बहुधा तुमको ही अधिक जलाती है। **—चीनी कहावत**

स्त्री क्रोध में हो तो बफरी हुई शेरनी बन जाती है। **—सुदर्शन**

जो मनुष्य मन में उठे हुए क्रोध को दौड़ते हुए रथ के समान शीघ्र रोक लेता है, उसी को मैं सारथी समझता हूँ, क्रोध के अनुसार चलने वाले को केवल लगाम रखने वाला कहा जा सकता है। **—गौतम बुद्ध**

Men often make up in wrath what they want in reason.

—Alger

मनुष्य प्राय: अपने विवेक की पूर्ति क्रोध द्वारा पूर्ण कर लेता है। **—एलजर**

क्रोध में आदमी अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है। **—प्रेमचन्द**

जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है। **—सुकरात**

क्षमा

क्षमा धर्मः क्षमा यज्ञः क्षमा वेदाः क्षमा श्रुतम् ।
य एतदेवं जानाति स सर्वं क्षन्तुमर्हति ॥

—वेदव्यास (महा०, वन०)

क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र है। जो इस प्रकार जानता है, वह सब कुछ क्षमा करने योग्य हो जाता है।

क्षमा ब्रह्म क्षमा सत्यं क्षमा भूतं च भावि च ।
क्षमा तपः क्षमा शौचं क्षमयेदं धृतं जगत् ॥

—वेदव्यास (महा०, वन०)

क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है। क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत् को धारण कर रक्खा है।

क्षमा तेजस्विनां तेजः क्षमा ब्रह्म तपस्विनाम् ।
क्षमा सत्यं सत्यवतां क्षमा यज्ञः क्षमा शमः ॥

—वेदव्यास (महा०, वन०)

क्षमा तेजस्वी पुरुषों का तेज है, क्षमा तपस्वियों का ब्रह्म है, क्षमा सत्यवादी पुरुषों का सत्य है। क्षमा यज्ञ है और क्षमा शम (मनोविग्रह) है।

न श्रेयः सततं तेजो न नित्यं श्रेयसी क्षमा ।

न तो तेज ही सदा श्रेष्ठ है और न क्षमा ही। **—वेदव्यास (महा०, वन०)**

पूर्वोपकारी यस्ते स्यादपराधे गरीयसी।
उपकारेण तत् तस्य क्षन्तव्यमपराधिनः ॥

—वेदव्यास (महा०, वन०)

जिसने पहले कभी तुम्हारा उपकार किया हो, उससे यदि कोई भारी अपराध हो जाय, तो भी पहले के उपकार का स्मरण करके उस अपराधी के अपराध को तुम्हें क्षमा कर देना चाहिए।

संसार में ऐसे अपराध कम ही हैं जिन्हें हम चाहें और क्षमा न कर सकें।

—शरत्चन्द्र (गृहदाह)

अबुद्धिमाश्रितानां तु क्षन्तव्यमपराधिनाम्।
न हि सर्वत्र पाण्डित्यं सुलभं पुरुषेण वै ॥

—वेदव्यास (महा०, वन०)

क्षमा में जो महत्ता है, जो औदार्य है, वह क्रोध और प्रतिकार में कहाँ? प्रतिहिंसा हिंसा पर ही आघात कर सकती है, उदारता पर नहीं।

—सेठ गोविन्ददास (कुलीन)

क्षमा-याचना

प्रभूजी मोरे अवगुण चित न धरो। **—सूरदास**

क्षमा गुणो ह्यशक्तानां शक्तानां भूषणं क्षमा।

क्षमा अशक्तों के लिए गुण है और समर्थवान के लिए भूषण है।

—वेदव्यास (महा०)

छिमा बड़ेन को चाहिए, छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु को घट गयो जो भृगु मारी लात ॥ **—कबीर**

क्षमा पर मनुष्य का अधिकार है, वह पशु के पास नहीं मिलती। प्रतिहिंसा पाशव धर्म है।

—जयशंकर प्रसाद

अजानता भवेत् कश्चिदपराधः कृतो यदि ॥

—वेदव्यास (महा०, वन०)

अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करने पर यदि यह सिद्ध हो जाय कि अमुक अपराध अनजान में ही हो गया है, तो उसे क्षमा के ही योग्य बताया गया है।

क्षमा दंड से अधिक पुरुषोचित है—क्षमा वीरस्य भूषणम् । **—महात्मा गांधी**

खोद-खाद धरती सहै काट-कूट बनराय ।
कुटिल वचन साधू सहै और से सहा न जाय ।। **—कबीर**

यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना ही वीरों का काम है, परन्तु यदि अपमान करने वाला बलवान् हो तो उसको अवश्य दण्ड दो। **—गुरु गोविन्द सिंह**

क्षमा से बढ़कर और किसी बात में पाप को पुण्य बनाने की शक्ति नहीं है। **—जयशंकर प्रसाद**

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप । **—कबीर**

क्षमाशील

क्षमा दंड से बड़ी है। दंड देता है मानव, किन्तु क्षमा प्राप्त होती है देवता से। दंड में उल्लास है पर शान्ति नहीं और क्षमा में शान्ति भी है और आनन्द भी। **—अज्ञात**

क्षमावतामयं लोकः परश्चैव क्षमावताम् ।
इह सम्मानमृच्छन्ति परत्र च शुभां गतिम् ।।

—वेदव्यास (महा०, वन०)

क्षमावानों के लिए ही यह लोक है। क्षमावानों के लिए ही परलोक है। क्षमाशील पुरुष इस जगत् में सम्मान और परलोक में उत्तम गति पाते हैं।

यदि न स्युर्मानुषेषु क्षमिणः पृथिवीसमाः ।
न स्यात् संधिर्मनुष्याणां क्रोधमूलो हि विग्रहः ।।

—वेदव्यास (महा०, वन०)

यदि मनुष्यों में पृथ्वी के समान क्षमाशील पुरुष न हों तो मानवों में कभी सन्धि हो ही नहीं सकती; क्योंकि झगड़े की जड़ तो क्रोध ही है।

क्षुद्र

रत्नै रापूरितस्यापि मदलेशोस्ति नांबुधेः ।
मुक्ताः कतिपयाः प्राप्य मातंगा मद-विह्वलाः ।। —अज्ञात

रत्नों से भरा रहने पर भी समुद्र मदविह्वल नहीं होता। किन्तु एक आध मुक्ता (मोती) पालने से ही हाथी मदमत्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि क्षुद्र व्यक्ति थोड़ा पाकर ही इतराने लगते हैं।

क्षुधा

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य जरा-जरा सी बात पर तिनक जाता है। —अज्ञात

The exploited and suffering masses carry on the struggle, for their drill-sergeant is hunger. **—Jawahar Lal Nehru**

चूसी जानेवाली पीड़ित प्रजा को लड़ाई में पिले रहने के लिए क्षुधा ही उनकी व्यायाम शिक्षक है। **—जवाहरलाल नेहरू**

Hunger will break through stone-walls. **—Proverb**

क्षुधा पत्थर की दीवार को भी तोड़ डालती है। **—कहावत**

Hunger and cold deliver a man up to his enemy.

—Proverb

क्षुधा और सरदी से पीड़ित मनुष्य अपने को दुश्मन के हवाले कर देता है।

—कहावत

खजाना

राजा की जड़ है खजाना और सेना, इनमें सेना की जड़ है खजाना, सेना सब धर्मों की रक्षा का मूल है इसलिए सब के मूलभूत खजाना को बढ़ाना चाहिए। **—वेदव्यास (महा०, शा०)**

खजाने के नष्ट होने से राजा के बल का नाश होता है।

—वेदव्यास (महा०, शा)

खर्च

खर्च तो गंगाजी का प्रवाह है। जल तो बहता ही है इसलिए खर्च होना भी जरूरी है। हाँ, बरसाती नदी की तरह खर्च नहीं होना चाहिए।

—डाक्टर रामकुमार वर्मा

रुपए ने कहा मेरी चिन्ता न कर पाई की चिन्ता कर। —चेस्टरफील्ड

अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे तो कंगाल हो जाता है। —चाणक्य

छोटे-छोटे खर्चों से सावधान रहो। थोड़ा-थोड़ा जल रिसते-रिसते बड़े-बड़े जहाज डूब जाते हैं। —अज्ञात

धन पैदा करने की अपेक्षा उसके खर्च करने का काम कहीं कठिन है।

—अज्ञात

खतरनाक

चरित्रहीन शिक्षा, मानवताहीन विज्ञान और नैतिकताहीन व्यापार लाभकारी तो होते नहीं अपितु पूर्ण खतरनाक होते हैं। —सत्य साईंबाबा

खतरा

खतरे में हमारी चेतना अन्तर्मुखी हो जाती है। —प्रेमचन्द (गोदान)

खल

दामिनि दमकि रही घन माही।
खल की प्रीति यथा थिर नाहीं॥ —तुलसी (मानस)

क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई।
जस थोरे धन खल बौराई॥ —तुलसी (मानस)

टेढ़ जानि सब बंदइ काहू।
वक्र चन्द्रमा ग्रसइ न राहू॥

—तुलसी (मानस, बाल)

कवि कोविद गावहिं अस नीती । खल सन कलहु न भल नहिं प्रीती ।
उदासीन नित रहिय गोसांई । खल परिहरिय स्वान की नाईं ।।

—तुलसी (मानस)

खातिरदारी

खातिरदारी जैसी चीज में मिठास जरूर है, पर उसका ढकोसला करने में न तो मिठास है और न स्वाद ही । **—शरत्चन्द्र**

खादी

खादी द्वारा कला की—जीवित कला की उपासना होती है । **—विनोबा**

खादी को छोड़ने के मानी होंगे भारतीय जनता को बेच देना, भारतवर्ष की आत्मा को बेच देना । **—महात्मा गांधी**

खादी न खरीदना करोड़ों 'लोगों' के मुँह का 'कौर' छीन लेने के बराबर है । **—विनोबा**

स्वराज्य के समान ही खादी भी राष्ट्रीय जीवन के लिए श्वास के जितनी ही आवश्यक है । **—महात्मा गांधी**

खादी पहनने से हम अपने नादान गरीब, नंगे, भूखे भाइयों की झोपड़ियों में उम्मीदों से भरी हुई झलक चमका सकते हैं । **—जवाहरलाल नेहरू**

खादी में गुप्तदान सिद्ध होता है । **—विनोबा**

खानदान (देखो कुलीन)

खामोशी

Speech is great, but silence is greater. **—Carlyle**

वाचालता महान् है परन्तु खामोशी उससे भी महान् है । **—कारलाइल**

The temple of our purest thoughts is silence.

—Mrs. S. J. Hale

खामोशी हमारे पवित्रतम विचारों का मंदिर है । **—श्रीमती एस० जे० हेल**

Speech is silver, silence is golden; speech is human, silence is divine. **—German Proverb**

वाचालता चाँदी है, खामोशी सोना है; वाचालता मनुष्योचित है, खामोशी देवोचित। **—जर्मन कहावत**

खिदमत

देश तथा समाज की सच्ची खिदमत वही करता है जो बदले तथा यश की आशा न रखकर निःस्वार्थ भाव से खिदमत करता है। **—महात्मा गांधी**

जिस मनुष्य ने आत्मसंयम की साधना नहीं की है, वह कभी सच्ची खिदमत नहीं कर सकता। **—अज्ञात**

खुदा

सारा दरिया स्याही बन जाय और सारा दरख्त कलम बन जाय तो भी खुदा का पूरा बयान नहीं हो सकता। **—कुरान**

खुद को जानना खुदा को जानना है। **—अज्ञात**

जो खुदा को जानता है वह खुद अपनी तारीफ नहीं करता। **—अली**

खुदा से डरने वाले को और किसी का क्या डर। **—विनोबा**

खुदी

It is the admirer of himself and not the admirer of virtue, that thinks himself superior to others. **—Plutarch**

जो स्वयं का प्रशसक है, गुणों का प्रशंसक नहीं वही मनुष्य अपने को औरों से उच्च समझता है। **—प्लूटार्क**

Conceit may puff a man up, but can never prop him up. **—Ruskin**

खुदी से आदमी फूल सकता है परन्तु स्वयं अपने को सहारा नहीं दे सकता। **—रस्किन**

खुशबू

फूलों की खुशबू वायु के विपरीत नहीं जाती, परन्तु मानवी गुणों की खुशबू चारों दिशा में फैल जाती है। **—धम्मपद**

खुशामद

अगर बादशाह दिन को रात्रि बतलावे तो यही कहना चाहिए कि वह चन्द्रमा और रोहणी हैं। **—सादी**

खुशामदी

खुशामदी आदमी इसलिए आपकी खुशामद करता है कि वह आपको अयोग्य समझता है, लेकिन आप उसके मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर फूले नहीं समाते। **—टाल्सटाय**

रहिमन जो रहिबो चहै कहै वाहि के दाँव।
जो बासर को निसि कहै तो कचपची दिखाव॥ **—रहीम**

खुशी

Cheerfulness is health; its opposite melancholy, is disease. **—Heliburton**

प्रसन्नता स्वास्थ्य है; इसका विपरीत उदासी, रोग है। **—हेलीबर्टन**

Happiness is neither within us only, nor without us; it is the union of ourselves with God. **—Poscal**

प्रसन्नता न हमारे अन्दर ही है और न बाहर है वरन् यह हमारा ईश्वर के साथ ऐक्य है। **—पास्कल**

The secret of happiness is renunciation. **—Andrew Carnegie**

खुशी का रहस्य त्याग है। **—एन्ड्रयू कारनेगी**

The most happy man is he who knows how to bring into relation the end and beginning of his life **—Goethe**

अत्यन्त प्रसन्नचित्त मनुष्य वह है जो अपने जीवन के आदि और अन्त से सम्बन्ध स्थापित करना जानता है। **—गेटे**

खून

Murder will out.

खून सर पर चढ़ कर बोलता है। **—कहावत**

One murder makes a villain; millions, a hero; numbers sanctify the crime. **—Porteus**

एक खून अधम बनाता है तो लाखों एक वीर ! संख्या पाप को पवित्र बना देती है। **—पोरटियस**

खूबसूरती

Beauty is often worse than wine; intoxicating both the holder and the beholder. **—Zimmerman**

खूबसूरती प्रायः मदिरा से भी बुरी है। यह स्वयं को और देखने वालों दोनों को मदमत्त कर देती है। **—जमीरमन**

Beauty is a witch against whose charms faith melteth into blood. **—Shakespeare**

खूबसूरती ऐसी जादूगरनी है कि उसके जादू से धर्म-ईमान गल कर खून हो जाते हैं। **—शेक्सपियर**

A beautiful object doth attract the sight of all men, that it is no man's power not to be pleased with it. **—Claudian**

खूबसूरत वस्तु में सभी मनुष्यों की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रबल शक्ति है कि कोई भी उससे प्रसन्न हुए बिना नहीं रह सकता। **—क्लेडन**

खोटा

To see and listen to the wicked is already the beginning of wickedness. —**Confucius**

यदि आप खोटे मनुष्यों को देखते और उनकी बातों को सुनते हैं तो यहीं से खोटेपन का आरम्भ हो गया, समझिए। —**कनफ्यूशस**

रहिमन खोटी आदि को, सो परिनाम लखाय।
ज्यों दीपक तम को भखै, कज्जल वमन कराय। —**रहीम**

जो खोटे लोग होते हैं वे उन महात्माओं के अनोखे कामों को बुरा बताते ही हैं जिन्हें पहचानने की उनमें योग्यता नहीं होती।

—**कालिदास (कुमारसंभव ५।७५)**

ख्याति

ख्याति-प्रेम वह प्यास है जो कभी नहीं बुझती। वह अगस्त ऋषि की भाँति सागर को पीकर भी शान्त नहीं होती। —**प्रेमचन्द**

ख्याति नदी के प्रवाह के समान है। जैसे नदी के प्रवाह में हल्की तथा फूली हुई वस्तु ऊपर तैरा करती है और जड़ तथा गरुई नीचे डूब जाती है, उसी प्रकार प्रशंसा-रूपी प्रवाह में उत्तमोत्तम गुण डूबे रहते हैं, केवल छोटे-छोटे गुण ऊपर दिखलाई देते हैं। —**बेकन**

धन और स्त्री का छोड़ना सहज है परन्तु ख्याति का लोभ छोड़ना बहुत कठिन है। —**हनुमानप्रसाद पोद्दार**

Fame like the river is narrowest at its source and broadest afar off. —**Dovenent**

ख्याति नदी की भाँति अपने उद्गम स्थान पर अति संकीर्ण और बहुत दूर अतिविस्तृत होती है। —**डेवीनेन्ट**

अपनी ख्याति और स्मृति के लिए मैं दूसरों की दया और कृपा पर निर्भर रहता हूँ। —**बेकन**

Men's evil manners live in brass, their virtues we write in water. —**Shakespeare**

मनुष्य की बुराइयां दीर्घजीवी होती हैं, उसकी अच्छाइयाँ अल्पायु होती हैं। —**शेक्सपियर**

लोकमान्य और विचारशील मनुष्यों के द्वारा की गयी प्रशंसा सुवासित तैल के समान् सर्वत्र शीघ्र फैल जाती है। —**बेकन**

Fame is a magnifying glass. —**Proverb**

ख्याति एक आतशी शीशा है। —**कहावत**

Fame is but the breath of the people, and that often unwholesome. —**Rousseau**

ख्याति केवल जनता की स्वांस है और वह प्रायः अस्वास्थ्यजनक है। —**रूसो**

Desire of glory is the last garment that even wise men put off. —**Proverb**

ख्याति की अभिलाषा वह पोशाक है जिसे ज्ञानी मनुष्य भी अन्त में उतारते हैं। —**कहावत**

ख्वाहिश (दे० 'इच्छा')

Desires are nourished by delays. —**Proverb**

ख्वाहिशों का विलम्ब द्वारा पालन-पोषण होता है। —**कहावत**

गंगाजी

पुनातिकीर्तिता पापं, दृष्टवा भद्रं प्रयच्छति।
अवगाढा च पीता च, पुनात्यासप्तमं कुलम्॥

—**वेदव्यास (महा०, वन०)**

गंगा अपना नाम उच्चारण करने वाले के पापों का नाश करती है। दर्शन करने वाले का कल्याण करती है और स्नान-पान करने वाले की सात पीढ़ियों तक को पवित्र करती है।

अपहृत्य तमस्तीव्रं यथा भात्युदये रविः ।
तथापहृत्य पाप्मानं भाति गङ्गाजलोक्षितः ॥ —वेदव्यास

जैसे सूर्य उदय काल में घने अन्धकार को विदीर्ण करके प्रकाशित होते हैं; उसी प्रकार गंगाजल में स्नान करने वाला पुरुष अपने पापों को नष्ट करके सुशोभित होता है ।

विसोमा इव शर्वर्यो विपुष्पास्तरवो यथा ।
तद्वद् देशा दिशश्चैव हीना गङ्गाजलैः शिवैः ॥
—वेदव्यास (महा०, अनु०)

जैसे बिना चाँदनी की रात और बिना फूलों के वृक्ष शोभा नहीं पाते, उसी प्रकार गंगाजी के कल्याणमय जल से वंचित हुए देश और दिशाएँ भी शोभा एवं सौभाग्य से हीन हैं ।

भवन्ति निर्विषाः सर्पा यथा तार्क्ष्यस्य दर्शनात् ।
गङ्गाया दर्शनात् तद्वत् सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
—वेदव्यास (महा०, अनु०)

जैसे गरुड़ को देखते ही सारे सर्पों के विष झड़ जाते हैं, उसी प्रकार गंगाजी के दर्शन मात्र से मनुष्य सब पापों से छुटकारा पा जाता है ।

गांग-वारि मनोहारि, मुरारि-चरणच्युतम् ।
त्रिपुरारि-शिरश्चारि-पाप-हारि पुनातु माम् । —महर्षि वाल्मीकि

जो श्री विष्णु भगवान के चरणों से उत्पन्न हुआ है, श्री शंकर के शिर पर विराजमान है तथा सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाला है वह मनोहर गंगा जल मुझे पवित्र करे ।

महोज्योतिर्वहति वक्षणासु । —ऋग्वेद

गंगा आदि नदियों में महान ब्रह्म ज्योति ही बह रही है ।

'नास्ति गङ्गासमं तीर्थं' —वृह० यो० याज०

गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है ।

गंग सकल मुद मंगल मूला,
सब सुख करनि हरनि सब शूला ॥ —तुलसी (मानस, अयो०)

गंगा जी में जाकर अपवित्र जल भी पवित्र हो जाता है । —तुलसी

स्रोतसामस्मि जाह्नवी। —भगवान श्रीकृष्ण (गीता १०।३१)

नदियों में मैं गंगा हूँ।

गजेन्द्र-मोक्ष

गजेन्द्र-मोक्ष कोरा काव्य नहीं है। हमारे जैसों के लिए यह एक आश्वासन है, रक्षा की बाढ़ है। —गांधी जी

गम खाना (दे० 'क्षमा')

चार बातें सुनकर गम खा जाना इससे कहीं अच्छा है कि तनाजा हो। —प्रेमचन्द

गरीब (दे० 'दरिद्र')

उस मनुष्य से अधिक गरीब कोई नहीं है, जिसके पास केवल पैसा है। —एड विनपग

To be poor and seem to be poor is a certain way never to rise. —Goldsmith

गरीब होना और गरीब मालूम पड़ना यह कभी तरक्की न करने का एक निश्चित मार्ग है। —गोल्डस्मिथ

भगवान् गरीब को गरीब रखकर आजमाता है कि वह हिम्मत रखता है या नहीं! —विनोबा

He is poor whose expenses exceed his income. —Bruyere

गरीब वह है जिसका व्यय आय से अधिक है। —ब्रूएयर

He is not poor that has little, but he that desires much. —Daniel

वह गरीब नहीं है जिसके पास कम धन है वरन् गरीब वह है जिसकी अभिलाषाएँ बढ़ी हुई हैं। —डेनियल

Few save the poor feel for the poor. —L. E. Landon

गरीबों के अतिरिक्त कुछ ही ऐसे व्यक्ति हैं जो गरीबों के बारे में सोचते हैं। —एल० ई० लन्डन

मनुष्य को अपने जीवन के बाहर की कल्पना करना मुश्किल होता है। इसीलिए कहा गया है कि गरीब की सेवा करने के लिए गरीब बनना चाहिए।

—विनोबा

गरीबी

Poverty is the test of civility and the touchstone of friendship.

—Hazelitt

गरीबी विनम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है। **—हैजलिट**

सभी महान् धार्मिक नेताओं ने गरीबी को जानबूझ कर अपने भाग्य के समान अपनाया। मुहम्मद साहब ने कहा है कि गरीबी मेरा अभिमान है।

—महात्मा गांधी

गरीबी एक अपराध है और आधुनिक सभ्यता की देन जहाँ भाई का नाता भी 'पोजीशन' की मर्यादाओं में बँधा है; जहाँ श्रद्धा, भक्ति, यहाँ तक कि जीवन-संगिनी पत्नी के प्रेम की भी कीमत है। यह आधुनिक सभ्यता है। **—अज्ञात**

Poverty is not dishonourable is it self but only when it comes from idleness in temperance, extra-vagance and folly.

—Plutarch

गरीबी स्वयं अपमानजनक नहीं है, केवल उस गरीबी के अतिरिक्त जो आलस्य व्यसन, फिजूलखर्ची और मूर्खता के कारण हुई हो। **—प्लूटार्क**

If poverty is the mother of crimes, want of sense is the father of them. **—Bruyare**

यदि गरीबी अपराधों की जननी है तो बुद्धिराहित्य उनका पिता है।

—ब्रूएयर

Poverty of any kind places us in our proper relation to God, while riches of any kind, mind or money, tend to sever us from Him. **—Frank Crossley**

किसी प्रकार की भी गरीबी हमारा ईश्वर से उचित सम्बन्ध जोड़ देती है जब कि हर प्रकार की अमीरी, मन या धन की, हमारा उससे विच्छेद करा देती है।

—फ्रैंक क्रासले

He that hath pity upon the poor lendeth unto the lord.

—Bible

जो दरिद्रों पर दया करता है वह अपने कार्य से ईश्वर को ऋणी बनाता है।

—बाइबिल

Poverty is not a shame, but the being ashamed of it is.

गरीबी लज्जा नहीं है परन्तु गरीबी से लज्जित होना लज्जा की बात है।

—कहावत

गरीब वे लोग हैं जो अपने को गरीब मानते हैं, गरीबी गरीब समझने में ही है। **—एमर्सन**

गरीबी सब कलाओं के आविष्कार का कारण है। **—कहावत**

Poverty makes a man acquainted with strange bed-fellows.

गरीबी अनोखे मनुष्यों से घनिष्ट सम्बन्ध करा देती है। **—कहावत**

गर्व

जिसने गर्व किया, उसका अवश्य पतन हुआ। **—महर्षि दयानन्द**

Pride in prosperity turns to misery in adversity.

वैभव में गर्व विपत्ति में दुःख का रूप ग्रहण कर लेता है। **—कहावत**

Pride breakfasted with plenty, dined with poverty and supped with infamy. **—Franklin**

गर्व समृद्धि के साथ जलपान करता है, गरीबी के साथ दोपहर का भोजन एवं बदनामी के साथ रात्रि का भोजन करता है। **—फ्रैंकलिन**

गर्व हमारे शत्रुओं की संख्या को बढ़ाता है परन्तु हमारे मित्रों से सम्बन्ध-विच्छेद कर उन्हें भगा देता है। **—कहावत**

Pride goes before, and shame follows after.

पहले गर्व चलता है, उसके बाद कलंक आता है। **—कहावत**

कबिरा गरब न कीजिए कबहूँ न हँसिए कोय।
अबहूँ नाव समुद्र में का जाने का होय।। **—कबीर**

Pride is the sworn enemy to content. —**Proverb**

गर्व सन्तोष का घोर शत्रु है। —कहावत

धन अरु यौवन को गरब कबहूँ करिए नाँहि।
देखत ही मिट जात है, ज्यों बादर की छाँहि ॥ —अज्ञात

तुम जो देते हो मानवता को आठों याम चुनौती।
तुम महल खजानों को जो अपनी समझे हो बपौती ॥
तुम कल बनकर राज-कण पैरों से ठुकराये जाओगे।
है कौन यहाँ पर ऐसा जो खा आया हो अमरौती ॥
—भगवती चरण वर्मा (रंगों से मोह)

गलती

गलतियाँ करके, उनको मंजूर करके और उन्हें सुधार करके ही मैं आगे बढ़ सकता हूँ। पता नहीं क्यों, किसी के बरजने से या किसी की चेतावनी से मैं उन्नति कर ही नहीं सकता। ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूँ।
—महात्मा गांधी

गलती ज्ञान की शिक्षा है। जब तुम गलती करो तो उसे बहुत देर तक मत देखो उसके कारण को ले लो और आगें की ओर देखो। भूत बदला नहीं जा सकता, भविष्य अब भी तुम्हारे हाथ में है। —अज्ञात

No man ever became great or good except through many and great mistakes. —**Gladstone**

बहुत-सी तथा बड़ी गलतियाँ किये बिना कोई मनुष्य बड़ा या अच्छा नहीं बनता। —ग्लेडस्टन

From the error of others a wise man corrects his own.
—**Publius Syrus**

बुद्धिमान् मनुष्य दूसरे की गलतियों से अपनी गलती सुधारते हैं।
—प्यूब्लियस साइरस

Sometimes we may learn more from a man's errors than from his virtues. **—Longfellow**

हम प्रायः दूसरे के गुणों की अपेक्षा उसकी गलतियों से अधिक सीख लेते हैं। **—लांगफेलो**

Any man may make a mistake but none but a fool will continue in it. **—Cicero**

गलती कोई भी मनुष्य कर सकता है परन्तु मूर्ख के अतिरिक्त कोई उसको जारी नहीं रखेगा। **—सिसरो**

Error of opinion may be tolerated where reason is left free to combat it. **—Jafferson**

सम्मति की त्रुटि वहाँ सहनीय है जहाँ बुद्धि उसके विरोध के लिए स्वतंत्र है। **—जेफरसन**

Error, though blind herself, sometimes bringeth forth children that can see. **—Proverb**

गलती यद्यपि स्वयं अन्धी है तथापि वह ऐसी संतान उत्पन्न करती है जो देख सकती है। **—कहावत**

गलती वह शक्ति है जो मनुष्यों को ठुकरा कर आपस में मिलाती है, सत्य केवल सत्य कर्मों से ही मनुष्यों में पहुँचाया जा सकता है। **—टालस्टाय**

Error is not a fault of our knowledge but a mistake of our judgment giving assent to that which is not true. **—Locke**

गलती हमारे ज्ञान की नहीं अपितु निर्णय की त्रुटि है जो असत्य के लिए अपनी स्वीकृति दे देता है। **—लॉक**

Confession of error is like a broom that sweeps away dirt and leaves surface clearer than before. **—Gandhiji**

गलती स्वीकार कर लेना झाड़ू बुहारने के समान है जिससे गन्दगी का नाम निशान तक नहीं रहता। **—गान्धीजी**

गल्प

गल्प का आधार अब घटना नहीं, मनोविज्ञान की अनुभूति है। —**प्रेमचन्द**

गहना (दे० 'आभूषण')

स्त्री का गहना ऊख का रस है जो पेरने से ही निकलता है। —**प्रेमचन्द**

धैर्य और विनय भारत की देवियों का आभूषण है। —**प्रेमचन्द**

गहनों से बुड्ढे नयी बीबियों का दिल खुश किया करते हैं। —**प्रेमचन्द**

ग्रन्थ (दे० पुस्तक)

ग्रंथों में आत्मा है। सद्ग्रन्थों का कभी नाश नहीं होता। —**लिटन**

Some books are to be tasted, others to be swallowed and some few to be chewed and digested. —**Bacon**(**of studies**)

कुछ 'पुस्तकें' चखी जाती हैं, कुछ 'निगली' जाती हैं, और कुछ चबा-चबा कर खायी-पचायी जाती हैं। —**बेकन**

Books in the running brooks, sermons in stones.

—**Shakespeare**

बहते हुए झरनों में प्रासादिक ग्रंथ संचित हैं, पत्थरों में दर्शन छिपे हुए हैं। —**शेक्सपियर**

A good book is the precious life-blood of a master-spirit, embalmed and treasured up on purpose to a life beyond life.

—**Milton**

सद्ग्रन्थ महान आत्मा का मूल्यवान् जीवन-रक्त है जो ध्येयस्वरूप आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वरक्षित और संचित रखा गया है। —**मिल्टन**

Books are lighthouses erected in the great sea of time.

—**E. P. Whiple**

ग्रंथ समय के महासमुद्र में प्रकाशगृह की तरह खड़े हुए हैं।

—**ई० पी० विपिल**

A room without books is a body without a soul. **—Cicero**
ग्रंथरहित कमरा आत्मारहित शरीर के सदृश है। **—सिसरो**

Books are the masters who instruct us without rods and ferules, without hard words and anger, without clothes and money. **—Richard de Bury**

ग्रंथ ऐसे शिक्षक हैं जो बिना बेंत मारे, बिना कटु शब्द और क्रोध के, बिना वस्त्र और धन के हमें शिक्षा देते हैं। **—रिचार्ड डी वरी**

जब साहित्य पढ़ो तब पहले पढ़ो, ग्रन्थ प्राचीन।
पढ़ना हो विज्ञान अगर तो पोथी पढ़ो नवीन ।।
—रामधारी सिंह 'दिनकर' (नए सुभाषित)

Without books, God is silent, justice dormant, Natural science at a stand, philosophy lame, letters dumb, and all things involved in darkness. **—Bartholine**

बिना ग्रन्थ के ईश्वर मौन हैं, न्याय निद्रित है, प्राकृतिक विज्ञान स्तब्ध है, दर्शन लँगड़ा है, शब्द गूंगे हैं और सभी वस्तुएँ पूर्ण अंधकार में हैं। **—वार्थोलिन**

गाँठ

रहिमन खोजो ऊख में, जहाँ रसन की खानि।
जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं, यही प्रीति की हानि ।। **—रहीम**

रहिमन धागा प्रेम को, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिरि ना मिलै, मिले गाँठि परि जाय ।। **—रहीम**

जहाँ गाँठि तहँ रस नहीं, यह जानत सब कोय।
मड़ये तर की गाँठि में, गाँठि गाँठि रस होय ।। **—रहीम**

गाना (दे० गीत)

जब शरीर का रोआँ रोआँ रोता हो, दिल के हर एक तार में दुःख की लहर भर गयी हो, चित को हर प्रकार की तपन और जलन की झुलस सता रही हो —गाने की एक स्वर्गीय तान में अपना समूचा दुःख डुबो देना कितना सरल और सुगम है। **—अज्ञात**

A song will outlive all sermons in the memory. **—H. Gills**

गाना, स्मृति में सभी नीति वचनों की अपेक्षा अधिक काल तक जीवित रहेगा।
—एच० गिल्स

मैं गाता हूँ नहीं किसी की प्रीति चुराने के लिए।
मेरा यह तप है दुनियाँ का दुःख पी जाने के लिये ॥
—गोपालदास 'नीरज'

गाय

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत ॥
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्व-पाप-हरं शिवम् ॥
—वेदव्यास(महा०)

मैं इस संसार में गौवों के समान दूसरा कोई धन नहीं समझता। गौवों के नाम और गुणों का कीर्तन-श्रवण, गौवों का दान तथा उनका दर्शन—इनकी बड़ी प्रशंसा की गयी है। यह समस्त कार्य सम्पूर्ण पापों को दूर करके परम कल्याण को प्रदान करने वाले हैं।

सदा गावः शुचयो विश्वधायसः **—सामवेद संहिता**

गौएँ सदा पवित्र और सबका कल्याण करने वाली होती हैं।

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे ॥
—स्कन्द-ब्राह्म-धर्मारण्य

हे पाप रहिते ! तुम समस्त देवों की जननी हो। तुम यज्ञ की कारण रूपा हो, तुम समस्त तीर्थों की महातीर्थ हो; तुमको सदैव नमस्कार है।

मेरे विचार के अनुसार गौ-रक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नहीं। कई बातों में मैं इसे स्वराज्य के सवाल से भी बड़ा मानता हूँ। मेरे नजदीक गो-वध और मनुष्य-वध एक ही चीज है। **—महात्मा गांधी (२५-१-२५)**

फरमाया रसूल अल्लाह ने कि 'गाय का दूध शिफा है और घी दवा और उसका मांस नितान्त मर्ज (रोग) है'। —**हजरत आयशा**

(हजरत मोहम्मद साहब की धर्मपत्नी)

गाय के गोश्त में बीमारी है, उसके दूध में दुआ और घी में सफा है।

—**अल्लामा जलालुद्दीन सियुती (अलरहमत)**

गाय को मारने वाला, फलदार दरख्त काटने वाला और शराब पीने वाला कभी नहीं बख्शा जायगा। —**मुल्ला मोहम्मद बाकर हुसैनी (महारुल अनवर)**

गवां सेवा तु कर्तव्या गृहस्थैः पुण्यलिप्सुभिः।
गवां सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥ —**अज्ञात**

मेरा सारा प्रयत्न गो-वध रोकने के लिए है। जो गाय को बचाने के लिए प्राण होम देने को तैयार नहीं, वह हिन्दू नहीं। —**महात्मा गांधी** (२४-४-२१)

गायत्री

गायत्री छन्दसां मातेति। —**नारायण उप०**

गायत्री समस्त वेदों की माता है।

नास्ति गङ्गासमं तीर्थं न देवः केशवात्परः।
गायत्र्यास्तु परं जप्यं न भूतं न भविष्यति॥

—**वृह० यो० याज्ञ०**

गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है, श्रीकृष्ण भगवान् से बढ़कर कोई देवता नहीं है और गायत्री से बढ़कर जपने योग्य मन्त्र न कोई हुआ न आगे होगा।

ययः मधु च पुष्पेभ्यो धृतं दुग्धाद्रसात्पयः।
एवं हि सर्व वेदानां गायत्री सार मुच्यते॥ —**व्यास**

जिस प्रकार पुष्पों का सारभूत मधु, दूध का घृत, रसों का सारभूत दूध है उसी प्रकार गायत्री मन्त्र समस्त वेदों का सार है।

एकादारं परं ब्रह्म प्राणायामाः परन्तपाः।
साविन्यास्तु परन्नास्ति पावनं परमं स्मृतम्॥

—**मनु० स्मृति० अ० २।८३**

एकाक्षर अर्थात ओम परब्रह्म है। प्राणायाम परम तप है और गायत्री मन्त्र से बढ़ कर पवित्र करने वाला कोई भी मन्त्र नहीं है।

सव्याहृतिकां सप्रणवां गायत्री शिरसा सह ।
ये जपन्ति सदा तेषां न भयं विद्यते क्वचित् ।। —शंख स्मृति

जो सदा गायत्री का जाप व्याहृतियों और ओंकार सहित करते हैं उन्हें कहीं भी कोई भय नहीं सताता ।

गायत्र्यास्तु परं नास्ति शोधनं पापकर्मणाम् ।
महाव्याहृतिसंयुक्तां प्रणवेन च संजपेत् ।। —संवर्त स्मृति

गायत्री से बढ़कर पापकर्मों का शोधक दूसरा कुछ भी नहीं है । ओंकार सहित तीन महाव्याहृतियों से युक्त गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए ।

गायत्री वेद-जननी गायत्री पापनाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परन्नास्ति दिविचेह च पावनम् ।। —वशिष्ठ

गायत्री वेदों की जननी है । गायत्री पापों को नाश करने वाली है । गायत्री से बड़ा और कोई पवित्र मंत्र स्वर्ग तथा पृथ्वी पर नहीं है ।

गायत्री मन्त्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करनेवाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है । —स्वामी दयानन्द सरस्वती

गायन्तं त्रायते यस्माद् गायत्री तेन कथ्यते ।

गायन (तल्लीनता से जप) करनेवाले की त्राता (रक्षक) होने से वह गायत्री कही जाती है ।

राजा से वही वस्तु मांगी जानी चाहिए जो उसके गौरव के अनुकूल हो । परमात्मा से मांगने-योग्य वस्तु सद्‌बुद्धि है । गायत्री सदबुद्धि का मन्त्र है ।
—स्वामी विवेकानन्द

गाली

गाली देनेवाला तिरस्कृत नहीं करता वरन् गाली के प्रति हृदय में उठी हुई भावना तिरस्कार करती है, इसलिए जब कोई मनुष्य तुमको उत्तेजित करता है तो यह तुम्हारे अन्दर की तुम्हारी ही भावना है जो तुम्हें उत्तेजित करती है ।
—इपिक्टस

It is better a man should be abused than forgotten.

—**Dr. Johnson**

मैं गाली खा लेना अच्छा समझता हूँ बजाय इसके कि कोई मुझे भुला दे ।

—**डा० जॉनसन**

आवत गाली एक है, उलटत होय अनेक।
कहै कबीर न उलटिये बाढ़ि एकको एक ।। —**कबीर**

गीत (दे० गाना)

दुनिया के घावों पर मरहम जो न बने।
उन गीतों का शोर मचाना पाप है ।।

—**गोपाल दास 'नीरज'**

सुख दुःख के भावावेशमयी अवस्था-विशेष का गिने चुने शब्दों में स्वरसाधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है । —**महादेवी वर्मा**

Our sweetest songs are those that tell us of saddest thought.

—**Shelley**

हमारे मधुरतम गीत वही होते हैं, जिनमें हमारी गहन संवेदना अभिव्यंजित होती है । —**शेली**

भावना से प्रेम, प्रेम से आनन्द और आनन्दातिरेक से गीतों की सृष्टि होती है । —**रस्किन (विजय पथ)**

गीता

गीता विवेकरूपी वृक्षों का एक अपूर्व बगीचा है। यह सब सुखों की नींव है। सिद्धान्त-रत्नों का भन्डार है। नवरसरूपी अमृत से भरा हुआ समुद्र है। खुला हुआ परम धाम है, और सब विद्याओं की मूल भूमि है। —**संत ज्ञानेश्वर**

गीता हमारे धर्मग्रन्थों में एक अत्यन्त तेजस्वी और निर्मल हीरा है ।

—**लोकमान्य तिलक**

गीता विश्वधर्म की एक पुस्तक है। वह हमारे लिए सद्‌गुरु रूप है, माता-रूप है । —**महात्मा गांधी**

गीता वह तैलजन्य दीपक है जो अनन्त काल तक हमारे ज्ञान मन्दिर में प्रकाश करता रहेगा। **—महर्षि द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर**

गीता को धर्म का सर्वोत्तम ग्रन्थ मानने का यही कारण है कि उसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति—तीनों योगों की न्याययुक्त व्याख्या है; अन्य किसी भी ग्रन्थ से इसका सामंजस्य नहीं है। **—बंकिमचन्द्र**

गीता जबानी जमा खर्च का शास्त्र नहीं, किन्तु आचरण शास्त्र है।
—विनोबा

गीता के आधार पर अकेला मनुष्य सारी दुनिया का मुकाबला कर सकता है।
—विनोबा

गीता युग-युग का जीवन-ग्रन्थ है। मानव जीवन की समस्त समस्याओं का सुलझाव गीता में मिलता है। गीता गुरु ग्रन्थ है, ज्ञान ग्रन्थ है, विजय ग्रन्थ है और स्वयं में पूर्ण तथा सिद्ध एक जीवन ग्रन्थ है, रचनात्मक विश्वशास्त्र है।
—दीनानाथ दिनेश (गीता-ज्ञान)

गीता अनादि और अनन्त विश्व पुरुष के गम्भीरज्ञान का महासिन्धु है।
—दीनानाथ दिनेश (गीता-ज्ञान)

गीता योगी के लिए योगशास्त्र, दार्शनिक के लिये दर्शन, ज्योतिविद् के लिये ज्योतिष, वैज्ञानिक के लिये विज्ञान, नैतिक के लिये नीति, और साधु के लिये सदाचार है। **—स्वामी योगानन्द सरस्वती (श्री मद्भगवतगीता)**

किसी भी जाति को उन्नति के शिखर पर चढ़ाने के लिये गीता का उपदेश अद्वितीय है। **—वारेन हेस्टिंग्स**

गीता उपनिषदों से चयन किये हुए आध्यात्मिक सत्य के सुन्दर पुष्पों का गुच्छा है। **—स्वामी विवेकानन्द**

इससे (गीता से) मनुष्य मात्र अपनी पूर्णता तथा सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त कर सकता है। **—श्री अरविन्द**

गुण

पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते। **कालिदास (रघु०)**

गुण सब स्थानों पर अपना आदर करा लेता है।

गुणाः सर्वत्र पूज्यंते न महत्योपि संपदः ।
पूर्णेन्दुः कि तथा वंद्यो निष्कलंको यथा कृशः ।। —चाणक्य

गुण की पूजा सर्वत्र होती है, बड़ी सम्पत्ति की नहीं; जिस प्रकार पूर्ण चन्द्रमा वैसा वंदनीय नहीं है जैसा निर्दोष द्वितीया का क्षीण चन्द्रमा ।

बौना छोटा ही रहेगा चाहे वह पर्वत पर खड़ा हो; देव देव ही रहेगा चाहे वह कुएँ में ही क्यों न खड़ा हो । —सेनेका

यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ह्यभ्यागतो यत्र न तत्र लक्ष्मीः ।
उभौ च तौ यत्र न तत्र विद्या नैकत्र सर्वो गुणसंनिपातः ।। —अज्ञात

जहाँ लक्ष्मी रहती है वहाँ नम्रता नहीं, और जहाँ अतिथि समागम है वहाँ लक्ष्मी नहीं रहती है । और जहां दोनों हैं वहां विद्या का ही अभाव रहता है, अतः यह निश्चित है—एक जगह सब गुणसमूह नहीं रहते ।

Talent is that which is in a man's power; genius is that in whose power a man is. **—Lowell**

गुण मनुष्य के वश में है; प्रतिभा के वश में मनुष्य स्वयं होता है । —लावेल

दातापन, मीठी बोली, धीरज और उचित का ज्ञान ये अभ्यास से नहीं मिलते, ये चार स्वाभाविक गुण हैं । —चाणक्य

एको हि दोषो गुणसंनिपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः ।
—कालिदास (कुमारसंभव)

जहाँ बहुत से गुण हों वहाँ यदि एक-आध अवगुण भी आ जाय तो उसका वैसे ही पता नहीं चल पाता जैसे चन्द्रमा की किरणों में उसका कलंक ।

Genius does what it must and talent what it can.

—Owen Meredith

प्रतिभावान् मनुष्य वह कार्य करते हैं जिसे किये बिना वे रह नहीं सकते, गुणी मनुष्य वह कार्य करते हैं जो वह कर सकते हैं । —ओवेन मेरीडेत

गुन के ग्राहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय ।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ।।
—गिरिधर कविराय

जन्म-जाति से नहीं जगत में,
कोई पूजा जाता।
उच्च वंश ही बस मनुष्य का,
नहीं महान बनाता॥
गुण समूह पर ही आधारित,
है सर्वथा महत्ता।
होता बड़ा काम करने पर,
ही शुभ यश की सत्ता॥

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (गुरु दक्षिणा)

Contemporaries appreciate the man rather than the merit; but posterity will regard the merit rather than the man.

—Colton

समकालीन व्यक्ति गुण की अपेक्षा मनुष्य की प्रशंसा करते हैं, आने वाली पीढ़ियाँ मनुष्य की अपेक्षा उसके गुणों का सम्मान करेंगी। **—कोल्टन**

गुण को किसी की सिफारिश की आवश्यकता नहीं होती।

शूराश्च कृतविद्याश्च रूपवत्यश्च योषितः।
यत्र यत्र गमिष्यन्ति तत्र तत्र कृतादराः॥ **—अज्ञात**

वीर, विद्वान् और रूपवती स्त्रियाँ जहाँ जहाँ जाती हैं वहाँ वहाँ इनका आदर ही होता है। **—अज्ञात**

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते पितृवंशो निरर्थकः।
वासुदेवं नमस्यन्ति वसुदेवं न ते जनाः॥ **—चाणक्य**

गुणों का सर्वत्र सम्मान होता है, गुणी के वंश का नहीं। लोग वासुदेव (कृष्ण) की ही वन्दना करते हैं, उनके पिता वसुदेव की नहीं।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे गुण रौशन हों तो दूसरे के गुणों को मान्यता दो।

विवेकिनमनुप्राप्ता गुणा यन्ति मनोज्ञताम्।
सुतरां रत्नमाभाति चामीकरनियोजितम्॥ **—चाणक्य**

विवेकी को पाकर गुण सुन्दरता को प्राप्त होते हैं, सोने में जड़ा हुआ रत्न अत्यन्त शोभित होता है।

जहां रहै गुनवंत नर ताकी शोभा होत।
जहाँ धरै दीपक तहाँ निहचै करै उदोत। —अज्ञात

गुणैरुत्तमतां यान्ति नोच्चैरासनसंस्थिततैः।
प्रसाद शिखरस्थोपि काकः किं गरुड़ायते॥ —चाणक्य

गुणों से ही मनुष्य महान् होता है, ऊँचे आसन पर बैठने से नहीं। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से भी कौवा गरुड़ नहीं हो सकता।

गुन गरुवौ लघुता गहै, तिहि सनमानत धीर।
मंद तऊ प्यारो लगै, सीतल सुरभि समीर॥ —अज्ञात

परस्तुतगुणो यस्तु निर्गुणोऽपि गुणी भवेत्।
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः॥ —चाणक्य

जिस गुण का दूसरे लोग वर्णन करते हैं उससे निर्गुण भी गुणवान् होता है, इन्द्र भी अपने गुणों की प्रशंसा करने से लघुता को प्राप्त होता है।

गुणों से मनुष्य साधु होता है और अवगुणों से असाधु होता है। सद्गुणों को ग्रहण करो और दुर्गुणों को छोड़ो। जो अपनी ही आत्मा द्वारा अपनी आत्मा को जानकर राग और द्वेष में समभाव रखता है, वह पूज्य है।

—भगवान महावीर

गुणाः कुर्वन्ति दूतत्वं दूरेऽपि वसतां सताम्।
केतकी गन्धमाघ्राय स्वयमायान्ति षट्पदाः। —अज्ञात

सज्जन लोग चाहे दूर भी रहें पर उनके गुण उनकी ख्याति के लिए स्वयं दूत का कार्य करते हैं। केवड़ा पुष्प की गन्ध सूंघकर भ्रमर स्वयं उसके पास चले जाते हैं।

गुण-गान

कौशेयं कृमिजं सुवर्णमुपलाद् दूर्वापि गोरोमतः।
पंकात्तामरसं शशांक उदधेरिन्दीवरं गोमयात्॥
काष्ठादग्निरहेः फणादपि मणिर्गोपित्ततो रोचना।
प्राकाश्यं स्वगुणोदयेन गुणिनो गच्छन्ति किं जन्मना॥

—पंचतन्त्र

रेशम कीड़े से, सोना पत्थर से, नील कमल गोबर से, लाल कमल कीचड़ से, चन्द्रमा समुद्र से, गोरोचन गौ के पित्त से, अग्नि लकड़ी से, मणि सर्प के फन से और दूब गौ के रोम से उत्पन्न होती है। इन सभी वस्तुओं का उत्पत्ति स्थान वैसा महिमामय नहीं जैसा इनका गुण। इससे स्पष्ट है कि कोई वस्तु गुण के उदय से ही प्रकाशमान होती है, उसके उत्पत्ति स्थान का कोई महत्व नहीं होता।

गुण-ग्राहक

गुणी ही गुण को परखते हैं जैसे हीरे की कदर जौहरी ही करते हैं।

—अज्ञात

To love one that is great is almost to be great oneself.

—Madam Necker

महान् की उपासना करना स्वयं महान् होने के बराबर है। **—श्रीमती नेकर**

Every man I meet is my superior in some way. In that I learn of him. **—Emerson**

प्रत्येक मनुष्य जिससे मैं मिलता हूँ किसी न किसी रीति में मुझसे श्रेष्ठ होता है। इसलिए मैं उससे कुछ शिक्षा लेता हूँ। **—एमर्सन**

गुण-ग्राहकता

The way to develop the best that is in a man is by appreciation and encouragement. **—Charles Schwab**

मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास गुण-ग्राहकता एवं प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। **—चार्ल्स श्वेब**

सफलता का रहस्य निष्कपट गुण-ग्राहकता है। **—अज्ञात**

The difference between appreciation and flattery ? One is sincere and the other insincere. One comes from the heart out, the other from the teeth out. One is unselfish, the other selfish. One is universally admired, the other is universally condemned. **—Dale Carneigee**

गुण-ग्राहकता और चापलूसी में अन्तर ? गुण-ग्राहकता सच्ची होती है और चापलूसी झूठी । गुण-ग्राहकता हृदय से निकलती है और चापलूसी दाँतों से । एक निःस्वार्थ होती है और दूसरी स्वार्थमय । एक की संसार में सर्वत्र प्रशंसा होती है और दूसरे की सर्वत्र निन्दा । —डेल कारनेगी

गुणहीन

कुलहीने नृपं भृत्याः कुलीनमति चोन्नतम् ।
संत्यज्यान्यत्र गच्छंति शुष्कं वृक्षमिवाण्डजाः ।। —अज्ञात

उन्नत कुल में उत्पन्न फलहीन (अपने दया दाक्षिण्यादि गुण से) राजा को छोड़ कर नौकर अन्यत्र चले जाते हैं, किस तरह ? जैसे सूखे हुए पेड़ को छोड़कर पक्षी दूसरे पेड़ पर चले जाते हैं ।

गुणी

गुणी मनुष्य अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते बल्कि दूसरों से अपनी प्रशंसा सुन-कर नम्र हो जाते हैं । —अज्ञात

बड़े बड़ाई ना करैं, बड़े न बोलें बोल ।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल ।। —रहीम

प्रबला एवं गुणवतामाक्रम्य धुर पुरः प्रकर्षन्ति ।
तृणकाष्ठमेव जलधेः उपरिप्लवते न रत्नानि ।। —अज्ञात

गुणवानों को दुष्ट लोग दबाकर नीचे कर देते हैं और अपने आगे हो जाते हैं । जैसे तृण और लकड़ियां समुद्र के ऊपर तैरती हैं किन्तु रत्न नहीं, वह नीचे बैठ जाते हैं ।

गुणवन्तः क्लिश्यन्ते प्रायेण भवन्ति निर्गुणाः सुखिनः ।
बन्धनमायान्ति शुका भवन्ति यथेष्ट संचारिणाः काकाः ।। —अज्ञात

प्रायः देखा जाता है कि गुणी क्लेश भोगते रहते हैं और निर्गुणी सुखी रहते हैं । तोते पिंजड़े में बन्द किये जाते हैं, कौए नहीं । वे स्वेच्छापूर्वक निर्भय घूमते हैं ।

गुनाह

अगर गुनाह से किसी की जान बचती हो तो ऐसा करना सवाब है ।

—प्रेमचन्द

गुनाह छिपा नहीं रहता। वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। उस शास्त्र को हम पूरे तौर पर नहीं जानते, लेकिन बात साफ है। **—महात्मा गांधी**

गुप्तचर

गुप्तचर रोग की तरह धीरे-धीरे आता है या मित्र बनकर कोमलता का बाना बनाकर आता है, जैसे मखमली म्यान में तलवार छिपकर कमर में झूलती है। **—डा० रामकुमार वर्मा (मर्यादा की वेदी पर)**

गुप्त-भेद

He who trusts secrets to a servant, makes him his master.

—Drydan

जो मनुष्य अपना गुप्त-भेद नौकरों पर प्रकाशित करता है वह उनको अपना मालिक बना लेता है। **—ड्राइडेन**

How can we expect another to keep our secret if we can not it ourselves. **—La Rochetoucauld**

हम कैसे विश्वास करें कि दूसरे हमारे भेद को गुप्त रखेंगे जब कि हम स्वयं ही उन्हें गुप्त नहीं रख सकते। **—ला रोशोको**

दीवार के भी कान होते हैं, इसका ध्यान रखना चाहिए। **—सादी**

Trust no secrets to a friend, which if reported, would bring infamy. **—Thales**

किसी मित्र को अपना ऐसा भेद न बताओ जिसके जाहिर हो जाने पर बदनामी हो। **—थेल्स**

He deserves small trust who is not privacy counsellor to him self. **—Ford**

वह मनुष्य कम विश्वासपात्र है जो स्वयं अपना गुप्त सलाहकार नहीं है।

—फोर्ड

अर्थनाशं मनस्तापं गृहेदुश्चरितानि च।
नीचवाक्यं चापमानं मतिमान्नप्रकाशयेत्॥ —चाणक्य

धन का नाश, मन का ताप, घर का चरित्र, नीच का वचन और अपमान इनको बुद्धिमान् प्रकाशित न करें।

गुप्त रखना भय का द्योतक है और भयभीत होना मनुष्य के अपराधी होने का द्योतक है। —**भगवती चरण वर्मा (चित्रलेखा)**

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय। —**रहीम**

गुरु

बिन गुरु होई न ज्ञान। —**तुलसी**

गुरु साहब दोनों खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरुदेव की, जिन साहब दियो दिखाय॥ —**कबीर**

कबिरा ते नर अंध हैं गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है गुरु रूठे नहि ठौर॥ —**कबीर**

गुरोरवज्ञया सर्वं नश्यते च समुद्भवम्।
गुरु की अवहेलना करने से सारा अभ्युदय नष्ट हो जाता है।

यह तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान॥ —**कबीर**

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देयो महेश्वरः, गुरुरेवपरब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः।
—**अज्ञात**

जो मनुष्य परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा का ही स्वरूप बन जाता है और इस तरह सिद्ध है कि गुरु के आसन पर मनुष्य नहीं, किन्तु परमात्मा स्वयं आसीन रहते हैं। —**निराला**

जो स्वयं प्रकाश फैलानेवाला है यदि वही अँधेरे में ठोकर खा खाकर गिरे तो वह दूसरों के लिए उजाला क्या करेगा। —**हरिऔध**

गुरु को अगर हमने देह रूप से माना तो हमने गुरु से ज्ञान नहीं, अज्ञान पाया। —**विनोबा**

गुरु कुछ नया नहीं देता। जो बीज रूप से रहता है, उसी को विकसित करने में सहायक होता है। मन्द सुगन्ध को बाहर निकालता है। —**साने गुरुजी**

एकमात्र ईश्वर ही विश्व का पथ-प्रदर्शक और गुरु है।

—**रामकृष्ण परमहंस**

गुरु वही है जो आत्मज्ञान द्वारा मोक्ष-साधन का पाठ पढ़ाता और आचरण कराता है। —**दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

गुरु-भक्ति सम्पूर्ण भाग्यों की जन्म-भूमि है क्योंकि यह शोक-ग्रस्त मनुष्य को भी ब्रह्मस्वरूप कर देती है……गुरु का प्रेम जिस किसी में देखो तो समझ लो कि ज्ञान उसकी सेवकाई करता है। —**संत ज्ञानेश्वर**

पतिरेव गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः।
गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः॥ —**चाणक्य**

स्त्रियों का गुरु उनका पति है, आया हुआ अतिथि सब का गुरु है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनका गुरु अग्नि है और चारों वर्णों का गुरु ब्राह्मण है।

गुलाम (दे० 'दास')

जो मनुष्य अपने मन का गुलाम बना रहता है वह कभी नेता और प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता। —**स्वेट मार्डेन**

देह से ही नहीं जो दिल से भी गुलाम हो गये हैं वे कभी आजादी हासिल नहीं कर सकते। —**महात्मा गांधी**

जिन्हें हम हीन या नीच बनाये रखते हैं वे भी क्रमशः हमें हेय और दीन बना देते हैं। —**रवीन्द्र**

माया नदी के प्रवाह में बहे जाने वाले काम-शास्त्र के अनुयायी प्रवाह-पतित वासनाओं के गुलाम होते हैं। —**विनोबा**

जब गुलाम अपनी बेड़ी को आभूषण समझकर मुस्कराये, तब उसके मालिक की पूरी जीत हुई मानी जाती है। —**महात्मा गांधी**

गुलाम मनोवृत्ति वीर पूजा या निःशंक होकर आज्ञा मानने की वृत्ति से अलग चीज है। —**गांधी जी**

They are slaves who dare not be in the right with two or three. **—Lowell**

वे गुलाम हैं जिनको यह साहस नहीं है कि वे न्याय का साथ दें चाहे वे दो तीन की ही संख्या में क्यों न हों। **—लोवेल**

गुलामी

Slavery is a system of the most complete injustice. **—Plato**

गुलामी पूर्ण अन्याय की एक व्यवस्था है। **—प्लेटो**

गुलामी दुनिया का सबसे बड़ा घृणित पाप है। **—सुभाषचन्द्र बोस**

Slavery is a system of outrage and robbery. **—Socrates**

गुलामी अत्याचार और डकैती की प्रणाली है। **—सुकरात**

बन्दी-दशा तो सिर्फ जेल की चहारदीबारी के अन्दर ही नहीं होती, मनुष्य के हक को हड़पना ही तो बन्धन है। **—रवीन्द्र**

एक घंटे के लिए भी गुलामी को रहने देना अन्याय है। **—विलियम पिट**

स्वर्ग की गुलामी की अपेक्षा तो नरक का अधिराज्य श्रेयस्कर है। **—विनोबा**

गुस्सा

गुस्से को शर्बत के घूंट की तरह पी जाओ क्योंकि जहाँ तक उसके अंत का सम्बन्ध है, इससे अच्छी और कोई आनन्ददायक वस्तु नहीं है। **—अज्ञात**

गुस्सा इंजन है, अविवेक और अज्ञात उसके पहिये हैं। **—अज्ञात**

गुस्सा एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है। **—महात्मा गांधी**

To be angry is to revenge the fault of others upon ourselves. **—Pope**

गुस्सा होना दूसरे की गलती का अपने से बदला लेना है। **—पोप**

As heat conserved is transmuted into energy, so anger controlled can be transmuted into a power which can move the world. **—Mahatma Gandhi**

जैसे ताप संरक्षित रहकर शक्ति में परिवर्तित होता है; उसी प्रकार क्रोध को अधीन रखकर ऐसी शक्ति में परिवर्तित किया जा सकता है जो विश्व को हिला दे। —महात्मा ंधी

सज्जन मनुष्य का गुस्सा शीघ्रता से समाप्त हो जाता है। —कहावत

क्रोध के लक्षण शराब और अफीम दोनों से मिलते हैं। क्रोध के लक्षण क्रमशः सम्मोह, स्मृति-भ्रंश और बुद्धिनाश माने गये हैं। —महात्मा गांधी

गूँगा

प्रकृति के समान गूँगे की भी अपनी महिमा होती है। —रवीन्द्र

गोपनीय

To keep your secret is wisdom, but to expect others to keep it is folly. **—O. W. Holmes**

अपने भेद को गोपनीय रखना बुद्धिमानी है, परन्तु दूसरों से उसे गोपनीय रखने की आशा करना मूर्खता है। —ओ० डब्लू० होम्स

दिल की ऐसी कोई गुप्त बात नहीं है जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हों। —मोलियर

गोपी

गोपी किसी स्त्री का नाम नहीं है, जिसमें सर्वथा त्यागपूर्ण प्रेम है; जिसका प्रत्येक विचार, जिसकी प्रत्येक चेष्टा, प्रत्येक क्रिया सहज ही अपने प्रियतम श्री श्यामसुन्दर के लिये होती है, वही गोपी है। गोपी का संसार, गोपी के संसार की क्रिया सभी एकमात्र प्रियतम श्रीकृष्ण के लिये हैं।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार (मधुर भाग १)

जो अपनी प्रत्येक इन्द्रिय से श्रीकृष्ण-रस का पान करता है वही गोपी है। —रामचन्द्र डोंगरे

गोविन्द नाम महिमा

पापानलस्य दीप्तस्य मा कुर्वन्तु भयं नराः ।
गोविन्दनाममेघौ घैर्नश्यते नीरविन्दुभिः ॥

—गरुड़पुराण

प्रदीप्त पापानल से कोई मनुष्य भय न करे। श्रीगोविन्द नाम ही मेघसमूह है। इसके विन्दुमात्र जलकरण से ही सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

अनिच्छयापि दहते स्पृष्टो हुतबहो यथा ।
तथा दहति गोविन्दनाम व्याजादपीरितम् ॥

अग्नि का स्पर्श अनिच्छा से होने पर भी जैसे वह जला देता है, वैसे ही गोविन्द नाम किसी बहाने से भी उच्चारित हो जाता है तो सारी पाप राशि जल जाती है।

गौरव

Our greatest glory is not in never falling, but rising every time we fall. **—Confucius**

हमारा गौरव कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि प्रत्येक बार उठने में है जब कभी हम गिरें। **—कन्फ्यूशस**

ग्रह-भेद

सूर्य आत्मा, चन्द्र मन, सत्त्व भौम, बुध वानि ।
गुरू ज्ञान, सुख, काम भृगु, शनि दुखकारक जानि ॥

—वृहज्जातक—सटीक

सूर्य चन्द्र राजा, भौम, नायक, बुध युवराज ।
सचिव वृहस्पति शुक्र द्वौ, शनिहि दास को काज ॥

—वृहज्जातक—सटीक

गृहस्थ

गृहस्थ का घर भी एक तपोभूमि है, सहनशीलता और संयम खोकर कोई इसमें सुखी नहीं रह सकता। **—जनार्दनप्रसाद झा "द्विज"**

जिस गृह से अतिथि निराश लौटता है उस गृहस्थ के समस्त पुण्य वह ले जाता है और अपने पाप वहीं छोड़ जाता है। —**अज्ञात**

जो पुरुष धर्मानुकूल धन प्राप्त करके यज्ञ करता है, अतिथियों को खिलाता है, वही सच्चा गृहस्थ है। —**वेदव्यास (महा०, आदि०)**

गृहस्थ-जीवन की सफलता यही है कि उसके द्वारा अतिथि-सेवा हो।—**अज्ञात**

जो गृहस्थ यथाशक्ति अपने आश्रम-धर्म का पालन करता है, वह मरने के पश्चात् अक्षय लोक प्राप्त करता है। —**वेदव्यास (महा०, शा०)**

गृहस्थाश्रम

गृहस्त्वेव हि धर्माणां सर्वेषां मूलमुच्यते —**वेदव्यास (महा०)**

गृहस्थाश्रम ही सब धर्मों का मूल आधार है।

घर का प्रेम भारतीय नारी का जीवन है। —**रवीन्द्र**

जिस भाँति सब प्राणी माता के आश्रय से जीते हैं उसी भाँति अन्य सब आश्रम गृहस्थाश्रम के आधार पर स्थित हैं। —**अज्ञात**

वह गृहस्थाश्रम धन्य है, जिसमें आनन्दमय घर, विद्वान् पुत्र, सुन्दरी स्त्री, सच्चे मित्र, सात्विक धन, स्वपत्नी में प्रीति, सेवापरायण सेवक, अतिथि-सत्कार, नित्य देवपूजा, मधुर भोजन, सत्संगति और उपासनाएँ सर्वदा प्राप्त होते रहते हैं। —**अज्ञात**

गृहस्थी

A happy family is but an earlier heaven —**English Proverb**

सुखी परिवार तात्कालिक स्वर्ग है। —**अंग्रेजी कहावत**

Woman, when you move about in your household service your limbs sing like a hill stream among its pebbles.

—**R. N. Tagore**

स्त्री ! जिस समय तू अपने गृह कामों में लीन रहती है, उस समय तेरे अंगों से ऐसी रागिनी निकलती है, जैसी पहाड़ी झरनों से निकलती है जब वे बिल्लौरों में से होकर क्रीड़ा करते हैं। —**रवीन्द्र**

Woman is the salvation or the destruction of the family.
—**Amiel**

स्त्री परिवार की मुक्ति है या विनाश है। —**एमियेल**

ग्लानि

मर्द लज्जित करता है तो हमें क्रोध आता है, स्त्रियाँ लज्जित करती हैं तो ग्लानि उत्पन्न होती है। —**प्रेमचन्द**

घटना

कभी-कभी जीवन में ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं जो क्षण मात्र में मनुष्य का रूप पलट देती हैं। —**प्रेमचन्द (वरदान)**

प्रत्यक्ष घटना विचार से कहीं अधिक प्रभावशालिनी होती है। रणस्थल का विचार कितना कवित्वमय है। युद्धावेश का काव्य कितनी गर्मी उत्पन्न करने वाला है। परन्तु कुचले हुए शव और कटे हुए अंग प्रत्यंग देखकर कौन मनुष्य है जिसे रोमांच न हो आवे। —**प्रेमचन्द**

जैसे तिनका हवा का रुख बताता है वैसे ही मामूली घटनाएँ भी मनुष्य के हृदय की वृति को बताती हैं। —**महात्मा गांधी**

घड़ी

समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नहीं। —**रवीन्द्र**

घमंड (दे० 'गर्व')

आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन गरूर है। —**प्रेमचन्द**

घमंडी का सिर नीचा। —**प्रेमचन्द**

घमंडी आदमी प्रायः शक्की हुआ करता है। —**प्रेमचन्द (गो-दान)**

घर

Every home is a university and the parents are the teachers.
—Mahatma Gandhi

बच्चे के लिए घर विश्वविद्यालय है, और माता-पिता शिक्षक हैं।
—गांधी जी

वीरों का घर सदा घोड़े की पीठ पर होता है।
—अमृतलाल नागर (शतरञ्ज के मोहरे)

घर वही है जहाँ प्रेम और सत्कार मिले। **—प्रेमचन्द**

घर का भेदी लंका ढावे। **—कहावत**

जीवन का केन्द्र घर है और घर है स्त्री का किला। घर के भीतर स्त्री का अधिकार सर्वोपरि है। स्त्री ही वास्तव में घर की सच्ची स्वामिनी है।
—अज्ञात

बिन घरनी घर भूत का डेरा। **—कहावत**

घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध। **—कहावत**

आकाश में उड़नेवाले पक्षी को भी अपने बसेरे की याद आती है।
—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

He is the happiest, be he king or peasant, who finds peace in his home. **—Goethe**

वह मनुष्य, चाहे वह राजा हो या किसान, सब से भाग्यवान है जिसे अपने घर में शान्ति मिलती है। **—गेटे**

सत्स्त्रिया रक्ष्यते गृहम्। **—चाणक्य**

भली स्त्री से घर की रक्षा होती है।

वास्तव में घर को घर नहीं कहते, गृहिणी को ही घर कहते हैं। जिस घर में गृहिणी न हो वह वन के ही समान है।
—वेदव्यास (महा०, शा०)

यन्मनीषि पदाम्भोज रजःकणपवित्रितम् ।
तदेव भवनं नो चेद् भकारस्तत्र लुप्यते ॥ —अज्ञात

वही भवन है जो मनीषियों के चरण-कमल की धूलि से पवित्र हो चुका है, और यदि ऐसा नहीं है तो उसमें भकार लुप्त हो जाता है अर्थात् वह (घर) वन के समान है ।

जिहि घर साधु न पूजिये, हरि की सेवा नाहि ।
ते घर मरघट सारखे भूत बसै तिन मांहि ॥ —कबीर

घरौंदा

मनुष्य दुश्मन का सुदृढ़ गढ़ तोड़ सकता है मगर अबोध बालक का मिट्टी का घरौंदा तोड़ने की शक्ति किसमें है । —प्रेमचन्द

घृणा

इस संसार में घृणा घृणा से कभी कम नहीं होती; घृणा प्रेम से ही कम होती है, यही सर्वदा उसका स्वभाव रहा है । —धम्मपद

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं । —महात्मा गांधी

घायल

घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय । —मीरा

घाव

घाव पर कपड़ा भी छुरी बन कर लगता है। दुखे हुए अंग को हवा भी दुखा देती है । —सुदर्शन

घूस

रुपए वाले दोषी न्याय को भी रास्ता बताते हैं और ऐसा भी देखा गया है कि घूस कानून को भी मोल ले लेती है । —शेक्सपियर

चंदन कुल्हाड़ी

काटइ परसु मलय सुनु भाई। निज गुन देइ सुगंध बसाई।
ताते सुर सीसन्ह चढ़त, जग बल्लभ श्रीखंड।
अनल दाहि पीटत घनहिं, परसु वदन यह दंड॥
—तुलसी (मानस, उत्तर०)

चंद्रमा

The moon has her light all over the sky, her dark spot to herself. **—R. N. Tagore**

चंद्रमा अपना प्रकाश संपूर्ण आकाश में फैलाता है; परंतु अपना कलंक अपने ही पास रखता है। **—रवीन्द्र**

चक्रवर्ती

वसुन्धरा के समान चक्रवर्ती का हृदय भी उदार और सहनशील होना चाहिए। **—जयशंकर प्रसाद**

चक्रवर्ती राज्य का नाश उस समय तक नहीं होता, जब तक कि आपस में फूट न हो। **—स्वामी दयानन्द सरस्वती**

जिस देश को चक्रवर्ती राजा प्राप्त हो वह देश देवलोक ही हो जाता है।
—हरिभाऊ उपाध्याय

स्वर्गलोक तो पुण्य के प्रभाव से भी मिल सकता है परन्तु चक्रवर्ती-पद उससे भी श्रेष्ठ है। **—हरिभाऊ उपाध्याय**

जो पुरुष पवित्र होकर जगत् के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है, वह चक्रवर्ती से भी अधिक सत्ता भोगता है। **—महात्मा गांधी**

चतुर

देशाटनं पण्डितमित्रता च वाराङ्गना राजसभाप्रवेशः।
अनेकशास्त्रार्थ-विलोकनं च चातुर्यमूलानि भवन्ति पञ्च॥ **—अज्ञात**

देशों का भ्रमण, पण्डितों के साथ मित्रता, वेश्याप्रसंग, राजसभा में बैठना और अनेक शास्त्रों का अनुशीलन करना ये पाँच चतुर होने के प्रधान कारण हैं।

चरखा

चरखा भूखे की रोटी, अन्धे की लकड़ी और विधवा का सहारा है।
—महात्मा गांधी

मनुष्य की नग्नता को ढाकना, यह चरखे का दावा है। **—विनोबा**

चरखे की पुकार दूसरी सब पुकारों से मधुर है क्योंकि वह प्रेम की पुकार है। **—महात्मा गांधी**

चरखे के द्वारा माता बच्चे को देश-प्रेम सिखा सकती है। **—विनोबा**

चरखा तो लँगड़े की लांठी है—सहारा है। भूखे को दाना देने का साधन है। निर्धन स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करने वाला किला है। **—महात्मा गांधी**

चरखा आनन्द का साधन है। **—विनोबा**

चरित्र

Character is that which can do without success. **—Emerson**

चरित्र बिना सफलता के भी रह सकता है। **—एमर्सन**

उत्तम चरित्र ही निर्धन का धन है। **—अज्ञात**

Character is the governing element of life; and is above genius. **—Fraderick Saunders**

चरित्र जीवन में शासन करनेवाला तत्त्व है और वह प्रतिभा से उच्च है।
—फ्रैडरिक सान्डर्स

चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए। **—महात्मा गांधी**

कठिनाइयों को जीतने, वासनाओं का दमन करने और दुखों को सहन करने से चरित्र उच्च, सुदृढ़ और निर्मल होता है। **—अज्ञात**

चरित्र शक्ति है। ज्ञान व्यक्ति के चरित्र को और अच्छा बनाता है।
—सत्य सांई बाबा

The great hope of society is individual character.
—Channing

व्यक्तिगत चरित्र समाज की महान् आशा है। **—चैनिंग**

Character is property. It is the noblest of possessions.

—Smiles

चरित्र सम्पत्ति है। यह सम्पत्ति में सबसे उत्तम है। **—स्माइल्स**

Talents are best nurtured in solitude; character is best formed in the stormy billows of the world. **—Goethe**

गुण एकान्त में अच्छी तरह विकसित होता है ; चरित्र का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में होता है। **—गेटे**

चरित्र-शुद्धि ठोस शिक्षा की बुनियाद है। **—गांधी**

Character is like a tree, and reputation is like its shadow. The shadow is what we think of it; the tree is the real thing.

—Lincoln

चरित्र एक वृक्ष के समान है और ख्याति उसकी छाया है। छाया वही है जो हम उसके बारे में सोचते हैं, परन्तु वृक्ष वास्तविक वस्तु है। **—लिंकन**

दुर्बल चरित्रवाला उस सरकंडे के समान है जो हवा के हर झोंके से झुक जाता है। **—माघ**

Character is a diamond that scratches every other stone.

—Bertol

चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है। **—बर्टल**

चरित्र परिवर्तित नहीं होता, विचार परिवर्तित होते हैं, किन्तु चरित्र विकसित किया जाता है। **—डिजरायली**

Sow an act, and you reap a habit, sow a habit and you reap a character, sow a character and you reap a destiny.

—Boardman

कर्म को बोओ और आदत (की फसल) को काटो; आदत को बोओ और चरित्र को काटो; चरित्र को बोओ और भाग्य को काटो। **—बोर्डमैन**

सुगन्धि दर्शनीयं च लोकरंजनतत्परम् ।
दृष्ट्वा कुसुममारामे सर्वैरप्यभिनन्दितम् ।।
प्रसाद सुमुखः शील चारित्र्याभ्यां सुवासितः ।
उद्युक्तो लोकसेवायां भवेयमिति भावये ।। **—अज्ञात**

उपवन में सुगन्धित, सुन्दर लोकों के रंजन में तत्पर और साथ ही सबके द्वारा अभिनंदित पुष्प को देखकर मेरे मन में आता है कि मुझे भी प्रसन्न, मुखशील और चरित्र की सुगन्ध से वासित तथा लोक-सेवा में तत्पर होना चाहिए।

मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं वरन् चरित्र है और यही उसका सबसे बड़ा रक्षक है। **—हर्बर्ट स्पेन्सर**

चोरी से कोई धनवान् नहीं बन सकता, दान से कोई कंगाल नहीं हो सकता। थोड़ा-सा झूठ भी कभी छिप नहीं सकता। यदि तुम सच बोलोगे तो सारी प्रकृति और सब जीव तुम्हारी सहायता करेंगे। चरित्र ही मनुष्य की पूंजी है।
—एमर्सन

चरित्रबल

समाज के प्रचलित विधि-विधानों के उल्लंघन का दुःख सिर्फ चरित्रबल और विवेक-बुद्धि के बल पर ही सहन किया जा सकता है। **—शरत्चन्द्र (शेष प्रश्न)**

Character must be capable of standing firm upon its feet in the world of daily work, temptation and trial; and able to bear the wear and tear of actual life. **—Samual Smiles**

चरित्रबल पर ही मनुष्य दैनिक कार्य, प्रलोभन और परीक्षा के संसार में दृढ़तापूर्वक स्थिर रहते हैं; और वास्तविक जीवन की क्रमिक क्षीणता को सहन करने योग्य होते हैं। **—स्माइल्स**

चले चलो

बैठने वाले का भाग्य भी बैठ जाता है और खड़े होने वाले का भाग्य भी खड़ा हो जाता है। इसी प्रकार सोने वाले का भाग्य भी सो जाता है और पुरुषार्थी का भाग्य भी गतिशील हो जाता है। चले चलो, चले चलो। —वेदवाणी

चातुर्य

मनुष्य के अंतरंग का श्रृंगार है चातुर्य, वस्त्र तो केवल बाहरी सजावट है।
—गुरु रामदास

चापलूस

Flatterers are the worst kind of enemies. —**Tacitus**

चापलूस अत्यन्त निकृष्ट प्रकार के शत्रु हैं। —**टेसीटस**

मीठी बातें तो वह करता है जिसका कुछ स्वार्थ होता है, जो डरता है, जो प्रशंसा अथवा मान का भूखा रहता है। —**हरिऔध**

When flatterers meet, the devil goes out to dinner. —**Defoe**

जब चापलूस मिलते हैं तो दानव भोजन करने चला जाता है। —**डीफो**

आत्म-प्रेम चापलूसों में सबसे बड़ा चापलूस है। —**ला० रोशोको**

ऐसे आदमी पर कभी विश्वास न करो जो प्रशंसा के पुल बाँध दे।
—**अज्ञात**

चापलूसी

चापलूसी का जहरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझकर पी न जायें। —**प्रेमचन्द**

Imitation is the sincerest form of flattery. —**Colton**

अनुकरण करना सबसे बड़ी निष्कपट चापलूसी है। —**कोल्टन**

Don't be afraid of the enemies who attack you. Be afraid of the friends who flatter you. —**General Obregon**

जो शत्रु तुम पर आक्रमण करते हैं उनसे तुम मत डरो; उन मित्रों से डरो जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं। —**जनरल ओब्रगोन**

Flattery is telling the other man precisely what he thinks about himself.

चापलूसी दूसरे मनुष्य से ठीक वही कहाने का नाम है जो वह अपने आप को समझता है। —**अज्ञात**

Flattery sits in the parlour, when plain dealing is kicked out of door. —**Proverb**

जब निष्कपट व्यवहार को दरवाजे से बाहर ढकेल दिया जाता है तो चापलूसी बैंठक में आ बैठती है। —**कहावत**

Flattery is counterfeit, and like counterfeit money, it will eventually get you into trouble if you try to pass it.

—**Dale Carnegie**

चापलूसी एक नकली सिक्का है और नकली सिक्के की भाँति वह अन्ततः आपको कष्ट में डाल देगी यदि आप इसे चलाने का प्रयत्न करेंगे।

—**डेल कारनेगी**

The most skilful flattery is to let a person talk on and be a listener. —**Addition**

सबसे बड़ी चापलूसी यह है कि दूसरे व्यक्ति को बोलने दे और आप स्वयं सुनता रहे। —**एडीसन**

मुझे सिखाइए कि मैं न तो किसी की सस्ती प्रशंसा करूँ और न किसी से अपनी सस्ती प्रशंसा कराऊँ। —**कहावत**

Flattery is like friendship in show. —**Socrates**

चापलूसी दिखावटी मित्रता के समान है। —**सुकरात**

चिंतन

हम अपने बारे में जो दृढ़ चिन्तन करते हैं, जिन विचारों में संलग्न रहते हैं क्रमशः वैसे ही बनते जाते हैं। —**अज्ञात**

चिंता

चिन्ता शहद की मक्खी के समान है। इसे जितना हटाओ उतना ही और चिमटती है। —**सुदर्शन**

चिन्ता से रूप, बल और ज्ञान का नाश हो जाता है। —**अज्ञात**

मेरा विश्वास है कि चिन्ता जीवन का शत्रु है। —**शेक्सपियर**

वासनाओं का त्याग करो, चिन्ताएँ स्वयं पीछा छोड़ देंगी। —**अज्ञात**

Businessmen who do not know how to fight worry die young.
—**Dr. Alexis Carrel**

व्यवसायी पुरुष जिनको यह ज्ञान नहीं कि चिन्ता से कैसे दूर रहना चाहिए, शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होते हैं। —**डा० केरेल**

त्याज्या भविष्यतश्चिन्ता नैव सा कार्यसाधिका।
क्रियते चेत् तदा कार्या, चारित्रस्य समुन्नतेः॥

भविष्य की चिन्ता छोड़ देनी चाहिए, उससे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। यदि चिन्ता की ही जाय तो चरित्र की उन्नति की करनी चाहिए। —**अज्ञात**

प्राणियों के लिए चिन्ता ही ज्वर है। —**स्वामी शंकराचार्य**

यदि तुम्हारा स्वभाव है तो चिन्ता करके कष्टों का आह्वान कर लो परन्तु उसे अपने पड़ोसी को उधार मत दो। —**रुडार्ड किप्लिंग**

चिन्ता चंगुल ही पर्‌यो, तो न चिता को संक।
यह सोखै बूंदन जियत, मुये जात वा अंक॥ —**श्रीपति**

चिंताग्रस्त

आलसी आदमी ही चिन्ताग्रस्त रहा करता है। वह आलस्य चाहे शारीरिक कष्ट से बचने के लिए हो या मानसिक। —**अज्ञात**

जो लोग अधिक सोचने-विचारने के आदी होते हैं वे चिन्तित भी अधिक रहते हैं। —**अज्ञात**

चिकित्सा

समुद्र इव गम्भीरं नैव शक्यं चिकित्सितम्।
वक्तुं निर्विशेषेण श्लोकानामयुतैरपि— —**सुश्रुत संहिता**

चिकित्सा-विज्ञान असीमित, अगाध जलधि सदृश है, तथा उसका विवरण हजारों श्लोकों में भी नहीं किया जा सकता।

चिकित्सक (दे० 'डाक्टर')

The greatest mistake physicians make is that they attempt to cure the body without attempting to cure the mind, yet the mind and the body are one and should not be treated separately.

—**Plato**

चिकित्सकों की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि वे बिना मन को आरोग्य किये शरीर को अच्छा करने का प्रयत्न करते हैं, जब कि मन और शरीर एक ही है इसलिए उनकी पृथक्-पृथक चिकित्सा नहीं होनी चाहिए। **—प्लेटो**

A good surgeon must have an eagle's eyes, a lion's heart and a lady's hand.

एक निपुण शल्य-चिकित्सक (सर्जन) के पास गिद्ध की आँख, शेर का हृदय और नारी जैसा (कोमल) हाथ होना चाहिए। **—कहावत**

संयम और परिश्रम मनुष्य के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं। परिश्रम से भूख तेज होती है और संयम अतिभोग से रोकता है। **—रूसो**

चितवन

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार।। **—बिहारी**

अनियारे दीरघ नयनि, किती न तरुनि जहान।
वह चितवन औरै कछू, जेहि बस होत सुजान।। **—बिहारी**

मैदान में तोपों की गर्जना जिन वीरों के दिल को दहला नहीं सकती और तलवारों की चमक आंखों में चकाचौंध नहीं ला सकती, वे ही वीर स्त्री की चितवन के तीर खाकर अपने हथियार डाल देते हैं और शरणागत होने के लिए सफेद झंडा उठा लेते हैं। **—अज्ञात**

चित्र

A picture is a poem without words. **—Horace**

चित्र एक शब्दरहित कविता है। **—होरेस**

A room hung with pictures is a room hung with thoughts.

—Sir Joshia Reynolds

जिस कमरे में बहुत-सी तस्वीरें लटक रही हैं, वह ऐसा कमरा है जिसमें बहुत से विचार लटक रहे हैं। **—सर जोशिया रेनाल्डस**

चित्र कविता के आभूषण नहीं, कल्पना के हृदय से चलनेवाली रक्तधारा के बिन्दु हैं। **—रामधारी सिंह 'दिनकर'**

चित्रकारी

Painting is silent poetry and poetry is a speaking picture.

—Simonides

चित्रकारी मूक-कविता है और कविता बोलती हुई तस्वीर। **—सिमनडीज**

चुगलख़ोर

नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना निःसन्देह बुरा है, मगर सामने हँसकर बोलना और पीठ-पीछे चुगलखोरी करना उससे भी बुरा है।

—संत तिरुवल्लुवर

गुणिनां गुणेषु सत्स्वपि पिशुनजनो दोषमात्रमादत्ते।
पुष्पे फले विरागी क्रमेलकः कण्टकौघमिव॥ **—अज्ञात**

जैसे ऊँट को किसी वृक्ष के फूल फल से अनुराग नहीं होता, उसे काँटों का ढेर ही अभीष्ट होता है, वैसे ही गुणियों में अनेकानेक गुणों के वर्तमान रहने पर भी चुगलखोर उनमें दोष ही ढूँढ़ता है और ग्रहण करता है।

चुगलखोर कुत्ते के समान हैं, क्योंकि दोनों ही अपनी जीभ से सत्पात्र (शुद्ध पात्र या सज्जन मनुष्य) को दूषित करते हैं, कलह करने में पक्के होते हैं और दोनों ही सदा अशुद्ध रहते हैं। **—अज्ञात**

चुगली

पैशुन्याद्भिद्यते स्नेहः **—पञ्चतन्त्र**

चुगली से स्नेह नष्ट हो जाता है।

चुनना

God offers to every mind its choice between truth and repose. —**Emerson**

ईश्वर प्रत्येक मस्तिष्क को सच और झूठ में एक को चुनने का अवसर देता है। —**एमर्सन**

चुनाव

चुनाव युद्ध नहीं, तीर्थ है, पर्व है—यह पानीपत नहीं, कुरुक्षेत्र नहीं, यह प्रयाग है—त्रिवेणी है, संगम है, सिंहस्थ है, कुम्भ है। —**हरिभाऊ उपाध्याय**

चुनाव जनता को राजनीतिक शिक्षा देने का विश्वविद्यालय है। —**जवाहरलाल नेहरू**

चुम्बन

God kisses the finite in his love, and man the infinite. —**R. N. Tagore**

ईश्वर अपने प्रेम में सीमित को चूमता है और मनुष्य अनंत को। —**रवीन्द्र**

A kiss from my mother made me a painter. —**Benjamin West**

मेरी माँ के चुम्बन ने मुझे चित्रकार बना दिया। —**बेंजमिन वेस्ट**

चूल्हा

चूल्हा गृहस्थ आश्रम का प्रतीक है, आत्मीयता की दीक्षा है, कुटुम्ब-परम्परा का संरक्षण है। —**काका कालेलकर**

चेतना

चेतना अंतर्मुखी होते ही सचमुच दैवी शक्ति हो जाती है। —**अमृत लाल नागर (अमृत और विष)**

चेतावनी

धन जौबन यों जायगो, जा विधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भजि, क्यों चाटै जग धूर॥

—नारायण स्वामी

कबीर यह तन जात है, सकै तो राख बहोर।
खाली हाथ वे गये, जिनके लाख करोर॥ —कबीर

बहुत गई थोरी रही, नारायण अब चेत।
काल चिरैया चुग रही, निसि दिन आयू खेत॥

—नारायण स्वामी

कबीर यह तनु जात है, सकै तो ठौर लगाय।
कै सेवा कर साधु की, कै हरि के गुण गाय॥ —कबीर

नारायण संसार में, भूपति भये अनेक।
मैं मेरी करते रहे, लै न गए तृन एक॥

—नारायण स्वामी

नारायण जिन के भवन विधि सम भोग विलास।
अंत समय सब छाँड़ि के, भए काल के ग्रास॥

—नारायण स्वामी

चेहरा

A good face is the best letter of recommendation.

—Queen Elizabeth

सुन्दर चेहरा सबसे अच्छा प्रशंसापत्र है। **—रानी एलिजाबेथ**

हँसमुख चेहरा रोगी के लिए लगभग उतना ही अच्छा है जितनी कि स्वस्थ ऋतु। **—फ्रेंकलिन**

All men's faces are true, whatsoever their hands are.

—Shakespeare

सभी मनुष्यों के चेहरे वास्तविक होते हैं, उनके हाथ चाहे जैसे भी हों।

—शेक्सपियर

चेहरा मस्तिष्क और हृदय—दोनों का प्रतिबिम्ब है। **—कहावत**

चोट

जिसने तुम्हें चोट पहुँचायी है वह तुमसे प्रबल था या निर्बल ? यदि तुमसे निर्बल है तो उसे क्षमा कर दो, यदि प्रबल है तो अपने को कष्ट न दो। **—सेनेका**

चोर

केवलादो भवति—केवलादी। **—ऋगवेद १०।११७।६**

जो अकेला खाता है वह चोर है।

चोर अपराधी बनकर छूट जाने से निर्दोष बनकर दंड भोगना बेहतर समझता है। **—प्रेमचन्द**

चोरहिं चाँदनी रात न भावा। **—तुलसी (मानस)**

चोर केवल दंड से ही नहीं बचना चाहता, वह अपमान से भी बचना चाहता है। वह दंड से उतना नहीं डरता जितना अपमान से। **—प्रेमचन्द**

लुब्धानां याचकः शत्रुर्मूर्खाणां बोधको रिपुः।
जारस्त्रीणां पतिः शत्रुश्चौराणां चन्द्रमा रिपुः॥ **—अज्ञात**

लोभियों का बैरी भिक्षुक है, मूर्खों का शत्रु समझाने वाला है, व्यभिचारिणी स्त्रियों का शत्रु पति और चोरों का शत्रु चन्द्रमा है।

चोरी

गोपिकाओं के इससे बढ़कर और क्या सुकर्म होगे कि कृष्ण ने उनका मक्खन चुराया। धन्य है वह जिसका सब कुछ चुराया जाय, मन और चित्त तक बाकी न रहे। **—स्वामी रामतीर्थ**

चोरी का माल खाने से छात्र शूरवीर नहीं बनते, दीन बनते हैं।

—महात्मा गांधी

चोरी का धन कच्चे पारे को खाने के समान है। जैसे कच्चा पारा शरीर में से फूट निकलता है वैसे ही चोरी का धन है। **—महात्मा गांधी**

छल

The first and worst of all frauds is to cheat ourselves.

—Bailey

सभी छलों में अपने साथ किया हुआ छल प्रथम और निकृष्ट होता है।

—बेली

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यम् न तत्यच्छलमभ्युपैति ।।

—व्यास

जिस सभा में वृद्ध न हों वह सभा नहीं, जो वृद्ध धर्म न कहें वह वृद्ध नहीं, जिस धर्म में सत्य न हो वह धर्म नहीं और जिस सत्य में छल हो वह सत्य नहीं ।

स्पष्ट कहने वाला छली नहीं होता । **—चाणक्य**

छाया

Shadow, with her veil drawn, follows light in secret meekness, with her silent steps of love. **—R. N. Tagore**

छाया घूंघट डालकर प्रेम की मौन गति से, विनीत भाव से प्रकाश का अनुसरण करती है । **—रवीन्द्र**

What you are you do not see, what you see is your shadow.

—R. N. Tagore

तुम अपने आप को नहीं देख सकते, जो तुम देख रहे हो वह तुम्हारी छाया है । **—रवीन्द्र**

छायावाद

कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुन्दरी के वाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया ।

—जयशंकर प्रसाद

छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है जो मूर्त्त और अमूर्त्त विश्व को मिला कर पूर्णता पाता है । **—महादेवी वर्मा**

पौराणिक रूपकों का छायाओं से परे जो सत्य है वही हम रहस्यवादी या छायावादियों का लक्ष्य है । इन छायाओं के आधार से सत्य को प्राप्त करने वाले लोग छायावादी कहे जा सकते हैं, पर छाया उनका वाद नहीं—उनका वाद सत्य है, अतः वह सत्यवादी हैं । **—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'**

छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय-प्रतीक-विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की निवृत्ति 'छायावाद' की विशेषताएँ हैं।

—जयशंकर प्रसाद

छिद्रान्वेषण

दुर्बल-जन तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक छिद्रान्वेषण किया करते हैं। **—स्वामी रामतीर्थ**

दूसरों में दोष न निकालना, दूसरों को इतना उन दोषों से नहीं बचाता जितना अपने को बचाता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

जंजीर

जंजीरें जंजीरें ही हैं, चाहे वे लोहे की हों या सोने की, वे समान रूप से तुम्हें गुलाम बनाती हैं। **—स्वामी रामतीर्थ**

जगत्

सृष्टि की रचना करके ईश्वर स्वयं अपने को ही प्रकट करता है। **—रवीन्द्र**

जगत् के बिना ईश्वर ईश्वर नहीं है, सृष्टि नहीं तो ईश्वर नहीं। **—हेगेल**

अज्ञस्य दुःखौघमयं ज्ञस्यानन्दमयं जगत्।
अन्धं भुवनयन्धस्य प्रकाशंतु सुचक्षुषाम्॥ **—वराहोपनिषद्**

जैसे अन्धे के लिए जगत् अन्धकारमय है और अच्छी आँखों वाले के लिए प्रकाशमय है वैसे ही अज्ञानी के लिए जगत् दुःखों का समूहमय है और ज्ञानी के लिए आनन्दमय है।

जगत् का प्रतीयमान रूप मायाजनित है इसलिए असत्य है। जगत् का वास्तविक रूप ब्रह्म है, इसलिए सत्य है। **—सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)**

'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।'
ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है। **—उपनिषद्**

जगत कर्म का क्षेत्र है। यहाँ कर्म की खेती होती है। जो जैसा बोता है वैसा पाता है। यहाँ हर्ष भी मिलता है और विषाद भी। इस कर्मक्षेत्र में कहीं शान्ति है, कहीं युद्ध है, कहीं जीवन है, कहीं मृत्यु। **—दीनानाथ दिनेश (गीता-ज्ञान)**

जगद्‌गुरु

जगदगुरु कौन होता है ? जो सब में बिना किसी भेदभाव के अपने सद्‌भाव चिद्‌भाव और आनन्द भाव का प्रकाश करे। उसके लिए सब अपने हैं। सब कुछ अपना स्वरूप है। **—स्वामी अखण्डानन्द (ओम नमो भगवते वासुदेवाय)**

भगवान श्रीकृष्ण जगद्‌गुरु हैं। गुरु माने माता-पिता, शिक्षक, स्वामी एवं सद्‌गुरु। वे ही माता-पिता के समान सत् तत्व में आकृतियों का निर्माण करते हैं। शिक्षक के समान विशेष ज्ञान देते हैं, स्वामी के समान नियन्ता हैं, पति के समान आनन्ददाता हैं और सद्‌गुरु के समान द्वैतभ्रम को मिटाने वाले हैं। श्रीकृष्ण यथार्थ जगद्‌गुरु हैं। **—स्वामी अखण्डानन्द**

जड़ता

जड़ता निर्दयता की जननी है। **—रस्किन**

जन-सेवा

जन-सेवा, सेवा है प्रभु की,
यही पुण्य है, यही धर्म है।
जिसने यह समझा, वह समझा,
मानवता का सही मर्म है॥

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

जनता

जनता कल्प-वृक्ष है, जो भावना आप लेकर जायेंगे, वही आप उससे पायगे। **—विनोबा**

The crowd loves the strong man, the crowd is like a woman. **—Mussolini**

जनता बलवान् मनुष्य से प्रेम करती है, वह स्त्री की तरह होती है। **—मुसोलिनी**

सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा ही एक बड़ा राष्ट्रीय पाप है। **—स्वामी विवेकानन्द**

Individuals are occasionally guided by reason, crowds never.

—Dean W. R. Inge

व्यक्ति प्रायः बुद्धि से मार्ग-दर्शन करते हैं, जनता कभी नहीं।

—डीन डब्लू० आर० इन्ज

'जबान खल्क नक्कारा खुदा' **—कहावत**

जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है ।

राजमहलों की चालबाजियाँ, सभा-भवनों की राजनीति, समझौते और लेन-देन का जमाना उसी दिन खत्म हो जाता है जब जनता राजनीति में प्रवेश करती है। **—जवाहरलाल नेहरू**

जनता और कुछ नहीं कर सकती, हमदर्दी तो करती है। दुःख-कथा सुनकर, आँसू तो बहाती है। **—प्रेमचन्द**

जनता जो कुछ सीखती है वह घटना-क्रम की पाठशाला में सीखती है, और दुःख-दर्द ही उसका शिक्षक है। **—जवाहरलाल नेहरू**

जनता तो धरती माता की तरह है जिस पर कुदाली से घाव होता है लेकिन गेंद का स्पर्श यों ही ऊपर के ऊपर उड़ जाता है। **—विनोबा**

बड़े-बड़े आन्दोलनों से, जो व्यक्तियों और श्रेणियों के असली रूप को प्रकट कर देते हैं, जनता राजनीति का पाठ पढ़ती है। **—जवाहरलाल नेहरू**

मैं जनता जनार्दन को ही अपना ईश्वर मानता हूं। **—विनोबा**

जननी

कोमलता में जिसका हृदय गुलाब की कलियों से भी अधिक कोमल, दयामय है, पवित्रता में जो यज्ञ की धूम के समान है, कर्तव्य में वज्र की तरह कठोर है—वही विश्व जननी है। **—अज्ञात**

The mother's heart is the child's school room .

—H. W. Beecher

जननी का हृदय बच्चे की पाठशाला है। **—एच० डब्लू० बीचर**

A mother is mother still,
The holiest thing alive. **—Coleridge**

जननी जननी ही है, जीवित वस्तुओं में जो सबसे अधिक पवित्र है।
—कोलरिज

The future destiny of the child is always the work of the mother. **—Napoleon**

बालक का भाग्य सदैव उसकी माँ द्वारा निर्मित होता है। **—नेपोलियन**

जय

विहातुमुद्यताः सदा परार्थमात्मनो हितम्।
अद्याभिमान वर्जिता जयन्ति ते जना भुवि ॥ **—अज्ञात**

दूसरों के निमित्त अपने हित को छोड़ने के लिए सदा उद्यत होते हुए भी जो स्वयं अभिमान से रहित होते हैं संसार में उन्हीं की जय होती है।

Victory comes to those who dare and act. It seldom goes to the timid. **—Jawahar Lal Nehru**

जय उसी की होती है जो अपने को संकट में डालकर कार्य सम्पन्न करते हैं जय कायरों की कभी नहीं होती। **—पं० जवाहरलाल नेहरू**

विराग मूर्त्तयोऽपि ये, स्वदेश-राग-शोभिताः।
अरण्यवास निःस्पृहा, जयन्ति ते जना भुवि ॥ **—अज्ञात**

स्वयं वैराग्य की मूर्ति होते हुए भी जो स्वदेश के प्रेम से शोभित हैं और अपने कर्तव्य से भागकर वनवास के लिए उत्सुक नहीं हैं, संसार में उन्हीं की जय होती है।

The smile of God is victory. **—Whittier**

जय ईश्वर की मुस्कान है। **—व्हिटटियर**

अक्रोधेन जयेत्क्रुद्धमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन जयेत्सत्येन चानृतम् ॥
—वेदव्यास (महाभारत)

क्रोध न करके क्रोध को, भलाई करके बुराई को, दान करके कृपण को और सत्य बोलकर असत्य को जीतना चाहिए।

A mother is mother still,
The holiest thing alive. **—Coleridge**

जननी जननी ही है, जीवित वस्तुओं में जो सबसे अधिक पवित्र है। **—कोलरिज**

The future destiny of the child is always the work of the mother. **—Napoleon**

बालक का भाग्य सदैव उसकी माँ द्वारा निर्मित होता है। **—नेपोलियन**

जय

विहातुमुद्यताः सदा परार्थमात्मनो हितम्।
अद्याभिमान वर्जिता जयन्ति ते जना भुवि॥ **—अज्ञात**

दूसरों के निमित्त अपने हित को छोड़ने के लिए सदा उद्यत होते हुए भी जो स्वयं अभिमान से रहित होते हैं संसार में उन्हीं की जय होती है।

Victory comes to those who dare and act. It seldom goes to the timid. **—Jawahar Lal Nehru**

जय उसी की होती है जो अपने को संकट में डालकर कार्य सम्पन्न करते हैं जय कायरों की कभी नहीं होती। **—पं० जवाहरलाल नेहरू**

विराग मूर्त्तयोऽपि ये, स्वदेश-राग-शोभिताः।
अरण्यवास निःस्पृहा, जयन्ति ते जना भुवि॥ **—अज्ञात**

स्वयं वैराग्य की मूर्ति होते हुए भी जो स्वदेश के प्रेम से शोभित हैं और अपने कर्तव्य से भागकर वनवास के लिए उत्सुक नहीं हैं, संसार में उन्हीं की जय होती है।

The smile of God is victory. **—Whittier**

जय ईश्वर की मुस्कान है। **—व्हिटटियर**

अक्रोधेन जयेत्क्रुद्धमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन जयेत्सत्येन चानृतम्॥
—वेदव्यास (महाभारत)

क्रोध न करके क्रोध को, भलाई करके बुराई को, दान करके कृपण को और सत्य बोलकर असत्य को जीतना चाहिए।

जल

अमृतं वै आपः —तै०आ०

जल स्वयं अमृत है।

जल ही औषधि है, जल रोगों का शत्रु है, यही सब रोगों का नाश करता है। इसलिए यह तुम्हारा भी रोग दूर करे। —ऋग्वेद

इमा आपः सर्वेषां भूतानां मधुः

—वृह० २–५–२

जल सब प्राणियों के लिये मधुरूप है।

The water saw its master's face and flushed. **—Byron**

जल ने अपने नियन्ता की ओर दृष्टिपात किया और वह पानी-पानी हो गया। **—बायरन**

जल अत्यन्त आरोग्यप्रद एवं बलदायक है। **—ऋग्वेद**

अप्स्वन्तरममृतमप्सु भेषजम्। **—अथर्ववेद**

जल में अमृत है, जल में औषधियाँ हैं।

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि भोजनांते विषप्रदम्॥ **—चाणक्य**

अजीर्ण होने पर जल औषधि है, पच जाने पर जल बल देता है। भोजन के समय जल अमृत के समान है, और भोजन के अन्त में विष का फल देता है।

जवानी (दे० 'यौवन')

It is a truth but too well-known that rashness attends youth, as prudence does old age. **—Cicero**

यह सत्य है और अति प्रसिद्ध है कि जैसे बुढ़ापे में बुद्धिमत्ता होती है वैसे ही जवानी में अविवेकिता होती है। **—सिसरो**

In the lexicon of youth, which fate reserves for a bright manhood, there is no such word as—fail. **—Lytton**

जवानी के कोष में जिसको भाग्य उज्ज्वल पराक्रम के लिए सुरक्षित रखता है, असफलता का शब्द नहीं है। **—लिटन**

Youth is the season of hope, enterprise and energy to a nation as well as an individual. **—W. R. Williams**

राष्ट्र और व्यक्ति के लिए जवानी आशा, साहस एवं शक्ति का काल है।
—डब्ल्यू० आर० विलियम्स

जवानी जोश है, बल है, साहस है, दया है, आत्मविश्वास है, गौरव है और वह सब कुछ है जो जीवन को पवित्र, उज्ज्वल और पूर्ण बना देता है। **—प्रेमचन्द**

जवानी हिम्मत और साहस का घर है। **—अज्ञात**

नदी की बाढ़ें, वृक्षों के फूल और चन्द्रमा की कलाएँ नष्ट होकर फिर से आती हैं मगर देहधारियों की जवानी नहीं। **—अज्ञात**

रहती है कब, बहारे जवानी तमाम उम्र।
मानिन्द बूये गुल, इधर आई उधर गई॥ **—अज्ञात**

सदा न फूलै तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न यौवन थिर रहे, सदा न जीवे कोय॥ **—अज्ञात**

यौवनं जीवितं चित्तं, छाया लक्ष्मीश्च स्वामिता।
चञ्चलानि षडेतानि, ज्ञात्वा धर्मरतो भवेत्॥ **—अज्ञात**

यौवन, जीवन, मन, शरीर की छाया, धन और स्वामिता—ये छहों चञ्चल हैं, यानी ये स्थिर होकर नहीं रहते।

मा कुरु धन-जन-यौवनगर्वं, हरति निमेषात् कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा, ब्रह्मपदं प्रविशांशु विदित्वा॥ **—अज्ञात**

इस धन-यौवन का गर्व न कर, काल इसको पलक मारते हर लेता है। इस मायामय संसार को त्यागकर, शीघ्र ही ब्रह्मपद में प्रविष्ट हो।

जागरण

जागरण का अर्थ है कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होना और कर्मक्षेत्र क्या है? जीवन संग्राम। **—जयशंकर प्रसाद**

Early to bed and early to rise,
Makes a man healthy, wealthy and wise. **—Franklin**

जल्दी सोनेवाला और प्रातःकाल जल्द उठने वाला मनुष्य आरोग्यवान्, भाग्यवान् और ज्ञानवान् होता है। **—फ्रैंकलिन**

जाति

जन्म से नहीं बल्कि कर्म से ही मनुष्य शूद्र या ब्राह्मण होता है ।

—भगवान बुद्ध

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।

मैंने गुण और कर्म के अनुसार ही जाति संस्था की स्थापना की है ।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

कभी किसी महात्मा से यह न पूछो कि तुम्हारी जाति क्या है, क्योंकि भगवान् के दरबार में जाति का बन्धन नहीं रह जाता । **—कबीर**

जो जाति जब तक मरना जानती रहेगी, उसको तभी तक इस पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा । **—जयशंकर प्रसाद**

चारों वर्ण परमात्मा के ही शरीर से उत्पन्न हुए हैं । मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई है ।

जातिवाद आत्मा और राष्ट्र दोनों के विकास के लिये नुकसानदेह है ।

—महात्मा गाँधी

जाति-भेद

वर्ण-वर्ण में छिड़ा द्वन्द्व है ।
जाति जाति से जूझ रही है ।।
स्वार्थ किए है व्यग्र सभी को ।
सुमति-सुमति कब सूझ रही है ?

—सोहनलाल द्विवेदी (युगाचार)

भारत मस्तक का कलंक यह,
जाति पांतियों, में जन खंडित,
जहाँ मनुज अस्पृश्य चरण-रज,
राष्ट्र रहे वह कैसे जीवित ।

—सुमित्रानन्दन पंत (लोकायतन)

सम्पूर्ण विश्व में केवल एक ही जाति है—मानव जाति । एक ही भाषा है—प्रेम की भाषा । एक ही परमात्मा है जो सर्वव्यापी है । **—सत्य साईंबाबा**

रूढ़ि नहीं है, रीति नहीं है,
जाति - वर्ण केवल भ्रम।
जन जन में है जीव जीव,
जीवन में सब जन हैं सम। **—सुमित्रा नन्दन पन्त**

जाति से कोई पतित नहीं है। पपित वह है जो चोरी, व्यभिचार, ब्रह्महत्या, भ्रूण-हत्या, सुरापान इत्यादि दुष्ट कृत्यों को करता है और उनको गुप्त रखने के लिए बार-बार असत्य भाषण करता है। **—वेद**

वर्तमान काल में जाति-प्रथा जिस रूप में प्रचलित है उसका एकान्त रूप से विनाश करना ही होगा। यदि भारतीय जनता को नवीन जीवन प्राप्त करना है तो उसे वर्ण-भेद के वर्तमान स्वरूप को मिटा देना होगा, क्योंकि वह उन्नति के सभी विभागों में भयंकर रूप से बाधा समुपस्थित कर रहा है। **—डाक्टर भगवानदास**

हमारी जाति-प्रथा मनुष्यों का सर्वश्रेष्ठ श्रेणी विभाग है। क्योंकि हर एक जाति में शास्त्र नारायण का अंश बतलाया है। जाति की निन्दा भी कहीं नहीं की गयी। जाति निन्दनीय नहीं। **—निराला**

जब कोई जाति अपने स्वरूप को भूलती है, तब उसका अधः पतन हो जाता है। **—पं० कमलापति त्रिपाठी**

जाति-धर्म

जाति-धर्म उन धर्मों को कहते हैं जो किसी समाज के अंग होकर रहने में सहायता, सुमति और लोक-संग्रह की बुद्धि देते हैं। **—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

जाति-धर्म से परस्पर प्रेम, मेल-जोल, संगठन और सद्-व्यवहार बना रहता है। सुख दुःख के समय एक-दूसरे के काम आने की सद्वृत्ति जागी रहती है।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

जाति-सेवा

जाति-सेवा ऊसर की खेती है, वहाँ बड़े से बड़ा उपहार जो मिल सकता है, वह है गौरव और यश; पर वह भी स्थायी नहीं, इतना अस्थिर कि एक क्षण में जीवन भर की कमाई पर पानी फिर जाय। **—प्रेमचन्द**

जाति-सेवा वही कर सकते हैं जिनके हृदय में भ्रातृ-भाव की भावना भरी है।

—अज्ञात

जाति-सेवा में शरीर को घुलाना पड़ता है, रक्त को जलाना पड़ता है। यही जाति-सेवा का उपहार है। **—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)**

जितेन्द्रिय

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानम् लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥

श्रद्धावान्, ज्ञान की प्राप्ति में तत्पर, जितेन्द्रिय पुरुष ज्ञान को पाता है और ज्ञान को पाकर थोड़े ही काल में परम शान्ति पाता है।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता ४।३९)

मनुष्य और सब इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने पर भी तब तक जितेन्द्रिय नहीं हो सकता जब तक रसनेन्द्रिय को अपने वश में नहीं कर लेता और यदि रसनेन्द्रिय को वश में कर लिया तब तो मानो सभी इन्द्रियाँ वश में हो गयीं। **—श्रीमद्भागवत (११।८।२१)**

जिन्दगी

जिन्दगी एक कसौटी है, ईश्वर उस पर हमें कस लेता है। नेक काम करके हम कसौटी पर खरे उतरते हैं तो भगवान् की सच्ची भक्ति करते हैं। **—विनोबा**

जिन्दगी हमारे साथ किया गया एक मजाक है। **—रूसो**

चूम कर मृत को जिलाती जिन्दगी।
फूल मरघट में खिलाती जिन्दगी।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

न समझने की ये बातें हैं, न समझाने की।
जिन्दगी उचटी हुई नींद है दीवाने की ॥

—फिराक गोरखपुरी

जिन्दगी इन्सां की है मानिन्दे मुर्गे खुशनवा।
शाख पर बैठा कोई दम चहचहाया, उड़ गया ॥

—डाक्टर मुहम्मद 'इकबाल'

जिन्दगी और मौत

जिन्दगी क्या है, अनासिर में जहूरे तरतीब,
मौत क्या है, इन्हीं अजजा का परेशां होना ।।
फना का होश आना जिन्दगी का दर्द सरजाना,
अजल क्या है खमारे बादए हस्ती उतर जाना ।"

—पं० बृजनारायण चकबस्त

जिन्दगी का मौत से उसी प्रकार का संबंध है जिस प्रकार जन्म से । गति के लिए पैर उठाना उतना ही आवश्यक है जितना पैर रखना । **—रवीन्द्र**

मरण सोने के समान है और जन्म सोकर उठने के समान ।

—संत तिरुवल्लुवर

जिज्ञासा

जिज्ञासा बिना ज्ञान नहीं होता । दुःख बिना सुख नहीं होता । धर्म संकट हृदय मन्थन सब जिज्ञासुओं को एक बार होता ही है । **—महात्मा गांधी**

Curiosity is one of the permanent and certain characteristic of a vigorous intellect. **—Samuel Johnson**

जिज्ञासा तीव्र बुद्धि का एक स्थायी और निश्चित गुण है । **—सेमुअल जान्सन**

Curiosity is one of the forms of faminine bravery.

—Victor Hugo

जिज्ञासा जनानी बहादुरी का ही एक रूप है । **—विक्टर ह्यूगो**

The first and simplest emotion which we discover in the human mind is curiosity. **—Burke**

प्रथम और सरलतम भावना जो हम मनुष्य के मस्तिष्क में पाते हैं वह जिज्ञासा की है । **—बर्क**

अज्ञानता और जड़ता से ग्रस्त व्यक्ति ही जिज्ञासा से शून्य होता है ।

—पं० रामकिंकर उपाध्याय (मानस मुक्तावली भाग ३)

दार्शनिक जिज्ञासाएं बहुधा व्यक्ति को विवाद में उलझा देती हैं ।

—पं०राम किंकर उपाध्याय (मानस मुक्तावली-भाग ३)

जिज्ञासु

जिन ढूंढां तिन पाइयां गहरे पानी पैठ ।
मैं बपुरा बूड़न डरा रहा किनारे बैठ ।। —कबीर

The over curious are not over wise. —**Messinger**

बहुत जिज्ञासु बहुत विद्वान् नहीं होते । —**मैसिजर**

जिम्मेदारी

जिन्दगी की जिम्मेदारी कोई डरावनी चीज नहीं है । वह आनन्द से ओत-प्रोत है । —**विनोबा**

मनुष्य को जिम्मेदारी के पद पर नियुक्त कर दो वह परिस्थिति के अनुसार उन्नति करेगा । —**अज्ञात**

जिह्वा

खट्टा मीठा चरपरा जिह्वा सब रस लेय ।
चोरों कुतिया मिल गई पहरा किसका देय ।। —**कबीर**

A wound from a tongue is worse than a wound from a sword; for the latter affects only the body; the former the spirit. —**Pythogorus**

जिह्वा का घाव तलवार के घाव से अधिक बुरा होता है क्योंकि तलवार शरीर पर आघात करती है और जिह्वा आत्मा पर । —**पाइथागोरस**

No sword bites so fiercely as an evil tongue. —**P. Sidney**

कोई तलवार इतना भयानक घाव नहीं करती जितना कि एक बुरी जिह्वा । —**पी० सिडनी**

ईश्वर ने हमें दो कान दिये हैं और दो आँखें, पर जिह्वा केवल एक ही—इस लिए कि हम बहुत अधिक सुनें और बहुत अधिक देखें; लेकिन बोलें कम—बहुत कम । —**सुकरात**

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गई सरग पताल ।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ।। —**रहीम**

The tongue is only three inches long but it can kill a man six feet high. **—Japanese Proverb**

जिह्वा केवल तीन इंच लम्बी होती है परन्तु वह छै फुट उँचे आदमी को कत्ल कर सकती है। **—जापानी कहावत**

हे जिह्वे ! मैं तुझी से एक भिक्षा माँगता हूँ, तू ही मुझे दे। वह यह कि जब गदापाणि यमराज इस शरीर का अंत करने आवें तो बड़े ही प्रेम से गद्गद् स्वर में 'हे गोविन्द, हे माधव, हे दामोदर' इन मंजुल नामों का उच्चारण करती रहना। **—बिल्वमंगल**

जिह्वा कैंची-सी कतरती है। **—कहावत**

पित्तेन दूने रसने सितापि तिक्तायते।

—श्रीहर्ष (नैषधीयचरित)

पित्त के कारण जिह्वा के दूषित हो जाने पर मिश्री भी कड़वी लगती है।

जीना

जीविते यस्य जीवन्ति विप्रा मित्राणि बांधवा:।
सफलं जीवितं तस्य, आत्मार्थे को न जीवति ॥ **—हितोपदेश**

जिसके जीवित रहने से विद्वान्, मित्र और बन्धु बांधव जीते हैं, उसी का जीना सार्थक है, अपने लिए कौन नहीं जीता।

मुहूर्तमपि जीवेच्च नर: शुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि कष्टेन लोकद्वयविरोधिना ॥ **—चाणक्य**

उत्तम कर्म से मनुष्य दो पल भी जीवित रहे यह श्रेष्ठ है पर दोनों लोक का विरोधी दुष्ट कर्म करनेवाले का कल्प भर जीना भी अच्छा नहीं।

जीव

ईश्वर अंश जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो माया बस भयउ गोसाईं। बँधेउ कीट मरकट की नाईं ॥

—तुलसी (मानस, उत्तर)

माया वस्य जीव अभिमानी। **तुलसी (मानस, उत्तर)**

स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते ।
स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते ॥ **—चाणक्य**

जीव आप ही कर्म करता है, और उसका फल भी आप ही भोगता है, आप ही संसार में भ्रमता है और आप ही उससे मुक्त भी होता है ।

ईश अधीन जीव गति जानी । **—तुलसी (मानस)**

जैसे बर्फ का टुकड़ा पानी में डाल देने से वह स्वयं गलकर पानी के रूप में एक ही हो जाता है, ऐसे ही अभेद उपासना करनेवाला जीव ब्रह्म साक्षात्कार होने पर ब्रह्म स्वरूप ही हो जाता है । **—स्वामी भजनानन्द**

माया ईस न आपु कहँ जान कहिय सो जीव । **—तुलसी**

जीव ब्रह्म ही है, ब्रह्म से पृथक् नहीं है । **—उपनिषद्**

यह लोहा रूपी जीव माया रूपी चुम्बक के असर से मारा-मारा घूमता है । पर जब भगवान् रूपी पारस के असर से सोना बन जाता है तब माया रूपी चुम्बक उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

—स्वामी भजनानन्द (परमार्थ मणि माला)

भूमि परत भा ढाबर पानी ।
जनु जीवहिं माया लिपटानी ॥

—तुलसी (मानस० कि० १४।६)

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः

—भगवान कृष्ण (गीता—१५।७)

जीवलोक में यह जीवात्मा मेरा ही सनातन अंश है ।

जीवन (दे० 'जिन्दगी')

That I exist is a perpetual surprise which is life.

—R. N. Tagore

मेरा अस्तित्व एक निरंतर आश्चर्य है, और यही जीवन है । **—रवीन्द्र**

जीवन इस शरीर रूपी पिंजड़े में बन्द पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट मात्र है ।

—स्वामी रामतीर्थ

No man enjoys the true taste of life, but he who is ready and willing to quit it. **—Seneca**

कोई भी व्यक्ति जब तक कि वह प्रसन्नता से मरने को तैयार नहीं रहता—जीवन का सच्चा आनन्द नहीं ले सकता। **—सेनेका**

मनुष्य का जीवन इसलिए है कि वह अत्याचार के खिलाफ लड़े।

—सुभाषचन्द्र बोस

A life spent worthily should be measured be a nobler line, be deeds not years. **—Sheridan**

योग्यता से व्यतीत हुए जीवन को हमें वर्ष के नहीं अपितु कर्म के अच्छे पैमाने से नापना चाहिए। **—शेराडन**

हमारा सदा यही लक्ष्य रहता है कि हमारा जीवन सुख-आनन्द से परिपूर्ण हो। **—स्वेट मार्डेन**

अच्छा जीवन, ज्ञान और भावनाओं तथा बुद्धि और सुख दोनों का सम्मिश्रण होता है। **—सुकरात**

अमृत जीवन की अगर इच्छा है तो आत्मा की व्यापकता का अनुभव करो, सब की सेवा करो, सबसे एक रूप हो जाओ। **—विनोबा**

When a man's fight begins within himself, he is worth something. **—Browning**

जब मनुष्य का युद्ध अपने आप के साथ आरम्भ होता है तब उसका कुछ मूल्य होता है। **—ब्राउनिंग**

जीवन एक खिले हुए फूल के समान है, जो कुछ काल में आप ही आप कुम्हला कर गिर पड़ेगा। **—अज्ञात**

Life like a dome of many coloured glass, stains the white radiance of eternity. **—Shelley**

जीवन अनन्त काल के श्वेत प्रकाश को रंग-बिरंगे शीशे के गुम्बज के सदृश रंग देता है। **—शेली**

जो परमात्मा का दर्शन करता है, उसी का जीवन सफल है।

—रामचन्द्र डोंगरे (श्रीमद्भागवत रहस्य)

संघर्षशील व्यक्ति के लिए जीवन एक कभी न समाप्त होने वाले समारोह या उत्सव के समान है। **—सत्य साईं बाबा**

जीवन विश्व की सम्पत्ति है। **—जयशंकर प्रसाद (ध्रुवस्वामिनी)**

इस जीवन में सुख-दु:ख कोई भी सत्य नहीं, सत्य है सिर्फ उनके चंचल क्षण, सत्य है सिर्फ उनके चले जाने का छन्द मात्र। **—शरत्चन्द्र (शेष प्रश्न)**

Life is a quarry, out of which we are to mould and chisel and complete a character. **—Goethe**

जीवन एक खान है जिसमें से हम पूर्ण चरित्र का निर्माण करते हैं। **—गेटे**

मनुष्य-जीवन का उद्देश्य आत्मदर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य एवं एकमात्र उपाय पारमार्थिक भाव से जीवमात्र की सेवा करना है। **—महात्मा गांधी**

मनुष्य का सच्चा जीवन तब प्रारम्भ होता है जब वह यह अनुभव करता है कि शारीरिक जीवन अस्थिर है और वह संतोष नहीं दे सकता। **—टालस्टाय**

अपने जीवन को समय के किनारे पर पत्ती पर पड़ी हुई ओस की भाँति हलके-हलके नाचने दो। **—रवीन्द्र**

जीवन के युद्ध में चोटें और आघात बरदाश्त करने से ही उसमें विजय प्राप्त होती है, उसमें आनन्द आता है। **—अज्ञात**

The end of life is to be like God, and the soul following God will be like God. **—Socrates**

जीवन का उद्देश्य ईश्वर की भाँति होना चाहिए—ईश्वर का अनुकरण करती हुई आत्मा ईश्वर-तुल्य हो जाएगी। **—सुकरात**

जीवन जागरण है, सुषुप्ति नहीं, उत्थान है, पतन नहीं। पृथ्वी के तमसाच्छन्न, अन्धकारमय पथ से गुजर कर दिव्य-ज्योति से साक्षात्कार करना है। जहाँ द्वन्द्व और संघर्ष कुछ भी नहीं है। जड़ चेतन के बिना विकास-शून्य है और चेतन जड़ के बिना आकार-शून्य। इन दोनों की क्रिया और प्रतिक्रिया ही जीवन है।

—महादेवी वर्मा (यामा)

Dost thou love life? Then do not squander time, for that is the stuff life is made of. —**Benjamin Franklin**

क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है ? तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ, क्योंकि जीवन उसी से बना है। —**फ्रैंकलिन**

पथिक बनकर जीवन की धूपछाँह से घबराना क्या ? जीवन की महत्ता वेदनाओं, पीड़ाओं को उपेक्षा के साथ हँसते हँसते सह लेने में है। —**अज्ञात**

Out, out, brief candle !
Life's but a walking shadow. —**Shakespeare**

क्षणिक प्रकाश देने वाले दीपक बुझो —जीवन तो केवल चलती फिरती छाया है। —**शेक्सपियर**

जीवन

बन बन कर मिटना ही होगा,
जब कण कण में परिवर्तन है।
संभव हो यहाँ मिलन कैसे,
जीवन तो आत्म-विसर्जन है ॥

—**शिवमंगल सिंह 'सुमन'** (हिल्लोल)

मनुष्य का जीवन एक महानदी की भांति है जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में अपनी राह बना लेती है। —**रवीन्द्रनाथ टैगोर (गोरा)**

चिर विकास गति क्रम में अवतरित, मानव जीवन सत्य चिरंतन।
पौरुष-यश के मान पुरातन नव आदर्श--समर्पित जीवन ॥

—**सुमित्रानन्दन पंत** (**लोकायतन**)

मनुष्य का जीवन जितना सादा और स्वाभाविक होगा उसी के अनुसार उसका चित्त अधिक प्रसन्न रहेगा। —**अज्ञात**

A useless life is an early death. —**Goethe**

व्यर्थ जीवन शीघ्र-प्राप्त मृत्यु है। —**गेटे**

जीवन तो मृत्यु और पुनर्जन्म की परंपरा की कहानी है। हमें पुनर्जन्म पाने के लिए पहले मरना होगा। —**रोम्यां रोला**

One crowded hour of glorious life is worth an age without a name. **—Walter Scott**

गौरवपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घण्टा कीर्ति-रहित युगों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। **—वाल्टर स्काट**

जीवन का रहस्य भोग में नहीं है, पर अनुभव के द्वारा शिक्षा-प्राप्ति में है। **—स्वामी विवेकानन्द**

As is a tale so is life, not how long it is but how good it is, is what matters. **—Seneco**

जीवन एक कहानी के सदृश है —वह कितनी लम्बी है, नहीं वरन् कितनी अच्छी है, यह विचारणीय विषय है। **—सेनेका**

हमारी महत्वाकांक्षा चाहे जो हो पर हम सबको जैसा अपना जीवन प्यारा है वैसा और कोई पदार्थ नहीं। **—स्वेट मार्डेन**

Tell me not in mournful numbers "life is but an empty dream" **—Longfellow**

जीवन केवल एक निरर्थक स्वप्न है—यह बात मुझसे शोकयुक्त कविता में न कहो। **—लांगफेलो**

जीवन एक बाजी के समान है। हारजीत तो हमारे हाथ नहीं है पर बाजी का खेलना हमारे हाथ में है। **—जर्मी टेलर**

जीवन किसी को स्थायी सम्पत्ति के रूप में नहीं मिला। वह तो केवल प्रयोग के लिए है। **—लुक्रीटस**

जीवन खोने के बजाय मानवी गुणों को संगठित करने में अपने समय का अधिक उपयोग करो। **—स्वेट मार्डेन**

Life is the childhood of our immortality. **—Goethe**

जीवन अमरता का शैशवकाल है। **—गेटे**

जीवन क्या है? पीड़ा का संघर्ष और दुःख का अभिनय। **—डा० राम कुमार वर्मा**

है जीवन के एक हाथ में, मधुर जीवामृत का प्याला ।।
और दूसरे कर में उसके, है कटु मरण-हलाहल-हाला ।।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (हम विषपायी जनम के)

जीवन का महत्व तभी है जब वह किसी महान ध्येय के लिये समर्पित हो। समर्पण ज्ञान और न्याययुक्त हो। **—इन्दिरा गांधी**

सत्य आस्था और लगन जीवन-सिद्धि के मूल हैं।

—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

Life is a principle of growth, not of standing still, a continuous becoming, which does not permit static condition.

—Jawahar Lal Nehru

जीवन विकास का सिद्धांत है, स्थिर रहने का नहीं। निरन्तर विकसित होना स्थिर अवस्था में रहने की अनुज्ञा नहीं देता। **—पं० जवाहरलाल नेहरू**

For life in general, there is but one decree; youth is a blunder, manhood a struggle, old age a regret. **—Disraeli**

साधारण जीवन में एक ही विधान है, यौवन एक भूल है, जवानी संघर्ष है और बुढ़ापा पश्चात्ताप। **—डिजरायली**

जीवन एक प्रयोगशाला के समान है जिसमें मनुष्य निरन्तर प्रयोग करता रहता है। **—अज्ञात**

मनुष्य-जीवन अनुभव का शास्त्र है। **—विनोबा**

जीवन को नियम के अधीन कर देना आलस्य पर विजय पाना है। जीवन को नियम के अधीन कर देना प्रमाद को सदा के लिए विदा कर देना है।

—स्वामी अखण्डानन्द

Life is nothing but a short postponement of death.

—Schopenhauer

जीवन और कुछ नहीं है, केवल मृत्यु का कुछ समय के लिए टालना है।

—शोपेनहार

Life is a flower of which love is the honey. **—Victor Hugo**

जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु। **—विक्टर ह्यूगो**

जीवन और मृत्यु (दे० "मृत्यु", "जिन्दगी और मौत")

जीवन और मृत्यु साँस भीतर लेने और साँस बाहर निकालने के समान है।
—स्वामी रामतीर्थ

यह जीवन समुद्र-यात्रा की भाँति है जिसमें हम सभी एक ही संकुचित नौका में परस्पर मिलते हैं। मृत्यु तट पर पहुँचने के समान है जहाँ हम सभी अपने-अपने लोक को चले जाते हैं। **—रवीन्द्र**

मृत्यु जो कि शाश्वत सत्य है, क्रान्ति है और जन्म तथा जीवन धीरे-धीरे और स्थिर रूप से होने वाला विकास है। मनुष्य की उन्नति के लिए स्वयं जीवन जितना आवश्यक है उतनी ही आवश्यक क्रान्ति है। **—महात्मा गांधी**

जीवन में मृत्यु बसी है
जैसे बिजली हो घन में।
—जयशंकर प्रसाद (आँसू)

सभी प्राणियों को अपनी-अपनी आयु प्रिय है। सुख अनुकूल है, दुख प्रतिकूल है। वध अप्रिय है, जीना प्रिय है। सब जीव दीर्घायु चाहते हैं। सबको जीवन प्रिय है। **—भगवान महावीर**

जीवन

इसका कहीं नहीं इति - अथ है।
जीवन अमर साधना - पथ है॥
—शिव मंगल सिंह 'सुमन' (हिल्लोल)

है यहां मृत्यु ही शान्ति और
जीवन है करुणामय प्रवास। **—डा० रामकुमार वर्मा**

In death the many becomes one, in life the one becomes many. **—R. N. Tagore**

मृत्यु में अनेक एक हो जाता है, जीवन में एक अनेक रहता है। **—रवीन्द्र**

जीवन एक प्रश्न है और मरण है उसका अटल उत्तर। **—जयशंकर प्रसाद**

जीवन एक यात्रा है जिसकी समाप्ति मृत्यु है। **—बलभद्र प्रसाद गुप्त 'रसिक'**

जीवन-चरित्र

Biography is the only true history. **—Carlyle**

जीवन-चरित्र ही केवल सच्चा इतिहास है। **—कारलाइल**

There is properly no history, only biography. **—Emerson**

वास्तव में इतिहास कुछ नहीं, केवल जीवन-चरित्र ही है। **—एमर्सन**

Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime,
And, departing, leave behind us
Footprints on the sands of time.

—Longfellow (A Psalm of Life)

महापुरुषों की जीवनियाँ हमें याद दिलाती हैं कि हम भी अपना जीवन महान् बना सकते हैं और मरते समय अपने पदचिह्न समय की बालू पर छोड़ सकते हैं। **—लांगफेलो**

To be ignorant of the lives of the most celebrated men of antiquity is to continue in a state of childhood all our days.

—Plutar

प्राचीन महापुरुषों के जीवन से अपरिचित रहना जीवन भर निरन्तर बाल्यावस्था में ही रहना है। **—प्लूटर**

जीवन-मुक्त

जिसकी आँख में है स्नेह,
जिसका शुद्ध उज्ज्वल भाल।
जिसके अधर पर मुस्कान,
जिसका हृदय-सिन्धु विशाल॥
सुन्दर स्वस्थ प्रतिभावान,
जिसके हैं महान विचार।
जिसके कर्म गौरवपूर्ण,
जिसका विश्व है परिवार॥

जो कर्तव्य तत्पर नित्य,
हैं तप तेज बल श्रीयुक्त।
सेवा सत्य सुख का रूप,
वह नर श्रेष्ठ जीवन्मुक्त ॥

—दीनानाथ दिनेश (मणिमाला)

जीवन-संग्राम

जीवन - संग्राम में
शरीर - धर्म क्षेत्र - कुरुक्षेत्र है।
धृतराष्ट्र - अन्धा मन है जो शरीर के राष्ट्र पर अपना न होते हुए भी अधिकार जमाता है।
कौरव - आसुरी भाव हैं।
पाण्डव - दैवी भाव हैं।
अर्जुन - जीवात्मा है।
श्रीकृष्ण - परमात्मा देवता हैं।
सञ्जय - योग द्वारा प्राप्त चेतना शक्ति है।

मन रूपी धृतराष्ट्र को यही चेतना-शक्ति शरीर में होने वाला सारा वृतान्त बताती है।

—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

जीवनी-शक्ति

जीवनी शक्ति या प्राणाग्नि के शरीर में प्रतिभासित होने वाले अनेक रूप हैं। पाचन क्रिया से संलग्न जीवनी शक्ति को जठराग्नि, मस्तिष्क में काम करने वाली को मेघा, प्रजनन संस्थान में काम करने वाली को कामोत्तेजना एवं मुखमण्डल पर चमकने वाली ऊर्जा को ओजस्विता कहते हैं। पर वस्तुतः वह है एक ही शक्ति। विभिन्न प्रयोजनों के कारण उनके नाम अलग-अलग हैं।

—अखण्ड ज्योति, जुलाई १९८१

जीविका

Absence of occupation is not rest, a mind quite vacant is a mind distressed.

—Cowper

जीविका का अभाव विश्राम नहीं है, बिल्कुल शून्य मस्तिष्क एक पीड़ित मस्तिष्क है। —काउपर

जीविका जीव से भी अधिक प्यारी होती है।

—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

The crowning fortune of man is to be born to some pursuit which finds him in employment and happiness. **—Emerson**

मनुष्य का महान् सौभाग्य यह है कि वह कोई व्यावसायिक प्रवृत्ति लेकर जन्मे जिससे उसे जीविका और आनन्द प्राप्त हो। —एमर्सन

Occupation is the scythe of time. **—Napoleon**

व्यवसाय समय का यंत्र है। —नेपोलियन

The busy man have no time for tears. **—Byron**

व्यस्त मनुष्य को आँसू बहाने के लिए अवकाश नहीं। —बायरन

जुआ

अक्षैर्मा दीव्यः। —ऋग्वेद

जुआ मत खेलो।

Gambling is the child of avarice, the brother of inequity and the father of mischief. **—Washington**

जुआ लोभ का पुत्र, दुराचार का भाई और बुराइयों का पिता है।

—वाशिंगटन

Man is a gambling animal. **—Lamb**

मनुष्य एक बाजी लगानेवाला जीव है। —लैम्ब

जुआ आपस की फूट का मूल कारण है। —वेदव्यास (महाभारत)

जुआ सुख, सम्पत्ति और समय इन तीनों का—जो कि जीवन के लिए अति मूल्यवान हैं—नाश करता है। —अज्ञात

जुल्म

Bad laws are the worst sort of tyranny. **—Burke**

खराब कानून निकृष्ट प्रकार का जुल्म है। —बर्क

जुल्मी

'Tis time to fear when tyrants seem to kiss. —**Shakespeare**

जब जुल्मी चूमने का अभिनय करे तो डरना चाहिए। —**शेक्सपियर**

जालिम मर जाता है पर जुल्म रह जाता है। —**एक कहावत**

जेल

जेल सम्मान और भक्ति की एक रेखा है, जिसके भीतर शैतान कदम नहीं रख सकता। —**प्रेमचन्द**

जेल के बाहर भूलों की सम्भावना है, बहकने का भय है, समझौते का प्रलोभन है, स्पर्धा की चिन्ता है। —**प्रेमचन्द**

जेहन

वह जेहन किस काम का जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले। —**प्रेमचन्द**

If a man's eye is on the eternal, his intellect will grow. —**Emerson**

यदि मानव नेत्र शाश्वत पर होते हैं तो उसकी बुद्धि प्रतिदिन विकसित होती है। —**एमर्सन**

The intellect of the wise is like a glass, it admits the light of heaven and reflects it. —**Hare**

ज्ञानी की बुद्धि दर्पण के सदृश है। वह स्वर्गीय प्रकाश को ग्रहण करती है और उसे परावर्तित कर देती है। —**हेयर**

ज्ञान (दे० 'बुद्धि')

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता ४।६८)
ज्ञान के समान इस संसार में और कुछ पवित्र नहीं है।

आरोह तमसो ज्योतिः। —अथर्ववेद
अन्धकार (अविद्या) से निकलकर प्रकाश (ज्ञान) की ओर बढ़ो।

Wisdom in only formed in truth. —**Goethe**

ज्ञान केवल सत्य में ही पाया जाता है। —**गेटे**

ज्ञान सदा एकरस है, वह काल के बंधन से बाहर है। —**निराला**

Man's wisdom is his best friend; folly his worst enemy.

—**Sir W. Temple**

मनुष्य का ज्ञान उसका परम मित्र है; मूर्खता उसका निकृष्ट शत्रु है।

—**सर डब्ल्यू० टेम्पिल**

In youth and beauty wisdom is but rare. —**Homer**

यौवन और सौन्दर्य में ज्ञान प्रायः दुर्लभ ही होता है। —**होमर**

ज्ञान भी जब सीमा के बाहर हो जाता है तो नास्तिकता के क्षेत्र में जा पहुँचता है। —**प्रेमचन्द**

ज्ञान ही वास्तविक सोना अथवा हीरा है। —**स्वामी शिवानन्द**

जब ज्ञान इतना घमंडी बन जाय कि वह रो न सके, इतना गंभीर बन जाय कि हँस न सके और इतना आत्म-केन्द्रित बन जाय कि अपने सिवा और किसी की चिन्ता न करे, तो वह ज्ञान अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक होता है।

—**खलील जिब्रान**

Knowledge is power. —**Bacon**

ज्ञान शक्ति है। —**बेकन**

The highest wisdom is to know the self.

—**Dr. S. Radha Krishnan (Eastern Religion &**
—Western Thought)

आत्म-ज्ञान सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है। —**डा० राधाकृष्णन्**

ज्ञान का मूल्य बहुमूल्य रत्न से भी अधिक है।
ज्ञान का निरादर अपने ही मस्तिष्क का अपमान है। —**निराला**

Knowledge is the wing wherewith we fly to heaven.

—**Shakespeare**

ज्ञान वह पंख है जिसके द्वारा हम स्वर्ग की ओर उड़ते हैं। —**शेक्सपियर**

ज्ञान की अग्नि सुलगते ही कर्म भस्म हो जाते हैं। **—स्वामी शंकराचार्य**

Knowledge is proud that he has learn'd so much; wisdom is humble that he knows no more. **—Cowper (The Task)**

ज्ञान अभिमानी होता है कि उसने बहुत कुछ सीख लिया, बुद्धि विनीत होती है कि वह अधिक कुछ जानती ही नहीं। **—काउपर**

ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। **—महात्मा गांधी**

The aim of knowledge is truth, and truth is a need of the soul. **—Lessing**

ज्ञान का ध्येय सत्य है, और सत्य आत्मा की भूख है। **—लेसिंग**

भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं। ज्ञान उदय जिमि संसय नाहीं।
—तुलसी (मानस, लंका०)

To be conscious that you are ignorant is a great step to knowledge. **—Disraeli (Sybil)**

अपने अज्ञान का आभास होना ही ज्ञान की तरफ एक बड़ा कदम है।
—डिजरायली

यथैधांसि समिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा॥
—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता ४।३७)

हे अर्जुन ! जैसे जलती हुई अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है, वैसे ही ज्ञानरूपी अग्नि संपूर्ण शुभाशुभ कर्मों को जलाकर नष्ट कर देती है।

The essence of knowledge is, having it, to apply it, not having it, to confess your ignorance. **—Confucius**

ज्ञान का सार यह है कि ज्ञान रहते उसका प्रयोग करना चाहिए और उसके अभाव में अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेनी चाहिए। **—कन्फ्यूशस**

Wisdom is the daughter of experience. **—Proverb**

ज्ञान अनुभव की बेटी है। **—कहावत**

ज्ञान जीवन का मधुर फल है। जीवन की जड़, संयम की भूमि में जितनी गहरी जमती है और सदाचार का जितना जल दिया जाता है, उतना ही जीवन हरा-भरा होता है और उसमें ज्ञान का मधुर फल लगता है। पाप रूपी पक्षी ज्ञान के फल को कुतर लेता है, कीड़ा बनकर उसमें घुस जाता है और उसे काम का नहीं छोड़ता। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

नारायण बिन बोधक, पंडित पसू समान।
तासों अति मूरख भलो, जो सुमिरे भगवान॥

—नारायण स्वामी

पारमार्थिक कर्मों के आचरण से ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है।

—स्वामी शंकराचार्य

Wisdom is to the mind what health is to the body.

—La Rovchefoncauld

जैसे शरीर के लिए स्वास्थ्य है वैसे आत्मा के लिए ज्ञान।

—ला० रोशोका

भूली हुई चीजों की स्मृति ही ज्ञान है। **—प्लेटो**

Wisdom teaches us to do, as well as talk and to make our words and actions all of a colour. **—Seneca**

ज्ञान हमको करना और बोलना सिखाता है और हमारे शब्दों एवं कर्मों को एक रंग में रँग देता है। **—सेनेका**

मनुष्य जितना ज्ञान में घुल गया हो, उतना ही वह कर्म के रंग में रँग जाता है। **—विनोबा**

He that thinks himself the wisest is generally the greatest fool. **—Colton**

जो अपने को सबसे बुद्धिमान समझता है वह सामान्यतः सबसे बड़ा मूर्ख होता है। **—कोल्टन**

जैसे जल के द्वारा अग्नि को शान्त किया जाता है, वैसे ही ज्ञान के द्वारा मन को शान्त रखना चाहिए। —वेदव्यास (महाभारत)

ज्ञान धन से उत्तम है क्योंकि धन की तुमको रक्षा करनी पड़ती है और ज्ञान तुम्हारी रक्षा करता है। —अली

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ! ज्ञाने परिसमाप्यते॥

—श्रीकृष्ण (गीता ४।३३)

हे परंतप, द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है, क्योंकि हे पार्थ! जितने कर्म हैं वे सब ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं।

As for me, all I know is that I know nothing. —**Socrates**

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं जानता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता। —सुकरात

जो यथार्थ मुक्ति का कारण है वही वास्तविक ज्ञान है। —स्वामी शंकराचार्य

"न तेन स्थविरो भवति येनास्य पलितं शिरः।
बालोपि यः प्रजानाति तं देवाः स्थविरं विदुः॥ —वेदव्यास

कोई सिर के बाल श्वेत होने से वृद्ध नहीं होता। बालक होकर भी यदि कोई ज्ञान-सम्पन्न है तो वह वृद्ध माना जाता है।

'अज्ञो भवति वै बालः, पिता भवति मन्त्रदः।' —अज्ञात

ज्ञानहीन व्यक्ति चाहे वह वृद्ध ही क्यों न हो बालक है, और शिक्षक चाहे वह अल्पवयस्क ही हो, पिता है।

पक्के ज्ञान की एकमात्र पहचान है सिखाने की शक्ति। —अरस्तू

ज्ञानी

ज्ञानी मनुष्य को संसार लुभा नहीं सकता, मछलियों के कूदने से समुद्र नहीं उमड़ता। —भर्तृहरि

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान् माम् प्रपद्यते।

—श्रीकृष्ण (गीता)

बहुत जन्मों के अन्त में ज्ञानी मुझे पाता है।

Wise men are instructed by reason, men of less understanding by experience, the most ignorant by necessity and beasts by nature. **—Cicero**

ज्ञानी पुरुष विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। **—सिसरो**

सबसे अधिक ज्ञानी वह है जो अपनी हानि का सबसे अच्छा सुधार कर सकता है। **—अज्ञात**

One fool can ask more questions in a minute, than twelve wise men can answer in an hour. **—Lenin**

बारह ज्ञानी एक घंटे में जितने प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, उससे कहीं अधिक प्रश्न मूर्ख व्यक्ति एक मिनट में पूछ सकता है। **—लेनिन**

ज्ञानी मनुष्य इस जगत् को स्वर्ग में परिवर्तित कर सकता है।

—स्वामी शिवानन्द

हम ज्ञानियों की संगत में रहा करें। **—ऋग्वेद**

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता ६-३१)

मुझमें लीन हुआ जो योगी भूतमात्र में रहने वाले मुझको भजता है, वह सब प्रकार से व्यवहार करता हुआ भी मुझमें ही वर्तता है।

जोश (दे० 'उत्साह')

जोश मनुष्य से कितनी शपथें कराता है। यह वह आग है जिसमें चमक बहुत है, गरमी कम है और जो बहुत जल्दी बुझ जाती है। **—शेक्सपियर (हेमलेट)**

मुहब्बत के जोश में आदमी अपने आपे को भूल जाता है। **—शेक्सपियर**

Nothing great was even achieved without enthusiasm.

—Emerson

बिना जोश के आज तक कोई महान कार्य नहीं हुआ। **—एमर्सन**

ज्योति

बड़े आदमी मरने पर ऐसी ज्योति छोड़ जाते हैं जो उनकी मृत्यु के बाद भी कई युगों तक जगमगाती रहती है। **—लांगफेलो**

ज्योतिष

ज्योतिष—भूत, भविष्य और वर्तमान की सम्पूर्ण कहानी है। यह एक उपयोगी विज्ञान है और साथ ही लोकप्रियता प्राप्त करने का सुगम साधन भी।

—डा० नारायण दत्त श्रीमाली (भारतीय ज्योतिष)

झंडा

झण्डे को सत्य बनाने वाला कपड़ा नहीं है, शहीदों का खून है। **—अज्ञात**

O splendid flag of new born India ! We pay you the homage of our dedicated heart and hands and pledge ourselves to translate into glorious deeds the dreams that were our share and inspiration in the long darkness of our bondage.

—Sarojini Naidu

हे नव भारत के प्रतापी ध्वज ! हम अपने हृदय और कर की श्रद्धांजलियाँ तुम्हें अर्पण करते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उन स्वप्नों को प्रतिभाशाली कर्म में बदल देंगे जो हमारी दासता की लम्बी अवधि में हमारे साथी रहे हैं और हमें प्रेरणा देते रहे हैं। **—सरोजनी नायडू**

झगड़ा

बड़ा भाई पिता के तुल्य है, भार्या और पुत्र अपने ही आत्मा हैं, नौकर-चाकर अपनी छाया हैं तथा छन्या अत्यन्त कृपा की पात्र है—इनसे झगड़ा कभी न करें।

—मनुस्मृति

Beware of entrance to a quarrel, but being in, bear it that the opposer may beware of thee. **—Shakespeare**

झगड़े से बचना उचित है। अगर उसमें पड़ ही जाय तो बैरी को अपना तेज, बल और पौरुष दिखा दे। **—शेक्सपियर**

झुकना

उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते हैं तब विवेक के अधिक निकट होते हैं।

—बर्नार्ड शा

झूठ

जहां सत्य का परिणाम असत् और असत्य का परिणाम सत् होता हो, वहाँ सत्य न बोलकर असत्य बोलना ही उचित है। **—वेदव्यास (महा०)**

जहाँ लुटेरों के चंगुल में फँस जाने पर झूठी शपथ खाने से छुटकारा मिलता हो, वहाँ झूठ बोलना ही ठीक है, इसी को बिना विचारे सत्य समझो।

—वेदव्यास (महा०)

झूठ बोलना तलवार के घाव की तरह है, घाव तो भर जायगा परन्तु उसका चिह्न हमेशा बना रहेगा। **—सादी**

संसार में झूठ पापों का सरदार है, स्वार्थपरता, निर्दयता, कुटिलता और कायरता सब उसके साथी हैं। **—अज्ञात**

झूठ को इज्जत देकर जितना ऊँचा उठाया जाता है, उतनी ही ग्लानि, उतना ही कीचड़, उतना ही अनाचार इकट्ठा होता है। **—शरत् (ब्राह्मण की बेटी)**

Falsehood has an infinity of combinations, but truth has only one mode of being. **—Roouseau**

झूठ के असंख्य संयोग होते हैं परन्तु सत्य का केवल एक रूप होता है। **—रूसो**

झूठ कभी श्रेष्ठ पद को प्राप्त नहीं होता। **—उपनिषद्**

मिथ्या भाषण प्रजा का नाश करनेवाला होता है। **—वेदव्यास**

लोग झूठ बोलनेवाले मनुष्य से उसी प्रकार डरते हैं जैसे साँप से। संसार में सत्य ही सबसे महान् धर्म है। वही सबका मूल कहा जाता है। **—वाल्मीक**

भवेत् सत्यमवक्तव्यं वक्तव्यमनृतं भवेत्।
यात्रावृतं भवेत् सत्यं सत्यं चाप्यनृतं भवेत्॥ **—वेदव्यास**

जहाँ मिथ्या बोलने का परिणाम सत्य बोलने के समान मंगलकारक हो अथवा जहाँ सत्य बोलने का परिणाम असत्य-भाषण के समान अनिष्टकारी हो, वहाँ सत्य नहीं बोलना चाहिए। वहाँ असत्य बोलना ही उचित होगा।

विवाहकाले रति-सम्प्रयोगे प्राणात्यये सर्वधनापहारे ।
विप्रस्य चार्थे ह्यनृतं वदेत पञ्चानृतान्याहुरपातकानि ॥
—वेदव्यास (महा० कर्ण०)

विवाह काल में, स्त्री प्रसंग के समय, किसी के प्राणों पर संकट आने पर, सर्वस्व का अपहरण होते समय तथा ब्राह्मण की भलाई के लिए आवश्यकता हो तो असत्य बोल दे । इन पाँच अवसरों पर झूठ बोलने से पाप नहीं होता ।

टका (दे० 'द्रव्य' 'धन')

टका ही माता-पिता है । **—कहावत**

The love of money is the root of all evil. **—Proverb**

टका का प्रेम ही सब बुराइयों की जड़ है । **—अज्ञात**

पैसे की कसौटी पर आत्मिक नाते की कौन कहे, शारीरिक नाता तक नष्ट हो जाता है । पैसा एक दीवार बन जाता है । **—अज्ञात**

When money speaks, truth is silent. **—Russian Proverb**

जब टका बोलता है, तो सत्य मौन रहता है । **—रूसी कहावत**

टका करै कुलहूल, टका मिरदंग बजावै ।
टका चढ़ै सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै ॥
टका माय अरु बाप टका भैयन को भैया ।
टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड़ लड़ैया ॥ **—वैताल**

ठग

ठग किसी संबंध का ख्याल नहीं करते; वे सभी को ठग लेते हैं । **—अज्ञात**

ठगाना

ठगाने से ठाकुर होता है, धोखा खाने से आदमी सयाना होता है । **—कहावत**

जब तक तुम्हें अपने को न ठगाना और दूसरे को ठगना अच्छा लगता है, तब तक तुम ठगाते ही रहोगे । **—हनुमान प्रसाद पोद्दार**

ठगाना अच्छा है किन्तु ठगना अच्छा नहीं । **—अज्ञात**

कबीर आप ठगाईये, और न ठगिये कोय ।
आप ठगे सुख ऊपजे, और ठगे दुःख होय ।। —कबीर

ठोकर

ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूँ । —महात्मा गांधी

Kicks only raise dust and not crops from the earth.
—**R. N. Tagore**

ठोकरें पृथ्वी से केवल धूल उड़ा सकती हैं, खेती नहीं उगा सकतीं । —**रवीन्द्र**

ठोकर खाकर साँप जैसा नाचीज कीड़ा बदला लेता है, चींटी जैसी तुच्छ हस्ती काट खाती है, मनुष्य भी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देता है । —**श्रीराम शर्मा आचार्य**

डपोरशंख

Fire and sword are but slow engines of destruction in comparison with the babbler. —**Steel**

अग्नि और तलवार डपोरशंख की तुलना में कम विनाशकारी हैं । —**स्टील**

डर (दे० 'भय')

डरते हो ? किससे ?
ईश्वर से ? मूर्ख हो !
मनुष्य से ? कायर हो !
पंचभूतों से ? उनका सामना करो ।
अपने से ? जानो अपने आप को ।
कहो—अहं ब्रह्मास्मि । —**स्वामी रामतीर्थ**

Fear always springs from ignorance. —**Emerson**

भय सदा अज्ञानता से उत्पन्न होता है । —**एमर्सन**

डरनेवाला मौके पर ऐसे बुरे काम कर जाता है कि उसको ही बाद में ताज्जुब होने लगता है । —**विनोबा**

तावद्भयेन भेतव्यं यावद्भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमशंकया ।। **—चाणक्य**

तब तक ही भय से डरना चाहिए जब तक वह पास नहीं आता परन्तु भय को अपने निकट आता हुआ देखकर प्रहार करके उसे नष्ट करना ही उचित है ।

He who fears being conquered is sure of defeat.—**Napoleon**

जिसे पराजित होने का भय है—उसकी हार निश्चित है । **—नेपोलियन**

Fear makes us feel our humanity. **—Disraeli**

डर हमें मनुष्य-प्रकृति का अनुभव कराता है । **—डिजरायली**

डर रखने से हम अपनी जिन्दगी को बढ़ा तो नहीं सकते । डर रखने से इतना होता है कि हम ईश्वर को भूल जाते हैं, इन्सानियत को भूल जाते हैं ।
—विनोबा

No one loves the man whom he fears. **—Aristotle**

मनुष्य जिससे डरता है उससे प्रेम नहीं करता । **—अरस्तू**

Fear is strenger than love. **—Proverb**

डर प्रेम से अधिक शक्तिशाली है । **—कहावत**

Fear can keep a man out of danger, but courage only can support him in it.

डर मनुष्य को खतरे से दूर रख सकता है परन्तु उसमें केवल साहस ही उसकी सहायता करता है । **—अज्ञात**

डरपोक (दे० 'कायर')

डरपोक प्राणियों में सत्य भी गूंगा हो जाता है । वही सीमेन्ट जो ईंट पर चढ़कर पत्थर हो जाता है, मिट्टी पर चढ़ा दिया जाय तो मिट्टी हो जायगा ।
—प्रेंमचन्द (गोदान)

Cowards falter, but danger is often overcome by those who nobly dare. **—Queen Elizabeth**

डरपोक डगमगाते हैं—लेकिन खतरे से वही प्रायः पार होते हैं जो साहस से उसका सामना करते हैं । **—रानी एलिजाबेथ**

डाँटना

गुरु की डाँट-डपट पिता के प्यार से अच्छी है। —सादी

डाँवाडोल

The wavering mind is but a base possessing. **—Euripides**

डाँवाडोल मन केवल नीच सम्पत्ति है। **—यूरिपिडीज**

It is a miserable thing to live in suspense, it is the life of a spider. **—Swift**

डाँवाडोल स्थिति में रहना दुखदायी है, यह मकड़ी के जीवन के तुल्य है। **—स्विफ्ट**

In life and particularly in politics, there is nothing so harmful and dangerous as an attitude of indecision.

—Subhash Chandra Bose

जीवन में विशेषकर राजनीति में, कोई चीज इतनी हानिकारक और खतरनाक नहीं है जितनी कि डाँवाडोल स्थिति में रहना। **—सुभाष चन्द्र बोस**

डाक्टर

डाक्टर मृत्युपर्यंत विद्यार्थी होता है और जब वह विद्यार्जन की कामना छोड़ देता है तो उसकी मृत्यु समझिए। **—लार्ड डासन**

The best doctors in the world are doctor diet, doctor quiet, and doctor merryman. **—Swift**

भोजन, शान्ति और विनोद ही संसार के सर्वश्रेष्ठ डाक्टर हैं। **—स्विफ्ट**

The physician is Nature's assistant. **—Galen**

डाक्टर प्रकृति के सहायक हैं। **—गैलेन**

डाक्टर इलाज करते हैं—प्रकृति अच्छा करती है। **—अरस्तू**

Nature, time and patience are the three great physicians.

—H. J. Bohn

प्रकृति, समय और धैर्य, ये तीन बड़े डाक्टर हैं। **—एच० जे० बहन**

No physician, in so far as he is a physician considers his own good in what he prescribes, but the good of his patient, for the true physician is also a ruler having the human body as subject, and is not a mere money-maker. **—Plato**

कोई चिकित्सक (डाक्टर) जहाँ तक कि वह डाक्टर है—दवा लिखने में अपना ही भला नहीं सोचता बल्कि अपने मरीज का ही भला सोचता है, क्योंकि सच्चा डाक्टर शरीररूपी प्रजा का शासक भी है—केवल रुपया पैदा करने वाला नहीं। **—प्लेटो**

There is no drug so powerful as hope and slightest sign of pessimism on the face or words of a doctor can cost his patient his life. **—Axel Munthe**

आशा से बढ़कर कोई शक्तिशाली औषधि नहीं है और डाक्टर के चेहरे या शब्दों से निराशा का लेशमात्र भी चिह्न रोगी की जान ले सकता है। **—एक्जेल मन्थे**

He is a good surgeon, who can ampulate a limb, but he is a better surgeon who can save a limb. **—Sir A. Cooper**

वह अच्छा सर्जन है जो किसी अंग को काट सकता है, परन्तु वह सर्जन अधिक अच्छा है जो उसे बचा सकता है। **—सर ए० कूपर**

In no profession does culture count so much as in medicine, and no man needs it more than the general practitioner.

—Sir W. Osler

सज्जनता की आवश्यकता औषधि के व्यापार में अन्य व्यवसाय की अपेक्षा अधिक होती है, और किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा चिकित्सक को उसकी अधिक आवश्यकता है। **—सर डब्लू० ओसलर**

डींग

Where boasting ends, there dignity begins. **—Young**

जहाँ डींग समाप्त होती है वहीं प्रतिष्ठा का प्रारम्भ होता है। **—यंग**

The empty vessel makes the greatest sound. **—Shakespeare**

थोथा चना बाजे घना। —शेक्सपियर

अधजल गगरी छलकत जाय। —कहावत

जो गरजते हैं वे बरसते नहीं। —कहावत

ढोंगी

जो मनुष्य के साथ तो दयालुता का बर्ताव नहीं करता किन्तु पाषाण-मूर्ति की पूजा करता रहता है, वह ढोंगी कहा जा सकता है। —विनोबा

ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना अच्छा है। —विवेकानन्द

तकदीर

वही कानूने फितरत है जिसे तकदीर कहते हैं।
जिसे किस्मत समझते हैं वो तदबीरों का हासिल है॥ —अकबर

We make our fortunes and we call them fate. —**Disraeli**

हम अपने भाग्य का निर्माण करते हैं और उसे होनी कहते हैं। —डिजरायली

तकरीर

Speech is the index of the mind. —**Seneca**

तकरीर मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है। —सेनेका

In oratory, the greatest art is to conceal art. —**Swift**

तकरीर में सबसे बड़ी कला—कला का छिपाना है। —स्विफ्ट

Speech is silver, silence is golden; speech is human, silence is divine. –**German Proverb**

वाणी चाँदी है, मौन सोना है; वाणी मानुषिक है, मौन दिव्य।

—जर्मन कहावत

Speech is the gift of all, but the thought of few. —**Cato**

तकरीर सभी के गुण हैं, परन्तु विचार थोड़े ही के। —केटो

तजुर्बा

Experience is the father of wisdom and memory the mother.
—Proverb

तजुर्बा ज्ञान का जनक है और स्मरणशक्ति उसकी जननी। **—कहावत**

Experience without learning is better than learning without experience. **—Proverb**

बिना ज्ञान का तजुर्बा अनुभवरहित ज्ञान से अच्छा है। **—कहावत**

Experience is good if not bought too dear. **—Proverb**

तजुर्बा अच्छा है यदि उसका अधिक मूल्य न चुकाना पड़े। **—कहावत**

अगर कोई सिर्फ तजुर्बों से ही अक्लमंद हो जाता तो लंदन के अजायबघर के पत्थर इतने वर्षों बाद संसार के बड़े से बड़े बुद्धिमानों से भी ज्यादा बुद्धिमान् होते। **—बर्नार्ड शा**

तत्त्व (दे० 'दार्शनिक')

कर्म से केवल मन की ही शुद्धि होती है तत्त्व वस्तु नहीं प्राप्त हो सकती, उसके लिए मुख्य उपाय ध्यान है। **—शंकराचार्य**

तत्त्वज्ञ

For there was never yet a philosopher.
That could endure the tooth-ache patiently. **—Shakespeare**

अभी तक ऐसा कोई तत्त्वज्ञ नहीं हुआ जो कि दाँत दर्द को धैर्यपूर्वक सहन कर सकता। **—शेक्सपियर**

जैसे बाँस के पिंजड़े में सिंह बन्द नहीं किया जा सकता उसी प्रकार तत्त्व-वेत्ता संसार में नहीं फँस सकता। **—अज्ञात**

जो सत्य की झलक के प्रेमी हैं वही सच्चे तत्त्व-ज्ञानी हैं। **—सुकरात**

तत्त्व-ज्ञान (दे० 'दर्शनशास्त्र' 'फिलासफी')

Queen of arts and daughter of heaven. —**Burke**

तत्त्वज्ञान कलाओं की रानी और स्वर्ग की बेटी है। —**बर्क**

Philosophy is the science which considers truth.

—**Aristotle**

तत्त्वज्ञान वह विज्ञान है जो सत्य का विचार करता है। —**अरस्तू**

Adversity's sweet milk philosophy. —**Shakespeare**

विपत्ति तत्त्वज्ञान का मधुर दूध है। —**शेक्सपियर**

तप

कामना का त्याग ही उत्तम तप है। —**श्रीमद्भागवत**

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्चये॥

—**श्रीकृष्ण (गीता १७।१६)**

मन की प्रसन्नता, शान्ति भाव, मौन, आत्म-संयम, अन्तःकरण का शुद्ध रखना यह सब मानसिक तप है।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥

—**श्रीकृष्ण (गीता १७।१५)**

दुःख न देनेवाला सत्य, प्रिय, हितकर वचन तथा धर्मग्रन्थों का अभ्यास—यह वाणी का तप है।

सबसे श्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य है। —**स्वामी भजनानन्द**

अध्रुवे हि शरीरे यो न करोति तपोऽर्जनम्।
स पश्चात्तप्यते मूढो मृतो गत्वात्मनो गतिम्॥ —**वाल्मीकि रा०**

यह शरीर क्षणभंगुर है; इसमें रहते हुए जो जीव तप का उपार्जन नहीं करता, वह मूर्ख मरने के बाद, जब उसे अपने दुष्कर्मों का फल मिलता है, बहुत पश्चात्ताप करता है।

तप का फल है प्रकाश और ज्ञान। —**वेदव्यास (महा०, शांति०)**

देव-द्विज-गुरु-प्राज्ञ-पूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ।।

—श्रीकृष्ण (**गीता** १७।१४)

देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानी की पूजा पवित्रता, नम्रता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा—यह शारीरिक तप है ।

मनुष्यों और देवताओं के सम्पूर्ण सुखों का मूलाधार तप है । तप से स्थायी आनन्द प्राप्त होता है । तप से आपत्तियों, ग्रहदोषों और पापों का विनाश होता है । **—मनु**

धन, गौ, सोना, मणि, रत्न और पुत्र सबका मूल तप ही है । तप ही से ये सब चीजें मिल सकती हैं । **—वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)**

आन्तरिक तप चैतन्यमय प्रकाश से युक्त है, उससे तीनों लोक व्याप्त हैं ।

—वेदव्यास(महाभारत, शांतिपर्व)

तपबल रचइ प्रपंचु विधाता । तपबल विष्नु सकल जगत्राता ।
तपबल संभु करहिं संघारा । तपबल सेषु धरहिं महि-भारा ।।

—तुलसी (मानस)

रजोगुण और तमोगुण का नाश करनेवाला निष्काम कर्म ही तप है ।

—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

विनयेन विना चीर्णम्—अभिमानेन संयुतम् ।
महच्चापि तपो व्यर्थम्—इत्येतदवधार्यताम् ।। **—अज्ञात**

यह समझ लेना चाहिए कि विनय के बिना और अभिमान के साथ किया हुआ बड़ा तप भी व्यर्थ ही होता है । **—अज्ञात**

तप की महिमा महान् है । तप द्वारा ही मनुष्य अपने अभीष्ट पद को प्राप्त करता है और पाप या अपूर्णता को दूर कर अपने चरित्र को उज्ज्वल तथा पवित्र बनाता है । धीर पुरुष तप द्वारा ही संसार में उन्नति के शिखर पर विराजमान होता है । **—अज्ञात**

तपस्या

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुँचाना, यही तपस्या का स्वरूप है । **—संत तिरुवल्लुवर**

तपस्या धर्म का पहला और आखिरी कदम है। —**महात्मा गांधी**

धन संग्रह की अपेक्षा तपस्या का संग्रह श्रेष्ठ है। —**वेदव्यास (महा०)**

दुःख-वेदना ही मनुष्य-जीवन में कठोर तपस्या का रूप धारण कर लेती है। यह तपस्या जिसकी सार्थक होती है उसकी आत्मा तपाये हुए सोने के सदृश निर्मल, निष्कलुष व उज्ज्वल हो जाती है। —**लाबराय प्रभाराय**

तर्क

Strong and bitter words indicate a weak cause.

—**Victor Hugo**

कड़े और कटु शब्द दुर्बल कारण को सूचित करते हैं। —**विक्टर ह्यूगो**

In argument smiles are like songs in love, they describe much, but prove nothing. —**Prior**

तर्क में उपमाएँ प्रेम में गीत के सदृश हैं। वे वर्णन तो अधिक करती हैं परन्तु सिद्ध कुछ भी नहीं करतीं। —**प्रायर**

Arguments out of a pretty mouth are unanswerable.

—**Addison**

सौंदर्य का तर्क लाजवाब होता है। —**एडीसन**

तलवार

तलवार ही सब कुछ है, उसके बिना मनुष्य न अपनी रक्षा कर सकता है और न निर्बल की। —**गुरु गोविन्द सिंह**

ताड़ना (दे० 'दंड')

गुरु की ताड़ना पिता के प्यार से अच्छी है। —**सादी**

लालयेत् पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्। —**अज्ञात**

पाँच वर्ष तक दुलार, दस वर्ष तक ताड़ना करनी चाहिए।

ताम्बूल (दे० 'पान')

तिरस्कार

पहचाने न जाने से देवता को भी तिरस्कृत होना पड़ता है। —अज्ञात

जो अपमान सहन करता है, अनिष्ट को आमंत्रण देता है। —कहावत

The way to procure insult is to submit to them. A man meets with no more respect than he exacts. **—Hazlitt**

तिरस्कृत होने का मार्ग तिरस्कार के सम्मुख सर झुका देना है। मनुष्य का उतना ही सम्मान होता है जितना कि वह दूसरों से प्राप्त करने में समर्थ होता है। —हैजलिट

तिल

"रंगपाल" गाल पै रसाल तिल सोहै किधौं,
लपटो रसिक राय मन रस भीनो है।
कैधौं रूप-रतन-खजाने के महल पर,
मदन महीपति मुहर कर दीनो है।

—अज्ञात

दृष्टि लग जाय न किसी के चन्द्र आनन पै,
काला चिह्न विधि ने इसी से क्या दिया है छोड़। —अज्ञात

दस गुना रूप है बढ़ाता बन कर बिन्दु,
अंक अनमोल ये कहाँ से गया मिल है। —अज्ञात

प्यारी की ठोढ़ी बिराज रह्यौ तिल,
देखि विचार यहै मैं कर्‌यौ है।
भौहें बनावत मानो विरंचि की,
लेखनी तें मसि-बिन्दु झर्‌यो है॥ —अज्ञात

तीक्ष्ण बुद्धि

स्पृशन्ति शरवत्तीक्ष्णस्तोकमन्तर्विशन्ति च ।
बहुस्पृशापि स्थूलेन स्थीयते बहिररमवत् ॥

–माघ (शिशु०)

तीक्ष्ण बुद्धि वाले लोग बाण की भाँति बहुत स्वल्प (स्थल में) स्पर्श करते हैं, किन्तु अन्तःप्रविष्ट हो जाते हैं और मन्द बुद्धि लोग पत्थर के टुकड़े की भाँति बहुत (चौड़े स्थल में) स्पर्श करने पर भी बाहर ही रह जाते हैं ।

तीर्थ (दे० 'मानस तीर्थ')

कर्म, ज्ञान और भक्ति का संगम ही जीवन का तीर्थ राज है ।

—दीनानाथ दिनेश

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो ।

—स्वामी शंकराचार्य

शरीर आत्मा के रहने की जगह होने के कारण तीर्थ जैसा पवित्र है ।

–महात्मा गाँधी

संत—महापुरुष ही वास्तविक तीर्थ और देवता हैं क्योंकि इन संत महापुरुषों के दर्शन-मात्र से ही कल्याण हो जाता है । **—श्रीमद्भागवत**

सर्व तीर्थ कौ बासौ तहाँ । सूर हरि कथा होवै जहाँ ॥ **—सूरदास**

तुलना

The superiority of some men is merely local. They are great because their associates are little. **—Dr. Johnson**

कुछ व्यक्तियों की प्रधानता केवल स्थानीय होती है । वे बड़े इसलिए होते हैं कि उनके सहायोगी बौने होते हैं । **—जानसन**

तुलसी-महिमा

तुलसी काननं चैव गृहे यस्याचतिष्ठते ।
तद्गृहं तीर्थं भूतं हि नायान्ति यमकिङ्करा ।।
तुलसीमञ्जरीभिर्यः कुर्याद्धरिहरार्चनम् ।
न स गर्भगृहं याति मुक्तिभागी भवेन्नरः ।।

जिसके घर में तुलसी-वन होता है, वह घर तीर्थरूप हो जाता है, वहाँ यमदूत नहीं आते । जो मनुष्य तुलसीमञ्जरी से भगवान् हरि-हर की पूजा करता है, वह फिर गर्भ में नहीं आता, वह मुक्ति का भागी हो जाता है ।

तृण

तनु तिय तनय धामु धनु धरनी ।
सत्यसंध कहुँ तृन सम बरनी ।।

—तुलसी (मानस)

सत्यव्रती के लिए तो शरीर, स्त्री, पुत्र, घर, धन और पृथ्वी सब तिनके के बराबर कहे गये हैं ।

तृणं ब्रह्मविदां स्वर्गः तृणं शूरस्य जीवितम् ।
जितक्षस्य तृणं नारी निःस्पृहस्य तृणं जगत् ।। **—चाणक्य**

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जिसने इन्द्रियों को वश में किया उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पड़ती है, निःस्पृह को जगत् तृण है ।

तृष्णा

तृष्णा चतुर को भी अन्धा बना देती है । **—सादी**

तृष्णा वैतरणी नदी है । **—चाणक्य**

की त्रिस्ना है डाकिनी की जीवन का काल ।
और और निस दिन चहै जीवन करै निहाल ।। **—कबीर**

जीर्यन्ते जीर्यते केशाः दन्ताः जीर्यन्ति जीर्यतः ।
चक्षुः श्रोत्राणि जीर्यन्ति तृष्णैका तरुणायते ।।

वृद्धावस्था में बाल बूढ़े होकर सफेद हो जाते हैं, दाँत टूट जाते हैं, आँख और कान जीर्ण हो जाते हैं; पर एक तृष्णा ऐसी है, जो तरुणी ही बनी रहती है।
—अज्ञात

अनन्तपारा दुष्पूरा तृष्णा दोष-शता-वहा।
अधर्म-बहुला चैव तस्मात्तां परिवर्जयेत्॥

तृष्णा का कहीं ओर छोर नहीं है, उसका पेट भरना कठिन होता है, वह सैकड़ों दोषों को ढोये फिरती है, उसके द्वारा बहुत से अधर्म होते हैं। अतः तृष्णा का परित्याग कर दे।
—वेदव्यास (पद्मपुराण)

जिसकी तृष्णा का ओर छोर नहीं है, नैराश्य उस पर अपना प्राबल्य प्रकट कर अपने वश में कर लेता है।
—अज्ञात

"को वा दरिद्रोऽहि विशाल तृष्णाः।"

जिसकी तृष्णा बड़ी है वह दरिद्री है।
—अज्ञात

आशा तृस्ना ना मरी कह गये दास कबीर
—कबीर

तृष्णा के समान दूसरी कोई व्याधि नहीं है।
—चाणक्य

गात्राणि शिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते॥
—भर्तृहरि

चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयीं, सिर के बाल पककर सफेद हो गये, सारे अंग ढीले हो गये—पर तृष्णा तो तरुण होती जाती है।

कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।
—भर्तृहरि (वैराग्यशतक)

काल का खात्मा न हुआ, किन्तु हमारा ही खात्मा हो चला। तृष्णा का बुढ़ापा न आया, किन्तु हमारा ही बुढ़ापा आ गया।

यच्च कामसुखं लोके, यच्च दिव्य महत्सुखम्।
तृष्णाक्षय सुखलेशैः नार्हतः षोडशी कलाम्॥

संसार में जितने भी सुख काम के द्वारा मिलते हैं या बनाये गये हैं और जो भी सुन्दर तथा महान् सुख हैं वे सभी तृष्णा के नाश से जो सुख मिलता है उसके सोलहवें अंश की भी तुलना में नहीं आ सकते।
—अज्ञात

तृष्णा संतोष की बैरिन है, यह जहाँ पाँव जमाती है, संतोष को भगा देती है।
—सुदर्शन

तृष्णा रहित

चन्द्रमा और हिमालय पर्वत भी इतने शीतल नहीं, कदली वृक्ष और चन्दन भी इतने शीतल नहीं, जितना तृष्णारहित चित्त शीतल रहता है। —**वशिष्ठ**

तेजस्वी

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते।

—**कालिदास (रघुवंश)**

तेजस्वियों की आयु नहीं देखी जाती।

तेजवंत लघु गनिय न रानी। —**तुलसी (मानस, बाल०)**

जिस मनुष्य में तेज नहीं रहता उसकी सब अवहेलना करते हैं। आग बुझ जाने पर राख को सब लोग छूते हैं। —**अज्ञात**

जिस आदमी में अपने सतकर्मों का तेज होता है उसे उमर नहीं व्यापती।

—**अमृतलाल नागर (अमृत और विष)**

त्याग

त्याग के समान कोई सुख नहीं है। —**महाभारत (शान्ति पर्व)**

त्याग के सिवा इस संसार में कोई दूसरी शक्ति नहीं है।

—**स्वामी रामतीर्थ**

जिस आदमी की त्याग की भावना अपनी जाति से आगे नहीं बढ़ती, वह स्वयं स्वार्थी होता है और अपनी जाति को भी स्वार्थी बनाता है।

—**महात्मा गांधी**

कर्म से, धन से अथवा संतान से विद्वानों ने अमृत रूपी मोक्ष नहीं प्राप्त किया है, किन्तु एक त्याग से ही उसे प्राप्त किया है। —**अज्ञात**

It is easier to sacrifice great than little things.

—**Montaigne**

छोटी वस्तुओं की अपेक्षा बड़ी वस्तुओं का त्याग सरल है। —**मान्टेन**

त्यागमय भोग

जो कुछ है सम्पूर्ण जगत में, सबमें परमेश्वर है व्याप्त ।
धन किसका है ? लालच मत कर ! भोग त्याग से जो भी प्राप्त ।।

—ईषोपनिषद (अनुवादक दीनानाथ दिनेश)

त्याग और दान

त्याग तो बिल्कुल जड़ पर ही आघात करने वाला है। दान ऊपर ही ऊपर से कोपलें खोंटने जैसा है। **—विनोबा**

त्याग का स्वभाव दयालु है; दान का ममतामय। धर्म दोनों ही पूर्ण हैं। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है; दान का उसके ललाट में। **—विनोबा**

त्याग से पाप का मूलधन चुकता है, और दान में पाप का ब्याज। **—विनोबा**

त्याग पीने की दवा है, दान सिर-पर लगाने की सोंठ। त्याग में अन्याय के प्रति चिढ़ है; दाम में नाम का लिहाज है। **—विनोबा**

त्यागी

जिसने इच्छा का त्याग किया है; उसको घर छोड़ने की क्या आवश्यकता है, और जो इच्छा का बँधुआ है, उसको वन में रहने से क्या लाभ हो सकता है ? सच्चा त्यागी जहां रहे वही वन और वही भवन-कंदरा है। **—महाभारत**

त्याज्य

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।
न च विद्यागमोप्यस्ति वासं तत्र न कारयेत् ।। **—चाणक्य**

जिस देश में मान नहीं, जीविका नहीं, बन्धु नहीं और विद्या का भी लाभ नहीं है, वहाँ नहीं रहना चाहिए।

जाके प्रिय न राम वैदेही,
तजिये ताहि कोटि वैरी सम जद्यपि परम सनेही।
तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बन्धु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो कन्त व्रज वनिता भये सब मंगलकारी ।।

—तुलसी

जिस स्थान में धनी, वेद का पाठ करनेवाले, राजा, नदी और वैद्य—ये पाँच न हों उस स्थान में एक दिन भी नहीं रहना चाहिए। **—हितोपदेश**

निद्रा, तन्द्रा भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता इन अवगुणों को उन्नति चाहने वाले पुरुष को अवश्य त्याग देना चाहिए। **—हितोपदेश**

त्योहार

त्योहार साल की गति के पड़ाव हैं, जहाँ भिन्न-भिन्न मनोरंजन है, भिन्न-भिन्न आनंद है, भिन्न-भिन्न क्रीड़ास्थल है। **—वरुआ**

त्रिया-चरित्र

स्त्रियाश्चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः।

स्त्रियों का चरित्र और पुरुषों का भाग्य, मनुष्य क्या देवता भी नहीं जान सकते। **—भर्तृहरि**

सत्य कहैं कवि नारि स्वभाऊ। सब विधि अगम अगाध दुराऊ।
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई। जानि न जाय नारि-गति भाई॥

—तुलसी (मानस, अयोध्या)

त्रुटि

To find fault is easy; to do better may be difficult.

—Plutarch

त्रुटि निकालना सरल है; अच्छा कार्य करना कठिन है। **—प्लूटार्क**

If thou wouldst bear thy neighbour's fault, cast thine eyes upon thy own. **—Molinos**

यदि तुम्हें अपने पड़ोसी की त्रुटियों को सहना है तो अपनी दृष्टि खुद अपनी ही त्रुटियों पर डालो। **—मोलिना**

थकान

Fatigue is the best pillow. **—Franklin**

थकान सबसे अच्छी तकिया है। **—फ्रैंकलिन**

थूकना

Spit not against heaven, it will fall back in thy face.

—Proverb

चन्द्रमा पर थूकने वाले का थूक उसी के मुँह पर पड़ता है। **—कहावत**

दंड

लालनाद् वहवो दोषाः ताडनाद्बहवो गुणाः।
तस्मात्पुत्रं च शिष्यञ्च ताडयेन्नतु लालयेत्। **—चाणक्य**

दुलारने से बहुत दोष होते हैं और दंड देने से बहुत गुण, इसलिए पुत्र और शिष्य को दंड देना उचित है, बहुत प्यार करना नहीं।

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः।
उत्पथं प्रतिपन्नस्य कार्यं भवति शासनम्॥ **-वाल्मीकि (अयो०)**

यदि गुरु भी अभिमान में आकर कर्तव्य-अकर्तव्यता का ज्ञान खो बैठे और कुमार्ग पर चलने लगे तो उसे भी दण्ड देना आवश्यक हो जाता है।

एक कठोर दंड बरसों के प्रेम को मिट्टी में मिला देता है। **—प्रेमचन्द**

दंड सम्पूर्ण जगत् को नियम के अन्दर रखने वाला है, यह धर्म की सनातन आत्मा है; इसका उद्देश्य है—प्रजा को उद्दण्डता से बचाना।

—वेदव्यास (**शांति पर्व**)

Punishment is justice for the unjust. **—Augustine**

दंड अन्यायी के लिए न्याय है। **—आगस्टाइन**

The punishment of criminals should be of use; when a man is hanged, he is good for nothing. **—Voltaire**

अपराधी के दंड में उपयोगिता होनी चाहिए। जब एक मनुष्य को फांसी दे दी गयी तो इससे कोई लाभ नहीं। **—वाल्टेयर**

राजभिर्धृतदण्डाश्च कृत्वा पापानि मानवाः।
निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा॥

—वाल्मीकि (रा०, कि०)

मनुष्य पाप या अपराध करने के पश्चात् यदि राजा के दिये हुये दण्ड को भोग लेते हैं तो वे शुद्ध होकर पुण्यात्मा पुरुषों की भाँति स्वर्गलोक में आ जाते हैं।

Punishment is lame, but it comes. **—Herbert**

दंड लँगड़ा है लेकिन फिर भी वह आता है। **—हर्बर्ट**

यदि दण्ड न हो तो यह संसार नरक से भी बढ़कर दुर्गति में फँस जाय।

—अज्ञात

रात में भी जब कि चराचर जगत् सोता रहता है, केवल दण्ड जागता रहता है। **—अज्ञात**

जब दण्ड का आधार जाति होगी तब ऐसा दण्ड विवेक के स्थान पर द्वेष से ही प्रेरित होता है। **—पं० राम किंकर उपाध्याय (मानस-मुक्तावली-भाग-३)**

दंभ

जिस वस्तु को मनुष्य दे नहीं सकता उसे ले लेने की स्पर्धा से बढ़कर दूसरा दंभ नहीं। **—जयशंकर प्रसाद**

दंभ और अहंकार से पूर्ण मनुष्य अदृष्ट शक्ति के क्रीड़ा-कंदुक हैं।

—जयशंकर प्रसाद

दक्ष

The winds and waves are always on the side of the ablest navigators. **—Gibbon**

लहर और तूफान भी दक्ष नाविक का साथ देती हैं। **—गिबन**

To know how to hide one's ability is great skill.

—Rochefoucauld

अपनी योग्यता को कैसे छिपाएँ यह जानना बहुत बड़ी चातुरी है। **—रोशोको**

गीता अध्याय १२, श्लोक १६ के 'दक्ष' शब्द की व्याख्या—

दक्ष—शास्त्रीय क्रिया के सम्पादन में समर्थ। **—रामानुजाचार्य**

दक्ष—आलस्य छोड़कर कर्म करनेवाला। **—लोकमान्य तिलक**

दक्ष—अनेक कर्त्तव्यों के प्राप्त होने पर उनमें से तुरन्त ही यथार्थ कर्त्तव्य को निश्चित करने में समर्थ। **—शंकराचार्य**

दमन

दमन और आतंक की तेजी हुकूमत के डर का नाम हुआ करती है। हर एक हुकूमत आतंकवाद का सहारा तब लेती है जब उसे खुद अपनी हस्ती खतरे में मालूम पड़ती है। —पं० जवाहरलाल नेहरू

चित्तं दन्तं सुखावहं। —धम्मपद

दमन किया हुआ चित्त सुख-दायक होता है।

दया (दे० 'दयालुता')

दया सबसे बड़ा धर्म है। —महाभारत (शान्ति पर्व)

Sweet mercy is nobility's true badge. —**Shakespeare**

मधुर दया सज्जनता का वास्तविक चिह्न है। —शेक्सपियर

दया धर्म का मूल है, पाप-मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लगि घट में प्रान ॥ —तुलसी

Mercy is an attribute to God himself, and earthly power doth then show likest God's when mercy seasons justice.

—**Shakespeare**

दया परमात्मा का निजी गुण है, और लौकिक शक्ति उस समय ईश्वर तुल्य मालूम होती है जब न्याय में दया का सम्मिश्रण होता है। —शेक्सपियर

शुद्ध न्याय में शुद्ध दया होनी चाहिए। न्याय का विरोध करनेवाली दया, दया नहीं बल्कि क्रूरता है। —महात्मा गांधी

हरी डारि न तोड़िए, लागे छूरा बान।
दास 'मलूका' यों कहैं, अपना सा जिव जान ॥

—मलूकदास (संतसुधासार)

Mercy and truth are met together; righteousness and peace have kissed each other. —**Bible**

दया और सत्यता परस्पर मिलते हैं; धर्म और शांति एक दूसरे का साथ देते हैं। —बाइबिल

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप ॥ —**कबीर**

Nothing emboldens sin so much as mercy —**Shakespeare**

पाप को इतना कोई साहसी नहीं बनाता—जितना कि दया बनाती है ।
—**शेक्सपियर**

दया कौन पर कीजिए, का पर निर्दय होय ।
साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय ॥ —**कबीर**

Mercy is twice blessed; it blesseth him that gives, and him that takes. —**Shakespeare**

दया दोतरफी कृपा है । इसकी कृपा दाता पर भी होती है और पात्र पर भी ।
—**शेक्सपियर**

दया वह भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और गूंगे समझ सकते हैं । —**अज्ञात**

पापी हो या पुण्यात्मा अथवा वध के योग्य अपराध करनेवाले ही क्यों न हों, उन सब के ऊपर श्रेष्ठ पुरुष को दया करनी चाहिए; क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो सर्वथा अपराध न करता हो । —**वाल्मीकि (रा०, लंका०)**

We do pray for mercy and that same prayer, doth teach us all to render the deeds of mercy. —**Shakespeare**

हम सभी ईश्वर से दया की प्रार्थना करते हैं और वही प्रार्थना हमें दूसरों पर दया करना भी सिखाती है । —**शेक्सपियर**

दुनिया का अस्तित्व शस्त्रबल पर नहीं बल्कि सत्य, दया या आत्मबल पर है ।
—**महात्मा गांधी**

The cheapest of all things is kindness its exercise requiring the least possible trouble and self sacrifice.

—**S. Smiles**

दया सब वस्तुओं में सबसे अधिक सस्ती है, उसके प्रयोग में हमें सबसे कम कष्ट सहन करना और आत्मत्याग करना होता है । —**एस० स्माइल्स**

A God all mercy is a God unjust. —**Young**

केवल दया दिखाने वाला परमात्मा अन्यायी परमात्मा है। **—यंग**

Ask thyself daily to how many ill minded persons thou hast shown a kind disposition. **—Marcus Antonius**

नित्य अपने से पूछो कि तुमने आज कितने बुरे मनुष्यों के साथ दया का बर्ताव किया। **—मार्क्स एन्टोनियस**

दयालु

The truly generous is the truly wise, and he who loves not others, lives unblest. **—Home**

जो सच्चा दयालु है वही सच्चा बुद्धिमान है, और जो दूसरों से प्रेम नहीं करता उस पर ईश्वर की कृपा नहीं रहती। **—होम**

A kind heart is a fountain of gladness, making everything in its vicinity freshen into smiles. **—Irving**

दयालु हृदय प्रसन्नता का फव्वारा है, जोकि अपने पास की प्रत्येक वस्तु को मुस्कानों में भरकर ताजा बना देता है। **—इर्विंग**

दयालुता

Kindness gives birth to kindness. **—Sophocles**

दयालुता, दयालुता को जन्म देती है। **—सोफोक्लीज**

Mercifulness makes us equal to the Gods. **—Claudean**

दयालुता हमको ईश्वर तुल्य बनाती है। **—क्लाडियन**

Kindness is the golden chain by which society is bound together. **—Goethe**

दयालुता वह सोने की जंजीर है जिसके द्वारा समाज परस्पर बँधा है। **—गेटे**

दरिद्र

दरिद्र वे लोग हैं जो अपने को दरिद्र मानते हैं, दरिद्रता दरिद्र समझने में ही रहती है। **—एमर्सन**

उस मनुष्य से अधिक दरिद्र कोई नहीं है, जिसके पास केवल पैसा है।
—एडविन पग

दरिद्रता (दे० 'गरीबी', 'निर्धनता')

दरिद्रता धीरतया विराजते, कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते।
कदन्नता चोष्णतया विराजते, कुरूपता शीलयुता विराजते॥ **—चाणक्य**

दरिद्रता धीरता से सुशोभित होती है, कुवस्त्र स्वच्छता से अच्छा लगता है, कुअन्न उष्णता से अच्छा लगता है, कुरूपता सुशीलता से शोभा देती है।

दरिद्रता प्रकट करना दरिद्र होने से अधिक दुखदायी होता है। **—प्रेमचन्द**

Poverty is the mother of health. **—Proverb**

दरिद्रता तन्दुरुस्ती की माँ है। **—कहावत**

Poverty possesses this disease, that through want it teaches man to do evil. **—Euripides**

दरिद्रता में यह रोग है कि यह अभाव के माध्यम से व्यक्ति को बुराई करना सिखा देती है। **—यूरीपिडीज**

मानसिक दरिद्रता अर्थहीनता के समान ही है जो हमें गरीब बनाती है।
—अज्ञात

दरिद्रता कलह की जड़ है। **—कहावत**

दरिद्रता मित्रों को परखती है। **—कहावत**

दरिद्रता का भाव रखकर हम समृद्धि को अपने मानस क्षेत्र की ओर कैसे आकृष्ट कर सकते हैं। **—स्वेट मार्डेन**

Poverty parteth friends. **—Proverb**

दरिद्रता मित्रों को अलग करती है। **—कहावत**

Poverty the most deadly and prevalent of all diseases.
—Eugene O. Neil

दरिद्रता अत्यन्त प्राणनाशक और प्रचलित रोग है। **—यूजीन ओ-नील**

एको हि दोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दोरिव यो बभाषे ।
नूनं न दृष्टं कविनापि तेन दारिद्र-दोषो गुणराशिनाशी ।।

एक दोष गुणों के समूह में इस प्रकार छिप जाता है जिस प्रकार चन्द्रमा का कलंक उसके गुणों में छिप जाता है। यह बात जिस कवि (कालिदास) ने कही थी, वह भी यह न देख सका कि दरिद्रता का दोष ऐसा दोष है जो राशि राशि गुणों का विनाश कर देता है।

दरिद्रनारायण

अतिथि की भाँति दीन, दुःखी, पीड़ित, रोगी इत्यादि की सेवा करना भी समाज-पूजा का एक अंग है। दरिद्रनारायण भी एक महान् देवता हैं। उनका हम पर वह उपकार है, जिसका कभी बदला नहीं चुकाया जा सकता। **—विनोबा**

दर्शन-शास्त्र (दे० 'तत्त्वज्ञान' 'फ़िलासफी')

दर्शन जगत् को समझने और उसको उन्नत बनाने का श्रेष्ठतम साधन है।
—डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

Whence ? whether ? why ? how ?—These questions cover all philosophy. **—Joubert**

कहाँ से ? किधर ? क्यों ? कैसे ? सारा दर्शन-शास्त्र इन्हीं प्रश्नों की व्याख्या है। **—जूबर्ट**

Admiration is the foundation of all philosophy; investigation the progress and ignorance the end. **—Montaigne**

आश्चर्य सारे दर्शन-शास्त्र की आधारशिला है। अनुसन्धान उसका विकास एवं अज्ञानता उसकी समाप्ति है। **—मान्टेन**

दर्शन सर्वश्रेष्ठ संगीत है। **—प्लेटो**

दर्शन का सम्बन्ध विचार के ऊँचे से ऊँचे स्तर और व्यवहार के नीचे से नीचे स्तर से है। **—डा०सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)**

दर्शन का उद्देश्य, जीवन की व्याख्या करना नहीं, जीवन को बदलना है।
—राधाकृष्णन्

दवा

दिनान्ते च पिवेद्दुग्धं
निशान्ते च पिवेत् पयः।
भोजनान्ते पिवेत्तक्रं
किं वैद्यस्य प्रयोजनम् ॥ —अज्ञात

दिन के अन्त में दूध पिये, रात के अन्त में जल पिये, और भोजन के अन्त में मठा पिये, फिर वैद्य की क्या आवश्यकता ?

The best of all medicines are rest and fasting. **—Franklin**

आराम और उपवास सर्वोत्तम दवा है। **—फ्रैंकलिन**

Words are of course the most powerful drug used by mankind. **—Kipling**

शब्द ही अत्यन्त शक्तिशाली दवा है, मानव जिसे प्रयोग में लाता है। **—किप्लिंग**

जहाँ तक हो सके निरन्तर हँसते रहो—यह सस्ती दवा है। **—अज्ञात**

घर के पड़े कूड़े को ढक देने का और दवा का असर एक-सा होता है। **—महात्मा गांधी**

An apple a day keeps the doctor away.**—English Proverb**

प्रतिदिन एक सेब का प्रयोग डाक्टर को दूर रखता है। **—अंग्रेजी कहावत**

God heals and the doctor takes the fee. **—Franklin**

ईश्वर अच्छा करता है पर फीस डाक्टर लेता है। **—फ्रैंकलिन**

The art of medicine is to be properly learned only from its practice and exercise. **—Sydenhaur**

औषधि की कला केवल उसके अभ्यास और प्रयोग से अच्छी तरह सीखी जा सकती है। **—साइडेन हावर**

दस्तकारी

जिस चीज में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं, उसमें उसके हृदय का प्रेम और मन की पवित्रता सूक्ष्म रूप से खिल जाती है और उसमें मुर्दे को जिन्दा करने की शक्ति आ जाती है। **—पूर्णसिंह**

मनुष्य के हाथ से बने हुए कामों में उसकी प्रेममय पवित्र आत्मा की सुगन्ध आती है। —पूर्णसिंह

दाता

दाता का दोष उसी तरह छिप जाता है जिस तरह चन्द्र के किरण-जाल में उसका कलंक। —अज्ञात

अपनी भूख मार कर जो भिखारी को भीख दे वही तो दाता है।
—चतुरसेन शास्त्री

दान

दानेन भूतानिं वशीभवन्ति
दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम्।
परोपि बन्धुत्वमुपैति दानै-
र्दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति॥ —अज्ञात

दान से सभी प्राणी वश में हो जाते हैं, दान से शत्रुता का नाश हो जाता है। दान से पराया भी अपना हो जाता है। अधिक क्या कहें, दान सभी विपत्तियों का नाश कर देता है।

तुलसी पंछिन के पिये, घटै न सरिता-नीर।
दान दिये धन ना घटै, जो सहाय रघुबीर॥
—तुलसी (दोहावली)

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥ —कबीर

दान का भाव है—समाज का ऋण चुकाना। माता, पिता, गुरु, मित्र, संस्थाएँ, समाज सब की कृपा और सहयोग से मनुष्य की जीवन-यात्रा, उन्नति और वृद्धि होती है। दान देने वाला समाज, सृष्टि और परमेश्वर के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करता है। —गीता ज्ञान से

दान देना ही आमदनी का एकमात्र द्वार है। —स्वामी रामतीर्थ

As the purse is emptied the heart is filled. **—Victor Hugo**

ज्यों-ज्यों धन की थैली दान में खाली होती है दिल भरता जाता है।

—विक्टर ह्यूगो

दान तो वही है जो किसी को दीन नहीं बनाता। दया या मेहरबानी से जो हम देते हैं उसके कारण दूसरे की गर्दन झुकाते हैं। **—विनोबा**

प्रार्थना ईश्वर की तरफ आधे रास्ते तक ले जाती है, उपवास हमको उनके महल के द्वार तक पहुँचा देता है और दान से हम अन्दर प्रवेश करते हैं।

—कुरान

Charity begins at home, but should not end there.

—Proverb

दान घर से प्रारम्भ होता है। लेकिन वहीं उसको समाप्त नहीं होना चाहिए। **—कहावत**

जो दान अनीति और आलस्य को बढ़ाता है वह दान ही नहीं है ; वह तो अधर्म है। **—विनोबा**

हाड़ बड़ा हरि भजन कर, द्रव्य बड़ा कछु देय।
अकल बड़ी उपकार कर, जीवन का फल येह॥ **—कबीर**

तुम्हारा दाँया हाथ जो देता हो उसे बाँया हाथ न जानने पाये। **—बाइबिल**

दान का भाव बड़ा उत्तम भाव है, पर इसका भाव यह नहीं है कि समाज में दान-पात्रों का एक वर्ग उत्पन्न किया जाय। **—डा० सम्पूर्णानन्द**

बुद्धि और भावना के सहयोग से जो क्रिया होती है वही सुन्दर है। दान के माने 'फेंकना' नहीं बल्कि 'बोना' है। **—विनोबा**

आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव। **—कालिदास**

जैसे बादल पृथ्वी से जल लेकर फिर पृथ्वी पर बरसा देते हैं वैसे ही सज्जन भी जिस वस्तु का ग्रहण करते हैं उसका दान भी करते हैं।

Charity is the perfection and ornament of religion.

—Addison

दान धर्म की पूर्णता और उसका शृंगार है। **—एडीसन**

दारिद्रयनाशनं शीलं दानं दुर्गति-नाशनम् ।
अज्ञाननाशिनी प्रज्ञा भावना भय-नाशिनी ।। **—चाणक्य**

शील दरिद्रता का, दान दुर्गति का, बुद्धि अज्ञान का और भक्ति भय का नाश करती है ।

संसार में प्राणी पर संकट का समय बार-बार आता है । एकमात्र परमेश्वर ही संकट के समय सहायता करता है । दान देने वाले को प्रभु की सहायता सदा सुलभ होती है । **—दीनानाथ दिनेश (गीता-ज्ञान)**

देना उचित है ऐसा समझकर, बदला मिलने की आशा के बिना देश, काल और पात्र को देखकर जो दान होता है, उसे सात्त्विक दान कहा है ।

—गीता १७-२०

जो दान बदला मिलने के लिए अथवा फल को लक्ष्यकर और दुःख के साथ दिया जाता है, वह दान राजसी कहा गया है । **—गीता १७-२१**

देश, काल और पात्र का विचार किये बिना, बिना मान के तिरस्कार से दिया हुआ दान तामसी कहलाता है । **—गीता १७-२२**

तगड़े और तन्दुरुस्त आदमी को भीख देना, दान करना, अन्याय है ।

—विनोबा

प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव । **—कालिदास**

सज्जनों की रीति ही यह है कि जब कोई उनसे कुछ माँगे तो वे मुंह से कुछ न कहकर काम पूरा करके ही उत्तर दे डालते हैं ।

जो अपनी सम्पदा को जोड़-जोड़ कर जमा करता जाता है उस पाषाण-हृदय को क्या मालूम कि दान में कितनी मिठास है । **—श्रीराम शर्मा आचार्य**

दान का भी एक शास्त्र है, वह कोई विवेकशून्य क्रिया नहीं है । **—विनोबा**

"अभयः सर्वभूतानां नास्ति दानमतः परम् ।" **—वेदव्यास**

सबसे बड़ा दान तो अभयदान है जो सत्य, अहिंसा का पालन करने से दिया जा सकता है ।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर ।

सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो और हजारों हाथों से बाँटो । **—अथर्ववेद**

मेरे विचार से सच्चा दार्शनिक वह है, जो अपने पीने के दूध को फटा हुआ पाकर सिर धुनने के स्थान पर यह सोच कर संतोष कर लेता है कि इस दूध का तीन-चौथाई से ज्यादा हिस्सा पानी था। **—वाल्टेयर**

दार्शनिक कौन है ? जिसको प्रत्येक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का जोश होता है, जिसको सदा जानने की इच्छा बनी रहती है और जो (बिना जाने) कभी संतुष्ट नहीं होता, वही सच्चा दार्शनिक है। **—सुकरात**

दासता

सांसारिक वस्तुओं, स्थूल पदार्थों की इच्छा करना ही दासता का कारण है। **—स्वामी रामतीर्थ**

Slavery is contrary to the fundamental law of all societies. **—Montesquieu**

दासता सभी समाज के मौलिक नियमों के विरुद्ध है। **—मान्टेस्क्यू**

दासता के साँचे में ढलकर मनुष्य अपना मनुष्यत्व खो बैठता है। **—प्रेमचन्द**

दिमाग (दे० 'मन')

खाली दिमाग शैतान का कारखाना बन जाता है। **—महात्मा गांधी**

Strength of mind is exercise, not rest. **—Pope**

मस्तिष्क की शक्ति अभ्यास है, आराम नहीं। **—पोप**

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell and hell of heaven. **—Milton (Paradise Lost)**

मस्तिष्क स्वयं अपने में ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में बदल सकता है। **—मिल्टन**

The march of the human mind is slow. **—Burke**

मनुष्य के मस्तिष्क की प्रगति धीमी है। **—बर्क**

दिल

जिसने दिल खोया उसी को कुछ मिला।
फायदा देखा इसी नुकसान में ॥ **—अज्ञात**

Hearts are stronger than swords. —**Wendell Phillips**

दिल तलवार से अधिक शक्तिशाली है। —**वेन्डेल फिलिप्स**

A good heart is worth gold. —**Shakespeare**

अच्छा दिल सोने के मूल्य का होता है। —**शेक्सपियर**

दिल के घाव आसानी से नहीं भर जाया करते। —**अज्ञात**

दिल को दिल से राहत होती है। —**अज्ञात**

If a good face is a letter of recommendation a good heart is a letter of credit. —**Bulwer**

अगर सुन्दर चेहरा संस्तुति है तो नेक दिल विश्वास-पात्र। —**बुल्वर**

A merry heart maketh a cheerful countenance. —**Proverb**

दिल की खुशी चेहरे पर भी प्रसन्नता ला देती है। —**कहावत**

दिलचस्पी

दिलचस्पी (चाव) ही जीवन है और दिलचस्पी का अभाव ही मृत्यु है।
—**कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

दिवालिया

The worst bankrupt in the world is the man who has lost his enthusiasm. —**H. W. Arnold**

संसार का सबसे खराब दिवालिया वह है जिसने अपना जोश खो दिया है।
—**एच० डब्ल्यू० आरनाल्ड**

दीक्षा

दीक्षा का अर्थ आत्म-समर्पण है। आत्म-समर्पण बाहरी आडम्बर से नहीं होता, यह मानसिक वस्तु है। —**महात्मा गांधी (हरिजन)**

दीन

अमीर गरीब सभी जरूरतें रखते हैं इसलिए दीन हैं--अमीरों की जरूरत भी ज्यादा हैं, इसलिए वे औरों की अपेक्षा दीन भी ज्यादा हैं। —**सादी (गुलिस्तां)**

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय॥ —रहीम

दीनों के प्रति सज्जनों की ईर्ष्या भी वरदान होती है।

—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

दीनता (दे० 'नम्रता')

बाहर की दीनता भीतर भी दीनता ला देती है। —रवीन्द्र

दिव्य दीनता के रसहिं, का जानै जग अन्धु।
भली विचारी दीनता, दीनबन्धु से बन्धु॥ —रहीम

ऊँचे पानी ना टिकै नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिबै ऊँचा प्यासा जाय॥ —कबीर

Humility is the solid foundation of all the virtues.

—Confucius

दीनता सभी सद्‌गुणों की दृढ़ आधार-शिला है। —कन्फ्यूशस

It was pride that changed angels lnto devils; it is humility that makes men as angels. **—Augustine**

यह अभिमान था जिसने देवों को दैत्यों में बदल दिया, यह दीनता है जो मनुष्य को देवतुल्य बना देती है। —आगस्टाइन

आत्म-सम्मान की भावना ही दीन भावना की औषधि है। —अज्ञात

I believe the first test of truly great man is his humility.

—Ruskin

मेरा विश्वास है कि वास्तविक महान् पुरुष की पहली पहचान उसकी दीनता (नम्रता) है। —रस्किन

दीपक

भगवान् भुवनभास्कर के अभाव में दीपक भी आदरणीय है। —वेद

जो दीपक को अपने पीछे रखते हैं वे अपने मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं। —रवीन्द्र

दीर्घसूत्रता

Never puts off till tomorrow that which you can do today.
—Franklin

जो कार्य तुम आज कर सकते हो उसे कल पर कदापि मत छोड़ो।
—फ्रैंकलिन

दुनिया

All the world's a stage.
And all the men and women merely players.**—Shakespeare**

सम्पूर्ण विश्व एक नाट्यशाला है।
और सभी पुरुष एवं नारी उसके अभिनय-कर्ता हैं। **—शेक्सपियर**

The only fence against the world is a thorough knowledge of it. **—Locke**

दुनिया के विरुद्ध उसका पूर्णज्ञान ही मानव का रक्षक है। **—लॉक**

हाय यहाँ मानव मानव में,
समता का व्यवहार नहीं है।
हाहाकारों की दुनिया है,
स्वप्नों का संसार नहीं है॥

—शिवमंगल सिंह 'सुमन' (जीवन के गान)

This world is a comedy to those who think, a tragedy to those who feel. **—Horace Walpole**

विचारकों के लिए दुनिया सुखान्त है और हृदय वालों के लिए दुखान्त।
—होरेस वालपोल

यह दुनिया दर्पण के समान है, हर एक को अपना ही मुंह सामने खड़ा हुआ दिखाई पड़ता है।

The world is a bubble. **—Bacon**

दुनिया एक बुलबुला है। **—बेकन**

दुनिया दुनियादारों के लिए है जो अवसर और बल देखकर काम करते हैं ।
—अज्ञात

The world is a great book, of which they that never stir from home read only a page.

दुनिया एक महान् पुस्तक है, जिसमें से वे लोग, जो घर छोड़कर बाहर नहीं जाते, केवल एक पृष्ठ पढ़ पाते हैं । —अज्ञात

दुविधा

जब चित्त में कोई द्विधा नहीं होती तब समस्त पदार्थ-ज्ञान विश्राम लेता है और तब दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है । —स्वामी रामतीर्थ

सत्त नाम कड़वा लगै मीठा लागै दाम ।
दुविधा में दोऊ गये माया मिली न राम ।। —कबीर

हिरदे माहीं आरसी मुख देखा नहिं जाय ।
मुख तौ तब ही देखई दुविधा देइ बहाय ।। —कबीर

दुर्जन (दे० 'दुष्ट')

खलानां कंटकानां च द्विविधैव प्रतिक्रिया ।
उपानन्मुखभंगो वा दूरतो वा विसर्जनम् ।। —चाणक्य

दुर्जन और कंटक को दूर करने के दो ही उपाय हैं—उपानह से उनका मुख भंग कर देना या उनका दूर से ही त्याग कर देना ।

दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत् ।
उष्णो दहति चांगारः शीतः कृष्णायते करम् ।। —हितोपदेश

दुर्जनों के साथ मैत्री और प्रेम कुछ भी नहीं करना चाहिए । कोयला यदि जलता हुआ है तो स्पर्श करने पर जला देता है और यदि ठण्डा है तो हाथ काला कर देता है ।

देशत्यागेन दुर्जनः ।

दुर्जन को देश-त्याग करके छोड़ना चाहिए । —चाणक्य

दुर्जन के संसर्ग तें, सज्जन लहत कलेस।
ज्यों दशमुख अपराध ते, बंधन लह्यो जलेस ।। —वृंद

तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकाया विषं शिरे।
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे सर्वांगे दुर्जनां विषम् ।। —चाणक्य

साँप के दन्त में विष रहता है, मक्खी के सिर में माहुर रहता है, बिच्छू की पूंछ में विष होता है, किन्तु दुर्जन के सब शरीर में विष रहता है।

दाग जो लागा नील का सौ मन साबुन धोय।
कोटि जतन परबोधिए कागा हंस न होय ।। —कबीर

लोग कहते हैं कि दुर्जन पर हम प्रेम करते हैं तो वह और भी दुर्जन बनता है। लेकिन यह खयाल गलत है। अगर कहीं अन्धकार है और हम उसमें दीपक लाते हैं तो क्या अन्धकार ज्यादा हो जाता है। —विनोबा

न दुर्जनः साधुदशामुपैति
बहुप्रकारैरपि शिक्ष्यमाणः।
आमूलसिक्तः पयसा घृतेन
न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।। —चाणक्य

दुर्जन को अच्छी अच्छी शिक्षा दी जाय तब भी वह साधु नहीं हो सकता जैसे नीम के पेड़ को यदि घी और दूध से सींचा जाय तो भी वह मधुर नहीं होगा।

The sun also shines on the wicked. —Seneca

सूर्य दुर्जन पर भी चमकता है। —सेनेका

कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः। —माघ (शिशु०)

दुर्जनों की (दर्शन, सहवास आदि तो दूर) चर्चा भी अकल्याण करने वाली होती है।

प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधवः। —भारवि (किरातार्जुनीय)

दुर्जन स्वभाव से ही सज्जनों के शत्रु होते हैं।

दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्ययालंकृतोऽपि सः।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः ।। —भर्तृहरि

विद्या से विभूषित होने पर भी दुर्जन का परित्याग ही उचित है; मणि धारण करने वाला साँप क्या भयंकर नहीं होता ?

To see and listen to the wicked is already the beginning of wickedness. **—Confucius**

दुर्जन को देखने और उसकी बातों को सुनने से ही दुर्जनता का आरम्भ हो जाता है। **—कन्फ्यूशस**

दुर्दिन (दे० 'दुःख' 'विपत्ति')

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचानि।
सोच नहीं वित हानि की, जो न होय हितहानि ॥ **—रहीम**

There is no education like adversity. **—Disraeli**

विपत्ति से बढ़ कर कोई शिक्षा नहीं। **—डिजरायली**

जब बुरे दिन आते हैं तो आँखें पहले ही बन्द हो जाती हैं। **—सुदर्शन**

जाकहँ विधि दारुण दुख देहीं। ताकी मति आगे हरि लेहीं। **—तुलसी**

जब मनुष्य के बुरे दिन हों, उसे अत्यधिक उपदेश देने की अपेक्षा उसकी थोड़ी सहायता कर देना ज्यादा अच्छा है। **—बुलवर**

दुरदिन परे रहीम कहि, दुरथल जैयत भागि।
ठाढ़े हूजत घूर पर, जब घर लागत आगि ॥ **—रहीम**

दुर्बल

दुर्बल तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक नुकताचीनी किया करते हैं। **—रामतीर्थ**

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस सों, सार भसम हो जाय ॥ **—कबीर**

दैवोऽपि दुर्बलघातकः—कमजोरों को देवता भी मारता है। **—हितोपदेश**

दुर्बलता

विलासिता की ओर आकर्षण और तपस्या की ओर से विरक्ति का होना मानव स्वभाव की दुर्बलता है। **—अज्ञात**

All wickedness is weakness. **—Milton**

सारी दुर्जनता दुर्बलता है। **—मिल्टन**

Some of our weaknesses are born in us, others are the result of education; it is a question which of the two give us most trouble. **—Goethe**

हमारी कुछ दुर्बलताएँ पैदाइशी होती हैं, और कुछ शिक्षा का परिणाम हैं। यह एक प्रश्न है कि इन दोनों में से कौन हमें अधिक कष्ट देती हैं। **—गेटे**

दुर्भाग्य और सौभाग्य

दुर्भाग्य नाम है श्रमविहीन जीवन का।
सौभाग्य मनुज श्रम की ही शीतल छाया है॥
भर गया पसीने से जिसका सारा तन मन।
हर स्वर्ग उसी के ही घर चलकर आया है॥

—रमाकान्त श्रीवास्तव (युग की नवल वंदना के स्वर)

दुर्भावना

दुर्भावनाओं को मैं मनुष्यत्व का कलंक मानता हूँ। **—महात्मा गांधी**

A man's venom poisons himself more than his victim.

—Charles Buxton

मनुष्य की दुर्भावना उसके शत्रु की अपेक्षा उसे ही अधिक दुःख देती है।

—चार्ल्स बक्सटन

दुर्लभ

दुर्लभं हि सदा सुखम्। **—वाल्मीकि (रा० अयो०)**

यह दुर्लभ है कि मनुष्य सदा सुखी ही रहे।

संत समागम हरिकथा, तुलसी दुर्लभ दोय।
दारा सुत अरु लक्ष्मी, पापी के भी होय॥ **—तुलसी**

प्रेम सहित अँसुवन ढरै, धरै जुगल को ध्यान।
नारायण ता भक्त को, जग में दुर्लभ जान॥

—नारायण स्वामी

दुश्मन (दे० 'शत्रु')

जब तुम अपनी आँख उस परमात्मा से बन्द कर लेते हो, तब दुश्मन आते हैं।
—स्वामी रामतीर्थ

Man is his own worst enemy. **—Cicero**

मनुष्य स्वयं ही अपना सबसे बड़ा शत्रु है। **—सिसरो**

If you want enemies, excel others, if friends, let others excel you. **—Colton**

यदि तुम शत्रु चाहते हो तो दूसरे से आगे बढ़ो, यदि मित्र तो दूसरे को अपने से आगे बढ़ने दो। **—कोल्टन**

शत्रु के साथ मृदुता का व्यवहार अपकीर्ति का कारण बनता है और पुरुषार्थ का व्यवहार यश का। **—रामप्रताप त्रिपाठी**

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः। **—श्रीकृष्ण (गीता)**
आत्मा ही आत्मा का बन्धु है और आत्मा ही आत्मा का दुश्मन है।

तात, तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान-धाम मन, करहिं निमिष महुँ छोभ॥
—तुलसी (मानस, अरण्य०)

दुश्मनी

दुश्मनी दोस्ती में छिप कर आती है। **—डा० रामकुमार वर्मा**

दुष्ट (दे० 'दुर्जन')

शाम्येत् प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः। **—कालिदास (कुमा०)**
दुष्ट उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त होता है।

दुष्टा भार्या, दुष्ट पुत्र, कुटिल राजा, दुष्ट मित्र, दूषित सम्बन्ध और दुष्ट देश को तो दूर से ही छोड़ देना चाहिए। **—वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)**

कितनी भी सेंक—मालिश आदि करने पर भी जैसे कुत्ते की पूंछ टेढ़ी ही रहती है वैसे ही कितनी भी सेवाशुश्रूषा की जाय, दुष्ट सीधे नहीं होते।
—अज्ञात

अन्तर्गतमलो दुष्टस्तीर्थस्नानशतैरपि ।
न शुध्यति यथा भाण्डं सुराया दाहितं च तत् ।। —चाणक्य

जिसके हृदय में विकारादि है, अथवा तापादि है, ऐसा दुष्ट सौ बार भी तीर्थस्नान से शुद्ध नहीं होता, जैसे मदिरा का पात्र जलाया जाय तो भी वह शुद्ध नहीं होता । —चाणक्य

कवि कोविद गावहिं अस नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ।।
—तुलसी (मानस, उत्तर)

खल परिहरिय श्वान की नाई । —तुलसी (मानस, उत्तर)

बसिये तहाँ विचार के, जहाँ दुष्ट डर नाहिँ ।
होत न कबहूँ भँवर डर, ज्यों चंपक बन माहिँ ।। —अज्ञात

दुष्ट न छाँड़े दुष्टता, कैसे हूँ सुख देत ।
धोये हूँ सौ बेर के, काजर होत न सेत ।। —वृन्द

सन इव खल पर-बन्धन करई । खाल कढ़ाइ विपति सहि मरई ।।
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ।।
—तुलसी (मानस, उत्तर)

क्षमा खड्ग लीने रहैं, खल को कहा बसाय ।
अगिन परी तृन रहित थल, आपहिं ते बुझि जाय ।। —वृन्द

बर सम्पदा विनाशि नशाहीं । जिमि कृषि हति हिम उपल विलाहीं ।।
दुष्ट उदय जग आरति हेतू । यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ।।
—तुलसी (मानस, उत्तर)

वरु भल वास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ विधाता ।।
—तुलसी

जैसे उल्लू को सूर्य नहीं दिखाई पड़ता, इसी प्रकार दुष्ट को भगवान् नहीं दिखाई पड़ते । —स्वामी भजनानन्द

यदि दुष्ट को कोई भला कहे तो वह भला नहीं होगा । कहने से विष मधुर और नमक मीठा नहीं हो सकता । —अज्ञात

परस्वहरणे युक्तं परदाराभिमर्शकम् ।
त्याज्यमाहुर्दुरात्मानं वेश्म प्रज्वलितं यथा ।। **—वाल्मीकि**

जिस प्रकार जलता हुआ घर त्याग देने योग्य है, उसी प्रकार जो पराया धन हड़पने में लगा हो और पर-स्त्री के साथ भोग करता हो, उस दुष्टात्मा को भी त्याग देने योग्य बताया गया है।

अकरुणत्वमकारणविग्रहः परधने परयोषिति च स्पृहा ।
स्वजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मानम् ।।

—भर्तृहरि

निर्दयता, अकारण वैर करना, दूसरे के धन और स्त्री की सर्वदा इच्छा करना, अपने परिवार और मित्रों की उन्नति न देख सकना, यह दुष्टों की स्वाभाविक आदत है।

दुःख (दे० 'विपत्ति')

दुःख को दूर करने की एक ही अमोघ औषधि है—मन से दुःखों की चिन्ता न करना। **—वेदव्यास (महा०)**

दुःख की बलिहारी जाऊँ। जब यह होता है तभी तो प्रभु की याद आती है। **—अज्ञात**

दुःख मनुष्य के विकास का साधन है। सच्चे मनुष्य का जीवन दुःख में ही खिल उठता है। सोने का रंग तपाने पर ही चमकता है।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी'

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपत काल परखियहि चारी ।।

—तुलसी (मानस, अरण्य)

दुःख की उत्पत्ति पाप से होती है। **—भगवान् बुद्ध**

यदि काँटों पर पड़ जाने से परमेश्वर की याद आती हो तो प्यारे! जब देखो कि संसार के काम-धन्धों में उलझ कर राम भूलने लगा है, झटपट अपने तईं नुकीले काँटों पर गिरा दो। और कुछ नहीं तो पीड़ा के बहाने याद आ ही जायगी। **—स्वामी रामतीर्थ**

ईश्वर जिसे भी मिले हैं, दुःख में ही मिले हैं। सुख का साथी जीव है और दुःख का साथी ईश्वर है। **—रामचन्द्र डोंगरे (श्रीमदभागवत रहस्य)**

रहिमन विपदा हू भली जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में जानि परत सब कोय ॥ —रहीम

स्वेच्छा से ग्रहण किये हुए दुःख को ऐश्वर्य के समान भोगा जा सकता है ।
—शरत् (शेष प्रश्न)

न ह वै सशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरपद्धतिरस्ति । —छान्दोग्य उ०

निश्चयपूर्वक जब तक यह शरीर बना हुआ है तब तक सुख और दुःख का निवारण नहीं हो सकता ।

चिर ध्येय यही जलने का, ठंढी विभूति बन जाना ।
पीड़ा की अन्तिम सीमा, दुःख का फिर सुख हो जाना ॥
—महादेवी वर्मा

दुःख भोगने से सुख के मूल्य का ज्ञान होता है । —सादी

रंज से खुगर हुआ इन्सां तो मिट जाता है रंज ।
मुशकिलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसाँ हो गईं ॥ —गालिब

गम राह नहीं कि साथ दीजै । दुःख बोझ नहीं कि बाँट लीजै ॥ —नसीम

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय ।
सुनि अठिलैहें लोग सब बाँटि न लैहें कोय ॥ —रहीम

यदि मनुष्य पाप कर भी ले तो उसे पुनः न दोहराये, न उसे छुपाये और न उसमें रत हो । पाप का संचय ही सब दुःखों का मूल है । —गौतम बुद्ध

सुख के बाद दुःख आता है और दुःख के बाद सुख । मनुष्य के दुःख और सुख गाड़ी के पहिये की तरह घूमते रहते हैं । —वेदव्यास (महा०)

Men shut their doors against the setting sun.—**Shakespeare**
मनुष्य अपना दरवाजा डूबते हुए सूर्य को देख कर बन्द कर लेते हैं ।
—शेक्सपियर

दुःख की पिछली रजनी बीच ।
विकसता सुख का नवल प्रभात ॥ —जयशंकर प्रसाद

Little minds are tamed and subdued by misfortune; but great minds rise above it. **—Washington Irving**

दुःख छोटे मनुष्यों को वशीभूत कर उन्हें निस्तेज कर देता है, परन्तु महान् पुरुष दुःख से ऊपर उठ जाते हैं। **—वाशिंगटन इर्विंग**

दुःख में अपने स्वजनों को देखते ही दुःख उसी प्रकार बढ़ जाता है जैसे रुकी वस्तु को बाहर निकालने के लिये बड़ा भारी द्वार मिल जाय।

—कालिदास (कुमार संभव ४-२६)

बिना दुख के सुख है निस्सार।
बिना आँसू के जीवन भार॥ **—अज्ञात**

दुःख केवल चित्त की एक वृत्ति है, सत्य है केवल आनन्द। **—प्रेमचन्द**

The deeper the sarrow, the less tongue hath it.

—The Talmud

गहरे दुःख से वाणी मूक हो जाती है। **—दि टालमड**

बुढ़ापा दुःख है, धनक्षय दुःख है, अप्रिय पुरुषों के साथ रहना दुःख है और प्रियजनों का बिछुड़ना दुःख है। वध और बन्धन से भी सब को दुःख होता है, तथा स्त्री के कारण और स्वाभाविक रूप से भी दुःख होता ही रहता है।

—वेदव्यास

व्यस्त मनुष्य को आँसू बहाने के लिए समय नहीं। **—बायरन**

दुःख रहता है तो दुखियों के प्रति हमदर्दी रहती है और भगवान् का निरंतर स्मरण होता है। सुख में मनुष्य का हृदय निष्ठुर बन जाता है वह भगवान् को भूल जाता है। **—वेदव्यास (महाभारत)**

दुःखदायक

वृद्धकाले मृता भार्या बंधुहस्तगतं धनम्।
भोजनं च पराधीनं तिस्रः पुंसां विडम्बनाः॥ **—चाणक्य**

बुढ़ापे में मरी स्त्री, बन्धु के हाथ में गया धन और दूसरों के अधीन भोजन ये तीन पुरुषों की विडम्बना हैं, अर्थात् दुःखदायक होते हैं।

दुःखहारी जीवन योग

यह योग अति खाकर न सधता है न अति उपवास से ।
सधता न अतिशय नींद अथवा जागरण के त्रास से ।।
जब युक्त सोना जागना आहार और विहार हो ।
हो दुःखहारी योग जब परिमित सभी व्यवहार हों ।।

—गीता–६।१६-१७ (श्रीहरिगीता से)

दुःखी

अन्याय सहने वाले से ज्यादा दुःखी अन्याय करने वाला होता है । **—प्लेटो**

दुखियारों को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नहीं होते । **—प्रेमचन्द**

लोकेषु निर्धनो दुःखी ऋणग्रस्तस्ततोऽधिकम् ।।
ताभ्यां रोगयुतो दुःखी तेभ्यो दुःखी कुभार्यकः ।। **—विदुर**

संसार के दुखियों में पहला दुःखी निर्धन है । उससे अधिक दुःखी वह है जिसे किसी का ऋण चुकाना हो । इन दोनों से अधिक दुःखी है सदा रोगी मनुष्य । सब से दुःखी वह है जिसकी पत्नी दुष्टा हो ।

जब तक तुम्हें अपने लिये सुख की और दूसरे के लिये दुःख की चाह है तब तक तुम सदा दुःखी ही रहोगे । **—हनुमान प्रसाद पोद्दार**

दूत

नीति विरोध न मारिय दूता । **—तुलसी**

दृढ़ता

दृढ़ता बड़ी प्रबल शक्ति है । पुरुष के सर्व गुणों की रानी है । दृढ़ता वीरता का एक प्रधान अंग है । **—प्रेमचन्द**

दृढ़ता प्रेममन्दिर की पहली सीढ़ी है । **—प्रेमचन्द**

चित्त में दृढ़ हो जाने वाला निश्चय चूने का फर्श है, जिसको आपत्ति के थपेड़े और भी पुष्ट कर देते हैं । **—प्रेमचन्द**

When firmness is sufficient, rashness is unnecessary.

—Napoleon

जब दृढ़ता पर्याप्त है तो उतावलापन अनावश्यक है। **—नेपोलियन**

The purpose firm is equal to the deed. **—Young**

ध्येय में दृढ़ निश्चय कर्म के सदृश है। **—यंग**

दृढ़-प्रतिज्ञ

He who is firm and resolute in will moulds the world to himself. **—Goethe**

दृढ़प्रतिज्ञ मनुष्य संसार को अपनी इच्छा के अनुसार झुका लेता है। **—गेटे**

वह दृढ़प्रतिज्ञ मानव जो प्राण देने के लिए तैयार रहता है, ब्रह्माण्ड-तरु को हाथों पर उठा सकता है। **—रोम्यां रोलाँ**

दृष्टान्त

Example is the school of mankind. **—Burke**

दृष्टान्त मानवता की पाठशाला है। **—बर्क**

Example is more efficacious than precept. **—Dr. Johnson**

दृष्टान्त उपदेश से अधिक फलोत्पादक होता है। **—डा० जॉन्सन**

Noble examples stir us up to noble actions, and the very history of large and public souls inspires man with generous thoughts. **—Seneca**

अच्छे दृष्टान्त हमको अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं, एवं महान् आत्माओं का इतिहास हमें उदार विचार के लिए प्रोत्साहित करता है। **—सेनेका**

देवता

जो समस्त मानव जाति को अपनेपन से ओतप्रोत देखते हैं वे देवता हैं।

—अज्ञात

पथः श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्। **—कालिदास**

पवित्र मार्ग के प्रदर्शक देवतागण स्वयं पाप-मार्ग का अनुसरण नहीं करते।

अस्वाधीनं कथं दैवं प्रकारैरभिराध्यते।
स्वाधीनं समतिक्रम्य मातरं पितरं गुरुम् ॥ **—वाल्मीकि**

माता, पिता और गुरु—ये प्रत्यक्ष देवता हैं, इनकी अवहेलना करके अप्रत्यक्ष देवता की विविध उपचारों से आराधना करना कैसे ठीक हो सकता है ?

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये।
भावो हि विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम् ॥ **—चाणक्य**

देवता न काठ में है, न पत्थर में है, न मिट्टी की मूर्ति में है, निश्चय है कि देवता भाव में विद्यमान है, इस हेतु भाव ही सब कारण है।

जिनके विचार और कार्य उदारतापूर्ण हैं, जो दूसरे लोगों की सुविधा का अधिक ध्यान रखते हैं, वास्तव में वे ही इस भूलोक के देवता हैं।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

देश

यस्मिन्देशे न सन्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।
न च विद्यागमोऽप्यस्ति वासं तत्र न कारयेत् ॥ **—चाणक्य**

उस देश में न रहे, जहाँ न आदर है, न जीविका, न बन्धु और न नये ज्ञान की आशा। जिस देश की शक्ति आन्तरिक शान्ति रखने में खत्म होती है वह कोई अमली काम नहीं कर सकता। **—विनोबा**

जैसे मनुष्य बाल, वृद्ध और तरुण अवस्थाओं में परिणत हुआ करता है वैसे ही देश की दशा में भी परिवर्तन होता रहता है। **—अज्ञात**

देश-भक्त

देश-भक्त के चरणस्पर्श से कारागार अपने को स्वर्ग समझ लेता है, इन्द्रासन उसे देख कर काँप उठता है, देवता नंदन-कानन से उस पर पुष्प-वृष्टि कर अपने को धन्य मानते हैं, कलकल करती हुई सुर-सरिता और ताण्डव-नृत्य में लीन रुद्र उसका जय जयकार करते हैं। **—अज्ञात**

There can be no affirmity nearer than our country. **—Plato**

अपने देश से बढ़ कर दूसरा कोई नजदीकी सम्बन्ध नहीं। **—प्लेटो**

देशभक्ति का दम भरने वालों के लिए जनता का खून चूसना बहुत बड़ा अपराध है। —**प्रेमचन्द**

Patriotism is the last refuge of a scoundrel. —**Dr. Johnson**

दुरात्मा के लिए देशभक्ति अन्तिम शरण है। —**डा० जान्सन**

देश-भक्त कर्त्ता की पवित्र कृति है। —**अज्ञात**

देश-सेवक

जो जनता की सेवा करना चाहते हैं या जिन्हें सच्चे धार्मिक जीवन के दर्शन करने की आशा है वे विवाहित हों या कुंवारे, उन्हें ब्रह्मचारी का जीवन बिताना चाहिए। —**महात्मा गांधी**

देश-हित

निज के विचारों तथा देश के हित में किसे चुना जाय यह जानना कभी-कभी कठिन हो जाता है। कभी ऐसा अवसर आता है जब बहुजन हिताय अपने मौलिक विश्वासों को भी तिलांजलि देनी पड़ती है। —**सरदार पटेल**

देशाटन

Travel teaches toleration —**Disraeli**

देशाटन सहनशीलता की शिक्षा देता है। —**डिजरायली**

The use of travelling is to regulate imagination by reality. —**Dr. Johnson**

देशाटन का लाभ कल्पना की वास्तविकता में व्यवस्था करना है। —**डा० जान्सन**

देशोद्धारक

देश का उद्धार विलासियों के हाथ से नहीं हो सकता; उसके लिए सच्चा त्याग होना चाहिए। —**प्रेमचन्द**

देह

इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जाए। —**मीरा**

If anything is sacred, the human body is sacred. —**Whitman**

यदि संसार में कोई वस्तु पवित्र है तो वह है मनुष्य की देह । —ह्विटमैन

विश्व में केवल एक ही मन्दिर है और वह है मनुष्य-शरीर । इस स्वरूप से अधिक पवित्र कोई स्थान नहीं । —नावलिस

इस देह में स्थित जो परमपुरुष है वह सर्वसाक्षी अनुमति देने वाला, भर्ता, भोक्ता, महेश्वर और परमात्मा भी कहलाता है । —गीता–१३।२२

दोष

Ninety-nine times out of a hundred no man ever criticises himself for any thing no matter how wrong he may be.

—Dale Carnegie

निन्नानबे प्रति सैकड़ा अवस्थाओं में कोई भी मनुष्य अपने को दोषी नहीं ठहराता, चाहे उसकी कितनी ही भयंकर भूल क्यों न हो । —डेल कारनेगी

दोषभरी बात यदि यथार्थ है तब भी नहीं कहना चाहिए जैसे अंधे को अंधा कहने पर तकरार हो जाती है । —अज्ञात

To find out a girl's faults, praise her to her girl friends.

—Franklin

यदि किसी लड़की के दोष जानना हो तो उसकी सखियों में उसकी प्रशंसा करो । —फ्रैंकलिन

सभी छिपे हुए दोषों का उपाय ढूंढ़ना कठिन होता है । —महात्मा गांधी

परस्वानां च हरणं परदाराभिमर्शनम् ।
सुहृदामतिशंका च त्रयो दोषाः क्षयावहाः ।।

—वाल्मीकि (रा०, लंका)

दूसरों के धन का अपहरण, पर-स्त्री के साथ संभोग और अपने हितैषी सुहृदों के प्रति घोर अविश्वास—ये तीनों दोष जीव का नाश करने वाले हैं ।

The greatest of faults, I should say, is to be conscious of none. **—Carlyle**

सबसे बड़ा दोष, मेरी राय में, किसी भी दोष का ज्ञान न होना है ।

—कार्लाइल

जब आप के अपने द्वार की सीढ़ियाँ मैली हैं, तो अपने पड़ोसी की छत पर पड़े हुए बर्फ की शिकायत मत कीजिए। **—कन्फ्यूशियस**

To find fault is easy; to do better may be difficult.

—Plutarch

दोष निकालना सरल है, उससे अच्छा करना कठिन। **—प्लूटार्क**

नारायन निज हिये में, अपने दोष विचार।
ता पीछे तू और के, अवगुन भले निहार॥ **—नारायण स्वामी**

दोषदर्शन

दूसरे के दोष पर ध्यान देते समय हम स्वयं बहुत भले बन जाते हैं। परन्तु जब हम अपने दोषों पर ध्यान देंगे, तो अपने आप को कुटिल और कामी पायेंगे। **—महात्मा गांधी**

अपनी आँख में शहतीर देख पाने की अपेक्षा दूसरों की आँख में तिनका देख लेना अधिक सुगम है। **—स्वामी रामतीर्थ**

खताये बुजुर्गा गिरफ्तन खतास्त। **—शेख सादी**

बड़ों का दोष दिखाना दोष है।

दोषा वाच्या गुरोरपि।

गुरु का भी दोष कह देना चाहिए। **—अज्ञात**

दोषान्वेषण

दूसरों में दोष न निकालना, दूसरों को इतना उन दोषों से नहीं बचाता जितना अपने को बचाता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

दूसरों के दोषों की चर्चा करने से अपना चित्त प्रक्षुब्ध ही होता है, इसलिए उसके बर्तन की ओर लक्ष्य न देकर अथवा उसकी चर्चा करने न बैठकर उसके प्रति उपेक्षा दृष्टि से देखना ही श्रेयस्कर है। **—स्वामी विवेकानन्द**

जब तक तुम में दूसरों के दोष ही दोष देखने की आदत मौजूद है तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात्कार करना अत्यन्त कठिन है। **—स्वामी रामतीर्थ**

दोषारोपण

उस काम को जिसे तुम दूसरे व्यक्ति में बुरा समझते हो, स्वयं त्याग दो परन्तु दूसरों पर दोष मत लगाओ। **—स्वामी रामतीर्थ**

दोस्त (दे० 'मित्र')

A friend in need is a freind indeed. **—Proverb**

आवश्यकता के समय काम आने वाला दोस्त वास्तव में दोस्त है।

—कहावत

A true friend is one soul in two bodies. **—Aristotle**

सच्चे मित्र वे हैं जिनके शरीर दो, पर आत्मा एक होती है। **—अरस्तू**

मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः। **—कालिदास**

जिसने अपने मित्रों का काम करने का बीड़ा उठाया है, वह विलम्ब नहीं किया करता।

The only way to have a friend is to be one. **—Emerson**

मित्र पाने का एक ही मार्ग है, स्वयं किसी का मित्र बन जाना। **—एमर्सन**

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च॥ **—चाणक्य**

विदेश में विद्या दोस्त होती है, गृह में भार्या दोस्त है, रोगी का दोस्त औषध और मरे का दोस्त धर्म है।

Life has no blessing like a prudent friend. **—Euripides**

विवेकी मित्र ही जीवन का सबसे बड़ा वरदान है। **—यूरीपिडीज**

दोस्ती (दे० 'मित्रता')

Friendship improves happiness, and abates misery, by doubling our joy and dividing our grief. **—Addison**

दोस्ती खुशी को दूना करके और दुःख को बाँट कर प्रसन्नता बढ़ाती है तथा मुसीबत कम करती है। **—एडीसन**

Be slow to fall into friendship, but when thou art in continue firm and constant. **—Socrates**

दोस्ती धीरे-धीरे पैदा करो, परन्तु जब कर लो तो उसमें दृढ़ और अचल रहो। —सुकरात

दौलत, द्रव्य (दे० 'धन')

All wealth is the product of labour. **—Locke**

सारी दौलत परिश्रम की उपज है। —लाक

Money is the life blood of the nation. **—Swift**

दौलत राष्ट्र का जीवन-रक्त है। —स्विफ्ट

That man is the richest whose pleasures are the cheapest. **—Thourau**

वही व्यक्ति सबसे अधिक दौलतमंद है जिसकी प्रसन्नता सबसे सस्ती है। —थोरो

Riches amassed in haste will diminish but those collected by little and little will multiply. **—Goethe**

जल्दी इकट्ठी की हुई दौलत जल्दी ही घट जाती है। थोड़ी-थोड़ी इकट्ठी की गयी बढ़ती है। —गेटे

Wealth consists not in having great possessions, but in having few wants. **—Epicurus**

दौलत अधिक संग्रह में नहीं वरन् थोड़ी आवश्यकताएँ होने में है। —इपीक्युरस

Ready money is Aladdin's lamp. **—Byron**

नकद दौलत अलादीन का चिराग है। —बायरन

दौलत की तीन तरह की गति होती है—दान, भोग और नाश; जो न देता है, न खाता है उसकी तीसरी गति होती है, अर्थात् वह नाश को प्राप्त होती है। —हितोपदेश

दोषारोपण

उस काम को जिसे तुम दूसरे व्यक्ति में बुरा समझते हो, स्वयं त्याग दो परन्तु दूसरों पर दोष मत लगाओ। **—स्वामी रामतीर्थ**

दोस्त (दे० 'मित्र')

A friend in need is a freind indeed. **—Proverb**

आवश्यकता के समय काम आने वाला दोस्त वास्तव में दोस्त है।

—कहावत

A true friend is one soul in two bodies. **—Aristotle**

सच्चे मित्र वे हैं जिनके शरीर दो, पर आत्मा एक होती है। **—अरस्तू**

मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः। **—कालिदास**

जिसने अपने मित्रों का काम करने का बीड़ा उठाया है, वह विलम्ब नहीं किया करता।

The only way to have a friend is to be one. **—Emerson**

मित्र पाने का एक ही मार्ग है, स्वयं किसी का मित्र बन जाना। **—एमर्सन**

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च॥ **—चाणक्य**

विदेश में विद्या दोस्त होती है, गृह में भार्या दोस्त है, रोगी का दोस्त औषध और मरे का दोस्त धर्म है।

Life has no blessing like a prudent friend. **—Euripides**

विवेकी मित्र ही जीवन का सबसे बड़ा वरदान है। **—यूरीपिडीज**

दोस्ती (दे० 'मित्रता')

Friendship improves happiness, and abates misery, by doubling our joy and dividing our grief. **—Addison**

दोस्ती खुशी को दूना करके और दुःख को बाँट कर प्रसन्नता बढ़ाती है तथा मुसीबत कम करती है। **—एडीसन**

Be slow to fall into friendship, but when thou art in continue firm and constant. **—Socrates**

दोस्ती धीरे-धीरे पैदा करो, परन्तु जब कर लो तो उसमें दृढ़ और अचल रहो। **—सुकरात**

दौलत, द्रव्य (दे० 'धन')

All wealth is the product of labour. **—Locke**

सारी दौलत परिश्रम की उपज है। **—लाक**

Money is the life blood of the nation. **—Swift**

दौलत राष्ट्र का जीवन-रक्त है। **—स्विफ्ट**

That man is the richest whose pleasures are the cheapest. **—Thourau**

वही व्यक्ति सबसे अधिक दौलतमंद है जिसकी प्रसन्नता सबसे सस्ती है। **—थोरो**

Riches amassed in haste will diminish but those collected by little and little will multiply. **—Goethe**

जल्दी इकट्ठी की हुई दौलत जल्दी ही घट जाती है। थोड़ी-थोड़ी इकट्ठी की गयी बढ़ती है। **—गेटे**

Wealth consists not in having great possessions, but in having few wants. **—Epicurus**

दौलत अधिक संग्रह में नहीं वरन् थोड़ी आवश्यकताएँ होने में है। **—इपीक्युरस**

Ready money is Aladdin's lamp. **—Byron**

नकद दौलत अलादीन का चिराग है। **—बायरन**

दौलत की तीन तरह की गति होती है—दान, भोग और नाश; जो न देता है, न खाता है उसकी तीसरी गति होती है, अर्थात् वह नाश को प्राप्त होती है। **—हितोपदेश**

Riches serve a wise man but command a fool. **—Proverb**

दौलत बुद्धिमान् की सेवा करती है, और मूर्ख पर शासन। **—कहावत**

जिनके पास दौलत है वे यदि वृद्ध भी हो चुके हैं तो जवान हैं और दौलत से जो रहित हैं वे जवान भी बुड्ढे हैं। **—पंचतंत्र**

संस्कृत में पैसे को द्रव्य कहा गया है। द्रव्य माने बहने वाला। अगर वह स्थिर रहा तो रुके हुए पानी की तरह उसमें बदबू आने लगेगी। **—विनोबा**

द्वन्द्व

द्वन्द्व को जीतने का उपाय द्वन्द्व को मिटाना नहीं है, लेकिन द्वन्द्वातीत होना, अनासक्त होना है। **—महात्मा गाँधी**

द्वेष

जिनका हृदय वैर या द्वेष की आग में जलता है उन्हें रात में नींद नहीं आती। **—विदुर**

द्वेष-बुद्धि को हम द्वेष से नहीं मिटा सकते, प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है। **—विनोबा**

मानव-मन में द्वेष जैसी भयकरता उत्पन्न करता है वैसी कोई दूसरी वस्तु नहीं करती। **—स्वेट मार्डेन**

द्वेषी

द्वेषी को मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगना पड़ता है। **—वेदव्यास (महा० सभा०)**

धन (दे० 'दौलत', 'द्रव्य', 'पैसा')

धन उत्तम कर्मों से उत्पन्न होता है, प्रगल्भता (साहस, योग्यता, कीर्ति, वेग, दृढ़ निश्चय) से बढ़ता है, चतुराई से फूलता-फलता है और संयम से सुरक्षित होता है। **—विदुर**

यथा मधुसमादत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः।
तद्वदर्थान्मनुष्येभ्य आदद्यादविहिंसया ॥ —विदुर

जैसे भौंरा पुष्प के नष्ट किये बिना उससे मधु ग्रहण कर लेता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी धन के मूल साधन को नष्ट किये बिना उसमें से धन ग्रहण करना चाहिए।

मागृधः कस्यस्विद्धनम् ॥ —यजुर्वेद ४०।१

धन किसी व्यक्ति का नहीं सम्पूर्ण राष्ट्र का है।

नाभिरहं रयीणाम् ॥ —अथर्ववेद १६।४।१

मैं धनों का केन्द्र बनूं।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः। —कठ उ०

धन से मनुष्य कभी तृप्त होने वाला नहीं है।

गोधन, गजधन, वाजिधन और रतन-धन खान।
जो आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान ॥ —कबीर

धर्म का सेवन धन के ही द्वारा होता है। —वेदव्यास (महा० वन०)

धन से बड़े से बड़े पापों पर पर्दा पड़ सकता है। —प्रेमचन्द

Riches have wings; sometimes they fly away of themselves and sometimes they must be set flying to bring in more.

—**Bacon**

धन के पर होते हैं, कभी-कभी वे स्वयं उड़ते हैं और कभी-कभी अधिक धन लाने के लिए उन्हें उड़ाना पड़ता है। —बेकन

जिस तरह तीतर अपने अंडों को नहीं सेता, उसी तरह बेईमानी से कमाई करने वाले का धन भी अधबीच में पड़ा रह जायगा और मरने पर लोग उसे मूर्ख कहेंगे। —रस्किन

धन भिक्षा-वृत्ति से अथवा उत्साहहीन होकर बैठ जाने से नहीं मिलता।
—वेदव्यास (महा०वन०)

धन के द्वारा अमरत्व-प्राप्ति असम्भव है। —स्वामी शिवानन्द

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ।।

—भर्तृहरि

जिसके पास धन है वही कुलीन है, वही पंडित, बहुश्रुत, गुणज्ञ, सुवक्ता और दर्शन करने योग्य है। तात्पर्य यह है कि संसार के सभी गुण सुवर्ण में बसते हैं।

Wealth is not his that has it, but his that enjoys it.

—Franklin

धन उसका नहीं है, जिसके पास है बल्कि उसका है जो उसका उपयोग करता है। **—फ्रैंकलिन**

धन से धन की भूख बढ़ती है, तृप्ति नहीं होती। **—प्रेमचन्द**

परिश्रम का कमाया धन और उसका सदुपयोग बहुत बड़ी नियामत है।

—कहावत

धन की इच्छा कभी न करो, इच्छा करो उस परमधन परमात्मा की जो एक मिल जाने पर कभी जाता नहीं। **—हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी'**

आपत्ति के समय भी यदि प्रजा को दुःख देकर धन वसूल किया जाता है, तो पीछे वह राजा के लिए मौत के समान सिद्ध होता है।

—वेदव्यास (महा०, शां०)

जब लगि वित्त न आपने, तब लगि मित्र न कोय।
रहिमन अम्बुज अम्बु बिनु, रवि ताकर रिपु होय।। **—रहीम**

जब तक धन पैदा करने की ताकत रहती है, तभी तक घर के लोग मनुष्य से प्रसन्न रहते हैं, जब बुढ़ापे में शरीर जर्जर हो जाता है, तब कोई बात भी नहीं पूछता। **—स्वामी शंकराचार्य**

Riches are but the baggage of fortune. **—Proverb**

धन भाग्य की गठरी है। **—कहावत**

धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवन्ति,
धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके,
धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम्।। **—नीतिसार**

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि ।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि ।। —चाणक्य

विपत्ति के लिए धन को बचाना चाहिए, धन से स्त्री को बचाना चाहिए, स्त्री और धन से सदा अपने को बचाना चाहिए ।

दूसरे के धन का हरण करना, पर-स्त्री से प्रेम करना, मित्रों का त्याग करना, ये तीनों नाशकारक होते हैं । —विदुर

मनुष्य में चाहे सभी गुण हों, पर धन न हो तो धर्माचरण नहीं हो सकता ।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

जो अधिक धन का स्वामी होकर भी इन्द्रियों पर अधिकार नहीं रखता, वह इन्द्रियों को वश में न रखने के कारण ही ऐश्वर्य से भ्रष्ट हो जाता है। —विदुर

फुटबाल की तरह धन का खेल होना चाहिए । गेंद को कोई अपने पास नहीं रखता । वह जिसके पास पहुंचती है वही उसे फेंक देता है । पैसे को इस तरह फेंकते जाइये तो समाज-शरीर में उसका प्रवाह बहता रहेगा और समाज का आरोग्य कायम रहेगा । —विनोबा

मागृधः कस्यस्विद्धनम । —यजुर्वेद ४०।१

धन किसी व्यक्ति का नहीं—सम्पूर्ण राष्ट्र का है किसी के धन को मत लो ।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः । —कठोपनिषद

धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं हो सकती ।

विदेशेषु धनं विद्या, व्यसनेषु धनं मतिः ।
परलोके धनं धर्मः, शीलं सर्वत्र वै धनम् ।।

विदेश में विद्या धन (सुख का साधन) है, संकट-काल में बुद्धि धन है, परलोक में धर्म धन है, किन्तु शील सर्वत्र धन है । —अज्ञात

यत्कर्म करणेनान्तः संतोषं लभते नरः ।
वस्तुतस्तद् धनं मन्ये, न धनं धनमुच्यते ।।

जिस काम के करने से मनुष्य के अन्तःकरण को संतोष होता है मैं वास्तविक धन उसी को मानता हू । लौकिक धन को धन नहीं कहा जाता । —अज्ञात

जो धन दया और ममता से रहित है, उसकी तुम कभी इच्छा मत करो और उसको कभी अपने हाथ से मत छुओ । —संत तिरुवल्लुवर

पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते ।
वन्द्यते यदवन्द्योऽपि, स प्रभावो धनस्य च ।।

धन का ही यह प्रभाव है कि अपूजनीय भी पूजनीय, अगमनीय भी गमनीय और अवन्दनीय भी वन्दनीय हो जाता है । **—पंचतंत्र**

Money is a bottomless sea, in which, honour, conscience and truth may be drowned. **—Kozlay**

धन अथाह समुद्र है जिसमें इज्जत, अन्तःकरण और सत्य डूब सकते हैं । **—कोजले**

भाग्य और धन प्रायः पुरुषों की गोद में आप से आप टपक पड़ता है । **—बेकन**

धनाद्धर्मस्ततः सुखम् ।

धन से धर्म होता है और उससे सुख । **—हितोपदेश**

धन ही संसार की प्रमुख वस्तु है । **—बर्नार्डशा**

अर्थार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते ।
जनितारमपि त्यक्त्वा निःस्वं गच्छति दूरतः ।।

इस संसार में धन की कामना करनेवाला मनुष्य श्मशान का भी सेवन करता है और धन से रहित होने पर अपने जन्म देने वाले पिता को भी दूर से छोड़कर चला जाता है । **—पंचतंत्र**

यस्यार्थस्तस्य मित्राणि यस्यार्थस्तस्य बांधवाः ।
यस्यार्थः स पुमांल्लोके यस्यार्थः स च जीवति । **—चाणक्य**

जिसको धन रहता है उसी के मित्र बहुत होते हैं, जिसके पास धन रहता है, उसी के बन्धु होते हैं, जिसके पास धन रहता है वही पुरुष गिना जाता है और जिसको अर्थ है वही जीवित है ।

Time is money. **—Proverb**

समय ही धन है । **—कहावत**

धन की प्यास कभी नहीं बुझती, उसकी ओर से मुँह मोड़ लेना ही परम सुख है । **—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)**

धन बढ़ाने की अभिलाषा उन्नति का बीज है। —वेदव्यास (महा०)

पुत्र-धन सबसे श्रेष्ठ है, इसके सामने संसार के सब धन फीके हैं। —वेदव्यास

यदि धन अपने पास इकट्ठा हो जाय तो वह पाले हुए शत्रु के समान है। उसका छोड़ना भी कठिन हो जाता है। —वेदव्यास (महा०, वन०)

धन की सफलता दान में ही है। —वेदव्यास (महा०, सभा०)

कोई व्यक्ति दो आदमियों की एक साथ सेवा नहीं कर सकता। चाहे ईश्वर की उपासना कर लो, चाहे कुबेर की। —बाइबिल

धन मनुष्य के दुःख का कारण है। जो धन अच्छे काम में लगाया जाता है, वह भी मनुष्य को स्थायी आनन्द नहीं देता। —वेदव्यास

Who steals my purse steals my trash. **—Shakespeare**

जो मेरा धन चुराता है, मेरी तुच्छ वस्तु ही ले जाता है। —शेक्सपियर

जो अपने धन से सन्तुष्ट रह कर धर्म में स्थित रहता है वही सुखी रहता है। —वेदव्यास (महा० सभा०)

धर्म करने के लिए भी धन कमाने की अपेक्षा न कमाना ही अच्छा है, जब अन्त में कीचड़ को धोना ही पड़ेगा तो छुआ ही क्यों जाय।

—वेदव्यास (महा०, वन०)

पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयानो काम॥ —कबीर

सुपात्रदानाच्च भवेद्धनाढ्यो धन-प्रभावेण करोति पुण्यम्।
पुण्य-प्रभावात्सुर-लोकवासी पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी॥ —अज्ञात

सुपात्र को दान देने से आदमी धनाढ्य होता है, और धन के प्रभाव से पुण्य करता है, एवं पुण्य के प्रभाव से सुरलोकवासी होता है और उसके बाद फिर से धनाढ्य और फिर सभी सुखों का भोगने वाला होता है।

जब धन जरूरत से ज्यादा हो जाता है, तो अपने लिए निकास का मार्ग खोजता है। यों न निकल पायगा, तो जुए में जायगा, घुड़दौड़ में जायगा, ईंट-पत्थर में जायगा या ऐयाशी में जायगा। —प्रेमचन्द (गो-दान)

धनवान्, धनी [दे० 'टका']

जो अधिक धनवान् हैं वही अधिक मोहताज हैं। —**सादी**

जिसे सब तरह से संतोष है वही धनवान् है। —**स्वामी शंकराचार्य**

धनवानों के हाथ में माप ही एक है, वह विद्या, सौन्दर्य, बल, पवित्रता और तो क्या, हृदय भी उसी से मापते हैं। वह माप है—उनका ऐश्वर्य।

—**जयशंकर प्रसाद**

धन पाकर फूलना नहीं चाहिए, विद्वान् होकर अहंकार नहीं करना चाहिए।

—**वेदव्यास (महा० आदि०)**

जैसे प्राणियों के सिर पर मृत्यु का भय सर्वदा सवार रहता है वैसे ही धनी पुरुषों को राजा, जल, अग्नि, चोर और कुटुम्ब का भय सदा बना रहता है।

—**वेदव्यास**

वे धनी आपसे भी अधिक अन्यायी और विचारहीन हैं जो गरीबों को आलसी और कामचोर कह कर पुकारते हैं। —**रस्किन, विजयपथ**

जैसे मांस को आकाश में पक्षी, भूमि पर हिंसक जीव और जल में मगरमच्छ खा जाते हैं वैसे ही धनी पुरुष के धन को सब कहीं दूसरे लोग ही भोगा करते हैं।

—**वेदव्यास (महा० वन०)**

सुई के छेद से ऊँट का निकल जाना सम्भव है किन्तु धनी मनुष्यों का स्वर्ग में पहुंचना असम्भव है। —**अज्ञात**

कबीर सब जग निरधना, धनवंता नहिं कोय।
धनवंता सो जानिये, जाके रामनाम धन होय॥ —**कबीर**

धनवानों का हृदय धन के भार से दब कर सिकुड़ जाता है, उसमें उदारता के लिए स्थान नहीं रहता। —**अज्ञात**

जिसके जीवन को उसके इर्द-गिर्द की जनता चाहती है, वह सच्चा धनी है।

—**विनोबा**

धन्य-धन्य

धन्य-धन्य वे इतिहासों के,
बनते जो निर्माता।
धन्य-धन्य वे जो स्वदेश के,
होते भाग्य-विधाता ॥

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

धन्यवाद

'Please' and 'thank you' are the small change with which we pay our way as social beings. They are the little courtesies by which we keep the machine of life oiled and running sweetly. **—A. G. Gardiner**

'कृपया' और 'धन्यवाद'—ये छोटी रेजगारी हैं जिनके द्वारा हम सामाजिक प्राणी होने का मूल्य चुकाते हैं। ये ऐसे साधारण शिष्टाचार हैं जिनके द्वारा हम जीवन-यन्त्र को स्नेहयुक्त और चालित रखते हैं। **—गार्डनर**

धर्म

पर-हित सरिस धरम नहिं भाई।
पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई॥ **—तुलसी**

धर्म की शक्ति ही अनेक जीवन की शक्ति है, धर्म की दृष्टि ही जीवन की दृष्टि है। **—डा० राधाकृष्णन्**

There is only one religion though there are a hundred versions of it. **—G.B. Shaw**

विश्वव्यापी धर्म तो एक ही है, यद्यपि उसके सैकड़ों रूपान्तर हैं।

—जी० बी० शॉ

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

सावधान होकर धर्म का वास्तविक रहस्य सुनो और उसे सुनकर उसी के अनुसार आचरण करो। जो कुछ तुम अपने लिए हानिप्रद और दुःखदायी समझते हो वह दूसरों के साथ मत करो। **—वेदव्यास (महा०)**

धर्म सचमुच बुद्धि-ग्राह्य नहीं, हृदय-ग्राह्य है। —**महात्मा गांधी**

भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रों से नहीं, सुपुत्रियों के प्रताप से ही स्थिर है। भारतीय देवियों ने यदि अपना धर्म छोड़ दिया होता तो देश कब का नष्ट हो चुका होता। —**महर्षि दयानन्द**

जीवन से आनन्द को प्राप्त करने की प्यास ही धर्म है। —**योगिराज नानक**

जो धर्म शुद्ध अर्थ का विरोधी है वह धर्म नहीं है। जो धर्म राजनीति का विरोधी है वह धर्म नहीं है। धर्म-रहित अर्थ त्याज्य है। धर्म-रहित राज्यसत्ता राक्षसी है। —**महात्मा गांधी**

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो, मा नो धर्मो हतो वधीत्॥ —**वेदव्यास**

मारा हुआ धर्म ही हमको मारता है और हमसे रक्षा किया हुआ धर्म ही हमारी रक्षा करता है, इसलिए धर्म का हनन नहीं करना चाहिए, जिससे तिरस्कृत धर्म हमारा विनाश न करे।

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप॥ —**कबीर**

धर्म को रोका नहीं जा सकता, अन्तरात्मा या हृदय को दबाया नहीं जा सकता। धर्म तो हृदय की चीज है और हृदय है स्वतन्त्र, इसलिए पूजा और धर्म स्वतंत्र है। —**स्टालिन**

अन्याय सह कर बैठ रहना,
यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु, को भी,
दण्ड देना धर्म है। —**मैथिलीशरण गुप्त**

धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्। —**वाल्मीकि**

संसार में धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है। धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है।

Religion is opium for the people. —**Karl Marx**

धर्म तो मानव-समाज के लिए अफीम है। —**कार्ल मार्क्स**

धर्म की पवित्रता शरत्कालीन जल-स्रोत के सदृश हो, उसकी उज्ज्वलता शारदीय गगन के नक्षत्रालोक से भी कुछ बढ़कर और शीतल हो।

—जयशंकर प्रसाद

मानव की परिपूर्णता में धर्म बाधक है। परलोक की सुन्दर कल्पना कर धर्म अपनी आज की जिम्मेवारियों से बरी हो जाता है। धर्म आज रूढ़ियों और स्थिर स्वार्थों का समर्थक है। **—आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीयता और समाजवाद)**

सच्चा धर्म तो पापों की जड़ काट कर मुक्ति का मार्ग-प्रदर्शन करता है, पर मिथ्या धर्म में मुक्ति टकों के बल बिकती है। **—रस्किन**

धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात्प्रभवेत सुखम्।
धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिदं जगत्॥

—वाल्मीकि (रा० ३-९-३०)

धर्म से अर्थ उत्पन्न होता है। धर्म से सुख होता है। धर्म से मनुष्य सब कुछ प्राप्त करता है। धर्म जगत का सार है।

धर्म ही व्यक्ति और समाज की प्रगति का मार्ग है। यह शाश्वत, आधार भूत और मौलिक है।···यह माता के समान है जिसे स्वीकार करना ही होगा, पत्नी की तरह नहीं जिसे चाहे स्वीकार या अस्वीकार करें। **—सत्य साईं बाबा**

धर्मो यो बाधते धर्मं न स धर्म्मः कुधर्म्म तत्।
धर्म्माविरोधी यो धर्म्मः स धर्म्मः सत्यविक्रमः॥ **—अज्ञात**

जो धर्म दूसरे धर्म को बाधा पहुँचाता है वह धर्म नहीं कुधर्म है। जो धर्म का अविरोधी है, सत्य पराक्रमशील धर्म वही है।

True religion teaches us to reverence what is under us, to recognize humanity, poverty, wretchedness, suffering and death as things divine. **—Goethe**

सच्चा धर्म हमें अपने आश्रितों का सम्मान करना सिखाता है और मानवता, दरिद्रता, विपत्ति, पीड़ा एवं मृत्यु को ईश्वरीय देन जानता है। **—गेटे**

In death the many become one, in life the one becomes many. Religion will be one when God is dead. **—R. N. Tagore**

मृत्यु में अनेक एक हो जाता है; जीवन में एक अनेक रहता है। धर्म एक हो जायगा जब ईश्वर का अंत होगा। **—रवीन्द्र**

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ —मनु०

धर्म के दश चिह्न हैं। अर्थात् जिसमें यह दश चिह्न धैर्य्य, क्षमा, दमन करना, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध पाये जावें वह मनुष्य धार्मिक है।

धर्म से केवल मोक्ष की ही नहीं अर्थ और काम की भी सिद्धि होती है।
—वेदव्यास (महा०)

जहाँ धर्म नहीं, वहाँ विद्या, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आदि का भी अभाव होता है। धर्मरहित स्थिति में बिलकुल शुष्कता होती है, शून्यता होती है। **—महात्मा गांधी**

If men are so wicked with religion, what would they be without it. **—Franklin**

धर्म होने पर जब मनुष्य इतने नीच हैं, तो धर्म न होने पर वे क्या होंगे।
—फ्रैंकलिन

मान-बड़ाई के मोल में धर्म को न दो, मान-बड़ाई को पैरों तले कुचल डालो, पर धर्म को बचाओ। **—अज्ञात**

धर्म सेवा का नाम है, लूट और कत्ल का नहीं। **—प्रेमचन्द**

धर्म परमेश्वर की कल्पना कर मनुष्य को दुर्बल बना देता है, उसमें आत्म-विश्वास उत्पन्न नहीं होने देता और उसकी स्वतन्त्रता का अपहरण करता है।
—आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीयता और समाजवाद)

धर्म का उद्देश्य है कि मनुष्य के चरित्र में अटल बल प्राप्त हो।
—स्वामी रामतीर्थ

A life that will bear the inspection of man and God is the only certificate of true religion. **—Dr. Johnson**

मानव और ईश्वर की कसौटी पर जो जीवन खरा उतरे, वही सच्चे धर्म का एकमात्र प्रमाण-पत्र है। **—डा० जानसन**

धर्म उस अग्नि की, जो प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर जलती है, ज्वाला को प्रज्ज्वलित करने में सहायता करता है। **—डा० राधाकृष्णन्**

धर्म कभी धन के लिए न आचरित हो, वह श्रेय के लिए हो, प्रकृति के कल्याण के लिए हो, धर्म के लिए हो। —जयशंकर प्रसाद

धर्म जिन्दगी की हर एक साँस के साथ अमल में लाने की चीज है।
—महात्मा गांधी

आपत्ति के समय भी जो धर्म का त्याग नहीं करता वह श्रेष्ठ है। —वेदव्यास

विशाल व्यापक धर्म है ईश्वरत्व के विषय में हमारी अचल श्रद्धा, पुनर्जन्म में अविचल श्रद्धा, सत्य और अहिंसा में हमारी सम्पूर्ण श्रद्धा। —महात्मा गांधी

The ideal of the Hindu Dharm is to make allmen Brahmin and all people prophets. **—Dr. Radhakrishnan**

हिन्दू धर्म का आदर्श सभी मनुष्यों को ब्राह्मण और सभी व्यक्तियों को पैगम्बर बनाना है। —डा० राधाकृष्णन्

यतोभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्म्मः। —अज्ञात

जिससे अभ्युदय और कल्याण अथवा परमार्थ की सिद्धि हो, वही धर्म है।

जो धर्म के गौरव को पूज्य मान कर शान्त और मग्न होता है, उसी को सच्चा शान्त और सच्चा नम्र समझना चाहिए। अपना मतलब साधने के लिए कौन शांत और नम्र नहीं बन जाता? —गौतम बुद्ध

प्राणियों की अभिवृद्धि के लिए धर्म का प्रवचन किया गया है; अतः जो प्राणियों की अभिवृद्धि का कारण हो, वही धर्म है। —वेदव्यास (म०)

हमारा धर्म है हमारा भोजन। भोजन पवित्र रहे, फिर हमारे धर्म पर कोई आँच नहीं आ सकती। रोटियाँ ढाल बन कर अधर्म से हमारी रक्षा करती है।
—प्रेमचन्द

गम्भीरता, उदारता, विश्वस्तता, तत्परता तथा दयालुता का व्यवहार ही सच्चा धर्म है। —कनफ्यूशियस

धर्म की शक्ति सत्य है और यही वास्तविक शक्ति है जो आणविक शक्ति से भी अधिक शक्तिशाली है। —सत्य साईं बाबा

आहारनिद्राभयमैथुनं च, सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ।। **—हितो०**

खाने, सोने, डरने और मैथुन के बारे में मनुष्य और पशु परस्पर समान हैं केवल धर्म ही मनुष्यों में विशेष है । यदि वह भी न रहा तो फिर मनुष्य सर्वदा पशु के समान ही है ।

मन को निर्मल रखना ही धर्म है, बाकी सब कोरे आडम्बर हैं ।
—संत तिरुवल्लुवर

धर्म-त्याग

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।। **—श्रीकृष्ण (गीता)**

पराये धर्म से अपना धर्म गुणरहित होने पर भी श्रेष्ठ है, अपने धर्म में मरना भी श्रेष्ठ है, किन्तु परधर्म भयानक है ।

न जातु कामान्न भयान्न लोभात् धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः ।............

कामना से, भय से, लोभ से, अथवा प्राण बचाने के लिए भी धर्म का त्याग न करे । धर्म ही नित्य है, सुख दुःख तो अनित्य है । **—वेदव्यास (महा०)**

धर्म निरपेक्षता

Our political edifice rests on secularism and religions equality. **—Indira Gandhi**

हमारा राजनैतिक ढांचा धर्मनिरपेक्षता एवं धार्मिक समानता पर आधारित है । **—इन्दिरा गांधी**

धर्म-प्रसार

धर्म आत्मा का विषय है जिसका प्रचार चिंतन से, ज्ञान से, तपस्या से, अनुभव से ही होता है । **—विनोबा**

सत्ता के बल पर जो धर्म ग्रहण कराया जाता है वह तभी तक स्थिर रहता है जब तक तलवार आगे चमकती रहती है । **—हरिभाऊ उपाध्याय**

सत्ता से धर्म फैलाने के प्रयोग इतिहास में हुए हैं, लेकिन उनसे धर्म को हानि ही हुई है। धर्म का उद्देश्य ही सत्ता से विपरीत है। —**विनोबा**

धर्मतत्त्व के प्रचार का एकमात्र साधन बुद्धि है। अगर कोई नहीं समझता है, तो बुद्धि से उसको समझाना है। फिर भी नहीं समझता तो फिर से समझाना है। बुद्धि के सिवा विचार-प्रचार का दूसरा कोई अस्त्र नहीं है, क्योंकि अज्ञान को ज्ञान ही मिटा सकता है। —**स्वामी शंकराचार्य**

धर्म-पालन

धर्म का पालन करने पर जिस धन की प्राप्ति होती है, उससे बढ़कर कोई धन नहीं है। —**वेदव्यास (महा० अ०)**

धर्म-बंधन

धर्म का बन्धन रक्त और वीर्य के बंधन से सुदृढ़ है। —**अज्ञात**

धर्म-मार्ग

धर्म का मार्ग फूलों की सेज नहीं है। इसमें बड़े-बड़े कष्ट सहन करने पड़ते हैं। —**अज्ञात**

धर्म-युद्ध

धर्मयुक्त युद्ध से बढ़कर क्षत्रिय के लिये दूसरा कोई श्रेष्ठ कर्म नहीं है।

हे पार्थ, अपने आप ही मिला हुआ और खुला हुआ स्वर्ग के द्वार रूप इस प्रकार का युद्ध तो भाग्यवान् क्षत्रिय को ही प्राप्त होता है।

यदि तुम इस धर्ममय युद्ध को नहीं करोगे तो स्वधर्म को और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त होगे। —**भगवान श्रीकृष्ण (गीता २।३१,३२,३३)**

धर्म-शिक्षा

जो चीज विकार को मिटा सके, राग-द्वेष को कम कर सके, जिस चीज के उपयोग से मन सूली पर चढ़ते समय भी सत्य पर डटा रहे वही धर्म की शिक्षा है। —**महात्मा गांधी**

धर्म-हीन

मेरा विश्वास है कि बिना धर्म का जीवन बिना सिद्धान्त का जीवन होता है और बिना सिद्धांत का जीवन वैसा ही है जैसा कि बिना पतवार का जहाज। जिस तरह बिना पतवार का जहाज मारा-मारा फिरेगा, उसी तरह धर्महीन मनुष्य भी संसार सागर में इधर से उधर मारा-मारा फिरेगा और अपने अभीष्ट स्थान तक नहीं पहुँचेगा। **—महात्मा गाँधी**

धर्मात्मा

सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्। **—ऋग्वेद**

धर्मात्मा को सत्य की नाव पार लगाती है।

जिमि सरिता सागर महँ जाहीं। यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमि सुख-सम्पति, बिनहिं बुलाये। धर्मशील पहँ जाहि सुभाये॥
—तुलसी (मानस, बाल०)

धारणा

बाँह छुड़ाये जात हौ निबल जानि कै मोहि।
जे हिरदै ते जाहुगे सबल बदौंगो तोहि॥ **—सूरदास**

धीर

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।
—कालिदास (कुमारसंभव)

यथार्थ में धीर पुरुष तो वे ही हैं जिनका चित्त विकार उत्पन्न करने वाली परिस्थिति में भी अस्थिर नहीं होता।

धीर मनुष्य मनःप्रसाद का सहारा लेकर आपत्ति की नदियों को सुखपूर्वक पार कर जाते हैं। वे अपने को दुःखी नहीं करते। **—अज्ञात**

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु, गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु, युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥ **—भर्तृहरि**

नीतिज्ञ लोग चाहे निन्दा करें अथवा प्रशंसा करें, लक्ष्मी (धन) चाहे आये अथवा बिल्कुल चली जाय, मृत्यु चाहे आज ही हो जाय अथवा एक युग के बाद, पर धीर लोग न्याययुक्त मार्ग से कभी पैर नहीं हटाते।

धीरज (दे० 'धैर्य')

संकट के समय धीरज धारण करना ही मानों आधी लड़ाई जीत लेना है।

—प्लाटस

जिसे धीरज है और जो मेहनत से नहीं घबराता कामयाबी उसकी चेरी है।

—अज्ञात

धीरज देता साथ सदा, सुनने से जन बनता विद्वान।
तप से होता बड़ा और वृद्धों की सेवा से मतिमान।।

—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

कबिरा धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।
टूक एक के कारने, स्वान घरै घर जाय। **—कबीर**

धीरज धारण करने वाले दरिद्र की धीरता के गुण को कोई भी व्यक्ति दूर नहीं कर सकता। जैसे नीचे मुख वाली आग की उठती शिखा को कोई भी मनुष्य नीचे की ओर कभी झुका नहीं सकता।

धीरज सारे आनन्दों और शक्तियों का मूल है। **—जान रस्किन**

धुआँ

जो धुआँ पर्वतों से निकल कर आकाश को जाता है उससे विद्युत और ओले बनते हैं कोयले और लकड़ी के जलने से जो धुआँ उठता है उससे मेघों की चादर तैयार होती है। **—स्वामी हंसस्वरूप**

धूर्त

नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां चैव वायसः।
चतुष्पदानां श्रृगालस्तु स्त्रीणां धूर्ता च मालिनी।। **—चाणक्य**

पुरुषों में नाई, पक्षियों में कौआ, पशुओं में सियार और स्त्रियों में मालिन धूर्त होती हैं।

It is double pleasure to receive the deceiver.

—La Fountain

धूर्त को धोखा देने से दूना आनन्द आता है। **—ला फाउन्टेन**

A wolf in lamb's skin. **—Proverb**

मुख में राम बगल में छूरी। **—कहावत**

A bad man is worse when he pretends to be a saint.

—Bacon

बुरा आदमी और भी बुरा है जब वह साधु बनने का स्वांग रचता है।

—बेकन

One may smile and smile and be a villain.

—Shakespeare

कोई व्यक्ति हँसते हुए भी दुष्ट हो सकता है। **—शेक्सपियर**

No man is a hypocrite in his pleasures. **—Dr. Johnson**

अपने आनन्द में कोई भी व्यक्ति पाखंडी नहीं हो सकता। **—डा० जानसन**

धूर्तता

Hypocrisy is the necessary burden of villainy.

—Dr. Johnson

धूर्तता नीचता का आवश्यक बोझ है। **—डा० जानसन**

It is time to fear when tyrants seem to kiss. **—Shakespeare**

जब जुल्मी चूमने का अभिनय करे तो डरना चाहिए। **—शेक्सपियर**

धूल

The dust receives insult and in return offers flowers.

—R. N. Tagore

धूल अपमान सह लेती है और बदले में पुष्पों का उपहार देती है।

—रवीन्द्र

पादाहतं यदुत्थाय भूर्धानमधिरोहति ।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः ।।

—माघ (शिशुपालवध)

जो धूल पैर से आहत होने पर उड़ कर (आहत करनेवाले के) शिर पर चढ़ जाती है, वह अपमान होने पर भी स्वस्थ बने रहने वाले शरीरधारी मनुष्य से श्रेष्ठ है ।

धैर्य (देखो 'धीरज')

शत्रु का लोहा गरम भले हो जाय, पर हथौड़ा तो ठण्डा रह कर ही काम दे सकता है । **—सरदार पटेल**

…निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्घनं नार्दति चातकोऽपि । **—कालिदास (रघुवंश)**

चातक भी शरद के सूने बादलों से पानी नहीं माँगता ।

Adopt the pace of nature, her secret is patience.

—Emerson

प्रकृति का अनुसरण करो—धैर्य उसका रहस्य है । **—एमर्सन**

Patience is bitter, but its fruit is sweet. **—Rousseau**

धैर्य कड़ुवा होता है, पर उसका फल मधुर होता है । **—रूसो**

धैर्य संतोष की कुंजी है । **—मोहम्मद साहब**

व्यसने वार्थकृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तगे ।
विमृशंश्च स्वया बुद्ध्या धृतिमान्नावसीदति ।। **—वाल्मीकि**

शोक में, आर्थिक संकट में अथवा प्राणान्तकारी भय उपस्थित होने पर जो अपनी बुद्धि से दुःखनिवारण के उपाय का विचार करते हुए धैर्य धारण करता है, उसे कष्ट नहीं उठाना पड़ता ।

धैर्य वीरता का अति उत्तम, मूल्यवान् और दुष्प्राप्य अंग है । **—जान रस्किन**

धोखा

The first and worst of all frauds is to cheat oneself. All sin is easy after that. **—Bailey**

सब धोखों में प्रथम और सबसे खराब अपने आप को धोखा देना है। इसके आगे सब पाप सरल हो जाते हैं। **—बेली**

Deceiving of a deceiver is no knavery. **—Proverb**

धूर्त को धोखा देना धूर्तता नहीं है। **—कहावत**

We are never deceived; we deceive ourselves. **—Goethe**

दूसरे हमें धोखा नहीं देते; हम स्वयं अपने को धोखा देते हैं। **—गेटे**

He who purposely cheats his friend, would cheat his God. **—Lavator**

जो मनुष्य जान-बूझ कर अपने मित्र को धोखा देता है, वह अपने ईश्वर को धोखा देगा। **—लेवेटर**

ध्यान

जब बुद्धि में चंचलता न हो तभी ध्यान है। मन को वशीभूत करना ही ध्यान है। **—अज्ञात**

Meditation is an aeroplane that helps the aspirant to soar high in the realms of eternal bliss and everlasting peace.

ध्यान वायुयान है जो साधक को अनन्त आनन्द और अक्षय शांति के साम्राज्य में उड़ा ले जाता है। **—स्वामी शिवानन्द**

क्या तुम्हें मालूम है कि सात्त्विक प्रकृति का मनुष्य कैसे ध्यान करता है? वह आधी रात को अपने बिस्तर के अन्दर ध्यान करता है, ताकि लोग उसे देख न सकें। **—रामकृष्ण परमहंस**

Meditation is the only royal road to the attainment of Moksha. **—Swami Shivananda**

ध्यान ही मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र राजमार्ग है। **—स्वामी शिवानन्द**

Meditation is a mysterious ladder that connects earth and heaven and takes the aspirant to the immortal abode of Brahma.

ध्यान एक रहस्यमयी सीढ़ी है जो अवनी और अम्बर को मिलाती है एवं साधक को ब्रह्म के अमरलोक की ओर ले जाती है। **—स्वामी शिवानन्द**

ध्यान ही वह गगन है जहाँ मगन मानव-मन के अमित बलशाली आराध्य की तस्वीर खींचने में दैवी चितेरे भी असफल होते आये हैं। —**माखनलाल चतुर्वेदी**

ध्येय

Great objects form great minds. —**Emmons**

महान् ध्येय महान् मस्तिष्क की जननी है। —**इमन्स**

Not failure, but low aim is crime. —**J. R. Lowell**

असफलता नहीं वरन् निकृष्ट ध्येय ही अपराध है। —**जे० आर० लावेल**

No wind serves him who has no destined part.

—**Montaigne**

ध्येयरहित व्यक्ति की पवन सहायता नहीं करता। —**मानटेन**

ध्येय जितना महान् होता है, उसका रास्ता उतना ही लम्बा और बीहड़ होता है। —**साने गुरूजी**

महान् ध्येय का मौन में ही सर्जन होता है। —**साने गुरूजी**

हमारा ध्येय सत्य होना चाहिए, न कि सुख। —**सुकरात**

ध्वनि

ध्वनि ही सृष्टि का मूल है। —**प्रेमचन्द**

नकल

Man is an imitative creature, and whoever is foremost leads the herd. —**Schiller**

मानव नकल करने वाला प्राणी है और जो सबसे आगे होता है वही नेतृत्व करता है। —**शिलर**

No man ever yet became great by imitations.

—**Dr. Johnson**

कोई व्यक्ति नकल से अभी तक महान् नहीं हुआ है। —**जानसन**

A good imitation is the most perfect originality. **—Valtaire**

अच्छी नकल पूर्ण मौलिकता है। —वाल्टेयर

Imitation is the sincerest form of flattery. **—Colton**

नकल चापलूसी का निष्कपट रूप है। —कोल्टन

नकेल

पुरुषों की नकेल स्त्रियों के हाथ में है। —प्रेमचन्द

नगर

The town is man's world, but this (Country life) is of God. **—Cowper**

नगर मनुष्य की दुनिया है परन्तु गाँव ईश्वर की। —काउपर

Cities force growth and make men talkative and entertaining, but they make them artificial. **—Emerson**

नगर वृद्धि को प्रोत्साहन देता है और मनुष्य को बातूनी एवं मनोरंजक बना देता है, किन्तु वह उन्हें बनावटी बनाता है। —एमर्सन

नजर

One of the most wonderful things in nature is a glance of the eye; it transends speech, it is the bodily symbol of identity. **—Emerson**

प्रकृति की सबसे आश्चर्यजनक वस्तु नेत्रों की एक झलक है। यह वाणी से भी श्रेष्ठ होती है, यह एकता का शारीरिक चिह्न है। —एमर्सन

The eye of the master will do more work than both his hands. **—Franklin**

स्वामी की नजर उसके दोनों हाथों की अपेक्षा अधिक कार्य करती है। —फ्रैंकलिन

नजीर

A precedent embalms a principle. **—Disraeli**

नजीर सिद्धान्त को सुरक्षित रखती है। **—डिजरायली**

नफरत

Hatred is the madness of the heart. **—Byron**

नफरत हृदय का पागलपन है। **—बायरन**

नफरत नफरत से कभी कम नहीं होती, नफरत प्रेम से ही कम होती है; यही सर्वदा उसका स्वभाव रहा है। **—गौतम बुद्ध**

Hatred is blind as well as love. **—Proverb**

नफरत और प्रेम दोनों अन्धे हैं। **—कहावत**

शत्रुओं के प्रति हमारी नफरत उनके आनन्द की अपेक्षा हमारे आनन्द को अधिक नुकसान पहुँचाती है। **—अज्ञात**

नमन

नमन उन्हें दासता किसी की,
जो स्वीकार न करते।
नमन उन्हें जो मानवता की,
मुक्ति हेतु हैं मरते॥

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

नमस्कार

नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुतद्याम्।
नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे।

—ऋग्वेद

नमस्कार सबसे बड़ी वस्तु है, इसलिए मैं वेदों को नमस्कार करता हूँ, देवता लोग भी नमस्कार के वशीभूत हैं, इसलिए मैं नमस्कार द्वारा किये हुए पापों का प्रायश्चित्त करता हूँ।

नमन प्रभु को बंधन में डालता है। —रामचन्द्र डोंगरे

नमस्ते

'नमस्ते' स्वीकार करने से 'नमस्ते' करने वाले को यह संतोष हो जाता है कि आपने उसके सम्मान को स्वीकार कर लिया है। —अज्ञात

'नमस्ते' प्रशंसा का एक हलका-सा स्वरूप है, अतः उत्तम प्रभाव डालने के लिए यह एक सहज उपाय है। —अज्ञात

नम्रता (दे० 'दीनता')

जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते।
—महात्मा गांधी

ईश्वर के सामने दान हजार पापों को भी ढक लेता है। मनुष्य के सम्मुख नम्रता बुराइयों को छिपा लेती है। —प्रेविली

जहाँ नम्रता से काम निकल आये वहाँ उग्रता नहीं दिखानी चाहिए।
—प्रेमचन्द

Politeness goes far, yet costs nothing. —**Smiles**

नम्रता का प्रभाव दूर तक जाता है और उसमें कुछ व्यय भी नहीं होता।
—स्माइल्स

We come nearest to the great when we are great in humility.

हम महानता के निकटतम होते हैं, जब हम नम्रता में महान् होते हैं।
—रवीन्द्र

Humility is the solid foundation of all the virtues.
—**Confucius**

नम्रता समस्त सद्गुणों का दृढ़ आधार है। —कन्फ्यूशियस

नम्रता का अर्थ है अहंभाव का आत्यन्तिक क्षय। —महात्मा गांधी

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्‌गमैर्नवाम्बुभिभूरि विलम्बिनो घनाः ।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ।।

—कालिदास (अभिज्ञान शाकुन्तलम्)

फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं; सम्पत्ति के समय सज्जन भी नम्र होते हैं। परोपकारियों का स्वभाव ही ऐसा है।

यथा नवहिं बुध विद्या पाये । **—तुलसी**

After crosses and losses men grow humbler and wiser.

—Franklin

दुःख और हानि सहने के बाद आदमी अधिक नम्र और ज्ञानी होता है।

—फ्रैंकलिन

अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है। **—कहावत**

Nothing is so scandalous as a man that is proud of his humility. **—Marcus Aurelius**

अपनी नम्रता का घमण्ड करने से अधिक निन्दनीय और कुछ नहीं है।

—मारकस औरेलियस

To be humble to superiors is duty, to equals courtesy, to inferiors nobleness, and to all, safety. **—Sir T. More**

बड़ों के प्रति नम्रता कर्त्तव्य है, बराबर वालों के प्रति विनयसूचक है, छोटों के प्रति कुलीनता की द्योतक एवं सबके प्रति सुरक्षा है। **—सर टी० मूर**

सबते लघुताई भली, लघुता ते सब होय ।
जस द्वितिया को चन्द्रमा, शीश नवै सब कोय ।। **—कबीर**

It was pride that changed angels into devils; it is humility that makes men as angels. **—Augustine**

अभिमानवश देवता दानव बन जाते हैं और नम्रता से मानव देवता।

—आगस्टाइन

उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते हैं तब विवेक के अधिक निकट होते हैं।

—वर्ड्सवर्थ

नयन [दे० 'आँख', 'नैन', 'नेत्र']

नयनन में नय नाहिनै, याते नयना नाम ।

नर-रत्न

जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी । नहिं लावहिं परतिय मनु डीठी ।।
मंगन लहहिं न जिन्ह के नाहीं । ते नर-वर थोरे जग माहीं ।।
—तुलसी (मानस, बाल०)

नरक

काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ ।
—तुलसी (मानस, सुन्दर०)

नरक में गिरना सहल है । —र्वाजल

सांसारिक वैभव और सत्ता के पीछे पागल होकर जो दूसरे का बुरा चाहता है और उसका अहित करने का प्रयत्न करता है, उसका जीवन नरक बन जाता है । —हरिभाऊ उपाध्याय

संसार में छल, प्रवंचना और हत्यारों को देखकर कभी-कभी मान ही लेना पड़ता है कि यह जगत् ही नरक है । कृतघ्नता और पाखंड का साम्राज्य यहीं है ।
—जयशंकर प्रसाद

वे मनुष्य जो ज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें बनाते हैं परन्तु जिनके हृदय में दया नहीं है, अवश्य नरक में जाते हैं । —कबीर

Hell is God's justice, heaven is his love; earth his long suffering. —**Baron Wessenberg**

नरक ईश्वर का न्याय है, स्वर्ग उसका प्रेम है; पृथ्वी उसकी दीर्घकालीन यातना । —बारोन वेसेनबर्ग

Hell is opportunity missed and truth seen too late.

अवसर का हाथ से निकल जाना, और समय बीतने के बाद यथार्थता का ज्ञान होना ही नरक है । —अज्ञात

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven. **—Milton**

मन अपनी निज रुचि से अपने ही में स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकता है। **—मिल्टन**

The torture of a bad conscience is the hell of living soul. **—Calvin**

खराब अन्तःकरण की यातना जीवित आत्मा का नरक है। **—काल्विन**

नरक-गामी

जो मनुष्य दूसरों की जीविका नाश करते हैं, दूसरों का घर उजाड़ते हैं, दूसरों की स्त्री या उसके पति से वियोग कराते हैं और मित्रों में भेद-भाव उत्पन्न करते हैं वे अवश्य नरक में जाते हैं। **—वेदव्यास (महा०)**

नशा

नशे में क्रोध की भाँति ग्लानि का वेग भी सहज में ही उठ आता है। **—प्रेमचन्द**

नसीहत

Good counsel has no price. **—Mazzine**

अच्छी नसीहत अमूल्य होती है। **—मेजिनी**

Never give advice unless asked. **—German Proverb**

बिना माँगे किसी को नसीहत न दो। **—जर्मन कहावत**

Advice is like snow, the softer it falls, the longer it dwells upon and the deeper it sinks into the mind. **—Coleridge**

नसीहत बर्फ के सदृश है, जितनी धीरे-धीरे गिरती है उतनी ही अधिक स्थायी होती है और उतनी ही गहराई से मन में प्रवेश करती है। **—कोलरिज**

Admonish your friends privately but praise them openly.

—Byron

अपने मित्रों को चुपके से नसीहत दो किन्तु प्रशंसा खुले आम करो।

—बाइरन

To accept good advice is but to increase one's own ability.

—Goethe

अच्छी नसीहत मानना अपनी ही योग्यता बढ़ाना है। **—गेटे**

Advice not what is most pleasant but what is most useful.

—Solon

ऐसी नसीहत न दो जो अति सुन्दर हो बल्कि ऐसी दो जो अति लाभदायक हो। **—सोलन**

नहीं

रहिमन ते नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुए जिन मुख निकसत नाहिं॥ **—रहीम**

The man who has not learned to say 'No' will be a weak if not a wretched man as long as he lives. **—A. Maclaren**

वह मनुष्य जिसने 'नहीं' कहना नहीं सीखा, जब तक वह जीवित रहेगा अगर दीन नहीं तो दुर्बल अवश्य रहेगा। **—ए० मैकलेरन**

A 'No' response is a most difficult handicap to overcome. When a person has said 'No', all his pride of personality demands that he remains consistant with himself.

—Prof. Overstreet

एक बार उत्तर में मुंह से 'नहीं' निकल जाने पर फिर 'हाँ' कहलवाना बड़ा ही कठिन होता है। जब कोई व्यक्ति एक बार 'नहीं' कह देता है, तो फिर उसके व्यक्तित्व का सारा गर्व यह चाहता है कि वह 'हाँ' न करे। **—प्रो० ओवरस्ट्रीट**

He that cannot decidedly say 'No' when tempted to evil is on the highway to ruin. —**J. Hawis**

वह मनुष्य जो बुराई के लिए लालच देने पर भी निश्चयपूर्वक 'नहीं' नहीं कह सकता, सर्वनाश के पथ पर है। —**जे० हेवीज**

Get a student to say 'No' at the beginning or a customer, child, husband or wife, and it takes the wisdom and the patience of angels to transform that bristling negative into an affirmative.

—**Dale Carnegie**

एक बार आरम्भ में विद्यार्थी, ग्राहक, बच्चे या पति या पत्नी के मुंह से नहीं निकल लेने दो, तो फिर उस दुःखद 'नहीं' को 'हाँ' में बदलने के लिए देवताओं की बुद्धिमत्ता और धैर्य चाहिए। —**डेल कारनेगी**

नागरिक

कोई नागरिक इतना अमीर न हो कि दूसरे को खरीद सके या इतना गरीब न हो कि उसे अपने को बेचने के लिए बाध्य होना पड़े। —**रूसो**

नाटक

The drama is the book of the people. —**Wilmot**

नाटक मानव की पुस्तक है। —**विल्मट**

A young girl must not be taken to the theatre, let us say it once for all. It is not only the drama which is immoral, but the place. —**Alexander Dumas**

किसी नवयुवती को नाटकशाला में नहीं ले जाना चाहिए। केवल नाटक ही नहीं वरन् वह स्थान भी अपवित्र होता है। —**एलेक्जेन्डर ड्यूमा**

नाता

सभी प्राणियों से इस जग में
स्वार्थ सिद्धि का है नाता।

—**विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (वीर सौभद्र)**

नातेदारी

नात नेह दूरी भली, लो रहीम जिय जानि ।
निकट निरादर होत है, ज्यों गड़ही को पानि ।। —रहीम

नाभि

अध्यात्म में नाभि को उतना ही महत्व दिया गया है, जितना वैज्ञानिक परमाणु में न्यूकलियस को देते आये हैं अथवा सौर-मण्डल में सूर्य का माना जाता है । नाभि की महत्ता शरीर शास्त्रियों के लिए गौण हो सकती है, पर आत्म-विज्ञान का कथन है कि नाभि चक्र का चुम्बकत्त्व आजीवन बना रहता है ।
—अखण्ड ज्योति (मई १९८१)

जिस तरह मस्तिष्क का, सूक्ष्म शरीर का केन्द्र आज्ञाचक्र माना गया है, स्थूल शरीर का न्यूकलियस नाभि है । —अखण्ड ज्योति (मई १९८१)

वातावरण में व्याप्त ध्वनि तरंगों को ट्रांजिस्टर का किस्टल ही पकड़ कर उन्हें श्रव्य ध्वनियों में परिवर्तित करता है । नाभि केन्द्र ब्रह्मीचेतना का न्यूकलियस है । अनन्त अन्तरिक्ष से आवश्यक शक्ति खींचना और उसे धारण कर शरीर के समस्त अंगों को प्रभावित करना अध्यात्म विज्ञान के अनुसार नाभि का ही कार्य है । —अखण्ड ज्योति (मई १९८१)

नाम

रूप विशेष नाम बिनु जाने ।
करतलगत न परहिं पहिचाने ।
देखियहि रूप नाम आधीना ।
रूपज्ञान नहिं नाम विहीना ।। —तुलसी

How vain, without the merit, is the name. **—Homer (Iliad)**
गुणरहित नाम कितना निरर्थक होता है । —होमर

आदि नाम पारस अहै, मन है मैला लोह ।
परसत ही कंचन भया, छूटा बंधन मोह ।। —कबीर

What is in a name ? That which we call a rose, by any other name would smell as sweet. **—Shakespeare**

नाम में क्या है ? जिसे हम गुलाब कहते हैं, वह किसी और नाम से भी वैसी ही सुगन्धि देगा। **—शेक्सपियर**

आदि नाम निज मूल है, और मन्त्र सब डारि।
कह कबीर निज नाम बिनु, बूड़ि मुआ संसार॥ **—कबीर**

A good name is rather to be chosen than great riches.

—Proverb

अधिक धन की अपेक्षा नेक नाम (सुयश) अधिक पसन्द करना चाहिए।

—कहावत

खोया हुआ सुयश कदाचित् ही पुनः मिलता है—जब चरित्र का पतन होता है तब सब कुछ खो जाता है और जीवन का बहुमूल्य रत्न सदैव के लिए चला जाता है। **—अज्ञात**

जबहिं नाम हिरदे धरा, भया पाप का नास।
मानो चिनगी आग की, परी पुरानी घास॥ **—कबीर**

अपना नाम सदा अमर रखने के लिए मनुष्य बड़े से बड़ा जोखिम उठाने, धन व्यय करने, हर प्रकार के कष्ट सहने, यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार हो जाता है। **—सुकरात**

नामों में देश-काल की संस्कृति का प्रतिबिम्ब रहता है। **—धीरेन्द्र वर्मा**

प्रत्येक मनुष्य अपने नाम को सर्वोच्च स्थान प्रदान करना चाहता है। अतः दूसरों को प्रभावित करने के लिए उसके नाम की प्रतिष्ठा कीजिए। **—अज्ञात**

नाम-जप

नाम-जप, विषय-वासना की ओर जाती हुई विचारधारा को रोकता है। यह मन को ईश्वर की ओर, अनन्त आनन्द-प्राप्ति की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है।

Jap destroys birth and death. **—Swami Shivananda**

नाम-जप जन्म और मृत्यु को नष्ट कर देता है। **—स्वामी शिवानन्द**

परमात्मा के नाम-स्मरण से निश्चित रूप से लाभ होता है। तुम विश्वास नहीं करोगे कि नाम-स्मरण से तुम्हें रोगों और चिन्ताओं से मुक्ति तथा सुरक्षा प्राप्त होती है। **—सत्य साईं बाबा**

नायक

Every hero becomes a bore at last. **—Emerson**

प्रत्येक नायक अंत में 'बोर' हो जाता है (उससे मन ऊबने लगता है)। **—एमर्सन**

नारायण

नारायण परम ज्योति है, नारायण परमात्मा है, नारायण परब्रह्म है, नारायण परम तत्त्व है, नारायण परम ध्याता है और नारायण ही परम ध्यान है। **—नारायण उप०**

नारी [दे०–'स्त्री', 'भार्या', 'सुभार्या']

नारी केवल मांसपिंड की संज्ञा नहीं है। आदिम काल से आज तक विकास-पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बना कर, उसके अभिशापों को स्वयं झेल कर, और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भर कर, मानवी ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी है। **—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)**

घृतकुम्भसमा नारी तप्तांगारसमः पुमान्।
तस्माद्घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद् बुधः॥ **—अज्ञात**

नारी घी का कुप्पा है और पुरुष जलता हुआ अंगार। दोनों के संयोग से ज्वाला प्रज्ज्वलित हो उठती है। इसलिए घी और आग को कभी भी बुद्धिमान् पुरुष इकट्ठा न रखे।

सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ। सब विधि अगम अगाध दुराऊ॥
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई। जानि न जाय नारि गति भाई॥
—तुलसी (मानस, अयोध्या)

नारी के जीवन का संतोष ही स्वर्ण-श्री का प्रतीक है। **—डा० रामकुमार वर्मा**

नारी पुरुष की अंकाश्रिता है, जैसे वृक्ष के सहारे कोई बेल बढ़ रही हो वैसे ही, वह छाया है, अनुगामिनी है, अवलम्बिता है। उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व जैसे है ही नहीं, वह पुरुष की सहयात्रिणी सहचरी नहीं, अनुचरी है। —अज्ञात

A woman should be seen, not heard. —**Sophocles**

नारी देखने की वस्तु है, सुनने की नहीं। —सोफोक्लीज

Men have sight, women insight. —**Victor Hugo**

मनुष्य को दृष्टि होती है और नारी को दिव्य-दृष्टि। —**विक्टर ह्यूगो**

Women, in your laughter you have the music of the fountain of life. —**R. N. Tagore**

नारी! तेरे हास में जीवन-निर्झर का संगीत है। —**रवीन्द्र**

नारी की करुणा अंतर्जगत् का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं। —**जयशंकर प्रसाद (अजातशत्रु)**

नारी पुरुष के लिए प्रलोभन होती है। —**अमृतलाल नागर (मानस का हंस)**

जब तक किसी राष्ट्र की नारियों में आध्यात्मिक चेतना न होगी वह राष्ट्र स्थायी, शक्तिशाली और उन्नत राष्ट्र नहीं बन सकता। —**सत्य साईं बाबा**

नारी जाति स्नेह और सौजन्य की देवी है, वह नर-पशु को मनुष्य बनाती है, वाणी से जीवन को अमृत-मय बनाती है, उसके नेत्र में आनन्द का दर्शन होता है। वह संतप्त हृदय की शीतल छाया है, उसके हास्य में निराशा मिटाने की अपूर्व शक्ति है। —अज्ञात

नारी तुम केवल श्रद्धा हो। —**प्रसाद**

साँप बीछि को मंत्र है, माहुर झारे जात।
विकट नारि पाले परी, काटि करेजा खात॥ —**कबीर**

नारी निन्दा मत करो, नारी नर की खान।
नारी तें नर होत हैं, ध्रुव प्रह्लाद समान॥ —**अज्ञात**

नारी बड़े से बड़ा दुःख भी होंठों पर मुस्कराहट लेकर सह लेती है। —**अज्ञात**

पवित्र नारी का अपमान संसार में क्रान्ति का अग्रदूत है।
—**डा० रामकुमार वर्मा**

नास्तिक

वह नास्तिक है जो अपने आप में विश्वास नहीं रखता।

—स्वामी विवेकानन्द

अपने अंदर छिपी हुई दैवी शक्तियों में विश्वास न करनेवाला आलसी मनुष्य ही वास्तव में नास्तिक है। **—अज्ञात**

Virtue in distress and vice in triumph, make atheists of mankind. **—Dryden**

सद्गुण जब विपत्ति में पड़ जाय और विजय में अवगुणों की जीत होने लगे तो यह स्थिति मनुष्य को नास्तिक बना देती है। **—ड्राइडेन**

नास्तिको वेदनिन्दकः।

नास्तिक वह है जो वेदों की निन्दा करता है। **—मनु**

निन्दा

जो मनुष्य अपनी निन्दा सह लेता है उसने मानो सारे जगत् पर विजय प्राप्त कर ली। **—वेदव्यास (महा०, आदि०)**

निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥ **—कबीर**

हमें धर्म का विचार हो या न हो, मगर निंदा का भय अवश्य होता है।

—सुदर्शन

दोष पराये देख कर, चलत हसंत हसंत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत॥ **—कबीर**

Take each man's censure, but reserve thy judgment.

—Shakespeare

प्रत्येक की निन्दा सुन लो, परन्तु अपना निर्णय गुप्त रखो। **—शेक्सपियर**

कुलीनस्य च या निन्दा बधो वाऽमित्रकर्शन।
महागुणो बधो राजन्न तु निन्दा कुजीविका॥

—वेदव्यास (महा० उद्यो० ७३।२४)

कुलीन पुरुष की निन्दा और मृत्यु दोनों में से मृत्यु उत्तम है। जीवन को कलंकित कर देने वाली निन्दा किसी प्रकार अच्छी नहीं है।

निग्रह

शरीर को रोके बिना मन पर अंकुश आता ही नहीं। परन्तु शरीर के अंकुश के साथ-साथ मन पर अंकुश रखने का प्रयत्न होना ही चाहिए।

—महात्मा गाँधी

निडर

चिरस्थायी और सच्चे फल पाना हो, तो हमें पहले निडर जरूर बनना होगा। यह गुण धार्मिक जागृति के बिना नहीं आ सकता। **—महात्मा गाँधी**

निद्रा (दे० 'नींद')

निद्रा तुम्हारे मिथ्या अहं, माया, स्वप्न, भ्रम का एक रूप है।

—स्वा० राम०

निद्रा व्याधिग्रस्त की माता, भोगी की प्रियतमा और आलस्य की कन्या है।

—रामप्रताप त्रिपाठी

सोता साध जगाइए, करै नाम का जाप।
यह तीनों सोते भले, साकत, सिंह, औ साँप॥ **—कबीर**

निद्रा केवल मन या मिथ्या अहं को आती है। **—स्वामी रामतीर्थ**

One hour's sleep before midnight is worth three afterwards.

—George Herbert

आधी रात के पहले की एक घन्टे की निद्रा उसके बाद की तीन घन्टे की निद्रा के बराबर है। **—जार्ज हर्बर्ट**

ब्रह्मचर्यरतेर्ग्राम्यसुखनिस्पृह चेतसः।
निद्रा सन्तोंषतृप्तस्य स्वकालं नातिवर्तते॥ **—अज्ञात**

जो मनुष्य सदाचारी है, विषय-भोग से निस्पृह है और सन्तोष से तृप्त है, उसको समय पर निद्रा आये बिना नहीं रहती।

निधि

शीलं शौर्यमनालस्यं पाण्डित्यं मित्रसंग्रहः ।
अचोरहरणीयानि पञ्चैतान्यक्षयो निधिः॥ —अज्ञात

सुन्दर स्वभाव, शौर्य, आलस्य न करना, पण्डिताई और मित्र का संग्रह—ये पाँचों चोरों द्वारा नहीं चुरायी जाने वाली अक्षय निधि हैं ।

नियम

न देवानामतिव्रतं शतात्मा च न जीवति । —ऋग्वेद

देवताओं के नियम तोड़ कर कोई सकड़ों सिद्धियों वाला मनुष्य भी सौ वर्ष नहीं जी सकता ।

जहाँ नियमों की रक्षा नहीं की जाती वहाँ कोई भी अनर्थ पैर फैला सकता है ।
—रामप्रताप त्रिपाठी

निराश

निराश मनुष्य को पग-पग पर मृत्यु ही दिखाई पड़ती है । उसके जीवन में कोई वस्तु प्रसन्नता नहीं भर सकती । —अज्ञात

सभ्यता में उस मनुष्य के लिए स्थान नहीं है जो उदास, खिन्न और निराश है ।
—स्वेट मार्डेन

निराशा

निराशा, निर्बलता का चिह्न है । —स्वामी रामतीर्थ

निराशा आशा के पीछे चलती है । —एल० ई० लैमडन

निराशा में प्रतीक्षा अंधे की लाठी है । —प्रेमचन्द

निराशा जब चरम सीमा पर पहुँच जाती है तब हमारी जीभ बन्द हो जाती है । —सुदर्शन

निराशा चारों ओर अंधकार के रूप में दिखाई देती है । —प्रेमचन्द

The only refuge from despair is to project one's ego into the world. **—Tolstoy**

अपने अहं का विस्तार करना ही निराशा से बचने का एकमात्र उपाय है। **—टाल्सटाय**

नैराश्यं परमं सुखम्—निराशा परम सुख है। **—अज्ञात**

कभी-कभी निराशा में भय भाग जाता है। **—अज्ञात**

Despair is the damp of hell as joy is the serenity of heaven. **—John Dome**

निराशा स्वर्ग की सीलन है, जैसे प्रसन्नता स्वर्ग की शांति। **—जान डोम**

निराशा असंभव को संभव बना देती है। **—प्रेमचन्द**

घोर निराशा व्यक्ति को अनासक्त बना कर द्रष्टा होने के लिए तैयार करती है। **—अज्ञात**

निराशायाः समं पापं मानवस्य न विद्यते।
तां समूलं समुत्सार्य ह्याशावादपरो भव॥ **—अज्ञात**

मनुष्य के लिए निराशा के समान दूसरा पाप नहीं है। इसलिए तुम्हें उस पाप-रूपिणी निराशा को समूल हटा कर आशावादी बनना चाहिए।

निराशावादिनो मन्दा मोहावर्त्तेऽत्र दुस्तरे।
निमग्ना अवसीदन्ति पंके गावो यथावशाः॥ **—अज्ञात**

प्रगति की भावना से विहीन निराशावादी लोग मोह के दुस्तर भंवर में पड़े हुए, दलदल में फँसी विवश गौओं के समान दुःख पाते हैं।

निराशावाद

निराशावाद भयंकर राक्षस है जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है। **—स्वेट मार्डेन**

A pessimist ? A man who thinks everybody as nasty as himself, and hates them for it. **—G. B. Shaw**

निराशावादी ? ऐसा व्यक्ति जो सबको अपनी तरह मलिन समझता है और इसलिए उनसे घृणा करता है। **—बर्नार्ड शा**

निराशावादी हमेशा बुराई ही देखता है, आशावादी हमेशा पहले अच्छी बात देखता है। निराशावादी चिन्ता के मारे अधमरा हो जाता है। आशावादी प्रसन्न होकर अपनी व्यथा को दूर कर ही लेता है। —अज्ञात

निरुत्साह

निरुत्साहस्य दीनस्य शोकपर्याकुलात्मनः।
सर्वार्थाः व्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति॥ —**वाल्मीकि**

जो पुरुष निरुत्साह, दीन और शोकाकुल रहता है, उसके सब काम बिगड़ जाते हैं और वह बहुत बड़ी विपत्ति में पड़ जाता है।

निरोध

श्रीकृष्ण-लीला निरोध-लीला है। मन का निरोध करना है। जगत् का विस्मरण और भगवद् आसक्ति ही निरोध है।

—**राम चन्द्र डोंगरे (श्रीमद्भागवत रहस्य)**

ईश्वर में मन को लय करना ही निरोध है। —**राम चन्द्र डोंगरे**

निर्गुण

ईश्वर के सिवा इस संसार में कोई निर्गुण नहीं है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो अवगुणी में भी कोई न कोई गुण रहता ही है। —**अज्ञात**

निर्णय, निश्चय

Never tell your resolution before hand. —**John Seldess**

अपना निर्णय किसी से पहले न कहो। —**जान सलडेस**

किसी वस्तु का निर्णय करने के लिए तीन तत्त्वों की आवश्यकता होती है—अनुभव, ज्ञान और व्यक्त करने की क्षमता। —**सुकरात**

Experience teacheth that resolution is a sole help in need.

—**Shakespeare**

अनुभव बताता है कि दृढ़ निश्चय आवश्यकता में पूरी सहायता करता है।

—**शेक्सपियर**

निर्धन (दे० 'दरिद्र')

The greatest man in history was the poorest. **—Emerson**

इतिहास का सबसे बड़ा व्यक्ति निर्धन था। **—एमर्सन**

As poor as a church-mouse.

इतना निर्धन जितना चर्च का चूहा। **—कहावत**

रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

—कालिदास (मेघदूत)

जो निर्धन है उसी को सब दुरदुराते हैं और जो भरा-पूरा (धनी) होता है, उसका सभी आदर करते हैं।

निर्धनता (दे० 'गरीबी', 'दरिद्रता')

Not to be able to bear poverty is a shameful thing, but not to know how to chase it away by work is a more shameful thing yet. **—Pericles**

निर्धनता सहने योग्य न होना शर्मनाक बात है परन्तु अपने कार्यों द्वारा कैसे उसे भगाना होता है, यह न जानना और भी शर्मनाक है। **—पेरीक्लीज**

दारिद्र्याद्ह्रियमेति ह्रीपरिगतः सत्त्वात्परिभ्रश्यते
निःसत्त्वः परिभूयते परिभवान्निर्वेदमापद्यते।
निर्विण्णः शुचमेति शोकनिहतो बुद्धया परित्यज्यते
निर्बुद्धिः क्षयमेत्यहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम्॥

—हितोपदेश

निर्धनता से मनुष्य को लज्जा होती है, लज्जा से पराक्रम नष्ट हो जाता है, पराक्रम न होने से अपमान होता है, अपमान होने से दुःख मिलता है, दुःख से शोक होता है, शोक से बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि न होने से नाश हो जाता है। निर्धनता ही सब आपत्तियों का घर है।

निर्बल

मबल की शिकायतें सब सुनते हैं, निर्बल की फरियाद भी कोई नहीं सुनता।

—प्रेमचन्द

सबै सहायक सबल के, कोई न निबल सहाय। —अज्ञात

यद्यपि शहद की मक्खियाँ कमजोर होती हैं, फिर भी वे सब मिल कर मधु निकालने वाले का प्राण तक ले लेती हैं, वैसे ही निर्बल मनुष्य भी इकट्ठे होकर बलवान् शत्रु का नाश कर सकते हैं। —वेदव्यास (महा०, वन०)

निर्भयता

यदि उपनिषदों से बम की तरह आने वाला और बमगोले की तरह अज्ञान के समूह पर बरसने वाला कोई शब्द है, तो वह है 'निर्भयता'।

—स्वामी विवेकानन्द

निर्मलता

Only the heart without a strain knows perfect ease.

—Goethe

केवल निर्मल हृदय ही पूर्ण आनन्द जानता है। —गेटे

निर्माण

निर्माण सदैव बलिदानों पर टिकता रहा है और जब तक निर्माण के लिए बलिदान की खाद नहीं दी जाती तब तक विकास भी अंकुरित नहीं होता।

—अज्ञात

निर्लज्ज

निर्लज्ज हार कर भी नहीं हारता, मर कर भी नहीं मरता।

—जयशंकर प्रसाद

सबसे अधिक निर्लज्ज वही है जो ईश्वर को नहीं मानता।

—रामप्रताप त्रिपाठी

निर्लोभी

गरदने बेतमा बुलन्द बुवद । —सादी

निर्लोभी मनुष्य का सिर सदा ऊँचा रहता है ।

निश्चय

अपनी बात के धनी लोगों के निश्चय मन को और नीचे गिरते हुए पानी के वेग को भला कौन फेर सकता है । —कालिदास (कुमारसंभव)

He who is firm and resolute in wi l moulds the world to himself. —**Goethe**

वह व्यक्ति जो अपने निश्चय में दृढ़ और अटल है, संसार को अपने साँचे में ढाल सकता है । —**गेटे**

दृढ़ निश्चय ही विजय है । —**कहावत**

निश्चयात्मक प्रकृति के मनुष्य ही प्रभावशाली हो सकते हैं । —**स्वेट मार्डेन**

निष्कपटता

Candour is the brightest gem of criticism. —**Disraeli**

निष्कपटता आलोचना का सबसे उज्ज्वल रत्न है । —**डिजरायली**

Frankness invites frankness. —**Emerson**

निष्कपटता निष्कपटता को आमन्त्रित करती है । —**एमर्सन**

निःस्वार्थ

निःस्वार्थता ही धर्म की कसौटी है । जो जितना अधिक निःस्वार्थी है वह उतना ही अधिक आध्यात्मिक और शिव के समीप है । —**विवेकानन्द**

नींद (दे० 'निद्रा')

नींद एक ऐसा अथाह सागर है जिसमें हम सब अपने दुखों को डुबो देते हैं ।
—**प्रेमचन्द**

नीच

नीच निचाई नहिं तजै, सज्जनहू के संग ।
तुलसी चंदन विटप बसि, विष नहिं तजत भुजंग ।। —तुलसी

नीच मनुष्य विपत्ति में फँसने पर प्रारब्ध की ही निन्दा करते हैं, अपने किये हुए कुकर्मों की नहीं । —वेदव्यास (महा०, कर्ण०)

जो उपकार करने वाले को नीच मानता है उससे अधिक नीच दूसरा कोई नहीं । —विनोबा

ऊँच निवास नीच करतूती । देखि न सकहिं पराइ विभूती ।।
—तुलसी (मा०)

कछु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग ।
पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारै अंग ।। —वृन्द

रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर औ प्रीति ।
काटे चाटे श्वान के, दुहूँ भाँति विपरीत ।। —रहीम

लातहु मारे चढ़ति सिर, नीच को धूरि समान ।
—तुलसी (मा०, अयो०)

दह्यमानाः सुतीव्रेण नीचाः परयशोऽग्निना ।
अशक्ता स्तत् पदं गन्तुं ततो निन्दां प्रकुर्वते ।। —चाणक्य

नीच दूसरे की यशरूपी अत्यन्त तीव्र अग्नि से जल कर और उसके पद को प्राप्त करने में असमर्थ होकर उसकी निंदा करते हैं ।

रहइ न नीच-मते चतुराई ।। —तुलसी (मा०, अयो०)

नीचता

स्वभाव की नीचता वर्षों में भी मालूम नहीं होती । —सादी

नीति

नीति न तजिय राज-पद पाये । —तुलसी (मा०, अयो०)

नीति धर्म की दासी है । धर्मपालन के लिए मनुष्य को नीतिमान् होना चाहिए और आजीवन नीतिपथ न छोड़ना चाहिए । —अज्ञात

सम्पत्ति रहते हुए भी उसकी वृद्धि के लिए प्रयत्न करना नीतिनिपुणता है।
—वेदव्यास (महा०, सभा०)

हे राजन्! वाणी का संयम अत्यन्त ही कठिन समझा जाता है ऐसी बात जो वास्तव में अर्थपूर्ण भी हो और विचित्र भी बहुत नहीं कही जा सकती।
—वेदव्यास (महा०)

नीति-शास्त्र

नीतिशास्त्र ही इस भूमंडल का अमृत है, यही उत्तम नेत्र है और यही श्रेय-प्राप्ति का सर्वोच्च उपाय है। **—वेदव्यास (महा०, शा०)**

नीरोग

सबसे बढ़ कर नीरोग वही है जो निश्चिन्त है। **—रामप्रताप त्रिपाठी**

नृत्य

नृत्य भी शरीर की चेष्टाओं पर आश्रित होने के कारण मूर्ति के बन्धनों से सर्वथा मुक्त नहीं। वह एक प्रकार का अभिनीत गीत है।
—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

समस्त कलाओं में नृत्य सबसे महान्, सबसे अधिक प्रभाव डालने वाली और सबसे अधिक सुन्दर कला है, क्योंकि यह जीवन का केवल अनुवाद या पृथक्करण ही नहीं है, यह स्वयं ही जीवन है। **—हव्यलाक इल्लिस**

नेक

सौजन्यधन्यजनुषः पुरुषाः परेषां
दोषान् विहाय गुणमेव गवेषयन्ति।
त्यक्त्वा भुजङ्गमविषं हि पटीरगर्भात्,
सौगन्ध्यमेव पवनाः परिवाहयन्ति। **—अज्ञात**

वे भले मानुष लोग धन्य हैं जो दूसरे के दोषों को छोड़ कर गुण को ही खोजते रहते हैं। मलयाचल के चन्दन वृक्ष पर लिपटे हुए सर्पों के विष को न ग्रहण कर वायु चन्दन की सुगन्धि का ही वहन करती है।

नेक बनने में सारी आयु लग जाती है, बदनाम होने में तो एक दिन भी नहीं लगता। ऊपर चढ़ना कैसा कठिन है? इसमें कितना समय लगता है? मगर गिरना कितना आसान है? इसमें परिश्रम कुछ नहीं करना पड़ता। —**सुदर्शन**

नेकी

जितने दिन जिन्दा हो इसको गनीमत समझो और इससे पहले कि लोग तुम्हें मुर्दा कहें नेकी कर जाओ। —**सादी (गुलिस्तां)**

Honour is the reward of virtue. —**Cicero**

सम्मान नेकी का उपहार है। —**सिसरो**

The only reward of virtue is virtue. —**Emerson**

नेकी का उपहार नेकी है। —**एमर्सन**

बदी करने के मौके दिन में सौ बार मिलते हैं, लेकिन नेकी करने का मौका साल में केवल एक बार मिलता है। —**वाल्टेयर**

Our life is short, but to expand that span to vast eternity is virtue's work. —**Shakespeare**

हमारा जीवन क्षणिक है लेकिन उसे अनन्त तक फैलाना सद्गुण का काम है। —**शेक्सपियर**

नेता

Leaders are like ships on the ocean they come and they go; but the people are like the ocean itself, they always remain.
-**Maurice Hindaus**

नेता समुद्र में जहाज के सदृश हैं; वह आते हैं और चले जाते हैं, परन्तु जनता समुद्र की भाँति है जो सदा रहती है। —**मॉरिस हिंडस**

Reason and judgment are the qualities of a leader.
–**Tacitus**

तर्क और निर्णय नेता के गुण हैं। —**टैसीटस**

लोगों को सही रास्ता बताना नेताओं का काम है। —**विनोबा**

अगर अन्धा अन्धे का नेतृत्व करे, तो दोनों खाई में गिरेंगे। —बाइबिल

नेतृत्व

Past suffering and sacrifice can never be a passport to future leadership under all circumstances. **–Subhas C. Bose**

भूतकाल का कष्ट और कुर्बानी भविष्य के नेतृत्व के लिए हर हालत में पासपोर्ट नहीं देती। **—सुभाषचन्द्र बोस**

नेत्र, नैन (दे० 'आँख')

नेत्र ही ज्ञान का द्वार है। **—अज्ञात**

रहिमन तीर की चोट ते, चोट परे बचि जाय।
नैन बान की चोट ते, धन्वंतरि न बचाय।। **—रहीम**

जूठे जानि न संग्रहे, मन मुँह निकसे बैन।
याही तें मानो किये, बातन को विधि नैन।। **—बिहारी**

लाज लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं।
ये मुँह जोर तुरंग लौं, ऐंचत हू चलि जाहिं।। **—बिहारी**

तनक किरकिरी के परे, नैन होत बेचैन।
वे नैना कैसे जियैं, जिन नैनन बिच नैन।। **—बिहारी**

दगन लगत बेधत हियो, विकल करत अंग आन।
ये तेरे सब तैं विषम, ईछन तीछन बान।। **—बिहारी**

नैना नेकु न मानहीं, कितौ कहौं समुझाय।
तन-मन हारे हू हँसैं, तिनसों कहा बसाय।। **—बिहारी**

बर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न।
हरिनी के नैनान ते, हरि नीके ये नैन।। **—बिहारी**

नौकर

Be not to familiar with thy servants at first it may beget love, but in the end it will breed contempt. **—Fuller**

अपने सेवक से बहुत मेल-जोल मत बढ़ाओ। प्रारम्भ में स्नेह-सा प्रतीत होता है परन्तु अन्त में यह घृणा उत्पन्न करता है। **—फुलर**

We become willing servants to the good by the bonds their virtues lay upon us. —**Sir P. Sidney**

महान् व्यक्तियों द्वारा की गयी नेकी के बन्धनों में बँधकर हम उनके ऐच्छिक सेवक हो जाते हैं। —**सर पी० सिडनी**

नौकरी

He profits most who serves best. —**A. F. Sheldon**

जो सबसे ज्यादा सेवा करता है वह सबसे अधिक लाभ उठाता है। —**शेल्डन**

उत्तम खेती, मध्यम बान।
निकृष्ट चाकरी, भीख निदान॥ —**कहावत**

They serve God well, who serve His creatures.
—**Caroline Norton**

जो मानव की सेवा करते हैं वे ही ईश्वर की सबसे अच्छी सेवा करते हैं।
—**कैरोलियन नारटन**

Service is no inheritance. सेवा पैतृक सम्पत्ति नहीं है। —**कहावत**

न्याय

Oh judgment! thou art fled to brutish beasts and men have lost their reason. —**Shakespeare**

हा न्याय! क्या तू भी जानवरों के हृदय में चला गया और मनुष्यों में ज्ञान नहीं रहा। —**शेक्सपियर**

न्याय को प्रेम कलंकित नहीं कर सकता। —**प्रेमचन्द**

Justice delayed is justice denied. —**Gladstone**

न्याय में विलम्ब करना, न्याय को अस्वीकार करना है। —**ग्लैडस्टन**

प्रथम त्यागमय दिव्य कर्म 'न्याय करना' है। —**रस्किन**

न्याय की याचना नेत्रों से नहीं शब्दों से होती है।
—**डा० रामकुमार वर्मा (अभियोग)**

Delay of justice is injustice. **—Landor**

न्याय में विलम्ब अन्याय है। **—लेंडोर**

न्याय के पद पर बैठने वाले मनुष्य को पक्षपात और द्वेष से मुक्त होना चाहिए। **—अज्ञात**

ईश्वरीय न्याय की चक्की यद्यपि मन्द गति से चलती है, लेकिन चलती अवश्य है। **—जार्ज हर्बर्ट**

सत्य का कर्म में परिणत होना न्याय है। **—डिजरायली**

न्याय का थोड़ा-बहुत व्यवहार भी वर्षों की झूठ-भक्ति से लाख दर्जे अच्छा है। आज का हमारा न्याय तो बुरी तरह बेजबान और खुले आम अन्धा है। बेकसी की दीर्घ मार से वह पीड़ित है। **—रस्किन**

There is no virtue so truly great and god-like as justice. **—Addison**

न्याय के सदृश कोई गुण वास्तव में ईश्वरतुल्य और महान् नहीं है। **—एडीसन**

Justice without wisdom is impossible. **—Froude**

बिना बुद्धिमत्ता के न्याय असम्भव है। **—फ्राउड**

हम प्रेम का दरिया बहा सकते हैं, पर न्याय के नाम पर नानी मर जाती है। **—रस्किन**

संसार में झूठी तुलाओं का आदर होता है और न्याय दीनारों के मोल बिकता है। **—अज्ञात**

न्यायाधीश

Four things belong to a judge: to hear courteously, to answer wisely, to consider soberly and to decide impartially. **—Socrates**

न्यायाधीश में चार बातें होनी चाहिए—शिष्टतापूर्वक सुनना, बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर देना, गंभीर होकर विचार करना और निष्पक्ष होकर न्याय करना। **—सुकरात**

मूर्खे व्यसनिनं लुब्धमप्रगल्भं भयाकुलम् ।
क्रूरमन्यायकर्तारं नधिपत्ये नियोजयत् ।। —अज्ञात

मूर्ख, व्यसनी, लोभी, अप्रगल्भ, भीरु, क्रूर, अन्यायी, ऐसा न्यायाधीश नहीं होना चाहिये अर्थात् राजा, मूर्ख आदि सात लक्षण वाले पुरुष को न्याय करने के पद पर नियुक्त न करे ।

पंडित

लाख मूर्ख तजि राखिये, इक पंडित बुधधाम ।
सर शोभा इक हंस सों, लाख काक केहि काम ।। —विदुर

आत्म-विषयक बुद्धि का नाम पड़ा है, जिसमें वह बुद्धि होती है वही पण्डित है । —आदि शंकराचार्य

जिसे जीवन मरण का शोक नहीं वह निःसंदेह पण्डित है । —अज्ञात

अधि गतपरमार्थान्पण्डितान्मावमंस्थास्तृणमिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान्संरुणद्धि ।
मदमिलितमिलिन्दश्यामगण्डस्थलानां न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् ।।
—भर्तृहरि

जिन पंडितों को परमार्थ का ज्ञान है उनका अपमान मत करो । तृण के समान लघु लक्ष्मी उनको ऐसे नहीं रोक सकती जैसे कि मदधाराकृष्ट भ्रमरों से शोभित श्याम मस्तक वाले हाथियों को कमल की नाल ।

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय ।। —कबीर

पक्ष

आत्मवर्गहितमिच्छति सर्वः । —भारवि

सभी लोग अपने-अपने पक्ष का कल्याण चाहते हैं ।

पछतावा

पछतावा कायरता के लिए होता है, वीरता के लिए नहीं; वीरता कभी नहीं पछताती । —सुदर्शन

करता था तो क्यों किया, अब करि क्यों पछिताय।
बोवे पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय॥ —कबीर

पड़ोसी

When your neighbour's house is afire, your own property is at stake. —**Horace**

जब तुम्हारे पड़ोसी के घर में आग लगी हो तो तुम्हारी अपनी सम्पत्ति भी खतरे में है। —होरेस

Thou shall not own false witness against thy neighbour.

—**Bible**

अपने पड़ोसी के विरुद्ध कभी झूठी गवाही न दो। —बाइबिल

पड़ोसी से प्रेम करने वाला विपत्ति में भी सुखी रहता है, जब कि पड़ोसी से बैर ठानने वाला सम्पत्ति में भी दुःखी होता है। —रामप्रताप त्रिपाठी

पति

सुयोग्य पति अपनी पत्नी को सम्मान की अधिकारिणी बना देता है। —मनु

A good husband should be deaf and a good wife blind.

—**French Proverb**

अच्छे पति को बहरा और अच्छी पत्नी को अन्धी होना चाहिए। —कहावत

A husband is a plaster that cures all the ills of girlhood.

—**Moliere**

पति वह लेप है जो लड़कियों के कुँवारेपन की सभी बीमारियों को अच्छा कर देता है। —मोलियर

साध्वीनां हि स्थितानां तु शीले सत्ये श्रुते स्थिते।
स्त्रीणां पवित्रं परमं पतिरेको विशिष्यते॥

—वाल्मीकि (रा०, अ०)

जो सत्य, सदाचार, शास्त्रों की आज्ञा और कुलोचित मर्यादा में स्थित रहती हैं, उन साध्वी स्त्रियों के लिए एकमात्र पति ही परम पवित्र एवं सर्वश्रेष्ठ आश्रय है।

पतिव्रत

कोकिलानां स्वरो रूपं नारीरूपं पतिव्रतम् ।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ।। —चाणक्य

कोकिला का स्वर ही उसकी सुन्दरता है और स्त्रियों की सुन्दरता उनका पातिव्रत धर्म है । कुरूपों की सुन्दरता विद्या है और तपस्वियों की सुन्दरता उनकी क्षमा है ।

एकै धरम एक व्रत नेमा । काय, वचन, मन पति-पद-प्रेमा ।।
—तुलसी (मानस, अरण्य०)

पतिव्रता

पतिवरता पति को भजै, और न आन सुहाय ।
सिंह-बचा जो लंघना, तो भी घास न खाय ।। —कबीर

पतिव्रता स्त्री पति का सिरताज है । —कहावत

पतिवरता मैली भली, गले काँच की पोत ।
सब सखियन में यों दिपै, ज्यों रवि-ससि की जोत ।। —कबीर

सूरा के तो सिर नहीं, दाता के धन नाँहि ।
पतिवरता के तन नहीं, सुरति बसै मन माँहि ।। —कबीर

जिस प्रकार मदारी बलपूर्वक सर्प को बिल से निकाल लेता है वैसे ही पतिव्रता स्त्री पति को लेकर स्वर्गलोक में पूजित होती है । —हितोपदेश

पत्नी

For a wife, take the daughter of a good mother. **—Fuller**

पत्नी के चुनाव में किसी सुचरित्र माँ की बेटी को पसन्द करो । —फुलर

In the election of a wife as in a project of war, to err but once is to be undone forever. **—Middleton**

पत्नी के चुनाव में युद्ध की योजना के सदृश केवल एक बार गलती करना सदा के लिए बरबाद हो जाना है । —मिडिलटन

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा ।
धर्मानुकूला, क्षमया धरित्री, भार्या च षडगुण्यवतीह दुर्लभा ।। —अज्ञात

कामकाज में मन्त्री के समान सलाह देने वाली, सेवादि में दासी के समान काम करने वाली, माता के समान सुन्दर भोजन कराने वाली, शयन के समय रम्भा (वेश्या) के समान सुख देने वाली और धर्म के अनुकूल तथा क्षमादि गुण धारण में पृथिवी के समान स्थिर रहने वाली ; ऐसे छः गुणों से युक्त स्त्री सुदुर्लभ होती है ।

A woman must be a genius to create a good husband.

—Balzac

स्त्री में प्रतिभा होनी चाहिए कि वह अच्छे पति का निर्माण कर सके ।

—बालजक

पत्नी पुरुष की पूरक है । पुरुष के सभी.अभाव उसे पाकर स्वयमेव भर जाते हैं ।

पदवी

Virtue is the first title of nobility. **—Moliere**

सद्गुण कुलीनता की पहली पदवी है । **—मोलियर**

पपीहा

पपीहा भी बिना जल वाले बादलों से पानी नहीं माँगता ।

—कालिदास (रघुवंश—५-१७)

पर-घर

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भौ धीम ।
केहि की प्रभुता नहिं घटी, पर-घर गये रहीम ।। **—रहीम**

अमृत का भाण्डार, औषधियों का नायक, अमृतमय शरीर और पूर्ण शोभा से युक्त होते हुए भी यह चन्द्रमा जब (अमावस्या को) सूर्यमण्डल में पहुंचता है तो उसकी सब चमक-दमक और शोभा लुप्त हो जाती है । ठीक ही है, ऐसा कौन है जो दूसरे के घर जाकर लघुता को न पहुंच जाय । **—अज्ञात**

परतंत्र

मनुष्य प्रकृति का अनुचर और नियति का दास है। —**जयशंकर प्रसाद**

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत् ॥

—**भगवान श्रीकृष्ण (गीता) १८–६०**

हे कौन्तेय ! अपने स्वभावजन्य कर्म से बद्ध होने के कारण तू जो मोह के वश होकर नहीं करना चाहता वह परवश होकर करेगा।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥

—**भगवान श्रीकृष्ण (गीता) १८–६१**

हे अर्जुन ! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में वास करता है और अपनी माया के बल से उन्हें चाक पर चढ़े हुए घड़े की तरह घुमाता है।

लायी हयात आये, कजा ले चली चले।
अपनी खुशी न आये, न अपनी खुशी चले ॥ —**ज़ौक़**

मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है—विवश है। वह कर्त्ता नहीं है ; वह केवल साधन है। —**भगवतीचरण वर्मा (चित्रलेखा)**

पर-पीड़ा

पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई। —**तुलसी (मानस)**

अगर तुम्हारे एक शब्द से भी किसी को पीड़ा पहुंचती है, तो तुम अपनी सब नेकी नष्ट हुई समझो। —**संत तिरुवल्लुवर**

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुँचाना, यही तपस्या का स्वरूप है। —**संत तिरुवल्लुवर**

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम् ॥

अठारहों पुराणों में वेदव्यासजी ने केवल दो बातें कही हैं। परोपकार करके पुण्य कमाया जाता है और दूसरों को कष्ट पहुंचा कर पाप। —**अज्ञात**

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एक रूप बहुधा यः करोति ।

—कठोपनिषद्

सब भूतों का अन्तरात्मा परमात्मा एक होते हुए भी अनेक रूपों से प्रतीत होता है ।

परमधन

प्रियतम की स्मृति भक्तों का परम धन है । जो ज्ञान उन्हें इस धन से वंचित करता हुआ रस शून्य बनाने की प्रेरणा देता है उनकी दृष्टि में वह सर्वथा घातक है ।

—पं० राम किंकर उपाध्याय (मानस-मुक्तावली भाग–३)

परमहंस

मान धाम धन नारि सुत, इनमें जो न असक्त ।
परमहंस तिहिं जानिये, घर ही माहिं विरक्त ॥ **—अज्ञात**

परमात्मा (दे० 'ईश्वर' तथा 'परमेश्वर')

परमात्मदेव को जानने पर सारे बन्धन कट जाते हैं, क्लेशों के क्षीण होने पर जन्म और मृत्यु से छुटकारा मिल जाता है । **—श्वेता० उप०**

God kisses the finite in His love and man the infinite.

—R. N. Tagore

परमात्मा अपने प्रेम में परिमित को ग्रहण करता है, और मनुष्य अनंत को ।

—रवीन्द्र

तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वाः । **—यजुर्वेद**

उस परमात्मा में ही सम्पूर्ण लोक स्थित है ।

ईश्वर के द्वारा प्रस्तावित कोई वस्तु मनुष्य की शक्ति के परे नहीं होती ।

—अज्ञात

नैराश्यपूर्ण अंधकार में ईश्वर का नाम हममें शक्ति का संचार करता है ।

—महात्मा गांधी

परमात्मा ही सबकी आँखों से दूसरों की ओर देखता है। —**गुरु अर्जुन देव**

God is truth and light His shadow. —**Plato**

परमात्मा सत्य है और प्रकाश उसकी छाया। —**प्लेटो**

परमानन्द

जगत् में दो ही परमानन्द में रहते हैं—(१) मूर्ख एवं उद्यम-रहित बालक और (२) भगवत्-प्राप्त गुणातीत पुरुष। —**श्रीमद्भागवत**

परमेश्वर (दे० 'ईश्वर' तथा 'परमात्मा')

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः॥

—**श्वेता० उप०**

परमेश्वर को कोई आँखों से नहीं देख सकता, किन्तु हममें से हर एक मन को पवित्र करके विमल बुद्धि से परमेश्वर को देख सकता है।

'एकमेवाद्वितीयम्' —**छान्दोग्य**

यह जो कुछ है सारा संसार चराचर।
कर रहा व्याप्त सबको ही वह परमेश्वर॥

—**दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'
'एकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति' —**ऋग्वेद**

एक ही परमेश्वर है, कोई उसके जैसा दूसरा नहीं। एक ही को विप्र लोग बहुत-से नामों से वर्णन करते हैं। वह है एक ही, किन्तु उसकी बहुत प्रकार से कल्पना करते हैं।

परम्परा

Tradition is an important help to history, but its statements should be carefully scrutinized before we rely on them.

—**Addison**

परम्परा इतिहास को महत्वपूर्ण सहयोग देती है, परन्तु उसकी बातों को सूक्ष्म रूप से जाँच कर ही हमें उस पर विश्वास करना चाहिए। —**एडीसन**

परलोक

नारायण परलोक में, ये दो आवत काम ।
देना मुट्ठी अन्न की, लेना भगवत नाम ।। —**नारायण स्वामी**

परहित (दे० 'परोपकार')

परहित लागि तजहिं जो देही ।
संतत संत प्रशंसहिं तेही ।। —**तुलसी (मानस, बाल०)**

जिसमें दया नहीं है वह तो जीते जी ही मुर्दे के समान है । दूसरे का भला करने से अपना ही भला होता है । —**अज्ञात**

कोई व्यक्ति सच्चाई, ईमानदारी तथा लोक-हितकारिता के राजपथ पर दृढ़तापूर्वक चलता रहे तो उसे कोई भी बुराई क्षति नहीं पहुंचा सकती ।
—**हरिभाऊ उपाध्याय**

परहित बस जिनके मन माँहीं । तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।
परहित सरिस धरम नहिं भाई । —**तुलसी, मानस**

प्रिय बानी जे सुनहि जे कहहिं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ।।
बचन परमहित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं, ते नर प्रभु थोरे ।।
—**तुलसी (मानस, लंका०)**

परहित-निरत निरंतर मन-क्रम-वचन नेम निबहौंगो । —**तुलसी**

हँसो इस तरह हँसे तुम्हारे साथ दलित यह धूल भी ।
चलो इस तरह कुचल न जाये पग से कोई शूल भी ।।
सुख, न तुम्हारा सुख केवल जग का भी उसमें भाग है ।
फूल डाल का पीछे, पहले उपवन का श्रृङ्गार है ।।
—**गोपालदास 'नीरज' (प्राण-गीत)**

पराक्रम

No one reaches a high position without daring. —**Syrus**
बिना पराक्रम के कोई उच्च पद पर नहीं पहुंचता । —**साइरस**

परम पराक्रम के आश्रय में,
रिद्धि सिद्धि समृद्ध समस्त—
रहतीं उदित कर्म के पथ पर,
होती हैं विषाद में अस्त ॥

—दीनानाथ दिनेश

तदलं प्रतिपक्षमुन्नतेरवलम्ब्य व्यवसायवन्ध्यताम् ।
निवसन्ति पराक्रमाश्रया न विषादेन समं समृद्धयः ॥

—भारवि (किरातार्जुनीय)

उन्नति-पथ के बाधक अनुत्साह का अवलम्बन करके पड़े रहना ठीक नहीं, क्योंकि समृद्धियाँ पराक्रमशील (उत्साही) पुरुष का आश्रय लेती हैं और अनुत्साही का परित्याग कर देती हैं ।

पराजय

पराजय से सत्याग्रही और अहिंसक को निराशा नहीं होती । उससे तो कार्य-क्षमता और लगन बढ़ती है और सत्य से मनुष्य की बुद्धि परिष्कृत होकर उसका मार्ग-दर्शन करती है । **—महात्मा गांधी**

What is defeat ? Nothing but education, nothing but the first step to something better. **—Wendell Phillips**

पराजय क्या है ? कुछ नहीं, केवल शिक्षा एवं अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति की ओर पहला कदम है । **—वेन्डेल फिलिप**

पराधीन

नात्मनः कामकारो हि पुरुषोऽयमनीश्वरः ।
इतश्चेतरतश्चैनं कृतान्तः परिकर्षति ॥

—वाल्मीकि (रा०, अ०)

मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नहीं कर सकता; क्योंकि वह पराधीन होने के कारण असमर्थ है । काल इसे इधर उधर खींचता रहता है ।

एतावज्जन्मसाफल्यं यदनायत्तवृत्तिता ।
ये पराधीनतां यातास्ते वै जीवन्ति के मृताः ।। —हितोपदेश

स्वाधीनता का होना ही जन्म की सफलता है और जो पराधीन होने पर भी जीते हैं तो मरे हुए कौन हैं ? अर्थात् वे ही मरे के समान हैं जो पराधीन रहते हैं ।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं । —तुलसी (मानस)

If you put a chain around the neck of a slave, the other end fastens itself around your own. **—Emerson**

अगर गुलाम के गले के चारों तरफ आप एक जंजीर बाँधते हैं तो उसका दूसरा किनारा स्वयं आप के ही गले में बँध जाता है । **—एमर्सन**

धिगस्तु परवश्यताम् । **—वाल्मीकि (रा०, ५-२५-२०)**

पराधीनता को धिक्कार है ।

परामर्श

He that gives good advice, builds with one hand; he that gives good counsel and example, builds with both. **—Bacon**

जो मनुष्य नेक सलाह देता है, वह एक ही हाथ से निर्माण करता है, और जो मनुष्य उपयुक्त परामर्श के साथ दृष्टान्त भी देता है, वह दोनों हाथों से निर्माण करता है । **—बेकन**

परिग्रह

परिग्रह का मतलब सञ्चय या इकट्ठा करना है । सत्य-शोधक अहिंसक परिग्रह नहीं कर सकता । **—महात्मा गांधी**

जो विचार हमें ईश्वर से विमुख रखते हैं, या ईश्वर की ओर नहीं ले जाते, वे सब परिग्रह में शुमार होते हैं और इसलिए वे त्याज्य हैं । **—महात्मा गांधी**

परमात्मा परिग्रह नहीं करता, वह अपने लिए आवश्यक वस्तु रोज-रोज पैदा करता है । **—महात्मा गांधी**

सच्ची संस्कृति—सुधार और सभ्यता का लक्षण परिग्रह की वृद्धि नहीं, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसकी कमी है। जैसे-जैसे परिग्रह कम करते हैं वैसे-वैसे सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष बढ़ता है। सेवा-क्षमता बढ़ती है। **—महात्मा गांधी**

केवल सत्य की आत्मा की दृष्टि से विचारें तो शरीर भी परिग्रह है। भोगेच्छा के कारण हमने शरीर का आवरण खड़ा किया है, और उसे टिकाये रखते हैं।

—महात्मा गांधी

परिग्रही

जो मनुष्य अपने दिमाग में निरर्थक ज्ञान ठूंस रखता है वह परिग्रही है।

—महात्मा गांधी

परिचय

किसी को अपना परिचय देना बुरा नहीं है, बुरा तभी है जब वह किसी स्वार्थ या अहंकार से दिया जाता है। **—अज्ञात**

परिणाम

फलत्याग का यह अर्थ भी नहीं है कि परिणाम के सम्बन्ध में लापरवाही रहे। परिणाम और साधन का विचार और उसका ज्ञान अत्यावश्यक है।

—महात्मा गांधी

परिपूर्णता

Perfection is attained by slow degrees, it requires the hand of time. **—Voltaire**

परिपूर्णता धीरे-धीरे प्राप्त होती है, उसको समय की आवश्यकता होती है।

—वाल्टेयर

Trifles make perfection, and perfection is no trifle.

—Michael Angelo

छोटी-छोटी बातों से पूर्णता प्राप्त होती है, और पूर्णता कोई छोटी बात नहीं है। **—माइकेल एन्जिलो**

This is the very perfection of a man, to find out his own imperfection. **—Augustine**

मानव की परिपूर्णता अपनी अपूर्णता को जान लेने में है। **—ऑगस्टाइन**

परिवर्तन

जीवन-ऋतु में परिवर्तन स्वाभाविक है। **—अज्ञात**

परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है। स्थिर होना मृत्यु है। निश्चेष्ट शांति मरण है। प्रकृति क्रियाशील है। **—जयशंकर प्रसाद**

परिश्रम (दे० 'श्रम')

परिश्रम हमारा देवता है। **—विनोबा**

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः। **—ऋग्वेद**

बिना स्वयं परिश्रम किये देवों की मैत्री नहीं मिलती।

Without labour nothing prospers. **—Sophocles**

बिना परिश्रम के उन्नति नहीं होती। **—सोफोक्लीज**

परिश्रम सभी पर विजय प्राप्त करता है। **—होमर**

परिश्रम उज्ज्वल भविष्य का पिता है। **—अज्ञात**

जीवन में शारीरिक और मानसिक परिश्रम के बिना कोई फल नहीं मिलता। दृढ़चित्त और महान् उद्देश्य वाला मनुष्य जो करना चाहे सो कर सकता है। **—ऐरी शेफर**

Genius begins great works; labour alone finishes them. **—Jouberi**

प्रतिभा महान् कार्यों का प्रारम्भ करती है किन्तु परिश्रमी ही उनको समाप्त करता है। **—जोबरी**

परिश्रम की निज की प्रतिष्ठा इतनी है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी। **—विनोबा**

जो अपने हिस्से का काम किये बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं।

—महात्मा गांधी

परिश्रम से भागने वाला किसी न किसी प्रकार की चोरी अवश्य करता है। यदि नहीं करता तो भविष्य में करेगा। **—अज्ञात**

परिश्रमी

परिश्रमी के घर के द्वार को भूख दूर से ताकती है, पर भीतर नहीं घुस सकती। **—अज्ञात**

परिस्थिति

मनुष्य बिगड़ता है या तो परिस्थितियों से या पूर्व संस्कारों से। परिस्थितियों से गिरने वाला मनुष्य उन परिस्थितियों का त्याग करने से ही बच सकता है।

—प्रेमचन्द

पुरुषार्थ परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने में है। **—महात्मा गांधी**

Men are the sport of circumstances, when the circumstances seem the sport of men. **—Byron**

मनुष्य परिस्थितियों की क्रीड़ा है, जब कि परिस्थितियाँ ही मनुष्य को क्रीड़ा मालूम पड़ती हैं। **—बायरन**

In all our reasoning concerning men we must lay it down as a maxim that the great part are moulded by circumstances.

—Robert Hall

मनुष्य के बारे में, हमें अपनी सारी युक्तियों में यह सिद्धान्त के रूप में मान लेना होगा कि जीवन का अधिकांश भाग परिस्थितियों द्वारा निर्मित होता है।

—राबर्ट हाल

Deep tragedy is the school of great men.

—Mahatma Gandhi

गम्भीर परिस्थिति ही महापुरुषों का विद्यालय है। **—महात्मा गांधी**

Man is not the creature of circumstances, circumstances are the creatures of men. **—Disraeli**

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं है, परिस्थितियाँ मनुष्य की दास हैं।

—डिजरायली

स्वतंत्र बुद्धि के लोग भी एक हद तक यदि परिस्थिति के गुलाम नहीं होते तो कम से कम परिस्थिति द्वारा गढ़े जाते हैं। **—विनोबा**

मनुष्य परतंत्र है, परिस्थितियों का दास है। **—भगवतीचरण वर्मा**

परीक्षा

दातुश्चैव परीक्षा वै दुर्भिक्षे जायते नृभिः।
शूरस्यैव तु संग्रामे मित्रस्य च तथापदि॥
अशक्तौ च तथा स्त्रीणां विपत्तौ सुकुलस्य च।
स्नेहस्य च परोक्षेण सत्यस्य संकटे गते॥

—वेदव्यास (शिवपुराण)

दाता की परीक्षा दुर्भिक्ष में, वीर की युद्ध में, मित्र की आपत्काल में, स्त्री की निर्धनावस्था में, अच्छे कुल की विपत्ति में, प्रेम की परोक्ष में और सत्य की परीक्षा संकट के समय होती है।

हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा। **—रघुवंश**

सुवर्ण की विशुद्धता की परीक्षा अग्नि से होती है और उसके खोटेपन की भी।

जिस प्रकार सोने को काट कर, तपा कर, घिस कर और पीट कर उसकी जाँच की जाती है, उसी प्रकार त्याग, शील, गुण और कर्म इन चार प्रकारों से पुरुष की भी परीक्षा की जाती है। **—चाणक्य**

परोपकार

पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ।

—तुलसी (मानस, अरण्य०)

जिस शरीर से धर्म न हुआ, यज्ञ न हुआ और परोपकार न हो सका, उस शरीर को धिक्कार है, ऐसे शरीर को पशु-पक्षी भी नहीं छूते। **—अज्ञात**

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः ।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ।।

—कालिदास (शकुन्तला)

फल आने से वृक्ष झुक जाते हैं, नये बरसाती जल से भरे हुए बादल खूब फैल कर झुक जाते हैं; समृद्धियों के आने से सज्जन पुरुष नम्र हो जाते हैं—परोपकारियों का यह स्वभाव ही है ।

पिबन्ति नद्यः स्वयमेनाम्भः,
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः,
परोपकाराय सन्तां विभूतयः ।। **—अज्ञात**

नदियों को किसी ने अपना जल स्वयं पीते नहीं देखा, वृक्ष कभी अपने फल आप नहीं खाते, वारिद अपनी ही वर्षा से उगाया अन्न नहीं ग्रहण करते । उसी प्रकार सन्त-सज्जनों की विभूतियाँ परोपकार में ही प्रयुक्त होती हैं । स्वार्थ में नहीं ।

पर उपकार वचन-मन-काया ।
संत सहज सुभाव खगराया ।।

—तुलसी (मानस, उत्तर०)

परोपकार के लिए कुछ जाल भी करना पड़े तो वह आत्मा की हत्या नहीं है । **—प्रेमचन्द**

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पानि ।
कहि रहीम परकाज हित, सम्पति संचहिं सुजानि ।। **—रहीम**

As the purse is emptied the heart is filled. **—Victor Hugo**

ज्यों-ज्यों परोपकार के लिए रुपये की थैली खाली होती है त्यों-त्यों हमारा हृदय भरता जाता है । **—विक्टर ह्यूगो**

जीवितं सफलं तस्य यः परार्थोद्यतः सदा ।

—वेदव्यास (ब्रह्मपुराण)

उसी का जीवन सफल माना जाता है जो परोपकार में प्रवृत्त रहता है ।

जे गरीब सों हित करैं, धनि रहीम वे लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग। —रहीम

परोपकार का प्रत्येक कार्य स्वर्ग की ओर एक कदम है। —एच०डब्लू० बीचर

'परोपकारः पुण्याय'—परोपकार से पुण्य होता है।

पर-उपदेश

पर उपदेश कुसल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे।
—तुलसी (मानस)

पवित्र

शरीर जल से पवित्र होता है, मन सत्य से, आत्मा धर्म से, और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। —मनु०

The stream is always purer at its source. —**Pascal**

सरिता अपने उद्गम स्थान पर सदैव अधिक पवित्र होती है। —पैस्कल

शुचि भूमिगतं तोयं शुचिर्नारी पतिव्रता।
शुचिः क्षेमकरो राजा सन्तोषी ब्राह्मणः शुचिः॥ —अज्ञात

पृथ्वी में भरा हुआ जल पवित्र है, पतिव्रता स्त्री पवित्र है, कल्याण करने वाला राजा पवित्र है, सन्तोषी ब्राह्मण पवित्र है।

पवित्रता

Chastity is a wealth that comes from abundance of love.
—**R. N. Tagore**

पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है। —रवीन्द्र

न्हाए धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोए बास न जाय॥ —कबीर

जहाँ पवित्रता है वहीं निर्भयता हो सकती है। —महात्मा गांधी

तन को जोगी सब करै, मन को बिरला कोय।
सहजै सब बिधि पाइए, जो मन जोगी होय॥ —कबीर

मन चंगा तो कठौती में गंगा। —संत रैदास

पवित्रात्मा

पवित्र आत्माएँ इस संसार में चिरकाल तक नहीं ठहरतीं। **—प्रेमचन्द**

पशु

साहित्य-संगीत-कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद् भागधेयं परमं पशूनाम्॥ **—भर्तृहरि**

जिस मनुष्य ने साहित्य और संगीत-शास्त्र नहीं सीखा वह बिना पूँछ और सींग का साक्षात् पशु है। वह तृण खाये बिना ही जीता है यह पशुओं का परम भाग्य है।

येषां न विद्या न तपो न दानं न चापि शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

—चाणक्य

जिन मनुष्यों में न विद्या है, न तप है, न दान है, न ज्ञान है और न जिनमें शील, गुण और धर्म है, वे इस पृथ्वी पर भाररूप हैं; वे मनुष्यरूप धारण कर पशु के समान विचरते हैं।

पशु-हिंसा

गीतायुग के पहले कदाचित् यज्ञ में पशुहिंसा मान्य रही हो, पर गीता के यज्ञ में उसकी कहीं गन्ध तक नहीं है। **—महात्मा गांधी**

पहाड़

पहाड़ के ऊपर की हरियाली देख कर किसे पता लग सकता है कि उसके हृदय में कैसी भयंकर आग दहक रही है। **—अज्ञात**

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा यत्राश्रिता हि तरवस्तरवस्त एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण कंकोलनिम्बकुटजान्यपि चन्दनादि॥

—भर्तृहरि

उस सोने अथवा चाँदी के पहाड़ से क्या फल जहाँ पैदा होने वाले वृक्ष यदि वैसे ही वृक्ष रह गये। हम तो मलयाचल को ही विशिष्ट मानते हैं जिस पर पैदा होने वाले कंकोल, नीम और कुरैया के वृक्ष भी चन्दन के समान सुगन्धित हो जाते हैं।

पाखण्डी

अनार्यस्त्वार्यसंस्थानः शौचाद्धीनस्तथा शुचिः ॥
लक्षण्यवदलक्षण्यो दुःशीलः शीलवानिव ॥

—वाल्मीकि (रा०, अयो०)

पाखण्डी मनुष्य अनार्य होकर भी आर्य के समान मालूम हो सकता है, शौचाचार से हीन होकर भी अपने को परम शुद्ध रूप में प्रकट कर सकता है; उत्तम लक्षणों से शून्य होकर भी सुलक्षण-सा दिखाई दे सकता है और बुरे स्वभाव का होकर भी दिखाने के लिए सुशील-सा आचरण कर सकता है।

पागलपन

No excellent soul is exempt from a mixture of madness.

—Aristotle

कोई भी महान् आत्मा पागलपन के मिश्रण से बरी नहीं है। **—अरस्तू**

Insanity in individual is something rare, but in groups, parties, nations and epochs it is the rule. **—Nietzsche**

व्यक्तियों का पागलपन असाधारण बात है, किन्तु गिरोहों, दलों, राष्ट्रों और युगों का पागलपन नियम है। **—नीत्शे**

पाठ

भक्त और भगवान के सम्बन्ध को मधुर, अटूट और अनन्य बनाने वाला गीता का पाठ है। गीता के नित्य पाठ से ज्ञान-सिन्धु में गोता लगता है, तन-मन निर्मल हो जाता है और किसी-न-किसी दिन नित्य पाठ करते-करते गीता के प्राणाधार परमेश्वर मिल जाते हैं। **--दीनानाथ दिनेश (गीता के सप्तस्वर)**

पाठशाला

जो मनुष्य एक पाठशाला खोलता है वह संसार का एक जेलखाना बन्द कर देता है। **—ह्यूगो**

School houses are the republican line of fortification.

—Horace Mann

विद्यालय लोकतंत्रीय किलाबन्दी है । **—होरेसमैन**

आजीविका का साधन शरीर है और पाठशाला चरित्र-निर्माण की जगह है । उसे शरीर की जरूरतें पूरी करने का साधन समझना, चमड़े की जरा-सी रस्सी के लिए भैंस को मारने के बराबर है । **—महात्मा गाँधी**

पान

ताम्बूलं मुखरोगनाशनिपुणं संवर्धनं तेजसो ।
नित्यं जाठरवह्नि वृद्धिजननं दुर्गन्धदोषापहम् ।।
वक्त्रालंकरणं प्रहर्षजननं विद्वन्नृपाग्रे रणे ।
कामस्यायतनं समुद्भवकरं लक्ष्म्याः सुखस्यास्पदम् ।। **—अज्ञात**

ताम्बूल (पान) मुख के रोगों का नाशक है, तेज को बढ़ाने वाला है, उदराग्नि को नित्य प्रदीप्त करने वाला है, दुर्गन्धि आदि दोषों का नाशक है, मुख का आभूषण है, हर्ष को बढ़ाने वाला है, बिद्वान्, राजा और रणभूमि के लिए मंगलदायी है, कामदेव का मंदिर है, अभ्युदय-कारक है तथा लक्ष्मी का निवासस्थल है ।

ताम्बूलं कटु तिक्तमिश्र मधुरं क्षारं कषायान्वितम्
वातघ्नं कफनाशनं कृमिहरं दौर्गन्ध्य-दोषापहम् ।
वक्त्रस्याभरणं मलापहरणं कामाग्नि-संदीपनम्
ताम्बूलस्य सखे त्रयोदश गुणाः स्वर्गेऽप्यमी दुर्लभाः ।

—शाङ्र्गधर पद्धति

ताम्बूल (पान) कटु, तिक्त, उष्ण, मधुर, क्षार तथा कषाय गुण वाला है । वात, कृमि, कफ तथा दुर्गन्ध को नष्ट करने वाला है । मुख की शोभा है, मुख को शुद्ध करने वाला है तथा कामाग्नि को बढ़ाने वाला है । हे मित्रो ! ताम्बूल के ये तेरह गुण स्वर्ग में भी दुर्लभ हैं ।

पाप

कोई भी कर्म अपने आप पाप अथवा पुण्य नहीं हो सकता, ठीक जिस प्रकार बिन्दु या शून्य का स्वतः कोई मूल्य नहीं होता । **—स्वामी रामतीर्थ**

किसी कर्म को पाप नहीं कहा जा सकता, वह अपने नग्न-रूप में पूर्ण है, पवित्र है। युद्ध में हत्या करना धर्म है, परन्तु दूसरे स्थल पर अधर्म।

—जयशंकर प्रसाद

कायेन कुरुते पापं मनसा संप्रधार्य तत्।
अनृतं जिह्वया चाह त्रिविधं कर्म पातकम्॥

—वाल्मीकि (रा०, अयो०)

असत्यरूप पाप को मनुष्य पहले मन में विचारता है, फिर उसे शरीर द्वारा करता है, तब जिह्वा से कहता है, अतः मानसिक, वाचिक और कायिक—तीन प्रकार के पातक होते हैं।

शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।

—लोकमान्य तिलक

Not failure but low aim is crime. **—Tennyson**

असफलता नहीं, वरन् निकृष्ट ध्येय ही पाप है। **—टेनीसन**

परदाराभिमर्शात्तु नान्यत्पापतरं महत्।

—वाल्मीकि (रा० ३-३८-३०)

दूसरे की स्त्री से अनुचित सम्बन्ध से बड़ा पाप दूसरा नहीं है।

संसार में दुर्बल और दरिद्र होना पाप है। **—प्रेमचन्द**

अनजान में जो पाप होता है उसका प्रायश्चित्त है—देवता उसे क्षमा कर देते हैं। किन्तु जान-बूझ कर जो पाप किया जाता है, उससे कैसे बचा जा सकता है?

—शरत्चन्द्र (काशीनाथ)

पाप का पुरस्कार मृत्यु है। **—स्वामी रामतीर्थ**

पाप छिपाने से बढ़ता है। **—शरत्चन्द्र (विराजबहू)**

यदि मुझे विश्वास होता कि ईश्वर मुझे क्षमा कर देगा और मनुष्य मेरे पाप को न जान सकेंगे, तो भी पाप की अनिवार्य तुच्छता के कारण मुझे उसके करने में लज्जा आयेगी। **—प्लेटो**

आँके व मुसीबते गिरफ्तारम न बमासीयते। **—सादी**

पापों में लिप्त होने की अपेक्षा दुःखों में फँसा रहना अच्छा है। **—(गुलिश्तां)**

पापों की स्मृति पापों से अधिक भयानक होती है। —सुदर्शन

जिस प्रकार अग्नि अग्नि का शमन नहीं कर सकती उसी प्रकार पाप पाप का शमन नहीं कर सकता। —टालस्टाय

Poverty and wealth are comparative sins. —**Victor Hugo**

दरिद्रता और धन दोनों तुलनात्मक पाप हैं। —**विक्टर ह्यूगो**

पाप एक प्रकार का अँधेरा है जो ज्ञान का प्रकाश होते ही मिट जाता है। —**अज्ञात**

जहाँ मिथ्याभिमान है वहीं पाप है। —**महात्मा गांधी**

अपना कर्त्तव्य करने के पहले दूसरे के कर्त्तव्य की आलोचना करने से पाप होता है। —**शरत्चन्द्र (पण्डितजी)**

संसार में सब प्राणी स्वतन्त्र और स्वाभाविक जीवन व्यतीत करने के लिए आये हैं, उनको स्वार्थ के लिए कष्ट पहुँचाना महान् पाप है। —**लोकमान्य तिलक**

मनुष्य जब एक बार पाप के नागपाश में फँसता है, तब वह उसी में और भी लिपटता जाता है, उसी के गाढ़ आलिंगन में सुखी होने लगता है। पापों की शृंखला बन जाती है। उसी के नये-नये रूपों पर आसक्त होना पड़ता है। —**जयशंकर प्रसाद**

पाप से घृणा करो किन्तु पापी से नहीं। —**महात्मा गांधी**

मानवो के सम्पूर्ण पापों को मैं उनके स्वभाव की अपेक्षा उनकी बीमारी समझता हूँ। —**रस्किन**

इस भ्रम में मत रहो कि पाप प्रारब्ध से होते हैं, पाप होते हैं तुम्हारी आसक्ति से और उनका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा। —**हनुमान प्रसाद पोद्दार**

The recognition of sin is the beginning of salvation. —**Luther**

पाप की स्वीकृति मुक्ति का श्रीगणेश है। —**लूथर**

जहाँ किसी प्रलोभन से प्रेरित होकर तुम कोई पाप करने को उतारू हो, वहीं ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करो। —**स्वामी रामतीर्थ**

संसार में जितने पाप हैं उन सबसे बढ़ कर पाप है मनुष्य की दया के ऊपर अत्याचार करना। —**शरत्चन्द्र (रमा)**

पाप का फल दुःख नहीं, किन्तु एक दूसरा पाप है। —जयशंकर प्रसाद

शरीर से तभी पाप होते हैं, जब कि पाप मन में होते हैं। छोटे बच्चे के मन में काम नहीं होता, वह युवतियों के वक्षस्थल पर खेलता है, उसके शरीर में कोई विकार नहीं होता। —अज्ञात

Man-like it is to fall into sin; fiend-like it is to dwell therein; Christ-like it is, for sin to grieve, God-like it is, all sin to leave.
—Longfellow

पाप में पड़ना मानव-स्वभाव है, उसमें डूबे रहना शैतान-स्वभाव है, उस पर दुःखित होना संत-स्वभाव है और सब पापों से मुक्त होना ईश्वर-स्वभाव है।
—लांगफेलो

पाप सदैव पाप है चाहे वह किसी आवरण में मंडित हो। —प्रेमचन्द

पाप ईमानदारी को इस तरह निगल लेता है जैसे नदियों की उछलती हुई लहरें किनारे की हरियाली को। —अज्ञात

एक पाप दूसरे पाप के लिए दरवाजा खोल देता है। —अज्ञात

माता, गौ और ब्राह्मण का वध करने वाले को जो पाप लगता है वही पाप शरणागत की हिंसा करनेवाले को भी लगता है।
—वेदव्यास (महा०, शांति पर्व)

अवश्यमेव लभते फलं पापस्य कर्मणः।
भर्तः पर्यागते काले कर्त्ता नास्त्यत्र संशयः॥
—वाल्मीकि (रा०, सु०)

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि समय आने पर कर्त्ता को उसके पाप का फल अवश्य मिलता है।

जिस कार्य में आत्मा का पतन हो वही पाप है। —महात्मा गांधी

When we think of death, a thousand sins, which we have trodden as worms beneath our feet, rise up against us as fanning serpents. **—Walter Scott**

जब हम मृत्यु का स्मरण करते हैं तो हजारों पाप, जिन्हें हमने कीड़े मकोड़ों की तरह पैरों के नीचे मसल डाला है, हमारे विरुद्ध फणदार सर्प की तरह खड़े होते हैं। —वाल्टर स्काट

पाप कमजोर के रूप और धन पर इस तरह लपकता है जैसे बकरी पर चीता । —सुदर्शन

प्राणघात, चोरी और व्यभिचार ये तीन शारीरिक पाप हैं । झूठ बोलना, निन्दा करना, कटु वचन एवं व्यर्थ भाषण ये चार वाणी के पाप हैं । पर-धन की इच्छा, दूसरे की बुराई की इच्छा, असत्य, हिंसा, दया-दान में अश्रद्धा—ये मानसिक पाप हैं । —भगवान् बुद्ध

The wages of sin is death. —Bible

पाप की उजरत मृत्यु है । —बाइबिल

पाप की कल्पना आरंभ में अफीम के फूल की तरह सुन्दर और मनोहारिणी होती है, किन्तु अन्त में नागिन के आलिंगन की तरह विनाशमयी है ।

—हरिभाऊ उपाध्याय

पाप में पड़ने वाला मनुष्य होता है, जो पाप पर पश्चात्ताप करता है वह साधु, जो पाप पर अभिमान करता है वह शैतान है । —फुलर

भुजते ते त्वघं पापा ये पंचन्त्यात्मकारणात् ।

—श्रीकृष्ण (गीता) ३/१३

जो अपने लिए ही भोजन पकाते हैं वे पापी हैं, वे पाप खाते हैं ।

जैसे पुण्य का हृदय से ही सम्बन्ध है उसी प्रकार पाप का भी हृदय से ही सम्बन्ध है । पाप और पुण्य दोनों तुम्हारी मानसिक अवस्था से सम्बन्धित हैं ।

—स्वामी रामतीर्थ

पाप एक करुणाजनक वस्तु है—मानवीय विवशता की द्योतक है । उसे देख कर दया आती है, लेकिन पाप के साथ निर्लज्जता और मदान्धता एक पैशाचिक लीला है—दया व धर्म की क्षमा के बाहर । —प्रेमचन्द

पुत्रेषु वा नप्तृषु वा न चेदात्मनि पश्यति ।
फलत्येव ध्रुवं पापं गुरुभुक्तमिवोदरे ॥

—वेदव्यास (महा०, आदि०)

जिस प्रकार गरिष्ठ भोजन पेट में जाकर अवश्य दुःख देता है, उसी प्रकार पाप अपने लिए अनिष्टकर न प्रतीत होने पर भी बेटे, पोतों तक पहुँच कर अपना प्रभाव दिखाता है ।

पाप करने का अर्थ यह नहीं कि जब वह आचरण में आ जाय तब ही उसकी गिनती पाप में हुई। पाप तो जब हमारी दृष्टि में आ गया, विचार में आ गया, वह हमसे हो गया। **—महात्मा गांधी**

पापी

पापी अगर मर जाय तो प्रायश्चित्त कौन भोगेगा ? **—शरत्चन्द्र (बोझ)**

जो पापियों से जान बूझ कर कड़े शब्द कहता है वह मानो उनके पाप रूपी घाव पर नमक छिड़कता है। **—भगवान् बुद्ध**

पापी को पुण्यात्मा बनाने का यह भी एक उपाय है कि बार-बार उसके पुण्य की प्रशंसा की जाय। अपने सम्बन्ध में ऊँची-ऊँची बातें सुन कर मनुष्य सदैव ऊपर ही उठने की कोशिश करता है। **—जनार्दनप्रसाद झा "द्विज"**

सोने की चोरी करने वाला, शराबी, गुरुपत्नी-गामी, ब्रह्महत्यारा— ये चारों महापापी होते हैं और जो इनके साथ सम्पर्क रखता है, वह पाँचवाँ भी महापापी है। **—अज्ञात**

पापी का पैसा पुण्य कार्य में लगाने से उसके पाप का भी छेदन हो जायगा। **—विनोबा**

पापियों में भी आत्मा का प्रकाश रहता है और कष्ट पाकर जाग्रत हो जाता है। यह समझना कि जिसने एक बार पाप किया वह पुण्य कर ही नहीं सकता, मानव-चरित्र के एक तत्त्व का अपवाद करना है। **—प्रेमचन्द**

जैसे सूखी लकड़ियों के साथ गीली लकड़ी भी जल जाती है, उसी प्रकार पापियों के सम्पर्क में रहने से धर्मात्माओं को भी उनके समान दंड भोगना पड़ता है। **—वेदव्यास (महा०, शा०)**

पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ॥

—तुलसी (मानस, सुन्दर)

पाषाण

पाषाण के भीतर भी कितने मधुर स्रोत बहते रहते हैं, उनमें मदिरा नहीं, शीतल जल की धारा बहती है। **—जयशंकर प्रसाद**

पारखी

हंसा बगुला एक सा, मानसरोवर माहिं।
बगा ढंढोरे माछरी, हंसा मोती खाहिं ।। —कबीर

ज्ञान रतन की कोठरी, चुप करि दीन्हों ताल।
पारखि आगे खोलिए, कुंजी वचन रसाल ।। —कबीर

पाहुना (दे० 'अतिथि')

पिता

न सत्यं दानमानौ वा न यज्ञाश्चाप्तदक्षिणाः।
तथा बलकराः सीते ! यथा सेवा पितुर्हिता ।।

—वाल्मीकि (रा०, अयो०)

हे सीता ! पिता की सेवा करना जिस प्रकार कल्याणकारी माना गया है, वैसा प्रबल साधन न सत्य है, न दान-सम्मान है और न प्रचुर दक्षिणावाले यज्ञ ही हैं।

प्रत्येक कुटुम्ब के पिता को अपने मितव्ययी पड़ोसी का अनुकरण करना चाहिए और उन पुरुषों के जीवन से लाभ उठाना चाहिए जो अपनी आमदनी उत्तम रीति से खर्च करते हैं। —सुकरात

A father is a banker provided by nature.
पिता प्रकृति का दिया हुआ महाजन है। —फ्रेंच कहावत

न ह्यतो धर्माचरणं किंचिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया ।।

—वाल्मीकि (रा०, अयो०)

पिता की सेवा अथवा उनकी आज्ञा का पालन जैसा धर्म दूसरा कोई भी नहीं है।

पिपासा

पिपासा तृप्त होने की चीज नहीं। आग को पानी की आवश्यकता नहीं होती, उसे घृत की आवश्यकता होती है जिससे वह और भड़के।

—भगवतीचरण वर्मा

पीड़ा

चु अजबे बदर्द आबुरद रोजगार।
दिगर अजबहारा न मानद करार॥ —सादी

जब शरीर के किसी अंग में पीड़ा होती है तो सारा शरीर व्याकुल हो जाता है।

The pain of the mind is worse than the pain of the body.
—**Syrus**

मानसिक पीड़ा शारीरिक पीड़ा की अपेक्षा अधिक कष्टदायक होती है।
—**साइरस**

पीड़ा पाप का परिणाम है। —**भगवान् बुद्ध**

Pain and pleasure, like light and darkness succeed each other. —**L. Sterne**

पीड़ा और प्रसन्नता, प्रकाश और अन्धकार की भाँति एक दूसरे के पीछे चलते हैं। —**एल० स्टर्न**

इस मीठी-सी पीड़ा में, डूबा जीवन का प्याला।
लिपटी-सी उतराती है, केवल आंसू की माला॥ —**महादेवी वर्मा**

पीड़ा से दृष्टि मिलती है, इसलिए आत्मपीड़न ही आत्मदर्शन का माध्यम है। —**अज्ञेय**

पुण्य

किसी मनुष्य के निन्दा करने पर भी जो उसकी निन्दा नहीं करता और उसकी निन्दा को सह लेता है, वह पुरुष निन्दा करने वाले पुरुष को भस्म कर डालता है और उसके पुण्य को अपने आप ग्रहण कर लेता है।

—**वेदव्यास (महा०, शां०)**

जैसे धन का नाश होने पर सगे सम्बन्धी छोड़ देते हैं वैसे ही पुण्य क्षीण हो जाने पर देवता भी मनुष्य को स्वर्ग से गिरा देते हैं।

—**वेदव्यास (महा०, आदि०)**

पुत्र

पुत्र का मोह प्रकृति का सबसे बड़ा आकर्षण है। **—पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र**

मम पुत्राः शत्रुहणः। **—ऋग्वेद**

मेरे पुत्र शत्रु का हनन करने वाले हों।

सुवीरासो वयं……जयम। **—ऋग्वेद**

हमारे पुत्र सुवीर हों और उनके साथ हम शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें।

किं तया क्रियते धेन्वा
या न दोग्ध्री न गर्भिणी।
कोऽर्थः पुत्रेण जातेन
यो न विद्वान् न धार्मिकः॥

उस गाय से क्या फायदा जो न दूध देती हो, न गर्भ धारण करती हो, उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ, जो न विद्वान् ही हुआ, न धार्मिक। **—पंचतंत्र**

पुन्नाम्नो नरकाद् यस्मात्पितरं त्रायते सुतः।
तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः पितॄन् यः पाति सर्वतः॥

—वाल्मीकि (रा०, अयो०)

क्योंकि बेटा 'पुम्' नामक नरक से पिता का त्राण (उद्धार) करता है, इसलिए 'पुत्र' कहा गया है। वास्तव में जो पितरों का सब ओर से परित्राण करता है, वही पुत्र है।

लालयेत् पञ्च वर्षाणि दश वर्षाणि ताड़येत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्॥ **—चाणक्य**

पाँच वर्ष की अवस्था तक पुत्र का लालन (दुलार) करे और उसके अनन्तर दस वर्ष अर्थात् १५ वर्ष की अवस्था तक ताड़न करता हुआ शिक्षा दे। परन्तु जब वह १६ वर्ष की अवस्था में पहुँचे तब से मित्र के समान उसके साथ व्यवहार करे।

पुत्र के प्रति पिता का कर्तव्य यही है कि वह उसे सभा में पहली पंक्ति में बैठने लायक बना दे। **—तिरुवल्लुवर**

पुत्रवती

पुत्रवती युवती जग सोई। रघुपति भक्त जासु सुत होई॥

—तुलसी (मानस, अयो०)

पुनर्जन्म

आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त शरीर का आश्रय लेता है और एक देह से दूसरी देह में जाता रहता है। भौतिक शरीर आत्मा को धारण करने के लिए विवश होता है। **—गेटे**

जन्म और मृत्यु संसार के दो निर्विवाद सत्य हैं। पुनर्जन्म की समस्या इन्हीं दो सत्यों का स्पर्श करती है। **—अज्ञात**

पुरस्कार

He who wishes to secure the good of others has already secured his own. **—Confucius**

जो व्यक्ति दूसरे की भलाई चाहता है उसने अपना भला पहले ही कर लिया। **—कन्फ्यूशियस**

पुराना

पुराना होना ही सच्चाई का कोई सबूत नहीं है। **—स्वामी रामतीर्थ**

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्। **—कालिदास**

कोई वस्तु केवल इस कारण ग्राह्य और उत्तम नहीं है कि वह पुरानी है।

पुरुष

स्वाभिमानी और पवित्र हृदय पुरुष निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ गिना जाता है। **—लोकमान्य तिलक**

उद्यानं ते पुरुष नावयानन्। **—अथर्ववेद**

पुरुष ! तेरे लिए ऊपर ऊठना है, न कि नीचे गिरना।

जो वीरता से भरा हुआ है, जिसका नाम लोग बड़े गौरव से लेते हैं, शत्रु भी जिसके गुणों की प्रशंसा करते हैं, वही पुरुष वास्तव में पुरुष है। **—गणेशशंकर विद्यार्थी**

नारी से पुरुष अधिक कार्यकुशल होता है परन्तु स्मरणशक्ति में व सामाजिक कला में स्त्री पुरुष से आगे रहती है। **—अज्ञात**

पुरुष और स्त्री

पुरुष है—कुतूहल और प्रश्न; और स्त्री है विश्लेषण, उत्तर और सब बातों का समाधान। **—जयशंकर प्रसाद**

पुरुषार्थ

ईश्वररूप हुए बिना मनुष्य का समाधान नहीं होता, उसे शान्ति नहीं मिलती। ईश्वररूप होने का प्रयत्न ही सच्चा और एकमात्र पुरुषार्थ है। **— महात्मा गांधी**

उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पातकम्।
मौने च कलहो नास्ति नास्ति जागरितो भयम्॥ **—चाणक्य**

पुरुषार्थ करने पर दरिद्रता नहीं रहती, जपने वाले को पाप नहीं लगता, मौन होने से कलह नहीं होता और जागनेवाले के निकट भय नहीं आता।

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित्॥ **—वेद**

दाहिने हाथ में मैं अपना पुरुषार्थ लिये हूँ, बायें में सफलता, अपने परिश्रम से गोधन, अश्वधन, स्वर्ण आदि का विजेता प्रभुकृपा से मैं स्वयं ही होऊँ।

अभिमानवतो मनस्विनः प्रियमुच्चैः पदमारुरुक्षतः।
विनिपातनिवर्त्तनक्षमं मतमालम्बनमात्मपौरुषम्॥

—भारवि (किरातार्जुनीय)

उन्नति के पद पर आरोहण करने के इच्छुक, मानशाली धीर पुरुष आपत्ति-निवारण करने में समर्थ अपने पुरुषार्थ का आश्रय लेना उचित मानते हैं। शूरवीरों का पुरुषार्थ ही सच्चा सहायक है।

क्षेत्रं पुरुषकारस्तु दैवं बीजमुदाहृतम्।
क्षेत्रबीजसमायोगात् ततः सस्यं समृद्ध्यते॥

—वेदव्यास (महा०, अनु०)

पुरुषार्थ खेत है और दैव को बीज बताया गया है। खेत और बीज के संयोग मे ही अनाज पैदा होता है।

तथा स्वर्गश्च भोगश्च निष्ठा या च मनीषिता ।
सर्वं पुरुषकारेण कृतेनेहोपलभ्यते ॥

—वेदव्यास (महा०, अनु०)

इस जगत् में पुरुषार्थ करने से स्वर्ग, भोग, धर्म में निष्ठा और बुद्धिमत्ता—इन सबकी उपलब्धि होती है ।

अर्थो वा मित्रवर्गो वा ऐश्वर्यं वा कुलान्वितम् ।
श्रीश्चापि दुर्लभा भोक्तुं तथैवाकृतकर्मभिः ॥

—वेदव्यास (महा०, अनु०)

जो पुरुषार्थ नहीं करते, वे धन, मित्रवर्ग, ऐश्वर्य, उत्तम कुल तथा दुर्लभ लक्ष्मी का उपभोग नहीं कर सकते ।

कृतः पुरुषकारस्तु दैवमेवानुवर्तते ।
न दैवमकृते किंचित् कस्यचिद् दातुमर्हति ॥

—वेदव्यास (महा०, अनु०)

किया हुआ पुरुषार्थ ही दैव का अनुसरण करता है, परन्तु पुरुषार्थ न करने पर दैव किसी को कुछ नहीं दे सकता ।

कृतं चाप्यकृतं किंचित् कृते कर्मणि सिध्यति ।
सुकृतं दुष्कृतं कर्म न यथार्थं प्रपद्यते ॥ **—वेदव्यास**

प्रबल पुरुषार्थ करने से पहले का किया हुआ भी कोई कर्म बिना किया हुआ सा हो जाता है और यह प्रबल कर्म ही सिद्ध होकर फल प्रदान करता है । इस तरह पुण्य या पाप-कर्म अपने यथार्थ फल को नहीं दे पाते हैं ।

यथाग्निः पवनोद्धूतः सुसूक्ष्मोऽपि महान् भवेत् ।
तथा कर्म समायुक्तं दैवं साधु विवर्धते ॥

—वेदव्यास (महा०)

जैसे थोड़ी-सी भी आग वायु का सहारा पाकर बहुत बड़ी हो जाती है, उसी प्रकार पुरुषार्थ का सहारा पाकर दैव का बल विशेष बढ़ जाता है ।

पूर्वजन्म कृतं कर्म तद्दैवमिति कथ्यते ।
तस्मात् पुरुषयत्नेन बिना दैवं न सिध्यति ॥ **—अज्ञात**

पूर्वजन्म में किया हुआ कर्म ही भाग्य कहलाता है । इसलिए पुरुषार्थ किये बिना भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता ।

दैवं पुरुषकारेण यः समर्थः प्रबाधितुम् ।
न दैवेन विपन्नार्थः पुरुषः सोऽवसीदति ॥—**वाल्मीकि (रामा०)**

जो अपने पुरुषार्थ से दैव को दबा देने की शक्ति रखता है, वह दैव के द्वारा अपने कार्य में बाधा पड़ने पर खेद नहीं करता —हतोत्साह होकर नहीं बैठता।

लक्ष्य पूरा करने के लिए अपनी समस्त शक्तियों द्वारा परिश्रम करना ही पुरुषार्थ है। **—महर्षि पातंजलि**

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ बतलाये गये हैं। इनमें से मोक्ष और काम दो परस्पर विरोधी सिरों पर स्थित हैं। **—विनोबा**

आत्मा को मोक्ष-पुरुषार्थ की अभिलाषा होती है, शरीर को काम-पुरुषार्थ प्रिय है। दोनों एक दूसरे का नाश करने की ताक में हैं। **—विनोबा**

निवसन्ति पराक्रमाश्रया न विषादेन समं समृद्धयः ।
—भारवि (किरातार्जुनीय)

पुरुषार्थ अथवा पराक्रम में निवास करने वाली समृद्धियां अनुत्साह के साथ नहीं रहती।

कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। **—अरविन्द घोष**

पुरुषार्थ का अर्थ है पुरुष को प्रवृत्त करने वाला हेतु। यह आवश्यक नहीं कि यह हेतु 'सद्धेतु' ही हो। **—विनोबा**

पुरुषार्थहीन

पुरुषार्थहीन मनुष्य (वास्तव में) जीते जी मरा हुआ है।
—स्वामी शंकराचार्य

विपदोऽभिभवन्त्यविक्रमं रहयत्यापदुपेतमायतिः ।
नियता लघुता निरायतेरगरीयान्न पदं नृपश्रियः ॥
—भारवि (किरातार्जुनीय)

पुरुषार्थहीन पुरुष को विपत्तियाँ आक्रान्त कर लेती हैं। विपत्तियों से आक्रान्त होने पर उसकी भावी उन्नति रुक जाती है। जिससे उसका गौरव नष्ट हो जाता है। गौरव नष्ट होने पर राज्यश्री के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता, जिसका वह आश्रय ले सके।

पुरुषोत्तम

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ।। —उपनिषद्

कार्य-कारणस्वरूप उस परात्पर पुरुषोत्तम को तत्त्व से जान लेने पर इस (जीवात्मा) के हृदय की गाँठ खुल जाती है, सम्पूर्ण संशय कट जाते हैं और समस्त शुभाशुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं ।

पुष्प (दे० 'फूल')

पुण्यसंवर्द्धनाच्चापि पापौघपरिहारतः ।
पुष्कलार्थं प्रदानाच्च पुष्पमित्यभिधीयते ।। —अज्ञात

फूल पापसमूह को दूर करते हुए पुण्य की अभिवृद्धि करता है तथा प्रचुर अर्थ को प्रदान करता है, इसलिए वह पुष्प नाम से पुकारा जाता है ।

न रत्नैर्न सुवर्णेन न वित्तेन च भूरिणा ।
तथा प्रसादमायाति यथा पुष्पैर्जनार्दनः ।। —अज्ञात

भक्तजनों के ऊपर कृपा रखने वाले भगवान प्रचुर रत्नराशि अथवा सुवर्ण के खजाने से भी उतने प्रसन्न नहीं होते जितने भक्तों के दिये हुए पुष्पों के समूह से ।

ईश्वर बड़े-बड़े साम्राज्यों से ऊब उठता है परन्तु छोटे-छोटे पुष्पों से कभी खिन्न नहीं होता । —रवीन्द्र

अहिंसा प्रथमं पुष्पं द्वितीयं करणग्रहः ।
तृतीयम् भूतदया चतुर्थं शान्तिरेव च ।।
शमस्तु पञ्चमं पुष्पं ध्यानं चैव तु सप्तमम् ।
सत्यं चैवाष्टमं पुष्पमेतैस्तुष्यति केशवः ।।
एतैरेवाष्टभिः पुष्पैस्तुष्यते चार्चितो हरिः ।
पुष्पान्तराणि सन्त्येव वाह्यानि नृपसत्तम ।।

—वेदव्यास (पद्मपुराण)

अहिंसा पहला, इन्द्रियसंयम दूसरा, जीवों पर दया करना तीसरा, क्षमा चौथा, शम पाँचवाँ, दम छठा, ध्यान सातवाँ और सत्य आठवाँ पुष्प है । इन पुष्पों के द्वारा भगवान् संतुष्ट होते हैं । नृपश्रेष्ठ ! अन्य पुष्प तो पूजा के वाह्य अंग हैं, भगवान् उपर्युक्त आठ पुष्पों से ही पूजित होने पर प्रसन्न होते हैं ।

पुस्तक (दे० ग्रन्थ)

मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूँगा, क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी वहां आप ही स्वर्ग बन जायगा। **—लोकमान्य तिलक**

अच्छी पुस्तकों के पास होने से हमें अपने भले मित्रों के साथ न रहने की कमी नहीं खटकती। जितना ही मैं पुस्तकों का अध्ययन करता गया उतना ही अधिक मुझे उनकी विशेषताएँ (उपयोगिताएँ) मालूम होती गयीं। **—महात्मा गांधी**

ग्रन्थों में आत्मा है। सद्ग्रन्थों का कभी नाश नहीं होता। **—लिटन**

विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं। **—बर्नार्ड शा**

A good book is the precious life-blood of a master spirit.

—Milton

अच्छी पुस्तक एक महान् आत्मा का अमूल्य जीवन-रक्त है। **—मिल्टन**

पुराने कपड़े पहन कर नयी पुस्तकें खरीदिए। **—प्रस्टिन फिल्रस**

Books are lighthouses erected in the great sea of time.

—E. P. Whipple

पुस्तकें प्रकाश-गृह हैं जो समय के विशाल समुद्र में खड़ी की गयी हैं।

—विपिल

The world is a great book, of which they who never stir from home read only a page. **—Augustine**

संसार एक महान् पुस्तक है जिसमें वे लोग जो कभी घर से बाहर नहीं निकलते केवल एक पृष्ठ पढ़ पाते हैं। **—आगस्टाइन**

बुरी पुस्तकों का पढ़ना जहर पीने के समान है। **—टालस्टाय**

Books are those faithful mirrors that reflect to our mind, the minds of sages and heroes. **—Gibbon**

पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण हैं जो सन्तों और वीरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं। **—गिब्बन**

रोग की पीड़ा शान्त करने के लिए चित्ताकर्षक और मनोरंजक पुस्तक से बढ़ कर दूसरा कोई अच्छा साधन नहीं है। **—अज्ञात**

जहाँ पुस्तकें हैं, वहाँ से लोभ, मोह, भ्रम और भय को भगाना कठिन नहीं। सरस पुस्तक से रोग-पीड़ित व्यक्ति को बड़ी शान्ति मिलती है। जैसे स्नेह-मयी जननी की मीठी-मीठी थपकियाँ बच्चे को नींद की गोद में सुला देती हैं।

—अज्ञात

पुस्तकें जाग्रत देवता हैं, उनकी सेवा करके तत्काल वरदान प्राप्त किया जा सकता है। **—रामप्रताप त्रिपाठी**

पूजा

मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मन्दिर है इसलिये साकार देवता की पूजा करो। **—स्वामी विवेकानन्द**

लाखों गूंगों के हृदय में ईश्वर विराजमान है, मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता। वे इसकी सत्ता को नहीं जानते यह मैं जानता हूँ। मैं इन लाखों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ जो सत्य है अथवा उस सत्य की जो ईश्वर है। **—महात्मा गांधी**

पूजा के द्वारा संयत चित्त कभी कुमार्ग की ओर नहीं दौड़ता। **—अज्ञात**

अकृतोपद्रवः कश्चिन्महानपि न पूज्यते।
अर्चयन्ति नरा नागं न तार्क्ष्यं न गजादिकम् ॥ **—पंचतंत्र**

बिना उपद्रव किये महान् व्यक्ति की भी पूजा कोई नहीं करता। मनुष्य सर्प की पूजा करते हैं न कि गरुड़, हाथी आदि की।

वह पूजा क्या है जिसमें, जीवन जागृति और सुझाव नहीं।
जिसमें प्रियतम का प्रेम, सत्य शिव सुन्दरता का भाव नहीं।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

सच्चा पूजक अपने मन को विषय विकारों और वासनाओं से रिक्त करके उसमें पूज्य की स्थापना करता है। पूजक पूज्य के लिये कर्म करता है अपने अहंकार की तुष्टि के लिये नहीं। **—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

पूजा शब्द का अर्थ सत्कार है। देव की पूजा करने से परमात्मा का सत्कार करना यह अर्थ होता है। चेतन पदार्थों का ही केवल सत्कार सम्भावित है, जड़ पदार्थों का अर्थात् मूर्तियों का सत्कार नहीं सम्भव होता। मुख्य तत्त्व से वेदमन्त्र पढ़ने से ईश्वर का सत्कार होता है। **—स्वामी दयानन्द सरस्वती**

पूजा के पुष्प

भगवान की पूजा के लिये सबसे अच्छे पुष्प हैं—श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, दया, मैत्री, सरलता, साधुता, समता, सत्य, क्षमा आदि दैवी गुण।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार, 'भाईजी'

पूज्य

पूज्य वही आभूषण जिनका,
शौर्य-पराक्रम होता।
पूज्य वही जो शक्ति-सिन्धु में,
सदा लगाते गोता॥

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

पूर्वज

Hereditary honours are a noble and splendid treasure to descendants. —**Plato**

पैतृक उपाधि उत्तराधिकारी के लिए श्रेष्ठ और उज्ज्वल धनकोष है।

—प्लेटो

पेट

पापी पेट, तू सब कुछ कर सकता है। मान और अभिमान, ग्लानि और लज्जा ये सब चमकते हुए तारे तेरी काली घटाओं की ओट में छिप जाते हैं।

—प्रेमचन्द

पेट की ज्वाला ही बड़वाग्नि है जो कभी नहीं बुझती। उसे सब लोग नहीं अनुभव कर सकते। जो उत्तम पदार्थों की थाली पैर से ठुकरा देते हैं, जिन्हें अरुचि की डकार सदा आती रहती है, वे इसे क्या जानेंगे? —जयशंकर प्रसाद

पेट पापी है। —कहावत

पेटू

असीर बन्द शिकमरा दीशव नगीरद ख्वाब।
शबे जे मेदये संगी शबे जे दिलतंगी॥ —सादी

जो मनुष्य पेटू है उसे दो रातों तक नींद नहीं आती। एक रात तो पेट के बोझ के कारण और दूसरी रात भूख की चिन्ता में।

अधिक खाने से चर्बी बढ़ती है, बुद्धि नहीं। —अज्ञात

अधिक खाना मृत्यु का मौन निमंत्रण है। —रामप्रताप त्रिपाठी

पैसा (दे० 'टका', 'द्रव्य', 'धन')

जिस पैसे को स्वीकार करने से पाप की प्रतिष्ठा बढ़ती है या दोषी जीवन का रंग चढ़ना सम्भव है, ऐसा पैसा नहीं लेना चाहिए। —विनोबा

बुद्धि उस गलियारे में जाकर भटक गयी जहाँ पैसा, भगवान् और सत्ता जगदम्बा है। —अमृतलाल नागर

Money is a handmaiden if thou knowest how to use it; a mistress, if thou knowest not. **–Horace**

पैसा आपका दास है अगर आप उसका उपयोग जानते हैं, वह आपका स्वामी है अगर आप उसका उपयोग नहीं जानते। —होरेस

Make money your God, it will plague you like the devil.
–Fielding

पैसे को अपना ईश्वर मानिए, वह शैतान की तरह आपको भ्रष्ट कर देगा।
—फील्डिंग

पैसा आदमी को रंक बना देता है। —महात्मा गांधी

पोशाक

सादी पोशाक ब्रह्मचर्य पालन में मददगार होती है। —महात्मा गांधी

Costly thy habit as purse can buy,···rich, not gaudy.
–Shakespeare

तुम्हारी पोशाक उतनी कीमती होनी चाहिए जितनी बनवाने की तुम्हारी योग्यता हो। वह बहुमूल्य तो हो, पर भड़कीली न हो। — शेक्सपियर

साफ-सुथरी पोशाक में एक प्रकार का यौवन होता है जिसमें अधिक उम्र छिप जाती है। —अज्ञात

Good clothes open all doors. **—Tomas Fuller**

अच्छी पोशाक के लिए सभी दरवाजे खुले रहते हैं। —टामस फुलर

प्यार (दे० 'प्रेम', 'मुहब्बत')

बल और शक्ति की आज्ञा टालना आसान है, मगर प्यार की आज्ञा टालना आसान नहीं। —सुदर्शन

We are all born for love : It is the principle of existence. —**Disraeli**

हम सब प्रेम के लिए जन्म लेते हैं। यह जीवन का सिद्धान्त है। —**डिजरायली**

Man's love is of man's life a thing apart, it is woman's whole existence. —**Byron**

मनुष्य का प्यार उसके जीवन की एक भिन्न वस्तु है, परन्तु नारी के लिए उसका प्यार उसका सारा जीवन है। —**बायरन**

We are shaped and fashioned by what we love. —**Goethe**

जिसे हम प्यार करते हैं उसी के अनुसार हमारा रूप और आकार निर्मित होता है। —**गेटे**

प्रेम ही प्रेम का पुरस्कार है। —**ड्राइडेन**

एक चाँद के बगैर सारी रात स्याह है।
एक फूल के बिना चमन सभी तबाह है॥
जिन्दगी तो खुद ही एक आह है कराह है।
प्यार भी न जो मिले तो जीना फिर गुनाह है॥

—**गोपाल दास नीरज (प्राण-गीत)**

क्या करेगा प्यार वह भगवान को,
क्या करेगा प्यार वह ईमान को,
जन्म लेकर गोद में इन्सान की,
प्यार कर पाया न जो इन्सान को।

—**गोपालदास 'नीरज' (प्राण-गीत)**

प्यार में खाँसी छिपाये नहीं छिपती। —**हर्बर्ट**

खैर, खून, खाँसी, खुसी, बैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे न दबैं, जानत सकल जहान। —**रहीम**

जीवन एक पुष्प है, प्यार उसका मधु। —विक्टर ह्यूगो

प्यार आदमी की सबसे बड़ी निर्बलता है। —अज्ञात

प्यार और बुद्धि दोनों एक साथ एक ही रंगभूमि में अभिनय नहीं कर सकते—प्यार की वेदी पर बुद्धि का बलिदान कर दिया जाता है। —अज्ञात

प्रकाश

प्रकाश की अति भी मानव-नेत्रों के लिए अंधकार है और प्रकाश का अभाव या कमी भी मनुष्य नेत्रों के लिए अंधकार है। —रामतीर्थ

Light is the shadow of God. —**Plato**

प्रकाश ईश्वर की छाया है। —प्लेटो

असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय ॥

—बृहदारण्यक उ०

असत्य से मुझे सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से मुझे अमरता की ओर ले चलो।

प्रकाश जब काले बादलों का चुंबन करता है तो वे स्वर्ग के फूल बन जाते हैं।

—रवीन्द्र

Light is the symbol of truth. —**J. R. Lowell**

प्रकाश सत्य का प्रतीक है। —जे० आर० लोवेल

सामानाधिकारायं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः।

—माघ (शिशुपाल बध)

प्रकाश और अन्धकार कहां से एक ही स्थान में रह सकते हैं।

प्रकृति

पहले मनुष्य प्रकृति का खिलौना था, आज उसका अधीश्वर है। —अज्ञात

प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, पत्ते-पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ हैं, परन्तु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। —हरिऔध

Nature is a volume of which God is the author. —**Harvey**

प्रकृति एक ग्रन्थ है, जिसका रचयिता ईश्वर है। —हारवे

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नहीं जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

प्रकृति शून्य से घृणा करती है। —अज्ञात

Nature is commanded by obeying her. —**Bacon**

प्रकृति की आज्ञा मान कर ही हम उसका नेतृत्व करते हैं। —**बेकन**

प्रगति

Intercourse is the soul of progress.

पारस्परिक व्यवहार प्रगति का सार है। —**बक्स्टन**

All that is human must retrograde if it do not advance.

—**Gibbon**

सारी मानवीय वस्तुएँ यदि प्रगतिगामी नहीं हैं तो उन्हें पीछे हटना होगा।

गिबन

प्रगति जीवन की निशानी है ; जिसमें प्रगति नहीं वह मुर्दे के समान है।

—**अज्ञात**

प्रजा

प्रजा के साथ मेल करके शत्रु के साथ लड़ना चाहिए। प्रजा-पालक राजा की प्रजा सेना के बराबर ही है। —**सादी (गुलिस्तां)**

प्रजा बहुत बुद्धिमान् आलोचक से भी अधिक बुद्धिमान् होती है। —**बेनक्राफ्ट**

प्रजा और राजा में पुत्र और पिता का नाता है। —**अज्ञात**

प्रजा का असंतोष राजनीति का अभिशाप है। —**डा० रामकुमार वर्मा**

जो व्यक्ति प्रजा के पैर बनकर चलता है, उसे कभी काँटे नहीं चुभ सकते।

—**डा० रामकुमार वर्मा**

प्रजातंत्र

प्रजातंत्र का अर्थ मैं यह समझता हूँ कि इसमें नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अवसर मिले। —**महात्मा गांधी**

Democracy means government of the people, by the people and for the people. —**Abraham Lincoln**

प्रजातंत्र का अर्थ है जनता के हेतु ही जनता द्वारा जनता का शासन ।

—**अब्राहम लिंकन**

The first condition precedent for the working of democracy or free parliamentary institutions in a free country is that laws must be obeyed, whether one likes them or not.

एक स्वतंत्र राष्ट्र में प्रजातंत्र को कार्य रूप में परिणत करने के लिए पहली शर्त यह है कि उसके कानूनों का पालन हो, चाहे हम उन्हें पसन्द करें या न करें ।

—**डा० कैलाशनाथ काटजू**

Democracy means not, "I am as good as you are," but "You are as good as I am". —**Theodore Parker**

प्रजातंत्र का यह अर्थ नहीं है कि जितने अच्छे तुम हो उतना ही अच्छा मैं हूँ, वरन् तुम उतने ही अच्छे हो जितना अच्छा मैं हूँ । —**थेडोर पार्कर**

कोई भी गुप्त बात प्रजातंत्र के वास्तविक अर्थ को बाधा पहुँचाती है ।

—**महात्मा गांधी**

प्रजातंत्र ने साधारण मजदूर को पहले से कहीं अधिक गौरव प्रदान किया है । —**सिनक्लेयर ल्यूई**

The love of democracy is that of equality.

—**Montesquieu**

प्रजातंत्र का प्रेम समानता का प्रेम है । —**मान्टेस्क्यू**

While democracy must have its organization and control, its vital breath is individual liberty.

प्रजातंत्र का अपना संगठन और शासन होना चाहिए, परन्तु व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही उसका प्राण है । —**सी० ई० ह्यूजेज**

प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही प्रजातंत्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धान्त है । —**राजगोपालाचारी**

The difference between democracy and totalitarian states lies, not in the absence of leaders, but in the power of democracy to change its leaders without shooting. To have the power of peaceful change of government is the essential condition of democracy. **—Lord Beveridge**

प्रजातंत्रीय और तानाशाही शासन में अन्तर नेताओं के अभाव में नहीं है वरन् नेताओं को, बिना उनकी हत्या किये हुए बदल देने में है। शांतिपूर्वक सरकार बदल देने की शक्ति प्रजातंत्र की आवश्यक शर्त है। **—लार्ड बिवरेज**

मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि प्रजातंत्र का अर्थ है कि कांग्रेसजन वही कार्य करें जो जनता का बहुमत उनसे कराना चाहता है। **—जवाहरलाल नेहरू**

प्रजातंत्र का रहस्य यान्त्रिक विधि से किसी रीति को बदल देने में नहीं है। इसमें हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता है। **—महात्मा गांधी**

प्रज्ञा (दे० 'बुद्धि', 'प्रतिभा')

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥ **—हितोपदेश**

जिस मनुष्य को अपनी बुद्धि नहीं हो, उसके लिए शास्त्र बेकार है, जैसे दोनों आँखों से रहित अन्धे मनुष्य का दर्पण क्या करेगा।

प्रण (दे० 'प्रतिज्ञा')

शिवि दधीचि बलि जो कछु भाखा।
तन धन तजेउ वचन प्रण राखा॥ **—तुलसी (मानस)**

प्रणाम

उन्हें प्रणाम लोक-हित में जो,
जीवन अर्पित करते।
उन्हें प्रणाम स्वयं जलकर जो,
तिमिर जगत का हरते॥
—विनोद चन्द्र पाण्डेय, 'विनोद' (अमर-सुभाष)

प्रणय-स्मृति

One sad voice has its nest among the ruins of the years. It sings to me in the night—"I loved you". —**R. N. Tagore**

काल-रूपी खंडहरों में एक विषादमयी वाणी निवास करती है। रात्रि में वह मुझसे गा-गाकर कहती है—"मैं तुम्हें प्यार करती थी।" —**रवीन्द्र**

प्रतिभा

Genius is one per cent inspiration, and ninety nine per cent perspiration. —**Tomas A. Edison**

प्रतिभा एक प्रति सैकड़ा प्रेरणा और निन्नानवे प्रति सैकड़ा श्रम है।

—**टामस ए० एडिसन**

The first and last thing required of genius is the love of truth. —**Goethe**

सत्य के प्रति प्रेम ही प्रतिभा की प्रथम और अंतिम माँग है। —**गेटे**

Genius finds its own road and carries its own lamp.

—**Wilmot**

प्रतिभा अपना मार्ग स्वयं निर्धारित कर लेती है और अपना दीपक स्वयं ले चलती है। —**विल्मट**

प्रतिभा के माने हैं बुद्धि में नयी-नयी कोपलें फूटते रहना। नयी कल्पना, नया उत्साह, नयी खोज, नयी स्फूर्ति ये सब प्रतिभा के लक्षण हैं। —**विनोबा**

Genius is infinite pains-taking. —**Longfellow**

प्रतिभा निरन्तर कष्ट सहने में है। —**लांगफेलो**

प्रतिभा के साथ जब शुभ्र निष्ठा एवं लगन का सामंजस्य हो जाता है तो व्यक्ति के गुण कस्तूरी की गंध में बोलने लगते हैं। —**अज्ञात**

प्रतिभा के बल पर स्वतंत्र वातावरण में स्वतंत्रतापूर्वक साँस ली जा सकती है। —**जे० एस० मिल**

Patience is a necessary ingredient of genius. —**Disraeli**

धैर्य प्रतिभा का आवश्यक अंग है। —**डिजरायली**

Genius does what it must, and talent what it can.

—Owen Meredith

प्रतिभा वही कार्य करती है जो वह करने के लिए बाध्य है एवं गुणी वही कार्य करता है जो वह कर सकता है। **—ओवेन मेरीडेथ**

Genius, that power which dazzles mortal eyes, is oft but perseverence in disguise. **—Austine**

प्रतिभा अर्थात् वह शक्ति जो मानवीय नेत्र में चकाचौंध उत्पन्न कर देती है, गुप्त रूप से केवल कठिन परिश्रम का नाम है। **—आस्टिन**

Genius always gives its best at first, prudence, at last.

—Lavater

प्रतिभा में जो सबसे अच्छी बात होती है उसे वह सबसे पहले दे देती है और दूरदर्शिता सबसे बाद में देती है। **—लेवेटर**

लंबी-चौड़ी पढ़ाई के नीचे प्रतिभा दब कर मर जाती है। **—विनोबा**

There is no great genius without a mixture of madness.

—Aristotle

ऐसी कोई महान् प्रतिभा नहीं है जिसमें पागलपन का संमिश्रण न हो।

—अरस्तू

A man of genius has been seldom ruined, but by himself.

—Johnson

प्रतिभाशाली व्यक्ति यदि नष्ट होता है तो प्रायः अपने ही द्वारा नष्ट होता है। **—जानसन**

होनहार बिरवान के होत चीकने पात। **—कहावत**

Genius must be born, and never can be taught. **—Dryden**

प्रतिभा जन्मजात होती है, वह सिखायी नहीं जाती। **—ड्राइडेन**

प्रतिरोध

प्रतिरोध से बड़ी शक्तियाँ रुकती नहीं, प्रत्युत उनका वेग और भी भयानक हो जाता है। **—जयशंकर प्रसाद (विशाख)**

प्रतिष्ठा

प्रतिष्ठा बनाने में कई वर्ष लग जाते हैं, कलंक एक पल में लग जाता है।
—सुदर्शन

The way to gain a good reputation is, to endeavour to be what you desire to appear. **—Socrates**

अच्छी प्रतिष्ठा पाने का मार्ग अपने को उस योग्य बनाने का प्रयत्न करना है जैसा कि तुम दूसरों की दृष्टि में दीखना चाहते हो। **—सुकरात**

The reputation of a man is like his shadow, gigantic when it precedes him, and pigmy in its proportions when it follows.
—Talleyrand

मनुष्य की प्रतिष्ठा उसकी छाया की भाँति है। जब वह मनुष्य के आगे चलती है तो बहुत बड़ी हो जाती है और जब उसके पीछे चलती है तो उसकी तुलना में बहुत छोटी हो जाती है। **—टालरेन्ड**

विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा।
अनीत्वा पंकतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते॥

—माघ (शिशुपालवध)

शत्रु का समूल नाश किये बिना प्रतिष्ठा की प्राप्ति दुर्लभ है, (क्योंकि) जल धूल को कीचड़ बनाये बिना नहीं ठहरता।

प्रतिज्ञा (दे० 'प्रण')

दृढ़ प्रतिज्ञा एक गढ़ के सदृश है जो भयानक प्रलोभनों से हमारी रक्षा करता है और दुर्बलता एवं अस्थिरता से हमें बचाता है। **—महात्मा गांधी**

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय बरु बचन न जाई॥

—तुलसी

प्रतिज्ञाहीन जीवन बिना नींव का घर है, अथवा यों कहिए कि कागज का जहाज है। प्रतिज्ञा के बल पर ही संसार टिका हुआ है। प्रतिज्ञा न लेने का अर्थ अनिश्चित या डाँवाडोल रहना है। **—महात्मा गांधी**

प्रतीक्षा

प्रतीक्षा का एक-एक क्षण एक-एक युग के समान होता है। —**अज्ञात**

प्रतीक्षा में जो आनन्द है वह प्राप्ति में नहीं। —**अज्ञात**

वह मजा वस्लेयार में नहीं जो मजा इंतजार में है। —**अज्ञात**

प्रधान मंत्री

प्रधान मंत्री के लिए सबसे आवश्यक गुण धैर्य है। —**पिट**

अच्छी तरह से राष्ट्र-शासन करने वाले प्रधान मंत्री के लिए अधिक सुनना और कम बोलना नितान्त आवश्यक है। —**रिचलू**

Coolness is the most important quality for a man destined to rule. —**Andre Maurice**

शान्त स्वभाव का होना शासक का सबसे आवश्यक गुण है। —**एण्ड्री मारिस**

प्रभुता (दे० 'अधिकार', 'शक्ति')

नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं॥ —**तुलसी**

The appetite for unrestrained power grows with use.
—**Jawahar Lal Nehru**

निरंकुश शक्ति की क्षुधा उपयोग से बढ़ती है। —**जवाहर लाल नेहरू**

Power corrupts, absolute power absolutely. —**Lord Acton**

प्रभुता भ्रष्ट करती है और पूर्ण प्रभुता पूर्ण रूप से भ्रष्ट करती है।
—**लार्ड आक्टन**

Unlimited power corrupts the possessor. —**William Pitt**

असीम शक्ति धारणकर्त्ता को ही भ्रष्ट करती है। —**विलियम पिट**

प्रभुता को सब कोई भजै, प्रभु को भजै न कोय।
कह कबीर प्रभु को भजै, प्रभुता चेरी होय॥ —**कबीर**

प्रभुता ऐसी मदिरा है जिसे पीने वाला ही उन्मत्त नहीं होता प्रत्युत उसके परिवार, संबंधी और पड़ोसी भी उन्मत्त हो जाते हैं। —**अज्ञात**

प्रयत्न तथा प्रयास

महान् ध्येय के प्रयत्न में ही आनन्द है, उल्लास है और किसी अंश तक प्राप्ति की मात्रा भी है। **—जवाहरलाल नेहरू**

आनन्द की दृष्टि से देखें तो साक्षात् स्वराज्य की अपेक्षा स्वराज्य प्राप्ति के प्रयत्न का आनन्द कुछ और ही है। **—विनोबा**

जलकणों का अविच्छिन्न प्रपात पत्थर में भी छेद कर देता है। **—अज्ञात**

के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः। **—कालिदास**
निष्फल प्रयत्न करने से दुनिया में किसकी पराजय नहीं होती।

सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता। **—चिल्सन**

निरन्तर जल की बूंदों के गिरने से पत्थर में गड्ढा हो जाता है और धीरे-धीरे चोट मारने से बड़े-बड़े वृक्ष भी काट डाले जाते हैं। **—अज्ञात**

प्रलोभन

शुरू के झगड़ों और प्रलोभन को यदि मनुष्य जीत ले तो समग्र प्रकृति को चेरी बनना पड़ेगा। **—स्वामी रामतीर्थ**

The absence of temptation is the absence of virtue.

—Goethe

प्रलोभन का अभाव सद्गुण का अभाव है। **—गेटे**

Every moment of resistance to temptation is a victory.

—Faber

प्रलोभन के अवरोध का प्रत्येक क्षण विजय है। **—फेबर**

Some temptations come to the industrious, but all temptations attack the idle. **—Spurgeon**

कुछ प्रलोभन परिश्रमी व्यक्ति को हो सकता है, किन्तु सारे प्रलोभन आलसी व्यक्ति पर ही आक्रमण करते हैं। **—स्पर्जन**

प्रशंसा

Everybody likes a compliment. **—Lincoln**

प्रत्येक व्यक्ति प्रशंसा चाहता है। **—लिंकन**

You can tell the character of every man when you see how he receives praise. **—Seneca**

आप प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र बता सकते हैं, यदि आप देखें कि वह प्रशंसा से कैसा प्रभावित होता है। **—सेनेका**

The deepest principle in human nature is the craving to be appreciated. **—William James**

मानव-प्रकृति में सबसे गहरा नियम कद्र किये जाने की लालसा है।
—विलियम जेम्स

There is nothing I need so much as nourishment for my selfesteem.

मुझे दूसरी किसी वस्तु की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी की आत्मपूजा की भूख के पोषण की। **—अज्ञात**

अयोग्य मनुष्यों की प्रशंसा छिपे हुए व्यंग्य के समान होती है। **—ब्राडहर्स्ट**

Praise is more divine than prayer ; prayer points our ready path to heaven ; praise is already there. **—Young**

प्रशंसा, प्रार्थना से अधिक दिव्य हैं ; प्रार्थना स्वर्ग का तैयार रास्ता हमें दिखाती है ; प्रशंसा वहां पहले से ही उपस्थित रहती है। **—यंग**

True praise takes root and spreads. **—Proverb**

सच्ची प्रशंसा जड़ थाम लेती है और पनपती है। **—कहावत**

We live by admiration, hope and love. **—Wordsworth**

हम प्रशंसा, आशा और प्रेम से जीते हैं। **—वर्ड्सवर्थ**

Admiration begins when acquaintance ceases.**—Dr. Johnson**

प्रशंसा वहाँ आरम्भ होती है जहाँ परिचय समाप्त होता है। **—जानसन**

प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गयी प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है। **—टामस मूर**

Admiraton is the daughter of ignorance. **—Franklin**

प्रशंसा अज्ञान की बेटी है।

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय व्यर्थ नष्ट न करो, उसके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करो। **—कार्ल मार्क्स**

प्रशंसा अच्छे गुणों की छाया है, परन्तु जिन गुणों की वह छाया है उन्हीं के अनुसार उसकी योग्यता भी होती है। —बेकन

The way to develop the best that is in a man is by appreciation and encouragement —**Charles Schweb**

मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास प्रशंसा एवं प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। —**चार्ल्स श्वेब**

Praise like gold and diamonds owes its value only to its scarcity. —**Dr. Johnson**

स्वर्ण और हीरे के समान, प्रशंसा का मूल्य केवल उसके दुर्लभत्व में ही होता है। —**डा० जानसन**

The greatest efforts of the race have always been traceable to the love of praise as its greatest catastrophes to the love of pleasure. —**Ruskin**

प्रशंसा के प्रति अनुराग पर ही सदैव किसी जाति का महान् प्रयास आधारित रहा है, जैसे उसका पतन विलासिता के प्रति अनुराग में रहा है। —**रस्किन**

प्रशंसा के वचन साहस बढ़ाने में अचूक औषधि का काम देते हैं। —**सुदर्शन**

प्रशंसा की भूख जिसे लग जाती है, वह कभी तृप्त नहीं होता। —**अज्ञात**

प्रशासक

नरपतिहितकर्त्ता द्वेष्यतां याति लोके
जनपद हितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः।
इति महति विरोधे वर्त्तमाने समाने
नृपति जनपदानां दुर्लभः कार्यकर्त्ता॥

देखिए, अर्थ 'कार्यकर्त्ता' में। —**पंचतंत्र**

प्रशासन-कार्य

प्रशासन-कार्य अत्यन्त दुःसाध्य है क्योंकि इसमें मनुष्य को आंतरिक एवं वाह्य दोनों संघर्षों में सदैव निरत रहना पड़ता है। —**अज्ञात**

प्रसन्नता (दे० 'सुख')

मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है। —**प्रेमचन्द**

प्रसादे सर्वदु:खानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धि: पर्यवतिष्ठते ॥ —**श्रीकृष्ण (गीता)**

चित्त प्रसन्न रहने से सब दु:ख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है।

Cheerfulness gives elasticity of the spirit. —**S. Smiles**

प्रसन्नता आत्मा को बल देती है। —**सेमुएल स्माइल्स**

प्रसन्न हृदय मनुष्य वह सूर्य है जिसकी किरणें अनेकों हृदयों के शोकरूपी अन्धकार को दूर भगा देती हैं। —**अज्ञात**

जीवन का सत्य है प्रसन्नता। —**जयशंकर प्रसाद (तितली)**

विश्वाहा वयं सुमनस्यमाना:। —**ऋग्वेद**

हम सदा ही अपने को प्रसन्न रखें।

प्रसन्नता और शोक वास्तव में मन की स्थितियाँ हैं और मन को वश में रखना अपने हाथ में है। —**मार्क्स ओरेलियस**

मनुष्य अपनी प्रसन्नता के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है। —**थोरो**

Happiness lies, first of all, in health. —**G. W. Curtis**

प्रसन्नता (सुख) सर्वप्रथम स्वास्थ्य में है। —**जी०डब्लू० कर्टिस**

प्रसन्नता तो चन्दन है, दूसरे के माथे पर लगाइये तो आपकी उँगलियाँ अपने आप महक उठेंगी। —**अज्ञात**

To be happy you must forget yourself—learn benevolence; it is the only cure of a morbid temper. —**Bulwer**

प्रसन्न रहने के लिए तुम स्वयं अपने को भूल जाओ, परोपकारी बनो; दूषित विचार को दूर करने का केवल यही एक उपाय है। —**बुल्वर**

True happiness renders men kind and sensible, and that happiness is always shared with others. —**Montesquieu**

सच्चे सुख से मनुष्य दयालु और बुद्धिमान् होता है, और ऐसे सौख्य में दूसरे भी भाग लेते हैं। —**मोनटेसक्यू**

प्रसन्न रहना हमारा कर्तव्य है। यदि हम प्रसन्न रहेंगे तो अज्ञात रूप से संसार की बहुत भलाई करेंगे। **—स्टीवेंसन**

If a man is unhappy this must be his own fault; for God made all men to be happy. **—Epictetus**

यदि कोई मनुष्य अप्रसन्न है तो यह उसी का दोष है क्योंकि ईश्वर ने सभी को प्रसन्न बनाया है। **—इपिक्टेटस**

To be bright and cheerful often requires an effort; there is a certain art in keeping myself happy. **—Lord Avebury**

हँसमुख और प्रसन्न रहने में कुछ प्रयास की आवश्यकता है। अपने को प्रसन्न रखना भी एक कला है। **—लार्ड एवेबरी**

A cheerful look makes a dish a feast. **—Herbert**

मुस्कराते हुए चेहरे से दिया हुआ जलपान पूरा भोजन हो जाता है। **—हर्बर्ट**

Cheerfulness is contagious. Nothing is so catching in this world as a full warm spontaneous smile. **—K. V. Phadke**

प्रसन्नता छूत की बीमारी है। एक पूर्ण स्वाभाविक मुस्कान से बढ़ कर इस संसार में कोई अन्य प्रभावित करने वाली वस्तु नहीं है। **—के० वी० फडके**

A good laugh is sunshine in a house. **—Thackeray**

अच्छी हँसी घर में सूर्य के प्रकाश के सदृश होती है। **—थैकरे**

उन्मत्तकारी प्रसन्नता जब किसी भोले हृदय को दबोच कर बैठ जाती है, मनुष्य तब उच्छृङ्खल और निर्भीक हो जाता है।

—अमृतलाल नागर (एटमबम)

Cheerfulness is health; its opposite melancholy is disease.

—Haliburton

प्रसन्नता स्वास्थ्य है, इसके विपरीत उदासी रोग है। **—हालीबर्टन**

I had rather have a fool make me merry, than experience make me sad. **—Shakespeare**

मैं पसन्द करूँगा कि एक मूर्ख मुझे प्रसन्न बनाये, अपेक्षा इसके कि अनुभव मुझे दुखी बनावे। **—शेक्सपियर**

Burdens become light when cheerfully borne. —**Ovid**

बोझ हल्का हो जाता है यदि प्रसन्नतापूर्वक उठाया जाय। —**ओविड**

A light heart lives long. —**Shakespeare**

प्रसन्न-चित्त व्यक्ति अधिक जीते हैं। —**शेक्सपियर**

If there is a virtue in the world at which we should always aim, it is cheerfulness. —**Lord Lytton**

यदि संसार में एक गुण है जो हम सब का सदैव ध्येय होना चाहिए तो वह प्रसन्नता है। —**लार्ड लिटन**

I must die, but must I then die sorrowing ? I must be put in chains must I then also lament ? I must go into exile. Can I be prevented from going with cheerfulness and contentment ? —**Epictetus**

मुझे मरना है तो क्या मैं दुःखी होकर मरूँ ? मुझे कारागार में बन्द होना पड़े तो क्या मुझे वहाँ दुखी रहना चाहिए ? मुझे निर्वासित होना पड़े तो क्या मुझे प्रसन्नतापूर्वक और संतोष के साथ जाने से रोका जा सकता है ? —**इपिक्टेटस**

घमण्ड बिजली की क्षणिक चमक के समान है जब कि प्रसन्नता मन में सूर्य के समान प्रकाश करती है। —**जोजफ एडीसन**

प्रसन्नता हृदय की वह निर्मलता है, जो अनायास देखी जा सकती है। —**अज्ञात**

यदि प्रसन्नता स्वभाव में बस गयी है तो रोग, शोक दूर से ही भाग जायँगे। —**अज्ञात**

प्रसिद्ध

It is the penalty of fame that a man must ever keep rising. —**Chapin**

प्रसिद्ध होने का यह एक दंड है कि मनुष्य को निरन्तर उन्नतिशील बने रहना पड़ता है। —**चैपिन**

प्रांतीयता

प्रांतीयता का भाव पृथक् करने वाला है। परस्पर संयुक्त करने वाला नहीं।

—अज्ञात

प्रांतीयता, वर्गवाद तथा पृथक्तावादी प्रवृत्तियाँ देश के स्वस्थ विकास में बाधक हैं।

—अज्ञात

प्रांतीयता हमारी राष्ट्रीयता के कल्पवृक्ष को काटने वाली कुल्हाड़ी है।

—अज्ञात

प्रांतीयता में राष्ट्रीय एकता का अभाव होता है, और एकता के अभाव में राष्ट्र अपने विकासोन्मुख ध्येय से गिर जाता है।

—अज्ञात

प्राणायाम

प्राणायाम रहस्यमयी गुप्त कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत करता है।

—स्वामी शिवानन्द

इच्छानुसार साँस लेने और छोड़ने की क्रिया को रोकने पर अधिकार प्राप्त करने का नाम प्राणायाम है, जो कि आसन-विजय के बाद ही प्राप्त होता है।

—पातञ्जलि (योगसूत्र)

प्रायश्चित्त

जो मनुष्य अधिकारी व्यक्ति के सामने स्वेच्छापूर्वक अपने दोष शुद्ध हृदय से कह देता है और फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है वह मानों शुद्धतम प्रायश्चित्त करता है।

—महात्मा गांधी (**आत्मकथा**)

जो पुरुष अपनी जाति, आश्रम या कुल के धर्म को त्याग देते हैं उनकी शुद्धि किसी प्रायश्चित्त से नहीं हो सकती।

—वेदव्यास (महा०, शांति०)

मदिरापान, ब्रह्महत्या तथा गुरुपत्नी गमन—इन महापापों के लिए कोई प्रायश्चित्त ही नहीं बताया गया है। किसी भी उपाय से अपने प्राणों का अन्त कर देने पर ही इनसे छुटकारा मिलता है। यही शास्त्रों का निर्णय है।

—वेदव्यास (**महा०, शांति०**)

पापी मनुष्य धर्माचरण और तप करके ही अपने पाप को नष्ट कर सकता है।
—वेदव्यास (महा०, शांति०)

जो मनुष्य बुरे कर्मों का पश्चाताप करता है, वह पाप से मुक्त हो जाता है।
—वेदव्यास (महा०, वन०)

प्रार्थना

ॐ असतो मा सद गमय, ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय
ॐ मृत्योर्मा अमृतं गमय। **—वृहदारण्यक १-३-२८**

हमें असत् से मुक्त करके सत् का अनुभव दीजिये ? अज्ञान तम से मुक्त करके स्वयं प्रकाश का अनुभव दीजिये। हमें मृत्यु से मुक्त करके परमानन्दमय अमृत का अनुभव दीजिये।

प्रार्थना अर्थात् ईश्वर के पास पहुँचने की इच्छा। हम भगवान् की शरण में आये हैं, यह भावना प्रार्थना में होनी चाहिए। **—विनोबा**

प्रार्थना वही कर सकता है जिसकी आत्मा ऊँची उठी हुई हो।
—सन्त मैकेरियस

असहाय अवस्था में प्रार्थना के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।
—जयशंकर प्रसाद

प्रार्थना अगर रक्षण के अन्दर होती है तो वह प्रार्थना ही मिट जाती है।
—महात्मा गांधी

केषां न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु। **—कालिदास** (मेघदूत)
सज्जन से की हुई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती।

सच्ची करुण प्रार्थना का उत्तर तत्काल ही मिला करता है। **—अज्ञात**

प्रार्थना के संयोग से हमें बल मिलता है। अपने पास का सम्पूर्ण बल काम में लाकर और बल की ईश्वर से माँग करना यही प्रार्थना का मतलब है। **—विनोबा**

प्रार्थना धर्म का निचोड़ है। प्रार्थना याचना नहीं है, यह तो आत्मा की पुकार है। प्रार्थना दैनिक दुर्बलताओं की स्वीकृति है, यह हृदय के भीतर चलने वाले अनुसंधानों का नाम है। **—महात्मा गांधी**

Our prayers should be for blessings in general, for God knows best what is good for us. **—Socrates**

हमारी प्रार्थना सर्व-सामान्य भलाई के लिए होनी चाहिए, क्योंकि ईश्वर जानता है कि हमारे लिए अच्छा क्या है। **—सुकरात**

अहंकार को शून्य करने में प्रार्थना मदद दे सकती है। **—विनोबा**

Prayer is the most powerful form of energy one can generate.

प्रार्थना एक अभूतपूर्व शक्ति है, जिसे कोई व्यक्ति उत्पन्न कर सकता है।
—एक वैज्ञानिक

प्रार्थना के बिना मैं कब का पागल हो गया होता। **—महात्मा गाँधी**

प्रार्थना से मल विक्षेप और आवरण हट जाता है।

प्रार्थना से राग-द्वेष काम-क्रोध विकार विषहीन हो जाते है, शंका, सन्देह, भ्रम जड़मूल से उखड़ जाते हैं, अज्ञान का अन्त होता है, विशुद्ध ज्ञान-ज्योति आलोकित होती है और सर्वत्र भगवान की बाहें भक्त को आश्रय देती हैं। **—दीनानाथ 'दिनेश'**

हमारी मानसिक वृत्तियाँ, हमारी अभिलाषाएँ हमारी नित्य की प्रार्थनाएँ हैं।
—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

Whatever a man prays for, he prays for a miracle.
—Turgenieve

मनुष्य की प्रार्थनाएँ किसी आश्चर्य की प्राप्ति के हेतु होती हैं। **—तुर्गेनिव**

In prayer it is better to have a heart without words, than words without a heart. **—John Bunyan**

शब्द-रहित सहृदय प्रार्थना, हृदयहीन मुखर प्रार्थना से उत्तम है।
—जान बनयन

प्रार्थना में दैववाद और प्रयत्नवाद का समन्वय है। दैववाद में नम्रता है वह जरूरी है, प्रयत्नवाद में जो पराक्रम है वह भी आवश्यक है, प्रार्थना इसका मेल साधती है। **—विनोबा**

He prayeth best who loveth best. **-Coleridge**

उसकी प्रार्थना सर्वोत्तम है, जिसका प्यार सर्वोत्तम है। **—कोलरिज**

प्रार्थना लाजिमी हो ही नहीं सकती, प्रार्थना तभी प्रार्थना है जब वह अपने आप हृदय से निकलती है। **—महात्मा गांधी**

मनुष्य के अंतर में शुभ और अशुभ दोनों तरह की वृत्तियाँ हैं। लेकिन अंतरतर में तो शुभ ही भरा है। प्रार्थना से उस अंतरतर में प्रवेश होता है।

—विनोबा

To him who harkens to the gods, the gods give care.

—Homer

जो देवताओं की बात सुनते हैं, देवता उनकी सुनते हैं। **—होमर**

प्रार्थना कोई यांत्रिक वस्तु नहीं, वह हृदय की प्रक्रिया है। **—विनोबा**

मैं भगवान् से अष्टसिद्धि या मोक्ष तक की कामना नहीं करता। मेरी यही एक प्रार्थना है कि समस्त प्राणियों के अंत:करण में स्थित होकर मैं ही उनके समस्त दु:खों को सहूँ। **—श्रीमद्भागवत**

मैं कोई काम बिना प्रार्थना के नहीं करता। मेरी आत्मा के लिए प्रार्थना उतनी ही अनिवार्य है जितना शरीर के लिए भोजन। **—महात्मा गांधी**

More things are wrought by prayer than the world thinks of. **—Tennyson**

जितना संसार समझता है, प्रार्थना से उससे कहीं अधिक कार्य होता है।

—टेनीसन

बारिश का परिणाम शरीर पर और उसके द्वारा मन पर होता है तो प्रार्थना का परिणाम हृदय के द्वारा आत्मा पर होता है। **—विनोबा**

प्रार्थना का फल ज्ञान है। ज्ञान से साधन सुलभ होता है। साधन की सिद्धि से परमेश्वर योग क्षेम चलाता है और स्वयं भक्त का पथ-प्रदर्शन करता है।

—दीनानाथ दिनेश (गीता के सप्तस्वर)

हम जब अपनी असमर्थता खूब समझ लेते हैं और सब कुछ छोड़ कर ईश्वर पर भरोसा करते हैं तो उसी भावना का फल प्रार्थना है। **—महात्मा गांधी**

अपने दुर्गुणों का चिन्तन और परमात्मा के उपकारों का स्मरण यही सच्ची प्रार्थना है। **—अज्ञात**

धैर्य सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना है। —भगवान् बुद्ध

I pray Thee, O God, that I may be beautiful within.

—**Socrates**

मेरी प्रार्थना है कि, हे ईश्वर, मैं अन्दर से सुन्दर बनूं। —**सुकरात**

प्रार्थना आत्मशुद्धि का आह्वान है, यह विनम्रता को निमंत्रण देना है, यह मनुष्यों के दुःखों में भागीदार बनने की तैयारी है। —**महात्मा गांधी**

प्रार्थना का आमंत्रण निश्चय ही आत्मा की व्याकुलता का द्योतक है। प्रार्थना पश्चात्ताप का एक चिन्ह है। प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होने की आतुरता को सूचित करती है। —**महात्मा गांधी**

परमात्मा की प्रार्थना के लिए एकत्र होने वाले हृदय से एक हो जाते हैं।

—**विनोबा**

Prayer is the voice of faith.

प्रार्थना विश्वास की ध्वनि है।

The fewer words, the better prayer. —**Luther**

शब्द जितने कम होंगे उतनी ही अच्छी प्रार्थना होगी। —**लूथर**

शरीर की शक्ति कायम रखने के लिए हमको रोज खाना पड़ता है। आत्मा के लिए तो चौबीस घंटे प्रार्थना की जरूरत है। —**विनोबा**

भगवान की प्रार्थना में सारे भेदों को भूल जाने का अभ्यास हो जाता है।

—**विनोबा**

सभी सकुशल रहें, सभी निरोगी और स्वस्थ हों। सबका पूर्ण कल्याण हो, कोई दुःख-भागी न हो। —**उपनिषद्**

प्रीति-प्रेम (दे० 'प्यार', 'मुहब्बत')

सुर नर मुनि सब की यह रीती।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती॥

—**तुलसी (मानस, किष्किन्धा०)**

अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूपम् —**भक्तिसूत्र-५१**

प्रेम का स्वरूप वाणी में नहीं बँधता।

मूकास्वादनवत् । —भक्तिसूत्र-५२

गूंगे के स्वाद के समान है ।

प्रेम ही परमात्मा है । प्रेम से जीवन व्यतीत करो । —सत्य साईं बाबा

प्रेम पियाला जिन पिया, झूमत तिनके नैन ।
नारायण वा रूप में, छके रहैं दिन रैन ।।

—नारायण स्वामी

रीति-प्रीति सब सों भली, बैर न हित मित गोत ।
रहिमन याही जनम की, बहुरि न संगति होत ।। —रहीम

जल पय सरिस बिकाइ, देखहु प्रीति की रीति भलि ।
बिलग होइ रस जाइ, कपट खटाई परत ही ।।

—तुलसी (मानस, बाल०)

व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतु-
र्न खलु बहिरुपाधीन् प्रीतयः संश्रयन्ते ।।

—भवभूति, उ०

कोई भीतरी कारण ही पदार्थों को परस्पर मिलाता है; बाहरी गुणों पर प्रीति आश्रित नहीं होती ।

सच्चे प्रेम में मनुष्य अपने आप को भूल जाता है । —स्वामी रामतीर्थ

अगुन अलेप अमान एकरस । राम सगुन भये भगत प्रेम बस ।।

—तुलसी (मानस, अयोध्या०)

प्रेम व्यथा तन में बसे, सब तन जर्जर होय ।
राम वियोगी ना जिये, जिये तो बौरा होय ।।

—कबीर

मदिरा के प्याले की भांति परिपूर्ण जीवन ही प्रेम है । —रवीन्द्र

प्रेम वसन्त समीर है, द्वेष ग्रीष्म की लू । —प्रेमचन्द (सेवासदन)

Love is like the moon; when it does not increase it decreases.

—Segur

प्रेम चन्द्रमा के समान है । अगर वह बढ़ेगा नहीं तो घटना शुरू हो जायगा ।

—सीगर

त्याग प्रेम की परीक्षा है, बलिदान प्यार की कसौटी है। —अज्ञात

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय॥ —कबीर

जहाँ प्रेम और भक्ति नहीं, वहां परमात्मा नहीं। —गुरु रामदास

रहिमन गली है साँकरी, दूजो ना ठहराहिं।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपुन नाहिं॥ —रहीम

Love looks not with the eyes, but with the mind.
—**Shakespeare**

प्रेम आँखों से नहीं वरन् मन से देखता है। —शेक्सपियर

यही प्रेम की रीति कि सब कुछ देता, किन्तु न कुछ लेता है।
—गोपाल दास नीरज (प्राण-गीत)

प्रेम शुद्ध हो तो लोक और परलोक दोनों सुधर जाते हैं।
—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

प्रेम वही है जो अपनी शक्ति से अरूप में रूप भर दे।
—अमृतलाल नागर (खंजन नयन)

प्रेम बलिदान सिखाता है, हिसाब नहीं सिखाता। प्रेम मस्तिष्क को नहीं हृदय को छूता है। —अज्ञात

धन और वैभव हृदय की प्यास नहीं बुझा सकते, उसके लिए आवश्यकता है निर्धन प्रेम की। —डा० रामकुमार वर्मा

प्रेम हृदय के समस्त सद्भावों का शान्त, स्थिर, उद्गारहीन समावेश है।
—प्रेमचन्द

Mutual love, the crown of all our bliss. —**Milton**

पारस्परिक प्रेम हमारे सभी आनन्दों का शिरोमणि है। —मिल्टन

प्रेम से ही सृष्टि का जन्म होता है, प्रेम से ही उसकी व्यवस्था होती है और अन्त में प्रेम में ही वह विलीन हो जाती है। —रवीन्द्र

Love reasons without reason. —**Shakespeare**

प्रेम बिना तर्क का तर्क है। —शेक्सपियर

प्रेम इस लोक का अमृत है। —**अज्ञात**

प्रेम आत्मा से होता है, शरीर से नहीं। —**भगवतीचरण वर्मा**

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै भुई धरै, तब पैठे घर माहिं॥ —**कबीर**

प्रेम टेबिल लैम्प नहीं है कि प्लग जोड़ा, स्विच दबाया और रोशनी जल गयी। अपनी दोनों हथेलियों से रगड़ कर आग पैदा करनी पड़ती है तब जाकर प्रेम की खीर पकती है। —**अज्ञात**

प्रेम थकान को मिटाता है, दुःख को सुख बनाता है। जीवन की वाटिका में प्रेम का गुलाब खिल कर अपने चारों ओर सुगन्ध बिखेर देता है। प्रेम भगवान् का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। —**वाल्टेयर**

प्रेम भाग्य के वश में है। —**शेक्सपियर (हैमलेट)**

दया के सामने जैसे दुष्टता का नाश हो जाता है, वैसे ही प्रेम और उदार सहानुभूति के सामने बुरे मनोविकारों का नाश हो जाता है। —**स्वेट मार्डेन**

जीवन का सबसे बड़ा आनन्द प्रेम है।

प्रेम दुःख और वेदना का बन्धु है। इस संसार में जहाँ दुःख और वेदना का अथाह सागर है, वहाँ प्रेम की अधिक आवश्यकता है। —**डा० रामकुमार वर्मा**

मानव हृदय में घृणा, लोभ और द्वेष वह विषैली घास है जो प्रेम रूपी पौधे को नष्ट कर देती है। —**सत्य साईं बाबा**

नारायण जप जोग तप, सबसों प्रेम प्रवीन।
प्रेम हरी को करत है, प्रेमी के आधीन॥ —**नारायण स्वामी**

नारायण यह प्रेम सुख, मुखसों कह्यो न जाय।
ज्यों गूँगौ गुड़ खात है, सैनन स्वाद लखाय॥

—**नारायण स्वामी**

Love all God's creation, the whole and every grain of sand in it. —**Dostoyevsky**

ईश्वर की समस्त सृष्टि से, इसके कण-कण से प्रेम करो। **—डास्टाएवस्की**

प्रेम और वासना में उतना ही अंतर है, जितना कंचन और काँच में।
—प्रेमचन्द

सच्चा प्रेम स्तुति से प्रकट नहीं होता, सेवा से प्रकट होता है।
—महात्मा गांधी

प्रेम बलिदान है—आत्म-त्याग है, ममत्व का विस्मरण है।
—भगवतीचरण वर्मा (चित्रलेखा)

प्रेम पियाला जो पियै, सीस दच्छिना देय।
लोभी सीस न दे सकै, नाम प्रेम का लेय॥ **—कबीर**

Love sought if good, but given unsought is better.
—Shakespeare

ऐच्छिक प्रेम उत्तम है, परन्तु बिना याचना के दिया हुआ प्यार बेहतर है।
—शेक्सपियर

प्रेम में स्वर्गीय आनन्द और मृत्यु की सी यन्त्रणा है, किन्तु जो प्रेम करता है वही सच्चा सुखी और भाग्यवान् है। **—गेटे**

क्रोध जैसे तलवार को बाहर खींच लेता है, विज्ञान जैसे जलशक्ति का उद्घाटन कर लेता है, वैसे ही प्रेम रमणी के साहस और धैर्य को प्रदीप्त कर देता है। **—प्रेमचन्द**

प्रेम हमें अपने पड़ोसी या मित्र पर ही नहीं बल्कि जो हमारे शत्रु हों उन पर भी रखना है। **—महात्मा गांधी**

Love gives itself ; it is not bought. **—Longfellow**

प्रेम खरीदा नहीं जाता, वह स्वयं को अर्पित करता है। **—लांगफेलो**

प्रेम ही आरोग्य के मूल कारण—परमात्मा से हमारा मेल कराता है।
—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

नारी की आत्मा प्रेम में बसती है। **—श्रीमती सिगोरने**

प्रेम बिना तलवार के शासन करता है। **—कहावत**

प्रेमी प्रीति न छाँड़ही, होत न प्रेम तें हीन ।
मरे परेहू उदर में, जल चाहत है मीन ।। **—अज्ञात**

प्रेम बराबर योग ना, प्रेम बराबर ज्ञान ।
प्रेम भक्ति बिन साधवो, सबही थोथा ध्यान । **—चरण दास**

रूप छके झूमत रहैं, तन कौ तनिक न ज्ञान ।
नारायण दृग जल भरें यही प्रेम पहिचान ।।

—नारायण स्वामी

प्रेम पश्यति भयान्यपदेऽपि । **—भारवि (किरातार्जुनीय)**

प्रेम अकारण भी अनिष्ट की आशंका करता है ।

पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान ।
एक म्यान में दो खडग, देखा सुना न कान ।। **—कबीर**

प्रेम ही असन्तोष-रूपी महान् व्याधि की रामबाण औषधि है । प्रेम ही द्वेष, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों का उपशामक है । **—स्वेट मार्डेन**

प्रेम आरम्भ नहीं है—वह तो उत्तम कार्य का अन्तिम फल है । **—रस्किन**

प्रेम ही शान्ति है, प्रेम ही सुख और आनन्द है ।

—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

प्रेम दहकती हुई आग है तो वियोग उसके लिए घृत है । **—प्रेमचन्द**

प्रेम शरीर प्रपंच रुज, उपजी अधिक उपाधि ।
तुलसी भली सुबैदई, बेगि बाँधिए व्याधि ।।

—तुलसी (दोहावली)

प्रेम ही सबसे बड़ा शिक्षक है; प्रेम ही सर्वोत्कृष्ट शान्ति-कर्त्ता है ।

—स्वेट मार्डेन

Love is blind, and lovers cannot see the pretty follies that they themselves commit. **—Shakespeare**

प्रेम अंधा है और प्रेमी उन सुन्दर मूर्खताओं को, जिन्हें वे करते हैं, नहीं देख सकते । **—शेक्सपियर**

प्रेम कभी दावा नहीं करता, वह तो हमेशा देता है । प्रेम हमेशा कष्ट सहता है । न कभी झुंझलाता है, न बदला लेता है । **—महात्मा गांधी**

प्रेम नगरों में नहीं वरन् देहाती झोपड़ियों में बसता है। —गेटे

प्रेम सीधी-सादी गौ नहीं, खूंख्वार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की आँख भी नहीं पड़ने देता। —प्रेमचन्द (गो-दान)

जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं हम नाहिं।
प्रेम-गली अति साँकरी, ता में दो न समाहिं॥ —कबीर

सच्चा प्रेम संयोग में भी वियोग की मधुर वेदना का अनुभव करता है।
—प्रेमचन्द

मनुष्य का कर्तव्य है कि कष्ट देने वाले से भी प्रेम करे।
—मारकस आंटोनियस

प्रियं मा कृणु देवेषु। प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत। —अथर्व० १९-६२-१

हे प्रभो मुझे पवित्र प्रेम प्रदान करो, मैं सबका प्रिय बनूं। मुझे राजा तथा प्रजा सबका प्रेमपात्र बनाओ। मैं ऐसा बनूँ कि जो भी मुझे देखें वे मुझसे हार्दिक प्रेम करें।

Love is never lost. If not reciprocated it will flow back and soften and purify the heart. —**Washington Irving**

प्रेम कभी नष्ट नहीं होता। यदि प्यार का उत्तर प्यार से न मिला तो वह प्रेमी के पास लौट आता है और उसके हृदय को कोमल और पवित्र बना देता है।
—वाशिंगटन इर्विंग

जहाँ प्रेम जितना उग्र होता है वहाँ वैसी ही तीखी घृणा भी होती है।
—अज्ञेय (शेखर)

Happiness is the only good, reason the only torch, justice the only worship, humanity the only religion, and love the only priest. —**R. G. Ingersoll**

प्रसन्नता ही केवल सद्गुण है, (बुद्धि) तर्क ही केवल दीप है, न्याय ही केवल पूजनीय है, मानवता ही केवल धर्म है और प्रेम ही केवल पुजारी है।
—आर० जी० इंगरसोल

प्रेम हृदयों को मिलाता है, देह पर उसका वश नहीं चलता। —प्रेमचन्द

प्रेम स्वर्गीय शक्ति का जादू है। इसमें पड़ कर राक्षस भी देवता बन जाते हैं।
—**सुदर्शन**

प्रेम असाध्य रोग है। —**प्रेमचन्द**

प्रेम मृत्यु से अधिक बलवान् है, मृत्यु जीवन से अधिक बलवान् है। यह जानते हुए भी मनुष्य-मनुष्य के बीच कितनी संकुचित सीमा खिंची है। —**खलील जिब्रान**

अपने प्रेम को पर्वत के विषम शिखर पर स्थापित न करो, ऐसा करने से उसमें पतन का भय है। —**रवीन्द्र**

परमात्मा पूजा का नहीं, प्रेम का भूखा है। —**स्वामी दयानन्द**

जो उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है। जो प्रेम करता है, उसके लिए द्वार खुला है। —**रवीन्द्र**

प्रेम और द्वेष

प्रेम का स्वभाव है अनेक को एक करना और द्वेष का स्वभाव है एक को अनेक करना। —**अज्ञात**

प्रेम द्वेष को परास्त करता है। ईश्वर निरंतर शैतान के दाँत खट्टे करता है।
—**महात्मा गांधी**

प्रेम और सौन्दर्य

प्रेम ही सर्वोच्च कानून है और सौन्दर्य भी। दोनों ही पूर्णता को प्राप्त करते हैं। एक तो स्त्री-पुरुष के अविभाज्य ऐक्य में, दूसरा अनन्त आनन्द में।
—**क० मा० मुंशी**

प्रेमहीन

प्रेम-विहीन हृदय के लिए संसार काल-कोठरी है, जो नैराश्य और अंधकार से भरी है। —**प्रेमचन्द**

जिसने कभी प्रेम नहीं किया उसने स्वर्ग में रह कर भी नरक का अनुभव किया। प्रेमहीन जीवन नरक की दहकती ज्वाला है, जिसकी आँच में दूसरे भी जलने लगते हैं। —**अज्ञात**

प्रेमी

प्रेमी हृदय उदार होता है, वह दया और क्षमा का सागर है, ईर्ष्या और दंभ के नाले उसमें मिल कर उसे विशाल बना देते हैं। —**प्रेमचन्द**

सच्चा प्रेमी अपने सुखों की तनिक भी इच्छा नहीं करता, वरन् जिस पर प्रेम करता है उसके सुख पर अपने सुख को उत्सर्ग कर देता है। —**अज्ञात**

The lunatic, the lover, and the poet.
Are of imagination all compact. —**Shakespeare**

पागल हो, प्रेमी हो या कवि, इन सबकी कल्पना-शक्ति बड़ी तीव्र होती है।
—**शेक्सपियर**

प्रेरणा

प्रेरणा ईश्वर-ज्योति है जो सात्त्विक प्रकृति के महापुरुषों को अपना जीवनकार्य करने का आदेश तथा उत्साह देती है। —**अज्ञात**

प्रेरणा मनुष्य के अन्तःस्थित अगाध सामर्थ्य को बाहर प्रकट करने की चेतावनी है। —**अज्ञात**

पृथ्वी

शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संघृता घृता।
तस्मै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः॥

—**अथर्ववेद ११/२६**

शिला भूमि चट्टान खेत का रूप धारती जो धरती।
पत्थर धूल पर्वतों में भी जो शिव सुन्दरता भरती॥
स्वर्णरूप जिसका वक्षस्थल, जिसका सदा धर्म आधार।
उस पृथ्वी माता को मैं करता प्रणाम हूँ सौ-सौ बार॥

—**दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

फकीर

भेष फकीरी जे करै, मन नंहि आवे हाथ।
दिल फकीरा जे होइ रहे, साहेब तिनके साथ॥ —**मलूक दास**

फल

जो कर्म छोड़ता है वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोड़ता है वह चढ़ता है। —महात्मा गांधी

संसार में जप, तप, यज्ञ, दान सब अपना-अपना फल देकर समाप्त हो जाते हैं परन्तु जो परमेश्वर के साथ रहकर कर्म करते हैं, उनके पुण्य सदा हरे रहते हैं।
—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

फलेन परिचीयते। —कहावत

फल (परिणाम) से ही उद्योग की पहिचान होती है।

फलत्याग से मतलब है फल के सम्बन्ध में आसक्ति का अभाव। वास्तव में फलत्यागी को हजारगुना फल मिलता है। —महात्मा गांधी

अविज्ञाय फलं यो हि कर्मत्वे चानुधावति।
स शोचेत्फलवेलायां यथा किंशुकसेचकः॥ —वाल्मीकि

जो फल को जाने बिना ही कर्म की ओर दौड़ता है, वह फल-प्राप्ति के अवसर पर केवल शोक का भागी होता है—जैसे कि पलाश को सींचनेवाला पुरुष उसका फल न पाने पर खिन्न होता है।

फलहीन

फलहीनं नृपं भृत्याः कुलीनमपि चोन्नतम्।
संत्यज्यान्यत्र गच्छन्ति शुष्कं वृक्षमिवाण्डजाः॥ —पंचतंत्र

उन्नत कुल में उत्पन्न किन्तु फलहीन (अपने दया, दाक्षिण्यादि गुणों से रहित) राजा को छोड़ कर नौकर अन्यत्र चले जाते हैं, जैसे कि सूखे पेड़ को छोड़ कर पक्षी दूसरे पेड़ पर चले जाते हैं।

फायदा

जब तक तकलीफ सहने की तैयारी नहीं होती तब तक फायदा दिखाई दे ही नहीं सकता। फायदे की इमारत नुकसान की धूप में बनी है। —विनोबा

फिज़ूल-खर्ची

जो मूर्ख दिन दहाड़े कपूर की बत्ती जलाता है, एक दिन ऐसा आयेगा कि उसको रात को जलाने के लिए तेल भी न मिलेगा। उसकी फजूल-खर्ची एक दिन विषम फल लायेगी ही। **—सादी (गुलिस्ताँ)**

मनुष्य धन के अभाव से उतना कष्ट नहीं पाता जितना वह अपनी फजूल-खर्ची के कारण पाता है। **—अज्ञात**

Waste of time is the most extravagant and costly of all expenses.

समय गँवाना सभी खर्चों से कीमती और व्यर्थ होता है। **—अज्ञात**

फिलॉसफर (दे० 'दार्शनिक')

दार्शनिक का सर्वप्रथम कर्त्तव्य अपने अहंकार को तिलांजलि देना है।

—इपिक्टस

To be a philosopher is not merely to have subtle thoughts, but so to love wisdom as to live according to its dictates.

—Thoreau

दार्शनिक होना केवल सूक्ष्म विचार रखना ही नहीं है किन्तु ज्ञान की इस तरह आराधना करना है कि यह जीवन उसी के नियमानुसार व्यतीत होने लगे।

—थोरो

फिलॉसफी (दे० 'दर्शन' 'तत्त्वज्ञान')

फलसफी की बहस के अन्दर खुदा मिलता नहीं।
डोर को सुलझा रहे हैं और सिरा मिलता नहीं॥ **—अकबर**

Queen of arts and daughter of heaven. **—Burke**

दर्शन कलाओं की रानी और स्वर्ग की बेटी है। **—बर्क**

Philosophy if rightly defined is nothing but the love of wisdom. **—Cicero**

दर्शन को यदि स्पष्ट किया जाय तो वह केवल ज्ञान से प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नहीं। **—सिसरो**

फूल

फूल केवल देव-मन्दिरों की अथवा राज-महलों की ही वस्तु नहीं है, निर्धनों के झोपड़ों में अथवा वीतराग सन्यासियों के मन में भी उनके प्रति आदर के भाव हैं। **—अज्ञात**

Lovely flowers are the smiles of God's goodness.

—Wilberforce

लुभावने फूल ईश्वर की अच्छाई की मुस्कान हैं। **—विबरफोर्स**

नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा।
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताड़नानि ॥ **—कालिदास**

सुगन्धित पुष्प की स्वाभाविक स्थिति यह है कि वह मस्तक पर धारण किया जाय, चरणों से न रौंदा जाय।

फूल की पँखुड़ियों को तोड़ कर तुम उसका सौन्दर्य नहीं ग्रहण कर सकते।

—रवीन्द्र

प्रकाश जब काले बादलों का चुंबन करता है तो वे स्वर्ग के फूल बन जाते हैं।

—रवीन्द्र

फूल प्रकृति की उदारता का दान है।···उसके सूँघने से हृदय पवित्र होता हैं, मेधा-शक्ति बढ़ती है और मस्तिष्क प्रफुल्ल होता है। **—जयशंकर प्रसाद**

Flowers are love's truest language. **—P. Benjamin**

फूल प्रेम की सच्ची भाषा है। **—पी० बेन्जामिन**

फुलवारी

To cultivate a garden is to walk with God. **—Bovee**

फुलवारी लगाना ईश्वर के साथ टहलना है। **—बोवी**

बंधन

Man burricades against himself. **—R. N. Tagore**

मनुष्य अपने को स्वयं बंधन में डालता है। **—रवीन्द्र**

बद्धो हि को यो विषयानुरागी।
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः ॥ **—शंकराचार्य**

वास्तव में बंधन में कौन है ? विषयों में आसक्त। विमुक्ति क्या है ? विषयों से वैराग्य।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। **—गीता ३-९**

जो कर्म यज्ञ के लिए (परोपकारार्थ) किये जाते हैं, उनके अतिरिक्त कर्मों से इस लोक में बंधन पैदा होता है।

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबद्धयते ॥ **—गीता ४-२२**

जो यथालाभ से सन्तुष्ट रहता है, जो सुख-दुःखादि द्वन्द्वों से मुक्त हो गया है, जो द्वेषरहित हो गया है, जो सफलता निष्फलता में तटस्थ है, वह कर्म करते हुए भी बन्धन में नहीं पड़ता।

वन-उपवन में ही सुमन सुशोभित होते।
बँध माला में प्राकृतिक-छटा वे खोते ॥
क्या राहु-ग्रस्त शशि ने पीयूष लुटाया ?
कब बन्धन में किसका विकास हो पाया ?

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

बंधु

आवत काम रहीम हैं, बंधु विरल गहि मोह।
जीरन पेड़हि के भये, राखत बरहि बरोह ॥ **—रहीम**

वरं वनं व्याघ्र-गजेन्द्र-सेवितम्,
द्रुमालयं पक्वफलाम्बु भोजनम्।
तृणानि शय्या परिधान वल्कलं,
न बन्धुमध्ये धनहीन जीवनम् ॥

बरु रहीम कानन बसिय, असन करिय फल तोय।
बन्धु मध्य गति दीन ह्वै, बसिबो उचित न कोय ॥ **—रहीम**

बचपन

विद्यार्थी का बाल्यकाल सबसे महत्त्व का समय है। उस समय मिला हुआ ज्ञान वह कभी भूलता नहीं। —महात्मा गांधी

Childhood shows the man, as morning shows the day.

—**Milton**

जिस प्रकार प्रभात दिन का आभास कराता है उसी प्रकार बचपन युवावस्था का। —**मिल्टन**

Heaven lies about us in our infancy, —**Wordsworth**

स्वर्ग बचपन के आस-पास रहता है। —**वर्ड्सवर्थ**

बच्चा (दे० 'शिशु')

Spare the rod and spoil the child.

बेंत को बचाना (दंड न देना) बच्चे को बरबाद करना है। —**कहावत**

बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार परतंत्रता है। हर बात के लिए उसे मां-बाप पर निर्भर रहना पड़ता है। —**विनोबा**

It is a wise child that knows his own father. —**Homer**

वह समझदार पुत्र है जो अपने पिता को जानता है। —**होमर**

Children have more need of models than of critics.

—**Joubert**

बच्चों को आलोचकों की अपेक्षा नमूनों की अधिक आवश्यकता है।

—**जोबर्ट**

बच्चे नवीन वस्त्र के समान हैं जैसा चाहो वैसा रंग लो, उसे निश्चित रंग में केवल डूबो देना पर्याप्त है। —**सत्य साईं बाबा**

बड़प्पन [दे० 'महानता']

बड़प्पन सिर्फ उम्र में नहीं, उम्र के कारण मिले हुए ज्ञान और चतुराई में भी है। —**महात्मा गांधी**

Some are born great; some achieve greatness, and some have greatness thrust upon them. **—Shakespeare**

कुछ जन्म से ही महान् होते हैं; कुछ महानता प्राप्त करते हैं और कुछ व्यक्तियों पर महानता लाद दी जाती है। **—शेक्सपियर**

No man ever yet became great by imitation.

—Dr. Johnson

नकल करके कोई आज तक महान् नहीं हुआ। **—डा० जानसन**

किसी को अपने से छोटा समझ कर उससे घृणा न करो, न अपने में बड़प्पन का अभिमान ही आने दो। **—अज्ञात**

A great man shows his greatness by the way he treats little men. **—Carlyle**

छोटों के साथ सद्व्यवहार करके ही बड़ा मनुष्य अपने बड़प्पन को प्रकट करता है। **—कार्लाइल**

छोटी बातों में बड़ा होना ही सच्चा बड़प्पन है। **—डा० जानसन**

बड़ा वही है जो अपने को सबसे छोटा मानता है।

A really great man is known by three signs, generosity in the design, humanity in the execution, moderation in success.

—Bismarck

अभिप्राय में उदारता, कार्यसम्पादन में मानवता, सफलता में संयम—इन्हीं तीन चिह्नों से महान् व्यक्ति जाना जाता है। **—विस्मार्क**

बड़प्पन सूट-बूट और ठाट-बाट में नहीं है, जिसकी आत्मा पवित्र है वही बड़ा है। **—प्रेमचन्द**

All great men come out of the middle classes. **—Emerson**

समस्त महापुरुष मध्यम वर्ग से उत्पन्न होते हैं। **—एमर्सन**

Greatness lies not in being strong, but in the right using of strength. **—H. W. Beecher**

बलवान् होने में बड़प्पन नहीं है अपितु बल का सदुपयोग करने में बड़प्पन है। **—एच० डब्लू० बीचर**

धन विद्या गुण आयु बल ये न बड़प्पन देत ।
नारायण सोई बड़ो, जाको हरि सों हेत ।।

—नारायण स्वामी

बड़ाई

बड़े बड़ाई ना करैं, बड़े न बोलैं बोल ।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका है मोल ।। **—रहीम**

सच्ची बड़ाई उसी की है जिसकी शत्रु भी सराहना करे ।

बदनामी

हम इतना बुराई से नहीं डरते जितना बदनामी से डरते हैं । बदनामी का डर न हो तो संसार में पापों की संख्या कई गुनी बढ़ जाय । **—अज्ञात**

There are calumnies against which even innocence loses courage. **—Napoleon**

बहुत-सी ऐसी बदनामियाँ हैं जिनके समक्ष भोलापन भी साहस छोड़ देता है । **—नेपोलियन**

To persevere in one's duty and to be silent is the best answer to calumny. **—Washington**

अपने कर्त्तव्य में प्रयत्नशील रहना और चुप रहना बदनामी का सबसे अच्छा जवाब है । **—वाशिंगटन**

बदला

Revenge is an inhuman word. **—Seneca**

बदला अमानुषिक शब्द है । **—सेनेका**

He that studieth revenge keepeth his own wounds green, which otherwise would heal and do well. **—Bacon**

जो बदला लेने की बात सोचता है, वह अपने ही घाव को हरा रखता है जो कि अब तक कभी का अच्छा हो गया होता । **—बेकन**

बदला मधुर होता है । **—कहावत**

In taking revenge, a man is but equal to his enemy; but in passing it over he is his superior. **—Bacon**

बदला लेने से मनुष्य अपने शत्रु के समान हो जाता है, परन्तु न लेने से वह उससे श्रेष्ठ बनता है। **—बेकन**

To revenge is no valour, but to bear. **—Shakespeare**

बदला साहस नहीं है, परन्तु उसका सहना साहस है। **—शेक्सपियर**

हत्या के रूप में बदला लेना शैतान का काम है। **—कहावत**

शत्रुओं को क्षमा करना बदले का सबसे अच्छा साधन है। **—अज्ञात**

बल

दुष्टों का बल हिंसा है, राजाओं का बल दण्ड-विधि है, स्त्रियों का बल सेवा है और गुण वालों का बल क्षमा है। **—विदुर**

बालानां रोदनं बलम्

रोना ही बालकों का बल है।

सेवा के लिए अर्पण किया हुआ बल टिकेगा, अमर होगा। **—वाल्मीकि**

Force is all-conquering but its victories are short-lived.

—Lincoln

बल सब पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु वह विजय क्षणिक होती है।

—लिंकन

भोग को अर्पण किया हुआ बल अपने और संसार के नाश का कारण होगा।

—वाल्मीकि

Who overcomes by force, hath overcome but half his foe.

—Milton

बल से जो शत्रु को जीतता है, वह केवल उसको आधा ही जीत पाता है।

—मिल्टन

बलवान्

अधिक बलवान् तो वे ही होते हैं जिनके पास बुद्धि-बल होता है। जिनमें केवल शारीरिक बल होता है, उन्हें वास्तविक बलवान् नहीं माना जाता।

—वेदव्यास (महाभारत, शांति०)

सच्चा बलवान् वही है जिसने अपने मन पर काबू पा लिया है। —अज्ञात

बलिदान

It is easier to sacrifice great than little things. **—Montaigne**

छोटी-छोटी वस्तुओं की अपेक्षा बड़ी वस्तुओं का बलिदान करना सरल है।

—मानटेन

भेंट चढ़ा दे जो तन मन की, सच्चा उसका ज्ञान है।
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

—गोपाल सिंह नेपाली

बहादुर (दे० 'वीर')

बहादुर रोगशय्या पर मरने की अपेक्षा रणक्षेत्र में मरना पसन्द करता है।

—महात्मा गांधी

No man can be brave who considers pain the greatest evil of life. **—Cicero**

कोई मनुष्य बहादुर नहीं हो सकता जो दु:ख को जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप समझता है। **—सिसरो**

Gold is tried by fire, brave man by adversity. **—Seneca**

अग्नि सोने को परखती है और आपत्ति बहादुरों को। **—सेनेका**

बहादुरी

Strength of numbers is the delight of the timid. The valiant of spirit glory in fighting alone. **—Mahatma Gandhi**

कायर बहुसंख्यक होने में प्रसन्न होते हैं। बहादुर अकेले ही लड़ने में अपना गौरव समझते हैं। **—महात्मा गांधी**

Physical bravery is an animal instinct, moral bravery is a much higher and truer courage. **—Wendell Phillips**

शारीरिक वीरता पशुता का द्योतक है, नैतिक वीरता अपेक्षाकृत ऊँची और सच्ची है। **—वेन्डेल फिलिप्स**

The better part of valour is discretion. **—Shakespeare**

विवेक बहादुरी का उत्तम भाग है। **—शेक्सपियर**

Valour would cease to be a virtue if there were no injustice.
—Agesilaus

अगर अन्याय न रहे तो बहादुरी का गुण समाप्त हो जाय। **—एजिसलस**

बहुमत

One, on God's side, is a majority. **—Wendell Phillips**

जिसके साथ ईश्वर है वह बहुमत में है। **—वेंन्डेल फिलिप्स**

It is my principle that the will of the majority should always prevail. **—Jefferson**

यह मेरा सिद्धान्त है कि बहुमत का निर्णय मान्य हो। **—जेफरसन**

The voice of the majority is no proof of justice. **—Schiller**

बहुमत की आवाज न्याय की द्योतक नहीं है। **—शिलर**

अंतःकरण के मामले में बहुमत के सिद्धान्त को कोई स्थान नहीं है।
—महात्मा गांधी

बाँसुरी-महिमा (और देखो मुरली महिमा)

बाँसुरी बजाई ओछ रंग सौं मुरारी।
सुनि के धुनि छूटि गई संकर की तारी॥
वेद पढ़न भूलि गए ब्रह्मा ब्रह्मचारी।
रसना गुन क़हि न सकै, ऐसि सुधि बिसारी॥
इंद्र सभा चकित भई लगी जब करारी।
रंभा कौ मान मिट्यौ, भूली नृतकारी॥
जमुना जू थकित भई, नहीं सुधि सँभारी।
सूरदास मुरली है तीन लोक प्यारी॥ **—सूरदास**

बातचीत

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय ।। —कबीर

अवाक् रह कर अपने आप बातचीत करने का साधन यावत् साधनों का मूल्य है ; शांति का परम पूज्य मन्दिर है, परमार्थ का एकमात्र सोपान है। —बालकृष्ण भट्ट

ता गर्दे सुखन न गफ्ता बाशद।
ऐबो हुनरश न हुफ्ता बाशद ।। —सादी (गुलिस्तां)

किसी आदमी की बुराई-भलाई उस समय तक मालूम नहीं होती जब तक कि वह बातचीत न करे।

हमारी जिह्वा कतरनी के समान सदा स्वच्छन्द चला करती है, उसे यदि हमने दबा कर काबू में कर लिया तो क्रोधादिक बड़े-बड़े अजेय शत्रुओं को बिना प्रयास ही जीत कर अपने वश में कर डाला। —बालकृष्ण भट्ट

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल शरीर ।। —कबीर

सत्संग या बातचीत से मनुष्य उद्यत बुद्धि का होता है, क्योंकि उसके लिए मनुष्य को अपनी जानकारी इस प्रकार उपस्थित रखनी पड़ती है, जिसमें जब सुअवसर आ पड़े तब वह उसे काम में ला सके। —बेकन

बातचीत प्रिय हो, पर ओछी न हो ; चुहल हो, पर बनावट लिए न हो ; स्वच्छन्द हो, पर अश्लील न हो ; विद्वत्तापूर्ण हो, पर दम्भयुक्त न हो ; अनोखी हो, पर असत्य न हो। —शेक्सपियर

अगर किसी की कड़वी बात न सुनना चाहे तो उसका मुँह मीठा करे।
—सादी

Silence is one great art of conversation. —**Hazlitt**

मौन बातचीत की एक महान् कला है। —हैजलिट

बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जानि।
हिए तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि ।। —कबीर

Know how to listen, and you will profit even from those who talk badly. **—Plutarch**

सुनना सीखो। तुम्हें उन लोगों से भी लाभ होगा जिन्हें ठीक तरह से बात-चीत करना नहीं आता। **—प्लूटार्क**

बातचीत का अच्छा ढंग यह है कि प्राप्त प्रसंग के साथ कुछ तर्क भी मिला रहे, दृष्टान्तों और कथाओं के साथ युक्ति भी रहे, प्रश्नों के साथ सम्मति भी प्रकाशित की जाय और हँसी-दिल्लगी के साथ कुछ काम की बात भी रहे।

—बेकन

जो मनुष्य तौलकर बात नहीं करता उसे कठोर बातें सुननी पड़ती हैं।

—सादी

The first ingredient in conversation is truth ; the next, good sense ; the third, good humour, and the fourth, wit.

—Sir W. Temple

बातचीत का पहला अंश है सत्य, द्वितीय सुन्दर समझ-बूझ, तृतीय सुन्दर विनोद और चतुर्थ वाक्-चातुर्य। **—सर डब्लू० टेम्पिल**

बाधा

जिस आदमी को चारों ओर विघ्न-बाधाएँ ही दीख पड़ती हैं उसका आत्मबल क्षीण हो जाता है, वह कोई महान् कार्य नहीं कर सकता। **—स्वेट मार्डेन**

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति॥ **—भर्तृहरि**

निकृष्ट व्यक्ति बाधाओं के डर से काम शुरू ही नहीं करते ; मध्यम प्रकृति वाले कार्य का प्रारम्भ तो कर देते हैं किन्तु विघ्न उपस्थित होने पर उसे छोड़ देते हैं ; (इसके विपरीत) उत्तम व्यक्ति बार-बार विघ्नों के आने पर भी काम को एक बार शुरू कर देने के बाद फिर उसे नहीं छोड़ते।

बालक

बालक शुद्ध और ब्रह्मरूप है। —अज्ञात

प्रत्येक बालक यह संदेश लेकर संसार में आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यों से निराश नहीं हुआ है। —रवीन्द्र

बालक निर्धन का धन है। —कहावत

In praising or loving a child, we love and praise not that which is, but that which we hope for. **—Goethe**

बालक की प्रशंसा या प्यार करने में हम उस वस्तु की प्रशंसा और प्यार नहीं करते जो वह है अपितु उस वस्तु की, जिसकी हम उससे आशा करते हैं। —गेटे

बालक देवलोक से आया है, वह छल-कपट और दुराव नहीं जानता। —अज्ञात

Children increase the cares of life, but mitigate the remembrance of death. **—Proverb**

बालक जीवन की चिन्ता को बढ़ा देते हैं परन्तु मृत्यु की स्मृति को कम कर देते हैं। —कहावत

बालक वे चमकते हुए तारे हैं जो ईश्वर के हाथ से छूट कर धरती पर गिर पड़े हैं। —अज्ञात

जीवन की महत्वाकांक्षाएँ बालकों के रूप में आती हैं। —रवीन्द्र

बालक राष्ट्र की मुस्कुराहट है। —चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

सत्य, अहिंसा का पाठ मैंने बालक से सीखा है। —महात्मा गाँधी

यदि स्वर्ग में पहुँचने की इच्छा है तो पहले बालक बनो। —ईसा

राजनीतिक सम्मेलनों से हमारी उलझनें कभी न सुलझेंगी। यदि इन गुत्थियों को सुलझाना है तो इसके लिए हमें बालक की शरण लेनी होगी। —प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट

बच्चे देश के दर्पण हैं। —अज्ञात

बालक भगवान् के जीते-जागते खिलौने हैं। बालकों में भगवान् का दर्शन जितनी जल्दी हो सकता है, उतना शायद ही किसी में हो।

—हरिभाऊ उपाध्याय

बालक प्रकृति की अनमोल देन है, सुन्दरतम कृति है, सबसे निर्दोष वस्तु है। बालक मनोविज्ञान का मूल है, शिक्षक की प्रयोगशाला है। बालक मानव-जगत् का निर्माता है। बालक के विकास पर दुनिया का विकास निर्भर है। बालक की सेवा ही विश्व की सेवा है। **—अज्ञात**

बच्चे राष्ट्र की आत्मा हैं; क्योंकि यही हैं जिनको लेकर राष्ट्र पल्लवित हो सकता है, यही हैं जिनमें अतीत सोया हुआ है, वर्तमान करवटें ले रहा है और भविष्य के अदृश्य बीज बोये जा रहे हैं। **—अज्ञात**

क्या तुम जानते हो कि बालक होना क्या है? इससे तात्पर्य है प्रेम में विश्वास करना, सौन्दर्य में विश्वास करना तथा विश्वास में विश्वास करना।

—फ्रान्सिस टामसन

The child is father of the man. **—Wordsworth**

बालक मानव का जनक है। **—वर्ड्सवर्थ**

बालकों की कर्तव्यशीलता ही सब गुणों की नींव है। **—सिसरो**

बालक और मूर्ख सत्य बोलते हैं। **—कहावत**

बालविधवा

बालविधवाओं का अस्तित्व हिन्दू धर्म के ऊपर एक कलंक है।

—महात्मा गांधी

The child widow is the unique product of the Indian soil unknown in other parts of the world.

बालविधवा भारत की अनोखी उपज है जिससे संसार के अन्य भाग अपरिचित हैं। **—अज्ञात**

बिखरना

बिखरना नाश का पथ है तो सिमटना निर्माण का।

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

बिगड़ी बात

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय ॥ —रहीम

सुधरी बिगरै बेगि ही, बिगरी फिर सुधरै न।
दूध फटै काँजी परे, सो फिर दूध बनै न ॥ —अज्ञात

बिन्दी

भाल लाल बिंदी दिये, छुटे बार छवि देत।
गह्यो राहु अति आह करि, मनु ससि सूर समेत ॥ —बिहारी

भाल लाल बिंदी ललन, आखत रहे विराज।
इंदुकला कुंज में बसी, मनो राहु-भय भाजि ॥ —बिहारी

सबै कहें बिन्दी दिये, आँक दसगुनो होत।
तिय ललाट बेंदी दियें, अगनित बढ़त उदोत ॥ —बिहारी

बिसारना

नारायण दो बात को, दीजै सदा विसार।
करी बुराई और ने, आप कियौ उपकार ॥ —नारायण स्वामी

बीमारी (दे० 'रोग')

बीमारी प्रकृति के साथ किये हुए अत्याचार का प्रतिकार है। —होसिया बैलू

कठिन बीमारी के लिए तीव्र चिकित्सा की आवश्यकता है। —कहावत

जो आदमी दुनिया में बीमार बन कर आया है उसकी मौत कभी शानदार नहीं हो सकती। उसकी मौत पर दुनिया आराम की साँस लेगी और शांति की नींद सोयेगी। कहेगी, चलो अच्छा हुआ, बीमारी टल गयी। —अज्ञात

बुजदिली

घर की मोहब्बत बुजदिली का दूसरा नाम है। —सुदर्शन

Cowardice is not synonymous with prudence. It often happens that the better part of discretion is valour. —**Hezlitt**

बुढ़ापा

बुढ़ापा तृष्णा रोग का अन्तिम समय है, जब सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती हैं। **—प्रेमचन्द**

मनुष्य की उम्र चाहे कम ही क्यों न हो, पर यौवन के विचार यदि उसके मन से निकल गये हैं, उसका उत्साह ढीला पड़ गया है, उसका कार्यबल कमजोर हो गया है, तो उसे बूढ़ा ही समझना चाहिए। **—स्वेट मार्डेन**

Old age is a tyrant who forbids, at the penalty of life, all the pleasures of youth. **—Rochefoucauld**

बुढ़ापा जुल्मी है जो मृत्यु का भय दिखा कर यौवन के समस्त उल्लासों का निषेध कर देता है। **—रोशोको**

आदौ चित्ते पुनः काये सतां सम्पद्यते जरा।
असतान्तु पुनः काये नैव चित्ते कदाचन ॥ **—पंचतंत्र**

सत्पुरुषों को पहले चित्त में और बाद में शरीर में बुढ़ापा आता है। असत्पुरुषों को शरीर में ही बुढ़ापा आता है, चित्त में कभी नहीं।

नयी चीज सीखने की जिसने आशा छोड़ दी वह बूढ़ा है। **—विनोबा**

मनुष्य तब तक बूढ़ा नहीं होता जब तक उसके जीवन में मधुरता और उत्साह बना रहता है, जब तक उसके हृदय में महत्त्वाकांक्षा बनी रहती है, जब तक उसके मन में कार्यशक्ति का प्रवाह बहता रहता है। **—स्वेट मार्डेन**

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। **—प्रेमचन्द**

मिनाति श्रियं जरिमा तनूनाम्। **—ऋग्वेद संहिता**

बुढ़ापा शरीर की शोभा को बिगाड़ देता है।

बुढ़ापा-जवानी

बुढ़ापा बरफ से भी ठंढा है, जवानी अंगारे से भी गरम। बुढ़ापा अक्लमंद और समझदार है। जवानी दीवानी और नातजुर्बेकार है। बुढ़ापा देखता है और सोचता है, जवानी देखती है और बेचैन हो जाती है। **—सुदर्शन**

बुद्धि (दे० 'ज्ञान', 'प्रज्ञा', 'विवेक')

मनुष्य के पास बुद्धि और बल से बढ़ कर श्रेष्ठ कोई दूसरी चीज नहीं ।
—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

बुद्धि आत्मा के इस प्रकार अधीन है जिस प्रकार कोई भोला पुरुष किसी चालाक स्त्री के वश में हो । **—सादी (गुलिस्तां)**

जिसको बुद्धि नहीं है उसको बिना सींग का पशु समझना चाहिये ।
—प्रेमचन्द

'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य' **—पंचतन्त्र**

जिसको बुद्धि है, वही बलवान् है।

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ।
—श्रीकृष्ण (गीता) १८-३२

जो बुद्धि धर्म को अधर्म मान कर सब बातों में विपरीत निर्णय करती है उसको तामसी बुद्धि (दुर्बुद्धि) कहते हैं ।

ईश्वर ने बुद्धि की कोई सीमा निश्चित नहीं की । **—बेकन**

बुद्धि की स्थिरता के बिना कोई भी आदर्श पूरा नहीं होता । **—विनोबा**

बुद्धि-विकास के लिए सच्चा क्षेत्र गाँव ही है, शहर नहीं ।
—महात्मा गांधी

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥
—चाणक्य

जिसको बुद्धि नहीं है उसको शास्त्र से क्या लाभ ? जैसे नेत्रहीन मनुष्य के लिए दर्पण बेकार है ।

केवल बुद्धि के द्वारा ही मनुष्य का मनुष्यत्व प्रकट होता है । **—प्रेमचन्द**

बुद्धि के सिवा बिचार-प्रचार का दूसरा कोई शस्त्र नहीं है, क्योंकि अन्याय को ज्ञान ही मिटा सकता है । **—स्वामी शंकराचार्य**

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः ।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः नरेषु कृतबुद्धयः ॥

—महर्षि वेदव्यास (महाभारत)

पंच महाभूतों से बनी हुई वस्तुओं में प्राणी श्रेष्ठ है। प्राणियों में बुद्धिजीवी उत्तम है, बुद्धि से काम करने वालों में मनुष्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में भी वे श्रेष्ठ हैं जिनकी बुद्धि जाग्रत है और जो उसका सदुपयोग करते हैं।

बुद्धि माया की माँ है, जहाँ जाती है बेटी को साथ ले जाती है। **—सुदर्शन**

जिस मनुष्य की बुद्धि का विकास नहीं होता अथवा जो बुद्धिद्रोही या अविवेकी होता है वह मनुष्यता से गिर जाता है। **—कौटिल्य**

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च ।
अयथावत् प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता १८-३१)

धर्म-अधर्म, कार्य-अकार्य का ठीक-ठीक निरूपण जो बुद्धि न कर सके उसको राजसी कहते हैं।

बुद्धितत्त्व दैवी विभूतियों में एक उच्च कोटि का वरदान है। इसका उपयोग अधिक से अधिक ईमानदारी से होना चाहिए। **—अज्ञात**

बुद्धि की शुद्धि के लिए भगवान् की भक्ति से बढ़ कर कोई भी साधन आज तक अनुभव में नहीं आया। **—विनोबा**

बुद्धिश्रेष्ठानि कर्माणि बाहुमध्यानि भारत ।
तानि जङ्घाजघन्यानि भारप्रत्यवराणि च ॥

—वेदव्यास (महाभारत)

बुद्धि से विचार कर किये जाने वाले कार्य श्रेष्ठ होते हैं, केवल बाहुबल के सहारे होने वाले मध्यम श्रेणी के। विचार और उत्साहरहित केवल पैरों के भरोसे होने वाले कार्य निकृष्ट होते हैं जो केवल भाररूप हैं।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये ।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता १८-३०)

प्रवृत्ति-निवृत्ति, कार्य-अकार्य, भय-अभय तथा बन्ध-मोक्ष का भेद जो बुद्धि उचित रीति से जानती है, वह सात्त्विक है।

सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थों को समझने की ज्ञान-शक्ति का नाम 'बुद्धि' है। बुद्धि अन्तःकरण की शक्ति है। विचार-शक्ति को भी बुद्धि कहते हैं। कर्त्तव्य अकर्तव्य भले-बुरे, लाभ-हानि आदि का निर्णय और निश्चय करने वाली वृत्ति को भी बुद्धि कहते हैं।

बुद्धिविवेचनारूपा सा ज्ञान जननी श्रुती।

—ब्रह्म वै० प्रकृतिरव० २३

जो विवेचना रूपा है और ज्ञान की जननी है उसे श्रुति ने 'बुद्धि' कहा है।

…दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

बुद्धिमान्

बुद्धिमान् विवेक से, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से सीखते हैं। **—सिसरो**

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः॥

—माघ (शिशुपाल-वध २।७९)

मूर्ख लोग छोटा-सा कार्य आरम्भ करते हैं और उसी में अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं, बुद्धिमान् लोग बड़े से बड़ा कार्य आरम्भ करते हैं और निश्चिन्त बने रहते हैं। (अर्थात् सफलता प्राप्त कर ही लेते हैं।)

बुद्धेर्बुद्धिमतां लोके नास्त्यगम्यं हि किंचन।
बुद्ध्या यतो हता नन्दाश्चाणक्येनासिपाणयः॥ **—पंचतंत्र**

बुद्धिमानों की बुद्धि के सम्मुख संसार में कुछ भी असाध्य नहीं है। बुद्धि से ही शस्त्रहीन चाणक्य ने सशस्त्र नंद वंश का नाश कर डाला।

बुध नहिं करहिं अधम कर संगा॥ **—तुलसी (मानस, उत्तर०)**

बुद्धिमान् के पास थोड़ा-सा धन हो तो वह भी बढ़ता रहता है वह दक्षतापूर्वक काम करते हुए संयम के द्वारा सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है।

—वेदव्यास (महाभारत)

दीर्घौ बुद्धिमतो बाहू याभ्यां दूरे हिनस्ति सः। **—पंचतंत्र**

बुद्धिमान् की भुजाएँ बड़ी लम्बी होती हैं, जिनसे वह दूर तक वार करता है।

A wise man's day is worth a fool's life.

बुद्धिमान् मनुष्य का एक दिन मूर्ख के जीवन भर के बराबर होता है।

—कहावत

खाली पेट कोई भी आदमी बुद्धिमान् नहीं हो सकता। **—जार्ज इलियट**

The intellect of the wise is like glass; it admits the light of heaven and reflects it. **—Hare**

बुद्धिमान् की बुद्धि दर्पण के सदृश है। वह स्वर्ग का प्रकाश लेकर उसे परावर्तित कर देती है। **—हेयर**

इह तुरगशतैः प्रयान्ति मूढ़ा धनरहितास्तु बुधाः प्रयान्ति पदभ्याम्।
गिरिशिखरगतापि काकपंक्तिः पुलिनगतैर्न समत्वमेति हंसैः॥

सैकड़ों घोड़ों पर चलने वाले मूर्ख लोग पैदल चलने वाले धनरहित बुद्धिमानों की बराबरी नहीं कर सकते; क्योंकि पर्वत के शिखर पर निवास करने वाले कौए नदी के तट पर विहार करने वाले हंसों की बराबरी नहीं कर सकते। **—अज्ञात**

बुद्धिमान् अपना विचार बदल देते हैं, मूर्ख कभी नहीं बदलते। **—कहावत**

Wise men learn by other men's mistakes; fools by their own.

बुद्धिमान् दूसरों की त्रुटियों से शिक्षा लेते हैं, मूर्ख अपनी त्रुटियों से।

—कहावत

बुद्धिमत्ता

अच्छी तरह सोचना बुद्धिमत्ता है, अच्छी योजना बनाना उत्तम है और अच्छी तरह काम को पूरा करना सबसे अच्छी बुद्धिमत्ता है। **—फारसी कहावत**

बुराई

इस विश्व में बुराई भी अपना अस्तित्व चाहती है। **—जयशंकर प्रसाद**

जब तक मनुष्य रहेंगे तब तक बुराई रहेगी। **—टेसीटस**

One sin doth provoke another. **—Shakespeare**

एक बुराई दूसरी बुराई को जन्म देती है। **—शेक्सपियर**

Let thy vices die before thee. —**Franklin**

अपनी बुराई को अपने पहले ही मर जाने दो। —**फ्रैंकलिन**

The evil that men do lives after them; the good is oft interred with their bones. —**Shakespeare**

मनुष्य की बुराइयां उसके मरने के पीछे तक कलंकित रहती हैं। भलाइयों को तो लोग मरते ही भूल जाते हैं। —**शेक्सपियर**

बुराई आदमी को पहले अज्ञानी व्यक्ति के समान मिलती है और हाथ बांध कर नौकर की तरह उसके सामने खड़ी हो जाती है। फिर मित्र बन जाती है और निकट आ जाती है, फिर मालिक बनती है और आदमी के सिर पर सवार हो जाती है एवं उसको सदा के लिए दास बना लेती है। —**सुदर्शन**

बुराई के बीज चाहे गुप्त से गुप्त स्थान में बोओ, वह स्थान किले की तरह चाहे सुरक्षित ही क्यों न हो, पर प्रकृति के अत्यन्त कठोर, निर्दय, अमोघ, अपरिहार्य कानून के अनुसार तुम्हें ब्याज सहित कर्मों का मूल्य चुकाना होगा।

—**स्वामी रामतीर्थ**

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ सा बुरा न कोय॥ —**कबीर**

Vice lives and thrives best by concealment. —**Vergil**

बुराइयाँ गुप्त रह कर जीवित रहती हैं और अच्छी तरह पनपती हैं।

—**वर्जिल**

बुरी बातों को भूल जाना चाहिए, बुरी बातों को ही देखते रहेंगे तो इन्सान हैवान बन जायगा। —**विनोबा**

बेईमानी

बेईमानी का प्रत्येक व्यवहार डंडी मारने से कम नहीं है। —**रस्किन**

बेकार

कभी न मारो किसी जीव को समझ उसे बेकार।
नहीं सुई का काम कभी भी कर सकती तलवार॥
—**विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'** (**सुनो कहानी, गाओ गीत**)

बेवकूफ

जो अपने को बुद्धिमान समझता है वह बड़ा बेवकूफ है। —वाल्टेयर

Fools rush in where angels fear to tread. **—Pope**

जहाँ देवता भी पैर रखते हुए भय खाते हैं वहाँ बेवकूफ पिल पड़ते हैं।
—पोप

A learned fool is more foolish than an ignorant fool.
—Moliere

शिक्षित मूर्ख, अशिक्षित की अपेक्षा अधिक बेवकूफ होता है। **—मोलियर**

दुनिया में बेवकूफों की कमी नहीं, गालिब, एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं।
—गालिब

A fool always finds some greater fool to admire him.
—Boileau

बेवकूफ को उससे बड़ा बेवकूफ उसकी प्रशंसा करने वाला मिल जाता है।
—वाइलो

बैर

बैर के कारण उत्पन्न होने वाली आग एक पक्ष को स्वाहा किये बिना कभी शान्त नहीं होती। **—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

जब किसी से बैर बँध जाय तो उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर विश्वास नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से बैर दूर नहीं होता बल्कि विश्वास करने वाला ही मारा जाता है। **—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

जैसे मिट्टी का घड़ा एक बार फूट जाने पर नहीं जुड़ता वैसे ही जब किसी कुल में दुःखदायी बैर बँध जाता है तो वह शान्त नहीं होता। उसे याद दिलाने वाले बने ही रहते हैं, इसलिए जब तक कुल में एक भी व्यक्ति बना रहता है खुन्स नहीं मिटती। **—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

बैर का अन्त बैरी के जीवन के साथ हो जाता है। **—प्रेमचन्द**

ब्रह्म (दे० 'ईश्वर', 'परमेश्वर')

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म । —तैत्तिरीय उपनिषद्

ब्रह्म सत्यस्वरूप, ज्ञानस्वरूप एवं अनंत है ।

सर्वं खल्विद ब्रह्म ।

निश्चय ही यह सब कुछ ब्रह्म है ।

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान न विभेति कुतश्चनेति ।

—तैत्तिरीय उप० ब्रह्म०

ब्रह्म आनन्दमय है आनन्द रूप ब्रह्म को जान लेनेवाला कभी किसी प्रकार के दु:खों से भयभीत नहीं होता ।

ब्रह्मैवेदं सर्वम् । ब्रह्म ही यह सब है । —नृसिंह ता० उपनिषद्

आकाशो वै नाम नामरूपयोर्निर्वहिता ते यदन्तरा तद् ब्रह्म ।

—छान्दोग्य उपनिषद्

निश्चयपूर्वक आकाश ही नाम और रूप का निर्वाह करने वाला अर्थात् उनका आधार है, वे दोनों जिसके भीतर हैं, वह ब्रह्म हैं ।

कं ब्रह्म खं ब्रह्म । सुख ब्रह्म है, आकाश ब्रह्म है । —छान्दोग्य उपनिषद्

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व । —तैत्तिरीय उपनिषद्

जिससे ये सम्पूर्ण प्राणी जन्म लेते, जन्म लेकर जिससे जीवन धारण करते तथा प्रलय के समय जिसमें पूर्णतः प्रवेश कर जाते हैं वह ब्रह्म है, उसको जानने की इच्छा करो ।

जिसका मन के द्वारा मनन नहीं होता, किंतु जिसकी शक्ति से ही मन मनन व्यापार में सफल होता है, उसी को तुम ब्रह्म जानो । —केनोपनिषद्

ब्रह्म ही सत्य है, वह एक अद्वय, अपरिणामी, चिद्घन है···ब्रह्म ही ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय है । —सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

यह सब कुछ अमृतमय ब्रह्म ही है । आगे ब्रह्म है पीछे ब्रह्म है, तथा दायें और बायें भी ब्रह्म है । —मुण्डकोपनिषद्

यथा सुदीप्तात् पावकाद् विस्फुल्लिंगाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः ।
तथा क्षराद् विविधाः सोम्य भावाः प्रजायन्ते यत्र चैवापि यन्ति ॥

—मुण्डकोपनिषद्

जैसे जलती हुई आग से उसी के समान रूप वाली सहस्रों चिनगारियाँ निकलती हैं, उसी प्रकार अविनाशी ब्रह्म से नाना प्रकार के भाव (जीव) उत्पन्न होते और उसी में लीन होते रहते हैं ।

यह सारी प्रजा सत्‌रूपी कारण से उत्पन्न हुई है, सत् में ही निवास करती है और अंत में भी सत् में ही प्रतिष्ठित होती है । **—छान्दोग्य उपनिषद्**

जिसका नेत्रों द्वारा दर्शन तथा हाथों द्वारा ग्रहण नहीं हो सकता, जिसमें कोई रंग नहीं है, जो आँख-कान और हाथ-पैर आदि से रहित है, उस नित्य, सर्वगत, अत्यन्त सूक्ष्म एवं अविनाशी ब्रह्म को धीर पुरुष ही सब ओर देखते हैं ।

—मुण्डकोपनिषद्

जैसे मकड़ी अपने शरीर से ही जाले को बनाती और पुनः उसे निगल लेती है, जैसे पृथ्वी से अन्न आदि औषधियाँ उत्पन्न होती हैं, जैसे जीवित पुरुष से ही केश लोम आदि उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार अक्षर ब्रह्म से ही सम्पूर्ण जगत् प्रकट होता है । **—मुण्डकोपनिषद्**

हवन की सामग्री भी ब्रह्म है, घी भी ब्रह्म है, अग्नि भी ब्रह्म है, हवन करने वाला भी ब्रह्म है । इस प्रकार जो कर्म के साथ ब्रह्म का मेल साध लेता है वह ब्रह्म को ही पाता है । **—गीता ४।२४**

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत । **—अथर्ववेद**

ब्रह्मचर्य रूपी तपोबल से ही विद्वान लोगों ने मृत्यु को जीता है ।

ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म की, सत्य की, शोध में चर्या, अर्थात् तत्सम्बन्धी आचार ।

—महात्मा गांधी

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति । **—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)**

परमात्मा की प्राप्ति के इच्छुक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं ।

ऊँचा आदर्श सामने रखना और उसके लिए संयमी जीवन का आचरण; यही ब्रह्मचर्य है। —**विनोबा**

मन, वाणी और शरीर से सम्पूर्ण संयम में रहने का नाम ही ब्रह्मचर्य है। —**स्वामी महावीर**

ब्रह्मचर्य का अर्थ है मन, वचन और काया से समस्त इन्द्रियों का संयम··· जब तक अपने विचारों पर इतना कब्जा न हो जाय कि अपनी इच्छा के बिना एक भी विचार न आये तब तक वह सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य नहीं। —**महात्मा गांधी**

विषय-मात्र का निरोध ही ब्रह्मचर्य है। —**महात्मा गांधी**

ब्रह्मचर्य के तप से ही राजा अपने राष्ट्र की रक्षा में समर्थ होता है। —**अथर्ववेद**

ब्रह्मचारी

ब्रह्मचारी रहने का यह अर्थ नहीं कि मैं किसी स्त्री को स्पर्श न करूँ, अपनी बहिन का स्पर्श न करूँ। ब्रह्मचारी होने का यह अर्थ है कि स्त्री का स्पर्श करने से किसी प्रकार का विकार न उत्पन्न हो, जिस तरह कि कागज को स्पर्श करने से नहीं होता। —**महात्मा गांधी**

ब्रह्मचारी को कभी दुःख नहीं प्राप्त होता, उसको सब कुछ प्राप्य है। —**भीष्म पितामह**

ब्रह्मचारी स्वाभाविक सन्यासी होता है। —**महात्मा गांधी**

ब्रह्म-ज्ञान

ब्रह्म-ज्ञान मूक ज्ञान है, स्वयं प्रकाश है। सूर्य को अपना प्रकाश मुँह से नहीं बताना पड़ता। वह है, यह हमें दिखाई देता है। यही बात ब्रह्म-ज्ञान के बारे में भी है। —**महात्मा गांधी**

आतम अनुभव ज्ञान की, जो कोइ पूछै बात।
सो गूंगा गुड़ खाइ के, कहै कौन मुख स्वाद॥ —**कबीर**

ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त हो जाने पर मनुष्य शीघ्र ही परमानन्द का अधिकारी होता है। —**भगवान् श्रीकृष्ण**

ब्रह्म-निर्वाण

जिसको आन्तरिक आनन्द है, जिसके हृदय में शान्ति है, जिसे अवश्य अन्तर्ज्ञान हुआ है वह ब्रह्मरूप हुआ योगी ब्रह्मनिर्वाण पाता है। **—गीता ५-२४**

ब्रह्म-विद्या

जो सर्वसमर्थ है, सर्वश्रेष्ठ है, सर्वव्यापी है और सर्वेश्वर है उसे ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्म को पाने की विद्या, ब्रह्ममय हो जाने की विद्या ब्रह्म कर्म करने की विद्या, ब्रह्म-निर्वाण, ब्रह्मयोग और ब्राह्मी स्थिति में स्थित होने की विद्या के सम्यक योगशास्त्र की अक्षय निधि गीता में मिलती है; इसलिए गीता को ब्रह्मविद्या का योगशास्त्र कहते हैं। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

ब्राह्मण

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।
अमृतस्येव चाकांक्षेदवमानस्य सर्वदा॥ **—भगवान् मनु**

ब्राह्मण को चाहिए कि सम्मान से विष के समान बचे और अपमान की अमृत के समान इच्छा करे।

ब्राह्मण के माने हैं साहस की साक्षात् प्रतिमा। **—विनोबा**

जो जाति विश्व के मस्तिष्क का शासन करने का अधिकार लिये उत्पन्न हुई है वह कभी चरणों के नीचे न बैठेगी। **—जयशंकर प्रसाद**

सच्चा ब्राह्मण वही है जो कभी किसी का अनुपकार नहीं करता, झूठ नहीं बोलता, गर्व नहीं करता। **—अज्ञात**

भक्त

जिनका मैं एकमात्र परम आश्रय हूँ, उन साधुस्वभाव भक्तों को छोड़कर मैं तो न अपने आपको चाहता हूँ और न अपनी हृदयङ्गमा अविनाशिनी लक्ष्मी को। **—भगवान् विष्णु (श्रीमद्भागवत)**

भक्त वही है जिसका अन्तःकरण समस्त पाप-तापों से रहित होकर अपने इष्टदेव परमात्मा का नित्य-निकेतन बन गया है।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार, भाई जी (आनन्द की लहरें)

जिसके मन में कभी क्रोध नहीं होता और जिसके हृदय में रात-दिन राम बसते हैं वह भक्त भगवान् के समान ही है। —**रैदास**

राम तें अधिक राम कर दासा। —**तुलसी**

सच्चे ईश्वरभक्त की भक्ति किसी भी लोक-परलोक की कामना के लिए नहीं होती, वह तो अहैतुकी हुआ करती है। —**रबिया**

जहाँ भगवान् हैं और जहाँ भक्त हैं वहाँ सब कुछ है, लेकिन भगवान् को तो हमने देखा नहीं, भक्त को हम देख सकते हैं इसलिए हमारी निगाह में भक्त की महिमा बढ़ जाती है। —**विनोबा**

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्‌भक्तः स मे प्रियः॥

—**भगवान श्रीकृष्ण गीता १२-१६**

जो इच्छारहित है, पवित्र है, दक्ष (सावधान) है, तटस्थ है, चिन्तारहित है, संकल्प मात्र का जिसने त्याग किया है ऐसा जो मेरा भक्त है वह मुझे प्रिय है।

जल ज्यों प्यारा माछरी, लोभी प्यारा दाम।
माता प्यारा बालका, भक्त पियारा नाम॥ —**कबीर**

भक्त की वृत्ति बौने के समान न होकर नन्हें शिशु के समान होती है। वह पिता के वात्सल्य का अधिकारी है। पिता बालक को गोद या कन्धे पर उठाकर चलने में स्वयं आनन्दित होता है।

—**पं० राम किंकर उपाध्याय (मानस-मुक्तावली)**

भगतिवंत अति नीचउ प्रानी।
मोहि प्रान प्रिय असि मम वानी॥

—**तुलसी (रा० च० मा० उ० ८५/१०)**

भक्ति

ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण अनुराग ही भक्ति है। —**भक्तिदर्शन**

जब लग नाता जगत का, तब लग भक्ति न होय।
नाता तोड़े हरि भजै, भक्त कहावै सोय॥ —**कबीर**

मानव मात्र को एक करने के लिए भगवान् की भक्ति से बढ़कर कोई साधन नहीं। —विनोबा

कामी क्रोधी लालची, इनतें भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय॥ —कबीर

अधिकार के कारण जो श्रद्धा-भक्ति होती है वह सच्ची श्रद्धा-भक्ति नहीं है। —इमर्सन

जैसे समुद्र में आकर सारी नदियाँ एक हो जाती हैं, सब काष्ठ अग्नि में जल कर एक हो जाते हैं, वैसे ही सब हृदय भगवान् की भक्ति में विलीन होकर एकरूप हो जाते हैं। —विनोबा

भक्ति अपने सुख के लिए हुआ करती है, दुनिया को दिखलाने के लिये नहीं ; जहाँ दिखलाने का भाव है वहाँ कृत्रिमता है। —हनुमान प्रसाद पोद्दार भाई जी

भक्ति से सुख और दुःख में एक रस रहने की शक्ति मिलती है। भक्ति से हृदय शान्त हो जाता है, मन को विश्राम मिलता है, बुद्धि का बल बढ़ता है और अन्तःकरण का मैल धुल जाता है। —दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

भक्ति के लिये अनुशासन और कर्त्तव्य-पालन पहली आवश्यकताएँ हैं। —सत्य साईं बाबा

भक्ति-धर्म अमृत रूप है। भक्ति की धारा अमृत की गंगा है। इसमें गोता लगाते ही पाप धुल जाते हैं। श्रद्धापूर्वक इस अमृत का आचमन करने वाला राग, रोग, जरा और मृत्यु से छूट जाता है। —दीनानाथ दिनेश (गीता-ज्ञान)

भक्ति एक क्षुद्र जीव को भी बहुमूल्य रत्न में परिवर्तित कर देती है। —सत्य साईं बाबा

परमात्मा की भक्ति के सिवा कोई दूसरी पावन वस्तु नहीं जो हृदयों को धो सकती है और सबको एक बना सकती है। —विनोबा

भक्ति और श्रद्धा दो पतवारें हैं जिससे तुम अपनी नाव खेकर संसार सागर के पार ले जा सकते हो। —सत्य साईं बाबा

भगवान

भगवान् तुम्हारे सामने है। संसार से पीठ मोड़ो वह तुम्हें अपने सामने खड़ा दिखाई देगा। —सत्य साईं बाबा

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः ।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा ।।

—विष्णुपुराण (६-५-७४)

सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्ण यश, सम्पूर्ण श्री, सम्पूर्ण ज्ञान और सम्पूर्ण वैराग्य इन छहों का नाम 'भग' है । ये सब जिसमें हों, उसे भगवान कहते हैं ।

भजन

भजन का फल अनंत है, महान् है, उसे वाणी द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता । **—वेदव्यास (महाभारत)**

भजन मन, बचन और तन—तीनों से ही करना चाहिये । भगवान् का चिन्तन मन का भजन है, नाम-गुण-गान वचन का भजन है और भगवद्भाव से की हुई जीव सेवा तन का भजन है । **—हनुमान प्रसाद पोद्दार भाई जी**

भय (दे० 'डर')

भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है । **—स्वामी विवेकानन्द**

मनुष्य का भय और आशा खरगोश के सींग के समान हैं । **—क०मा० मुंशी**

भय ते भक्ति सबै करैं, भय ते पूजा होय ।
भय पारस है जीव को, निर्भय होय न कोय ।। **—कबीर**

यथा फलानां पक्वानां नान्यत्र पतनाद् भयम् ।
एवं नरस्य जातस्य नान्यत्र मरणाद् भयम् ।। **—वाल्मीकि**

जैसे पके हुए फलों को गिरने के अतिरिक्त दूसरा कोई भय नहीं है, उसी प्रकार पैदा हुए मनुष्य को मृत्यु के सिवा अन्यत्र भय नहीं है ।

भय बिनु भाव न ऊपजै, भय बिनु होय न प्रीति ।
जब हिरदे ते भय गया, मिटी सकल रस रीति ।। **—कबीर**

भय से ही दुःख आते हैं, भय से ही मृत्यु होती है और भय से ही बुराइयां उत्पन्न होती हैं । **—स्वामी विवेकानन्द**

Fear is the tax that conscience pays to guilt. **—Sewell**

भय वह कर है जिसे अन्तःकरण अपराध को देता है । **—सिवेल**

भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद् भयं
माने दैन्यभयं बले रिपुभयं रूपे जराया भयम् ।
शास्त्रे वादभयं गुणे खलभयं काये कृतान्ताद् भयं
सर्वं वस्तु भयावहं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम् ॥ **—भर्तृहरि**

भोगों में रोग का भय है, ऊँचे कुल में पतन का भय है, धन में राजा का, मान में दीनता का, बल में शत्रु का तथा रूप में वृद्धावस्था का भय है और शास्त्र में वादविवाद का, गुण में दुष्ट जनों का तथा शरीर में काल का भय है। इस प्रकार संसार में मनुष्यों के लिए सभी वस्तुएँ भयपूर्ण हैं, भय से रहित तो केवल वैराग्य ही है।

भय और बैर से मुक्ति पाना हो तो अहिंसा या प्रेम का मार्ग अपनाना होगा, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग हो नहीं सकता। **—भगवान् महावीर**

जिस मनुष्य को अपने मनुष्यत्व का भान है वह ईश्वर के सिवा और किसी से भय नहीं करता। **—महात्मा गांधी**

मूर्ख मनुष्य भय से पहले ही डर जाता है, कायर भय के समय ही डरता है और साहसी भय के बाद डरता है। **—रिशर**

सचिव, बैद, गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज, धर्म, तन तीनि का, होइ बेगि ही नास ॥

—तुलसी (मानस, सुन्दर०)

Fear is more painful to cowardice than death to true courage. **—Sir P. Sidney**

सच्ची वीरता को मृत्यु से जितना कष्ट नहीं होता उससे कहीं अधिक कष्ट बुजदिली को भय से होता है। **—सर० पी० सिडनी**

भय से उत्पन्न दुर्वृत्तियाँ सब प्रकार के पुरुषार्थ को नष्ट कर देती हैं।

—अज्ञात

Fear is the mother of foresight. **—H Taylor**

भय दूरदर्शिता की जननी है। **—एच० टेलर**

जीवन में होकर, शून्य ध्यान द्वारा, परमात्मा की साधना करो, मौत का भय छूट जायगा। **—अज्ञात**

भीतवत्संविधातव्यं यावद् भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमभीतवत् ।। **—अज्ञात**

जब तक भय का कारण आ न पहुँचे तब तक उससे डरते रह कर बचने का उपाय करते रहना चाहिए ; किन्तु जब वह सिर पर आ ही पहुँचे तो उसे निडर होकर मार भगाना चाहिए ।

भभूत

महात्माओं की भभूत जहाँ झड़ जाती है, वहीं बैकुंठ बस जाता है ।
—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

भलाई

He that does good to another, does also good to himself not only in the consequence, but in the very act of doing it; for the consciousness of welldoing is an ample reward. **—Seneca**

जो दूसरों की भलाई करता है वह अपनी भलाई स्वयं कर लेता है। परिणाम में नहीं वरन् कर्म करने में ही, क्योंकि सुकर्म का भाव ही एक यथेष्ट पारितोषिक है ।
—सेनेका

निकोई वा बंदा करदन चुनानस्त ।
कि बद करदन बजाए नैक मरदां ।। **—सादी**

दुर्जनों के साथ भलाई करना सज्जनों के साथ बुराई करने के समान है ।

He who loves goodness harbours angels, revers reverence, and lives with God. **—Emerson**

जो भलाई से प्रेम करता है वह देवताओं की पूजा करता है, आदरणीयों का सम्मान करता है और ईश्वर के समीप रहता है । **—इमर्सन**

भलाई का मार्ग भय से पूर्ण है, परन्तु परिणाम अत्युत्तम है । **—सुदर्शन**

In nothing do men approach so nearly to the gods as in doing good to men. **—Cicero**

मानव की भलाई करने के अतिरिक्त और अन्य किसी कर्म द्वारा मनुष्य ईश्वर के इतने निकट नहीं पहुँच सकता । **—सिसरो**

जैसे एक छोटे दीपक का प्रकाश बहुत दूर तक फैलता है, उसी प्रकार इस बुरे संसार में भलाई बहुत दूर तक चमकती है। —**शेक्सपियर**

जो भलाई करने में अति लीन है, उसको भला होने का समय नहीं मिलता।
—**रवीन्द्र**

To be doing good is man's most glorious task. —**Sophocles**

भलाई करना मानव का सबसे शानदार कर्तव्य है। —**सफोक्लीज**

जो तोकों काँटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहिं फूल को फूल है, वाको है तिरसूल।। —**कबीर**

पुष्प की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती परन्तु मानव के सद्गुण की महक सब तरफ फैल जाती है। —**गौतम बुद्ध**

Good, the more communicated, more abundant grows.
—**Milton**

भलाई जितनी अधिक की जाती है उतनी ही अधिक फैलती है। —**मिल्टन**

भलाई रह जाती है, इसके अतिरिक्त सब वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं।
—**कहावत**

भलाई बुराई का अभाव नहीं वरन् उस पर विजय है। —**सर अर्नेस्ट बोर्न**

भवितव्यता

तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय।। —**तुलसी**

भविष्य

Trust no future however pleasant;
Let the dead past bury its dead.
—**Longfellow**

भविष्य कैसा ही सुखमय हो उस पर विश्वास न करो और भूतकाल की बीती बातों को भूल जाओ। —**लांगफेलो**

Age and sorrow have the gift of reading the future by the past. **—Farrar**

भूतकाल के ज्ञान और कष्ट के आधार पर भविष्य जाना जा सकता है। **—फरार**

भविष्य-फल

प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह कितना ही सुख-सुविधा सम्पन्न हो, अपना भविष्य फल जानने की उत्कट इच्छा रहती है, क्योंकि मानव मन सदैव अप्राप्य और अगोचर के लिए उत्कण्ठित रहता है।

—डा० नारायणदत्त श्रीमाली (भारतीय ज्योतिष)

मानव का भावी जीवन व जीवन की घटनाएं भविष्य के गर्भ में निहित रहती हैं अतएव उसकी भविष्य जानने की इच्छा बलवती रहनी स्वाभाविक है।

—डा० नारायणदत्त श्रीमाली (भारतीय ज्योतिष)

भाई-भाई

वयस्कृत तव जामयो वयम्। **—ऋग्वेद**

एक ही पिता के पुत्र सब मनुष्य भाई भाई हैं।

भांडार

भांडार—गृहिणी के राज्य की वही तो राजधानी है।

—शरत चन्द्र (गृहदाह)

भाग्य (दे० 'तकदीर')

मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं ही विधाता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।
समुद्रमंथनाल्लेभे हरिर्लक्ष्मीं हरो विषम्॥ **—अज्ञात**

भाग्य ही सर्वत्र फलता है, विद्या और पौरुष नहीं। तभी तो समुद्र का मन्थन होने पर विष्णु ने लक्ष्मी को प्राप्त किया और शंकर ने विष को।

The wheel of fortune turns round incessantly and who can say to himself; I shall to-day be uppermost. **—Confucius**

भाग्यचक्र निरन्तर घूमा करता है, कौन कह सकता है कि आज मैं उच्च शिखर पर पहुँच जाऊँगा। **—कन्फ्यूशियस**

भाग्य बालू के कण को सूर्य और बूँद को नदी बना देता है। **—अज्ञात**

भाग्य बिगड़ने पर सगे भी पराये हो जाते हैं। अन्धकार में छाया भी साथ छोड़ देती है। **—लक्ष्मी नारायण मिश्र**

भाग्य साहसी मनुष्य की सहायता करता है। **—वर्जिल**

We make our fortune, and call that fate. **—Disraeli**

हम अपना ऐश्वर्य स्वयं बनाते हैं और उसको भाग्य कहते हैं। **—डिजरायली**

सहस बार डुबकी दई, मुक्ता लगी न हाथ।
सागर को क्या दोष है, बुरे हमारे भाग॥ **—अज्ञात**

Fortune makes him fool, whom she makes her darling.

—Bacon

किस्मत जिसे दुलार करती है उसे मूर्ख बना देती है। **—बेकन**

Human life is more governed by fortune than by reason.

—Hume

मानवजीवन बुद्धि की अपेक्षा भाग्य से अधिक शासित होता है। **—ह्यूम**

दाता के द्वार पर सभी भिक्षुक जाते हैं, अपना-अपना भाग्य है, किसी को एक चुटकी मिलती है, किसी को पूरा थाल। **—प्रेमचन्द**

Depend not on fortune, but on conduct.

—Publius Syrus

भाग्य पर नहीं, चरित्र पर निर्भर रहो। **—पब्लियस साइरस**

भाग्य के भरोसे बैठे रहने पर भाग्य सोया रहता है और हिम्मत बाँध कर खड़े होने पर भाग्य भी उठ खड़ा होता है। **—अज्ञात**

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ॥
वर्षा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्
यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः ॥

—भर्तृहरि

करील वृक्ष में यदि पत्ते नहीं हैं तो वसन्त का क्या दोष ? उल्लू यदि दिन में नहीं देख पाता तो सूर्य का क्या दोष ? वर्षा का जल यदि पपीहा के मुख में नहीं पड़ता तो मेघ का क्या दोष ? विधाता ने जो पहले ही भाग्य में लिख दिया है उसे कौन मिटा सकता है ?

सीमन्तिनी यस्य गृहेऽन्नपूर्णा त्रिलोकरक्षां कुरुतेऽन्नदानैः ।
भिक्षाचरः सोऽपि कपालपाणिर्ललाटलेखो न पुनः प्रयाति ॥

—अज्ञात

जिनके घर में गृहिणी अन्नपूर्णा हैं जो कि अन्न दान से तीनों लोकों की रक्षा करती हैं, वे शंकरजी भी हाथ में कपाल लेकर भिक्षा माँगते फिरते हैं। वस्तुतः भाग्य में लिखा हुआ नहीं मिटता।

मा धाव मा धाव विनैव दैवं नो धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः ।
चेद्धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः श्वा धावमानोऽपि लभेत लक्ष्मीम् ॥

—अज्ञात

भाग्य यदि साथ नहीं दे रहा है तो धन के लिए बहुत दौड़-धूप मचाना व्यर्थ है। भाग्य के बिना केवल दौड़-धूप से ही यदि लक्ष्मी की प्राप्ति होती तो बराबर दौड़ता रहने वाला कुत्ता भी धनी हो जाता।

कर्तव्योऽप्याश्रयः श्रेयान् फलं भाग्यानुसारतः ।
नीलकण्ठस्य कण्ठेऽपि वासुकिर्वायुभक्षकः ॥ —अज्ञात

महान् आश्रय लेने पर भी फल भाग्यानुसार ही मिलता है। तभी तो शंकरजी के कंठ में लिपटे रहने पर भी वासुकि को वायु पीकर ही जीवन-यापन करना पड़ता है।

भाग्य वेश्या ही तो है। —शेक्सपियर (हेमलेट)

It is fortune, not wisdom, that rules man's life. —**Cicero**

यह भाग्य है, ज्ञान नहीं जो मानवजीवन पर शासन करता है। —**सिसरो**

भाग्य-रेखा

सम्भव है कि सूर्य पश्चिम से उदय होने लगे, सम्भव है कि पर्वत चलने लगे, सम्भव है कि अग्नि का गुण उष्णता से शीतलता में परिवर्तित हो जाय, सम्भव है कमल पर्वतों पर खिलने लगें, परन्तु मनुष्य के भाग्य की रेखाओं में लेश मात्र भी परिवर्तन हो जाना असम्भव है। —अज्ञात

हँसि बोले रघुवंशकुमारा। विधि का लिखा को मेटनहारा॥ —तुलसी

भाग्यवान्

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो भिक्षान्नमात्रेण च तुष्टिमन्तः।
विशोकमन्तःकरणे रमन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः॥

वस्तुतः वेदान्त वाक्यों में रमने वाले, भिक्षान्न मात्र से संतोष लाभ करने वाले, कौपीन धारण करने वाले, निरुद्विग्नचित्त आत्माराम संत ही भाग्यवान् हैं।

वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान् है जिसकी कीर्ति उसकी सत्यता से अधिक प्रकाशमान नहीं है। —रवीन्द्र

सचमुच वे लोग भाग्यशाली हैं, जो दुःख में भी भगवान् को अपने पास समझते हैं। —भाई लारेंस

भारतवर्ष

If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth, power and beauty that nature can bestow, I should point to India.

If I were asked under what sky the human mind has most fully developed some of its choicest gifts, has most deeply pondered on the greatest problems of life and has found solutions of some of them, which well deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant, I should point to India.

And, if I were asked myself from what literature we have in Europe, we who are nurtured almost exclusively on the thoughts of the Greeks and Romans and of the Semetic race,

the Jewish, may draw that caricature which is most wanted in order to make our inner life more perfect, more universal, in fact, more truly human, a life not for this life only, but a transfigured and eternal life, again I should point to India.

—Maxmuller (In a letter to Queen Victoria in 1858)

यदि हम संपूर्ण विश्व की खोज करें; ऐसे देश का पता लगाने के लिए जिसे प्रकृति ने सर्वसम्पन्न, शक्तिशाली और सुन्दर बनाया है, तो मैं भारतवर्ष की ओर संकेत करूँगा।

यदि मुझसे पूछा जाय कि किस देश में मानव-मस्तिष्क ने अपने मुख्यतम गुणों का विकास किया, जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या पर सबसे अधिक गहराई के साथ सोच-विचार किया और उनमें से कुछ ऐसे समाधान ढूंढ़ निकाले, जिनकी ओर उन्हें भी ध्यान देना चाहिए जिन्होने प्लेटो और कान्ट का अध्ययन किया है, तो मैं भारतवर्ष की ओर संकेत करूँगा।

और यदि मैं अपने आपसे पूछूँ कि किस साहित्य का आश्रय लेकर हम यूरोपीय, जो कि बहुत कुछ केवल यूनानियों, रोमनों और एक सेमेटिक जाति के यानी यहूदियों के विचार के साथ-साथ पले हैं न केवल इस अपने आध्यात्मिक, जीवन को अधिकाधिक विकसित, अत्यन्त व्यापक उच्चतम मानवीय बना सकेंगे, —जो जीवन इस लोक से ही सम्बद्ध न हो अपितु शाश्वत एवं दिव्य हो, तो मैं फिर भारतवर्ष की ही ओर संकेत करूँगा।

—मैक्समूलर (सन् १८५८ में महारानी विक्टोरिया को भेजे गये एक पत्र से)

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोरण्यं ते पृथिवि स्योतमस्तु।

—अथर्व वेद १२-१-११

हे मातृभूमि! तेरी पहाड़ियाँ, तेरे हिम-धवल पर्वत, तेरे वन-उपवन हमारे लिए सुखमय हों।

हे मातृभूमि, तेरे जो प्रदेश हैं, वे रोग, क्षय और भय से रहित हों। हम दीर्घायु हों। हम सदा सजग रहें और जान हथेली पर लेकर तेरे लिए सर्वस्व त्यागने को प्रस्तुत रहें।

—अथर्ववेद (पृथ्वी सूक्त से)

भारतवर्ष केवल हिन्दू धर्म का ही घर नहीं है, वरन् वह संसार की सभ्यता का आदि भंडार है। **—काउंट जोन्स जेनी**

संसार, रेखागणित के लिए भारत का ऋणी है, यूनान का नहीं।**—डा० थीबो**

अरब में ज्योतिष विद्या का विकास भारतवर्ष से हुआ।

—प्रो० बेवर (इतिहासज्ञ)

भारतवर्ष ने चीन और अरब को ज्योतिष और अंकगणित सिखाया।

—कोलब्रुक

गोलों का आविष्कार सबसे पहले भारत में हुआ। यूरोप के संपर्क में आने से बहुत पहले ही उनका प्रयोग भारत में होता था। **—प्रोफेसर विलसन**

सीसे की गोलियों और बन्दूकों के प्रयोग का हाल विस्तार से यजुर्वेद में मिलता है। भारत में वैदिक काल में ही बन्दूक और तोपों का प्रचलन हो गया था।

—कर्नल रशब्रुक विलियम

भारतीय विज्ञान इतना विस्तृत है कि यूरोपीय विज्ञान के सब अंग वहाँ मिलते हैं। **—डफ**

पश्चिमी संसार को जिन बातों पर अभिमान है, वे असल में भारतवर्ष से ही वहाँ गयी हैं। और तो और तरह-तरह के फल-फूल, पेड़-पौधे जो इस समय यूरोप में पैदा होते हैं, हिन्दुस्तान से ही लाकर वहाँ लगाये गये थे। मलमल, रेशम, घोड़े, टीन इनके साथ-साथ लोहा और सीसे का प्रचार भी यूरोप में भारत से ही हुआ। केवल इतना ही नहीं, ज्योतिष वैद्यक, अंकगणित, चित्रकारी और कानून भी भारतवासियों ने ही यूरोप वालों को सिखलाया।

—मि० डेलभार, न्यूयार्क (इंडियन रिव्यू)

दर्शन, विज्ञान और सभ्यता संबंधी सारी बाते यूनान ने भारत से सीखीं और यहाँ (यूनान) से वे सारे संसार में फैलीं। अरब और यूरोप में जो ज्ञान का प्रकाश फैला वह भी भारत से ही। वर्तमान भूगोल, इतिहास और पुराने चिह्नों की खोज स्पष्टतया प्रकट करते हैं कि हिन्दुओं ने कला-कौशल और ज्ञान-विज्ञान का प्रचार पश्चिम के देशों में जाकर किया। **—यूरोप का प्राचीन इतिहास**

भारत के निवासी यहाँ (यूनान में) आकर बसे। वे बड़े बुद्धिमान्, विद्वान् और कला-कुशल थे। उन्होंने यहाँ विद्या और वैद्यक का प्रचार किया। यहाँ के निवासियों को सभ्य और अपना विश्वासपात्र बनाया।

—यूनान का प्राचीन इतिहास

जो लोग पूर्व (भारत) से आकर यूनान में बसे थे और जिन्होंने वहाँ के असभ्य निवासियों को अधीन किया था, वे कैसे थे ? वे देवताओं के वंशज थे, अपना निज का सोना उनके पास विपुल था। वे रेशम के कामदार ऊनी दुशाले ओढ़ते थे, हाथीदाँत की वस्तुएँ व्यवहार में लाते थे और बहुमूल्य रत्नों के हार पहनते थे।

—प्रसिद्ध यूनानी विद्वान् एरियन

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

—श्रीमद्भागवत

स्वर्ग के देवता भी यह गीत गाते हैं कि वे लोग धन्य हैं जो स्वर्ग और अपवर्ग को देने वाली भारतभूमि में देवताओं से फिर मनुष्य होकर निवास करते हैं।

भारत समग्र विश्व का है और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है, अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है, वसुन्धरा का हार भारत किस मूर्ख को प्यारा न होगा। **—जयशंकर प्रसाद**

हे प्राचीन भारतभूमि ! हे मानव-जाति की पालन करने वाली ! हे पूजनीया ! हे पोषणदात्री ! तुझे नमस्कार है। शताब्दियों से लगातार चलने वाले पाशविक अत्याचार आज तक तुझे नष्ट नहीं कर सके। तेरा स्वागत है ! हे श्रद्धा, प्रेम, कला और विज्ञान की जन्मदात्री ! तुझे नमस्कार है। **—एम० लुई जेकोलियट**

संसार में भारतवर्ष के प्रति लोगों का प्रेम और आदर उसकी बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक सम्पत्ति के कारण है। **—प्रो० लुई रिनाड**

भारत माता

भारत माता ! दिव्य तुम्हारी गौरव-गाथा।
स्वाभिमान से करती सबका उन्नत-माथा॥
चली आ रही आदि-सूर्य से कीर्ति-कहानी।
युग-युग से गा रहे सुयश कवि, कोविद, ज्ञानी॥

हिम-किरीट हिमवान शीश पर शोभित होता।
रत्न-राशि अर्पित कर रत्नाकर पग धोता॥
सुरसरि सुन्दर हृदय-हार बनकर लहराती।
विन्ध्य-मेखला परिकर पर सर्वदा सुहाती॥
वीर प्रसवनी माँ! त्रिलोक में तेज तुम्हारा।
है प्रदीप्त ज्यों अम्बर का अविचल ध्रुवतारा॥

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

अगर संसार में कोई एक देश है जहाँ जीवित मनुष्य के सभी सपनों को, उस प्राचीन काल से जगह मिली है जबसे कि मनुष्य ने अस्तित्व का सपना प्रारम्भ किया, तो वह भारत है। **—रोम्यां रोलां**

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा॥
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा॥
कुछ बात है जो हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा॥ **—डा० इकबाल**

भारतीय संस्कृति

When we read the poetical and philosophical monuments of the East, above all those of India, we discover there many truths, so profound and which make such a contrast with the results at which the European genius has sometimes stopped that we are constrained to bend the knee before the philosophy of the East. **—Victor Cousin**

जब हम पूर्व की और उसमें भी शिरोमणिस्वरूप भारत की साहित्यिक एवं दार्शनिक महान कृतियों का अवलोकन करते हैं, तब हमें ऐसे अनेक गंभीर सत्यों का पता चलता है, जिनकी उन निष्कर्षों से तुलना करने पर, जहाँ पहुँच कर यूरोपीय प्रतिभा कभी-कभी रुक गयी है, हमें पूर्व के तत्त्वज्ञान के आगे घुटना टेक देना पड़ता है। **—विक्टर कोसिन**

Even the loftiest philosophy of the Europeans appears in comparison with the abundant light of oriental idealism like a feeble promethean spark in full flood of the heavenly glory of the noonday sun—faltering and feeble and ever ready to be extinguished. **—Fredrich Schelling**

पूर्वीय आदर्शवाद के प्रचुर प्रकाशपुंज की तुलना में यूरोपवासियों का उच्चतम तत्त्वज्ञान ऐसा ही लगता है, जैसे मध्याह्न सूर्य के व्योमव्यापी प्रताप की पूर्ण प्रखरता में टिमटिमाती हुई अनलशिखा की कोई आदि किरण, जिसकी अस्थिर और निस्तेज ज्योति ऐसी हो रही हो मानो अब बुझी कि तब बुझी।

—फ्रेडरिक शेलिंग

भारतीय संस्कृति के प्रवाह का उद्गम वे चिरंतन, शाश्वत और सनातन सत्य रहे हैं जिनकी अनुभूति प्रतिभासम्पन्न आर्य जाति के ऋषियों ने अपने तप के द्वारा की थी। **—अज्ञात**

भारतीय संस्कृति की चमक आज के ऐटम युग में भी हम गाँधीजी के व्यक्तित्व में देख सकते हैं। यह वही चमक है जिसने शताब्दियों पूर्व भगवान् बुद्ध के व्यक्तित्व में विकास पाकर समूचे संसार को प्रतिभासित किया था।

—अज्ञात

भार्या (दे० 'स्त्री', 'सुभार्या')

पुरुष की सर्वोत्तम सम्पत्ति उसकी भार्या है। **—वेदव्यास (शांतिपर्व)**

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्॥ **—पंचतंत्र**

जिसके घर में माता न हो और भार्या अप्रियभाषिणी हो उसे वनवासी हो जाना चाहिए, क्योंकि उसके लिए वन और घर बराबर हैं।

'यत्र भार्या गृहं तत्र।' जहाँ स्त्री है, वहीं घर है। **—अज्ञात**

भाव

मित्रता और शत्रुता के भाव तो बादलों के समान क्षण-क्षण पर बदलते रहते हैं। **—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

जहाँ भावों का सम्बन्ध है वहाँ तर्क और न्याय से काम नहीं चलता।

—प्रेमचन्द

भाव की एकाग्रता अंतश्चेतना का वह द्वार खोलती है जिसमें सत्य सार्थक होकर बसता है। **—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)**

वृद्धावस्था में मौन भाव प्रौढ़ता के द्योतक होते हैं और युवावस्था में भाव दरिद्रय का। **—प्रेमचन्द (रंगभूमि)**

भावी

भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। **—कालिदास**

भावी को सर्वत्र द्वार खुला मिलता है।

भावना

कोई वस्तु भली या बुरी स्वयं नहीं होती, समझने से हो जाती है।

—शेक्सपियर (हेमलेट)

जहाँ भावों का सम्बन्ध है वहाँ तर्क और न्याय से काम नहीं चलता।

—प्रेमचन्द

काम से ज्यादा काम के पीछे की भावना का महत्व होता है। जो काम शुद्ध हृदय से होता है, देखने में छोटा भले ही हो परन्तु उसका फल बड़ा ही महत्वपूर्ण होता है। बड़े से बड़ा काम अगर हीन आदर्श लेकर किया जाय तो उसकी कोई बड़ी कीमत नहीं हो सकती। **—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद**

भावना से कर्तव्य ऊँचा है। **—अज्ञात**

भावना में बह जाना स्त्री के लिये बड़ा आसान है।

—भगवतीचरण वर्मा (टेढ़े मेढ़े रास्ते)

मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥ **—पंचतंत्र**

मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, औषध और गुरु में जैसी भावना होती है वैसी ही सिद्धि मिलती है।

भावना ही मनुष्य का जीवन है, भावना ही प्राकृतिक है, भावना ही सत्य है और नित्य है। भावनाओं के मामले में मनुष्य विवश है।

—भगवती चरण वर्मा

जहाँ जैसी हमारी मानसिक भावना रहती है वहाँ परमेश्वर हमारे लिए उसी रूप में प्रकट हो जाते हैं। **—विनोबा**

Fancy rules over two-thirds of the universe, the past and future, while reality is confined to the present. **—Ritcher**

भावना दो-तिहाई विश्व पर शासन करती है—भूत और भविष्य पर, जब कि यथार्थता वर्तमान पर सीमित है। **—रिचर**

भावना सौन्दर्य से भी बढ़ कर है। **—कहावत**

जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी॥ **—तुलसी**

Fancy may kill or cure.

भावना मार भी सकती है, जिला भी सकती है। **—कहावत**

भाषण (दे० 'तकरीर', 'व्याख्यान')

भाषण शक्ति है, भाषण कायल करने के लिए, मत बदलने के लिए और बाध्य करने के लिए हो। **—एमर्सन**

भाषण मानव के मस्तिष्क पर शासन करने की कला है। **—प्लेटो**

देखना तकरीर की लज्जत कि उसने जो कहा।
मैंने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में है॥ **—गालिब**

भाषण चाँदी है, मौन सोना है, भाषण मानवीय एवं मौन दैविक है।

—जर्मन कहावत

भाषण मस्तिष्क का दर्पण है। **—सेनेका**

भाषा

हमारी भाषा हमारा अपना प्रतिबिम्ब है। **—महात्मा गांधी**

विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने की पद्धति से अपार हानि होती है।

—महात्मा गांधी

भाषा विचार की पोशाक है। —डा० जानसन

देशी भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्महत्या है। —महात्मा गांधी

किसी भी भाषा का शुद्ध रूप देश, काल तथा बहुमत से सीमित है।

—अज्ञात

परायी भाषा के साहित्य से ही आनन्द लेने की आदत चोरी के माल से आनन्द लूटने की चोर आदत जैसी है। —महात्मा गांधी

जब भाषा का शरीर दुरुस्त, उसकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म नाड़ियाँ तैयार हो जाती हैं, नसों में रक्त का प्रवाह और हृदय में जीवन स्पन्द पैदा हो जाता है, तब वह जीवन यौवन के पुष्प–पत्रसंकुल बसन्त में नवीन कल्पनाएँ करता हुआ नयी-नयी सृष्टि करता है। —निराला

माँ के दूध के साथ जो संस्कार मिलते हैं और जो मीठे शब्द सुनाई देते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए वह विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा लेने से टूट जाता है। जिसे तोड़ने का हेतु पवित्र हो तो भी वे जनता के दुश्मन हैं। —महात्मा गांधी

जिस भाषा में बहादुरी, सच्चाई, दया वगैरह के लक्षण नहीं होते, उस भाषा के बोलने वाले बहादुर, सच्चे और दयावान् नहीं होते। —महात्मा गांधी

Language is a city to the building of which every human being brought a stone. **—Emerson**

भाषा एक नगर है जिसके निर्माण में प्रत्येक मानव एक पत्थर लाया है।

—एमर्सन

भाषा मनुष्य की बुद्धि के सहारे चलती है, इसलिए जब किसी विषय तक बुद्धि नहीं पहुँचती, तब भाषा अधूरी होती है। —महात्मा गांधी

भिक्षा (दे० 'माँगना')

माँगन मरन समान है, मत कोई माँगो भीख।
माँगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥ —कबीर

तगड़े और तन्दुरुस्त आदमी को भीख देना, दान करना, अन्याय है। कर्महीन मनुष्य भिक्षा के दान का अधिकारी नहीं हो सकता। —विनोबा

भिखारी

भिक्षुक को दुत्कारा जा सकता है, द्वार पर आने से रोका नहीं जा सकता ।
—प्रेमचन्द

आप भिखारियों को नहीं चाहते, परमात्मा भी भिखारियों को नहीं चाहता । परमात्मा तो सच्चे सेवकों का प्रेमी है । **—रस्किन (विजयपथ)**

माँगने पर भिक्षुक को देना श्रेष्ठ है, किन्तु बिना माँगे स्वयं भिक्षुक की खोज करके देना श्रेष्ठतर है । **—विनोबा**

काक आह्वयते काकान् याचको न तु याचकान् ।
काकयाचकयोर्मध्ये वरं काको न याचकः ।। **—अज्ञात**

कहीं कोई खाद्य वस्तु देख कर कौआ कौओं को बुलाने लगता है, किन्तु कोई भिक्षुक कहीं कुछ मिलता देख कर दूसरे भिक्षुकों को नहीं बुलाता । इससे सिद्ध होता है कि कौआ और भिक्षुक में कौआ ही श्रेष्ठ है, भिक्षुक नहीं ।

भीरुता (दे० 'कायरता')

पुरुषों में भीरुता भयंकर दुर्गुण है । **—अज्ञात**

त्यजेत् क्षुधार्ता महिला स्वपुत्रं, खादेत् क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम् ।
बुभुक्षितः किं न करोति पापं ? क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति ।।

—हितोपदेश

भूखी स्त्री अपने पुत्र को छोड़ देती है, भूखी नागिन अपने अंडे को खा लेती है । भूखा व्यक्ति क्या-क्या पाप नहीं करता है ? क्योंकि क्षीण मनुष्य करुणाहीन होते हैं ।

भूख

भोजन के लिए सबसे अच्छी चटनी भूख है । **—सुकरात**

A well-governed appetite is a great part of liberty.

—Seneca

भूख पर अच्छा नियन्त्रण स्वतंत्रता का एक बड़ा भाग है । **—सेनेका**

भूख लगना जिन्दा मनुष्य का धर्म है। भूख तो भगवान् का संदेश है। भूख न होती तो दुनिया बिल्कुल अनीतिमय और अधार्मिक बन जाती। फिर नैतिक प्रेरणा ही हमारे अन्दंर न होती। **—विनोबा**

सम्पन्नतरमेवान्नं दरिद्रा भुञ्जते सदा।
क्षुत्स्वादुतां जनयति सा चाढ्येषु सुदुर्लभा॥ **—अज्ञात**

दरिद्र व्यक्ति जो भी खायें, सदा अच्छा ही भोजन करते हैं क्योंकि वह भूख से खाते हैं। स्वाद को उत्पन्न करने वाली वह भूख धनियों को दुर्लभ है।

बीमारियों की अधिकता पर यदि आपको आश्चर्य हो तो अपनी थाली गिनिए। **—सेनेका**

आगि बड़वागि ते बड़ी है आग पेट की। **—तुलसी (कवितावली)**

Reason should direct, and appetite obey. **—Cicero**

बुद्धि के आदेश, भूख को मानना चाहिए। **—सिसरो**

भूख की ज्वाला उच्च से उच्च और कोमल से कोमल हृदय के व्यक्तियों को भी नीच से नीच और कठोर से कठोर कार्य करने के लिए विवश कर देती है। **—अज्ञात**

अपनी भूख सहने वाले तपस्वी की शक्ति उतनी नहीं, जितनी कि दूसरों की भूख मिटाने वाले दानी की शक्ति। **—संत तिरुवल्लवर**

खट्टा मीठा चरपरा, जिह्वा सब रस लेय।
चारों कुतिया मिलि गयीं, पहरा किसका देय॥ **—कबीर**

संसार में असम्भव से असम्भव कार्य हो सकता है किन्तु क्षुधा की ज्वाला से जलते हुए हृदयों में उच्च विचारों के अंकुर शेष नहीं रह सकते और न बिना उस ज्वाला को मिटाये पुनः जमाये जा सकते हैं। **—अज्ञात**

यदि भूख न हो तो भोजन की शिकायत न करो। **—रवीन्द्र**

भूल

If yon shut your door to all errors truth will be shut out.
—R. N. Tagore

यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायगा। **—रवीन्द्र**

सोई हुई आत्मा को जगाने के लिये हमारी भूलें एक प्रकार की दैविक यंत्रणाएँ हैं जो हमें सदा के लिये सतर्क कर देती हैं। **—प्रेचचन्द (सेवासदन)**

एक भूल करके नहीं होता कोई भ्रष्ट।
अनुचित है देना उसे कुछ सामाजिक कष्ट ।।

—मैथिलीशरण गुप्त (काबा और कर्बला)

अपनी भूल अपने ही हाथों सुधर जाए तो यह उससे कहीं अच्छा है कि कोई दूसरा उसे सुधारे। **—प्रेमचन्द (रंगभूमि)**

यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी प्रत्येक भूल उसे कुछ न कुछ शिक्षा दे सकती है। **—डिकेन्स**

जान-बूझ कर की गयी भूल हमारी इच्छा पर निर्भर करती है, पर अनजाने की गयी भूल की भी कोई सीमा है। **—रस्किन (विजयपथ)**

From the errors a wise man corrects his own.

—Publius Syrus

दूसरों की भूलों से बुद्धिमान् लोग अपनी भूलें सुधारते हैं।

—पब्लियस साइरस

The stream of truth flows through its channels of mistakes.

—R. N. Tagore

सत्य का स्रोत भूलों के बीच से होकर बहता है। **—रवीन्द्र**

भूल मत

दो बातन को भूल मत जो चाहै कल्यान।
नारायण इक मौत को, दूजे श्री भगवान ।। **—नारायण स्वामी**

भूषण (दे० 'गहना')

सरसिज मनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्। **—कालिदास**

सेवार लिपटी रहने पर भी कमल सुन्दर लगता है, मलिन होने पर भी चन्द्रमा शोभा बढ़ाता है, यह मुनिकन्या वल्कल पहनने से भी अधिक शोभित है। स्वभावतः सुन्दरता वालों के लिए भूषण व्यर्थ ही होते हैं।

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः ।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ —**भर्तृहरि**

बाजूबन्द अथवा चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार मनुष्य को विभूषित नहीं करते ; न स्नान से, न अंगराग से, न फूलों से और न सँवारे हुए केशों से ही उसकी शोभावृद्धि होती है । एकमात्र वाणी ही उसे समलंकृत करती है जो संस्कार पूर्वक भली-भाँति धारण की गयी हो ।

मानहु बिधि तन अच्छ छवि, स्वच्छ राखिबे काज ।
दृग-पग पोंछन को किये, भूषण पायंदाज ॥ —**बिहारी**

उत्तम चरित्र ही भूषणों में उत्तम भूषण है । —**स्वामी शंकराचार्य**

स्त्रियों का सबसे बड़ा भूषण पति-सेवा है । —**अज्ञात**

मनुष्य का सबसे मूल्यवान भूषण उसका चरित्र है । —**अज्ञात**

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा बलवतां धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥ —**भर्तृहरि**

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का मित-भाषण, ज्ञान का शान्ति, कुल का भूषण विनय, धन का उचित व्यय, तप का अक्रोध, समर्थ का क्षमा और धर्म का भूषण निश्छलता है । यह तो सबका पृथक्-पृथक् हुआ. परन्तु सबसे बढ़ कर सबका भूषण शील है ।

हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥ —**अज्ञात**

हाथ का भूषण दान है, सच बोलना कण्ठ का भूषण है, शास्त्रवचन कान का भूषण है. फिर दूसरे भूषणों की क्या आवश्यकता है ।

भेद

रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेय ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देय ॥ —**रहीम**

जो मनुष्य नौकर से अपना भेद कहता है, वह उसे अपना स्वामी बना लेता है । **—ड्राइडेन**

भोगलिप्सा

भोगलिप्सा मनुष्य को स्वार्थान्ध बना देती है । **—प्रेमचन्द**

भोजन

जैसा अन-जल खाइए, तैसा ही मन होय ।
जैसा पानी पीजिए, तैसी बानी सोय ॥ **—कबीर**

भोजन के पूर्व सदा हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी कमाई बिल्कुल खरी है । **—रस्किन**

प्रेम की रोटियों में अमृत रहता है, चाहे वह गेहूँ की हों या बाजरे की ।
—प्रेमचन्द (गबन)

सुन्दर हाथों से परोसा हुआ भोजन चाहे म्लेच्छ का अन्न ही क्यों न हो, देवता का भोग हो जाता है । **—रवीन्द्र (गोरा)**

अरु भोजन सो इहि विधि करै । आधी उदर अन्न सौं भरै ।
आधे में जलवायु समावै । तब तिहिं आलस कबहुँ न आवै ॥
—सूरदास (सूरसागर)

भोजन का सम्बन्ध ऊपर से उतना नहीं जितना आत्मा से है ।
—प्रेमचन्द (आँसुओं की होली)

जिस प्रकार दीपक अंधकार की कालिमा का भक्षण करके कज्जल की कालिमा ही पैदा करता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जैसा खाता है वैसे ही अपने ज्ञान को प्रकट करता है । **—अज्ञात**

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय ।
परसत मन मैला करै, सो मैदा जरि जाय ॥ **—रहीम**

इष्ट मित्रों के संग भोजन करने से मनुष्य का चित्त प्रसन्न रहता है और आयु बढ़ती है । **—अज्ञात**

मजहब (दे० 'धर्म')

मजहब किसी की टाँग पकड़ कर नीचे नहीं घसीटता, वह ऊपर उठाता है।
—अज्ञात

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना। **—डा० इकबाल**

मजाक (दे० 'हँसी', 'हास्य')

A joker loses everything when the joker laughs himself.
—Schiller

जब मज़ाकिया स्वयं हँस पड़ता है तो मज़ाक का सभी लुत्फ़ चला जाता है।
—शिलर

Joking often loses a friend and never gains an enemy.
—C. Simmons

मज़ाक प्राय: मित्र को अलग कर देता है और एक भी शत्रु पर विजय नहीं पाता। **—सी० सिमन्स**

Humour is the harmony of the heart. **—D. Jerrold**

मजाक हृदय की शान्ति है। **—डी० जेरोल्ड**

जो मज़ाक करता है वह दुश्मनी मोल लेता है। **—फ्रैंकलिन**

Good humour is one of the best articles of dress one can bear in society. **—Thackerey**

अच्छा मज़ाक एक उत्तम पोशाक है जिसे समाज में पहना जा सकता है।
—थैकरे

Good humour is the health of the soul; sadness is its poison.
—Stanilaus

अच्छा मज़ाक आत्मा का स्वास्थ्य है, चिन्ता उसका जहर है। **—स्टैनिलस**

मदिरा (दे० 'शराब')

मदिरा का उपयोग तो स्वयं को भुलाने के लिए है, स्मरण करने के लिए नहीं और जीवन का सृजनात्मक विकास अपनेपन की चेतना में ही सम्भव है।

—**महादेवी वर्मा**

जहाँ शैतान स्वयं नहीं पहुँच सकता वहाँ मदिरा को भेज देता है। —**अज्ञात**

Intoxicating drinks have produced evils more deadly, because more contineous than all those caused to mankind by the great historic scourages of war, famine and pestilence combined. —**Gladstone**

युद्ध, दुर्भिक्ष तथा महामारी इन तीनों ने मिल कर मनुष्य जाति को इतनी हानि नहीं पहुँचायी जितनी कि अकेली मदिरा ने पहुँचायी है। —**ग्लैडस्टन**

Wine and youth are fire upon fire. —**Fielding**

मदिरा और यौवन आग पर आग है। —**फील्डिंग**

मधु ऋतु

मधु वाता ऋतायत मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधु वक्रमुतोषसो ॥
मधुमत्पार्थिवं रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान्नों वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः ॥
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ —(**ऋ० १-९०-६,७,८**)

हो मधुरतम सृष्टि सारी।
पवन हो शीतल सुगन्धित, मधुमयी हो भूमि अम्बर।
रात दिन सुन्दर मधुर हों, हो मधुर सुखमय दिवाकर ॥
सरित वन वल्लरि मधुर हों, मधुर जीवन खेत क्यारी।
हो मधुरतम सृष्टि सारी।

—**दीनानाथ दिनेश**

मधुसूदन

श्रीकृष्ण मधुसूदन हैं। प्रत्येक प्राणी के तन में मधु दैत्य प्रकट होता है और उसके रचनात्मक शुभ कर्मों का अन्त करना चाहता है। इन्द्रियों के रस - भोग से उत्पन्न सुख का नाम मधु है। अपने तप तथा आत्मबल से मधु का संहार करने वाला मधुसूदन है। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

मन

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं निर्विषयं स्मृतम्॥ **—ब्रह्मबिन्दु उप०**

मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है, विषयासक्त मन बन्धन है और निर्विषय मन मुक्त माना जाता है।

जिसने मन को जीत लिया उसने जगत् को जीत लिया। **—स्वामी शंकराचार्य**

मन का दुःख मिट जाने पर शरीर का दुःख भी मिट जाता है।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥ **—गीता ६-३४**

मन बड़ा चंचल है, मनुष्य को मथ डालता है अतः बहुत बलवान् है। जैसे वायु को दबाना बहुत कठिन हैं वैसे ही मन का वश करना भी मैं कठिन मानता हूँ।

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥
—श्रीकृष्ण (गीता ६-३५)

हे महाबाहो! निस्संदेह मन बड़ा चंचल है, यह रुक नहीं सकता, परन्तु हे कौन्तेय! अभ्यास और वैराग्य से यह वश में किया जा सकता है।

तुलसी मन महराज के, दृग से नहीं दिखान।
जाहि देखि रीझैं नयन, मन तेहि हाथ बिकान॥ **—तुलसी**

मन ही मनुष्य को स्वर्ग या नरक में बिठा देता है। स्वर्ग या नरक में जाने की कुंजी भगवान् ने हमारे ही हाथ में दे रखी है। **—स्वामी शिवानन्द**

मन का पूर्ण निरोध करने में विषयविहीन मन ही समर्थ होता है ।

—उपनिषद्

मन की मलिनता को दूर करने के लिये नीति रूपी साबुन और निष्ठा रूपी पानी अर्थात सिद्धान्त और व्यवहार दोनों की आवश्यकता होती है ।

—सत्य साईं बाबा

न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय ।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय ।। —कबीर

जिन्हें तृष्णारूपी ग्राह ने पकड़ रखा है, जो संसार समुद्र में गिरे हुए हैं, भँवरों के जाल में पड़ कर लक्ष्य से दूर भटक रहे हैं, उनको बचाने के लिए अपना विषयविहीन मन ही नौका का रूप है । —उपनिषद्

मन बड़ा जादूगर, महान् चित्रकार है । मन है ब्रह्मसृष्टि का तत्त्व । संकल्प के बिना सृष्टि नहीं होती और मन के बिना संकल्प नहीं होता । —साने गुरु

मन बड़ा चंचल है, यदि काम न हो तो इधर-उधर भटकने लगता है और अपने स्वामी को विनाशमार्ग में फँसा कर मार डालता है । इसे भक्ति की जंजीरों से जकड़ देना चाहिए, नहीं तो सर्प बन कर डस लेता है, बिच्छू बन कर काट खाता है । —अज्ञात

मनसैव कृतं पापं न वाण्या न च कर्मणा ।
येनैवालिंगिता कान्ता तेनैवालिंगिता सुता ।। —अज्ञात

मन के भाव से ही पाप माना जाता है, वचन या कर्म से नहीं । पत्नी और पुत्री के आलिंगन में भाव की ही भिन्नता है ।

जब तक मन नहीं जीता जाता, राग-द्वेष शान्त नहीं होते, तब तक मनुष्य इन्द्रियों का गुलाम बना रहता है । —विनोबा

मन ही अपने लिए जीवन का रास्ता बनाता है और मृत्यु का रास्ता भी मन ही में तैयार होता है, विचार उस रास्ते की सीमा निश्चित कर देते हैं ।

—स्वेट मार्डेन

दुखते हुए फोड़े में कितना मवाद भरा है यह उस समय मालूम होता है जब नश्तर लगाया जाता है । मन का विष उस समय मालूम होता है जब कोई उसे खोल कर हमारे सामने रख देता है । —प्रेमचन्द

Strength of mind is exercise, not rest. —Pope

मन की शक्ति अभ्यास है, विश्राम नहीं। —पोप

मन एक भीरु शत्रु है, जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है। —प्रेमचन्द

यथा सूर्योदये प्रातर् ध्वान्तं धावति दूरतः।
तथा मनःप्रसादेन सर्वा बाधा प्रशाम्यति॥ —अज्ञात

जैसे प्रातःकाल सूर्योदय के होते ही अन्धकार दूर भाग जाता है, वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शान्त हो जाती हैं।

जिस मन पर भय विराजमान हो उस मन में भगवान भला कैसे विराजेंगे।
—अमृत लाल नागर (खंजन नयन)

मेरो मन अनत कहूँ नहिं जावे।
जैसे उड़ जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवे॥ —सूरदास

पतितः पशुरपि कूपे निःसर्तुं चरणचालनं कुरुते।
धिक् त्वां चित्त, भवाब्धेरिच्छामपि नो बिभर्षि निःसर्तुम्॥ —अज्ञात

कुएँ में गिरा हुआ पशु भी उसमें से निकलने के लिए पैर चलाने की कोशिश करता है, किन्तु हे मन, तुझे धिक्कार है कि तू भवसागर से निकलने की इच्छा भी नहीं करता।

जब तक मन अस्थिर और चंचल है तब तक किसी को अच्छा गुरु और साधु लोगों की संगति मिल जाने पर भी कोई लाभ नहीं होता। —रामकृष्ण परमहंस

मनो यस्य वशे तस्य भवेत्सर्वं जगद्वशे।
मनसस्तु वशे योऽस्ति स सर्वजगतो वशे॥ —अज्ञात

जिसने अपने मन को वश में कर लिया, उसने ससार भर को वश में कर लिया, किन्तु जो मनुष्य मन को न जीत कर स्वयं उसके वश में हो जाता है, उसने सारे संसार की अधीनता स्वीकार कर ली।

तमेव विषयं प्राप्य सुख दुःखे ततो नृणाम्।
मनोऽवस्थितिभेदेन जायेते इति दृश्यते॥ —अज्ञात

मन ही सुख-दुःख का कारण है, इसीलिए ऐसा देखा जाता है कि एक ही विषय को पाकर मन की अवस्था के भेद से मनुष्यों को सुख और दुःख हुआ करते हैं।

मनन

आत्मा का अपने साथ बातचीत करना ही मनन है। —प्लेटो

जिन पदार्थों पर हम अपनी स्थिति कायम करते हैं, जिनका हम मनन करते हैं वे ही हमारी मानसिक माला में गुँथ जाते हैं। —स्वेट मार्डेन

Meditation is the nurse of thought, and thought the food for meditation. **—C. Simmons**

मनन विचार की परिचारिका है और विचार मनन का भोजन।
—सी०सीमन्स

यदा वै श्रद्दधात्यथ मनुते नाश्रद्दधन्मनुते,
श्रद्दधदेव मनुते श्रद्धा त्वेव विजिज्ञासित केति।

—छान्दोग्य० ७।१९।१

मनन उसी समय होता है जब मनुष्य श्रद्धा करता है। श्रद्धा के बिना मनन सम्भव नहीं है, अतः श्रद्धा की विशेष रूप से जिज्ञासा करनी चाहिये।

मनस्वी

तुङ्गत्वमितरा नाद्रौ नेदं सिन्धावगाधता।
अलङ्घनीयताहेतुरुभयं तन् मनस्विनि॥

—माघ (शिशु०)

पर्वत में ऊँचाई है, अगाध गहराई नहीं है और समुद्र में अगाध गहराई है, ऊँचाई नहीं है, किन्तु अलंघनीय होने के ये दोनों ही कारण मनस्वी पुरुष में विद्यमान रहते हैं। अर्थात् मनस्वी पुरुष पर्वत के समान ऊँचे तथा समुद्र के समान गंभीर होते हैं, उनका पार पाना सरल काम नहीं।

मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं न तु गच्छति।
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम्॥ —हितोपदेश

मनस्वी पुरुष मर भले ही जाय, पर कृपणता नहीं करता, जैसे अग्नि भले बुझ जाय, पर ठंढी नहीं होती।

कुसुमस्तबकस्येव द्वेयी वृत्तिर्मनस्विनः ।
सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद्विशीर्येत वनेऽथवा ।। —हितोपदेश

फूलों के गुच्छे के समान मनस्वी पुरुष की दो तरह की प्रकृति होती है, या तो वह सबके सिर पर रहे या वन में कुम्हला जाय ।

मनाना

टूटे सुजन मनाइए, जो रूठें सौ बार ।
रहिमन फिरि फिर पोहिए टूटे मुक्ताहार ।। —रहीम

मनाना उन्हीं को चाहिए जो मानना जानते हों । —अज्ञात

मनुष्य

मनुष्य नवजात शिशु के तुल्य है, विकास ही उसका बल है । —रवीन्द्र

विश्व बड़ा है, जीवन विश्व से बड़ा है, मनुष्य जीवन से बड़ा है । —अज्ञात

मनुष्य इसीलिए है कि वह पशु को भी मनुष्य बनाये । —जयशंकर प्रसाद

An honest man is the noblest work of God. —**Pope**

ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है । —पोप

यथागारं दृढस्थणं जीर्णं भूत्वोपसीदति ।
तथावसीदन्ति नरा जरामृत्युवशंगताः । —वाल्मीकि

जिस प्रकार मजबूत खम्भे वाला मकान भी पुराना होने पर गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य जरा और मृत्यु के वश में पड़ कर नष्ट हो जाते हैं ।

मंनुष्य चावल के समान है । यदि उसके ऊपर के छिलके को उतार दिया जाए तो वह अंकुरित नही होगा । मानव पर तृष्णा रूपी शरीर का छिलका है । अगर उसे उतार दिया जाये तो पुनः माँ के गर्भ में नहीं आना पड़ेगा ।—सत्य साईं बाबा

मनुष्य तो दुर्बलताओं की प्रतिमा है जिसमें देवत्व और दानवत्व दोनों का ही समावेश है । —अज्ञात

Man thou pendulum betwixt a smile and tear. —**Byron**

मुस्कान और आँसू के मध्य मानव ! तू एक गतिशील यंत्र है । —बायरन

मनुष्य इस संसार में आत्मा, विवेक और बुद्धि लेकर आया है। —अज्ञात

Every man is a volume, if you know how to read him.
—**Channing**

प्रत्येक व्यक्ति एक महान् ग्रंथ है, यदि आप उसे पढ़ना जानते हैं। —**चैनिंग**

Man that is made in the image of the creator is made for Godlike deeds. —**Disraeli**

मनुष्य सृष्टिकर्त्ता के प्रतिविम्ब में ईश्वरतुल्य कार्य के लिए बनाया गया है।
—**डिजरायली**

मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है जो ठीक तरह से रखी जाय तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से बरती जाय तो जल्दी बिगड़ जाती है। —**स्वेट मार्डेन**

मनुष्य वे हैं जो मन की शक्तियों के बादशाह हैं, संसार की समस्त शक्तियाँ जिनके आगे नतमस्तक हैं। —**अज्ञात**

परोपकारशून्यस्य धिङ्‌ मनुष्यस्य जीवितम्।
जीवन्तु पशवो येषां चर्माप्युपकरिष्यति॥ —**अज्ञात**

मनुष्य होकर भी जो दूसरों का उपकार करना नहीं जानता उसके जीवन को धिक्कार है। उससे धन्य तो पशु ही हैं जिनका चमड़ा तक (मरने पर) दूसरों के काम आता है।

दुर्लभं मानुषं जन्मामूल्य एकोऽपि तत्क्षणः।
तथापि काकिणीतुल्यं तद्व्ययं कुर्वते जनाः॥ —**अज्ञात**

मनुष्य का जन्म दुर्लभ है, उसका एक क्षण भी अमूल्य है। तो भी बड़ा आश्चर्य है कि मनुष्य कौड़ियों के समान उसका व्यय करते हैं।

मनुष्य प्रकृति का अनुचर और नियति का दास है। —**जयशंकर प्रसाद**

प्रत्येक मनुष्य वास्तव में ईश्वर है, परन्तु मूर्खों जैसा अभिनय कर रहा है।
—**एमर्सन**

मनुष्य स्वतन्त्रता और परतन्त्रता के विरोधाभास का मिला-जुला रूप है। ....स्वातंत्र्य और पारतंत्र्य के बीच में संतुलन स्थापित कर लेना ही मानव-जीवन की सच्ची सार्थकता है। —**पं० राम किंकर जी उपाध्याय**

Man is a visible mystery walking between two eternities and two infinities. **—Carlson**

मनुष्य एक दृष्टिगोचर रहस्य है जो दो अनन्तों और दो अपरिमितियों के बीच घूमता है। **—कार्लसन**

जल में मीन मौन है, पृथ्वी पर पशु कोलाहल कर रहे हैं, आकाश में चिड़िया गा रही हैं, परन्तु मनुष्य में समुद्र का मौन है, पृथ्वी का कोलाहल है एवं आकाश का संगीत है। **—रवीन्द्र**

अपने आपको वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है।

—हर्बर्ट स्पेन्सर

मनोरथ (दे० 'अभिलाषा,' 'इच्छा,' 'महत्त्वाकांक्षा')

हाय रे मनुष्य के मनोरथ! तेरी भित्ति कितनी अस्थिर है। बालू पर की दीवार तो वर्षा में गिरती है, पर तेरी दीवार बिना पानी बूंद के ढह जाती है। आँधी में दीपक का कुछ भरोसा किया जा सकता है; पर तेरा नहीं! तेरी अस्थिरता के आगे बालकों का घरौंदा अचल पर्वत है। **—प्रेमचन्द**

मनोरथानामगतिर्न विद्यते। **—कुमार०**

ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ मनोरथ की पहुँच न हो।

संसार में सफलमनोरथ होना अपनी शक्ति, अपने पराक्रम, अपने मानसिक बल पर ही अवलम्बित है। **—अज्ञात**

मनोरंजन

मनोरंजन नवीनता का दास है और समानता का शत्रु है। **—प्रेमचन्द**

जिस समय तुम्हें अपना मनोरंजन करना हो उस समय अपने सहवास में रहने वालों के साथ सद्गुणों का चिन्तन करो। **—मार्क्स अरेलियस**

मनोवृत्ति

मनोवृत्तियाँ सुगन्ध के समान हैं जो छिपाने से नहीं छिपतीं। **—प्रेमचन्द**

पाप-पुण्य सब मनोवृत्तियों के लक्षणों पर निर्भर है। यदि मनोवृत्ति शुद्ध हो और कोई व्यक्ति पाप कर बैठे तो पाप नहीं। यदि मनोवृत्ति दूषित हो और ऐसे समय में कोई पुण्य भी बन जाय तो उसका कोई फल नहीं। **—वृन्दावनलाल वर्मा**

मस्तिष्क (दे० 'मन')

A feeble body weakens the mind. —**Rousseau**

दुर्बल शरीर मस्तिष्क को दुर्बल बना देता है। —**रूसो**

मस्तिष्क की शक्तियाँ बड़ी अद्‌भुत हैं। यह केवल शरीर पर ही नहीं किन्तु सारे संसार पर शासन करता है। —**अज्ञात**

मनुष्य का मस्तिष्क बंज़र खेत की तरह है, जब तक इसमें बाहर से मसाला नहीं डाला जायगा इसमें कुछ भी नहीं पैदा नहीं हो सकता। —**रेनाल्ड्स**

The mind grows narrow in proportion as the soul grows corrupt. —**Rousseau**

ज्यों-ज्यों आत्मा कलुषित होती जाती है त्यों-त्यों उसी अनुपात में मन संकीर्ण होता जाता है। —**रूसो**

An empty mind is the devil's workshop. —**Proverb**

शून्य मस्तिष्क शैतान की कर्मशाला है। —**कहावत**

मनुष्य के मस्तिष्क की तरह लचीली चीज और कोई नहीं है। बन्द की हुई भाप की तरह जितना ही दबाव इस पर पड़ता है उतनी ही शक्ति से यह दबाव के साथ लड़ती है, जितना अधिक काम इस पर आ पड़ता है उतना ही अधिक यह उसे पूरा कर लेती है। —**अज्ञात**

मानव मस्तिष्क ठीक एक पैराशूट की तरह है—जब तक वह खुला रहता है तभी तक कार्यशील रहता है। —**लार्ड डेवन (साउथ विन्ड)**

मनुष्य सतत प्रयत्नशील है। एवरेस्ट को उसके आगे झुकना ही पड़ेगा क्योंकि उसके दुर्बल पतले शरीर में मस्तिष्क एक ऐसी चीज है जो किसी बन्धन को नहीं मानती और उसमें ऐसी भावना है जो पराजय को कभी स्वीकार नहीं करती।

—**जवाहरलाल नेहरू**

महत्वाकांक्षा

The noblest spirit is most strongly attracted by the love of glory. —**Cicero**

महान् व्यक्ति महत्वाकांक्षा के प्रेम से बहुत अधिक आकर्षित होते हैं।—**सिसरो**

Be ambitious, and let there be no limits to your ambition. It is better to live gloriously and die gloriously than live a life of inactivity. **—Sir C.V. Raman**

महत्वाकांक्षी बनो और उसकी कोई सीमा न होने दो। अकर्मण्यता के जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु अधिक अच्छी है। **—सर सी० वी० रमन**

जो छोटे-छोटे कामों के पीछे बहुत ज्यादा पड़े रहते हैं वे अक्सर बड़े कामों के लिए नाकाबिल बन जाते हैं। **—रौशे**

Ambition is but the evil shadow of aspiration.

—G. Macdonald

महत्त्वाकांक्षा लालसा का केवल निकृष्ट प्रतिबिम्ब है। **—मेक्डोनाल्ड**

Ambition is so powerful a passion in the human breast that however high we reach we are never satisfied. **—Machiavalli**

महत्त्वाकांक्षा मानव हृदय की इतनी शक्तिशाली अभिलाषा है कि हम कितने ही ऊँचे पद पर पहुँचें, सन्तुष्ट नहीं होते। **—मेकियावेली**

सौन्दर्य और विलास के आवरण में महत्त्वाकांक्षा उसी प्रकार पोषित होती है जैसे मखमली म्यान में तलवार शयन करती है। **—डा० रामकुमार वर्मा**

संसार में जितने बड़े काम हुए हैं उन सबको कराने वाली महत्वाकांक्षा ही है। **—अज्ञात**

महात्मा

सम्पूर्ण संसार से जिनकी आसक्ति नष्ट हो गयी है, जिनका अज्ञान नष्ट हो चुका है और जो कल्याणरूप परमात्म तत्त्व में स्थिर हैं वही महात्मा हैं।

—स्वामी शंकराचार्य

महात्माओं का चरित्र विचित्र होता है। वे धन-वैभव को तिनके के समान समझते हैं; किन्तु इसके प्राप्त होने पर बोझ से झुक जाते हैं। **—चाणक्य**

महान् (दे० 'संत', 'सज्जन', 'सत्पुरुष')

मनुष्य उतना ही महान् होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शक्ति का विकास करेगा। **—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)**

क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैःशिरसां सतीव। —कालिदास

जो महान् होते हैं वे अपनी शरण में आये हुए नीच लोगों से भी वैसा ही अपनापन बनाये रहते हैं जैसा सज्जनों के साथ।

कोई कितना ही महान् हो, लेने के लिए तो उसे झुकना ही पड़ता है। इतना बड़ा समुद्र भी क्षुद्र नदी नालों से पानी लेने के लिए उनसे नीचे ही रहता है।

—अज्ञात

Nothing can be truly great which is not right.

—Dr. Johnson

बिना सत्य के कोई भी चीज वास्तव में महान् नहीं हो सकती।

—डा० जानसन

सभी महान् वस्तुएँ सदैव अच्छी नहीं हो सकतीं, किन्तु सभी अच्छी वस्तुएँ महान् होती हैं। **—डिमास्थेनीज**

महात्मानोऽनुगृह्णन्ति भजमानान रिपूनपि।
सपत्नीः प्रापयन्त्यब्धिं सिन्धवो नगनिम्नगाः॥

—माघ (शिशुपाल वध)

महान् पुरुष तो शरणागत शत्रुओं पर भी अनुग्रह करते हैं। बड़ी नदियाँ अपनी सपत्नी (छोटी मोटी) पहाड़ी नदियों को भी समुद्र तक (अपने पति तक स्वयं) पहुँचाती हैं।

Count no man great till he is dead. **—Proverb**

किसी महापुरुष को तब तक महान् नहीं समझना चाहिए, जब तक कि उसकी मृत्यु नहीं हो जाती। **—कहावत**

वह मनुष्य कभी नहीं महान् हो सकता जो केवल अपनी वर्तमान शक्ति पर ही अवलम्बित रहता है और दैवी तत्त्व का ज्ञान नहीं प्राप्त करता।

—स्वेट मार्डेन

अभी तक कोई भी व्यक्ति वास्तव में महान् नहीं हुआ जो साथ ही साथ गुणवान् न रहा हो। **—फ्रैंकलिन**

He is not great who is not greatly good. **—Shakespeare**

वह महान् नहीं है जो बहुत भला नहीं है। **—शेक्सपियर**

महानता (दे० 'बड़प्पन')

महानता की आकांक्षा करने से हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है, वे जाग्रत हो जाती है। **—स्वेट मार्डेन**

मनुष्य की सबसे बड़ी महानता विपत्तियों को सह लेने में है। **—अज्ञात**

लोभ की अपेक्षा अपनी महत्ता सिद्ध करने की मनुष्य की इच्छा अधिक प्रबल होती है। **—अज्ञात**

महापुरुष (दे० 'संत', 'सज्जन')

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्ताराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति ।। **—भवभूति**

उत्तम पुरुषों का हृदय बज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होता है। उसे जानने में समर्थ कौन है ?

न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् । **—कालिदास**

संसार ही महापुरुष को ढूँढ़ता है न कि महापुरुष संसार को।

जैसे सूर्य आकाश में छिप कर नहीं विचर सकता वैसे ही महापुरुष भी संसार में छिप कर नहीं रह सकते। **—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)**

All great men come out of the middle classes. **—Emerson**

सभी महापुरुष मध्यम वर्ग से आते हैं। **—एमर्सन**

जो श्रेष्ठ महापुरुष हैं, वे सभी धर्म, सभी इतिहास और सभी नीतियों से संसार का श्रेष्ठ ज्ञान ग्रहण करते हैं। **—रवीन्द्र**

जहाँ चक्रवर्ती नृपाल की शस्त्रधारा कुंठित हो जाती है; वहाँ महापुरुष का एक मधुर वचन ही काम कर जाता है। **—हरिऔध**

A really great man is known by three signs—generosity in the design, humanity in the execution, moderation in success. **—Bismarck**

वास्तविक महान् व्यक्ति तीन चिह्नों द्वारा जाना जाता है—योजना में उदारता, उसे पूरा करने में मनुष्यता और सफलता में संयम। **—बिस्मार्क**

जो महापुरुष हैं वे संसार के ज्ञान को अपने माहात्म्य से ही ग्रहण करते हैं, और ग्रहण करने के बाद अपने जीवन में उतार कर जगत् में उसकी सचाई का प्रकाश चमका देते हैं। —रवीन्द्र

महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः

—माघ (शिशुपाल बध)

महान लोग स्वभाव से ही स्वल्पभाषी होते हैं।

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥ —हितोपदेश

महान् पुरुषों में यह गुण स्वभावतः पाये जाते हैं—विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय, उन्नति में क्षमा, सभा में भाषण-कुशलता, युद्ध में विक्रम, यश में रुचि और वेदशास्त्र के अध्ययन का व्यसन।

The world cannot do without great men, but great men are very troublesome to the world. —Goethe

संसार महान् व्यक्तियों के बिना नहीं रह सकता, लेकिन महान् व्यक्ति संसार के लिए बहुत दुःखदायी होते हैं। —गेटे

धर्म को परिष्कृत करने एवं लोगों के नैतिक स्तर को ऊँचा करने के लिए महापुरुषों की सब युगों में बड़ी आवश्यकता होती है। —हरिभाऊ

माँ (दे० 'माता', 'जननी')

माँ के बलिदानों का प्रतिशोध कोई बेटा नहीं कर सकता, चाहे वह भूमंडल का स्वामी ही क्यों न हो। —प्रेमचन्द

माँ के ममत्व की एक बूँद अमृत के समुद्र से ज्यादा मीठी है। —अज्ञात

The future destiny of the child is always the work of the mother. —Napoleon

बच्चे का भाग्य सदैव उसकी माँ की कृति है। —नेपोलियन

माँगना

केवल अपने लिए माँगने वाला भिखारी कहा जा सकता है, परन्तु सबके लिए माँगने वाला देने वाले का स्वामी ही रहेगा। **—महादेवी वर्मा**

मान, बड़ाई, प्रेमरस, गुरुआपन औ नेहु।
ये पाँचो तब ही गये, जबै कही कछु देहु॥ **—नरोत्तमदास**

जो कुछ माँगना हो खुदा से माँग ऐ अकबर।
यही वह दर है कि जिल्लत नहीं सवाल के बाद॥ **—अकबर**

रहिमन वै नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाँहि।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं॥ **—रहीम**

आदर मान महत्व सब, बाला पन को नेह।
यह चारों तब ही गये, जब ही कहा कुछ देह॥ **—मलूकदास**

आब गयी, आदर गया, नैनन गया सनेहु।
ये तीनों तब ही गये, जबहि कहा कुछ देहु॥ **—कबीर**

माँगे घटत रहीम पद, कितो करो बढ़ि काम।
तीन पैग वसुधा करी, तऊ बावने नाम॥ **—रहीम**

माता (दे० 'जननी', 'माँ')

शिशोः शुश्रूषणाच्छक्तिर्माता स्यान्माननाच्च सा। **—स्कंद पुराण**

शिशु की शुश्रूषा करने से माता को शक्ति और सदा सम्मान देने के कारण उसे माता कहते हैं।

Men are what their mothers made them. **—Emerson**

मनुष्य वही होते हैं जो उनकी माताएँ उन्हें बनाती हैं। **—एमर्सन**

माता का हृदय बच्चे की पाठशाला है। **—बीचर**

माता का कोमल क्रोड़ ही शान्ति का निकेतन है। **—अज्ञात**

ऐसी माताओं से देश का मुख उज्ज्वल होता है जो देशहित के सामने मातृ-स्नेह की धूल बराबर भी परवाह नहीं करतीं। उनके पुत्र देश के लिए होते हैं, देश पुत्र के लिए नहीं होता। **—प्रेमचन्द**

मातासमं नास्ति शरीरपोषणं, चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणम् ।
भार्यासमं नास्ति शरीरतोषणं, विद्यासमं नास्ति शरीरभूषणम् ।।

—अज्ञात

माता के समान शरीर का पालन-पोषण करने वाली, चिन्ता के समान देह को सुखाने वाली, स्त्री के समान शरीर को सुख देने वाली और विद्या के समान शरीर को अलंकृत करने वाली दूसरी कोई वस्तु नहीं है ।

मातृत्व

मातृत्व दीर्घ तपस्या है । **—प्रेमचन्द**

मातृत्व में ही नारीत्व की पूर्णता है । **—अज्ञात**

मातृत्व का गर्व और आनन्द आंखों में संजीवनी भर देता है । **—प्रेमचन्द**

मातृ-प्रेम

भाई-बहिनों को एक करने वाली कोई शक्ति है तो मातृप्रेम है, पितृप्रेम है ।

—विनोबा

संसार में और जो कुछ है, मिथ्या है, निस्सार है, मातृ-प्रेम ही सत्य है, अक्षय है, अनश्वर है । **—प्रेमचन्द (मन्दिर)**

जब मां बच्चों का मुँह देखती है तो वात्सल्य से चित्त गद्‌गद् हो जाता है ।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

मातृभाषा

मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है । जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह स्वदेशभक्त कहलाने लायक नहीं । **—महात्मा गाँधी**

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः । बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः । **—वेदमंत्र**

मातृभाषा, मातृसभ्यता और मातृभूमि तीनों सुखकारिणी स्थिर रूप देवियाँ हमारे हृदयासन पर विराजती रहें ।

मातृभूमि

हे मातृभूमि ! तेरी पहाड़ियाँ, तेरे हिम-धवल पर्वत, तेरे वन-उपवन हमारे लिये सुखमय हों । **—अथर्ववेद, १२-१-११**

उदीराणा उतासीनास्तिष्ठन्तः प्रक्रामन्तः ।
पद्भ्यां दक्षिणसव्याभ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम् ॥ **—यजुः**

हम लोग चलते हुए या बैठे हुए, ठहरे हुए या आगे बढ़ते हुए, दायें या बायें पैर से भूमि को कष्ट न दें तथा कोई ऐसा काम न करें जिससे मातृभूमि का अहित हो ।

हे मातृभूमि ! धन और कीर्ति तुझसे ही मिलती है, और यह तेरे ही वश में है कि तू उन्हें दे या अपने पास रखे । लेकिन मेरा गम (शोक) बिल्कुल मेरा अपना है और जब मैं इसे भेंट करने के लिए तेरे पास लाता हूँ तो तू मुझे आशीर्वाद देती है । **—रवीन्द्र**

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः **—अथर्ववेद**

भूमि मेरी माता है और मैं इस मातृभूमि का पुत्र हूँ ।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा को अनुकरण के द्वारा सीखता है, व्याकरण के सहारे नहीं ।

—धीरेन्द्र वर्मा

मातृभाषा में माता की ममता और जन्मभूमि का प्यार बसता है, जब हम उसका प्रयोग करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे हमारा बचपन हमें वापस मिल गया है । **—अज्ञात**

माता पृथिवी महीयम
यह विराट पृथ्वी मेरी माता है । **—ऋग्वेद**

मातृ-हृदय

माता का हृदय दया का आगार है । उसे जलाओ तो उसमें से दया की ही सुगन्ध निकलती है । पीसो तो दया का ही रस निकलता है । वह देवी है । विपत्ति की क्रूर लीलाएँ भी उस निर्मल और स्वच्छ स्रोत को मलिन नहीं कर सकतीं ।

—प्रेमचन्द

मादकता

यौवन, सुन्दरता और ऐश्वर्य इनमें से प्रत्येक में मनुष्य को मदान्ध बना देने की शक्ति है । **—कालिदास**

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय ।
वह खाये बौरात है, यह पाये बौराय ।। —बिहारी

मान

जिस आदमी का मान उसके अपने ख्याल से मर चुका है वह जितनी हानि अपने को पहुँचा सकता है उतनी दूसरा कोई और नहीं पहुँचा सकता ।

—महात्मा गांधी

घटने न देना मान, करना मोह मत धन-धाम का ।
यदि मान ही जाता रहा तो धन रहा किस काम का ।।

—अज्ञात

मान गुण से ही मिलता है, जैसे तोते को सब पालते हैं परन्तु कौए को कोई नहीं । **—अज्ञात**

मान चाहने वाले ही अपमान से डरा करते हैं। मान का बोझा मन से उतरते ही मन हलका और निडर बन जाता है । **—हनुमान प्रसाद पोद्दार भाई जी**

अमी पियावत मान बिन, रहिमन मोहि न सुहाय ।
प्रेम सहित मरिबो भलो, जो विष देइ बुलाय ।। **—रहीम**

मान सहित विष खाइके, संभु भए जगदीस ।
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस ।। **—रहीम**

ज्वलितं न हिरण्यरेतसं चयमास्कन्दति भस्मनां जनः ।
अभिभूतिभयादसूनतः सुखमुज्झन्ति न धाम मानिनः ।।

—भारवि (किरातार्जुनीय)

लोग राख के ढेर को पदाक्रान्त करते हैं, परन्तु जाज्वल्यमान अग्नि को पदाक्रान्त नहीं करते । अतः मानी मानहानि की आशंका से सुखपूर्वक प्राण विसर्जित कर देते हैं, पर अपनी मान-मर्यादा तथा तेज को धक्का नहीं लगने देते ।

मानव

मानव का दानव होना उसकी हार है । मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है । **—डा० राधाकृष्णन्**

मानव जोर लगा दे, गिरि के पैर उखड़ जाते हैं ।
मानव का सुन मंत्र, परस्पर तारे लड़ जाते हैं ॥
नहीं असम्भवता छू सकती इसकी छविमय छाया ।
मायापति भी चकराता लख मानवता की माया ॥
—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (गुरु दक्षिणा)

मनुष्य को पापी कहना ही पाप है; यह कथन मानव समाज पर एक लांछन है । **—स्वामी विवेकानन्द**

संसार भर में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जो सही शब्दों में मानव हैं । एक जो मर चुका है, दूसरा जिसका अभी तक जन्म नहीं हुआ है । **—चीनी कहावत**

मानवता

मानवता का खेल प्रातःकालीन सूर्य की तरह सुन्दर है । **—रस्किन**

No man is so great as mankind. **—Theodore Parker**

कोई मनुष्य मानवता से बड़ा नहीं है । **—थेडोर पार्कर**

The proper study of mankind is man. **—Pope**

मानवता का उचित अध्ययन मानव है । **—पोप**

ध्रुव सत्य है कि सर्वोच्च जाति का मानवता-परिपूर्ण प्राणी सदा उदार और सत्यप्रिय होता है । **—रस्किन**

मानव-प्रकृति

जहाँ तक मानव-प्रकृति से सम्बन्ध है, यह नहीं कहा जा सकता कि वह कब बदल जाय । यहाँ तक कि मरते समय जो मति हो वैसी ही गति बतलायी जाती है । पुराने दिनों का स्मरण करके भविष्य में भी विश्वास खो बैठने का अर्थ है मानव-प्रकृति में निहित शिवत्व की भावना में अविश्वास । **—सरदार पटेल**

Men are cruel but man is kind. **—R. N. Tagore**

मनुष्य निर्दयी होते हैं परन्तु मानव स्वभाव दयालु है । **—रवीन्द्र**

मानस-तीर्थ

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिद्रियनिग्रहः ।
सर्वभूतदया तीर्थं तीर्थमार्जवमेव च ॥
दानं तीर्थं दमस्तीर्थं संतोषस्तीर्थमुच्यते ।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता ॥
ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं तपस्तीर्थमुदाहृतम् ।
तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परा ॥ **—महर्षि अगस्त्य**

सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना भी तीर्थ है, सब प्राणियों पर दया करना तीर्थ है और सरलता भी तीर्थ है । दान तीर्थ है, मन का संयम तीर्थ है, संतोष भी तीर्थ कहा जाता है । ब्रह्मचर्य का पालन उत्तम तीर्थ है । प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ ही है । ज्ञान तीर्थ है, धैर्य तीर्थ है, तप को भी तीर्थ कहा गया है । तीर्थों में भी सबसे बड़ा तीर्थ है अंतःकरण की अत्यान्तिक शुद्धि ।

दानभिज्या तपः शौचं तीर्थसेवा श्रुतं तथा ।
सर्वाण्येतान्यतीर्थानि यदि भावो न निर्मलः ॥
निगृहीतेन्द्रियग्रामो यत्रैव च वसेन्नरः ।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्कराणि च ॥ **—महर्षि अगस्त्य**

भीतर का भाव शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, तप, शौच, तीर्थसेवन, शास्त्रों का श्रवण एवं स्वाध्याय—ये सभी अतीर्थ हो जाते हैं । इसलिए जिसने अपने इन्द्रिय-समुदाय को वश में कर लिया है, वह मनुष्य जहाँ भी निवास करता है, वहीं उसके लिए कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ हैं ।

ध्यानपूते ज्ञानजले रागद्वेषमलापहे ।
यः स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम् ॥

—महर्षि अगस्त्य

ध्यान के द्वारा पवित्र तथा ज्ञानरूपी जल से भरे हुए, राग-द्वेषरूप मल को दूर करने वाले मानस-तीर्थ में जो मनुष्य स्नान करता है, वह परम गति—मोक्ष को प्राप्त होता है ।

मानसिक पीड़ा

लोहे का गरम गोला यदि घड़े के जल में डाल दिया जाय तो वह जल भी गरम हो जाता है, वैसे ही मानसिक पीड़ा से शरीर भी व्यथित हो जाता है।

—वेदव्यास (महा०, वनपर्व)

मानसिक वृत्तियाँ

हमारी मानसिक वृत्तियाँ हमारी सेविकाएँ हैं। जो कुछ हम उनसे चाहते हैं वे हमें वही देती हैं। **—स्वेट मार्डेन**

माप

धनवानों के हाथ में माप ही एक है। वह विद्या, सौन्दर्य, बल, पवित्रता, और तो क्या, हृदय भी उसी से मापते हैं। वह माप है—उनका ऐश्वर्य।

—जयशंकर प्रसाद

माया

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्तिते॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता ७-१४)

यह मेरी त्रिगुणमयी दैवी माया निस्सन्देह दुस्तर है, जो मेरी ही शरण में आते हैं, वे माया को पार कर जाते हैं।

माया वह पट है जो जीव और ब्रह्म के बीच में पड़ कर सत्य को नहीं देखने देती। माया प्रकृति की छाया है। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

—गीता १८-६१

हे अर्जुन ! यन्त्रारूढ़ सम्पूर्ण प्राणियों का ईश्वर अपनी माया से घुमाता हुआ सब प्राणियों के हृदय-देश में स्थित है।

जो माया के यन्त्र पर चढ़ जाते हैं, उन्हें मायापति परमेश्वर माया से नचाता है। इसके विपरीत जो माया-यन्त्र को छोड़ कर परमेश्वर को पकड़ लेते हैं, उन्हें परमेश्वर पार लगाता है। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो माया सब जानेहु भाई।।
—तुलसी (मानस, अरण्य०)

मैं जानू हरि से मिलूं, मो मन मोटी आस।
हरि बिच डारै अंतरा, माया बड़ी पिचास।। **—क़बीर**

माया ईश्वर की शक्ति होने पर भी अनिर्वचनीय पदार्थ है।
—स्वामी शंकराचार्य

अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया।।
—तुलसी (मानस, बाल०)

जब माया आती है बुद्धि चली जाती है। **—सुदर्शन**

माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय।
भगतों के पीछे फिरै, सनमुख भागै सोय।। **—कबीर**

सुर नर मुनि कोउ नाहि, जेहि न मोह माया प्रबल।
अस विचारि मन माहिं, भजिअ महा मायापतिहिं।। **—तुलसी**

माया-मोह का स्थान मन है, घर नहीं। **—प्रेमचन्द**

वेदान्त के अनुसार यह निद्रा-अवस्था और जाग्रत-अवस्था भी माया या भ्रम के सिवा और कुछ नहीं है। **—स्वामी रामतीर्थ**

माया सचमुच धोबिन ही है, वह जीव में लिपटे अज्ञान रूपी मैल को धोकर उसका निर्मल रूप निखार देती है। **—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)**

मायावी

मायावी मनुष्य संसार को धोखा दे सकता है, परन्तु अपने आपको धोखा नहीं दे सकता। **—सुदर्शन**

व्रजन्ति ते मूढ़धियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः ।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृतांगान्निशिता इवेषवः ॥

—भारवि (किरातार्जुनीय)

वे अविवेकी पुरुष (सर्वदा) पराजित होते हैं जो मायावियों के समक्ष मायावी नहीं बनते अर्थात् 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' नीति का अवलम्बन नहीं करते। वे मायावी सरलचित्त व्यक्तियों के अन्तःकरण की बातें जान कर इस प्रकार गला घोंटते हैं जैसे तीक्ष्ण धारवाले बाण कवचरहित शरीर में प्रवेश कर घातक बन जाते हैं।

मार्क्सवाद

मार्क्सवाद तो भौतिकवाद है इसीलिए वह बेमुरव्वती के साथ धर्म का विरोध करता है। **—लेनिन**

माली

अनार के फूल और फल में बाग के माली के रुधिर की याद आती है। उसकी मेहनत के कण जमीन में गिर कर उगते हैं और हवा तथा प्रकाश की सहायता से मीठे फलों के रूप में नजर आते हैं। **—अध्यापक पूर्णसिंह**

मित्र (दे० 'दोस्त')

न स सखा यो न ददाति सख्ये। **—ऋग्वेद**

वह मित्र ही क्या, जो अपने मित्र को सहायता नहीं देता।

सब लोग घोड़े, कुत्ते, सम्पत्ति, मान, सम्मान इत्यादि की हवस करके उसके पाने के लिए परिश्रम करते हैं, परन्तु मुझे किसी मित्र के समागम का लाभ होने से जितना संतोष होगा, उतना उन सब चीजों के मिल कर प्राप्त होने पर भी नहीं होगा। **—सुकरात**

Life has no blessing like a prudent friend. **—Euripides**

ज्ञानी मित्र के सदृश जीवन में कोई वरदान नहीं है। **—यूरीपिडीज**

मथत मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥ **—रहीम**

There are three faithful friends; an old wife, an old dog, and ready money. **—Franklin**

तीन विश्वासी मित्र होते हैं—वृद्धा पत्नी, बूढ़ा कुत्ता और नकद धन।

—फ्रैंकलिन

विद्या, शूरवीरता, दक्षता, बल और धैर्य ये पाँच मनुष्य के स्वाभाविक मित्र हैं। बुद्धिमान लोग सर्वदा इनके सहवास में रहते हैं। **—वेदव्यास (महा०, शांतिपर्व)**

The worst friend is he who frequents you in prosperity and deserts you in misfortune.

सबसे निकृष्ट मित्र वह है जो अच्छे दिनों में पास आता है और मुसीबत के दिनों में त्याग देता है। **—अज्ञात**

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥ **—हितोपदेश**

मुँह सामने मीठी बातें करने और पीठ पीछे छुरी चलाने वाले मित्र को दुधमुँहे विषभरे घड़े की तरह छोड़ दे।

रजतं वा सुवर्णं वा शुभान्याभरणानि च।
अविभक्तानि साधूनामवगच्छन्ति साधवः॥

—वाल्मीकि (रा०, कि०)

अच्छे स्वभाव वाले मित्र अपने घर के सोने-चाँदी अथवा उत्तम आभूषणों को अपने सन्मित्रों से अलग नहीं समझते।

हमारा यदि कोई सच्चा मित्र न हो तो जगत् निर्जन वन के समान प्रतीत होगा। **—बेकन**

Friends though absent, are still present; though in poverty they are rich; though weak, yet in the enjoyment of health and what is still more difficult to assert, though dead they are alive.

—Cicero

मित्र चाहे अनुपस्थित हों वे उपस्थित रहने के ही समान हैं; चाहे वे दरिद्र हों, धनवान् होने के समान हैं; चाहे वे दुर्बल हों, स्वस्थ होने के समान हैं और यह बात मानना और भी अधिक कठिन मालूम पड़ता है कि वे जीवित होने के समान हैं यद्यपि वे मर गये हैं। **—सिसरो**

सबसे निकृष्ट मित्र वह है जो तुम्हारी चापलूसी करता है और तुम्हारे अवगुणों पर परदा डालता है। —अज्ञात

मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः।

—कालिदास (मेघदूत)

जिसने मित्रकार्य सम्पन्न करने का बचन दिया है, वह उसके समाप्त होने तक ढीला नहीं पड़ता।

सच्चा मित्र आनंद को दुगुना तथा दुःख को आधा कर देता है। —बेकन

विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितैषिणं रिपुं वा। —भारवि

चित्त का प्रसन्न होना तथा मलिन होना मित्र और शत्रु की सूचना देता है। अर्थात् जिसके प्रति मन प्रसन्न होता है वह मित्र है और जिसके प्रति मन में क्षोभ उत्पन्न होता है वह शत्रु है।

आढ्यो वापि दरिद्रो वा दुःखितः सुखितोऽपि वा।
निर्दोषश्च सदोषश्च वयस्यः परमा गतिः॥

—वाल्मीकि (रा०, कि०)

मित्र धनी हो या गरीब, सुखी हो या दुखी अथवा निर्दोष हो या सदोष; वह हमारे लिए सबसे बड़ा सहायक होता है।

Be more prompt to go to a friend in adversity than in prosperity. —Chilo

अच्छे दिनों की अपेक्षा मुसीबत के दिनों में मित्र के पास जाने के लिए अधिक उद्यत रहो। —चिलो

मिलने पर मित्र का आदर करो, पीठ पीछे उसकी प्रशंसा करो तथा आवश्यकता के समय उसकी मदद करो। —अरस्तू

घर, सोना, पृथ्वी, चाँदी, स्त्री और सुहृद्गण ये मध्यम कोटि के मित्र हैं, ये मनुष्य को सभी जगह मिल सकते हैं। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाय उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया। —अज्ञात

जो गुण हममें नहीं है, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले जिसमें वह गुण हो। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लचित्त मनुष्य का साथ ढूंढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुंह ताकता था। नीतिविशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरवल की ओर देखता था। **—रामचन्द्र शुक्ल**

कुदिन हितू सो हित सुदिन, हित अनहित किन होइ।
ससि छबि हर रबि सदन तउ, मित्र कहत सब कोइ॥ **—तुलसी**

मित्रता

केवल सज्जनों में ही सच्ची मैत्री हो सकती है। **—सिसरो**

सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का सा धैर्य और कोमलता होती है। **—रामचन्द्र शुक्ल**

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा। **—ऋग्वेद**

बिना पुरुषार्थ और प्रयत्न किये देवताओं से मित्रता नहीं होती।

बहुत लोगों से मित्रता मत करो। **—पाइथागोरस**

Never contract friendship with a man that is not better than thyself. **—Confucius**

ऐसे मनुष्य से मित्रता मत करो जो तुमसे श्रेष्ठ न हो। **—कन्फ्यूशियस**

मित्रता दैवी देन है और मनुष्य के लिए अत्यन्त बहुमूल्य वरदान। **—डिजरायली**

Do not form friendship in haste, but once formed hold fast to them. **—Socrates**

मित्रता करने में शीघ्रता मत करो, परन्तु करो तो अन्त तक निभाओ। **—सुकरात**

मनुष्य जो स्वयं करे उसे भूल जाय और जो दूसरे से ले उसे सर्वदा याद रक्खे। मित्रता की यही जड़ है। **—ड्यूमाज**

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ।। **—पंचतंत्र**

दुष्ट की मित्रता सूर्य-उदय के पीछे की छाया के सदृश पहले तो लम्बी-चौड़ी होती है, फिर क्रम से घटती जाती है और सज्जनों की मित्रता तीसरे पहर की छाया के सदृश पहले छोटी और फिर क्रमशः बढ़ती जाती है । **—पंचतंत्र**

इस संसार में मित्रता से अधिक मूल्यवान् अन्य कोई वस्तु नहीं है । **—सिसरो**

सहापकृष्टैर्महतां न संगतं भवन्ति गोमायुसखा न दन्तिनः । **—भारवि**

नीचों के साथ उच्च व्यक्तियों की मित्रता नहीं होती क्योंकि हाथी शृगालों के साथ मैत्री नहीं करते ।

किसी व्यक्ति की मित्रता पूर्ण नहीं है जब तक कि वह अपने मित्र की अनुपस्थिति, गरीबी और आपत्ति में सहायता नहीं करता एवं मृत्यु के उपरान्त भी उसके अधिकार की रक्षा नहीं करता । **—अज्ञात**

इच्छेच्चेद् विपुलां मैत्रीं त्रीणि तत्र न कारयेत् ।
वाग्वादमर्थ-सम्बन्धं तत्पत्नीपरिभाषणम् ।। **—चाणक्य**

यदि दृढ़ मित्रता चाहते हो तो मित्र से बहस करना, उधार लेना-देना और उसकी स्त्री से बातचीत करना छोड़ दो । यही तीन बातें बिगाड़ पैदा करती हैं ।

मित्रघात

मित्रघात पाप नहीं महापाप है । **—सुदर्शन**

मिथ्या

मिथ्या का स्थान यदि कहीं है तो मनुष्य के मन को छोड़कर और कहीं नहीं । **—शरत्चन्द्र (श्रीकान्त)**

मिथ्याचारी

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ।।

—श्रीकृष्ण (गीता)

जो मनुष्य कर्म करने वाली इन्द्रियों को रोकता है, परन्तु उन इन्द्रियों के विषयों का चिन्तन मन से करता है, वह मूढ़ात्मा मिथ्याचारी कहलाता है ।

मिथ्याभिमान

मिथ्याभिमान हमारी निष्क्रियता और पतन का कारण है। —**अज्ञात**

मिथ्यावादी

जहाँ बुद्धि और तर्क का कुछ वश नहीं चलता, मनुष्य मिथ्यावादी हो जाता है। —**प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)**

मिलन

जीवन की लम्बी यात्रा में
खोये भी हैं मिल जाते
जीवन है तो कभी मिलन है
कट जातीं दुख की रातें।

—**जयशंकर प्रसाद (कामायनी)**

शाश्वत यह आना जाना है
क्या अपना और बिराना है
प्रिय में सबको मिल जाना है

—**शिवमंगल सिंह 'सुमन' (हिल्लोल)**

मुक्ति

जब तक संसार में कीट, पतंग आदि की मुक्ति न हो जायगी तब तक मैं अपनी मुक्ति की आकांक्षा नहीं करता। —**भगवान् बुद्ध**

मुक्ति शब्द का अर्थ छूटना है। यहाँ प्रश्न होता है, किससे छूटना? उत्तर स्पष्ट है कि दुःख अर्थात् बन्धन से छूटना मुक्ति है। जहां बन्धन नहीं, वहाँ मुक्ति भी नहीं। जीवात्मा बद्ध है, इसलिए इसको मुक्ति की आवश्यकता है।

—**स्वामी दयानन्द**

मुक्तिमिच्छसि चेत्तात विषयान् विषवत् त्यज।
क्षमार्जवदयाशौचसत्यं पीयूषवत् पिव॥ —**अज्ञात**

भाई! यदि तुझे मुक्ति की इच्छा है तो विषयों को विष के समान त्याग दे तथा क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता और सत्य को अमृत के समान ग्रहण कर।

मुक्ति मन को मिली है, आत्मा को नहीं। आत्मा तो नित्य मुक्त है।
—रामचन्द्र डोंगरे

संसार का सम्पूर्ण विस्मरण और परमात्मा का सतत स्मरण ही तो मुक्ति है।
—रामचन्द्र डोंगरे

परमेश्वर का ज्ञान बिना मुक्ति पाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है।
—स्वामी दयानन्द सरस्वती

मुक्त पुरुष के जीवन का चिन्तन करने से हमें अपनी मुक्ति के दर्शन होते हैं।
—ज्ञानदेव

मुक्ति उसे मिलती है जिसका मन मरता है। —रामचन्द्र डोंगरे

मुख

मानव का मुख तो उसका अपना जीवन-ग्रंथ है। —साने गुरुजी

छिप्यो छबीलो मुख लसै, नीले अंचल चीर।
मनो कलानिधि झलमलै, कालिन्दी के नीर॥ —बिहारी

मुसीबत (दे० 'दुख', 'विपत्ति')

जेहि अंचल दीपक दुरो, हन्यो सो ताही गात।
रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु ह्वै जात॥ —रहीम

इशरते कतरा है दरिया में फना हो जाना।
दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना॥ —गालिब

Misery acquaints a man with strange bedfellows.
—Shakespeare

मुसीबत के दिनों में अजीब-अजीब लोगों से जान-पहचान हो जाती है।
—शेक्सपियर

Fire tries gold, misery tries brave men. —Seneca

अग्नि सोने को परखती है, मुसीबत वीर पुरुषों को। —सेनेका

मुरली-महिमा (देखो 'बाँसुरी-महिमा')

जब हरि मुरली अधर धरत ।
थिर चर, चर थिर, पवन थकित रहै, जमुना जल न बहत ॥
खग मोहैं, मृग जूथ भुलाहीं, निरखि मदन छवि छरत ॥
पसु मोहैं, सुरभी विथकित, तृन दंतनि टेकि रहत ॥
सुक सनकादि सकल मुनि मोहैं, ध्यान न तनक गहत ॥
सूरदास भाग हैं तिनके, जे मा सुखै लहत ॥

—**सूरदास**

अधर धरत हरि के परत, ओंठ दीठि पट ज्योति ।
हरित बाँस की बाँसुरी इन्द्र-धनुष रंग होति ॥ —**बिहारी**

कितीं न गोकुल कुल वधू, काहि न किन सिख दीन ।
कौने तजीं न कुल-गली, ह्वै मुरली-सुर लीन ॥—**बिहारी**

मुस्कान (दे० 'प्रसन्नता', 'हँसी')

A man without a smiling face must not open a shop.

—**Chinese Proverb**

जिस मनुष्य का मुखमण्डल मुसकुराता हुआ न हो, उसे दूकान नहीं खोलनी चाहिए । —**चीनी कहावत**

श्रेष्ठ पुरुषों की मुस्कान में जादू भरा रहता है । आकर्षण, उपहास, ताड़ना और उपदेश का कार्य महापुरुषों की मुस्कान से सहज में हो जाता है ।

—**दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

मुस्कान ज्ञान और संयम का चिन्ह है । श्रेष्ठ पुरुषों की मुस्कान विजयसूचक होती है । —**दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

A face that cannot smile is never good. —**Martial**

जिस मुख पर मुसकान नहीं आती वह अच्छा नहीं होता । —**मार्शल**

A beautiful smile is to the female countenance what the sunbeam is to the landscape, it embellishes an inferior face, and redeems an ugly one. —**Lavater**

नारी के चेहरे पर सुन्दर मुस्कान वैसी ही है जैसे प्राकृतिक दृश्य पर सूर्य-किरणें। साधारण चेहरे को यह शोभावान् बना देती है और कुरूप को दीप्तिमान्। —लेवेटर

Smile enriches those who receive, without impoverishing those who give.

मुस्कान पाने वाला मालामाल हो जाता है, परन्तु देने वाला दरिद्र नहीं होता। —अज्ञात

Smile is rest to the weary, daylight to the discouraged, sunshine to the sad and Nature's best antidote for trouble.

मुस्कान थके हुए के लिए विश्राम है, हतोत्साह के लिए दिन का प्रकाश है, उदास के लिए धूप तथा कष्ट के लिए प्रकृति का सर्वोत्तम प्रतिकार है। —अज्ञात

मुस्कान, जो शिशु के अधरों पर क्रीड़ा कर रही है, ऐसा प्रतीत होता है मानो शरद् के विलीन होने वाले बादलों की कोर को छूने वाली द्वितीया के चन्द्र की किरणों तथा ओसों से स्नात प्रभात के स्वप्न से उत्पन्न हुई है। —रवीन्द्र

Smile is love's language. —**Homer**

मुस्कान प्रेम की भाषा है। —होमर

The odour is to the rose; the smile to the woman.—**Johnson**

जैसे गुलाब के लिए सुगन्ध वैसे ही स्त्री के लिए मुस्कान। —जानसन

A good laugh is sunshine in a house. —**Thackeray**

मधुर हास्य मकान में सूर्य-प्रकाश के तुल्य है। —थैकरे

मुहब्बत (दे० 'प्रीति', 'प्रेम')

मुहब्बत त्याग की माँ है, जहाँ जाती है, बेटे को साथ ले जाती है। —सुदर्शन

यह इश्क नहीं आसां इतना ही समझ लीजे।
एक आग की दरिया है और डूब के जाना है॥ —जिगर

इलाही तर्क मुहब्बत भी क्या मुहब्बत है,
भुलाते हैं उन्हें वह याद आये जाते हैं॥ —जिगर

ये दर्द सर ऐसा है कि सर जाये तो जाये।
उल्फत का नशा जब कोई मर जाये तो जाये ।। —जौक

मूर्ख

वह मूर्खों में भारी मूर्ख है जो जानता है कि इस संसार में सुख है।

—गुरु रामदास

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन् ।
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः ।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ।। —भर्तृहरि

यत्नपूर्वक पेरने से रेत में से तेल निकालना सम्भव है ; मृगतृष्णा से प्यासे की प्यास बुझाना सम्भव है ; ढूंढ़ने से खरगोश का सींग भी मिल सकता है परन्तु मूर्ख का मन जिस वस्तु की ओर झुक गया है उससे हटाना सम्भव नहीं है।

विचार-हीन मनुष्य ही मूर्ख है। —शंकराचार्य

अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः ।
सकृद्दुःखकरावाद्यौ अन्तिमस्तु पदे पदे ।। —हितोपदेश

जो पुत्र पैदा ही न हुआ हो या पैदा होकर मृत हो गया हो अथवा मूर्ख हो, इन तीनों में पहले दो ही बेहतर हैं, न कि तीसरा। कारण यह कि प्रथम दोनों तो एक बार ही दुःख देते हैं, जब कि तीसरा पद-पद पर दुःखकारक होता है।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमोहन्ति न च तारागणैरपि ।। —चाणक्य

एक गुणवान् पुत्र ही बेहतर है, सौ मूर्ख पुत्र नहीं। एक चन्द्रमा सारा अन्धकार दूर कर देता है जो झुण्ड के झुण्ड तारे नहीं कर पाते।

मूरख को समझावते ज्ञान गांठि को जाय ।
कोयला होय न ऊजरो नौ मन साबुन लाय ।। —कबीर

मूर्खों की मूर्खता से लाभ उठाना पाप ही है। —आचार्य चतुरसेन

फूलै फलै न बेंत, यदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलैं विरंचि सम ।। —तुलसी

A fool may have his coat embroidered with gold, but it is a fool's coat still. **—Rivarol**

मूर्ख मनुष्य चाहे सुनहले काम के कपड़े पहन ले फिर भी वे मूर्ख के ही कपड़े रहेंगे। **—रीवारोल**

पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ॥ **—हितोपदेश**

जैसे साँपों को दूध पिलाना केवल जहर को बढ़ाना है, वैसे ही मूर्खों को उपदेश करना भी क्रोध को बढ़ाने वाला है; शांति करने वाला नहीं।

मूर्ख यदि नहीं समझता तो सद्ग्रन्थों का क्या दोष? यदि अन्धा नहीं देखता तो दर्पण का क्या दोष? **—अज्ञात**

मूर्खस्तु परिहर्तव्यः प्रत्यक्षो द्विपदः पशुः।
भिनत्ति वाक्यशल्येन निर्दृशं कण्टको यथा ॥ **—चाणक्य**

मूर्ख को दूर करना उचित है, क्योंकि देखने में वह मनुष्य यथार्थ में दो पाँव का पशु है, और वाक्यरूपी शल्य से बेधता है, जैसे अन्धे को काँटा।

मूर्ख का हृदय उसके मुख में रहता है, जब कि ज्ञानी की जिह्वा उसके हृदय में। **—अज्ञात**

Fools may ask more questions in an hour than wise man can answer in seven years. **—Proverb**

जितने प्रश्नों का उत्तर बुद्धिमान सात वर्षों में दे सकता है उससे कहीं अधिक प्रश्न मूर्ख एक घण्टे में पूछता है। **—कहावत**

बरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसंपर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥ **—भर्तृहरि**

पर्वतों और वनों में वनचरों के संग विचरना श्रेष्ठ है, परन्तु मूर्खों के संग स्वर्ग में भी रहना बुरा है।

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रंजयति ॥ **—भर्तृहरि**

अनजान मनुष्य को आसानी से सुधार सकते हैं, ज्ञानियों को अति सुख से वशीभूत कर सकते हैं, परन्तु अल्पज्ञ मूर्ख को ब्रह्मा भी नहीं सुधार सकता।

मूर्ख छः बातों से जाना जा सकता है--अकारण क्रोध, बिना लाभ के वार्त्तालाप, बिना विकास के बदलना, बिना आधार पूछताछ, अपरिचित व्यक्ति का विश्वास करना और शत्रु को मित्र समझना । —अज्ञात

Fools make feasts, and wise men eat them. —**Proverb**

मूर्ख दावत देते हैं और बुद्धिमान् उसे खाते हैं । —**कहावत**

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रांकुरात्
समुद्रमपि संतरेत् प्रचलदूर्मिमालाकुलम् ।
भुजंगमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥ —**भर्तृहरि**

मनुष्य घड़ियाल के मुख से बलपूर्वक मणि निकाल सकता है और भयंकर लहरें उठती हों ऐसे दुस्तर समुद्र को भी तैर कर पार कर सकता है, क्रोधित सर्प को पुष्प की भाँति सिर पर धारण कर सकता है, परन्तु हठी मूर्खों के चित्त को नहीं मना सकता ।

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभक्छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशितांकुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ ।
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ॥

—**भर्तृहरि**

जल से अग्नि को रोकना सम्भव है, छतरी से धूप का निवारण करना सम्भव है, मतवाला हाथी भी अंकुश से वश में हो सकता है, गौ, गर्दभ आदि चौपायों को डंडे से वश में कर सकते हैं, रोग को विविध प्रकार की औषधियों से दूर करना सम्भव है और मंत्र द्वारा विष भी उतर जाता है, इस प्रकार पृथ्वी पर सब वस्तुओं की शास्त्रोक्त औषध है परन्तु मूर्ख की कोई औषध नहीं है । —**भर्तृहरि**

शतं दद्यान्न विवदेदिति विज्ञस्य संमतम् ।
विना हेतुमपि द्वन्द्वमेतन्मूर्खस्य लक्षणम् ॥ —**हितोपदेश**

अपनी सैकड़ों की हानि सह ले परन्तु विवाद न करे, यह बुद्धिमान् का मत है, और बिना कारण ही कलह कर बैठना यह मूर्ख का लक्षण है ।

मूर्खता

To stumble twice against the same stone is a proverbial disgrace. **—Cicero**

उसी पत्थर से दुबारा टकराना मूर्खता है। **—सिसरो**

साधु के मस्तिष्क में भी मूर्खता का कोना होता है। **—कहावत**

जिसके साथ प्रेम किया जाय उसके चरित्र पर शंका करना भारी मूर्खता है। **—अज्ञात**

कठोर सत्य की दुहाई देकर जीवन की मेल-जोल वाली चाल में लड़खड़ाहट उत्पन्न कर देना मूर्खता है। **—अज्ञात**

The folly of one man is the fortune of another. **—Bacon**

एक की मूर्खता से दूसरे का भाग्य बनता है। **—बेकन**

मूर्च्छा

मूर्छा निद्रा की सहोदरा है। जिस प्रकार निद्रा श्रमित विश्व को अपने विशाल वक्षःस्थल पर सुला कर शान्ति प्रदान करती है, उसी प्रकार मूर्छा भी व्यथित प्राणी को अपनी गोद में लेकर उसे शान्ति प्रदान करके फिर तुमुल संग्राम के लिए प्रस्तुत करती है। **—अज्ञात**

मूर्ति पूजा

मूर्ति में जिनकी इष्ट-भावना होती है वे ही विश्वासपूर्वक उसकी पूजा करते हैं इस सत्य को हृदय में उतारने के लिए विश्वास चाहिए। **—स्वामी विवेकानन्द**

मूर्ति में भावना का मौन दर्शन होता है। **—साने गुरुजी**

मूर्तिपूजा सर्वव्यापी परमात्मा के दर्शन की पहली सीढ़ी है। **—अज्ञात**

मूल्य

Worth begets in base minds, envy; in great souls, emulation. **—Fielding**

गुण नीच पुरुषों में द्वेष और महान् व्यक्तियों में स्पर्धा पैदा करता है। **—फील्डिंग**

मेरे विचार से मनुष्य का मूल्य उसके काम या उसके कथन से नहीं ; बल्कि वह जीवन में स्वयं क्या बन रहा है इसे देखकर आँकना चाहिए। —अरविन्द

मृत्यु

That which ends in exhaustion is death but the perfect ending is in the endless. **—R. N. Tagore**

मृत्यु थकावट के सदृश है, परन्तु सच्चा अंत तो अनंत की गोद में है।

—रवीन्द्र

लोग मृत्यु को अमंगल मानते हैं, परन्तु यह मृत्यु अमंगल नहीं है। मृत्यु (काल) परमात्मा की सेवक है अतः मंगल भी है। **—रामचन्द्र डोंगरे**

तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योः **—अथर्ववेद**

आत्मा को जानने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता।

मृत्यो न किंचिच्छक्यस्त्वमेको मारयितुं बलात्।
मारणीयस्य कर्माणि तत्कर्तृणीति नेतरत्॥ **—योगवाशिष्ठ**

हे मृत्यु, तू स्वयं अपनी शक्ति से किसी मनुष्य को नहीं मार सकती। मनुष्य किसी दूसरे कारण से नहीं स्वयं अपने ही कर्मों से मारा जाता है।

मृत्यु सच्चा मित्र है। हमारा अहंभाव हमको दुःख देता है। **—महात्मा गाँधी**

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। **—गीता**

सम्मानित पुरुष के लिए अपकीर्ति मृत्यु से भी बुरी है।

शरीर का नाश होना मृत्यु नहीं है। मृत्यु है वास्तव में पापों की वासना।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी'

मृत्यु से नया जीवन मिलता है। जो व्यक्ति और राष्ट्र मरना नहीं जानते, वे जीना भी नहीं जानते। केवल वहीं जहाँ कब्र है, पुनरुत्थान होता है।

—जवाहरलाल नेहरू

जीने की एक राह है, मरने की सौ। **—कहावत**

Death is the golden key that opens the palace of eternity.

—Milton

मृत्यु वह सोने की चाभी है जो अमरता के महल को खोल देती है।

—मिल्टन

जो मरना जानते हैं उनके लिए मौत भयंकर नहीं है। —अज्ञात

मृत्यु भी धर्मनिष्ठ प्राणी की रक्षा करती है। —कौटिल्य

Hunger and thirst scarcely kill any but gluttony and drink kill a great many.

क्षुधा और प्यास से जितनों की मृत्यु होती है उनसे कहीं अधिक लोगों की मृत्यु अधिक भोजन और मदिरा-सेवन से होती है। —कहावत

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनाएँ एक-एक कर सामने आती हैं। समय की धुंध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।
—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

जीवन की चलती हुई तस्वीर के लिए मृत्यु ही एक समुचित चौखट है।
—एक जर्मन दार्शनिक

वृद्ध मनुष्य मृत्यु के पास जाते हैं लेकिन युवकों के पास मृत्यु स्वयं आती है।
—अज्ञात

मृत्यु को स्वाभाविक बनाने वाला ही सुख से मर सकता है।
—हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी'

मृत्यु अर्थात् परमात्मा को बीते हुए जीवन का हिसाब देने का पवित्र दिन। —रामचन्द्र डोंगरे

मृत्यु एक सरिता है जिसमें श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है कायारूपी वस्त्र बहाकर॥
—स्वामी ओंकारानन्द

विषाद में डूबने का नाम मृत्यु है। —दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

Be of a good cheer about death, and know this of a truth, that no evil can happen to a good man, either in life or after death. —**Socrates**

मृत्यु के बारे में सदैव प्रसन्न रहो, और इसे सत्य मानो कि भले आदमी पर जीवन में या मृत्यु के पश्चात् कोई बुराई नहीं आ सकती। —सुकरात

आह ! मृत्यु कितनी भयानक वस्तु है। नहीं प्यारे, यह सब इस कारण है कि हमने इससे अपनी जान-पहचान बढ़ाने का उद्योग नहीं किया। —मेरीबेल

अपकीर्ति ही मृत्यु है। —स्वामी शंकराचार्य

दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः॥ —चाणक्य

दुष्ट स्त्री, कपटी दोस्त, जवाब देने वाला नौकर और सर्प वाले घर में रहना मौत ही है, सन्देह नहीं।

मृत्यु तो प्रभु का आमंत्रण है। जब वह आये तो द्वार खोल कर उसका स्वागत करो और चरणों में हृदयधन सौंप अभिवादन करो। —रवीन्द्र

Death is the liberator of him whom freedom cannot release; the physician of him whom medicine cannot cure; the comforter of him whom time cannot console. —Colton

मृत्यु उसकी मुक्तदायिनी है जिसे स्वतंत्रता मुक्त नहीं कर सकती, यह उसकी चिकित्सक है जिसे औषध निरोध नहीं कर सकती, यह उसकी आनन्ददायिनी है जिसे समय सांत्वना प्रदान नहीं कर सकता। —कोल्टन

मृत्यु का दूत अंधा और बहरा है। यदि उसके नेत्र और कान होते तो जगत् में बहुत-से विनाश के हृदयवेधक दृश्य न देख पड़ते। —सुदर्शन

He whom the gods love dies young. —Proverb

जिसे देवता प्यार करते हैं वह जल्दी मरता है। —अज्ञात

सहैव मृत्युर्व्रजति सह मृत्युर्निषीदति।
गत्वा सुदीर्घमध्वानं सह मृत्युर्निवर्तते॥ —वाल्मीकि (रा०)

मृत्य साथ ही चलती है; वह साथ ही बैठती है और सुदूरवर्ती पथ पर भी साथ-साथ जाकर साथ ही लौट आती है।

The fountain of death makes the still water of life play.

—R. N. Tagore

मृत्यु का फव्वारा जीवन के स्थिर जल को नर्तन कराता है। —रवीन्द्र

जो आत्मा को अमर नहीं जानते वे ही मृत्यु से काँपा करते हैं।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी'

मनुष्य वैसे तो मृत्यु पर विजय नहीं पा सकता, किंतु मृत्यु के भय से मुक्त हो जाना ही मौत को जीतना होता है। मृत्यु पर हँसना सीख जाओ, तो मृत्यु से डर कहाँ रह जायगा ? समर प्रांगण में मौत पर सैनिक चंद घंटो में ही विजय प्राप्त कर लेता है। **—मेजर रणजीत सिंह (जब हमने लाहौर पर गोले बरसाये) (धर्मयुग २५ जनवरी १९८१)**

मृत्यु-समय

तन त्यागता जो अन्त में मेरा मनन करता हुआ।
मुझमें असंशय नर मिले वह ध्यान यों धरता हुआ॥

—भगवान श्रीकृष्ण (श्रीहरि गीता ८-५)

मृदुता

तुल्येऽपराधे स्वर्भानुर्भानुमन्तं चिरेण यत्।
हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्नः स्फुटं फलम्॥ **—माघ**

अपराध के समान होने पर भी राहु सूर्य को चिरकाल बाद और चन्द्रमा को शीघ्र ही जो ग्रसता है, सो (चन्द्रमा की) मृदुता का ही स्पष्ट परिणाम है।

मेधा

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥

—यजु० ३२-१५

हे वरुणदेव ! मुझे धारण करने वाली बुद्धि प्रदान करो। हे अग्निदेव और प्रजापते ! मुझे तीव्र बुद्धि का वरदान दो। हे इन्द्र और वायुदेव ! मुझे विशुद्ध बुद्धि दो और हे धाता ! सृष्टि के धारण और पोषण करने वाले ! मुझे सर्वश्रेष्ठ बुद्धि दो।

मेहमान (दे० 'अतिथि')

मेहमान नारायण का साक्षात् स्वरूप होता है। उसकी सेवा बड़े सौभाग्य से प्राप्त होती है। **—स्वामी श्रद्धानन्द**

मेहरबानी (दे० 'दया')

किसी की मेहरबानी माँगना अपनी आजादी बेचना है। —महात्मा गांधी

मैं

जब "मैं" है तब हरि नहीं, हरि हैं तब मैं नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, ता में द्वै न समाहिं॥ —कबीर

अहं ब्रह्मास्मि। —बृहदारण्यकोपनिषद्

मैं ब्रह्म हूँ।

मैं और मेरे पिता दोनों एक हैं। —महात्मा ईसा

I am the master of my fate, I am the captain of my soul.
—Henley

मैं ही अपने भाग्य का मालिक हूँ और मैं ही अपनी आत्मा का सेनाध्यक्ष हूँ।
—हेनले

हर एक का ये दावा है कि हम भी हैं कोई चीज।
और हमको है ये नाज कि हम कुछ भी नहीं हैं॥

—अकबर

जब मैं अपने गुण और दूसरे के दोषों को देखता हूँ तो मुझे मालूम होता है कि मैं कोई महात्मा नहीं तो साधु पुरुष अवश्य हूँ। पर मैं जब अपने दोष और दूसरे के गुणों पर विचार करता हूँ तो सहसा कह उठता हूँ—"मो सम कौन कुटिल खल कामी"। —हरिभाऊ उपाध्याय

मैं मैं बड़ी बलाय है, सको तो निकसो भाग।
कह कबीर कब लग रहै, रुई लपेटी आग॥ —कबीर

मोक्ष

मेरा लगाता ध्यान कहता ॐ अक्षर ब्रह्म ही।
तन त्याग जाता जीव जो पाता परम गति है वही॥
—भगवान श्रीकृष्ण (श्रीहरि गीता ८-१३)

मोक्षस्य न हि वासोऽस्ति न ग्रामान्तरमेव वा ।
अज्ञान-हृदय-ग्रन्थि-नाशो मोक्ष इति स्मृतः ॥ —शिवगीता

मोक्ष किसी स्थान पर रखा हुआ नहीं मिलता और न उसको ढूंढ़ने के लिये किसी दूसरे गाँव को ही जाना पड़ता है। हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि का नष्ट होना ही मोक्ष कहा जाता है।

द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति च ।
ममेति बध्यते जन्तुर्निर्ममेति विमुच्यते ॥

—वेदव्यास (महाभारत)

बन्धन और मोक्ष के दो ही आश्रय हैं—ममता और ममता-शून्यता; ममता से प्राणी बन्धन में पड़ता है और ममतारहित होने पर मुक्त हो जाता है।

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ —गीता ५-१७

ज्ञान द्वारा जिनके पाप धुल गये हैं, वे ईश्वर का ध्यान धरने वाले, तन्मय हुए, उसमें स्थिर रहने वाले, उसी को सर्वस्व मानने वाले लोग मोक्ष पाते हैं।

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुषः । —गीता ३-१९

फल की अभिलाषा छोड़ कर कर्म करने वाला पुरुष मोक्ष पाता है।

मोक्षार्थी

मोक्षार्थी के लिए नारी नरक का द्वार है।

—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

मोह

मोह ही भय का कारण है। —अज्ञात

बुद्धि का नाश ही मोह है, वह धर्म और अर्थ दोनों को नष्ट करता है। इससे मनुष्य में नास्तिकता आती है और वह दुराचार में प्रवृत्त हो जाता है।

—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

जहँ लग सब संसार है मिरग सबन को मोह ।
सुर नर नाग पाताल अरु ऋषि मुनिवर सब मोह ॥ —कबीर

मेहरबानी (दे० 'दया')

किसी की मेहरबानी माँगना अपनी आजादी बेचना है। —महात्मा गांधी

मैं

जब "मैं" है तब हरि नहीं, हरि हैं तब मैं नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, ता में द्वै न समाहिं॥ —कबीर

अहं ब्रह्मास्मि। —बृहदारण्यकोपनिषद्

मैं ब्रह्म हूँ।

मैं और मेरे पिता दोनों एक हैं। —महात्मा ईसा

I am the master of my fate, I am the captain of my soul.
—Henley

मैं ही अपने भाग्य का मालिक हूँ और मैं ही अपनी आत्मा का सेनाध्यक्ष हूँ।
—हेनले

हर एक का ये दावा है कि हम भी हैं कोई चीज।
और हमको है ये नाज कि हम कुछ भी नहीं हैं॥
—अकबर

जब मैं अपने गुण और दूसरे के दोषों को देखता हूँ तो मुझे मालूम होता है कि मैं कोई महात्मा नहीं तो साधु पुरुष अवश्य हूँ। पर मैं जब अपने दोष और दूसरे के गुणों पर विचार करता हूँ तो सहसा कह उठता हूँ—"मो सम कौन कुटिल खल कामी"। —हरिभाऊ उपाध्याय

मैं मैं बड़ी बलाय है, सको तो निकसो भाग।
कह कबीर कब लग रहै, रुई लपेटी आग॥ —कबीर

मोक्ष

मेरा लगाता ध्यान कहता ॐ अक्षर ब्रह्म ही।
तन त्याग जाता जीव जो पाता परम गति है वही॥
—भगवान श्रीकृष्ण (श्रीहरि गीता ८-१३)

मोक्षस्य न हि वासोऽस्ति न ग्रामान्तरमेव वा।
अज्ञान-हृदय-ग्रन्थि-नाशो मोक्ष इति स्मृतः॥ —शिवगीता

मोक्ष किसी स्थान पर रखा हुआ नहीं मिलता और न उसको ढूंढ़ने के लिये किसी दूसरे गाँव को ही जाना पड़ता है। हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि का नष्ट होना ही मोक्ष कहा जाता है।

द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति च।
ममेति बध्यते जन्तुर्निर्ममेति विमुच्यते॥

—वेदव्यास (महाभारत)

बन्धन और मोक्ष के दो ही आश्रय हैं—ममता और ममता-शून्यता; ममता से प्राणी बन्धन में पड़ता है और ममतारहित होने पर मुक्त हो जाता है।

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः॥ —गीता ५-१७

ज्ञान द्वारा जिनके पाप धुल गये हैं, वे ईश्वर का ध्यान धरने वाले, तन्मय हुए, उसमें स्थिर रहने वाले, उसी को सर्वस्व मानने वाले लोग मोक्ष पाते हैं।

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुषः। —गीता ३-१९

फल की अभिलाषा छोड़ कर कर्म करने वाला पुरुष मोक्ष पाता है।

मोक्षार्थी

मोक्षार्थी के लिए नारी नरक का द्वार है।

—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

मोह

मोह ही भय का कारण है। —अज्ञात

बुद्धि का नाश ही मोह है, वह धर्म और अर्थ दोनों को नष्ट करता है। इससे मनुष्य में नास्तिकता आती है और वह दुराचार में प्रवृत्त हो जाता है।

—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

जहँ लग सब संसार है मिरग सबन को मोह।
सुर नर नाग पाताल अरु ऋषि मुनिवर सब मोह॥ —कबीर

मेहरबानी (दे० 'दया')

किसी की मेहरबानी माँगना अपनी आजादी बेचना है। —**महात्मा गांधी**

मैं

जब "मैं" है तब हरि नहीं, हरि हैं तब मैं नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, ता में द्वै न समाहिं॥ —**कबीर**

अहं ब्रह्मास्मि। —**बृहदारण्यकोपनिषद्**

मैं ब्रह्म हूँ।

मैं और मेरे पिता दोनों एक हैं। —**महात्मा ईसा**

I am the master of my fate, I am the captain of my soul.
—**Henley**

मैं ही अपने भाग्य का मालिक हूँ और मैं ही अपनी आत्मा का सेनाध्यक्ष हूँ।
—**हेनले**

हर एक का ये दावा है कि हम भी हैं कोई चीज।
और हमको है ये नाज कि हम कुछ भी नहीं हैं॥
—**अकबर**

जब मैं अपने गुण और दूसरे के दोषों को देखता हूँ तो मुझे मालूम होता है कि मैं कोई महात्मा नहीं तो साधु पुरुष अवश्य हूँ। पर मैं जब अपने दोष और दूसरे के गुणों पर विचार करता हूँ तो सहसा कह उठता हूँ—"मो सम कौन कुटिल खल कामी"। —**हरिभाऊ उपाध्याय**

मैं मैं बड़ी बलाय है, सको तो निकसो भाग।
कह कबीर कब लग रहै, रुई लपेटी आग॥ —**कबीर**

मोक्ष

मेरा लगाता ध्यान कहता ॐ अक्षर ब्रह्म ही।
तन त्याग जाता जीव जो पाता परम गति है वही॥
—**भगवान श्रीकृष्ण (श्रीहरि गीता ८-१३)**

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि॥

—तुलसी (दो०)

मोहताज

सर्वदा दूसरों की संगति का मोहताज रहना ही अज्ञान की अवस्था का दर्शक है। **—अज्ञात**

मौत (दे० 'मृत्यु')

मृत्यु नहीं वरन् बीमारी हमें कष्ट पहुँचाती है, क्योंकि बीमारी हमें निरन्तर तन्दुरुस्ती की याद दिलाती है और फिर भी हमें उससे वंचित रखती है। **—रवीन्द्र**

Death's stamp gives value to the coin of life, making it possible to buy with life what is truly precious. **—R.N. Tagore**

मौत की छाप जीवन के सिक्के को मूल्यवान् बना देती है। इसलिए जीवन देकर वास्तव में मूल्यवान् वस्तु का खरीदना सम्भव हो जाता है। **—रवीन्द्र**

मौत तो युद्ध-भूमि में ही क्या, जीवन के हर कदम में मनुष्य पर छायी रहती है, लेकिन केवल युद्ध-भूमि में ही वह श्रम-दायिनी, स्वर्ग-दायिनी तथा गौरव-दायिनी होती है—हर प्रकार से सुखद, हर प्रकार से ग्राह्य।

—मेजर रणजीत सिंह ('जब हमने लाहौर पर गोले बरसाये' धर्मयुग, २५ जनवरी १९८१)

मौन

मौन उस अवस्था को कहते हैं जो वाक्य और विचार से परे है, शून्य ध्यान अवस्था है।······मौन में ही अनन्त वाणी की ध्वनि है। **—अज्ञात**

मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिए तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नहीं। **—महात्मा गांधी**

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयान्नाप्यन्यायेन पृच्छतः।
ज्ञानवानपि मेधावी जड़वत्समुपाविशेत्॥

—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

किसी के प्रश्न किये बिना न बोले, तथा कोई अन्याय से कोई प्रश्न करता हो तब भी न बोले। मेधावी विद्वान् पुरुष (जानने पर भी नियमानुसार प्रश्न किये बिना) मूर्ख पुरुष की तरह व्यवहार करे।

None preaches better than the ant, and she says nothing.
—Franklin

चींटी से अच्छा कोई उपदेश नहीं देता, और वह मौन रहती है। **—फ्रेंकलिन**

"What language is thine, O Sea"
"The language of eternal question"
"What language is thy answer O Sky"
"The language of eternal silence." **—R.N. Tagore**

"हे सागर, तेरी भाषा क्या है ?"
"अनंत प्रश्न की भाषा"
"हे आकाश, तेरे उत्तर की भाषा क्या है ?"
"अनंत मौन की भाषा।" **—रवीन्द्र**

Silence is more eloquent than words. **—Carlyle**

मौन में शब्दों की अपेक्षा अधिक वाक्शक्ति होती है। **—कार्लाइल**

भय से उत्पन्न मौन पशुता और संयम से उत्पन्न मौन साधुता है।
—हरिभाऊ उपाध्याय

मौन अवस्था में "मैं" का लोप हो जाता है। फिर कौन सोचे और बोले।
—अज्ञात

The rest is silence. **—Shakespeare**

विश्राम मौन है। **—शेक्सपियर**

Silence in women is like speech in men; deny it who can.
—Ben Johnson

स्त्री का मौन पुरुष की वाणी के सदृश होता है। इससे कौन इन्कार कर सकता है। **—बेनजानसन**

अप्रिय शब्द बोलने से मौन रहना अच्छा है। **—अज्ञात**

विधाता ने मौन अर्थात् चुप रहना ही अज्ञानता का ढकना बनाया है, यह मनुष्य के अधीन है तथा इसमें और भी अनेक गुण हैं। यही ज्ञानियों की सभा में अज्ञानियों का आभूषण है। **—भर्तृहरि**

मौनं सम्मति लक्षणम्। मौन सम्मति का चिन्ह है। **—कहावत**

मौन अवस्था में भगवद्भक्ति वेग से मनुष्य की ओर बढ़ती है। मनुष्य फिर देव स्वरूप होकर भगवद् रूप को प्राप्त होता है। —अज्ञात

Still waters run deep. —**English Proverb**

स्थिर जल बहुत गहरा होता है। —अंग्रेजी कहावत

बाद विवादे विष घना, बोले बहुत उपाध।
मौन गहे सबकी सहै, सुमिरै नाम अगाध॥ —कबीर

आओ हम मौन रहें ताकि फरिश्तों की काना-फूसियां सुन सकें। —एमर्सन

मौन एक बहुत शक्तिशाली अस्त्र है जिसे हममें से बहुत कम लोग व्यवहार में ला सकते हैं। —अज्ञात

Rapture is born dumb.

अत्यन्त हर्ष गूंगा उत्पन्न हुआ है। —अज्ञात

मौन निद्रा के सदृश है। यह ज्ञान में नयी स्फूर्ति उत्पन्न करता है। —बेकन

जैसे घोंसला सोती हुई चिड़ियों को आश्रय देता है वैसे ही मौन तुम्हारी वाणी को आश्रय देगा। —रवीन्द्र

Silence is wisdom and gets friends.

मौन बुद्धिमानी है और मित्र बनाती है। —कहावत

स्त्री में मौन सर्वोत्तम आभूषण है। —कहावत

Silence in times of suffering is the best. —**Dryden**

विपत्ति में मौन रहना अति उत्तम है। —ड्राइडेन

यज्ञ

यज्ञ करने वाले उत्तम गति को प्राप्त होते हैं। —ऋग्वेद

यज्ञ अर्थात् परोपकारार्थ किये हुए कर्म, भूत मात्र ईश्वर की सृष्टि है। उसकी सेवा देश-सेवा है। और वह यज्ञ है। —महात्मा गांधी

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः। —गीता ३-१३

जो मनुष्य यज्ञ से बचा हुआ खाने वाले हैं, वे सब पापों से छूट जाते हैं।

यज्ञ का अर्थ है मुख्यतः परोपकारार्थ शरीर का उपयोग। —महात्मा गांधी

यज्ञहीन का तेज नष्ट हो जाता है। —**अथर्ववेद**

जिसमें फल की इच्छा नहीं है, जो विधिपूर्वक कर्त्तव्य समझकर, मन को उसमें पिरोकर होता है वह यज्ञ सात्त्विक है। —**गीता १७-११**

हे भरतश्रेष्ठ ! जो फल के उद्देश्य से और साथ ही दम्भ से होता है उस यज्ञ को राजसी जान। —**गीता १७-१२**

जिसमें विधि नहीं है, अन्न की उत्पत्ति नहीं है, मन्त्र नहीं है, त्याग नहीं है, श्रद्धा नहीं है, उस यज्ञ को बुद्धिमान लोग तामस यज्ञ कहते हैं। —**गीता १७-१३**

यज्ञ मनुष्य की परमेश्वर के साथ संगति कराता है।

यज्ञ यज्ञं गच्छ, यज्ञपति गच्छ।
स्वां योनिं गच्छ स्वाहा॥ —**यजुर्वेद ८/२२**

हे यज्ञ ! तू उस यज्ञरूप परमेश्वर को प्राप्त हो तू यज्ञों के पति सब जीवों के पालक प्रभु तक पहुँच। तू अपने परम स्वरूप को प्राप्त कर। यही सबसे उत्तम आहुति है।

यज्ञ परमेश्वर का रूप है, यज्ञ-मनुष्य और देवताओं को मिलाने वाला आदान-प्रदान का चिरन्तन व्यापार है। यज्ञ, मनुष्य को आध्यात्मिक सत्य के विस्तृत क्षेत्र में लाता है। —**दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

यश (दे० 'कीर्ति')

सर्वे नन्दन्ति यशसागते न सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्विषस्पृत् पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय॥ —**ऋग्वेद**

यश मित्र का काम करता है, वह सभा-समाज में प्रधानता प्राप्त करता है। इसको प्राप्त कर सभी प्रसन्न होते हैं, क्योंकि यश के द्वारा दुर्नाम दूर होता है, अन्न प्राप्त होता है, शक्ति मिलती है और सब तरह से लाभ होता है।

भौतिक शरीर से अधिक श्रेष्ठ यशरूपी शरीर है।

—**दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

The temple of fame stands upon the grave, the flame upon its altars is kindled from the ashes of the dead. —**Hazlitt**

कब्र पर यश का मंदिर खड़ा होता है और मृतक की राख से उस पर चिराग जलता है। —**हैजलिट**

यश त्याग से मिलता है, धोखे-धड़ी से नहीं । **—प्रेमचन्द**

जो विचारशील हैं उनका सिद्धान्त है कि यश और सत्कर्म का वही सम्बन्ध है जो धुआँ और अग्नि का । **—अज्ञात**

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust. **—Shirley**

केवल निष्पक्षपाती के कर्म ही मधुर सुगन्ध देते हैं और धूल में खिलते हैं । **—शर्ले**

धन तो काल पाकर क्षय हो जाता है, पर यशरूपी धन अक्षय है, इसको काल भी नष्ट नहीं कर सकता । **—अज्ञात**

The way to fame is like the way to heaven, through much tribulation. **—Sterne**

यश का मार्ग स्वर्ग के मार्ग के तुल्य बड़ा कष्टमय है । **—स्टर्न**

यश-प्राप्ति की मधुर आशा, मनुष्य को जन्म भर सुपथ पर चलाया करती है । **—अज्ञात**

यशस्वी

देवतुल्य विद्वानों, घर के बूढ़ों, संन्यासियों, अतिथियों और मानवता की सहानुभूति के पात्र मनुष्यों की जो ठीक प्रकार से सेवा करता है वही पुरुष संसार में यशस्वी होता है । **—अज्ञात**

यशो गृहीत्वा पृथिवीमनुसंचरेम । **—ऋग्वेद**

हम यशस्वी होकर पृथिवी पर विचरें ।

यशस्वियों का यह भी कर्त्तव्य है कि जो अपने से होड़ कर उनसे अपने यश की रक्षा भी करें । **—कालिदास (रघुवंश ३-४७)**

याचक

तृण लघु तृणात्तूलं तूलादपि च याचकः ।
वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं याचयिष्यति ।। **—चाणक्य**

तृण हल्का होता है तृण से हल्की रुई होती है, रुई से भी हल्का याचक होता हैं ; वायु उसको इसी कारण से नहीं उड़ाती कि कहीं यह मुझसे भी कुछ माँगने लगेगा ।

याचना (दे० 'भिक्षा', 'मांगना')

सेवेव मानमखिलं ज्योत्स्नेव तमो जरेव लावण्यम् ।
हरिहरकथेव दुरितं गुणशतमप्यर्थिता हरति ।। —**हितोपदेश**

जैसे सेवा सब मान को, चाँदनी अंधकार को, बुढ़ापा खूबसूरती को, और विष्णु तथा महादेव की कथा पापों को हरती है वैसे ही याचना सैकड़ों गुणों को हर लेती है ।

निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्घनं नार्दति चातकोऽपि । —**कालिदास**

पपीहा भी बिना जल वाले बादलों से पानी नहीं माँगता ।

वरं विभवहीनेन प्राणैः संतर्पितोऽनलः ।
नोपचारपरिभ्रष्टः कृपणः प्रार्थितो जनः ।। —**हितोपदेश**

धनहीन मनुष्य प्राणों को अग्नि में झोंक दे तो अच्छा, परन्तु अपने मान को छोड़ कर कृपण मनुष्य से याचना करना अच्छा नहीं है ।

याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा । —**कालिदास**

सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी है, पर दुर्जन से सफल याचना भी अच्छी नहीं ।

मांगे मुकुरि न को गयो, केहि न त्यागियो साथ ।
मांगत आगे सुख लह्यो, ते रहीम रघुनाथ ।। —**रहीम**

यात्रा

यात्रा में सत्संगति रास्ते को छोटा बना देती है । —**अज्ञात**

यात्री

अनुभवहीन यात्री पंख रहित पक्षी के सदृश है । —**सादी**

याद (दे० 'स्मृति')

याद हमारे जीवन को हरा-भरा रखने के लिए हमारे साथ प्रभु का पक्षपात है । —**अज्ञात**

Sorrows remembered sweeten present joy. —**Pollak**

दुःख की याद वर्तमान प्रसन्नता को मधुर बना देती है । —**पोलक**

याद पंख है, जो प्राण के परिन्दे को जीवन के उच्चतर आकाश में उड़ने का पुरुषार्थ देती है। —अज्ञात

Pleasure is the flower that fades; remembrance is the lasting perfume. **—Bouffers**

आनंद पुष्प है जो मुरझा जाता है, किन्तु उसकी याद शाश्वत सुगन्ध है। **—बाउफर्स**

Remembrance is the only paradise out of which we cannot be driven away. **—Richter**

याद ही केवल ऐसा स्वर्ग है जहाँ से हम कभी भगाये नहीं जा सकते। **—रिचर**

युग

कलियुग में रहना है या सतयुग में। यह तो स्वयं चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। **—विनोबा**

युद्ध

When a man's fight begins within himself he is worth something. **—Browning**

जब मनुष्य का युद्ध अपने आप के साथ आरम्भ होता है तब उसका कुछ मूल्य होता है। **—ब्राउनिंग**

धर्म-युद्ध में मरने के बाद भी बहुत कुछ बाकी रह जाता है; हार को पार करके मिलती है जीत, और मृत्यु को पार करके मिलता है अमृत। **—रवीन्द्र**

War is business of barbarians. **—Napoleon**

युद्ध असभ्य लोगों का व्यापार है। **—नेपोलियन**

अधर्म-युद्ध में 'मरना' मरना कहलाता है। **—अज्ञात**

युद्ध की विधि भी विजय का आधार है। **—अज्ञात**

War is a profession by which a man cannot live honourably; an employment by which the soldier, if he would reap any profit, is obliged to be false, rapacious and cruel.

—Machiavelli

युद्ध ऐसा पेशा है, जिसमें मनुष्य सम्मानपूर्वक नहीं रह सकता। यह ऐसी नौकरी है, जिसमें लाभ कमाने के लिए सैनिक को छली, लुटेरा और क्रूर बनना पड़ता है। **—मेकियावेली**

धर्म-युद्ध बाहरी जीत जीतने के लिए नहीं होता, वह तो हार कर भी जीतने के लिए होता है। **—रवीन्द्र**

अन्याय के विरुद्ध लड़ा जाने वाला युद्ध जातीय रूप ग्रहण करते ही अपना सारा गौरव और उद्देश्य खो बैठता है।

—पं० राम किंकर उपाध्याय (मानस मुक्तावली भाग-३)

युवक

The youth who does not look up will look down; and the spirit that does not soar is destined perhaps to grovel.

—Disraeli

युवक जो ऊपर नहीं देखता नीचे देखेगा; आत्मा जो आकाश में नहीं उड़ती प्राय: विनीत हो जाती है। **—डिजरायली**

योग

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। **—पातंजलि**

चित्त की वृत्तियों को वश में रखना ही योग है।

सभी चिन्ताओं का परित्याग कर निश्चिंत हो जाना ही योग है।

—योगशास्त्र

योगः कर्मसु कौशलम्—कार्य में कुशलता को योग कहते हैं।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

आत्म-साक्षात्कार का एकमात्र उपाय योग है **—सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)**

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥

—**भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)** ६-१६-१७

जो बहुत भोजन करता है उसका योग सिद्ध नहीं होता, जो निराहार रहता है उसका भी योग सिद्ध नहीं होता, जो बहुत सोता है उसका भी योग सिद्ध नहीं होता, और जो बहुत जागता है उसका भी योग सिद्ध नहीं होता।

जो मनुष्य आहार-विहार में, दूसरे कर्मों में, सोने-जागने में परिमित रहता है, उसका योग दुःखभंजन हो जाता है।

कहते उसे ही योग जिसमें सर्वदुःख वियोग है।
दृढ़चित्त होकर साधने के योग्य ही यह योग है ॥

—दीनानाथ दिनेश (श्री हरिगीता-६-२३)

वह परमात्मा, सर्वात्मा जो सब लोकों का स्वामी है, प्रेरक और प्रकाशक है, प्रत्येक कर्म और पुरुषार्थ का अधीश्वर, द्रष्टा, अनुमन्ता, भर्ता, भोक्ता और महेश्वर है, वह मनुष्य में है—उसे पा लेना ही गीता का योग है।

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

योग-भ्रष्ट

योगभ्रष्ट मनुष्य, जिस स्थान को पुण्यशाली लोग पाते है उसको पाकर और बहुत समय तक वहाँ रहकर, पवित्र और साधनवाले के घर जन्म लेता है। या ज्ञानवान योगी के ही कुल में वह जन्म लेता है। संसार में ऐसा जन्म अवश्य बहुत दुर्लभ है।

—गीता-६-४१,४२

योग-साधना

यम-नियमों की बाड़ी लगाकर यत्न से आसनरूपी किला बनाया जाय; प्राणायाम से उसे निर्मल कर दिया जाय; कुण्डलिनी के प्रकाश में मन और पवन की सहायता से चन्द्रामृत के सरोवर तक जा पहुँचे; प्रत्याहार अपना पराक्रम दिखाकर विकारों की वाचा बन्द कर दे; इन्द्रियों को बाँधकर डाल दिया जाय

और फिर धारणा के घोड़े पर सवार होकर संकल्प की चतुरंगिणी सेना को मन, वुद्धि, चित्त और अहंकार से वश में कर लिया जाय तब तुरन्त ही ध्यान, विजय के गान गाता हुआ भगवद्भक्ति पर तन्मयता का छत्र तान देता है।

—संत ज्ञानेश्वर

योगी

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥ —गीता ६-२९

सर्वत्र समभाव रखने वाला योगी अपने को सब भूतों में और सब भूतों को अपने में देखता है।

न तस्य रोगो न जरा न मृत्युःप्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्। —उपनिषद्

जिसने योगाभ्यास की अग्नि से अपने शरीर को खूब तपा लिया, उसे फिर न रोग सताता है न बुढ़ापा। मृत्यु भी उसके पास आते डरती है।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता) ६-३०

जो मुझे सर्वत्र देखता है और सबको मुझमें देखता है, वह मेरी दृष्टि से ओझल नहीं होता और मैं उसकी दृष्टि से ओझल नहीं होता।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः॥ —गीता ६-३२

. जो मनुष्य अपने जैसा सबको देखता है और सुख हो या दुःख दोनों को समान समझता है वह योगी श्रेष्ठ गिना जाता है।

योग्य

The winds and waves are always on the side of the ablest navigators. —Gibbon

आँधियाँ और समुद्री लहरें निरंतर सबसे योग्य नाविकों का साथ देती हैं।

—गिबन

They are able because they think they are able. **—Virgil**

जो अपने को योग्य समझते हैं वे योग्य हैं। **—वर्जिल**

योग्य आदमी के लिए धन और यश की कमी नहीं रहती। **—अज्ञात**

योग्यता

Ability is of little account without opportunity. **—Napoleon**

बिना अवसर प्राप्त हुए योग्यता से लाभ कम होता है। **—नेपोलियन**

There is great ability in knowing how to conceal one's ability. **—La. Rochefaucould**

अपनी योग्यता को छिपाने के लिए भी बड़ी योग्यता की आवश्यकता होती है। **—ला रोशोको**

केवल सफेद बाल, और सिकुड़ी हुई खाल और पोपला मुँह या झुकी हुई कमर किसी को आदर का पात्र नहीं बना देती। न जनेऊ या तिलक या पंडित या शर्मा की उपाधि ही भक्ति की वस्तु है। **—प्रेमचन्द**

There never was a bad man, that had ability for good service. **—Burke**

जिसमें अच्छी सेवा की योग्यता है, ऐसा मनुष्य कभी बुरा नहीं हो सकता।

From each according to his ability, to each according to his needs. **—Karl Marx**

योग्यता के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को न मिल कर उसकी आवश्यकता के अनुसार उसको मिलना चाहिए। **—कार्ल मार्क्स**

यौवन (दे० 'जवानी')

युवावस्था आवेशमय होती है, क्रोध से आग हो जाती है तो करुणा से पानी भी हो जाती है। **—प्रेमचन्द**

यौवन का शक्ति-प्रवाह बहुधा बौद्धिक आँखों की दृष्टि ज्योति को हरण कर लेता है, मनुष्य की सूझ-बूझ सतर्कता पर पानी फेर देती है। **—अज्ञात**

Youth is a continual intoxication; it is the fever of reason.
—La Rochefaucauld

यौवन एक निरन्तर मादकता है, यह बुद्धि का ज्वर है। **—ला राशोको**

तरुणाई की नयी उमंग ऐसी चीज है कि उसके जोश में आकर मनुष्य पहाड़ को भी चूर-चूर कर सकता है। **—अज्ञात**

युवावस्था बहुत सुन्दर है, सन्देह नहीं, पर जहाँ जीवन की गहनता की जाँच होती है, वहाँ यौवन का कोई मूल्य नहीं रह जाता। **—डास्टाएव्सकी**

जिन्दगी और दौलत की तरह, जवानी को भी जाते देर नहीं लगती।**—अज्ञात**

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किम् यत्र चतुष्टयम्॥ **—हितोपदेश**

यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुत्व (अधिकार) और अविवेक—इन चारों में से एक एक अनर्थकारी होता है। जहाँ ये चारों होते हैं, वहाँ की तो बात ही क्या ?

रक्त (दे० 'खून')

रुधिर के सूखे हुए धब्बे रंग के दाग बन सकते हैं, पर ताजा लोहू आप ही आप पुकारता है। **—प्रेमचन्द**

रक्षा

शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्ष्यं न तद्यशः शस्त्रभृतां क्षिणोति।
—कालिदास

जिसकी शस्त्रों से रक्षा हो ही नहीं सकती, उसकी यदि शस्त्रधारी रक्षा न कर सके तो इससे उसका अपयश नहीं होता।

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि॥ **—चाणक्य**

विपत्ति के लिए धन को बचाना चाहिए, धन से स्त्री को बचाना चाहिए, स्त्री और धन से सदा अपने को बचाना चाहिए।

रण-रूपी नदी

भीष्म द्रोण दोनों दृढ़ तट हैं और जयद्रथ रूपी जल ।
कर्ण तरंग कमल है शकुनी, शल्य रूप घड़ियाल सबल ।।
भारी मगर विकर्ण द्रोणसुत, कृपाचार्य हैं प्रबल प्रवाह ।।
दुर्योधन है भँवर भयंकर, रण-रूपी यह नदी अथाह ।।
किन्तु पार जा पहुँचे पांडव हुई सरल निष्कण्टक राह ।
कैसे हो बाधा दिनेश, जब केशव बने स्वयं मल्लाह ।।

—पद्यानुवादक-दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

रत्न

न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् । **—कालिदास (कुमारसंभव)**

रत्न किसी को खोजने नहीं जाता, उल्टे रत्न को ही लोग खोजते फिरते हैं ।

रमणी (दे० 'नारी', 'स्त्री')

रमणी की कातर दृष्टि में जो बल, जो कर्तृत्व-शक्ति है, वह मानव शक्ति की संचालक है । **—जयशंकर प्रसाद**

Woman, in your laughter, you have the music of the foundation of life. **—R.N. Tagore**

रमणी ! तेरे हास में जीवन-स्रोत का संगीत है । **—रवीन्द्र**

रत्न-जटित मखमली म्यान में जैसे तेज तलवार छिपी रहती है, जल के कोमल प्रवाह में जैसे असीम शक्ति छिपी रहती है वैसे ही रमणी का कोमल हृदय साहस और धैर्य को अपनी गोद में छिपाये रहता है । **—प्रेमचन्द**

रमणी का अनुराग कोमल होने पर भी बड़ा दृढ़ होता है । वह सहज में छिन्न नहीं होता । जब वह एक बार किसी पर मरती है तब उसी के पीछे मिटती भी है । **—जयशंकर प्रसाद (जनमेजय का नागयज्ञ)**

रमणीयता

क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः । **—माघ**

क्षण-क्षण में जो वस्तु को अपूर्व सुन्दरता अथवा नवीनता प्राप्त होती है, वही रमणीयता का सच्चा स्वरूप है ।

रस

एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपो रस अपामोषधयो रस ओषधीनां पुरुषो रसः पुरुषस्य वाग्रसः । **—छांदोग्य उपनिषद्**

समस्त भूतों का रस पृथ्वी है, पृथ्वी का रस जल है, जल का रस औषधियाँ हैं, औषधियों का रस पुरुष है और पुरुष का रस वाणी है ।

जिसने छोटे-छोटे रसों को जीतने का प्रयत्न नहीं किया, उसे वे ऐन मौके पर दगा देते हैं । **—महात्मा गांधी**

रहस्यवाद

तमाम आर्य संस्कृति रहस्यवाद पर प्रतिष्ठित है । रामायण, महाभारत रहस्यवाद के ग्रन्थ हैं । सब ऋषि, कवि; रहस्यवादी थे । रहस्यवाद ही सर्वोच्च साहित्य है । **—निराला**

बुद्धि के सूक्ष्म धरातल पर कवि ने जीवन की अखंडता का मनन किया, हृदय की भाव-भूमि पर उसने प्रकृति में बिखरी सौन्दर्यसत्ता की रहस्यमयी अनुभूति की और दोनों को मिला कर एक ऐसी काव्य-सृष्टि उपस्थित कर दी जो प्रकृतिवाद, हृदयवाद, अध्यात्मवाद, रहस्यवाद आदि अनेक नामों का भार सँभाल सकी ।

—महादेवी वर्मा (**दीपशिखा**)

राग

राग के समान कोई दुख नहीं है । **—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

किसी भी वस्तु तथा व्यक्ति के प्रति अपनत्व के भाव से मन का आकृष्ट होना ही राग है । **—अज्ञात**

राग-द्वेष

राग-द्वेष ईर्ष्या मद मोहू । जनि सपनेहु इनके बस होहू ।

—तुलसी (**मानस, अयोध्या०**)

जब तक राग-द्वेष वर्तमान है , तब तक कोई भी न तो योगी है, न भक्त है और न ज्ञानी ही है । **—अज्ञात**

राग-द्वेष के अभाव से ही कर्म-योग, भक्ति-योग, ज्ञान-योग की सिद्धि होती है; जब तक राग-द्वेष है तब तक विषमता है और जब तक विषमता है, तब तक मनुष्य परमात्मा से बहुत दूर है। **—अज्ञात**

राजतिलक

राजतिलक का वह अधिकारी है।
जिसके श्रम की दुनिया आभारी है॥
—रमाकान्त श्रीवास्तव (युग की नवल वंदना के स्वर)

राजदूत

An ambassador is an honest man who lives and intrigues abroad for the benefit of his country.

राजदूत एक ईमानदार व्यक्ति है, जो विदेश में अपने देश के लाभार्थ रह कर षड्यंत्र रचता है। **—अज्ञात**

नीति विरोध न मारिय दूता। **—तुलसी (मानस, सुन्दर०)**

सहज विवेक, आकर्षक रूप, मननशील विद्या, ये तीनों जिसमें हों, वही राजदूत बनने योग्य है। **—संत तिरुवल्लुवर**

दयालु हृदय, उच्च कुल और राजाओं को प्रसन्न करने वाले उपाय—ये सब राजदूतों के विशेष गुण हैं। **—संत तिरुवल्लुवर**

प्रेम-मय प्रकृति, सुतीक्ष्ण बुद्धि और वाक्पटुता—ये तीनों बातें राजदूत के लिए अनिवार्य हैं। **—संत तिरुवल्लुवर**

राजधर्म

राजधर्म सब होइ सूर तहँ, प्रजा न जाय सताए। **—सूरदास**

मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान कहँ एक।
पालै पोषै सकल अंग तुलसी सहित विवेक। **—तुलसी**

राजनीति

राजनीति साधुओं के लिए नहीं है। **—लोकमान्य तिलक**

There is no gambling like politics. **—Disraeli**

राजनीति के सदृश कोई दूसरा जुआ नहीं है। —**डिजरायली**

Politics is the madness of the many for the gain of the few. —**Alexander Pope**

राजनीति कुछ मनुष्यों के लाभार्थ बहुत-से व्यक्तियों का उन्माद है। —**एलेक्जेन्डर पोप**

मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। धर्म से विलग राजनीति मृतक शरीर के तुल्य है जो केवल जला देने के योग्य है। —**महात्मा गांधी**

राजनीति घुड़दौड़ का घोड़ा है। पेशेवर घुड़सवार को जानना चाहिए कि यदि गिरे तो इस तरह कि चोट कम से कम लगे। —**इडौर्ड हेरीऑट**

There is no more independence in politics than there is in jail. —**Wila Rogers**

कारागार की अपेक्षा राजनीति में उससे अधिक स्वतन्त्रता नहीं है। —**विल रोजर्स**

Modern politics is, at bottom, a struggle, not of men, but of forces. —**Henry Adam**

आधुनिक राजनीति मूलतः मनुष्यों का नहीं अपितु शक्तियों का संघर्ष है। —**हेनरी एडम**

राजनीति में कुंज की पुष्प-शैय्या जल उठती है। लाल फूल अंगारों का रूप धारण कर लेते हैं और शीतल समीर सर्पों की फुफकार बन जाती है। —**डा० रामकुमार वर्मा**

All political parties die at last by swallowing their own lies. —**John Arbuthnot**

समस्त राजनीतिक दल अंत में अपने ही असत्यों से नष्ट हो जाते हैं। —**जान अरबुथनट**

Practical politics consists in ignoring facts. —**Henry Adam**

व्यवहारिक राजनीति यथार्थ को स्वीकार न करने में है। —**हेनरी ऐडम**

Politics is the art of looking for trouble, finding it everywhere diagnosing it wrongly and applying unsuitable remedies.

—Sir Ernest Benn

राजनीति विपत्तियों को खोजने, उसे सर्वत्र प्राप्त करने, गलत निदान करने और अनुपयुक्त चिकित्सा करने की कला है। **—सर अर्नेस्ट बेन**

Knowledge of human nature is the beginning and the end of political education. **—Henry Adam**

मानव स्वभाव का ज्ञान ही राजनीतिक शिक्षा का आदि और अन्त है।

—हेनरी ऐडम

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा॥ **—भर्तृहरि**

राजनीति वेश्या के समान अनेक प्रकार से व्यवहार में लायी जाती है। कहीं झूठी. कहीं सच, कहीं कठोर और प्रियभाषिणी होती है, कहीं हिंसक और दयालु होती है; कहीं कृपण और कहीं उदार होती है, कहीं अधिक द्रव्य व्यय करने वाली और कहीं बहुत संचय करने वाली होती है।

राजनीति कहती है, हाथ आये दुश्मन को छोड़ना और अपनी हार खरीदना एक ही चीज के दो नाम हैं। **—सुदर्शन**

राजनीतिज्ञ

राजनीतिज्ञ पारे की तरह है। अगर तुम उस पर उंगली रखने की कोशिश करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता। **—आस्टिन**

A politician thinks of the next election, a statesman of the next generation. **—J. F. Clarke**

राजनीतिज्ञ अगले चुनाव के बारे में और कुशल राजनेता अगली पीढ़ी के बारे में सोचता है। **—जे० एफ० क्लार्क**

राजनीति-जीवियों की, उनकी नाना छल-चतुराइयों के लिए, हम तारीफ कर सकते हैं, किन्तु उनके प्रति भक्ति नहीं कर सकते। **—रवीन्द्र**

An empty stomach is not a good political adviser.

—A. Einstein

खाली पेट राजनीतिज्ञ अच्छा परामर्शदाता नहीं है। **—आइंस्टीन**

राजनीतिक उन्नति

जिस देश को राजनीतिक उन्नति करना हो वह यदि पहले सामाजिक उन्नति नहीं कर लेगा, तो राजनीतिक उन्नति आकाश में महल बनाने जैसी होगी।

—महात्मा गांधी

राजमद

सब ते कठिन राजमद भाई। —तुलसी (मानस, अयोध्या०)

सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू। केहि न राज मद दीन्ह कलंकू॥ —तुलसी

राजसत्ता

यदि राजसत्ता अत्याचारी हो तो किसान का सीधा उत्तर है—जा, जा, तेरे ऐसे कितने ही राज मैंने मिट्टी में मिलते देखे हैं। —सरदार पटेल

राजशक्ति का स्थान जनशक्ति से ऊँचा नहीं। —जय प्रकाश नारायण

राजा

राजा सत्यं च धर्मश्च राजा कुलवतां कुलम्।
राजा माता-पिता चैव राजा हितकारो नृणाम्॥

—वाल्मीकि (रा०, अयो०)

राजा सत्य है, राजा धर्म है, राजा कुलीन पुरुषों का कुल है, राजा ही माता और पिता है तथा राजा समस्त मानवों का हित-साधन करने वाला है।

सूम सर्वभक्षी दैववादी जो कुवादी जड।
अपयशी ऐसी भूमि भूपति न सोहिय॥

—केशवदास (रामचन्द्रिका)

विशि राजा प्रतिष्ठितः। —यजुर्वेद

राजा की स्थिति प्रजा पर ही निर्भर होती है।

जिसे पुरवासी और देश-वासियों को प्रसन्न रखने की कला आती है वह राजा इस लोक और परलोक में सुख पाता है। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

यदि राजा दुश्चरित्र हो तो सारे राष्ट्र को सन्तप्त कर डालता है। —वेदव्यास

अधर्मी राजा के अत्याचार से प्रजा का नाश हो जाता है। —**वेदव्यास**

जिस राजा की कृपा सरोवर में कमलों के समान विकसित होती रहती है वह सब प्रकार से पुण्य फलों का भागी होता है और अधिक दिन तक उसका यश छाया रहता है। —**वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

यथा दृष्टिः शरीरस्य नित्यमेव प्रवर्तते।
तथा नरेन्द्रो राष्ट्रस्य प्रभवः सत्यधर्मयोः॥ —**वाल्मीकि**

जैसे दृष्टि सदा ही शरीर के हित में लगी रहती है, उसी प्रकार राजा राष्ट्र को सत्य और धर्म में लगाने वाला होता है।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक-अधिकारी॥
—**तुलसी** (**मानस, अयोध्या०**)

जो राजा प्रजा की अच्छी तरह रक्षा नहीं करता वह चोर के समान है।
—**वेदव्यास** (**महाभारत, शांतिपर्व**)

नीति न तजिय राज-पद पाये। —**तुलसी** (**मानस, अयोध्या०**)

सोचिय नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना॥
—**तुलसी** (**मानस, अयोध्या०**)

नाराजके जनपदे स्वकं भवति कस्यचित्।
मत्स्या इव जना नित्यं भक्षयन्ति परस्परम्॥ —**वाल्मीकि**

बिना राजा के देश में किसी की कोई वस्तु अपनी नहीं रहती। मछलियों की भाँति सब लोग सदा परस्पर एक दूसरे को अपना ग्रास बनाते—लूटते-खसोटते रहते हैं।

बुद्धिशस्त्रः प्रकृत्यङ्गो घनसंवृत्तिकञ्चुकः।
चारेक्षणो दूतमुखः पुरुषः कोपि पार्थिवः॥
—**माघ (शिशुपालवध)**

बुद्धि ही जिसका शस्त्र है, सेना, अमात्य, आदि राज्याङ्ग ही जिसके अंग हैं, दुर्भेद्य मन्त्र की सुरक्षा ही जिसका कवच है, गुप्तचर ही जिसके नेत्र हैं, संदेशवाहक दूत ही जिसका मुख है, इस प्रकार का राजा कोई अलौकिक ही पुरुष है।

सोई नृपति जो तेजयुत, देत तदपि नहिं ताप ।
लरत भूपति नित्य उठि, ते वसुधा अभिशाप ।।

—द्वारका प्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

राजाश्रय

महात्त्वाकांक्षी विद्वान्, शिल्पकार्य में निपुण कारीगर, शूरवीर एवं सेवा-वृत्ति में चतुर लोगों के लिए राजा के बिना कहीं दूसरी जगह आश्रय नहीं मिलता ।

—पंचतंत्र

अपने मित्रों और हितैषियों का उपकार करने के लिए तथा शत्रुओं का अपकार करने के लिए बुद्धिमान लोग राजाओं का आश्रय ग्रहण करते हैं; केवल अपने पेट को कौन नहीं भर लेता । —पंचतंत्र

राम नाम महिमा

नाम राम को अंक है, सब साधन है सून ।
अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दस गून ।।

—तुलसी (दोहावली)

राम-राम मृत्यु के दुःख को मिटा देता है, यह राम-नाम का क्या कोई छोटा-मोटा चमत्कार है । —महात्मा गांधी

रामनाम मणि-दीप धरु जीह-देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार ।। —तुलसी

तुलसी 'रा' के कहत ही, निकसत सकल विकार ।
पुनि आवन पावत नहीं, देत "म" कार किवार ।। —तुलसी

रामनाम सुन्दर करतारी । संशय विहग उड़ावन हारी । —तुलसी

संतों ने साहित्य का सारा सार रामनाम में ला रखा है । —विनोबा

तुलसी राम सनेह करु, त्यागु सकल उपचार ।
जैसे घटत न अंक नौ, नौ के लिखत पहार ।। —तुलसी

ब्रह्म राम तें नामु बड़, बरदायक बरदानि ।
राम चरित सत्-कोटि महँ, लिय महेस जिय जानि ।।

राम नाम कलि कामतरु, सकल सुमंगल कन्द ।
सुमिरत करतल सिद्धि सब, पग पग परमानन्द ।। —तुलसी (दोहा०)

श्वास श्वास पर राम भज, वृथा श्वास मत खोय।
ना जाने यह श्वास को, आवन होय न होय॥ —तुलसी

जो आनन्द सिन्धु सुख रासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी॥
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोकदायक विश्रामा॥
—तुलसी (रा० मा० बा०)

राम-राज्य

धार्मिक दृष्टिकोण से राम-राज्य पृथ्वी पर ईश्वरीय कहा जा सकता है। राजनीतिक दृष्टि से राम-राज्य एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र है, जहाँ अधिकार, वर्ण, स्त्री तथा पुरुष के विभेद पर आश्रित असमानताएँ तिरोहित हो जाती हैं। इस प्रजातंत्र में भूमि तथा राजसत्ता की अधिकारिणी प्रजा है। **—महात्मा गांधी**

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुंहि व्यापा॥—तुलसी

रामायण

मैं तुलसीदास जी की रामायण को भक्ति-मार्ग का सर्वोत्तम ग्रन्थ समझता हूँ। …रामचरित मानस विचार-रत्नों का भंडार है। **—महात्मा गांधी**

रामायण में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की निर्मल त्रिवेणी का प्रवाह बहता है।
—महामना पं० मदनमोहन मालवीय

रामचरित मानस विमल, संतन जीवन प्रान।
हिन्दुआन को वेद सम, यवनहि प्रगट कुरान॥ **—रहीम**

गीता के बाद यदि किसी ग्रन्थ ने देशोद्धार का समुचित मार्ग दिखाया है तो तुलसीकृत रामायण ने ही। **—अज्ञात**

रामायण सुर तरु की छाया।
दुःख भय दूर निकट जो आया॥ **—तुलसी**

रामायण के द्वारा भारतवर्ष से स्वार्थपरता का दोष जितना दूर हुआ है उतना किसी भी नीतिवान्, धर्मविद्, समाज-सुधारक, राजपुरुष और राजा के द्वारा नहीं हो सका। **—बंकिमचन्द्र**

यह ग्रन्थ समस्त मनुष्य जाति को अनिर्वचनीय सुख और शान्ति पहुँचाने का साधन है। **—महामना पं० मदनमोहन मालवीय**

रामायण हमारा क्षीर सागर है। —**विनायक दामोदर सावरकर**

राष्ट्र

विवेकपूर्ण लोगों का छोटा-सा दल असंख्य मूर्खों के जंगल से अच्छा है, और जिस राष्ट्र ने अपने स्वरूप को पहचान लिया वही सच्चे साम्राज्य को पाने का अधिकारी है। —**रस्किन**

राष्ट्राणि वै विशः।

जनता ही राष्ट्र को बनाती है। —**ऐतरेय ब्राह्मण**

जिस राष्ट्र में चरित्रशीलता नहीं है उसमें कोई योजना काम नहीं कर सकती। —**विनोबा**

प्रेम और भ्रातृत्व को अपना कर एक विशाल कुटुम्ब की तरह अपनी वृद्धि करने में ही राष्ट्र की सच्ची शक्ति वर्तमान है। —**रस्किन**

Individuals may form communities, but it is institutions that can create a nation. —**Disraeli**

व्यक्तियों से केवल जातियाँ बनती हैं परन्तु संस्थाओं से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। —**डिजरायली**

जिस राष्ट्र का व्यापार असत्य पर चलता है उसका शील समाप्त हुआ ही समझना चाहिए। —**विनोबा**

राज्यों की शक्ति का उतार-चढ़ाव दया और न्याय के अनुपात के आधार पर अवलम्बित है। जनसंख्या की वृद्धि से अथवा दूसरे देशों को हड़प कर कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता। —**रस्किन**

राष्ट्र गीत

ओ३म् यार्णवेधिसलिलमग्र आसीत् यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः।
यस्यां हृदयं परमे व्योमन् त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः॥
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे॥

सागर के वक्षस्थल में हो जलमय पहले जो थी स्थित,
जो मनीषिजन-द्वारा नित-नित मायाओं से थी सेवित;

परम व्योम में अमृत हृदय है जिसका सत् से आलोकित,
करे भूमि वह राष्ट्र हमारा कान्ति और बल से भूषित।

—राज नाथ पांडेय अनुवादक

राष्ट्र-निर्माता

जिन्होंने राष्ट्रों का निर्माण किया है उनकी कीर्ति अमर हो गयी है।

—प्रेमचन्द

राष्ट्र-सेवा

राष्ट्रसेवा महँगा सौदा है। **—प्रेमचन्द**

राष्ट्रीयता

राष्ट्रीयता तो पुरानी पड़ी हुई सड़ी मिठाई है। छोटी नासमझ चीटियां स्वाद के मोह से उसमें चिपकी रहती हैं। वह बुद्धि के लिए एक मोटा घेरा है। मानव को मानव से दूर रखने का इन्द्र-जाल है। **—अज्ञात**

Nationalism is an infantile disease. It is the measles of mankind. **—A. Einstien**

राष्ट्रीयता शिशु रोग है। यह मानव का शीतला रोग है।

—एल्बर्ट आइन्सटीन

अपनी राष्ट्रीय मनोवृत्ति को शुद्ध रखो, आपकी राष्ट्रीय आँखें स्वयं ठीक हो जायेंगी। **—रस्किन**

रिक्शावाला

मानव की छाती पर बैठा,
झूम रहा दानव मतवाला।
सींग पूंछ से हीन पशु बना,
खींच रहा है रिक्शावाला।
मुंह से झाग स्वेद तन से
ठोकर खा खाकर गिरता जाता
हाय नहीं यह देखा जाता।

—शिवमंगल सिंह 'सुमन' (जीवन के गान)

रिपु

रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु करि गनिय न ताहु ।
अजहुँ देत दुख रवि ससिहिं, सिर अवसेषित राहु ।।

—तुलसी (मानस, बाल०)

रिपु पर दया परम कदराई । **—तुलसी (मानस, अरण्य०)**

Heat not a furnace for your foe so hot that it do singe yourself. **—Shakespeare**

अपने रिपु के लिए भट्टी को इतना अधिक गर्म न कर कि वह तुझे ही भून डाले । **—शेक्सपियर**

रिश्तेदार

No man will be respected by others who is despised by his own relatives. **—Plautus**

कोई भी ऐसा व्यक्ति दूसरों से सम्मान न पायेगा जिससे खुद उसके रिश्तेदार ही घृणा करते हों। **—प्ल्यूटस**

रिश्वत

रिश्वत अब भी नब्बे फीसदी अभियोगों पर पर्दा डालती है । फिर भी पाप का भय प्रत्येक हृदय में है । **—प्रेमचन्द**

न्यायाधीश और सिनेट के सदस्य भी रिश्वत के द्वारा मोल लिये गये हैं ।

—पोप

रिश्वत देकर तो लोग खून भी पचा जाते हैं । **—प्रेमचन्द**

The universe would not be rich enough to buy the vote of an honest man. **—St. Gregary**

सच्चे आदमी का वोट खरीदने के लिए समस्त विश्व की सम्पदा भी पर्याप्त नहीं है । **—सेंट ग्रेगोरी**

चोर को अदालत में बेंत खाने से उतनी लज्जा नहीं आती, स्त्री को कलंक से उतनी लज्जा नहीं आती, जितनी किसी हाकिम को अपनी रिश्वत का पर्दा खुलने से आती है । **—प्रेमचन्द**

रीति-रिवाज

रीति-रिवाज बुद्धिहीनों के कानून हैं। **—बैनवुग**

रुचि

हमारी रुचि हमारे जीवन की परख है, हमारे मनुष्यत्व की पहचान है।
—रस्किन

भिन्नरुचिर्हि लोक: **—कालिदास (रघुवंश ६-३०)**
लोगों की अपनी-अपनी रुचि होती है।

रुदन

रुदन करना वीरों को उचित नहीं, रोना-धोना स्त्रियों का काम है।
—जयशंकर प्रसाद

Weep for love, but not for anger; a cold rain will never bring flowers. **—Duncan**

क्रोध के लिए नहीं वरन् प्यार के लिए रोओ, सर्द बारिश फूल नहीं खिलाती।
—डन्कन

रूढ़ियाँ

रूढ़ियाँ कभी धर्म नहीं होतीं। वे एक-एक समय की बनी हुई सामाजिक शृंखलाएँ हैं, वे पहले की शृंखलाएं जिनसे समाज में सुथरापन था, मर्यादा थी पर अब जो जंजीरें बन गयी हैं। **—निराला**

रूप

रूप तो फूल की ही तरह है, पर उसमें प्रेम की सुगन्ध नहीं है।
—डा० राम कुमार वर्मा

पुरुषों के लिए अगर रूप-तृष्णा निन्दाजनक है तो स्त्रियों के लिए विनाश-कारक है। **—प्रेमचन्द (प्रेम-पचीसी)**

रूप जब सो जाता है तो और भी नशीला हो जाता है, और जुल्फें जब बिखर जाती हैं तो और भी जहरीली हो जाती हैं। **—सुदर्शन**

कुरूपों का रूप विद्या और तपस्वियों का रूप क्षमा है। —अज्ञात

रंग कैसा ही सुन्दर हो, रूप की कमी नहीं पूरी कर सकता। —प्रेमचन्द

रूप ही दर्शन की सार्थकता है। —निराला (निरुपमा)

असली रूप तो अपने गुणों से ही झलकता है। अपनी छाप गुणवान् होकर डालनी चाहिए, रूपवान् होकर नहीं। —महात्मा गांधी

रूप के साथ आँखों का घनिष्ठ संबंध है। पतंग एक दूसरे पतंग को जल कर भस्म होते देखता है, पर रह नहीं सकता। इतना बड़ा प्रत्यक्ष ज्ञान भी रूप के मोह से उसे बचा नहीं सकता। —निराला (निरुपमा)

रूप और गर्व में चोली-दामन का नाता है। —प्रेमचन्द

रूप की चौखट पर बड़े-बड़े महीप नाक रगड़ते हैं। —प्रेमचन्द (गोदान)

रूप के सामने धर्म-ईमान काफूर हो जाता है। —अज्ञात

रोग (दे० 'बीमारी')

को दीर्घरोगो भव एव साधो। —स्वामी शंकराचार्य

बड़ा भारी रोग क्या है? हे साधो, बार-बार जन्म लेना ही।

बड़े आदमियों के रोग भी बड़े होते हैं। वह बड़ा आदमी ही क्या जिसे कोई छोटा रोग हो। —प्रेमचन्द

पावक बैरी रोग ऋन, सपनेहुँ राखिय नाहिं।
ये थोरे ही बढ़हिं पुनि, महाजतन सों जाहिं॥ —अज्ञात

मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला॥
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा॥
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्निपात दुखदाई॥
विषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना॥
ममता दादु कंडु इरषाई। हरष विषाद गरह बहुताई॥
पर सुख देखि जरनि सोई छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई।
अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ॥
तृष्णा उदरवृद्धि अति भारी। त्रिविध ईषणा तरुन तिजारी॥
युग विधि ज्वर मत्सर अविवेका। कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका॥
—तुलसी (मानस, उत्तर)

The disease of an evil conscience is beyond the practice of all the physicians of all the countries in the world.

—Gladstone

पापी अंतःकरण का रोग संसार के सभी देशों के सभी चिकित्सकों की चिकित्सा के परे है। **—ग्लैडस्टोन**

विद्यावंत सुरूप गुण, सुत दारा अरु भोग।
नारायण हरि भक्त बिन, ये सब ही हैं रोग॥

—नारायण स्वामी

रोना (देखो रुदन)

रोना और हँसना ये ही तो मानवी सभ्यता के आधार हैं, इसी के लिए सभ्यता की कल्पना है—इसी के साधन मनुष्य की उन्नति के लक्षण कहे जाते हैं।

—जयशंकर प्रसाद

लक्ष्मी

न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, वह जैसे चाहती है नचाती है।

—प्रेमचन्द

गरीबों की पेटपूजा करना ही लक्ष्मी की श्रेष्ठ पूजा है। **—अज्ञात**

धृतिः क्षमा दमः शौचं कारुण्यं वागनिष्ठुरा।
मित्राणां चाऽनभिद्रोहः सप्तैताः समिधः श्रियः॥ **—वेदव्यास (महा०)**

धैर्य धारण करना, क्रोध न करना, इन्द्रियों को वश में करना, पवित्रता, दया, सरलता से भरे वचन और मित्रों से द्वेष न करना, ये सात लक्ष्मी के साधन हैं।

Riches are a blessing only to him who makes them a blessing to others. **—Fielding**

लक्ष्मी उसी के लिए वरदान है जो उसे दूसरों के लिए वरदान बना देता है।

—फीलिंडग

कुचैलिनं दन्तमलोपधारिणं, बह्वाशिनं निष्ठुरभाषिणं च।
सूर्योदये चास्तमिते शयानं विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणिः॥

—चाणक्य

मलिन वस्त्र वाले, गन्दे दाँत वाले, बहुत खाने वाले, कठोर बोलने वाले और सूर्य के उदय और अस्त होने के समय में सोने वाले को लक्ष्मी त्याग देती है चाहे वह विष्णु ही क्यों न हो।

Riches do not delight us so much with their possession, as torment us with their loss. **—St. Gregory**

धन पास में रहने से उतना आनन्द नहीं होता जितना उसके खो जाने, छिन जाने से दुःख होता है। **—सेंट ग्रेगरी**

मूर्खा यत्र न पूज्यन्ते धान्यं यत्र सुसंचितम्।
दांपत्ये कलहो नास्ति तत्र श्रीः स्वयमागता॥ **—चाणक्य**

जहाँ मूर्ख नहीं पूजे जाते, जहाँ अन्न संचित रहता है और जहाँ स्त्री-पुरुष में कलह नहीं होती वहां लक्ष्मी आप ही आकर विराजमान रहती हैं।

रमन्ता पुण्या लक्ष्मीः॥ **—अथर्ववेद ७-११५-४**

लक्ष्मी पुण्यात्माओं के यहाँ रहती है।

जिस तरह एक जवान स्त्री बूढ़े पुरुष का आलिंगन करना नहीं चाहती, उसी तरह लक्ष्मी भी आलसी, भाग्यवादी और साहसविहीन व्यक्ति को नहीं चाहती।

—अज्ञात

नैतिक स्वरूपों के घेरे में लक्ष्मी रहती है। उसे कोई लोहे की शृंखलाओं में जकड़ नहीं सकता। **—अज्ञात**

वेदान्त धर्म का सच्चा अधिकारी और पात्र वही हो सकता है जो सामर्थ्यवान् हो, सम्पन्न हो, लक्ष्मी जिसके चरण चूमती हो। **—विवेकानन्द**

धनवान् लोगों के मन में हमेशा शंका रहती है, इसलिए यदि हम लक्ष्मी देवी को खुश करना चाहते हैं तो हमें अपनी पात्रता सिद्ध करनी पड़ेगी।

—महात्मा गांधी

लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत् ।

—कालिदास (कुमारसंभव)

जो लक्ष्मी को पाना चाहता हो उसे लक्ष्मी भले ही न मिले, पर जिसे स्वयं लक्ष्मी चाहे वह उस को न मिले, यह कैसे हो सकता है ।

इन्द्रदेव के आमंत्रण से महादेवी लक्ष्मी गद्गद् हो गयीं और वरद हस्त उठाकर बोलीं —

"देवराज ! जब किसी राष्ट्र में प्रजा सदाचार खो देती है, तो वहाँ की भूमि जल, अग्नि कोई भी मुझे स्थिर नहीं रख सकते । मैं लोकश्री हूँ, मुझे लोकसिंहासन चाहिए । व्यक्ति के सदाचारी मानस में ही मैं अचल निवास करती हूँ ।"

—राजगोपालाचारी

लक्ष्मी लोहे की नंगी तलवार से जीती जाती है, उसी की सीमाओं में वह रहती है । **—अज्ञात**

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय ।
पुरुष पुरातन की वधू, कस न चंचला होय ॥ **—रहीम**

श्रीर्मङ्गलात् प्रभवति प्रागल्भ्यात् संप्रवर्धते ।
दाक्ष्यात्तु कुरुते मूलं संयमात् प्रतितिष्ठति ॥ **—वेदव्यास (महा०)**

लक्ष्मी शुभ कार्य से उत्पन्न होती है, चतुरता से बढ़ती है और अत्यन्त निपुणता से जड़ बाँधती है तथा संयम से स्थिर रहती है ।

लक्ष्मी जाति, कुल थोड़े ही देखती है । **—रवीन्द्र (कुमुदिनी)**

उत्साहसंपन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम् ।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ॥ **—पंचतंत्र**

जो उत्साही है, दीर्घसूत्री (आलसी) नहीं है, कार्य करने की विधि को जानता है, किसी भी प्रकार के व्यसन में आसक्त नहीं है, बहादुर है, किये हुए उपकार को मानता है और जिसकी मैत्री दृढ़ होती है ; ऐसे सज्जन के पास रहने के लिए लक्ष्मी स्वयं ही उपस्थित हो जाती है ।

लक्ष्मी ध्यान

पद्ममुखी श्री पद्मवासिनी प्रमुदित पद्मों से उत्पन्न ।
पद्मलोचनी के पूजन से मैं हो रहा सुखी सम्पन्न ॥

माधव प्रिया विष्णु पत्नी माधवी क्षमारूपिणी उदार ।
श्री अच्युतवल्लभा सखी को नमस्कार हो सौ-सौ बार ।।
महिमामयी महालक्ष्मी का रूप लिया हमने पहिचान ।
मंगल मंडित विष्णु प्रिया का हम श्रद्धा से करते ध्यान ।।
प्रेरित करें स्वधर्म लाभ में शुभ में श्री लक्ष्मी सानन्द ।
स्वस्थ सुखी सौभाग्य शील हम रहें नित्य निर्भय निर्द्वन्द ।।
हे श्री लक्ष्मी तेज शक्ति दो धन ऐश्वर्य अन्न आरोग्य ।
संतति सुख सौभाग्य सहित हों हम सत संवत जीने योग्य ।।

—ऋग्वेद के लक्ष्मी सूत्र से (पद्यानुवादक पं० दीनानाथ दिनेश)

लक्ष्य

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ।।

—महर्षि अंगिरा

ओंकार ही धनुष है, आत्मा ही बाण है, (और) परब्रह्म परमेश्वर ही उसका लक्ष्य कहा जाता है । (वह) प्रमादरहित मनुष्य द्वारा ही बींधा जाने योग्य है । (अतः) उसे बेधकर बाण की भाँति (उस लक्ष्य में) तन्मय हो जाना चाहिए ।

आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् । **—अथर्ववेद**

उन्नत होना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है ।

Have a purpose in life and having it thrown into your work such strength of mind and muscle as God has given you.

—Carlyle

अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ, और इसके बाद अपना सारा शारीरिक और मानसिक बल, जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें लगा दो । **—कार्लाइल**

मनुष्य देवत्व का अंग और संसार में उसका प्रतिनिधि है और मानवजीवन का अंतिम लक्ष्य अपने में देवत्व को पहचानना और उसे प्राप्त करना है ।

—अज्ञात

लक्ष्यहीन जीवन जंगल में भटकने के समान है । **—अज्ञात**

एक ही लक्ष्य की ओर अपने मन, वचन और काया को लगा देने से संसार में बड़ी सफलताएँ होती हुई दीख पड़ती हैं। —अज्ञात

लक्ष्य की सिद्धि अन्याय तथा अनीति से नहीं; सत्य और धर्म से ही हो सकती है। —पं० कमलापति त्रिपाठी

लगन

The superior man is slow in his words and earnest in his conduct. **—Confucius**

श्रेष्ठ पुरुष बोलता कम है, पर व्यवहार में अधिक सक्रियता दिखलाता है। **—कन्फ्यूशियस**

लगन को काँटों की परवाह नहीं होती। **—प्रेमचन्द**

Earnestness is enthusiasm tempered by reason. **—Pascal**

विवेक द्वारा मृदु किया गया उत्साह ही लगन है। **—पास्कल**

A man in earnestness finds means or if he cannot, create them. **—Channing**

जिसको लगन है वह साधन भी पा जाता है, यदि नहीं पाता तो वह उन्हें पैदा करता है। **—चैनिंग**

लघुता

ऊँचे पानी ना टिके, नीचे ही ठहराय।
नीचा होय तो भरि पियै, ऊँचा प्यासा जाय॥
सब ते लघुताई भली, लघुता ते सब होय।
जस द्वितिया को चन्द्रमा, शीश नवैं सब कोय॥ **—कबीर**

देख छोटों को है अल्लाह बड़ाई देता।
आस्मां आँख के तिल में है दिखाई देता॥ **—ज़ौक**

जो काम घड़ों जल से नहीं हो सकता उसे क्वाथ के दो घूंट कर देते हैं। जो काम तलवार से नहीं होता, उसे काँटा कर देता है। **—सुदर्शन**

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय॥ **—रहीम**

पञ्चत्वमेव हि वरं लोके लाघववर्जितम् ।
नामरत्वमपि श्रेयो लाघवेन समन्वितम् ।। —अज्ञात

किसी के सामने छोटा न बन कर शान से मर जाना भी अच्छा है परन्तु संसार में लघुता से युक्त अमरत्व भी प्राप्त हो तो वह अच्छा नहीं है ।

लघुता से प्रभुता मिलै, प्रभुता से प्रभु दूरि ।
चींटी लै शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि ।। —कबीर

नानक नन्हें हो रहो जैसे नन्ही दूब ।
बड़ी घास जल जायगी दूब खूब की खूब ।। —नानक

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि ।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि ।। —रहीम

परस्तुतगुणो यस्तु निर्गुणोऽपि गुणी भवेत् ।
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः ।। —चाणक्य

जिस गुण का दूसरे लोग वर्णन करते हैं उससे निर्गुण भी गुणवान् होता है । इन्द्र भी अपने गुण की स्वयं प्रशंसा करने से लघुता को प्राप्त होता है ।

लज्जा

जब किसी कौम की औरतों में गैरत नहीं होती तो वह कौम मुर्दा हो जाती है । —प्रेमचन्द

When a girl ceases to blush she has lost the most powerful charm of her beauty. —St. Gregary

यदि कोई लड़की लज्जा त्याग देती है तो वह अपनी सुंदरता का सबसे बड़ा आकर्षण खो देती है । —सेंट ग्रेगरी

लाली बन सरस कपोलों में, आँखों में अंजन सी लगती ।
कुंचित अलकों सी घुंघराली, मन की मरोर बन कर जगती ।।
—जयशंकर प्रसाद

A blush is a sign that nature hangs to show where chastity and honour dwell. —Gotthold

लज्जा एक संकेत है जिसे प्रकृति पवित्रता और सम्मान का निवास दिखाने के लिए बाहर लटका देती है । —गाटहोल्ड

The blush is nature's alarm at the approach of sin, and her testimony to the dignity of virtue. **—Fuller**

पाप के समय लज्जा या संकोच प्रकृति की चेतावनी है और पुण्य के गौरव का प्रमाण है। **—फुलर**

धनहीन प्राणी को जब कष्ट-निवारण का कोई उपाय नहीं रह जाता तो वह लज्जा को त्याग देता है। **—प्रेमचन्द**

मैं वह हलकी सी मसलन हूँ,
जो बनती कानों की लाली॥ **—जयशंकर प्रसाद**

लज्जा नारी जाति का अमूल्य आभूषण है। इसे पहन कर असुन्दरी भी आकर्षण का केन्द्र बन जाती है। **—अज्ञात**

मर जाऊँ माँगूं नहीं, अपने तनु के काज।
परमारथ के कारने, मोहिं न आवे लाज॥ **—अज्ञात**

लड़की

To find out a girl's fault praise her to her girl friends. **—Franklin**

यदि किसी लड़की की त्रुटि को जानना चाहते हो, तो उसकी सखियों में उसकी प्रशंसा करो। **—फ्रेंकलिन**

लड़ाई (दे० 'युद्ध')

(दे० 'युद्ध')

In quarrelling the truth is always lost. **—Syrus**

लड़ाई में सत्य सदा खो जाता है। **—साइरस**

Truth is the first casualty in war. **—Proverb**

युद्ध में सत्य की हत्या सबसें पहले होती है। **—कहावत**

In a false quarrel there is no true valour. **—Shakespeare**

झूठी लड़ाई में सच्ची वीरता नहीं होती। **—शेक्सपियर**

(The great questions of the day) are not decided by speeches and majority votes, but by blood and iron. **—Bismarck**

युग की बड़ी-बड़ी समस्याओं का फैसला भाषण और वोट से नहीं बल्कि खून और तलवार से होता है। **—बिस्मार्क**

मित्रामात्यसुहृद्वर्गा यदा स्युर्दृढ़भक्तयः।
शत्रूणां विपरीताश्च कर्तव्यो विग्रहस्तदा॥ **—हितोपदेश**

मित्र, मंत्री और आपस के लोग जब दृढ़ शुभचिन्तक हों और शत्रुओं के विपरीत हों तब लड़ाई करनी चाहिए।

भूमिर्मित्रं हिरण्यं च विग्रहस्य फलं त्रयम्।
यदैतन्निश्चतं भावि कर्तव्यो विग्रहस्तदा॥ **—हितोपदेश**

राज्य, मित्र और सुवर्ण यह तीन लड़ाई के बीज हैं, जब यह तीनों निश्चित हो जायँ तब लड़ाई करनी चाहिए।

लांछन (दे० 'निन्दा')

(दे० 'निन्दा')

मनुष्य को पापी कहना ही पाप है; यह कथन मानव-स्वभाव पर एक लांछन है। **—स्वामी विवेकानन्द**

To persevere in one's duty, and be silent, is the best answer to calumny. **—Washington**

अपने कर्तव्य में निरन्तर लगा रहना और मौन रहना लांछन का सबसे अच्छा उत्तर है। **—वाशिंगटन**

लाचार

लाचार तो जड़ होता है, हम चेतन हैं, आत्म-स्वरूप हैं, अपना वातावरण हम स्वयं बनायेंगे। **—विनोबा**

लाभ

Some times the best gain is to lose. **—Herbert**

कभी कभी खोना ही सबसे अच्छा लाभ है। **—हर्बर्ट**

लाभ उसी का है, जिसने भगवान् को समझ लिया है। **—अज्ञात**

लालच

Avarice increases with the increasing pile of gold.

—Juvenal

जैसे-जैसे धन में वृद्धि होती है लालच बढ़ता है। **—जुविनल**

इंसान अगर लालच को ठुकरा दे, तो बादशाह से भी ऊँचा दर्जा हासिल कर ले, क्योंकि संतोष ही हमेशा इंसान का माथा ऊँचा रख सकता है। **—सादी**

Avarice is to the intellect and heart, what sensuality is to the morals. **—Mrs. Jamson**

बुद्धि और हृदय के लिए लालच वैसे ही है जैसे साधुवृत्ति के लिए इन्द्रिय-सुख।

—श्रीमती जाम्सन

लालच बुरी बला। **—कहावत**

लालची

Poverty wants some things, luxury many, avarice all things.

—Cowbry

दरिद्र व्यक्ति कुछ वस्तुएँ चाहता है, विलासी बहुत-सी और लालची सभी वस्तुएँ चाहता है।

लालची मनुष्य की जिन्दगी बड़ी नहीं होती। **—अज्ञात**

The avaricious man is kind to no person, but he is most unkind to himself. **—John Kyrle**

लालची किसी के प्रति उदार नहीं होता, पर अपने प्रति तो बहुत ही कठोर होता है। **—जान किरले**

लेखक

लिखते तो वे लोग हैं जिनके अन्दर कुछ दर्द है, अनुराग है, लगन है, विचार है। जिन्होंने धन और भोग-विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया है वह क्या लिखेंगे। **—प्रेमचन्द**

लिखने में शीघ्रता मुंशी की योग्यता है, लेखक की नहीं। —शरत्चन्द्र

Every author in some degree portrays himself in his works, even if it be against his will. **—Goethe**

प्रत्येक लेखक कुछ अंशों में अपने को ही अपनी कृतियों में चित्रित करता है, भले ही ऐसा करना उसकी इच्छा के विरुद्ध हो। —गेटे

A great author is the friend and benefactor of his readers. **—Macaulay**

महान् लेखक अपने पाठक का मित्र और शुभचिन्तक होता है। —मैकाले

लेखक की रोशनाई शहीद के खून से ज्यादा पवित्र होती है। —अज्ञात

लेखक वही है जो साधना और तपस्या का पुजारी है। —अज्ञात

लोक

धर्म की खेती कर्मक्षेत्र या कुरुक्षेत्र में होती है।
यह लोक कर्मक्षेत्र है—
कर्मभूमिरियं ब्रह्मन्। —वन०
यह लोक कर्मभूमि है। —दीनानाथ दिनेश (गीता-ज्ञान)

लोकतंत्र

बहुमत भी लोकतंत्र की सच्ची कसौटी नहीं है। सच्चा लोकतंत्र लोगों की वृत्ति और अभिलाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले थोड़े व्यक्तियों से असंगत नहीं है। —महात्मा गांधी

वही राष्ट्र सच्चा लोकतंत्रात्मक है, जो अपने कार्यों को बिना हस्तक्षेप के सुचारु और सक्रिय रूप से चलाता है। —महात्मा गांधी

लोकतंत्रवादी

लोकतंत्रवादी कहलाने का अधिकार केवल उसी व्यक्ति को है जो मानव जाति के अत्यन्त दीन प्राणियों के साथ भी आत्मीयता दिखला सके, जो उनसे अधिक सुखमय जीवन बिताने की इच्छा न रखता हो और साथ ही साथ उनकी समता करने का यथाशक्ति प्रयत्न करता हो। —महात्मा गांधी

लोकमत

लोकमत का अर्थ है जिस समाज की राय हमें चाहिए उसका मत। यह मत नीतिविरुद्ध न हो तब तक उसका आदर हमारा धर्म है। **—महात्मा गांधी**

कानून का वास्तविक आधार लोकमत ही है। लोकमत की उपेक्षा करके कोई कानून दीर्घ काल तक जीवित नहीं रह सकता। **—अज्ञात**

लोकराज

आजादी का मतलब होना चाहिए लोकराज। लोकराज का अर्थ है कि हर शख्स को बुद्धि पाने का मौका मिले। **—महात्मा गांधी**

लोचन (दे० 'आँख', 'नेत्र')

लोभ (दे० 'लालच')

मनुष्य बूढ़ा हो जाता है परन्तु लोभ बूढ़ा नहीं होता। **—सुदर्शन**

लोभ से बुद्धि नष्ट हो जाती है। **—अज्ञात**

लोभ भी एक छूत की बीमारी है। **—शरत्चन्द्र (निष्कृति)**

लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
लोभ न कबहूँ कीजिए, यामें नरक निदान॥ **—अज्ञात**

गहरे जल से भरी हुई नदियाँ समुद्र में मिल जाती हैं परन्तु जैसे उनके जल से समुद्र तृप्त नहीं होता, उस प्रकार चाहे जितना धन प्राप्त हो जाय, पर लोभी तृप्त नहीं होता। **—वेदव्यास (महा०, शांतिपर्व)**

जिसमें लोभ है, उसे दूसरे अवगुण की क्या आवश्यकता ? **—भर्तृहरि**

ज़न्म से लेकर बुढ़ापे तक किसी भी अवस्था में लोभ का परित्याग करना कठिन है। **—वेदव्यास (महा०, शांतिपर्व)**

लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिं सत्य समान। **—अज्ञात**

अनेक शास्त्रों के जानने वाले, दूसरों की शंका का समाधान करने वाले बहुश्रुत पंडित भी लोभ के वशीभूत होकर संसार में कष्ट ही पाते हैं।
—वेदव्यास (महाभारत)

पाप, अधर्म और कपट की जड़ लोभ ही है। **—वेदव्यास (महाभारत)**

जब मन लागै लोभ सों, गया विषय में सोय।
कहै कबीर विचार के, कस भक्ती धन होय॥ —कबीर

ज्ञानी तापस सूर कवि, कोविद गुन आगार।
केहि की लोभ बिडंबना, कीन्ह न एहि संसार॥ —तुलसी

कबिरा औंधी खोपरी, कबहूँ धापै नाहिं।
तीन लोक की सम्पदा, कब आवै घर माहिं॥ —कबीर

लोभी (दे० 'लालची')

लोभी मनुष्य की कामना कभी पूरी होती ही नहीं। —वेदव्यास (महा०)

लोभी मनुष्य सदैव क्रोध और द्वेष में डूबे रहते हैं।
—वेदव्यास (महा०, शांतिपर्व)

लोभी की आँख दुनिया की चीजों से, ओस से कुएँ की तरह कभी नहीं भरती। —सादी

लोभी की प्रार्थना यदि भगवान् सुन ले तो उसे भी दर-दर का भिखारी होना पड़े। क्योंकि इस चराचर में जो कुछ भी प्रभुता है, लोभी उस सबको पाकर भी हाय - हाय तो करता ही रहेगा। —अज्ञात

वंदना

वन्दन उनका जो स्वदेश की—
सेवा का व्रत लेते।
वन्दन उनका मातृ भूमि-हित,
जो तन - मन - धन देते॥
—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

वंदना प्रभात की

आज के दिन को देखो।
यह जीवन है, जीवन का भी जीवन।
इसकी छोटी सी सीमा में।
केन्द्रित है हमारे जीवन की सभी सत्यता, यथार्थता।

विकास का आनन्द,
कर्म का गौरव,
प्राप्त का वैभव,
भूत है केवल सपना।
भविष्य केवल कल्पना।
लेकिन आज का सदुपयोग।
बनाता भूत को आनन्दमय सपना।
और भविष्य आशातीत कल्पना।।
करो आज़ का पूर्ण सदुपयोग।
यही है प्रभात की वंदना। —अज्ञात

वक्त (दे० 'समय')

वक्त की धार बहुत तेज होती है। . —अज्ञात

Time is the wisest counsellor. **—Pericles**

वक्त सबसे अधिक बुद्धिमान् सलाहकार है। —पेरीक्लीज

Do not squander time, for that is the stuff life is made of. **—Franklin**

वक्त को बरबाद न करो क्योंकि जीवन इसी से बना है। —फ्रेंकलिन

जो वक्त की जरूरतों को पूरा नहीं करते, वक्त उन्हें बरबाद कर देता है। —अज्ञात

Time and tide wait for no man, **—Proverb**

वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं। —अंग्रेजी कहावत

वक्ता

An orator without judgment is a horse without a bridle. **—Theophrastus**

बिना बुद्धि के वक्ता बिना लगाम के घोड़े की तरह होता है। —थ्यूफ्रास्टस

What the orators want in depth, they give you in length. **—Montesquieu**

वक्ता अपनी गहराई के अभाव को लम्बाई में पूरा करता है। —मान्टेस्क्यू

मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।

—श्री हर्ष (नैषधीय चरित)

संक्षिप्त और सारयुक्त वचन ही अच्छे वक्ता का लक्षण है।

The ability to speak is a short cut to distinction. It puts a man in the limelight, raises him head and shoulder above the crowd. **—Dale Carnegie**

भाषण करने की योग्यता प्रसिद्धि प्राप्त करने का सीधा मार्ग है। इससे मनुष्य लोगों के सामने आ जाता है और साधारण जनता से ऊपर उठ जाता है।

—डेल कारनेगी

The man who can speak acceptably is usually given credit for an ability out of all proportion to what he really possesses.

—Dale Carnegie

जो मनुष्य श्रोताओं को अपने भाषण से अपने साथ बहा ले जा सकता है, उसमें वस्तुतः जितनी योग्यता होती है साधारणतः लोग उसमें उससे कहीं अधिक समझने लगते हैं। **—डेल कारनेगी**

वक्तृता

There is not less eloquence in the tone of the voice in the eyes and in the demeanour, than in the choice of words.

—L. Rochefoucauld

वक्तृता केवल शब्दों के चुनाव ही में नहीं वरन् शब्दों के उच्चारण में, आँखों में, और चेष्टा में होती है। **—ला रोशोको**

The finest eloquence is that which gets things done; the worst is that which delays them. **—Lloyd George**

सर्वोत्तम वक्तृता वह है जो स्वेच्छया कर्म करा ले और निकृष्ट वह है जो उसमें बाधा डाले। **—लायड जार्ज**

वक्तृता अवसर विशेष के प्रभाव से प्रभावित होकर बनती है।

—डा॰ रामकुमार वर्मा

वचन (दे० 'वाणी')

संसारकटुवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे।
सुभाषितं च सुस्वादु संगतिः सुजने जने ॥ —चाणक्य

संसाररूपी कटु वृक्ष के अमृत के समान दो फल हैं, सरस प्रिय वचन और सज्जनों की संगति।

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरन इक मंत्र है, तज दे वचन कठोर ॥ —तुलसी

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

—भारवि (किरातार्जुनीय)

लाभप्रद और साथ ही चित्ताकर्षक वचन बड़ा अलभ्य होता है।

वर्तमान

He who neglects the present moment, throws away all he has. **—Schiller**

जो वर्तमान की उपेक्षा करता है वह सब कुछ खो देता है। —शिलर

The future is purchased by the present. **—Johnson**

भविष्य वर्तमान के द्वारा खरीदा जाता है। —जानसन

Duty and today are ours, results and futurety belong to god. **—Horace greeley**

कर्त्तव्य और वर्तमान हमारा है, फल और भविष्य ईश्वर का है।—होरेस ग्रेले

वर्णशंकर

वर्णशंकर को धर्म-अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य, प्रवृत्ति-निवृत्ति का कोई ज्ञान नहीं होता। धर्म, परमेश्वर, माता-पिता और देश से भी उसे कोई स्नेह नहीं होता। खाने-पीने, पहिनने और विषय-सुख भोगने में ही उसका जीवन बीतता है।

—दीनानाथ दिनेश (गीता-ज्ञान)

वश

नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य तो क्या देवता भी तुम्हारे वश में हो जाते हैं। —लोकमान्य तिलक

क्षमया दयया प्रेम्णा सूनृतेनार्जवेन च ।
वशी कुर्याज्जगत्सर्वं विनयेन च सेवया ॥ —अज्ञात

क्षमा, दया, प्रेम, मधुर वाणी, सरल स्वभाव, नम्रता और सेवा से सब संसार को वश में करना चाहिए ।

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् स्तब्धमञ्जलिकर्मणा ।
मूर्खं छन्दानुरोधेन यथातथ्येन पण्डितम ॥ —हितोपदेश

लोभी को धन से, अभिमानी को हाथ जोड़ कर, मूर्ख को उसका मनोरथ पूरा करके और पण्डित को सच-सच कह कर वश में करना चाहिए ।

सद्भावेन हरेन्मित्रं संभ्रमेण तु बान्धवान् ।
स्त्री-भृत्यौ दानमानाभ्यां दाक्षिण्येनेतराञ्जनान् ॥ —हितोपदेश

विनय से मित्र को, सम्मान द्वारा बांधवों को, दान तथा मान से स्त्री और सेवकों को तथा चतुरता से अन्य लोगों को वश में करना चाहिए ।

वाणी (दे० 'वचन')

वाणी से भी बाणवृष्टि होती है, जिस पर इसकी बौछारें पड़ती हैं वह दिन रात दुखी रहता है । —वेदव्यास (महा०, आदिपर्व)

वाचः सत्यमशीय । —यजुर्वेद

मैं अपनी वाणी में सत्य को प्राप्त करूं ।

मधुर वचन है औषधी, कटुक वचन है तीर ।
श्रवन द्वार ते संचरै, सालै सकल सरीर ॥ —कबीर

वाणी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो अन्य भूषणों के सदृश कभी घिसता नहीं । —अज्ञात

घट घट में वह साँई रमता कटुक वचन मत बोल रे । —कबीर

तीखे और कड़ुए शब्द कमजोर पक्ष की निशानी हैं । —विक्टर ह्यूगो

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय ॥ —कबीर

मधुर वाणी क्रोध को भी भगा देती है । —अज्ञात

जैसा अन जल खाइए, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिए, तैसी बानी सोय॥ —कबीर

वाणी मन का चित्र है। —कहावत

बोलत ही पहचानिए, साहु चोर को घाट।
अंतर की करनी सबै, निकसै मुख की बाट॥ —कबीर

वायु

न पादपोन्मूलनशक्तिरहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य।—**कालिदास**

वायु पेड़ को जड़ से उखाड़ सकती है, पर पहाड़ को नहीं हिला सकती।

मारुतं धारयेद्यस्तु स मुक्तो मात्र संशयः। —ह०मो०

वायु का संयम करने से मनुष्य मुक्त हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं।

चले वाते चलञ्चित्तं निश्चले निश्चलं भवेत्। —ह०यो०

वायु चञ्चल होने से मन चञ्चल हो जाता है और वायु के स्थिर हो जाने से मन स्थिर हो जाता है।

वायदा (दे० 'प्रण', 'प्रतिज्ञा')

सच्चे दिल का मजबूत आदमी कभी अपना वायदा पूरा करने से मुंह नहीं मोड़ेगा। वायदा कसम से बढ़कर है, जिसे पूरा करना ही होगा। —**नेपोलियन**

वासन्ती

स्वर सरगम सँवार सुखमाती,
कोमल स्वागत-गीत सुनाती।
नव निकुंज नवदल अनुरंजित,
गुन गुन मधुपावलि गुण गाती।
सुरतरु से तरु नत शिर शोभित,
लेकर पत्र-पुष्प की माला।
आयी नव वासन्ती बाला॥

—**विनोद चन्द पाण्डेय 'विनोद'** (भावसुरभि)

वासना

वासना का वार निर्मम, आशाहीन, आधार हीन प्राणियों पर ही होता है। चोर की अँधेरे में ही चलती है, उजाले में नहीं। —प्रेमचन्द

विषय-वस्य सुर नर मुनि स्वामी। —तुलसी (मानस)

वासना खोटे सोने के समान चमकती तो बहुत है परन्तु परीक्षा की आग में पड़ कर वह चमक स्थिर नहीं रहती। —सुदर्शन

नाथ विषय सम मद कछु नाहीं। मुनि मन मोह करै क्षण माहीं।

—तुलसी (मानस, किष्किन्धा०)

जिसके हृदय में सेवा का स्रोत बह रहा हो उसमें वासनाओं के लिए स्थान कहाँ। —प्रेमचन्द

वासना एक कसौटी है—अग्नि लोहे को परखती है और वासना सत्पुरुष को।

—अज्ञात

विकार

विकाररूप मैल को दूर करने से प्रेम बढ़ता है। —महात्मा गांधी

जो शरीर को काबू में रखता हुआ जान पड़ता है, पर मन से विकार का पोषण किया करता है वह मूढ़ मिथ्याचारी है। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

मन को विकारपूर्ण रहने देकर शरीर को दबाने की कोशिश करना हानिकारक है। —महात्मा गांधी

विकास

विकास ही जीवन और संकोच ही मृत्यु है। —स्वामी विवेकानन्द

विकास ईश्वर का अग्रोन्मुख कदम है। —विक्टर ह्यूगो

परस्पर व्यवहार विकास की आत्मा है। —बक्सटन

No steps backward, is the rule of human history.

—Theodore Parker

मानव-इतिहास का नियम है कि एक भी कदम पीछे न हो।

—थियोडोर पार्कर

Nature knows no pause in progress and development and attaches her curse on all inaction. **—Goethe**

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नहीं जानती, और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। **—गेटे**

The voice of time cries to man, advance. **—Dickens**

समय की पुकार मनुष्य को ललकारती है कि आगे बढ़ो। **—डिकन्स**

विघ्न (दे० 'बाधा')

जिन के नेत्र व्रजेन्द्रनन्दन की ओर केन्द्रित हैं उनके मार्ग के समस्त विघ्न-व्यवधान विलीन हो जाते हैं। **—स्वामी चक्रधर् बाबा (श्रीकृष्ण लीला का चिन्तन)**

विचार

विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अंधा हो जाता है। **—विनोबा**

Great thoughts reduced to practice become great acts. **—Hezlitt**

महान् विचार कार्य रूप में परिणत होने पर महान् कर्म बन जाते हैं। **—हैजलिट**

Spiritual force is stronger than material; thoughts rule the world. **—Emerson**

आध्यात्मिक शक्ति भौतिक शक्ति से बढ़ कर है; विचार ही संसार पर शासन करते हैं। **—एमर्सन**

Thought which is not meant to lead to action has been called an abortion; action which is not based on thought is chaos and confusion. **—Jawahar Lal Nehru**

जो विचार कार्यरूप में नहीं परिणत होता, उसकी 'गर्भपात' से तुलना की गयी है। उस कर्म की, जो विचार का आश्रित नहीं है, अंधेरखाते और अराजकता में गिनती है। **—जवाहरलाल नेहरू**

There is nothing either good or bad, but thinking makes it so. **—Shakespeare**

कोई वस्तु अच्छी या बुरी नहीं—विचार ही उसे ऐसा बना देता है।
—शेक्सपियर

कुविचार ही सबसे हानिकारक चोर है। **—स्वामी शिवानन्द**

महान विचार सार्वभौम तथा शाश्वत होते हैं, वे किसी भौगोलिक अथवा जाति पाति की सीमाओं में नहीं बाँधे जा सकते। **—रमाशंकर गुप्त**

विचार की शुद्धि तब हो सकती है जब वह हवा की तरह सबके हृदय से लगे, चाँदनी की तरह सब की आँखें ठंडी कर दे। **—अज्ञात**

The greatest events of an age are its best thoughts. Thought finds its way into action. **—Boice**

युग की महान् घटनाएँ उसके उत्तम विचार हैं। विचार स्वयं ही कार्य में परिणत होने का मार्ग ढूँढ़ लेता है। **—ब्वायस**

आचरण-रहित विचार कितने अच्छे क्यों न हों उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए। **—महात्मा गांधी**

बुरे विचार हमारे अन्तःकरण पर कुठाराघात करते हैं। **—अज्ञात**

मनुष्य वैसा ही बन जाता है जैसे उसके हृदय के विचार होते हैं।
—बाइबिल

निश्चयात्मक विचार से निर्माणशक्ति का विकास होता है। **—अज्ञात**

Learning without thought is labour lost; thought without learning is perilous. **—Confucius**

बिना विचार के सीखना परिश्रम नष्ट करना है; बिना शिक्षा प्राप्त किये विचार करना भयावह है। **—कन्फ्यूशस**

कद व ऋतं कद व नृतं क्व प्रजा। **—ऋग्वेद**

क्या उचित है क्या अनुचित यह निरंतर विचारो।

विरोध उत्पन्न करने वाला विचार हमारे परिश्रम को पंगु बना देता है।
—अज्ञात

शासन विचारों का होता है, नक्शे की रेखाओं का नहीं। **—अज्ञात**

अच्छे विचारों और प्रयासों का परिणाम भी निस्संदेह अच्छा होगा।

—स्वामी विवेकानन्द

दुष्ट विचार ही मनुष्य को दुष्ट कर्म की ओर ले जाता है। **—उपनिषद्**

अचारी सब जग मिला, मिला विचारि न कोय।
कोटि अचारी वारिये, एक विचारि जो होय॥ **—कबीर**

जो बातें विचार पर छोड़ दी जाती हैं वे कभी पूरी नहीं होतीं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

जैसे विचार होते हैं उन्हीं के अनुसार भविष्य का निर्माण होता है। **—अज्ञात**

मन के विचार को मन में ही लय न करके उसका दृश्य रूप में रखना अत्यन्त आवश्यक है। **—स्वेट मार्डेन**

अनुभव, ज्ञान-उन्मेष और वयस् मनुष्य के विचारों को बदलते हैं।

—हरिऔध

जो ऊँचे विचार के महानुभाव होते हैं वे नम्र और दयावान् होते हैं।

—अज्ञात

Thinking is the talking of the soul with itself. **—Plato**

आत्मा का अपने साथ संलाप ही मनन है। **—प्लेटो**

विचार मर्यादापूर्ण, सहानुभूति-मूलक और परिमित होने से ही समादृत होता है। **—हरिऔध**

To have ideas is to gather flowers; to think, is to weave them into garlands. **—Madam Swetchine**

विचार फूलों को चुनने के समान हैं, और सोचना उनको माला में गूँथना।

—श्रीमती स्वेटशीन

Guard well thy thoughts, our thoughts are heard in Heaven.

—Young

अपने विचारों की अच्छी तरह रक्षा करो, क्योंकि विचार स्वर्ग में सुने जाते हैं। **—यंग**

जैसे हमारे विचार होते हैं वैसी ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है। हम चाहें कि हमारी शारीरिक स्थिति इसके विपरीत हो तो यह बात सर्वथा असंभव है।
—स्वेट मार्डेन

वह विचार कभी कार्यकारी और सफलप्रद नहीं होता जिसमें यथोचित शालीनता नहीं होती। —हरिऔध

अगर कोई मनुष्य गुफा में रहे, वहीं पर उच्च विचार करे और विचार करता हुआ ही मर जाय तो वे विचार कुछ समय पश्चात गुफा की दीवार फाड़ कर बाहर निकलेंगे और सब जगह छा जायेंगे तथा अंत में सारे मानवसमाज को प्रभावित कर देंगे। विचारों में इतनी शक्ति है। —स्वामी विवेकानन्द

अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है। —स्वामी रामतीर्थ

They are never alone that are accompanied with noble thoughts. —**Sir Philip Sidney**

सुन्दर विचार जिनके साथ हैं वे कभी एकान्त में नहीं हैं। —सर पी० सिडनी

विचारक

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दीखती है दुनिया उस पर कल अमल करती है। —विनोबा

विचारक दृष्टिमान् होते हैं। —विनोबा

विजय

मनोवृत्ति का परिवर्तन ही हमारी असली विजय है। —प्रेमचन्द

मनुष्य की सबसे बड़ी विजय मन की दुर्बलताओं पर विजय पाना है।
—अज्ञात

प्रत्येक व्यक्ति की हर समय परीक्षा होती रहती है और जो कसौटी पर खरे उतरते हैं विजयश्री उन्हीं के हाथ है। —हरिभाऊ

Self conquest is the greatest of victories. —**Plato**

अपने ऊपर विजय प्राप्त करना सबसे बड़ी विजय है। —प्लेटो

विजय प्राप्त करने के लिए अविचल श्रद्धा की अत्यन्त आवश्यकता है।
—स्वेट मार्डेन

अर्थ देकर विजय खरीदना तो देश की वीरता के प्रतिकूल है।
—जयशंकर प्रसाद

जीवनसंग्राम में विजय प्राप्त कर लेना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिए अत्यन्त कठोर साधना की आवश्यकता है। **—सर आॅर्थर हेल्प्स**

मनुष्य लड़ाई में हजार आदमियों पर विजय पा सकता है लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सबसे बड़ा विजयी है। **—भगवान् बुद्ध**

सबसे उत्तम विजय प्रेम की है जो सदैव के लिए विजेताओं का हृदय बाँध लेती है। **—सम्राट् अशोक**

अगर तू संसार पर विजय पाना चाहता है तो पहले अपने पर विजय पा। अगर तू अपने पर विजय पाना चाहता है तो औरत की दुनिया से बच कर रह।
—सुदर्शन

विजय ध्येय की प्राप्ति में नहीं है वरन् उसे पाने के निरन्तर प्रयास में है।
—महात्मा गांधी

दान द्वारा कृपणता पर विजय प्राप्त करो। शान्ति द्वारा क्रोध पर विजय प्राप्त करो। श्रद्धा से अश्रद्धा पर विजय प्राप्त करो। सत्य से असत्य पर विजय प्राप्त करो। यही सन्मार्ग है। यही स्वर्ग है। स्वर्ग की ओर जाओ। प्रकाश की ओर जाओ। **—सामवेद**

विजयी

जीवन में वही तो विजयी होता है जो दिन रात 'युध्चस्व विगतज्वर' का शंखनाद सुना करता है। **—जयशंकर प्रसाद**

भगवान् के विरुद्ध आचरण करने वाला बड़े से बड़ा वीर भी विजयी नहीं हो सकता। **—महाभारत**

संसार विजयी पर विश्वास करता है। उस मनुष्य का विश्वास करता है जिसके चेहरे पर विजय के भाव झलकते हों। **—स्वेट मार्डेन**

For they can conquer who believe they can. **—Vergil**

वे ही विजयी हो सकते हैं जिन्हें विश्वास है कि वे विजयी होंगे। —वर्जिल

विज्ञान

विज्ञान को विज्ञान तभी कह सकते हैं जब वह शरीर, मन और आत्मा की भूख मिटाने की पूरी ताक़त रखता हो। —महात्मा गांधी

भौतिक विज्ञान बल है और धर्म-विज्ञान विवेक है। —एक संत

Science commits suicide, when it adopts a creed.

—Huxley

विज्ञान आत्महत्या कर लेता है जब वह किसी एक मत को स्वीकार करता है। —हक्सले

विज्ञान ने मनुष्य को ऐसा गुरुमंत्र प्रदान किया है जिससे प्रकृति की गुप्त निधियों के द्वार सहज में खुल जाते हैं। —अज्ञात

विज्ञान ने मनुष्य को अपरिमित शक्ति प्रदान की, प्रकृति को उसकी चेरी बनाया और ऐश्वर्य तथा वैभव उसके चरणों में उँड़ेल दिया। काल तथा स्थान की बाधाएँ मिट गयीं। —कमलापति त्रिपाठी

विज्ञान और कला का सम्बन्ध समस्त विश्व से है और उनके आगे राष्ट्रीयता की सीमाएँ लोप हो जाती हैं। —गेटे

Science is organised knowledge. —Herbert Spencer

संघटित ज्ञान का नाम विज्ञान है। —एच० स्पेन्सर

Science surpasses the old miracles of mythology.

—Emerson

पौराणिक कथाओं के पुराने आश्चर्य से भी विज्ञान आगे बढ़ गया है।

—एमर्सन

Science has restored eyes to the blind and hearing to the deaf. She has lengthened life. She has minimised danger. She has controlled madness. She has trampled on disease.

—Archdeacon Farrar

विज्ञान ने अंधों को आँख दी है और बहरों को सुनने की शक्ति। उसने जीवन को दीर्घ बना दिया है, भय को कम कर दिया है। उसने पागलपन को वश में कर लिया है और रोग को रौंद डाला है। —आर्कडिकन फरार

वित्त

वित्त से अमृततत्त्व की आशा करना बेकार है। —विनोबा

विद्या

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है। —वेदव्यास

अपूर्वः कोऽपि कोषोऽयं विद्यते तव भारति।
दानेन वृद्धिमायाति संचयेन विनश्यति॥ —अज्ञात

हे सरस्वती, यह (विद्या) तुम्हारा बड़ा ही अनोखा कोष है, जो दान देने से तो बढ़ता है किन्तु गाड़ कर रखने से नष्ट हो जाता है।

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्ते गतं धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्॥ —चाणक्य

जो विद्या पुस्तक ही में रखी हो, मस्तिष्क में संचित न की गयी हो और जो धन दूसरे के हाथ में चला गया हो, आवश्यकता पड़ने पर न वह विद्या ही काम आ सकती है और न वह धन ही।

परमात्मा को प्राप्त करा देने वाली विद्या ही वास्तव में विद्या है।
—स्वामी विवेकानन्द

विद्या कामधेनु गाय है। —चाणक्य

वर्षहिं जलद भूमि नियराये। यथा नवहिं बुध विद्या पाये।
—तुलसी

बिना अभ्यास के विद्या विष के समान है। —अज्ञात

गतेऽपि वयसि ग्राह्या विद्या सर्वात्मना बुधैः।
यद्यपि स्यान्न फलदा, सुलभा सान्जन्मनि॥ —सुभाषितावलिः

उम्र बीत जाने पर भी बुद्धिमान मनुष्य हर तरह से विद्या को प्राप्त करे। चाहे वह इस जन्म में फल न दे लेकिन दूसरे जन्म के लिए सुलभ हो जाती है।

न चौरचौर्यं न च राजदण्ड्यं,
न भ्रातृभाज्यं न करोति भारम् ।
दाने कृते वर्द्धति चैव नित्यम्,
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥ —अज्ञात

विद्यारूपी धन को चोर चुरा नहीं सकता, राजा दण्ड में ले नहीं सकता, भाई हिस्से में बाँट नहीं सकता, उसका कोई बोझ नहीं होता, वह दान देने से नित्य बढ़ती है, विद्या सब धनों में श्रेष्ठ है ।

देहोऽहमिति या बुद्धिरविद्या सा प्रकीर्तिता ।
नाहं देहश्चिदात्मेति बुद्धिर्विद्येति भण्यते ॥

—अध्यात्म रामायण

'मैं देह हूँ' इस बुद्धि का नाम ही अविद्या है, और मैं देह नहीं, चेतन आत्मा हूँ, इसी को विद्या कहते हैं ।

जिस विद्या में कर्त्तृत्व शक्ति नहीं, स्वतंत्र रूप से सोचने की बुद्धि नहीं, खतरा उठाने की वृत्ति नहीं, वह विद्या निस्तेज है । —विनोबा

रूप-यौवन-संपन्ना विशालकुल-संभवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥ —चाणक्य

सुन्दर, तरुणतायुक्त और बड़े कुल में उत्पन्न भी विद्याहीन मनुष्य ऐसे नहीं शोभित होते जैसे गन्धहीन पलाश के फूल ।

जो विद्या की ओर ध्यान नहीं देता और अपने समय को व्यर्थ नष्ट करता है वह सदा मनुष्य-जन्म के फल से वंचित रहता है । —प्रेमचन्द

बहुत-सी पुस्तकों में निर्दोष आनन्द लेने का जो अटूट भंडार भरा है, वह भी विद्या के बिना हमें नहीं मिल सकता । —महात्मा गांधी

यथा खनन् खनित्रेण भूतले वारि विन्दति ।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति ॥ —चाणक्य

जैसे कुदारी से खोदकर मनुष्य पाताल से जल को पाता है, वैसे ही गुरु-गत विद्या सेवा से प्राप्त होती है ।

विद्या के सम धन नहीं, जग में कहत सुजान ।
विद्या ही से मनुज लघु, होवे भूप समान ॥ —अज्ञात

विद्या स्वर्ण है, परन्तु भूमि की मिट्टी और मलिनता से लथपथ, जब तक प्रयोग की भट्ठी में उसे तपाया न जाय उस पर कान्ति और आभा नहीं आती, और जब तक कान्ति न आये तब तक संसार में उसका उचित मूल्य नहीं लगता।
—अज्ञात

Knowledge is a treasure atonce priceless and impressible.
—Gladstone

विद्या अमूल्य और अभावक धन है। **—ग्लडस्टन**

विद्या मनुष्य का अधिक रूप है और छिपा हुआ गुप्त धन है, विद्या से भोग सुख और यश प्राप्त होता है। विद्या गुरुओं की गुरु है। विदेश में विद्या भाई के समान है। विद्या परम देवता है; राजाओं में विद्या ही पूजी जाती है, धन नहीं। विद्या से हीन मनुष्य पशु है। **—भर्तृहरि**

सुख चाहै विद्या पढ़ै, विद्या है सुख हेतु।
भव सागर से तरन को, विद्या है दृढ़ सेतु॥ **—अज्ञात**

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥ **—हितोपदेश**

विद्या विनय को देती है, नम्रता से योग्यता मिलती है, योग्यता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है।

The end of all knowledge must be the building up of character. **—Mahatma Gandhi**

विद्या का अंतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। **—महात्मा गाँधी**

Knowledge itself is power. **—Bacon**

विद्या स्वयं ही शक्ति है। **—बेकन**

जिसके पास विद्या रूपी नेत्र नहीं वह अंधे के समान है। **—हितोपदेश**

The end of all knowledge should be virtuous action.
—Sir P. Sidney

सुकर्म विद्या का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। **—सर पी० सिडनी**

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीड़नाय ।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतद् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ।। —अज्ञात

खलों की विद्या विवाद के लिए, धन मद के लिए और शक्ति दूसरों को सताने के लिए होती है । इसके विपरीत सज्जनों की विद्या ज्ञान के लिए, धन दूसरों को देने के लिए तथा बल (दुर्बलों की) रक्षा के लिए होता है ।

जो मनुष्य अपनी विद्या और ज्ञान को कार्यरूप में परिणत कर सकता है वह दर्जनों कल्पना करने वालों से श्रेष्ठ है । —एमर्सन

जैसे सूर्य सबको एक-सा प्रकाश देता है, बरसात जैसे सब के लिए बरसती है, उसी तरह विद्यावृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए । —महात्मा गांधी

विद्यादान

विद्या के अतिरिक्त और कोई श्रेष्ठ दान नहीं है । —फुलर

विद्यार्थी

विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की परीक्षा उनके ज्ञान से नहीं वरन् उनके धर्माचरण द्वारा ही होगी । —महात्मा गांधी

There is an inspeakable pleasure attending the life of a voluntary student. **—Goldsmith**

ऐच्छिक विद्यार्थी के जीवन को अकथनीय आनन्द प्राप्त होता है ।
—गोल्डस्मिथ

सच्चा विद्यार्थी वही है जिसको विद्योपार्जन की सच्ची भूख लगी हो, जो विद्याप्राप्ति की कठिनाइयों को देखकर आनन्दित होता है, जो विद्या को केन्द्र बनाकर अन्य सब बातों को भूल जाता है । —अज्ञात

सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ।।
—चाणक्य

सुखार्थी को विद्या कहाँ, विद्यार्थी को सुख कहाँ ? सुख को चाहे तो विद्या छोड़ दे, विद्या को चाहे तो सुख त्याग दे ।

विद्यार्थियों का जीवन-लक्ष्य न केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होना, स्वर्ण पदक प्राप्त करना है अपितु देश सेवा की क्षमता एवं योग्यता भी है।

—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

There is no royal road to learning.

शिक्षा-प्राप्ति का कोई राजमार्ग नहीं है। **—कहावत**

विद्वत्ता

Seeing much, suffering much and studying much are the three pillars of learning. **—Disraeli**

अधिक अनुभव, अधिक विपत्ति सहना और अधिक अध्ययन, यही विद्वत्ता के तीन स्तम्भ हैं। **—डिजरायली**

The great art of learning is to undertake but little at a time. **—Locke**

विद्वत्ता की महान् कला है कि एक समय में थोड़ा-सा कार्य लिया जाय।

—लॉक

विद्वत्ता को अभिमान है कि उसने बहुत कुछ सीख लिया, ज्ञान नम्र है कि वह अधिक नहीं जानता। **—कूपर**

Learning makes a man fit company for himself. **—Young**

विद्वत्ता से मनुष्य स्वयं अपना योग्य साथी बन जाता है। **—यंग**

विद्वत्ता असंख्य मनुष्यों को जितना वे स्वाभाविक रूप से हैं उससे कहीं अधिक मूर्ख बना देती है। **—शोपेनहावर**

Learning is an ornament in prosperity, a refuge in adversity and a provision in old age. **—Aristotle**

विद्वत्ता अच्छे दिनों में आभूषण है, विपत्ति में सहायक एवं बुढ़ापे में संचित सामग्री है। **—अरस्तू**

To be proud of learning is the greatest ignorance.

—Jeremy Taylor

विद्वता का अभिमान करना सबसे बड़ी अज्ञानता है। **—जर्मी टेलर**

Learning maketh young men temperate, is the comfort of old age, standing for wealth with poverty and serving as an ornament to riches. **—Cicero**

विद्वत्ता युवकों को संयमी बना देती है। यह बुढ़ापे का आराम है, निर्धनता में धन का काम देती है और धनवानों के लिए आभूषण का काम करती है।

—सिसरो

विद्रोह

बिना उद्देश्य का विद्रोह विनाशक है, पर साधु उद्देश्य से प्रणोदित विद्रोह शूर का धर्म है। **—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी**

Rebellion to tyrants is obedience to God. **—Jefferson**
अत्याचारी के प्रति विद्रोह ईश्वर की आज्ञा मानना है। **—जैफरसन**

विद्वान

As for me, all I know is that I know nothing. **—Socrates**
जहाँ तक मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध है मैं यह जानता हूँ कि मैं कुछ भी नहीं जानता। **—सुकरात**

Wise men learn more from fools than fools from the wise.
मूर्ख जितना विद्वान् से सीखते हैं उससे कहीं अधिक विद्वान् मूर्ख से सीखते हैं। **—अज्ञात**

नालम्बते दैष्टिकतां न निषीदति पौरुषे।
शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते॥

—माघ (शिशुपालवध)

विद्वान् पुरुष न तो दैव के भरोसे रहता है और न केवल पुरुषार्थ पर ही आश्रित रहता है, किन्तु वह शब्द और अर्थ दोनों की अपेक्षा करने वाले सुकवि की भाँति दैव और पुरुषार्थ दोनों की अपेक्षा करता है।

अधिक विद्वान् प्रायः बहुत संकीर्ण विचार के होते हैं। **—हैजलिट**

विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥ **—चाणक्य**

राजा और पण्डित दोनों कभी बराबर नहीं हो सकते, क्योंकि राजा का अपने देश में ही आदर होता है और विद्वान् का सारे संसार में आदर होता है।

विधान

विधान की स्याही का एक बिन्दु गिर कर भाग्यलिपि पर कालिमा चढ़ा देता है। —जयशंकर प्रसाद

There is a higher law than the constitution. —**Seward**

संविधान के ऊपर भी एक बड़ा कानून है। —सिवर्ड

A good constitution is infinitely better than the best despot —**Macaulay**

किसी सर्वश्रेष्ठ निरंकुश शासक की अपेक्षा एक अच्छा विधान अधिक उत्तम होता है। —मैकाले

विधि

Laws are always useful to those who possess and obnoxious to those who have nothing. —**Rousseau**

विधि सम्पत्तिवान् के लिए सदैव उपयोगी है, जिनके पास कुछ भी नहीं है उनके लिए अप्रिय है। —रूसो

विधि-चक्र

चलता विधि - चक्र निरन्तर है,
किसके दिन एक समान रहे।
धनवान रहे न रहे बलवान,
सदैव न ये सुख गान रहे।
जग वैभव हास विलास अरे,
सब केवल स्वप्न समान रहे।
यमराज ने आ झटका पटका,
दिल के दिल में अरमान रहे॥

—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

विनय

विनय और श्रद्धा के सामने तर्क नहीं पेश किया जाता। —सुदर्शन

Sense shines with a double lustre when it is set in humility. An able and yet humble man is a jewel worth a kingdom.

—Penn

विनय के साथ विवेक दूने प्रकाश से चमकता है। योग्य और नम्र मनुष्य किसी राज्य के समान बहुमूल्य रत्न है। **—पेन**

humility is to make a right estimate of one's self.

—Spurgeon

विनय स्वयं का ठीक-ठीक मूल्यांकन है। **—स्पर्जन**

Humility often gains more than pride. **—Italian Proverb**

विनय प्राय: गर्व की अपेक्षा अधिक प्राप्त कर लेता है। **—इटै० कहावत**

विनाश

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः। **—चाणक्य**

विनाश-काल में बुद्धि विपरीत हो जाती है।

विनीत

बड़ों की कुछ समता हम अत्यन्त विनीत होकर ही कर पाते हैं। **—रवीन्द्र**

Humility is the solid foundation of all the virtues.

—Confucius

विनय समस्त गुणों की ठोस आधारशिला है। **—कन्फ्यूशस**

After crosses and losses, men grow humbler and wiser.

—Franklin

कष्ट और हानि के बाद मनुष्य अधिक विनीत और ज्ञानी हो जाता है।

—फ्रैंकलिन

Humility, like darkness, reveals the heavenly lights.

—Thoreau

विनय अंधकार की भाँति स्वर्गीय प्रकाश दिखाता है। **—थोरो**

विनोद

विनोद एक प्रकार का टानिक है, जिससे शरीर और मस्तिष्क को शक्ति मिलती है। —'कौतुक' बनारसी

विनोद एक कला है, गाली-गलौज बला है। सच्चा कलाकार विनोदी होता है। —'कौतुक' बनारसी

यदि मुझमें विनोद का भाव न होता तो मैंने बहुत पहले आत्महत्या कर ली होती। —महात्मा गांधी

भाषा और भाषण दोनों का भूषण है विनोद। जिस भाषा में विनोद का पुट नहीं वह फीकी है। और जिस भाषण में विनोद का रंग नहीं वह निस्संदेह फीका है, 'बोर' है। —'कौतुक' बनारसी

The jokes of the rich are ever successful. **—Goldsmith**

धनियों का विनोद सदा सफल होता है। —गोल्डस्मिथ

A joke is a very serious thing. **—Churchill**

विनोद बहुत गम्भीर वस्तु है। —चर्चिल

Wit should be used as a shield for defence rather than as a sword to wound others. **—Fuller**

विनोद का उपयोग रक्षा के लिए होना चाहिए, उसे दूसरों को घायल करने के लिए तलवार न बनना चाहिए। —फुलर

Wit is the salt of conversation, not the food. **—Hazlitt**

विनोद बातचीत का नमक है, भोजन नहीं। —हैजलिट

कविता केवल हृदय का उद्गार होती है, विनोद रोम-रोम का उद्गार है। —'कौतुक' बनारसी

विनोदी

A humourist's entrance into a room is as though another candle has been lighted.

किसी स्थान में विनोदी व्यक्ति के आगमन से ऐसा प्रतीत होता है, मानो दूसरा दीपक प्रकाशित कर दिया गया है। —अज्ञात

विपत्ति (दे० 'दुःख', 'मुसीबत')

विपत्ति में भी जिस हृदय में सद्ज्ञान उत्पन्न न हो, वह एक ऐसा सूखा वृक्ष है जो पानी पाकर पनपता नहीं बल्कि सड़ जाता है। —**प्रेमचन्द**

विश्वास के कारण उत्पन्न होने वाली विपत्ति जीव का समूल नाश कर डालती है। —**वेदव्यास (महा०, शांतिपर्व)**

There is no education like adversity. —**Disraeli**

विपत्ति के सदृश कोई शिक्षा नहीं है। —**डिजरायली**

विपत्तियाँ पुरुषार्थहीन व्यक्ति को आक्रान्त कर लेती हैं। विपत्तियों में ग्रस्त व्यक्ति की भावी उन्नति अवरुद्ध हो जाती है, उसका भविष्य उसे छोड़ देता है। फिर ऐसा हो जाने पर उसकी प्रतिष्ठा नष्ट होना निश्चित है और अप्रतिष्ठित अथवा लघु लोग राज्यलक्ष्मी की प्राप्ति नहीं कर सकते।

—**भारवि (किरातार्जुनीय २/१४)**

विपदः सन्तु नः शाश्वत् तत्र तत्र जगद् गुरो।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ॥

—**कुन्ती (श्रीमद्भागवत)**

जगद्गुरो ! हमारे जीवन में सर्वदा पद-पद पर विपत्तियाँ आती रहें; क्यों कि विपत्तियों में ही निश्चित रूप से आपके दर्शन हुआ करते हैं और आपके दर्शन हो जाने पर फिर जन्म-मृत्यु के चक्कर में नहीं आना पड़ता।

वचन काय मन मम गति जाही।
सपनेहुँ बूझिअ विपति कि ताही ॥ —**तुलसी (मानस)**

Prosperity is no just scale; adversity is the only balance to weigh friends. —**Plutarch**

सुदिन अच्छी तुला नहीं है, विपत्ति ही केवल ऐसी तुला है जिस पर हम मित्रों को तौल सकते हैं। —**प्लूटार्क**

विपत्ति में पड़े बिना सुख की महिमा समझ में नहीं आती। —**अज्ञात**

Adversities come in battalions. —**Proverb**

विपत्ति अकेले नहीं आती। —**कहावत**

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहचानि।
सोच नहीं चित्त हानि को, जो न होय हित हानि ॥ —**रहीम**

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं, जो मनुष्य साहस के साथ उन्हें सहन करते हैं वे अपने जीवन में विजयी होते हैं।

—लोकमान्य तिलक

विपति बराबर सुख नहीं, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परै सब कोय ॥ —अज्ञात

विपत्ति पुराने घावों को बढ़ाती है, सम्पत्ति उन्हें भर देती है। —अज्ञात

रत्न बिना रगड़ खाये नहीं चमकता, मनुष्य बिना परीक्षा के पूर्ण नहीं होते। —चीनी कहावत

विपति भए धन ना रहै, होय जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, जिमि रहीम भै भोर ॥ —रहीम

He that has no cross will have no crown. —Quarles

जिसने विपत्ति नहीं झेली उसे राजमुकुट नहीं मिलता। —क्वार्ल्स

जिसे हम व्यथा और विपदा कहते हैं वह यथार्थ में शत्रु नहीं, मित्र है।

—अज्ञात

कह हनुमन्त विपति प्रभु सोई।
जब तव सुमिरन भजन न होई ॥

—तुलसी (रामा०, सु० ३२/३)

विपदो नैव विपदः संपदो नैव संपदः।
विपद्विस्मरणं विष्णोः संपन्नारायण स्मृतिः ॥ —अज्ञात

सम्पति नहीं सम्पति, दुःख है नहीं दुःख का सहना।
हरि-सुमरण है सम्पति, दुःख है हरि को भूले रहना ॥

—पद्यानुवादक दीनानाथ दिनेश

जितने दुःख जितनी विपत्तियाँ हमें प्राप्त होती हैं उनका कारण यही है कि अनन्त ऐश्वर्ययुक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा की ओर हम भिन्नता का भाव रखते हैं।

—स्वेट मार्डेन

विपत्ति में हमारा मन अन्तर्मुखी हो जाता है। —प्रेमचन्द (गबन)

Adversity is the diamond dust. Heaven polishes its jewels with. —**Leighton**

विपत्ति हीरे की धूल है जिससे ईश्वर अपने रत्नों को चमकाता है। —**लेटन**

बिना विपत्ति के नेत्र नहीं खुलते, बिना कष्ट झेले ज्ञान नहीं होता। —**अज्ञात**

कहि रहीम संपत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥ —**रहीम**

धर्मपरायण व्यक्तियों की कसौटी तो विपत्ति और दुःख ही है। —**अज्ञात**

Constant success shows us but one side of the world; adversity brings out the reverse of the picture. —**Colton**

निरन्तर सफलता हमें संसार का केवल एक ही भाग दिखाती है; विपत्ति हमें चित्र का दूसरा भाग भी दिखाती है। —**कोल्टन**

विपत्ति आ पड़ने पर जीवनरक्षा के लिए बलवान् व्यक्ति को अपने समीपवर्ती शत्रु से भी मेल कर लेना चाहिए। —**वेदव्यास, (महा०, शांतिपर्व)**

को रहीम पर द्वार पर, जात न जिय पछितात।
संपति के सब जात हैं, विपति सबहिं लै जात॥ —**रहीम**

God brings men into deep waters, not to drown them but to cleans them. —**Aughey**

ईश्वर मनुष्य को गहरे पानी में डुबाने के लिए नहीं ले जाता वरन् निर्मल बनाने के लिए। —**अग्हे**

विपत्ति से बढ़ कर तजुर्बा सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला। —**प्रेमचन्द**

विभूति

महान् विभूतियाँ देह छोड़ने पर ही अधिक बलवान् बनती हैं। —**विनोबा**

विभूति योग-सिद्धि का फल है और योग के ऐश्वर्य का स्वरूप है। सम्पत्ति, समृद्धि, तेज, प्रभाव, रस, माधुर्य, शक्ति, आनन्द, विस्तार आदि शिव-शब्द विभूति के द्योतक हैं। ऐश्वर्य और सिद्धि में विभु की विभूति प्रकट रूप में रहती है। —**दीनानाथ दिनेश**

जिस वस्तु, पदार्थ, व्यक्ति में शक्ति ऐश्वर्य, सरसता, दिव्यता और आनन्द की विशेष अभिव्यक्ति होती है उसे भगवान की विभूति कहते हैं ।

—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

वियोग, विरह

Love reckons hours for months and days for years; and every little absence is an age. **—Dryden**

प्रेम में घंटे, महीनों के और दिन, वर्षों के समान होते हैं, और प्रत्येक छोटा वियोग एक युग के समान होता है । **—ड्राइडेन**

मेरे प्रभु ! तुम्हारे वियोग के क्षण मुझे शत्रुओं के बाणों की भाँति लगते हैं। तुम्हारे हाथ कब उन बाणों को मेरे शरीर से दूर करेंगे । **—अज्ञात**

हिरदे भीतर दव बरै, धुआँ न परगट होय ।
जाके लागी सो लखै, की जिन लाई होय ।। **—कबीर**

कटे यह रात क्योंकर हाय, क्या सदमे गुजरते हैं ।
न वह आते, न सब्र आता, न नींद आती, न मरते हैं ।। **—दाग**

Absence makes the heart grow fonder. **—T. H. Bayly**

वियोग हृदय को और अधिक आसक्त बना देता है । **—टामस हेन्स बेली**

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महार्णवे ।
समेत्य तु व्यपेयातां कालमासाद्य कञ्चन ।।
एवं भार्याश्च पुत्राश्च ज्ञातयश्च वसूनि च ।
समेत्य व्यवधावन्ति ध्रुवो ह्योतां विनाभवः ।।

—वाल्मीकि (रा०, अयो०)

जैसे महासागर में बहते हुए दो काठ कभी एक दूसरे से मिल जाते हैं और मिलकर कुछ काल के बाद एक दूसरे से विलग भी हो जाते हैं, उसी प्रकार स्त्री, पुत्र, कुटुम्ब और धन भी मिल कर बिछुड़ जाते हैं, इनका वियोग अवश्यम्भावी है ।

कठिन विरह भी मिलन की आशा से सह्य हो जाता है ।**—कालिदास (शकुन्तला)**

The joy of meeting pays the pangs of absence; else who could bear it. **—Rowe**

मिलन की प्रसन्नता विरह की वेदना को सह्य बना देती है, यदि ऐसा न होता तो उसे कौन सहता। —रो

आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां,
सद्यःपाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि ॥—कालिदास (मेघदूत)

विरह में वनिता के पुष्पसदृश हृदय को आशा ही कुम्हला जाने से बचाती है।

विरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वांस जरइ छन माहिं सरीरा ॥
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी। जरैं न पाव देह विरहागी ॥
—तुलसी (मानस, सुन्दर०)

बिरह भुवंगम तन डसा, मंत्र न लागै कोय।
नाम वियोगी ना जिए, जिए तो बाउर होय ॥ —कबीर

Distance sometimes endears friendship, and absence sweetenth it. **—J. Howell**

प्रायः दूरी मित्रता को प्रिय बना देती है और विरह उसे मधुर बना देता है। —जे० हावेल

Absence is to love what wind is to fire, it puts out the little and kindless the great. **—Bussy**

जैसे अग्नि के लिए आँधी है वैसे प्रेम के लिए विरह है। यह तुच्छ को बुझा देते हैं और महान् को प्रकाशमान् बना देते हैं। —बूसे

वियोगी, विरही

विरह बान जेहि लागिया, औषध लगत न ताहि।
सुसुक सुसुक मरि मरि जियै, उठै कराहि कराहि ॥ —कबीर

पिय बिन जिय तरसत रहै, पल पल बिरह सताय।
रैन दिवस मोंहि कल नहीं, सिसक सिसक जिय जाय ॥ —कबीर

मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे।
—कालिदास (मेघदूत)

जो सुखी हैं उनका भी चित्त बादलों को देख स्थिर नहीं रहता, फिर जो विरही हैं उनकी तो बात ही क्या ?

विरोध

Opposition always inflames the enthusiast, never converts him. **—Schiller**

विरोध उत्साहियों को सदैव उत्तेजित करता है, उन्हें बदलता नहीं ।
—शिलर

He that wrestles with us, strengthens our nerves and sharpens our skill. Our antogonist is our helper. **—Burke**

जो हमसे कुश्ती लड़ता है, हमारे अंगों को मजबूत करता है, हमारे गुणों को तेज करता है; हमारा विरोधी हमारी मदद करता है । **—बर्क**

No government can be long secure without a formidable opposition. **—Disraeli**

कोई भी सरकार प्रबल विरोधी दल के बिना अधिक दिन नहीं टिक सकती ।
—डिजरायली

Hardship and opposition are the native soil of manhood and self-reliance. **—John Neal**

कठिनाई और विरोध वह देशी मिट्टी है जिसमें पराक्रम और आत्मविश्वास का विकास होता है । **—जान नेल**

विवाह

विवाह का उद्देश्य भोग नहीं, आत्मा का विकास है । **—प्रेमचन्द**

कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो । सुन्दर किन्तु नीच संस्कारों वाली स्त्री से कभी विवाह न करो । (दे० 'कुलीन') **—मनु**

Hanging and wiving go by destiny. **—Shakespeare**

फाँसी और विवाह भाग्यानुसार होता है । **—शेक्सपियर**

A woman must be a genius to create a good husband.
—Balzac

अच्छा पति बनाने के लिए स्त्री को प्रतिभावान् होना चाहिए ।
—बालजक

A man finds himself seven years older the day after his marriage. **--Bacon**

मनुष्य अपने विवाह के दूसरे ही दिन अपने को सात वर्ष और वृद्ध अनुभव करने लगता है। **--बेकन**

Married in haste, we repent at leisure. **--Congreve**

जल्दी के विवाह पर हम फुरसत में पश्चात्ताप करते हैं। **--कांग्रेव**

शरीर का ब्याह नहीं होता, ब्याह होता है हृदय की आत्मा का। यही विवाह का धार्मिक महत्त्व है, इसी से नैतिक महत्त्व की उपलब्धि हुआ करती है। **--जनार्दन प्रसाद झा "द्विज" (चांद 1930)**

विवाह प्रेम की वह व्यवस्था है जो हमारी मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक इन्द्रियों के विकास का साधन है। **-अज्ञात**

It is a woman's business to get married as soon as possible and a man's to keep unmarried as long as he can. **-G. B. Shaw (Man & Superman)**

प्रत्येक स्त्री का यह कर्त्तव्य है कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो सके विवाह कर ले और पुरुष का, जहाँ तक सम्भव हो सके, उससे दूर रहे। **—जार्ज बर्नार्डशा**

व्याह के मंत्र कर्त्तव्य-बुद्धि दे सकते हैं, भक्ति दे सकते हैं, सहमरण की प्रवृत्ति दे सकते हैं, किन्तु माधुर्य देने की शक्ति उनमें नहीं है। **—शरत चन्द्र (चरित्रहीन)**

Marriage with a good woman is a harbour in the tempest of life; with a bad woman, it is a tempest in the harbour. **—J. P. Senn**

अच्छी स्त्री से विवाह जीवन के तूफान में बंदरगाह है और खराब स्त्री से विवाह बदरगाह में ही तूफान है। **—जे० पी० सेन**

Marriage is a great civilizer of the world. **—Robert Hall**

विवाह संसार को महान् सभ्य बनाने वाला है। **—राबर्ट हाल**

Marriage is popular because it provides maximum of enjoyment with maximum of opportunity. **—G. B. Shaw**

विवाह लोकप्रिय इसलिए है कि वह सबसे अधिक आनन्द का सबसे अधिक अवसर से मेल कराता है। **—जार्ज बर्नार्ड शा**

To marry once is a duty; twice a folly, thrice is madness. **—Dutch Proverb**

प्रथम बार विवाह कर्त्तव्य है, द्वितीय बार मूर्खता और तृतीय बार पागलपन है। **—डच कहावत**

प्रेम जब आत्मसमर्पण का रूप लेता है, तभी ब्याह है, उसके पहले अय्याशी। **—प्रेमचन्द** (गोदान)

विवाहित जीवन

विवाहित जीवन एक तपोभूमि है। सहनशीलता और संयम खोकर कोई इसमें सुखी नहीं रह सकता। **—अज्ञात**

वैवाहिक जीवन मसाले की भांति है। लोग आँखों में आँसू भर-भर कर उसकी प्रशंसा करते हैं। **—अज्ञात**

विवेक (दे० 'बुद्धि')

Let your own discretion be your tutor; suit the action to the word, the word to the action. **—Shakespeare**

अपने विवेक को अपना शिक्षक बनाओ। शब्दों का कर्म से और कर्म का शब्दों से मेल कराओ। **—शेक्सपियर**

Discretion is the perfection of reason, and a guide to us in all the duties of life. **—Bruyere**

विवेक बुद्धि की पूर्णता है, जीवन के सभी कर्त्तव्यों में वह हमारा पथ-प्रदर्शक है। **—ब्रुएयर**

होइ विवेकु मोह भ्रम भागा।
तब रघुनाथ चरन अनुरागा।

—तुलसी (रामा०, अयो० ९३-५)

समझा समझा एक है, अन-समझा सब एक।
समझा सोई जानिए, जाके हृदय विवेक॥ **—कबीर**

उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है। विवेकी होने में क्षणिक वस्तुओं से शोक और आनन्द ये दोनों नहीं होते। —**स्वामी दयानन्द सरस्वती**

The better part of valour is discretion —**Shaksepeare**

पराक्रम का प्रमुख अंग विवेक है। —**शेक्सपियर**

जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहि पय, परिहरि बारि बिकार॥

—**तुलसी (दोहावली)**

Discretion is the salt and fancy the sugar of life; the one preserves, the other sweetens it. —**Bovee**

विवेक जीवन का नमक और कल्पना उसकी मिठास है। एक उसको सुरक्षित रखता है और दूसरा उसे मधुर बनाता है। —**बोवी**

हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः। —**कालिदास**

हंस दूध निकाल लेता है और उसमें मिले हुए पानी को छोड़ देता है।

Men in general judge more from appearances than from reality. All men have eyes, but few have the gift of penetration, —**Machiavelli**

साधारणतः मनुष्य सत्य की अपेक्षा बाहरी आकार से ही अनुमान लगाते हैं। सभी मनुष्यों के नेत्र होते हैं किन्तु किसी-किसी को ही विवेक का वरदान मिलता है। —**मेकियावेली**

Wisdom is sometimes nearer when we stoop than when we soar. —**Wordsworth**

उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते हैं तब विवेक के अधिक निकट होते हैं। —**वर्ड्सवर्थ**

Wisdom is only found in truth. —**Goethe**

विवेक केवल सत्य में पाया जाता है। —**गेटे**

In youth and beauty, wisdom is but rare. —**Homer**

यौवन और सौंदर्य में विवेक कदाचित् ही होता है।

विवेकभ्रष्ट

शिरः शार्वं स्वर्गात् पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरं
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम् ।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमधुना
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ॥ **—भर्तृहरि**

स्वर्ग से च्युत होकर शिवजी के सिर पर, शिवजी के सिर से हिमालय पर्वत पर, हिमालय से पृथ्वी पर और फिर पृथ्वीतल से समुद्र में गिरती हुई वही गंगा लघु पद को प्राप्त हुई। वस्तुतः विवेक-भ्रष्ट पुरुषों का पतन सैकड़ों प्रकार से होता है।

विवेक-भ्रष्ट मनुष्य की दुर्गति निश्चय ही होती है। **—अज्ञात**

विवेकशील

विवेकिनमनुप्राप्ता गुणा यन्ति मनोज्ञताम् ।
सुतरां रत्नमाभाति चामीकरनियोजितम् ॥ **—चाणक्य**

विवेकी मनुष्य को पाकर गुण सुन्दरता को प्राप्त होते हैं, सोने में जड़ा हुआ रत्न अत्यन्त सुशोभित होता है।

विवेकशील कीचड़ में पड़े रत्न को भी ग्रहण करते हैं, कीचड़ में लिप्त होने के कारण उसे अग्राह्य नहीं करते। **—हरिऔध**

विश्राम

Rest belongs to the work as eye lids to the eyes.

–R. N. Tagore

कार्य के लिए विश्राम वैसा ही है जैसा नेत्रों के लिए पलकों का होना।

—रवीन्द्र

To much rest itself becomes a pain. **–Homer**

बहुत अधिक विश्राम स्वयं दर्द बन जाता है। **—होमर**

जैसे पक्षी दिन में चारों तरफ इधर-उधर उड़ता फिरता है, लेकिन शाम के समय अपने घोंसले में आकर स्थिर हो जाता है, वैसे ही जीवात्मा जब संसार के सब तरह के कामों में थक कर भटक जाता है तब विश्राम के लिए परमेश्वर के पास पहुँच जाता है। —विनोबा

उद्योग का परिवर्तन ही विश्राम है ; इसमें बहुत सत्य है। —महात्मा गांधी

Rest is the sweet sauce of labour. **—Plutarch**

विश्राम परिश्रम की मधुर चटनी है। —प्लूटार्क

Absence of occupation is not rest ; a mind quite vacant is a mind distressed. **—Cowper**

व्यवसाय का अभाव विश्राम नहीं है, शून्य मस्तिष्क दुखी मस्तिष्क है।
—काउपर

विश्रम में भी उद्यम की गति है।
शांत समुद्र की तरंगें गति-हीन नहीं हैं ।। —रवीन्द्र

विश्व

समस्त विश्व ईश्वर से पूर्ण है। अपने नेत्र खोलो और उसे देखो।
—स्वामी विवेकानन्द

यह विश्व पाँच भौतिक है, और मनुष्य पांच भूतों का त्याग जीवित रहते कर नहीं सकता। पांच भूतों का त्याग करने का अर्थ ही मृत्यु को स्वीकारना है विश्व का त्याग करना मनुष्य के लिए अशक्य है।
—दामोदर सातवलेकर (नवनीत नवंबर-६६)

श्रीमद्भगवद्गीता के ग्यारहवें अध्याय में विश्वरूप-दर्शन है। यह विश्व परमेश्वर का रूप है, इसका वहां दर्शन कराया गया है। यदि यह संपूर्ण विश्व परमेश्वर का रूप है, तो यह विश्व सच्चिदानंदरूप है। उपनिषदों में भी "सर्व खल्विदं ब्रह्म", अर्थात यह सब विश्व ब्रह्म है, ऐसा कहा गया है। प्रभु ही विश्वरूप हुआ है। प्रभु में दुख नहीं है, इस कारण इस विश्व में भी दुख नहीं है।
—दामोदर सातवलेकर

विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय ही देश के महापुरुषों का निर्माण करने वाला कारखाना है तथा अध्यापक उन्हें बनाने वाले कारीगर हैं। **—डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

विश्वात्मा

विश्वात्मा को ही जब कोई अपनी आत्मा समझने लगता है तब अखिल विश्व उसके शरीर का काम देता है। **–स्वामी रामतीर्थ**

युग-प्रवर्तक महापुरुषों के अंतिम क्षण विश्वात्मा की प्रखरतम दीप्ति के साक्ष्य होते हैं **—क०मा०मुंशी**

विश्व-शान्ति

If there is righteousness in the heart there will be beauty in the character. If there is beauty in the character, there will be harmony in the home. When there is harmony in the home, there will be order in the nation. When there is order in the nation, there will be peace in the world. **—Confucius**

अगर तुम्हारा हृदय पवित्र है तो तुम्हारा आचरण भी सुन्दर होगा ; अगर तुम्हारा आचरण सुन्दर है, तो तुम्हारे घर में शान्ति रहेगी, अगर घर में शान्ति है तो राष्ट्र में सुव्यवस्था होगी और अगर राष्ट्र में सुव्यवस्था है, तो समस्त विश्व में शान्ति और सुख रहेगा। **—कनफ्यूशस**

विश्वास

विश्वास प्रेम की पहली सीढ़ी है। **—प्रेमचन्द**

Faith is the force of life. **—Tolstoy**

विश्वास जीवन की शक्ति है। **—टालसटाय**

ईश्वर की अपने अन्दर उपस्थिति का चैतन्य ज्ञान ही विश्वास है।
—महात्मा गांधी

जब सूरज सिर पर होता है तो परछाईं नहीं पड़ती। इसी प्रकार जब तुम्हारे मस्तिष्क में विश्वास दृढ़ होता है तो फिर उसमें संदेह की परछाईं नहीं पड़ती।

—सत्य साईं बाबा

Faith is one of the forces by which men live, and the total absence of it means collapse. **—William James**

विश्वास उन शक्तियों में से एक है जो मनुष्य को जीवित रखती है, विश्वास का पूर्ण अभाव ही जीवन का अवसान है। **—विलियम जेम्स**

विश्वास के बिना कार्य करना सतहविहीन गड्ढे में पहुँचने के प्रयत्न के सदृश है। **—महात्मा गांधी**

विश्वास मनुष्य को केवल मनुष्य ही नहीं बनाता वरन् ईश्वर तक पहुँचाने में पूर्णतया सफल होता है। **—अज्ञात**

विश्वास क्या नहीं कर सकता—विश्वास हमें अथाह सागर के बीच से होकर ले चलता है और समय पर गगनचुम्बी पहाड़ों को लाँघने में भी सरलता अनुभव कराता है। **—अज्ञात**

जो अपने आप में विश्वास नहीं करता वह नास्तिक है।

—स्वामी विवेकानन्द

मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है जिसकी सिद्धि में उसका सच्चा विश्वास है। **—स्वेट मार्डेन**

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। **—रवीन्द्र**

विश्वास से बढ़ कर कोई दवा नहीं, इलाज तो बहाना है। **—अज्ञात**

Faith is the root of all blessings. **—Jeremy Taylor**

विश्वास सारे वरदानों का आधार है। —**जेरेमी टेलर**

विश्वास मैत्री का मुख्य अंग है। —**प्रेमचन्द**

विश्वास ही हमें वह मार्ग बताता है जो हमें अपनी मंजिल पर पहुँचा देता है। —**स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)**

महापुरुषों का विश्वास इतना प्रबल और अनन्य होता है कि वे पानी का घी और बालू की चीनी तक बना सकते हैं। —**स्वामी शिवानन्द**

विश्वास तूफानी सागर में हमको खेता है, पर्वतों को डिगा देता है, सागर लँघा देता है। विश्वास एक कोमल पुष्प नहीं है जो साधारण वायु के झोंके में कुम्हला जाय। यह हिमाचल के सदृश अडिग है। —**महात्मा गांधी**

विश्वास लाख हथौड़ी की चोट से भी नहीं टूटता। नीलकंठ के समान विष पान करके भी विश्वास सदा अजर अमर है। —**अमृत लाल नागर (खंजन नयन)**

जिसने पहले अपकार किया हो वह धन और मान द्वारा बहुत सत्कार करे तो भी उसका विश्वास नहीं करना चाहिए। —**वेदव्यास (महा० शांतिपर्व)**

विश्वास विश्वास, अपने आप में विश्वास, ईश्वर में विश्वास यही महानता का रहस्य है। —**स्वामी विवेकानन्द**

विश्वास का अभाव अज्ञान है। —**स्वामी रामतीर्थ**

जिस मनुष्य के चित्त से विश्वास जाता रहता है उसे मृतक समझना चाहिए। —**प्रेमचन्द**

There is nothing which strengthens faith more than the observance of morality. —**Addison**

सदाचार के आचरण के अतिरिक्त विश्वास को दृढ़ बनाने वाली दूसरी वस्तु नहीं है। —**एडीसन**

The faith waiting in the heart of a seed promises a miracle of life which it cannot prove at once. —**R. N. Tagore**

बीज के हृदय में प्रतीक्षा करता हुआ विश्वास जीवन में एक महान् आश्चर्य का वादा करता है, जिसे वह उसी समय सिद्ध नहीं कर सकता। —**रवीन्द्र**

Faith is the pencil of the soul that pictures heavenly things.
—**T. Burbridge**

विश्वास हृदय की वह पेंसिल है जो स्वर्गीय वस्तुओं को चित्रित करती है।
—**टी० बरब्रिज**

As the flower is before the fruit, so is faith before good works.
—**Whately**

जैसे फल के पहले फूल, वैसे ही सत्कार्य के पहले विश्वास। —**ह्वैटली**

अविश्वासी के उत्तम विचार से विश्वासी की भूल अधिक अच्छी है।
—**टामस रसल**

Faith is like love; it cannot be forced. As trying to force love begets hatred, so trying to compel religious belief leads to unbelief. —**Schopenhouer**

विश्वास प्रेम के सदृश है, यह विवश नहीं किया जा सकता। जैसे बलपूर्वक प्रेम करना घृणा उत्पन्न करता है वैसे ही धार्मिक विचारों में विवश करना अविश्वास पैदा करता है। —**शोपेनहावर**

विश्वास महान् कृतियों का जनक है। यह योग्यता को शक्ति प्रदान करता है, बल को दूना करता है, मानसिक शक्तियों का पोषण करता है, शक्ति को बढ़ाता है। —**ओ० एस० मार्डन**

Love all, trust a few, do wrong to none. —**Shakespeare**

प्रेम सबसे करो, विश्वास कुछ पर करो, किसी का बुरा न करो।
—**शेक्सपियर**

विश्वासघात

Treachery, though at first very cautious, in the end betrays itself.
—Livy

विश्वासघात यद्यपि प्रारम्भ में बहुत सावधान होता है किन्तु अंत में स्वयं को धोखा देता है।
—लिवी

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च यश्च विश्वासघातकः।
ते नरा नरकं यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥

मित्रद्रोही, कृतघ्न और विश्वासघाती तब तक नरक में वास करते हैं जब तक सूरज और चाँद रहते हैं।
—अज्ञात

जब अत्याचारी प्रेम का अभिनय करे तब वह डरने का समय है।
—शेक्सपियर

जिसने एक बार विश्वासघात किया है, उसका पुनः विश्वास न करो।
—शेक्सपियर

विश्वासघात महापाप है।
—अज्ञात

विष

अनभ्यासे विषं शास्त्रमजीर्णे भोजनं विषम्।
दरिद्रस्य विषं गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषम् ॥ **—चाणक्य**

बिना अभ्यास के शास्त्र विष हो जाता है, अजीर्ण में भोजन करना विष हो जाता है। दरिद्रों को सभा विष और वृद्ध को युवती विष जान पड़ती है।

प्रेमपूर्ण व्यवहार अमृत है और द्वेषपूर्ण व्यवहार ही विष है।
—हनुमानप्रसाद पोद्दार भाईजी

एक का भोजन दूसरे के लिए विष है।
—कहावत

विषय (दे० 'वासना')

सारे विषयभोग विष से भी भारी विष हैं। **—स्वामी शंकराचार्य**

विषय-भोग में धन का ही सर्वनाश नहीं होता, इससे कहीं अधिक बुद्धि और बल का सर्वनाश होता है।
—प्रेमचन्द

भोग रोग सम भूषण भारू। यम-यातना सरिस संसारू ॥ **—तुलसी**

If sensuality were happiness, beasts were happier than men; but human felicity is lodged in the soul, not in the flesh.

—**Seneca**

यदि इन्द्रियसुख ही आनन्द होता तो पशु मनुष्य से अधिक सुखी होते, परन्तु मानव-आनन्द आत्मा में है, शरीर में नहीं। —**सेनेका**

विषयों के सम्बन्ध में सोचने से उनसे सम्पर्क हो जाता है। —**गीता**

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः। —**भर्तृहरि**

विषयों को हमने नहीं भोगा किन्तु विषयों ने ही हमें भोग लिया; हमने तप को नहीं तपा, किन्तु विषयों ने ही हमें तपा डाला।

Voluptuousness, like justice, is blind; but that is the only resemblance between them —**Pascal**

विषय न्याय के सदृश अन्धा है, परन्तु दोनों में केवल इतनी ही समानता है।

—**पास्कल**

Sensuality is the grave of the soul. —**Channing**

इन्द्रियसुख आत्मा की कब्र है। —**चैंनिंग**

सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि पद छाँड़ि विषय अनुरागी॥ —**तुलसी**

विषयेष्वतिसंरागो मानसो मल उच्यते।
तेष्वेव हि विरागोऽस्य नैर्मल्यं समुदाहृतम्॥ —**अज्ञात**

विषयों में अत्यन्त राग ही मन का मैल है और विषयों से वैराग्य होने को ही निर्मलता कहते हैं।

विषय-चिन्तन

विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष की आसक्ति उन विषयों में हो जाती है। आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है, कामना से क्रोध उत्पन्न होता है।

—**गीता २-६२**

विषयी (दे० 'कामी')

The body of a sensualist is the coffin of a dead soul.

—**Bovee**

विषयी का शरीर मृतक आत्मा का कफन है। —बोवी

कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। —कालिदास

काम से जो पुरुष आर्त्त हैं वे जीव और जड़ में भेद नहीं कर सकते।

A youth of sensuality and intemperance delivers over a worn-out body to old age. **--Cicero**

असंयमी और विषयी युवक क्षीण शरीर को बुढ़ापे के हवाले करता है।

—सिसरो

कामी स्वतां पश्यति। —कालिदास

कामी पुरुष सब वस्तुओं को अपने अनुकूल ही समझता है।

He that lives in a kingdom of sense, shall die in the kingdom of sorrow. **—Baxter**

जो वासना के साम्राज्य में लिप्त रहता है, वह दुःख के साम्राज्य में मरेगा।

—बेक्सटर

विषाद

न विषादे मनः कार्यं विषादो दोषवत्तरः।
विषादो हन्ति पुरुषं बालं क्रुद्ध इवोरगः॥

—वाल्मीकि (रा०, कि०)

मन को विषादग्रस्त नहीं बनाना चाहिए, विषाद में बहुत बड़ा दोष है। जैसे क्रोध में भरा हुआ साँप बालक को काट खाता है, उसी प्रकार विषाद पुरुष का नाश कर डालता है।

यो विषादं प्रसहते विक्रमे समुपस्थिते।
तेजसा तस्य हीनस्य पुरुषार्थो न सिध्यति॥ —वाल्मीकि

जो पराक्रम का अवसर उपस्थित होने पर विषादग्रस्त हो जाता है, तेज से रहित उस व्यक्ति से फिर पुरुषार्थ नहीं होता।

विषादो दोषवत्तरः विषादो हन्ति पुरुषम्।

—वाल्मीकि

विषाद बड़ा भारी पाप है, विषाद पुरुष को खा जाता है।

उत्साह-हीन, दीन तथा विषाद-ग्रस्त रहने वाले के सब काम बिगड़ जाते हैं और वह जटिल संकटों में घिर जाता है।

—**दीनानाथ दिनेश** (गीता ज्ञान)

विस्तृत

जले तैलं खले गुह्यं पात्रे दानं मनागपि ।
प्राज्ञे शास्त्रं स्वयं यांति विस्तारं वस्तुशक्तितः ।। —**चाणक्य**

पानी में तेल, दुष्ट व्यक्ति से कही गयी गुप्त बात, सुपात्र को दिया हुआ दान और बुद्धिमान् मनुष्य का शास्त्राभ्यास यदि थोड़ा भी होता है तब भी वह अपनी शक्ति के अनुसार स्वयं विस्तृत हो जाता है।

विस्मृति

There is noble forgetfulness—that which does not remember injuries. —**C. Simmons**

क्षति की स्मृति न रखना मधुर विस्मृति है। —**सी० सिमन्स**

There is no remembrance which time does not obliterate, nor pain which death does not terminate. —**Cervantes**

कोई ऐसी स्मृति नहीं है जिसे समय भुला न दे, कोई ऐसी पीड़ा नहीं है जिसे मृत्यु समाप्त न कर दे। —**सर्वेनटीज**

The Pyramids themselves, doting with age have forgotten the names of their founders. —**Fuller**

युगों से अनुरक्त पिरामिड भी अपने बनाने वालों के नाम को विस्मृत कर गये हैं। —**फुलर**

वीतराग

वनेषु दोषाः प्रभवन्ति रागिणां गृहेषु पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः ।
अकुत्सिते कर्मणि यः प्रवर्तते निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।।

—**शान्तिशतकम्**

विषयी वन में भी दोषमुक्त नहीं हो पाते और संयमी जन घर में रहकर भी

इन्द्रिय निग्रह कर लेते हैं। इसलिए अच्छे कार्य में प्रवृत्त रहने वाले वीतराग पुरुष के लिए उसका घर ही तपोवन है।

वीर

वही सच्चा वीर है जो संसार की माया के बीच में रह कर भी पूर्णता को प्राप्त करता है। **—परमहंस रामकृष्ण**

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा।
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु ॥ **—स्वामी शंकराचार्य**

वीरों में सबसे बड़ा वीर कौन है ? जो कामबाणों से पीड़ित नहीं होता।

कायर मृत्यु के पूर्व अनेक बार मरते हैं, किन्तु वीर एक ही बार मरते हैं।
—शेक्सपियर (जूलियस सीजर)

Cowards die many times before their death; the valiant never taste of death but once. **—Shakespeare (Julius Ceaser)**

वीर पुरुष अपने पौरुष के भरोसे युद्ध करता है, सैनिकों की संख्या के बल पर नहीं। **—वेदव्यास [महा०, वनपर्व]**

वीर का सबसे बड़ा शत्रु उसका अपना अहंकार होता है। **—अज्ञात**

वीर पुरुष वह कहलाता है जो दुनिया को जीतता है, लेकिन महावीर वह है जिसने अपने ऊपर जय पायी है और दुनिया सें ऐसे छिप गया जैसे दूध में शक्कर।
—विनोबा

वीर हृदय युद्ध का नाम ही सुनकर नाच उठता है।
—जयशंकर प्रसाद (अज्ञातशत्रु)

'वीर भोग्या वसुन्धरा'।

वीर पुरुष ही पृथ्वी का राज्य भोगते हैं। **—अज्ञात**

विपत्ति आती है और चली जाती है, वीर वही है जो धीर रहे और न्याय, सच्चाई का त्याग न करे। **—सुदर्शन**

दो वीरों में महान् वीर वह है जो अपने शत्रुओं का भी आदर करता है।
—ब्यूमेल

यदि तुम्हें क्षमावान् और सत्यवादी वीर बनना हो तो तुम्हें वीर्य की अच्छी तरह रक्षा करनी चाहिए। **—महात्मा गांधी**

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहिं प्रलापु ॥ —तुलसी

वीर पुरुष अपना असम्मान नहीं देख सकते। —अज्ञात

योद्धा के लिए विजय और वीरगति एक ही समान आनंददायी हैं, क्योंकि दोनों में ही एक समान आत्मगौरव की रक्षा होती है। —अज्ञात

The heroes of mankind are the mountains, the highlands of the moral world. **—A. P. Stanley**

मानवता के वीर नैतिक जगत् के पर्वत एवं पर्वतीय प्रदेश हैं।

—ए० पी० स्टैनली

वीरों ने पहले मानस-संसार पर विजय प्राप्त की है, फिर पार्थिव संसार पर। **—स्वेट मार्डेन**

वीर पुरुष दयालु होते हैं, असहायों पर, स्त्रियों पर और दुर्बलों पर उन्हें क्रोध नहीं आता। **—प्रेमचन्द**

वीरगति

क्षत्रिय युद्ध में विजय प्राप्त करके अथवा प्राणी की बलि देकर जो गति प्राप्त करता है वह तपस्या के द्वारा भी नहीं प्राप्त हो सकती। **—वेदव्यास [महा०]**

वीरता

प्राणों का मोह त्याग करना, वीरता का रहस्य है। **—जयशंकर प्रसाद**

Self trust is the essence of heroism. **—Emerson**

आत्म-विश्वास वीरता का सार है। **—एमर्सन**

शस्त्र-युद्ध में विजय प्राप्त करने की अपेक्षा आत्मविजय करने में अधिक वीरता है। —अज्ञात

अहिंसा वीरों की होनी चाहिए, दुर्बलों की कदापि नहीं। जब शस्त्र की धार शरीर में लगती है, तभी वीरता की परीक्षा होती है। **—महात्मा गांधी**

Heroism is the brilliant triumph of the soul over fear.

—Amiel

भय पर आत्मा की शानदार विजय ही वीरता है। —एमियल

बिना विवेक के वीरता महासमुद्र की लहरों में डोंगी-सी डूब जाती है।

—लक्ष्मी नारायण मिश्र

वीरता मारने में नहीं है, मरने में है; किसी की प्रतिष्ठा बचाने में है, प्रतिष्ठा गँवाने में नहीं। —महात्मा गांधी

वीरपूजा

Hero-worship exists, has existed, and will exist, forever universally among mankind. **—Carlyle**

सारी मानवता में विश्वव्यापी वीरपूजा है, रही है और सदैव ही रहेगी।

—कारलाइल

वीरपूजा वहाँ पर सबसे अधिक होती है, जहाँ पर मनुष्य की स्वतंत्रता का बहुत कम ध्यान रहता है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

वृक्ष

जो मनुष्य सड़क के किनारे तथा जलाशयों के तट पर वृक्ष लगाता है वह स्वर्ग में उतने ही वर्षों तक फूलता फलता है जितने वर्षों तक वह वृक्ष फलता फूलता है। —पद्मपुराण

अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं।
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्॥

—कालिदास (अभिज्ञान शाकुन्तलम् ५-७)

वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सह लेता है परन्तु अपनी छाया से औरों को गर्मी से बचाता है।

पत्रपुष्पफलच्छाया मूल वल्कल दारुभिः।
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मैः कामान् वितन्वते॥ —शार्गंधरपद्धतिः

वृक्ष अपने पत्ते, फूल, फल,छाया, मूल, वल्कल, काष्ठ, गन्ध, दूध, भस्म, गुठली और कोमल अंकुर से सभी प्राणियों को सुख पहुँचाते हैं।

वृत्तिहीन

परागन्दा रोजी परागन्दा दिल। —शेख सादी

वृत्तिहीन मनुष्य का चित्त स्थिर नहीं रहता।

वेतन

मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। —**प्रेमचन्द**

वेदना

Pain and pleasure, like light and darkness, succeed each other. –**L. Sterne**

वेदना और हर्ष, प्रकाश और छाया की भाँति, एक के बाद एक आते हैं।
—**लारेन्स स्टर्न**

Pain is the wages of ill pleasure. —**Proverb**

वेदना कुत्सित आनन्द का वेतन है। —**कहावत**

वेदना और बेइज्जती के मुकाबिले दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं है जो मनुष्य की सच्ची रूह को खींचकर बाहर ला सके। —**शरत् (अधिकार)**

वेदना पाप का परिणाम है। —**गौतम बुद्ध**

The pain of the mind is worse than the pain of the body.
—**Syrus**

मानसिक वेदना, शारीरिक वेदना की अपेक्षा अधिक कष्टदायक होती है।
—**साइरस**

वेदान्त

वेदान्त की शिक्षा ग्रहण करने पर मनुष्य शोक, भय और चिन्ता से विमुक्त हो जाता है। —**स्वामी रामतीर्थ**

भारत को वेदान्त भुलाने की आवश्यकता है और पश्चिम को अध्यात्म सीखने की जरूरत है। —**स्वामी विवेकानन्द**

वेदान्त का उद्देश्य संसार को दुःख, सुख, भाग्य, मोहादि से विमुक्त करना है।
—**स्वामी रामतीर्थ**

वेदान्त हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति की पराकाष्ठा है।……अपने जीवन को सर्वोच्च और सर्वोत्तम प्रकार से बिताने के विज्ञान और कला को वेदान्त कहते हैं।

यह वह प्रकाश है जो विचार और ज्ञान के संसार को प्रकाशित करता है।··· वेदान्त कहता है तुम यह नश्वर शरीर नहीं हो वरन् तुम सब में व्याप्त अमर आत्मा हो।···वेदान्त भारत की सबसे बड़ी पैतृक देन है। यह भारत का सबसे महान् कोष है। **—स्वामी शिवानन्द**

वेश्या

वेश्या जगत् की एक विकृत वस्तु है। देखने में मोहक और कोमल, किन्तु वास्तव में हलाहल विष। अपहरण उसका व्यवसाय, छल उसका स्वभाव, पाप उसका जीवन और पतन उसका मार्ग है। **—आचार्य चतुरसेन शास्त्री**

सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलस्त्रियः। **—अज्ञात**

शर्मीली वेश्या भूखों मरती है और निर्लज्ज गृहस्थिन बदनाम होकर नष्ट होती है।

खूब साज-सिंगार किये और बनी-ठनी वेश्या के सुकुमार बाहु एक तरह की गन्दी दोजखी नाली हैं जिनमें घृणित मूर्ख लोग जाकर अपने को डुबा देते हैं।

—संत तिरुवल्लुवर

जिन लोगों की बुद्धि निर्मल है और जिनमें अगाध ज्ञान है वे उन औरतों के स्पर्श से अपने को अपवित्र नहीं करते जिनका सौन्दर्य और लावण्य सब लोगों के लिए खुला है। **—संत तिरुवल्लुवर**

वेश्यासौ मदनज्वाला रूपेन्धनसमेधिता।
कामिभिर्यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च॥ **—भर्तृहरि**

वेश्या सुन्दरता-रूपी ईंधन से जलती हुई प्रचण्ड कामाग्नि है। कामी पुरुष अपने धन और यौवन को इस ज्वाला में भस्म कर देते हैं।

वित्तेन वेत्ति वेश्या स्मरसदृशं कुष्ठिनं जराजीर्णम्।
वित्तं विनापि वेत्ति स्मरसदृशं कुष्ठिनं जराजीर्णम्॥ **—भर्तृहरि**

पैसे वाले कोढ़ी और जराजीर्ण को वेश्या कामदेव के समान सुन्दर समझती है और बिना पैसे वाले को चाहे वह कामदेव के समान सुन्दर ही क्यों न हो, कोढ़ी और बुढ़ापे से जीर्ण समझती है।

कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधरपल्लवं मनोज्ञमपि।
चारभटचौरचेटकनट-निष्ठीवनशरावम्॥ **—भर्तृहरि**

वेश्या का अधर यदि अतीव मनोहर है तो भी कौन कुलीन पुरुष उसे चुम्बन करेगा ? क्योंकि वह तो दूत, योद्धा, धूर्त, चोर, नीच, नट और जारों के थूकने का पात्र है ।

वैभव

Like madness is the glory of this life. **—Shakespeare**

इस जीवन का वैभव पागलपन के सदृश है । **—शेक्सपियर**

वैभव में पशुता है, पशुता ही नहीं दानवता है । **—भगवतीचरण वर्मा**

The shortest way to glory is to be guided by conscience. **—Home**

अन्तरात्मा द्वारा निर्धारित मार्ग पर चलना ही वैभव का सबसे छोटा मार्ग है । **—होम**

धर्म का भूषण वैराग्य है, वैभव नहीं । **—महात्मा गांधी**

The paths of glory lead but to the grave. **—Gray**

वैभव का मार्ग केवल कब्र की ओर जाता है । **—ग्रे**

Glory follows virtue like its shadow. **—Cicero**

अपनी छाया के सदृश वैभव गुणों के पीछे-पीछे चलता है । **—सिसरो**

वैभव अपने ध्येय तक पहुंचने के प्रयास में है, न कि उस तक पहुंचने में । **—महात्मा गांधी**

वैर

वैर-विरोध से झगड़ा वखेड़ा शुरू हो जाता है और वह कुलनाश के लिए बिना लोहे का शस्त्र है । **—वेदव्यास (महा०, सभापर्व)**

इस संसार में वैर से वैर कभी शान्त नहीं होते । प्रेम से ही वैर शान्त होते हैं । यही सदा का नियम है । **—धम्मपद**

वैराग्य

वैराग्य होने पर ही शान्तिदायी त्याग साधक में दीख पड़ता है । **—अज्ञात**

अपने दु:खों का अनुभव और दूसरों की आपत्ति का दृश्य बहुधा वह वैराग्य उत्पन्न करता है जो सत्संग, अध्ययन और मन की प्रवृत्ति से भी संभव नहीं।

—प्रेमचन्द

वैराग्यमेवाभयम्। —भर्तृहरि

केवल वैराग्य में ही भय नहीं है।

काम क्रोध मद लोभ की, लगी हिये में आग।
नारायण वैराग भट, सहित ज्ञान गए भाग॥

—नारायण स्वामी

वैरी

बलोपपन्नोऽपि हि बुद्धिमान्नरः परं नयेन्न स्वयमेव वैरिताम्।
भिषङ्ममास्तीति विचिन्त्य भक्षयेदकारणात् को हि विचक्षणो विषम्॥

—अज्ञात

बुद्धिमान् पुरुष बल से युक्त हो तो भी स्वयं दूसरे को वैरी न बनाये। मेरे वैद्य वर्तमान हैं, ऐसा सोच कर कौन चतुर अकारण विष खा सकता है।

मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम्।
लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणमेव वैरिणो जगति॥ —भर्तृहरि

तृण वृत्ति वाले मृग, जल वृत्ति वाले मीन (मछली) और संतोष वृत्ति वाले सज्जनों के भी इस संसार में शिकारी, मछुवा और चुगलखोर बिना कारण के ही वैरी रहते हैं।

वोट

Votes should be weighed not counted. —Schiller

वोटों को गिनना नहीं, तौलना चाहिए। —शिलर

The ballot is stronger than the bullet. —Lincoln

वोट बन्दूक की गोली से अधिक शक्तिशाली है। —लिंकन

व्यंग्य

व्यंग्य वचन दूसरों का हृदय छेदने में तीर का काम करते हैं। —अज्ञात

हाजिरजवाबी व्यंग्योक्ति का प्राण होती है। शब्दों की कोमलता और अर्थ की गहनता ये दो उसके आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग होते हैं। —अज्ञात

व्यंग्य और ताना मेरे देखने में शैतान की भाषा है। इसी से बहुत दिनों से मैंने उसे छोड़ दिया है। —कार्लाइल

चितवन से जो रुखाई प्रकट की जाती है वह भी क्रोध से भरे हुए कटु बचनों से कम नहीं होती। —रामचन्द्र शुक्ल

Sharp wits, like sharp knives, do often cut their owner's fingers. **—Arrowsmith**

तीव्र व्यंग्य तेज कृपाण की भाँति प्रायः अपने मालिक की ही उँगलियों को काट देता है। —एरोस्मिथ

व्यंग्य की विष-ज्वाला रक्त-धारा से भी नहीं बुझती।
—जय शंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

संसार भर के उपद्रवों का मूल व्यंग्य है। हृदय में जितना यह घुसता है, उतनी कटार नहीं। —जयशंकर प्रसाद (अजातशत्रु)

ऐसा व्यंग्य कभी स्वीकार के योग्य नहीं होता जो दूसरों को कष्ट पहुँचाये।
—मर्फी

किसी मनुष्य को दूसरे को कटु वचन कहने का उसी प्रकार अधिकार नहीं है जिस प्रकार उसे ढकेल देने का। —डाक्टर जानसन

No sword bites so fiercely as an evil tongue.
—Sir P. Sidney

कोई तलवार इतनी बेदर्दी से नहीं काटती जितना कि कटु वचन।
—सर पी० सिडनी

वार्त्तालाप में व्यंग्योक्तियों का प्रयोग भी एक कला है। —अज्ञात

Good humour is the best shield against the darts of satirical raillery. **—C. Simmons**

व्यंग्योक्तियों के तीर से बचने के लिए रसिक स्वभाव सर्वोत्तम ढाल है।
—सी० सिमन्स

Satire should not be like a saw, but a sword; it should cut and not mangle. **—Jeffrey**

व्यंग्य आरी नहीं, तलवार की तरह होना चाहिए जो एक ही बार में काट दे, रेते नहीं। **—जैफर**

We smile at the satire expended upon the follies of others, but we forget to weep at our own. **—Mad. Necker**

दूसरे की मूर्खता पर किये गये व्यंग्य पर हम हँसते हैं लेकिन अपने ऊपर किये गये व्यंग्य पर हम रोना भूल जाते हैं। **—म० नेकर**

विवेकरहित व्यंग्य मूर्ख के हाथ में कृपाण के सदृश है। **—अज्ञात**

व्यक्ति

They walk with speed who walk alone. **—Napoleon**

वे व्यक्ति तेजी से आगे बढ़ते हैं जो अकेले चलते हैं। **—नेपोलियन**

इस संसार में हम केवल यथार्थ वस्तुएँ ही नहीं हैं जैसे कि पत्थर के टुकड़े होते हैं, हम तो व्यक्ति हैं और इसलिए हमें इससे सन्तोष नहीं होता कि हम परिस्थितियों के प्रवाह के साथ बहते जायँ। **—रवीन्द्र**

इस संसार में वही व्यक्ति अपने कार्य में सफल होते हैं, जो अपनी परिस्थितियों को अनुकूल बना लेते हैं और यदि वे बना नहीं सकते तो अपने अनुकूल परिस्थितियों को पैदा कर लेते हैं। **—जार्ज बर्नार्ड शा**

The worth of a state, in the long run, is the worth of the individuals composing it. **—J. S. Mills**

किसी राष्ट्र का मूल्य उसके व्यक्तियों का मूल्य है जिनसे वह बना है।
—जे० एस० मिल

व्यक्तित्व

मानव के लिए व्यक्तित्व पुष्प के लिए सुगन्ध के सदृश है।
—चार्ल्स एम० श्वेब

कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जो दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं, जो दूसरे व्यक्तित्व को आकर्षित करके उसको दबा देते हैं और उसको अपना दास बना लेते हैं। **—भगवती चरण वर्मा**

Individuality is everywhere to be spared and respected as the root of everything good. **—Richter**

व्यक्तित्व की सभी जगह रक्षा और सम्मान करना चाहिए, क्योंकि यह सभी अच्छाइयों का आधार है। **—रिचर**

That life only is truly free which rules and suffers for itself **Bulwor**

वास्तव में वही जीवन स्वतंत्र है जो अपने पर शासन करता है और कष्ट सहता है। **—बुल्वर**

The strong man is stronger if he remains alone. **—Hitler**

बलवान् मनुष्य यदि अकेला रहे तो और बलवान् बन जाता है। **—हिटलर**

व्यथा

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुन अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥ **—रहीम**

There are two things to be sanctified—pain and pleasure. **—Pascal**

दो वस्तुएँ पवित्र करने की हैं—व्यथा और हर्ष। **—पैस्कल**

व्यभिचार

किसी स्त्री के सतीत्व को भंग करने से पहले मर जाना उत्तम कार्य है। **—महात्मा गांधी**

द्रव्यलुब्धस्य नो सत्यं ना स्त्रैणस्य पवित्रता। **—चाणक्य**

'धन के लोभी को सच्चाई नहीं होती और व्यभिचार करने वाले को पवित्रता नहीं होती।

व्यवसायी

नात्युच्चशिखरो मेरुर्नातिनीचं रसातलम्।
व्यवसायद्वितीयानां नाप्यपारो महोदधिः॥ **—अज्ञात**

व्यवसायी मनुष्य के लिए सुमेरु पहाड़ की चोटी भी बहुत ऊँची नहीं है, उसके लिए रसातल भी अधिक नीचे नहीं है और वह (उद्योगी) समुद्र को भी अपार नहीं समझता।

व्यवहार

यस्मिन्यथा वर्तते यो मनुष्यः। तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।
मायाचारो मायया बाधितव्यः। साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः॥

—वेदव्यास (महा०, शान्तिपर्व)

अपने साथ जो जैसा बरतता है उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना धर्मनीति है, मायावी पुरुष के साथ मायावीपन और साधु पुरुष के साथ साधुता का व्यवहार करना चाहिए।

Behaviour is a mirror in which every one displays his image. **—Goethe**

मनुष्य का व्यवहार वह दर्पण है जिसमें वह अपना चित्र दिखाता है।

—गेटे

Men make laws, women make manners. **—D. Sigur**

मनुष्य नियम बनाते हैं, स्त्रियाँ व्यवहार। **—डी० सीगर**

The society of women is the foundation of good manners. **—Goethe**

स्त्रियों की संगति उत्तम व्यवहार की नींव है। **—गेटे**

There are few things more catching than bad temper and bad manner. **—A. G. Gardner**

खराब व्यवहार और चिड़चिड़े स्वभाव की तरह कुछ ही वस्तुएँ अति शीघ्र प्रभावित करती हैं। **—ए० जी० गार्डनर**

Cultured and fine manners are everywhers a passpoert to regard. **—Johnson**

सभ्य और सुन्दर व्यवहार हर जगह आदर पाने के लिए प्रवेशपत्र हैं।

—जानसन

The ability to deal with people is as purchasable a ccmmodity as sugar and coffee. —**John D. Rockefeller**

लोगों के साथ व्यवहार करने की योग्यता वैसे ही क्रेय वस्तु है जैसे चीनी और काफी। —**जान डी० रॉकफेलर**

Politeness goes far, yet costs nothing. —**Somuel Smiles**

शिष्टता का प्रभाव दूर तक जाता है, पर उसमें कुछ व्यय नहीं होता।

—**सैमुअल स्माइल्स**

Good manners are made up of petty Sacrifices —**Emerson**

अच्छे व्यवहार छोटे-छोटे त्याग से बनते हैं। —**एमर्सन**

Manners are minor morals. —**Palay**

व्यवहार छोटे सदाचार हैं। —**पेले**

Manners must adorn knowledge, and smooth their way through the world. —**Chesterfield**

व्यवहार ज्ञान को सुशोभित करता है, और संसार में अपने मार्ग को सरल बनाता है। —**चेस्टरफील्ड**

If bad manners are infectious, so also are good manners.

—**A. G. Gardner**

जैसे बुरे व्यवहार का प्रभाव बुरा पड़ता है वैसे ही अच्छे व्यवहार का प्रभाव अच्छा पड़ता है। —**ए० जी० गार्डनर**

महापुरुष अपनी महत्ता का परिचय छोटे मनुष्यों के साथ किये गये अपने व्यवहार से देते हैं। —**कार्लाइल**

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्। —**अज्ञात**

जो व्यवहार अपने प्रतिकूल जान पड़े उसे दूसरों के साथ भी न करो।

Manners often make fortune. —**Proverb**

सद्व्यवहार प्रायः भाग्य का निर्माण करते हैं। —**कहावत**

दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करो जैसा कि तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें। —**बाइबिल**

When dealing with people, let us remember we are not dealing with creatures of logic. We are dealing with creatures of emotion, creatures bristling with prejudices and motivated by pride and vanity. **—Dale Carnegie**

लोगों के साथ व्यवहार करते समय हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम तर्क-शास्त्रियों के साथ व्यवहार नहीं कर रहे हैं, हम ऐसे लोगों के साथ व्यवहार कर रहे हैं, जिनमें मानसिक आवेश है, पक्षपात है और जो गर्व एवं अहंकार से संचरित होते हैं। **—डेल कारनेगी**

सद्व्यवहार से उचित और सस्ती कोई अन्य वस्तु नहीं। **—एनन**

न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं न कश्चित्कस्यचिद्रिपुः।
व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा॥ **—हितोपदेश**

न तो कोई किसी का मित्र है, और न कोई किसी का शत्रु है। व्यवहार से मित्र तथा शत्रु बन जाते हैं।

न्यायोचित कर्मानुकूल व्यवहार करने पर ही सच्चे और सरल कर्म को जाना जा सकता है। **—रस्किन**

व्यसन

व्यसनानि सन्ति बहुशो, व्यसनद्वयमेव केवलम्।
विद्याभ्यसनं व्यसनमथवा हरिपादसेवनम्॥ **—अज्ञात**

संसार में व्यसन तो बहुत से हैं, किन्तु उनमें से दो ही व्यसन ऐसे हैं जिन्हें वस्तुतः व्यसन (प्रिय विषय) कहा जा सकता है—एक तो विद्या का अभ्यास करना और दूसरे भगवान् के चरणों की सेवा करना।

व्याख्यान (दे० 'भाषण', 'तकरीर')

बुद्धिमान् लोगों के सामने उपदेशपूर्ण व्याख्यान देना जीवित पौधों को पानी देने के समान है। **—संत तिरुवल्लुवर**

Speech is power : speech is to persuade, to convert, to compel. **—Emerson**

व्याख्यान शक्ति है, व्याख्यान कायल करने, मत बदलने एवं बाध्य करने के लिए है। **—एमर्सन**

A printed speech is like a dried flower : the substance, indeed is there, but the colour is faded and the perfume gone. **—Lorain**

छपा हुआ व्याख्यान मुरझाये पुष्प के सदृश है जिसमें सार तो है लेकिन रंग उड़ा हुआ है और सुगन्ध चली गयी है। **—लोरेन**

ऐ शब्दों का मूल्य जानने वाले पवित्र पुरुषों ! पहले अपने श्रोताओं की मानसिक स्थिति को समझ लो और फिर उपस्थित जनसमूह की अवस्था के अनुसार अपने व्याख्यान देना आरम्भ करो। **—संत तिरुवल्लुवर**

व्यापार

महँगे या छल-छद्मपूर्ण व्यापार से जनता को सुख नहीं होता। अतः राष्ट्र के कर्णधारों का कर्त्तव्य है कि वे सोच-समझकर व्यापार करें। **—अज्ञात**

जिस व्यक्ति से आप वार्त्तालाप कर रहे हैं उसकी ओर पूर्ण ध्यान देने में ही सफल व्यापार निहित है। **—इलियट**

Business today consists in persuading crowds.— **G. S. Lee**

आज का व्यापार समूह को प्रलोभन देने में निहित है। **—जी० ई० ली**

Business is the salt of life. **—Proverb**

व्यापार जीवन का नमक है। **—कहावत**

Business neglected is business lost. **—Proverb**

व्यापार की उपेक्षा करना व्यापार को खोना है। **—कहावत**

व्यापार मनुष्य को बनाता है और उसकी परीक्षा भी लेता है। **—कहावत**

Business may be troublesome, but idleness is pernicious. **—Proverb**

व्यापार कष्टदायक हो सकता है लेकिन आलस्य नाशकारी है। **—कहावत**

Business is like oil, it won't mix with anything but business. **—J. Graham**

व्यापार तल के सदृश है। यह व्यापार से ही मिलता है किसी अन्य वस्तु से नहीं। **—जे० ग्राहम**

चरित्रहीन शिक्षा, मानवताहीन विज्ञान और नैतिकताहीन व्यापार लाभकारी तो होते नहीं अपितु पूर्ण खतरनाक होते हैं। **—सत्य साईं बाबा**

व्यायाम (दे० 'कसरत')

I take the true definition of exercise to be, labour without weariness. **—Dr. Johnson**

मेरे लिए व्यायाम की परिभाषा बिना थकावट के परिश्रम है। **—डा० जानसन**

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता।
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ॥**—महर्षि चरक**

व्यायाम करने से शरीर की पुष्टि, गात्रों की कान्ति, मांस-पेशियों के उभार का ठीक विभाजन, जठराग्नि की तीव्रता, आलस्य-हीनता, स्थिरता, हलकापन, और मलादि की शुद्धि प्राप्त होती है।

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति। **—महर्षि चरक**

व्यायाम करने वालों पर बुढ़ापा सहसा आक्रमण नहीं कर पाता।

शरीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धिनी।
देहव्यायाम संख्याता मात्रया तां समाचरेत् ॥ **—महर्षि चरक**

शरीर की जो चेष्टा देह को स्थिर करने एवं उसका बल बढ़ाने वाली हो, उसे व्यायाम कहते हैं। इसका उचित मात्रा में सेवन करना चाहिए।

शंका

शंका से शंका बढ़ती है और विश्वास से विश्वास बढ़ता है। यह अनुभव का शास्त्र है। **—विनोबा**

Doubt is hell in the human soul. **—Gasperin**

शंका मानव-आत्मा में नरक के समान है। **—गैस्प्रेन**

When you doubt, abstain. **—Zaroaster**

जब शंका हो, तो काम करने से रुक जाओ। —**जरदस्तु**

We know accurately only when we know little; with knowledge doubt increases. —**Goethe**

जब हम थोड़ा जानते हैं तभी हम ठीक-ठीक जानते हैं। ज्ञानवृद्धि के साथ शंका बढ़ती है। —**गेटे**

Our doubts are traitors
And make us lose the good we oft might win,
By fearing to attempt. —**Shakepeare**

हमारी शंकाएँ हमारे साथ विश्वासघात करती हैं और हमें उन अच्छाइयों से वंचित रखती हैं जिन्हें हम प्रयास से पा जाते। —**शेक्सपियर**

Human knowledge is the parent of doubt —**Greaville**

मानवीय ज्ञान शंका का अभिभावक है। —**ग्रेवाइल**

The end of doubt is the beginning of repose. —**Patrarck**

शंकाओं की समाप्ति शान्ति का आरम्भ है। —**पेट्रार्क**

शक्ति (दे० 'अधिकार', 'प्रभुता')

Force rules the world not opinion; but opinion which makes use of force. —**Pascal**

विचार नहीं वरन् शक्ति संसार पर शासन करती है, परन्तु विचार शक्ति का उपयोग करता है। —**पैस्कल**

शक्ति जागरण की तेजस्वी तरंगें हैं। —**अज्ञात**

Who overcomes
By force, hath overcome but half his foe. —**Milton**

शक्ति द्वारा शत्रु पर विजय अधूरी विजय है। —**मिल्टन**

Unlimited power corrupts the possessor. **—William Pitt**

असीमित शक्ति अपने धारण करने वाले को पतित कर देती है।
—विलियम पिट

The appetite for unrestrained power grows with use.
—Jawaharlal Nehru

प्रतिबंधरहित शक्ति की भूख उपयोग से बढ़ती है। **—जवाहरलाल नेहरू**

Patience and gentleness is power. **—Leigh Hunt**

संतोष और सज्जनता ही शक्ति है। **—ले हन्ट**

Power corrupts, absolute power absolutely. **—Lord Acton**

शक्ति भ्रष्ट करती है; पूर्ण शक्ति पूर्ण रूप से। **—लार्ड आक्टन**

It is not possible to found a lasting power upon injustice, perjury and treachery. **—Demosthenis**

अन्याय, असत्य और कपट की बुनियाद पर स्थायी शक्ति स्थापित करना असम्भव है। **—डिमास्थेनीज**

शक्ति ही जीवन है, परम सुख है, जीवन अजर अमर है।**—स्वामी विवेकानन्द**

Power is ever stealing from many to the few.
—Wendell Philips

शक्ति अल्पों द्वारा सदा बहुतों से चुरायी जाती रही है। **—वेन्डेल फिलिप्स**

परमात्मा से जितना हम अपना सम्बन्ध जोड़ेंगे उतनी ही शक्ति हमें प्राप्त होगी, क्योंकि शक्ति वहीं से आती है। **—स्वेट मार्डेन**

वर्तंते सर्वं भूतेषु शक्ति सर्वतात्मना नृपः।
शव वच्छक्ति हीनस्तु प्राणी भवति सर्वदा॥

—देवी भागवत

हे राजन्! सम्पूर्ण भूतों में सर्वरूप में शक्ति ही विद्यमान है। शक्तिहीन प्राणी तो सदा शव की भांति हो जाता है।

जिसके पास अपनी शक्ति नहीं उसे भगवान् भी शक्ति नहीं दे सकता। शक्ति आत्मा के अंदर से आती है, बाहर से नहीं आती। जो बाहर की शक्ति पर भरोसा करता है वह अपने लिए काले दिनों को पुकारता है। **—सुदर्शन**

He who has great power should use it lightly. **—Seneca**

जिसके पास अधिक शक्ति है उसे उनका मृदुलता से उपयोग करना चाहिए। **—सेनेका**

मनुष्य अपनी ठीक-ठीक शक्ति को तब तक नहीं प्राप्त कर सकता जब तक कि वह इस बात को मन, वचन और काया से न समझ ले कि विश्व के महान् तत्त्व का मैं एक अंश हूँ। **—स्वेट मार्डेन**

Lust of power is the most fragrant of all the passions. **—Tacitus**

शक्ति की लालसा सभी वासनाओं में अधिक नीच है। **—टेसीटस**

मैदान में जलता हुआ अलाव वायु में अपनी उष्णता को खो देता है लेकिन इन्जन में बंद होकर वही आग संचालनशक्ति का अखण्ड भंडार बन जाती है। **—प्रेमचन्द**

मनुष्य को चमत्कारिक शक्तियाँ कठिन काम करने से नहीं प्राप्त होती बल्कि इस कारण प्राप्त होती हैं कि वह कार्य शुद्ध हृदय से करता है। **—रिचार्ड बी० ग्रेग**

Force is all-conquering but its victories are short-lived. **—Lincoln**

शक्ति सर्वविजयी है परन्तु उसकी विजय अल्पस्थायी है। **—लिंकन**

जो मनुष्य अपनी शक्ति का विचार न करके अज्ञानवश भयानक मार्ग में चल पड़ता है, उसका जीवन उस मार्ग में ही समाप्त हो जाता है। **—वेदव्यास (शान्तिपर्व)**

ज्ञान ही शक्ति है। **—स्वामी विवेकानन्द**

अपनी शक्ति को प्रकट न करने से शक्तिशाली पुरुष भी अपमान सहन करता है, काठ के भीतर रहने वाली आग को लोग आसानी से लाँघ जाते हैं, किन्तु जलती हुई अग्नि को नहीं । —**पंचतंत्र**

शक्ति का उपयोग परोपकार में करना चाहिए, शत्रु को पीड़ित कर देना मात्र ही शक्ति का सदुपयोग नहीं है । —**अज्ञात**

शक्ति विना महेशानिदगृहं शवरूपकः ।
शक्तियुक्तो महादेवि शिवोऽहं सर्वकामदः ॥

ब्रह्म का कथन है—शक्ति के बिना मैं सदा ही शव के समान अर्थात् प्राण रहित हूँ । जब शक्तियुक्त होता हूँ, तभी मैं सब इच्छाओं को पूर्ण करने वाला मंगल रूप हूँ ।

शत्रु (दे० 'दुश्मन', 'वैरी', 'रिपु')

अपनी इन्द्रियाँ ही अपनी शत्रु हैं, परन्तु वे जीत ली जायँ तो मित्र हैं ।
—**स्वामी शंकराचार्य**

माता रिपुः पिता शत्रुर्बालो याभ्यां न पाठ्यते ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥ —**चाणक्य**

वह माता शत्रु है और पिता बैरी है जिन्होंने अपने बालक को नहीं पढ़ाया, इस कारण वह सभा के बीच ऐसे शोभा नहीं पाता जैसे हंसों के बीच बगुला ।

There is no little enemy. —**Franklin**

कोई शत्रु छोटा नहीं होता । —**फ्रैंकलिन**

Our strategy is to destroy the enemy from within, to conquer him through himself. Mental confusion, contradiction of feelings, indecision pan:c—these are ours weapons. —**Hitler**

हमारी योजना यह है कि हम शत्रु को भीतर ही भीतर नष्ट करके उस पर विजय प्राप्त करें । मानसिक घबराहट, परस्पर विरोधी विचारों का संघर्ष, अनिश्चितता, त्रास की भावना—यही हमारे हथियार हैं । —**हिटलर**

दुश्मन न तवां हकीरो बेचारा शुमुर्द । —सादी

शत्रु को कभी दुर्बल न समझना चाहिए ।

शत्रुं च रोगं च नोपेक्षध्वम् । —अज्ञात

शत्रु की तथा रोग की उपेक्षा मत करो ।

छोटे शत्रु को छोटा उपाय करके ही काबू में लाना चाहिए। जैसे चूहे को सिंह नहीं बिल्ली ही मारती है । —अज्ञात

विधाय वैरं सामर्षे नरोऽरौ य उदासते ।
प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम् ।।

—माघ (शिशुपाल वध)

जो मनुष्य पहले ही से रुष्ट शत्रु के साथ वैर ठान कर उसकी उपेक्षा करते हैं अथवा उसकी ओर से उदासीन बन जाते हैं, वे वायु के सम्मुख तृणों के समूह में आग लगा कर सोते हैं ।

हमारे यथार्थ शत्रु तीन हैं—दरिद्रता, रोग और मूर्खता । वे वीर धन्य हैं जो इन तीनों के विरुद्ध युद्ध छेड़ते हैं । वे मानवता के यथार्थ उपासक और हमारे सच्चे सेनानायक हैं । —रामवृक्ष बेनीपुरी

शत्रु को तुच्छ मानने वाली प्रज्ञा एक मोहमयी मदिरा के समान है जो ज्योति और अमरत्व की तरफ नहीं वरन् अंधकार और मृत्यु की तरफ ले जाती है ।

—अज्ञात

अपने शत्रु को कभी छोटा मत समझो, देखो तृण के ढेर को आग की छोटी-सी चिनगारी भस्म कर देती है । —वृन्द कवि

उचित न रिपु-ग्रह रैनि-निवासा, उचित न वन एकाकी वासा ।

—द्वारका प्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

ध्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुतः सुखम् ।
पुरः क्लिश्नाति सोमं हि सैंहिकेयोऽसुरद्रुहाम् ।।

—माघ (शिशुपाल वध)

जब तक एक भी शत्रु शेष रहता है तब तक मनुष्य को सुख कहाँ ? राहु समस्त देवताओं के सम्मुख ही चन्द्रमा को दुःख पहुँचाता है ।

बुद्धिमान् शत्रु अच्छा होता है, मूर्ख मित्र नहीं । —वेदव्यास (शान्तिपर्व)

रक्त-पात करना पशुता है, कायरता है मन की।
अरि को वश करना चरित्र से, शोभा है सज्जन की ।।

—राम नरेश त्रिपाठी (पथिक)

अगर शत्रु तुम्हारे आगे झुके तो तुम उसकी नम्रता में भूल न जाओ, गाफिल न हो। कमान जितनी टेढ़ी झुकती है, उतनी ही वह अपने काम में कारगर होती है।

—अज्ञात

उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता ।
समौ हि शिष्टैराम्नातौ वर्त्स्यन्तावामयः स च ।।

—माघ (शिशुपाल वध)

अपना कल्याण चाहने वाले पुरुष को बढ़ते हुए शत्रु की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि (नीति के) पंडितों ने बढ़ने वाले रोग और शत्रु को समान बताया है।

आलस्यं ही मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ।।

—भर्तृहरि (नीति शतक)

आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहने वाला सबसे बड़ा शत्रु है, उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नहीं है—जिसके करने से मनुष्य कभी दुःखी नहीं होता।

शत्रुता (दे० 'बैर')

शब्द

When words are scarce, they are seldom used in vain.

—**Shakespeare**

जब शब्दों का अभाव होता है तब कदाचित् ही वे बेकार इस्तेमाल किये जाते हैं।

—शेक्सपियर

सब्द सब्द बहु अंतरा, सार सब्द चित देय ।
जा सब्दै साहेब मिलै, सोइ सब्द गहि लेय ।। —कबीर

एक सब्द सुखरास है, एक सब्द दुखरास ।
एक सब्द बन्धन कटै, एक सब्द गलफाँस ।। —कबीर

Words are like leaves and where they most abound, much fruit of sense beneath is rarely found. **—Pope**

शब्द पत्तियों के सदृश हैं और जब उनकी सर्वाधिक बहुलता होती है तो उनके नीचे बुद्धिमानी का फल कदाचित् ही कभी मिलता हो। **—पोप**

शब्द आकाश का गुण है। उसमें निन्दा-स्तुति, मान-अपमान की कल्पना है। सब शब्द है शब्द में अर्थ की तो कल्पना की गयी है। **—अज्ञात**

The word impossible is not in my dictionary. **—Napoleon**

"असम्भव" शब्द मेरे कोष में नहीं है। **—नेपोलियन**

Words that weep, and tears that speak. **—Cowley**

कुछ शब्द रोते हैं और कुछ आँसू बोलते हैं : **—काउले**

सब्द सब्द सब कोइ कहै, सब्द के हाथ न पाँव।
एक सब्द औषधि करै, एक सब्द कर घाव॥ **—कबीर**

Words are the powerful drug used by mankind. **-Kipling**

शब्द शक्तिशाली औषध है जिसका मानव उपयोग करता है। **—किप्लिंग**

सब्द बराबर धन नहीं, जो कोइ जानै बोल।
हीरा तो दामों मिलै, सब्दहिं मोल न तोल॥ **—कबीर**

जब तक बात तुम्हारे मुख से नहीं निकली, तब तक वह तुम्हारे वश में है, ज्यों ही वह तुम्हारे मुख से निकली कि तुम उसके वश में हो गये। **—सुकरात**

शरणागत

शरणागत कहँ जे तजहिं, हित अनहित निज जानि।
ते नर पामर पापमय, तिन्हहिं विलोकत हानि॥ **—तुलसी**

शरणागत की रक्षा करना बड़ा ही पुण्य काम है, ऐसा करने से पापी के भी पाप का प्रायश्चित हो जाता है। **—वेदव्यास (महाभारत)**

शरीर

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा । —तुलसीदास (मानस-उत्तर)

शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम् ।

सभी धर्म-कर्मों के लिए शरीर ही सबसे पहला साधन है ।

—कालिदास (कुमारसंभव ५/३३)

शरीर आत्मा के रहने की जगह होने के कारण तीर्थ जैसा पवित्र है ।

—महात्मा गांधी

नख से लेकर शिखा पर्यन्त यह सारा शरीर दुर्गन्ध से भरा हुआ है ; फिर भी मनुष्य बाहर से इस पर अगर, चन्दन, कपूर आदि का लेप करता है ।

—शंकराचार्य

सूर्यो मे चक्षुवतिः प्राणोऽन्तरिक्षमात्मा पृथिवी ।
शरीरम् अस्तृतो नामाह मयमास्म । —अथर्व ७/५३।१७

मेरी आँख सूर्य शक्ति सम्पन्न है । प्राण वायु शक्ति सम्पन्न है । आत्मा अन्तरिक्ष (सर्व व्यापकता वाला) गुण वाला और शरीर पृथ्वी गुण वाला है । इस प्रकार मेरा शरीर छोटा सा दिखने में है पर इसमें बड़ी-बड़ी शक्तियाँ भरी हुई है ।

शरीर वीणा है और आनन्द संगीत, यह जरूरी है कि यंत्र दुरुस्त रहे ।

—बीचर

शरीर मथुरा है और हृदय गोकुल । नंद जीव है । इस शरीर को मथुरा बनाना । हृदय गोकुल में बालकृष्ण को पधराओ । मन को आसक्ति से बचाओगे तो शरीर मथुरा बनेगा और हृदय गोकुल । —रामचन्द्र डोंगरे

सप्त ऋषयः प्रति हितः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदनप्रमादम् ।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जाग्रतावस्वप्नजौसत्रसदौ च देवौ ॥

—वाजसनेय यजु० ३४/५५

यह शरीर सप्त ऋषियों का पवित्र आश्रम है, ये सात ऋषि प्रमाद न करते हुए, इस शरीर रूपी आश्रम का संरक्षण कर रहे हैं।

यह शरीर सप्त नदियों का पवित्र तीर्थ स्थान है; ये सात नदियाँ जागने के समय बाहर जाती हैं और सोने के समय वापस आती हैं।

यह शरीर पवित्र यज्ञशाला है; इस यज्ञ का संरक्षण दो देव दिन-रात जागकर कर रहे हैं।

ये तीनों वर्णन सुंदर, रमणीय और पवित्र हैं।

—दामोदर सातवलेकर (यह देह देव मंदिर है)

यह शरीर देवताओं का मंदिर है। यहां सूर्य आंख के स्थान में आकर अंश रूप से रह रहा है; वायु प्राण बनकर छाती में निवास कर रहा है; अग्नि वाणी के रूप में मुख में तथा जठराग्नि के रूप में पेट में है। इस तरह ३३ अंशरूप से इसमें आकर रह रहे हैं।

यह शरीर ईश्वर ने अपने पुत्र जीवात्मा के रहने के लिये बनाया है। ईश्वर विश्व का सम्राट है।

—दामोदर सातवलेकर (यह देह देव मंदिर है)

शहादत

जीवन भर किसी अच्छे विचार पर अमल करना और उसी के लिए मरना, यही शहादत है। **—विनोबा**

शहीद

जो किसी अच्छे ध्येय के लिए अपना सारा जीवन समर्पण करता है वही शहीद है। **—विनोबा**

It is the cause and not the death, that makes the martyr.

—Napoleon

यह ध्येय है, मृत्यु नहीं, जो मनुष्य को शहीद बना देता है। **—नेपोलियन**

हमारे शहीद भाई "हम में से एक हैं" जिनके नाम इन्सानों के पास नहीं परमात्मा के पास रहने वाले हैं। **—विनोबा**

Let us all be brave enough to die the death of a martyr but let no one lust for martyrdom. **—Mahatma Gandhi**

हम सभी को इतना अधिक वीर होना चाहिए कि शहीद की मौत मर सकें, परन्तु हममें शहीद होने की तृष्णा न होनी चाहिए। **—महात्मा गांधी**

शादी (दे० 'विवाह')

शान्ति

रात्रि के पश्चात् अरुण का उदय होता है, संग्राम के पश्चात् शान्ति का पुनरागमन होता है। **—अज्ञात**

शान्तितुल्यं तपो नास्ति। **—चाणक्य**

शान्ति के समान (दूसरा) तप नहीं है।

सात द्वीप नव खंड लौं, तीनि, लोक जग माहिं।
तुलसी शान्ति समान सुख, और दूसरो नाहिं॥

—तुलसीदास

शान्ति की कल्पना में रत रहना, जब कि संघर्ष आवश्यक हो, निश्चित रूप से शान्ति मिटाना है। **—वेदव्यास (महाभारत)**

शान्ति का मूलाधार शक्ति है। **—वेदव्यास (महाभारत)**

Peace hath her victories,
No less renowned than war. **—Milton**

शान्ति की विजय युद्ध की विजय से कम यशस्वी नहीं होती। **—मिल्टन**

To be prepared for war is one of the most effectual means of preserving peace. **—Washington**

युद्ध के लिए तैयार रहना शान्ति कायम रखने के लिए सबसे अधिक प्रभावशाली साधनों में से एक है। **—वाशिंगटन**

अपने भीतर ही यदि शान्ति मिल गयी तो सारा संसार शान्तिमय प्रतीत होता है। **—योगवासिष्ठ**

The storm of the last night has crowned this morning with golden peace. **—R. N. Tagore**

विगत रात्रि के तूफान ने, आज के प्रभात को, स्वर्णमयी शान्ति का ताज पहना दिया है। **—रवीन्द्र**

जिस मनुष्य ने अपनी सारी इच्छाओं का त्याग कर दिया है एवं मैं और मेरेपन के भाव से जो मुक्त हो गया है, वही शान्ति पाता है। **—महात्मा गांधी**

मनुष्य की शान्ति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय के शिखर पर नहीं। **—महात्मा गांधी**

शान्ति तो तुम्हारे अन्दर है। कामनारूपी डाकिनी का आवेश उतरा कि शान्ति के दर्शन हुए। वैराग्य के महामन्त्र से कामना को भगा दो, फिर देखो सर्वत्र शान्ति की शान्त मूर्ति। **—हनुमान प्रसाद पोद्दार भाई जी**

मैं ख्याति के ऊँचे शिखर पर चढ़ा हूँ। परन्तु उस ठंडे और अनुर्वर प्रदेश में मुझे त्राण नहीं मिला है। हे मेरे नायक, दिवसावसान के पूर्व ही मुझे शान्ति की घाटी में पहुँचा दो—जहाँ जीवन की खेती स्वर्णमय ज्ञान में परिपक्व होती है।
—रवीन्द्र

Peace is the happy, natural state of man; war, his corruption, his disgrace. **—Thomson**

शांति मनुष्य की सुखद और स्वाभाविक स्थिति है, युद्ध उसका पतन है, उसका कलंक है। **—टामसन**

जो कुछ मिले उसी में सन्तोष तथा दूसरों से ईर्ष्या न करना ही शान्ति की कुंजी है। **—धम्मपद**

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्। **—चाणक्य**

सन्तोषरूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते हैं, उनको जो शांति और सुख होता है, वह धन के लोभियों को, जो इधर-उधर दौड़ा करते हैं, नहीं प्राप्त होता।

विषयों का सुख और आत्मा की शान्ति—इन दोनों में से किसी एक को हमें चुनना है। अगर संसार मे रह कर आत्मिक शान्ति प्राप्त करनी है, अगर दिव्य जीवन तक पहुँचना है, अगर मृत्यु के इस संसार से मुक्त होना है—तो भौतिक जीवन के फलों को नहीं चखना चाहिए। **—शिलर**

Peace flourishes when reason rules.

जहाँ बुद्धि शासन करती है वहाँ शान्ति में वृद्धि होती है। **—कहावत**

आनन्द उछलता-कूदता जाता है; शांति मुस्कराती हुई चलती है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

जिसमें शांति का निवास नहीं है, उसके सारे सद्‌गुण व्यर्थ हैं। **—अज्ञात**

शान्ति मानव जीवन का चरम उद्देश्य है। संसार के जितने धर्म-कर्म हम करते हैं, उन सबके पीछे यही लालसा तो रहती है कि हम शान्तिपूर्वक जीवन बितायें। **—अज्ञात**

शान्ति और सुख

शान्ति और सुख वाह्य वस्तुएँ नहीं हैं। वह तुम्हारे अन्दर ही निवास करती है। **—सत्य साईं बाबा**

सब ओर से परिपूर्ण जलनिधि में सलिल जैसे सदा।
आकर समाता किन्तु अविचल सिन्धु रहता सर्वदा॥
इस भांति ही जिसमें विषय जाकर समा जाते सभी।
वह शान्ति पाता है न पाता काम कामी जब कभी॥

—गीता २—७० (श्री हरि गीता से)

जब त्याग इच्छा कामना, जो जन विचरता नित्य ही।
मद और ममता हीन होकर, शांति पाता है वही॥

—गीता २–७१ (श्री हरि गीता से)

श्रद्धावान, ईश्वर परायण, जितेन्द्रिय पुरुष ज्ञान पाता है और ज्ञान पाकर तुरन्त परम शान्ति पाता है। **—गीता–५–३९**

शान्ति की प्रार्थना

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि ।।
ओ३म शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

—**यजुर्वेद ३६/१७**

हे प्रभो ! द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक और पृथिवी लोक हमारे लिये सुख शान्ति दायक हो; जल, औषधियां और वनस्पतियां हमें शान्ति देने वाली हों; समस्त देवता ब्रह्म और सब कुछ शान्ति प्रद हों; जो शान्ति विश्व में सर्वत्र फैली हुई है वह मुझे प्राप्त हो । मैं निरंतर शांति का अनुभव करता रहूं ।

ओ३म शांति ! शांति !! शांति !!!

शासक

दूसरों को सिखाने की भावना रखने वाला स्वयं कुछ नहीं सीख सकता, दूसरों पर अपना रोब गालिब करने वाला अधिकार-लोलुप कभी अच्छा शासक नहीं बन सकता ।

—**रस्किन**

That sovereign is a tyrant who knows no law but his own caprice. —**Voltaire**

वह शासक अत्याचारी है जो अपनी रुचि के अतिरिक्त और कोई नियम नहीं जानता । —**वाल्टेयर**

Rebellion to tyrants is obedience to God. —**Franklin**

अन्यायी शासक के प्रति विद्रोह ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है ।

—**फ्रैंकलिन**

शासक जब प्रजा को दिये गये आश्वासनों को स्वप्न की भाँति भूलने लगता है तो मृत्यु की निद्रा ही उसका स्वागत करती है । —**डा० रामकुमार वर्मा**

शासन

प्रति यः शासमिन्वति । —**ऋग्वेद**

जो अनुशासन पालता है वही शासन करता है ।

एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर राज्य करे यह विचार दोनों के लिये असह्य है, बुरा है और दोनों को नुकसान पहुँचाने वाला है । —**महात्मा गांधी**

शासन-दण्ड धर्म में परिवर्तन नहीं करा सकता । —**जयशंकर प्रसाद**

कसीदे से न चलता है न ये दोहे से चलता है ।
समझ लो खूब कारे सल्तनत लोहे से चलता है ।। —**अज्ञात**

प्रेम से शासन करना मानवता है, अन्याय से शासन करना बर्बरता है । —**प्रेमचन्द**

No government can possibly with stand the bloodless opposition of a whole nation. —**Mahatma Gandhi**

सम्पूर्ण राष्ट्र के रक्तरहित विरोध के समक्ष कोई भी शासन सम्भवतः टिक नहीं सकता । —**महात्मा गांधी**

For forms of government let fools contest.
Whatever is best administered is best. —**Pope**

शासन-प्रणाली की रूपरेखा पर मूर्खों को वादविवाद करने दो । वही सर्वोत्तम शासन है जो सुव्यवस्थित हो । —**पोप**

What government is the best ? That which teaches us to govern ourselves. —**Goethe**

कौन शासन सर्वोत्तम है ? जो आत्मशासन की शिक्षा देता है । —**गेटे**

मनुष्यों की एक जाति पर, किसी दूसरी जाति द्वारा शासन शासित लोगों के सम्मान और गौरव के असंगत है, इसीलिए विश्व की शान्ति और कल्याण से भी असंगत है । —**डा० राधाकृष्णन**

ओ राही दिल्ली जाना तो, कहना अपनी सरकार से ।
चर्खा चलता है हाथों से, शासन चलता तलवार से ।।
—**गोपाल सिंह नेपाली**

शासन-विधान

बढ़िया शासन-विधान बनाना सरल है, पर उसके अनुसार आचरण कर सकना बड़ा कठिन है। यह तभी हो सकता है जब कि सर्वसाधारण में नागरिकता का उच्च भाव विकसित किया जाय। **—श्रीनिवास शास्त्री**

शास्त्र

सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यंध एव सः **—हितोपदेश**

शास्त्र सबके लिए नेत्र के समान है जिसे शास्त्र का ज्ञान नहीं वह अंधा है।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥ —हितोपदेश

जिस मनुष्य को अपनी बुद्धि नहीं है उसके लिए शास्त्र बेकार है, जैसे दोनों आँखों से रहित अन्धे को दर्पण क्या करेगा।

शाह

शाह की हैसियत अगर हारती है तो फकीर की हैसियत से ही हारती है।
—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

शहनशाह

चाह मिटी चिंता गई, मनुवा बेपरवाह।
जाको कछू न चाहिये, सोई शाहनशाह॥ **—अज्ञात**

शिक्षक (दे० 'अध्यापक')

लोकशिक्षक चरित्रहीन हो तो वह बिना खारेपन के नमक जैसा फीका होगा।
—महात्मा गांधी

The teacher is like the candle which lights others in consuming itself. **—Ruffini**

शिक्षक मोमबत्ती के सदृश है जो स्वयम् जल कर दूसरे को प्रकाश देती है।
—रूफिनी

शिक्षक का अपना चरित्र भी ऐसा होना चाहिए जो मूक शिक्षण का कार्य करे, जिसे देख कर शिक्षार्थी की श्रद्धा जाग्रत हो जाय। —अज्ञात

शिक्षण

शिक्षण दंड है, यह गुलामी की भावना ही आज विद्यार्थियों में प्रचलित है। —विनोबा

शिक्षण का कार्य कोई स्वतंत्र तत्त्व उत्पन्न करना नहीं है; सुप्त तत्त्व को जाग्रत करना है। —विनोबा

शिक्षा (दे० 'नसीहत', 'सीख')

सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है। —महात्मा गांधी

Education is the manifestation of perfection already in man.
—Swami Vivekanand

मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है। — स्वामी विवेकानन्द

To develop in the body and in the soul all the beauty and all the perfection of which they are capable. **—Plato**

शरीर और आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौन्दर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। —प्लेटो

The great aim of education is not knowledge but action.
—Herbert Spencer

शिक्षा का महान् उद्देश्य ज्ञान नहीं, कर्म है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

Education is the ability to meet life's situations.
–Dr. John G. Hibban

शिक्षा जीवन की परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का नाम है।
—डा० जान जी० हिबन

What is education ? A parcel of books ? Not at all, but intercourse with the world, with men and with affairs. **–Burke**

शिक्षा क्या है ? पुस्तकों का ढेर ? बिल्कुल नहीं, बल्कि संसार के साथ, मनुष्यों के साथ और कार्यों से पारस्परिक सम्बन्ध । **—बर्क**

लोगों को पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रस्तुत करना ही शिक्षा का उद्देश्य है । **—हर्बर्ट स्पेन्सर**

जैसे सूर्य सबको एक-सा प्रकाश देता है, बादल जैसे सबके लिए समान बरसते हैं, इसी तरह विद्या-वृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए । **—महात्मा गांधी**

All who have meditated on the art of governing mankind, have been convinced that the fate of empires depends on the education of young. **—Aristotle**

जिन्होंने मानव पर शासन करने की कला का अध्ययन किया है उन्हें यह विश्वास हो गया है कि युवकों की शिक्षा पर ही राज्यों का भाग्य आधारित है । **—अरस्तू**

युवकों को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रखें । **—महामना मदनमोहन मालवीय**

Schoolhouses are the republican line of fortifications.
—Horace Mann

विद्या भवन प्रजातंत्री किलेबन्दी है । **—होरेस मैन**

Education is cheap defence of nation. **—Burke**

शिक्षा राष्ट्र की सस्ती सुरक्षा है । **—बर्क**

Education has for its object the formation of character.
—Herbert Spencer

शिक्षा का ध्येय चरित्र-निर्माण है । **—हर्बर्ट स्पेन्सर**

संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़ कर है ।
—निराला

Education is the apprenticeship of life. **—Willmott**

शिक्षा जीवन की तैयारी का शिक्षणकाल है। **—विल्मट**

अच्छी शिक्षा वही है जो मानव की गोपनीय शक्तियों को उजागर कर दे।
—सत्य साईं बाबा

जैसे आग में डालने से सोना काला नहीं पड़ता वैसे ही जिस शिक्षक के सिखाने में किसी प्रकार की भूल न दिखलाई पड़े उसे ही सच्ची शिक्षा कहते हैं।
—कालिदास (मालविकाग्निमित्र २-९)

उच्च शिक्षा के प्रभाव से लोगों की बुद्धि सुकुमारता छोड़ प्रौढ़ता प्राप्त करती है। **—अज्ञात**

शिक्षा का रहस्य शिष्य का आदर करने में है। **—एमर्सन**

शिक्षा भी अपने स्थान पर न हो तो वैसे ही निकम्मी है जैसे योग्य जगह पर न होने से किसी चीज की गिनती कचरे में की जाती है। **—महात्मा गांधी**

What sculpture is to a block of marble, education is to the human soul. **—Addison**

शिक्षा मानव-जीवन के लिए वैसे ही है जैसे संगमरमर के टुकड़े के लिए शिल्पकला। **—एडीसन**

कार्यकौशल और कर्मशीलता ही हमारी शिक्षा का मूल मंत्र है। **—अज्ञात**

Universal sufferage, without universal education, would be a curse. **—Wayland**

सर्व-व्यापी शिक्षा के बिना व्यापक मताधिकार अभिशाप हो सकता है।
—वेलैण्ड

शिक्षा और सम्पत्ति का प्रभुत्व हमेशा रहा है और रहेगा। **—प्रेमचन्द**

शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है। **—स्वामी विवेकानन्द**

जो शिक्षा हमें निर्बलों को सताने के लिए तैयार करे, जो हमें धरती और धन का गुलाम बनाये, जो हमें भोग-विलास में डुबाये, जो हमें दूसरों का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक बनाये, वह शिक्षा नहीं भ्रष्टता है।
—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

शिक्षा केवल ज्ञान-दान नहीं करती वह संस्कार और सुरुचि के अंकुरों का पालन भी करती है। —अज्ञात

जिस शिक्षा में समाज और देश की कल्याण-चिन्ता के तत्व नहीं हैं, वह कभी सच्ची शिक्षा नहीं कही जा सकती। —अज्ञात

हमारी शिक्षा तब तक अधूरी ही रहेगी, जब तक उसमें धार्मिक विचारों का समावेश नहीं किया जायगा। —अज्ञात

हमारी आज की शिक्षा में चाहे जितने सद्‌गुण हों, किन्तु उसमें जो सबसे बड़ा दुर्गुण है वह यही है कि उसमें वृद्धि को ऊँचा और परिश्रम को नीचा स्थान दिये जाने की भावना है। —अज्ञात

शिल्पी

शिल्पी पत्थर या मिट्टी में से मूर्ति उत्पन्न नहीं करता। वह तो उसमें है ही, सिर्फ छिपी हुई है; उसे प्रकट करना उसका काम है। **—रस्किन (विजयपथ)**

Sculptures are far closer akin to poetry, than paintings are.
—Keble

शिल्पकला चित्रकला की अपेक्षा काव्य के अधिक निकट है। **—केबिल**

शिव संकल्प

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। **—यजुर्वेद**
मेरा मन शिव संकल्प करने वाला बने।

शिशु (दे० 'बच्चा', 'बालक')

बच्चों के आत्मविश्वास को नष्ट करना, उनके मन पर निराशा की छाया डालना, बड़ा ही भयानक पाप है। **—स्वेट मार्डेन**

प्रेरणाशक्ति के द्वारा बच्चों के उन शक्तियों का विकास किया जा सकता है जिन पर उनका स्वास्थ्य, सफलता और सुख निर्भर है। **—स्वेट मार्डेन**

बच्चों को तो शाबाशी, प्रशंसा और उत्साह की ही आवश्यकता है। इन्हीं से उनका जीवन उन्नतिशील हो सकता है। **—स्वेट मार्डेन**

The child ever dwells in the mystery of ageless time, unobscured by the dust of history. **—R. N. Tagore**

इतिहास की धूल से मलिन न होते हुए शिशु अनन्त समय के रहस्य में सदैव निवास करता है। **—रवीन्द्र**

The silent night has the beauty of the mother and the clamorous day of the child. **—R. N. Tagore**

नीरव रात्रि में माता का सौन्दर्य आभासित होता है और कोलाहलपूर्ण दिवस में शिशु का। **—रवीन्द्र**

From the solemn gloom of the temple children run out to sit in the dust, God watches them play and forgets the priest.

—R. N. Tagore

देवालय के गंभीर अंधकार से शिशु धूल में बैठने के लिए बाहर भाग आते हैं, ईश्वर उन्हें खेलते हुए देख उनकी रखवाली करता है और पुजारी को भूल जाता है। **—रवीन्द्र**

Life's aspirations comes in the guise of children.

—R. N. Tagore

जीवन की महत्त्वाकांक्षाएँ शिशुओं के रूप में आती हैं। **—रवीन्द्र**

शिशुओं की दुनियाँ अलौकिक है, अद्भुत है, अद्वितीय है और आराध्य है।

—अज्ञात

छोटे बच्च तो भगवान् की, परब्रह्म की छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं। **—साने गुरु**

शिशुत्व

क्रांति का पथ पकड़ कर शिशुत्व का बाना पहनो। **—रस्किन**

The great is a born child; when he dies, he gives his great childhood to the world. **—R. N. Tagore**

महापुरुष जन्म-सिद्ध शिशु है। जब वह मरता है तो अपना शिशुत्व संसार को प्रदान कर जाता है। **—रवीन्द्र**

अपनें रोग की सच्ची चिकित्सा और आत्म-शिक्षा का यथार्थ ज्ञान आपको शिशुत्व की शाला में ही मिलेगा। शिशुत्व को अपनाओ—इसी में आपका कल्याण है। **—रस्किन**

शिशुत्व मानवजीवन में परमात्मा के सद्‌गुणों की एक थाती है, जो माता-पिता उनकी उचित देख-रेख रखते हैं, उन्हें कभी पछताना नहीं पड़ता। **—अज्ञात**

शिष्टाचार

शिष्टाचार का मूल सिद्धान्त है दूसरे को अपने प्रेम और आदर का परिचय देना और किसी को असुविधा और कष्ट न पहुँचाना। **—अज्ञात**

शिष्य

चतुर शिष्य को जो शिक्षा दी जाती है वह अवश्य फलती है।
—कालिदास (रघुवंश)

शील

शीलं प्रधानं पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन बंधुभिः ॥ **—वेदव्यास (महा०)**

शील मानवजीवन का अनमोल रत्न है। उसे जिस मनुष्य ने खो दिया उसका जीना ही व्यर्थ है। वह चाहे जितना धनी अथवा भरे-पूरे घर का हो उसका कोई मूल्य नहीं रहता।

सीलवंत सब ते बड़ा, सर्व रतन की खानि।
तीन लोक की सम्पदा, रही सील में आनि ॥
—कबीर

धर्म, सत्य, सदाचार, बल और लक्ष्मी सब शील के ही आश्रय पर रहते हैं। शील ही सबकी जड़ है। **—वेदव्यास (महा०, शांतिपर्व)**

ज्ञानी ध्यानी संयमी, दाता सूर अनेक।
जपिया तपिया बहुत है, सीलवंत कोइ एक ॥ **—कबीर**

सब धर्मों में शील एक छिपा खजाना है। **—वेदव्यास (महाभारत)**

सुख का सागर सील है, कोई न पावै थाह ।
सब्द बिना साधू नहीं, द्रव्य बिना नहिं साह ॥ —कबीर

अपनी प्रभुता के लिए चाहे जितने उपाय किये जायँ परन्तु शील के बिना संसार में सब फीका है । —वेदव्यास (महाभारत)

शील द्वारा ही चरित्र का निर्माण होता है । शील हमारी गति के लिए सम्बल है । —रवीन्द्र

सील छिमा जब ऊपजै, अलख दृष्टि तब होय ।
बिना सील पहुँचै नहीं, लाख कथै जो कोय ॥ —कबीर

शुभ

शुभ ही सुनें हम कान से, शुभ आँख से देखा करें ।
शुभ कर्म करने को जियें, शुभ कर्म करने में मरें ॥
—प्र० उ० शान्ति पाठ

शून्य

अपुत्रस्य गृहं शून्यं दिशः शून्यास्त्वबांधवाः ।
मूर्खस्य हृदयं शून्यं सर्वशून्या दरिद्रता ॥ —चाणक्य

निपुत्र का घर सूना है, बन्धुरहित दिशाएँ शून्य हैं, मूर्ख का हृदय शून्य है—और दरिद्रता के होने पर सब कुछ सूना है ।

अन्तःसारविहीनानामुपदेशो न जायते ।
मलयाचलसंसर्गाद् न वेणुश्चन्दनायते ॥ —चाणक्य

शून्य हृदयवालों को शिक्षा देना सफल नहीं होता । मलयाचल पर्वत का बांस चंदन के संसर्ग से चन्दन नहीं बन जाता ।

शूर (दे० 'वीर')

तृणं ब्रह्मविदां स्वर्गः तृणं शूरस्य जीवितम् ।
जिताक्षस्यं तृणं नारी निःस्पृहस्य तृणं जगत् ॥ —चाणक्य

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जितेन्द्रिय को स्त्री तृणतुल्य जान पड़ती है, निःस्पृह को जगत् तृण है ।

शूर वीर वही है जो बिना शास्त्र धारण किये शत्रु के सामने छाती खोल कर मरने का साहस करता है। —**महात्मा गांधी**

Physical bravery is an animal instinct, moral bravery is a much higher and truer courage. —**Wendell Phillips**

शारीरिक वीरता पाशविक प्रवृत्ति है। नैतिक वीरता बहुत ऊँची और सच्ची वीरता है। —**वेन्डेल फिलिप्स**

सच्चे शूरवीरों के सामने सेना की शक्ति कुछ काम नहीं करती।
—**वेदव्यास (महाभारत, उद्योगपर्व)**

शैतान

दुष्ट आदमी के हाथ में नीति-शास्त्र का हथियार आने से ही तो वह शैतान कहलाता है। —**महात्मा गांधी**

शैतान आदमी को अंधा ही नहीं, बहरा भी बना देता है। —**अज्ञात**

शैशव (दे० 'बचपन', 'शिशुता')

The childhood shows the man as morning shows the day.
—**Milton**

शैशवकाल मानव का वैसे ही आभास कराता है जैसे प्रातःकाल दिन का।
—**मिल्टन**

Childhood sometimes does pay a second visit to a man; youth never. —**Mrs. Jameson**

शैशव कभी-कभी मानव के जीवन में एक बार पुनः आता है, पर यौवन कभी नहीं। —**श्रीमती जेम्सन**

God waits for man to regain his childhood in wisdom.
—**R. N. Tagore**

भगवान् इस बात की प्रतीक्षा करता है कि मनुष्य अपने शैशव-काल को ज्ञान में प्राप्त कर ले। —रवीन्द्र

शैशव में समस्त मानवीय सद्गुणों के अंकुर विद्यमान रहते हैं। जो माता-पिता चतुर माली की भाँति अपने बच्चे में उनकी देख-रेख रखते हैं, वे उसका उचित पुरस्कार पाते हैं। —अज्ञात

Heaven lies about us in our infancy. **—Wordsworth**

शैशव में स्वर्ग हमारे चारों ओर बिखरा रहता है। **—वर्ड्स्वर्थ**

शोक

किसी के बहुत सताने पर भी उसे सताने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए, **क्योंकि दुःखी प्राणी** का शोक ही सताने वाले का नाश कर देता है।

—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

There is no grief which time does not lessen and soften.

—Cicero

ऐसा कोई शोक नहीं है जिसे समय की गति कम और हलका न कर दे।

—सिसरो

Light griefs are plaintive, but great ones are dumb.

—Seneca

लघु शोक विषादपूर्ण है, परन्तु महान् शोक गूँगा होता है। **—सेनेका**

शोक के गहरे घाव को समय का मलहम ही पूरा करता है। **—अज्ञात**

Sorrow's best antidote is employment. **—Young**

शोक की सर्वोत्तम औषधि कार्य में संलग्न रहना है। **—यंग**

शोको नाशयते धैर्यं शोको नाशयते श्रुतम्।
शोको नाशयते सर्वं नास्ति शोकसमो रिपुः॥

—वाल्मीकि (रा०, अयो०)

शोक धैर्य का नाश करता है, शोक शास्त्रज्ञान को भी नष्ट कर देता है तथा शोक सब कुछ नष्ट कर डालता है; शोक के समान कोई शत्रु नहीं है।

शोभा

शोभा चाल-चलन में होती है, दिखावट में नहीं। **—महात्मा गांधी**

संकट के समय धैर्य, अभ्युदय के समय क्षमा अर्थात् सब सहन करने की सामर्थ्य, सभा में वक्तृता और युद्ध में शूरता शोभा देती है।

—भर्तृहरि (नीति शतक)

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपादप्रणयिता,
मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतं च श्रवणयो-
र्विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम्॥

—भर्तृहरि (नीति शतक)

हाथ की शोभा दान से है; सिर की शोभा अपने से बड़ों को प्रणाम करने से है, मुख की शोभा सच बोलने से है; दोनों भुजाओं की शोभा युद्ध में वीरता दिखाने से है, हृदय की शोभा स्वच्छता से है, कान की शोभा शास्त्र के सुनने से है और ये ही ठाटबाट न होने पर भी सज्जनों के भूषण हैं।

दरिद्रता धीरता से शोभित होती है, स्वच्छता से कुवस्त्र अच्छा लगता है, कुअन्न उष्णता से अच्छा लगता है, कुरूपता सुशीलता से शोभा देती है। **—चाणक्य**

अपनी-अपनी जगह पर ही किसी वस्तु की विशेष शोभा होती है, जैसे काजल आँख में शोभा देता है और महावर पैर में। **—अज्ञात**

कोकिलानां स्वरो रूपं स्त्रीणां रूपं पतिव्रतम्।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम्॥ **—चाणक्य**

कोकिलों की शोभा स्वर है, स्त्रियों की शोभा पतिव्रत धर्म है, कुरूपों की शोभा विद्या है, तपस्वियों की शोभा क्षमा है।

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥ **—चाणक्य**

सुन्दर, तरुण और बड़े कुल में जन्म लेने वाले विद्याहीन पुरुष गंधहीन पलाश के फल के समान शोभा नहीं पाते।

द्विज सोहत विद्या पढ़े, छत्री रन जय पाय।
लक्ष्मी सोहत दान सौं, तिमि कुलवधू लजाय।।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

शौर्य

शौर्य किसी में बाहर से पैदा नहीं किया जा सकता, वह तो मनुष्य के स्वभाव में होना चाहिए। —महात्मा गांधी

श्मशान

जहाँ समभाव जागे, उसी का नाम श्मशान। —रामचन्द्र डोंगरे

संसार का मूक शिक्षक 'श्मशान' क्या डरने की वस्तु है? जीवन की नश्वरता के साथ ही सर्वात्मा के उत्थान का ऐसा सुन्दर स्थल और कौन है।

—जयशंकर प्रसाद (स्कंधगुप्त)

श्मशान ही एक ऐसा स्थल है जहाँ पहुँच कर संसार की असारता का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। —अज्ञात

श्मशान में समभाव जागते हैं, अतः ज्ञान प्रगट होता है श्मशान ज्ञान-भूमि है। —रामचन्द्र डोंगरे

श्रद्धा

किसी मनुष्य में जन-साधारण से विशेष गुण या शक्ति का विकास देख उसके सम्बन्ध में जो एक स्थायी आनन्द-पद्धति हृदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा मनुष्य की आनन्दपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ पूज्य बुद्धि का सञ्चार है।

—रामचन्द्र शुक्ल

वस्तुतः निराश हृदय को सांत्वना, अवलम्ब और जीवन देनेवाली वृत्ति श्रद्धा ही है—श्रद्धा में आत्म-समर्पण है। —अज्ञात

प्रेम में केवल दो पक्ष होते हैं, श्रद्धा में तीन। प्रेम में कोई मध्यस्थ नहीं, पर श्रद्धा में मध्यस्थ अपेक्षित है। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा का व्यापारस्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त । प्रेम में घनत्व अधिक है और श्रद्धा में विस्तार । **—रामचन्द्र शुक्ल**

श्रद्धा की गुंजाइश तो वहीं है, जहाँ बुद्धि कुंठित हो जाय । **—महात्मा गांधी**

मनोवांछित पदार्थ का मूल श्रद्धा ही हो सकती है । **—स्वेट मार्डेन**

श्रद्धा—आस्था ही हमारे आदर्श की बाह्य रेखा है । **—स्वेट मार्डेन**

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता) १७-३

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यं दिनं परि ।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥ **—ऋग्वेद १०-१५१-५**

हम श्रद्धा को प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और सायंकाल आवाहन करते हैं और कामना करते हैं कि हे श्रद्धादेवि, तुम सदा हममें निवास करो ।

श्रद्धा बिना धर्म नहि होई ।
बिनु महि गंध कि पावइ कोई ॥

—तुलसी (रा० मा० उ०-९०-४)

श्रद्धां देवा उपासते ।
श्रद्धया विन्दते वसु । **—ऋग्वेद १०-१५१-४**

देवताजन श्रद्धा की उपासना करते हैं । श्रद्धा से परम ऐश्वर्य मिलता है ।

श्रद्धा नींव की ईंट के समान है । धर्म, कर्म और साधना की दीवारें श्रद्धा पर खड़ी होती हैं । **—दीनानाथ भार्गव दिनेश (गीता-ज्ञान)**

हे भारत ! सबकी श्रद्धा अपने स्वभाव का अनुसरण करती है । मनुष्य में कुछ न कुछ श्रद्धा तो होती ही है । जैसी जिसकी श्रद्धा, वैसा वह होता है ।

श्रद्धा का मूल तत्व है दूसरे का महत्व-स्वीकार । **—रामचन्द्र शुक्ल**

सद्विचार पर बुद्धि रखने का ही नाम श्रद्धा है । यही श्रद्धा मनुष्य को बल देती है, सब तरह से प्रेरणा देती है और उसके जीवन को सार्थक बनाती है ।

—विनोबा

श्रद्धा हृदय की वस्तु है, जब उससे मस्तिष्क टकराता है तो वह चूर-चूर हो जाती है। —अज्ञात

श्रद्धा का अर्थ है आत्म-विश्वास और आत्म-विश्वास का अर्थ है ईश्वर पर विश्वास। —महात्मा गांधी

श्रद्धा एक ऐसी आनन्दपूर्ण कृतज्ञता है जिसे हम केवल समाज के प्रतिनिधि रूप में प्रकट करते हैं। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा और विश्वास

श्रद्धा और विश्वास ऐसी संजीवन बूटी है कि जो एक बार घोल कर पी लेता है वह चाहने पर मृत्यु को भी पीछे ढकेल देता है।

—अमृतलाल नागर (मानस का हंस)

श्रम (दे० 'परिश्रम')

न मृषा श्रान्तं यदवन्ति देवाः।

—ऋग्वेद संहिता १-१७९-३

देवता उसी की सहायता करते हैं जो श्रम करता है।

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः। —ऋग्वेद ४-३३-११

जो श्रम नहीं करता, उसके साथ देवता मित्रता नहीं करते।

मादृश्मिन् धायि तमपस्यया विदत्। —ऋग्वेद ५-४४-८

मनुष्य अपने ध्येय को श्रम और तप से ही प्राप्त कर सकता है।

Labour makes us insensible to sorrow. —Cicero

श्रम से हम अपने शोक को भूल जाते हैं। —सिसरो

Labour conquers all things. --Homer

श्रम सभी पर विजयी होता है। —होमर

श्रम और उद्योग चुम्बक के समान हैं, जो सब अच्छे-अच्छे पदार्थों को पास खींच लाते हैं। —वार्टन

Without labour nothing prospers. —Sophocles

बिना श्रम के कोई भी उन्नति नहीं करता। —सफोक्लीज

A man's best friends are his ten fingers. **—Robert Collyer**

मनुष्य का सर्वोत्तम मित्र उसकी दस उंगलियाँ हैं। **—राबर्ट कोलियर**

No sweat, no sweet.

बिना परिश्रम के सुख नहीं मिलता। **—कहावत**

Honest labour bears a lovely face. **—Dekker**

सच्चा श्रम करने वाले का चेहरा मनोहर होता है। **—डेकर**

From labour, health; from health contentment springs.
—Beattie

श्रम से स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से संतोष उत्पन्न होता है। **—बेट्टी**

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥ **—हितोपदेश**

उद्यम करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं, केवल मनोरथ करने से नहीं। जैसे सोते हुए सिंह के मुख में मृग अपने आप प्रवेश नहीं करते।

जो अपना जीवन श्रम को अर्पित करता है।
हर उन्नति मुट्ठी में आकर कस जाती है॥
जो श्रम की राहों का राही बन जाता है।
हर सिद्ध उसी के पावों से बंध जाती है॥
—रमाकान्त श्रीवास्तव (युग की नवल वंदना के स्वर)

मनुष्य का निर्माण भाग्य नहीं, पुरुषार्थ करना है। गौरव परिश्रम का अनुगामी है। श्रम आत्मा के लिए रसायन का काम करता है। श्रम ही मनुष्य की आत्मा है। **—स्वामी कृष्णानन्द**

Labour is life. **—Carlyle**

श्रम जीवन है। **—कार्लाइल**

श्रम की पूजा करो। उसकी पूजा करने वाला त्रिकाल में भी कभी निराश नहीं होता। **—राम प्रताप त्रिपाठी**

श्री

जहाँ तुम्हें विभूति, तेज शुचिता, पवित्रता, उज्ज्वलता, शोभा तथा कान्ति दिखाई दे वह सब श्री का ही चमत्कार है। **—प्रभुदत्त ब्रह्मचारी (सूक्त-त्रय)**

'श्री' कहते हैं शोभा को, कान्ति को। संसार में जितनी भी विभूति वाली वस्तु हैं, श्री सम्पन्न हैं, शोभायुक्त हैं, वे सब की सब श्री वाचक हैं।

—प्रभुदत्त ब्रह्मचारी (सूक्त-त्रय)

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ **—गीता**

जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं, जहाँ धनुर्धारी पार्थ हैं, वहीं श्री है, विजय है, वैभव है, और अविचल नीति है, ऐसा मेरा अभिप्राय है।

श्री सूक्त (लक्ष्मी-आराधन)

मंद मंद मुस्कान लिये जो बरसाती आनन्द अमन्द।
स्वर्ण-जटित परकोटे में जो दया-द्रवित रहती निर्द्वन्द॥
पद्म-वर्ण—पद्मों पर शोभित जिनका ज्योति-स्वरूप बदन।
श्रद्धा से मैं करता ऐसी श्री का सादर आवाहन॥
चन्द्र सरिस आनन्द-दायिनी दिव्य कांति यश की भंडार।
इन्द्र आदि सुरवृन्द-वन्दिता, कोमल बदना परम-उदार॥
कमलासन पर शोभित माँ की लेता हूँ सानन्द शरण।
'देवि' मिटा दो दुःख दरिद्रता करता हूँ मैं आराधन॥

—श्री सूक्त से (पद्यानुवादक पं० दीनानाथ दिनेश)

श्रीकृष्ण स्वरूप माधुरी

नव-नीरद-नीलाभ तन त्रिभुवन मोहन रूप।
मधुप-मद-हरन कृष्न धन कुँचित केस अनूप॥

सिर चूड़ामनिमय मुकुट, मोरपिच्छ रमनीय।
चंचल दृग-जुग चित्तहर भृकुटि कुटिल कमनीय॥

मुरलि मधुर राजत अधर कटि पट पीत ललाम।
गुंजा-मुक्ता-बन-कुसुम माला गल अभिराम॥
सच्चिन्मय सुषमा परम, भूषन-भूषन अंग।
अनुपम मुख-छवि लखि लजत सत-सत कोटि अनंग॥
राधा धन, राधारमन, राधा प्रानाधार।
मुनि-मन-हर मोहन-चरन बंदौं बारंबार॥

—हनुमानप्रसाद पोद्दार भाईजी (श्री ब्रज-रस माधुरी)

श्रेष्ठ

सर्वश्रेष्ठ पुरुष वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है।

—मीरा

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खं शतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च ताराः सहस्रशः॥ **—चाणक्य**

एक गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, सैंकड़ों गुणरहित पुत्र नहीं। एक ही चन्द्रमा अंधकार को नष्ट कर देता है, सैंकड़ों तारे नहीं।

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो मनुष्य इन्द्रियों को मन से नियम में रख कर संगरहित होकर कर्म करने वाली इन्द्रियों द्वारा कर्मयोग का आरम्भ करता है वह श्रेष्ठ पुरुष है।

वास्तव में वे ही लोग श्रेष्ठ हैं जिनके हृदय में सर्वदा दया और धर्म बसता है, जो अमृत-वाणी बोलते हैं तथा जिनके नेत्र नम्रतावश सदा नीचे रहते हैं।

—मलूकदास

मगन रहैं नित भजन में, चलत न चाल कुचाल।
नारायण ते जानिये ये लालन के लाल॥

—नारायण स्वामी

महात्मा गुणहीन साधारण जीवों पर भी दया करते है। चन्द्रमा चाण्डाल के घर से अपनी किरणों को हटा नहीं लेता। **—हितोपदेश**

जो सम्पूर्ण प्राणियों को शान्त रखने का प्रयत्न करता है, सर्वदा सत्य व्यवहार करता है, कोमल स्वभाव होकर सबका सम्मान करता है, सर्वदा शुद्ध भाव से रहता है, वह कुल में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। **—विदुर**

सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है जो अटल प्रतिज्ञा के साथ सत्य का अनुसरण करता है, जो आन्तरिक और बाह्य सभी प्रलोभनों का प्रतिरोध करता है, जो भारी से भारी बोझों को खुशी से सहता है, जो तूफानों में शान्त रहता है, धमकियों तथा त्यौरियों में निडर रहता है और सत्य, नेकी तथा ईश्वर पर जिसकी निर्भरता सर्वथा अडिग है। **—चेनिंग**

संकट (दे० 'दुःख', 'मुसीबत', 'विपत्ति')

संकट यदि न होते तो इस संसार में महान् व्यक्तियों के चरित्रों को, जो हीरे के समान आज चमक रहे हैं, कौन चमकाता। **—अज्ञात**

सबसे अधिक संकट का क्षण विजय के साथ आता है। **—नेपोलियन**

संकट का समय ही मनुष्य की आत्मा को परखता है। **—टामस पेन**

In great straits, and when hope is small, the boldest counsels are the safest. **—Livy**

महान् संकट में और जब कि आशा बहुत क्षीण होती है तब सबसे निडर सम्मति ही सबसे बड़ी सुरक्षा है। **—लिवी**

संकट के समय में बड़े मनुष्य थोड़े ही होते हैं और बाकी की कोई गिनती नहीं। छोटे-छोटे टीले जिनकी ऊँचाई खुले मौसम में साफ मालूम पड़ती है बाढ़ में डूब जाते हैं, लेकिन सबसे ऊँची पहाड़ की चोटियाँ पानी की सतह के ऊपर दिखाई पड़ती हैं। **—लायड जार्ज**

गुरुदेव ! ज्ञान हर लेती है,
तत्काल कुसंकट की ज्वाला।

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (वीर सौभद्र)

संकल्प

इतिहास, पुराण सभी साक्षी हैं कि मनुष्य के संकल्प के सम्मुख देव, दानव सभी पराजित होते हैं। —**एमर्सन**

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

—**यजुर्वेद**

मेरे मन के संकल्प शुभ और कल्याणमय हों।

An abiding vow is like a fortress affording protection against dangerous temptation. It cures one of weakness and vacillation.

—**Mahatma Gandhi**

दृढ़ संकल्प एक गढ़ के समान है जो कि भयंकर प्रलोभनों से हमको बचाता है, दुर्बल और डाँवाडोल होने से वह हमारी रक्षा करता है। —**महात्मा गांधी**

अच्छे काम को करने में धन की आवश्यकता कम पड़ती है, पर अच्छे हृदय और संकल्प की अधिक। —**सूर**

संकल्प की शुद्धि और दृढ़ता ने भगवान् तक को घंटों कच्चे धागे में बाँधकर नाच नचाया है। —**अज्ञात**

जब संकल्प दृढ़ हो जाता है, अध्यवसाय अशिथिल हो जाता है और महामाया के श्रीचरणों में अखंड विश्वास हो जाता है—तब उद्देश्य की सफलता भी निश्चित हो जाती है। —**अज्ञात**

संकल्प कर लो, सोच समझ कर कर लो, किन्तु करने के बाद उसे मत छोड़ो। सत्य संकल्प ही ईश्वर के प्रति सबसे बड़ी निष्ठा है। —**अज्ञात**

संगति (दे० 'कुसंगति', 'सत्संगति')

असत संग के वास सों, गुन अवगुन ह्वै जात।
दूध पिवै कलवार घर, मदिरा सबहिं बुझात॥ —**विदुर**

अच्छी संगति बुद्धि के अंधकार को हरती है, वचनों को सत्य की धार से सींचती है, मान को बढ़ाती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न रखती है और चारों ओर यश फैलाकर मनुष्यों को क्या क्या लाभ नहीं पहुँचाती ?

—**भर्तृहरि**

Tell me with whom thou art found and I will tell thee who thou art. **—Goethe**

मुझे बताइये आपके संगी-साथी कौन हैं और मैं बता दूंगा कि आप कौन हैं। **—गेटे**

Wicked Companions invite and lure us to hell. **—Fielding**

बुरे साथी हमें नरक में जाने के लिए निमन्त्रित और प्रलोभित करते हैं। **—फील्डिंग**

काजर की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय।
एक लीक कांजर की लागि है पै लागि है ॥ **—कहावत**

सत संगत के वास सों, अवगुन हू छिपि जात।
अहिर धाम मदिरा पिवै, दूध जानियै तात ॥ **—विदुर**

संगति सुमति न पावई, परे कुमति के बंध।
राखो मेलि कपूर में, हींग न होय सुगन्ध ॥ **—बिहारी**

शठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई ॥ **—तुलसी**

संगीत

मधुर संगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है। **—महात्मा गांधी**

मनोव्यथा जब असह्य और अपार हो जाती है, तब उसे कहीं त्राण नहीं मिलता, जब वह रुदन और क्रन्दन की गोद में भी आश्रय नहीं पाती, तो वह संगीत के चरणों में जा गिरती है। **—प्रेमचन्द**

संगीत से क्रोध मिट जाता है। **—महात्मा गांधी**

Music hath charms to sooth the savage beast.
—James Bramston

संगीत में क्रूर हृदय को भी शान्त करने का जादू है। **—जेम्स ब्रम्सटन**

संगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है—जिस दिल की दरिया को संगीत की बयार तरंगित नहीं कर देती समझो कि उस दिल से शैतान भी डरता है। **—सावी**

Music is the universal language of mankind.

—Longfellow

संगीत मानव की विश्वव्यापी भाषा है। **—लांगफेलो**

संगीत द्वारा मनुष्य जितनी जल्दी और सुगमता से अपने इष्टदेव में तन्मय हो जाता है वैसा साधन दूसरा नहीं है। जीवात्मा तथा परब्रह्म की जिस एकता के लिए योगी जन अपने रक्त-मांस को सुखा देते हैं, वह संगीत द्वारा सहज में ही प्राप्त हो सकती है। **—अज्ञात**

संगीत की कसौटी यही है कि जड़ दीप उससे जल उठे।

—डा० राजेन्द्रप्रसाद

संगीत में पशु-पक्षियों को भी वश में करने की शक्ति होती है। **—अज्ञात**

Music is the medicine of the breaking heart. **—A. Hunt**

संगीत टूटे हुए हृदय की औषध है। **—ए० हन्ट**

संसार मुझसे चित्रों में बात करता है, मेरी आत्मा संगीत में उत्तर देती है।

—रवीन्द्र

Music is well said to be the speech of angels. **—Carlyle**

संगीत को फरिश्तों की भाषा ठीक ही कहा है। **—कारलाइल**

Music is the only sensual pleasure without vice. **—Johnson**

संगीत ही केवल ऐसा इन्द्रियसुख है जिसमें कोई बुराई नहीं होती।

—जानसन

जो व्यक्ति भारी कोलाहल में भी संगीत को सुन सकता है, वह महान उपलब्धि को प्राप्त करता है। **—डा० विक्रम साराभाई**

Music washes away from the soul the dust of everyday life.

—Averbach

संगीत आत्मा की प्रतिदिन की मलिनता को दूर कर देता है। **—आवेर बेच**

वेदना के सुरों में ही स्वर्गीय संगीत की सृष्टि होती है।

—अनन्त गोपाल शेवड़े

हमारे यहाँ भगवान् भी तो बिना मुरली या डमरू के पूरे नहीं समझे गये हैं, मानव का तो प्रश्न ही क्या है। यह अकारण ही नहीं है कि विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के हाथ में पुस्तक के साथ-साथ वीणा भी बतायी जाती है।

—डा० राजेन्द्रप्रसाद

संग्रह

रागासक्ति-वश वस्तुओं का संग्रह करना विश्व का ऋणी होना है, उन्हें दूसरों की सेवा में लगा देना ही उऋण होना है। **—अज्ञात**

सबै वस्तु संग्रह करै, आवै कोइ दिन काम।
समय परे पै ना मिले, माटी खर्चे दाम॥ **—अज्ञात**

सच्चे संस्कृति-सुधार और सभ्यता का लक्षण परिग्रह की वृद्धि नहीं, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसकी कमी है। जैसे-जैसे परिग्रह कम करते हैं वैसे-वैसे सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष बढ़ता है। **—महात्मा गांधी**

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥ **—चाणक्य**

एक-एक बिन्दु से जैसे धीरे-धीरे घड़ा भर जाता है उसी तरह सभी विद्याओं, धर्म और धन का भी थोड़ा-थोड़ा संचय करने से विशाल संग्रह हो जाता है।

संग्राम

Worse than war is the fear of war. **—Seneca**

संग्राम की अपेक्षा संग्राम का भय अधिक निकृष्ट है। **—सेनेका**

War is death's feast. **—Proverb**

संग्राम मृत्यु (की प्रसन्नता) के लिए दिये गये भोज के समान है। **—कहावत**

War is science of destruction. **—Abbott**

संग्राम विनाश का विज्ञान है। **—एबाट**

मन के साथ संग्राम करना ही सबसे बड़ा संग्राम है। **—स्वामी शिवानन्द**

War makes thieves, and peace hangs them. **—Proverb**

संग्राम चोरों को उत्पन्न करता है और शान्ति उन्हें सूली पर चढ़ाती है।

—कहावत

संघटन

By uniting we stand, by dividing we fall.

—John Dickinson

संघटन में हमारा अस्तित्व कायम रहता है, विभाजन में हमारा पतन होता है। **—जान डिकिन्सन**

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका ।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ।। **—हितोपदेश**

छोटी-छोटी वस्तुओं के संघटन से भी कार्य सिद्ध हो जाता है, जैसे घास की बटी हुई रस्सियों से मतवाले हाथी बाँधे जाते हैं।

Union is strength. संघटन ही शक्ति है। **—कहावत**

संघे शक्तिः कलौ युगे। कलियुग में संघटन में ही शक्ति है। **—अज्ञात**

संघर्ष

संघर्ष ही जीवन है। **—अज्ञात**

संघर्ष हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। जो संघर्ष से डरते हैं, उन्हें चाहिए कि वे जंगल की राह लें। **—अज्ञात**

संघर्षहीन जीवन और मृत्यु में अन्तर केवल इतना है कि हम साँस लेते हैं।

—अज्ञात

संत

संत हृदय नवनीत समाना। **—तुलसी (मानस, उत्तर०)**

नहिं शीतल है चन्द्रमा, हिम नहिं शीतल होय ।
कबिरा शीतल संतजन, नाम सनेही सोय ।। **—कबीर**

संत न छोड़े संतई, कोटिक मिलैं असंत ।
मलय भुवंगहिं बेधिया, सीतलता न तजंत ।। **—कबीर**

बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता । **—तुलसी (मानस, सुन्दर०)**

दुःखी और दीन पुरुषों के लिए संत ही परम आश्रय हैं।

—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

तजि पर अवगुण नीर को, क्षीर गुणन सों प्रीति ।
हंस संत की सर्वदा, नारायण यह रीति ॥
—नारायण स्वामी

तनक मान मन में नहीं, सबसों राखत प्यार ।
नारायण ता संत पै, वार बार बलिहार ॥
—नारायण स्वामी

जा दिन संत पाहुने आवत ।
तीरथ कोटि स्नान करैं फल जैसो दरसन पावत ।
—सूरदास

संत अचिन्त्य महाशक्ति की स्वरूप लीला होते हैं······जब तक मन-बुद्धि का निरोध नहीं हुआ है, संत चरित्र रूप निर्मल गंगा जल का संस्पर्श सम्भव ही नहीं ।
—कुंजबिहारी पालड़ीवाल

संत कष्ट सहि आपुही, सुखी करै जु समीप ।
आप जरै तऊ और को, करै उजेरो दीप ॥ —कवि वृन्द

पारस में अरु संत में, बड़ो अंतरो जान ।
वह लोहा सोना करै, वह कर आपु समान ॥ —अज्ञात

संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् ।
आपत्सु च महाशैलशिलासंघातकर्कशम् ॥ —भर्तृहरि

संतों का चित्त समृद्धि के समय कमल से भी कोमल होता है, परन्तु आपत्ति में उनका चित पहाड़ के पत्थर से भी कड़ा हो जाता है ।

बूंद अघात सहैं गिरि कैसे । खल के बचन संत सह जैसे ॥
—तुलसी

जो कुठार चन्दन को काटता है, चन्दन उसी कुठार की मूठ में अपना गुण, सुगन्ध भर देता है । —अज्ञात

निज परिताप द्रवइ नवनीता ।
पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता ॥—तुलसी (मानस, उत्तर०)

संत विटप सरिता गिरि धरनी ।
परहित हेतु सबन्ह कै करनी ॥

उमा संत की इहै बड़ाई ।
मन्द करत जो करैं भलाई ॥

हर मजहब में जितने संत हुए हैं उन सबका हृदय एक है; आपस में जो भेद दिखाई देते हैं वे अन्य लोगों ने पैदा किये हैं, संतों ने नहीं । **—कुरान**

सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः । **—कालिदास**

सन्देहजनक परिस्थितियों में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ प्रमाण बनती हैं ।

स्वयं हि तीर्थानि पुनन्ति सन्तः । **—श्रीमद्भागवत**

सन्त स्वयं तीर्थों को पवित्र करते हैं ।

पर हित प्रीति उदारचित, विगत दंभ मद रोष ।
नारायण दुख में लखै, निज कर्मन कौ दोष ॥

—नारायण स्वामी

संत-वचन

१. अन्धकार में पड़ी हुई मानव-जाति को प्रकाश में लाने के लिए संत-वचन कभी न बुझने वाली **अमोघ दिव्य ज्योति** है ।

२. दुःख, संकट और पाप-ताप से प्रपीड़ित प्राणियों के लिए संत-वचन **सुख-शान्ति के गम्भीर और अगाध समुद्र हैं** ।

३. कुमार्ग पर जाते हुए जीवन को वहां से हटाकर सच्चे सन्मार्ग पर लाने के लिए **संत-वचन परम सुहृद बन्धु** हैं ।

४. प्रबल मोह सरिता के प्रवाह में बहते हुए जीवों के उद्धार के लिए **संत-वचन सुखमय सुदृढ़ जहाज** हैं ।

५. मानवता में आयी हुई दानवता का दलन करके मानव को मानव ही नहीं महामानव बना देने के लिये **संत-वचन** दैवी-शक्ति-सम्पन्न **संचालक और आचार्य** हैं ।

६. जन्म-जन्मान्तर के संचित भीषण पाप-पादपों से पूर्ण महारण्य को तुरन्त भस्म कर देने के लिये **संत-वचन उत्तरोत्तर बढ़ने वाला भीषण दावानल हैं** ।

७. अज्ञान के गहरे गढ़े में गिरे हुए चिर-संतप्त जीवों को सहज ही वहाँ से

निकालकर भगवान के तत्त्व-स्वरूप का अथवा मधुर मिलन का परमानन्द प्रदान करने के लिये संत-वचन तत्त्वज्ञान और आत्यन्तिक आनन्द के अटूट भण्डार हैं।
—हनुमान प्रसाद पोद्दार (कल्याण—संत वाणी अंक)

संतान

जिस प्रकार हीरे की खान से हीरा और पत्थर की खान से पत्थर निकलता है, उसी प्रकार योग्य माता-पिता ही योग्य संतान उत्पन्न कर सकते हैं। **—अज्ञात**

संतान आत्मा की प्रतिमूर्ति है। **—अज्ञात**

बहु प्रजा निर्ऋतिमा विवेश। **—ऋग्वेद संहिता**

अधिक संतान वाला घोर कष्टों का अनुभव करता है।

न सुप्रतिकरं तनु मात्रा पित्रा च यत्कृतम।
—बाल्मीकि (रा० २-११-९)

माता और पिता सन्तान के लिये जो कुछ करते हैं उसका बदला नहीं चुकाया जा सकता।

दाने तपसि शौर्ये च यस्य न प्रथितं यशः।
विद्यायामर्थलाभे च मातुरुच्चार एव सः॥ **—शाङ्गधर पद्धतिः**

दान, तप, शौर्य, विद्या और सम्पदा की दृष्टि से जिसके यश का लोग बखान नहीं करते वह संतान अपनी माता के मल के समान है।

संतान वह सबसे कठिन परीक्षा है जो ईश्वर ने मनुष्य को परखने के लिए गढ़ी है। **—प्रेमचन्द (कायाकल्प)**

संतान को विवाहित देखना बुढ़ापे की सबसे बड़ी अभिलाषा है। **—प्रेमचन्द**

तपस्या करने से और ब्राह्मणों तथा दीनों को दान देने से जो पुण्य मिलता है केवल परलोक में सुख देता है पर अच्छी सन्तान सेवा-सुश्रूषा करके इस लोक में तो सुख देती ही है साथ ही (तर्पण और पिण्डदान आदि करके) परलोक में भी सुख देती है। **—कालिदास (रघुवंश १–६९)**

संतोष

असंतोषः परं दुःखं संतोषः परमं सुखम्।
सुखार्थी पुरुषस्तस्मात् संतुष्टः सततं भवेत्॥ **— महर्षि गौतम**

असंतोष ही सबसे बढ़कर दुख है और संतोष ही सबसे बड़ा सुख है ; अतः सुख चाहने वाले पुरुष को सदा संतुष्ट रहना चाहिए ।

संतोष-सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है ।

—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

अपने तुच्छ शारीरिक स्वार्थों को परित्याग करने के उपरान्त जो संतोष-सुख होता है वह चक्रवर्ती राजा हो जाने के सुख से भी हजारों गुना अधिक है ।

—अज्ञात

जैसे हरा चश्मा लगा लेने से सभी वस्तुएँ हरी-हरी ही दीखती हैं उसी प्रकार संतोष धारण कर लेने पर सारा संसार आनन्दरूप ही दिखाई पड़ता है ।

—स्वामी भजनानन्द

गोधन गजधन बाजिधन, और रतन धन खान ।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान ।। **—कबीर**

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम् ।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ।। **—चाणक्य**

संतोषरूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते हैं, उनको जो शांति और सुख होता है वह धन के लोभियों को, जो इधर-उधर दौड़ा करते हैं, नहीं प्राप्त होता ।

Contentment is natural wealth, luxury is artificial poverty.

—Socrates

संतोष स्वाभाविक धन है, विलासिता कृत्रिम दरिद्रता है । **—सुकरात**

He is well paid that is well satisfied. **—Shakespeare**

वह अच्छा वेतन पाता है जो पूर्ण सन्तुष्ट है । **—शेक्सपियर**

संतोष से बढ़ कर अन्य कोई लाभ नहीं । जो मनुष्य इस विशेष सद्गुण से सम्पन्न है वह त्रिलोक में सबसे धनी व्यक्ति है । **—स्वामी शिवानन्द**

संतोष यद्यपि कड़वा वृक्ष है, तथापि इसका फल बड़ा ही मीठा और लाभदायक है । **—मौलाना रूमी**

Contentment gives a crown where fortune hath denied it.

—Ford

संतोष मुकुट पहनाता है, जहाँ भाग्य उससे वंचित रखता है । **—फोर्ड**

Contentment is the best food to preserve a sound man, and the best medicine to restore a sick one. **—W. Seekar**

मनुष्य को स्वस्थ रखने के लिए संतोष एक सर्वोत्तम भोज्य पदार्थ है एवं रोगी को निरोग रखने के लिए सर्वोत्तम औषध है। **—डब्लू० सीकर**

An ounce of contentment is worth a pound of sadness, to serve God with. **—Fuller**

ईश सेवा के लिए संतोष की एक रत्ती, शोक के एक तोले के तुल्य है।
—फुलर

कोउ विस्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिन।
जल बिन चलइ कि नाव, कोटि जतन रचिपचि मरिय॥ **—तुलसी**

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुवाँ बेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिए, सोई साहंसाह॥ **—कबीर**

Content is more than a kingdom. **—Proverb**

संतोष साम्राज्य से भी बढ़कर है। **—कहावत**

एक हिन्दू के जीवन में सन्तोष की मात्रा स्वभावतः अधिक होती है। वह सुन्दर परलोक के ख्याल से भूखा रह कर भी संतुष्ट रहने में अपना गौरव समझता है। **—अज्ञात**

The noblest mind the best contentment has. **—Spenser**

सर्वोत्कृष्ट मनुष्य को ही सर्वोत्तम संतोष होता है। **—स्पेन्सर**

Content is the philosopher's stone that turns all it touches into gold. **—Proverb**

संतोष वह पारस पत्थर है जो जिस वस्तु को छूता है उसे सोना बना देता है।
—कहावत

बिनु संतोष न काम नसाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं। **—तुलसी**

क्रोधो वैवस्वतो राजा तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुधा धेनुः संतोषो नन्दनं वनम्॥ **—चाणक्य**

क्रोध यमराज है और तृष्णा वैतरणी नदी है, विद्या कामधेनु गाय और सन्तोष देवराज इन्द्र का नन्दनवन है।

शान्तितुल्यं तपो नास्ति न सन्तोषात्परं सुखम् ।
न तृष्णायाः परो व्याधिर्न च धर्मो दयापरः ॥ **—चाणक्य**

शान्ति के समान दूसरा तप नहीं है, न सन्तोष से परे सुख है, तृष्णा से बढ़ कर दूसरी व्याधि नहीं है, न दया से अधिक धर्म है । **—चाणक्य**

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति परः पृथिव्याम् ।
विभूषणं शीलसमं न चान्यत्संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ॥
—पंचतंत्र

दान के समान दूसरी निधि नहीं है, लोभ के समान दूसरा शत्रु नहीं है, शील के समान दूसरा भूषण नहीं है और संतोष के समान दूसरा धन नहीं है ।

संदेह (दे० 'संशय')

सन्देह पानी का बुलबुला नहीं है जो एक क्षण में भंग हो जाता है । सन्देह तो धूमकेतु की रेखा है जो आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक फैली रहती है । और धूमकेतु जानते हो किस बात का प्रतीक है ? भय का, आशंका का, अमंगल का । **—डा० रामकुमार वर्मा**

मनुष्य-प्रकृति का यह गुण है कि जब थोड़ा-सा भी संदेह हो जाता है तो साधारण से भी साधारण घटनाएँ उस संदेह का समर्थन करने लग जाती हैं ।
—अज्ञात

जब मनुष्य को संदेह अधिक होता है तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । **—अज्ञात**

सन्देह हमारा शत्रु है, वह हमारे हृदय में भय उत्पन्न करता है, जिससे हमें जिस पर विजय प्राप्त करने का पूरा भरोसा होता है, उसी के सामने नत-मस्तक होना पड़ता है । **—शेक्सपियर**

Doubt is brother devil to despair. **—O'Reilly**

संदेह नैराश्य का भ्राता है । **—ओरेली**

शक व शुबहों के तहखाने में बड़ी सीलन होती है : उसमें रहने से दिल अकड़ जाता है और उसके जोश का चिराग बुझ जाता है ।

—अमृतलाल नागर (सात घूंघट वाला मुखड़ा)

संधि

उपकर्त्रारिणा संधिर्न मित्रेणापकारिणा ।
उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः ॥

—माघ (शिशुपाल बध)

उपकारी शत्रु के साथ भी सन्धि कर लेना उचित है, किन्तु अपकारी मित्र के साथ (कभी) नहीं, क्योंकि इस उपकार और अपकार को ही मित्र और शत्रु का लक्षण समझना चाहिए।

संध्या

तस्मादहोरात्रस्य संयोगे ब्राह्मणः सन्ध्यामुपासीत ।

—षड्विंश ब्राह्मणः ४/५

मनुष्य को प्रातः सायं दोनों समय सन्ध्या करनी चाहिए ।

न तिष्ठति तु यः पूर्वा नोपास्ते यश्च पश्चिमाम् ।
स शूद्रवद् वहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः ।

—मनुस्मृति २/१०३

जो मनुष्य प्रातः तथा सायंकाल सन्ध्या नहीं करता वह शूद्र समान है। वह सब प्रकार के द्विज कर्मों से बाहर निकालने के योग्य है ।

संन्यास

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः ।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता) १८-२

कामना से उत्पन्न हुए कर्मों के त्याग को ज्ञानी संन्यास के नाम से जानते हैं।

संन्यास स्वार्थ है, सेवा त्याग है । **—प्रेमचन्द**

गीता का प्रेरक मंत्र यह कहा जा सकता है—"सब धर्मों को तज कर मेरी शरण ले ।" यह सच्चा संन्यास है । परन्तु सब धर्मों के त्याग का मतलब सब कर्मों का त्याग नहीं है । परोपकार के कर्मों में भी जो सर्वोत्कृष्ट कर्म हों उन्हें ईश्वर के अर्पण करना और फलेच्छा का त्याग करना, यह सर्वधर्म-त्याग या संन्यास है ।

—महात्मा गांधी

संन्यासी

संन्यासी के लिए सेवा कार्य छोड़ने की जरूरत नहीं है, अहंकार और आसक्ति छोड़ने की आवश्यकता है। —**विनोबा**

कर्म-मात्र का त्याग गीता के संन्यास को भाता ही नहीं। गीता का संन्यासी अति कर्मी होने पर भी अति अकर्मी है। —**महात्मा गांधी**

संपत्ति

आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम्। —**कालिदास (मेघदूत)**

उत्तम पुरुषों की संपत्ति का मुख्य प्रयोजन यही है कि औरों की विपत्ति का नाश हो।

सम्पति भरम गँवाइ के, हाथ रहत कछु नाहिं।
ज्यों रहीम ससि रहत है, दिवस अकासहिं माहिं॥ —**रहीम**

बेईमानी से जमा की हुई सम्पत्ति ऐसी है जैसी मृग के लिए कस्तूरी। —**अज्ञात**

जलबुदबुदसमाना विराजमाना संपत्,
तडिल्लतेव सहसैवोदेति नश्यति च।

—**दण्डी (दशकुमार चरित)**

संपत्ति जल के बुलबुले के समान होती है। वह विद्युत की भांति एकाएक उदय होती है और नष्ट हो जाती है।

I consider my ability to arouse enthusiasm among the men, the greatest asset I possess and the way to develop the best that is in a man is by appreciation and encouragement.

—**Charles Schwab**

लोगों में उत्साह भरने की अपनी योग्यता को ही मैं अपनी सबसे बड़ी सम्पत्ति समझता हूँ और मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास, प्रशंसा एवं प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। —**चार्ल्स श्वेब**

पवित्रता वह सम्पत्ति है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होती है। —**रवीन्द्र**

जहाँ सम्पत्ति है वहीं सुख है, परन्तु सम्पत्ति के भेद से ही सुख का भी भेद

है दैवी सम्पत्ति वालों को परमात्मसुख, आसुरी वालों को आसुरी सुख और नरक के कीड़ों को नारकीय सुख। —हनुमान प्रसाद पोद्दार

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना। —तुलसी

आपत्ति में पड़े हुए पुरुषों की पीड़ा हर लेना ही सत्पुरुषों की सम्पत्ति का सच्चा फल है। सम्पत्तिवान् होकर भी मनुष्य यदि विपत्ति-ग्रस्तों के काम न आया तो उसकी सम्पत्ति किस काम की। —कालिदास

सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्॥ —भारवि (किरातार्जुनीय)
वही सम्पत्ति सम्पत्ति है जो औरों का उपकार करे।

संभाषण

A good speech is a good thing, but the verdict is the thing.
—Daniel O'connell

सम्भाषण एक अच्छी वस्तु है, किन्तु मुख्य वस्तु निर्णय है।
—डेनियल ओकानल

Great talkers are like leaky vessels; everything runs out of them. —C. Simmons

बातूनी लोग छिद्रयुक्त बर्तन के तुल्य हैं जिनमें से सभी वस्तुएँ बह जाती हैं।
—सी० सिमन्स

संयम

विद्यार्थी अवस्था में संयम की महान् विद्या सीख लेनी चाहिए। जब आप संयम की शक्ति का संग्रह कर लेंगे तो एकाग्रता भी, जो जीवन की एक महान् शक्ति है, पा लेंगे। —विनोबा

बलवान् बनने के लिए एक और जरूरी बात है संयम। मैं इन्द्र हूँ, ये इन्द्रियाँ मेरी शक्तियाँ हैं। —विनोबा

संयमहीन जीवन विपत्तियों का आगार बन जाता है। —अज्ञात

Most powerful is he who has himself in his own power.
—Seneca

जो आत्मसंयमी है वही सर्वशक्तिमान् है। —सेनेका

Those who can command themself, command others. **—Hezlitt**

जो अपने ऊपर शासन कर सकते हैं वही दूसरों पर भी करते हैं। —हैजलिट

No man is free who cannot command himself. **—Pythagoras**

जो आत्मसंयमी नहीं है वह स्वतन्त्र नहीं है। —पाइथागोरस

संवेदना (दे० 'सहानुभूति')

Shame on those hearts of stone, that cannot melt in soft adoption of anothers sorrow. **—A. Hill**

उन पाषाणवत् हृदयों को धिक्कार है जो दूसरे के दुःख को कोमलता से अपना कर द्रवीभूत नहीं हो जाते। —ए० हिल

संशय (दे० 'सन्देह')

संशय बड़े घातक हैं। ये हमारी उत्पादक शक्ति को नष्ट कर देते हैं—हमारी अभिलाषा को पंगु और शक्तिहीन बना देते हैं। —स्वेट मार्डेन

Doubt comes in at the window when inquiry is denied at the door. **—Jowett**

जहाँ जाँच-पड़ताल से इनकार कर दिया जाता है, वहाँ संशय गुप्त रास्ते से उपस्थित हो जाता है। —जोवेट

Men was not made to question but adore. **—Young**

मनुष्य का निर्माण सन्देह के लिए नहीं, अपितु उपासना के लिए है। —यंग

नासमंजसशीलैस्तु सहासीत कथंचन।
सद्वृत्तसन्निकर्षो हि क्षणार्धमपि शस्यते॥ —विष्णुपुराण

संशयशील व्यक्ति के साथ कभी न रहे, सदाचारी पुरुषों का तो आधे क्षण का भी संयोग प्रशंसनीय है।

जहाँ संशय के साथ अभिमान का अभाव होता है वहाँ व्यक्ति शीघ्र ही सत्य को हृदयंगम कर लेता है।

—पं० राम किंकर उपाध्याय (मानस मुक्तावली-भाग-३)

अज्ञश्चाश्रद्धधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता) ४-४०

जो अज्ञानी, श्रद्धारहित और संशयवान् है, उसका नाश होता है । संशयवान् के लिए न यह लोक है, न परलोक है; उसे कहीं सुख नहीं है ।

संसार

This world is the world of wild storm kept tame with the music of beauty. **—R. N. Tagore**

यह संसार प्रचंड तूफानों का संसार है, इसको सौन्दर्य-संगीत शान्त किये हुए है । **—रवीन्द्र**

This world is a beautiful book but of little use to him who cannot read it. **—Goldoni**

यह संसार एक सुन्दर पुस्तक है; परन्तु जो इसे पढ़ नहीं सकता उसके लिए व्यर्थ है । **—गोल्डोनी**

This world is the ever changing foam that floats on the surface of sea of silence. **—R. N. Tagore (Fireflies)**

यह संसार नित्य परिवर्तनशील फेन है जो शान्तिरूपी सागर की सतह पर तैरता रहता है । **—रवीन्द्र**

You will never have a quiet world till you knock patriotism out of the human race. **—Bernard Shaw**

विश्व शांति तब तक सुलभ नहीं होगी, जब तक कि मानव जाति से राष्ट्र-भक्ति निकल नहीं जाती । **—बर्नार्ड शा**

Hell is God's justice; heaven is His love; earth, His long suffering. **—Barun Wessenberg**

नरक ईश्वर का न्याय है; स्वर्ग उसका प्रेम है; पृथ्वी उसकी दीर्घकालीन यातना है । **—बारोन वेसेनबर्ग**

The world loved man when he smiled, the world became afraid of him when he laughed. **—R. N. Tagore**

जब मनुष्य मुस्कराया तब संसार ने उससे प्रेम किया, जब उसने अट्टहास किया तब संसार उससे भयभीत हो गया। —रवीन्द्र

लोक एव विषयानुरंजनं दुःखगर्भमपि मन्यते सुखम्।
आमिषं बडिशगर्भमप्यहो मोहतो ग्रसति यद्वदण्डजः॥ —अज्ञात

मछली जैसे मांस को ही देखती है, उसके नीचे छिपी बंशी को नहीं, वैसे ही यह संसार विषयों के वाह्य आकर्षण को ही देखता है, विषयों के परिणामस्वरूप अवश्यम्भावी दुःखों को नहीं।

जिस संसार में दैववश प्राप्त अपने शरीर और फल-पुष्पादि अवयवों से बारंबार उपकार करने वाला वृक्ष भी कुठारों से काटा जाता है, ऐसे कृतघ्न संसार से उपकार की क्या आशा है? —अज्ञात

संसार तथा संसार के सभी पदार्थ नाश होने वाले हैं; संभव है कि रात को ही सब नष्ट हो जावें, अतएव इनमें चित्त लगाना अच्छा नहीं है। —अरस्तू

तब ते जीव भयउ संसारी। छूट न ग्रन्थि न होइ सुखारी॥
—तुलसी (रा० मा० उ० ३०-११७-५)

Everything is for the best in this best of all possible worlds.
—Valtaire

सभी सम्भव संसारों में यह संसार सर्वोत्तम है और इसमें सभी वस्तुएँ सर्वोत्तम के लिए हैं। —वाल्टेयर

संस्कार

संस्कार का अर्थ संहार नहीं है। जो क्षेत्र-संस्कारक खेत की घासों के साथ अन्न के पौधों को भी उखाड़ देना चाहेगा वह संस्कारक नाम का अधिकारी नहीं।
—हरिऔध

संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है। —विष्णु प्रभाकर

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते। —मनुस्मृति

जन्म से मनुष्य शूद्र ही पैदा होता है, किन्तु संस्कार होने से द्विज कहलाता है।

जो संस्कार हृदय में बद्धमूल हो जाते हैं वे जीवन-पर्यन्त साथ नहीं छोड़ते।
—हरिऔध

जैसे कुम्हार द्वारा मिट्टी के बर्तन में खींची गयी रेखाएँ फिर कभी नहीं छूटतीं, उसी प्रकार माता-पिता द्वारा डाले गये संस्कार बच्चों के मन से कभी नहीं छूटते।
—रामप्रताप त्रिपाठी

संस्कृति

संस्कृति की चाहे कोई भी परिभाषा क्यों न हो, किन्तु उसे व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र की सीमाओं में बाँधना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है।

—पं० जवाहरलाल नेहरू

No culture can live if it attempts to be an exclusive.
कोई भी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती यदि वह अपने को अन्य से पृथक रखने का प्रयास करे।
—महात्मा गांधी

Serenity of spirit, poise of mind, is one of the last lesson of culture and comes from a perfect trust in the all controlling force of universe. **—O. S. Marden**

चित्तवृत्ति की गम्भीरता, मन का सन्तुलन संस्कृति के अंतिम पाठों में से एक है और यह समस्त विश्व को वश में करने वाली शक्ति में पूर्ण विश्वास से उत्पन्न होती है।
—मार्डन

जो संस्कृति महान् होती है। वह दूसरों की संस्कृति को भय नहीं देती, बल्कि उसे साथ लेकर पवित्रता देती है। गंगा महान् क्यों है? दूसरे प्रवाहों को अपने से मिला लेने के कारण ही वह पवित्र रहती है।
—साने गुरु

While civilization is the body, culture is the soul; while civilization is the result of knowledge and great painful researches in diverse fields, culture is the result of wisdom.

—Sri Prakash

सभ्यता शरीर है, संस्कृति आत्मा, सभ्यता जानकारी और भिन्न क्षेत्रों में महान् एवं दुःखदायी खोज का परिणाम है; संस्कृति ज्ञान का परिणाम है।

—श्री प्रकाश

Culture is to know the best that has been said and thought in the world. **—Mathew Arnold**

विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान ही संस्कृति है।

—मैथ्यू आर्नल्ड

Goodness must be joined with knowledge. Mere goodness is not of much use as I have found in life. One must cultivate the fine discriminating quality which goes with spiritual courage and a character. **—Mahatma Gandhi**

नेकी और ज्ञान का संमिश्रण होना चाहिए। मैंने जीवन में पाया है कि केवल नेकी ही उपयोगी नहीं है। हमें विवेकशील-गुण को विकसित करना चाहिए जो कि आध्यात्मिक साहस और चरित्र के साथ आता है। **—महात्मा गांधी**

Partial culture runs to the ornate, extreme culture to simplicity. **—Bovee**

आंशिक संस्कृति श्रृंगार की ओर दौड़ती है, अपरिमित संस्कृति सरलता की ओर। **—बोवी**

सच्चरित्र (दे० 'चरित्र')

The noblest contribution which any man can make for the benefit of posterity is that of a good character.

—Swami Sivanand

सच्चरित्रता ही वह सर्वोत्तम संपत्ति है जो कोई भी व्यक्ति आने वाली संतानों के लाभ के लिए दे सकता है। **—स्वामी शिवानन्द**

Character is higher than intellect. **—Emerson**

चरित्र बुद्धि की अपेक्षा अधिक उच्च है। **—एमर्सन**

Character is simply a habit long continued. **—Plutarch**

चरित्र केवल एक स्थायी स्वभाव है। **—प्लूटार्क**

विनीत, दयालु और सच्चरित्र होना धर्म का परम तत्व है।

—विलियम पेन

चरित्र का सुधारना ही मनुष्य का परम लक्ष्य होना चाहिए। **—टा० ग्रीन**

Character must be kept bright as well as clean.

—Chasterfield

चरित्र को उज्ज्वल और पवित्र रखना चाहिए। **—चेस्टरफील्ड**

संसार में सच्चरित्र मनुष्य ही उन्नति प्राप्त करते हैं। —चेस्टरफील्ड

When wealth is lost, nothing is lost;
When health is lost, something is lost;
When character is lost, all is lost.

—**Anonjmous**

जब धन गया, कुछ भी नहीं गया;
जद स्वास्थ्य गया, कुछ गया;
जब चरित्र गया, सब कुछ गया। —अज्ञात

Strong character is formed by strong and noble thinking.

—**Swami Sivanand**

महान् चरित्र का निर्माण महान और उज्ज्वल विचारों से होता है।

—**स्वामी शिवानन्द**

There is no substitute for beauty of mind and strength of character. —**J. Allen**

मन के सौन्दर्य और चरित्रबल की समानता करने वाली कोई दूसरी वस्तु नहीं। —**जे० एलन**

Not education but character is man's greatest need and man's greatest safeguard —**H. Spencer**

मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं वरन चरित्र है और यही उसका सबसे बड़ा रक्षक है। —**हर्बर्टस्पेन्सर**

चरित्र जब तक उज्ज्वल रहता है तब तक उसे सहेज कर चलने की इच्छा रहती है। जब वह दुर्भाग्यवश उसमें एक भी छींटा लग जाता है तो हम गन्दे वस्त्रों की भाँति उसकी चिंता नहीं करते। —**अज्ञात**

Be a man of action and high character. —**Napoleon**

कर्मशील बनो और उच्च चरित्रवान बनो। —**नेपोलियन**

अपने चरित्र को दर्पण के समान सहेज कर रखो जिससे दूसरों को भी उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखने की आकांक्षा हो। —**अज्ञात**

चरित्र एक बार जब गिर जाता है तब मिट्टी के बर्तन की भांति चकनाचूर हो जाता है। —अज्ञात

सच्चा

This above all, to thine ownself be true. —**Shakespeare**

सब से मुख्य बात यह है कि अपने साथ सच्चे बनो। —**शेक्सपियर**

सच्चाई (दे० 'ईमानदारी')

सच्चाई से जिसका मन भरा है, वह विद्वान न होने पर भी बहुत देशसेवा कर सकता है। —**पं० मोतीलाल नेहरू**

सच्चाई की परख सुख में नहीं, विपत्ति के समय हुआ करती है। —**सुदर्शन**

सच्चिदानन्द

सत्य के साथ ज्ञान, शुद्ध ज्ञान अवश्यभावी है। जहाँ सत्य नहीं है, वहाँ शुद्ध ज्ञान की सम्भावना नहीं है। इसी से ईश्वर के नाम के साथ चित् अर्थात् ज्ञान शब्द की योजना हुई है और जहाँ सत्य ज्ञान है—वहाँ आनन्द ही होगा, शोक होगा ही नहीं। सत्य के शाश्वत होने के कारण आनन्द भी शाश्वत होता है। इसी कारण ईश्वर को हम सच्चिदानन्द नाम से भी पहचानते हैं। —**महात्मा गांधी**

सज्जन (दे० 'महापुरुष', 'महात्मा', 'महान्', 'संत', 'सत्यपुरुष', 'साधु')

सर्वत्र च दयावन्तः सन्तः करुणवेदिनः। —**वेदव्यास**

सज्जनों का यह लक्षण है कि वे सदा दया करने वाले और करुणाशील होते हैं।

कीचड़ से कांचन को लेना, यह तो सज्जनों की रीति है। —**विनोबा**

निःशब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः।
प्रयुक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥

—**कालिदास (मेघदूत)**

हे मेघ, बिना गरजे हुए भी तुम चातक को वर्षाजल से तृप्त करते हो, क्योंकि प्रार्थना करने वालों के मनोरथ को पूरा कर देना ही सज्जनों का उत्तर होता है।

सज्जन पुरुष बिना कहे ही दूसरों की आशा पूरी कर देते हैं, जैसे सूर्य स्वयं ही घर-घर प्रकाश फैला देता है। **—अज्ञात**

सज्जन मनुष्यों का चित्त किसी के क्रुद्ध होने पर भी नहीं बिगड़ता, जैसे समुद्र का जल फूस की लुकारी से गरम नहीं किया जा सकता। **—हितोपदेश**

संसार में सज्जन मनुष्य ही स्वतंत्र होते हैं, नीच मनुष्य दास होते हैं। **—प्लूटार्क**

दातारः संविभक्तारो दीनानुग्रहकारिणः।
सर्वभूतदयावन्तस्ते शिष्टाः शिष्टसम्मताः॥ **—वेदव्यास**

सज्जनों की सम्मति में वे ही लोग सभ्य पुरुष माने जाते हैं, जो दानी, अपने आश्रितों के भाग को न्यायपूर्वक अर्पण करने वाले, दीन जनों पर अनुग्रह करने वाले और सब प्राणियों के प्रति दयालु होते हैं।

दर्शनध्यानसंस्पर्शैर्मत्सी कूर्मी च पक्षिणी।
शिशुं पालयते नित्यं तथा सज्जनसंगतिः॥ **—चाणक्य**

मछली, कछुई और पक्षी ये दर्शन, ध्यान और स्पर्श से जैसे बच्चों (अंडों) को सर्वदा पालते हैं वैसे ही सज्जनों की संगति है।

स्वाभिमानी होना सत्पुरुष का सच्चा लक्षण है। **—अज्ञात**

Propriety of manners and consideration for others are the two main characteristics of a gentleman. **—Disraeli**

व्यवहारों की शुद्धता और दूसरों के प्रति आदर यही सज्जन मनुष्य के दो मुख्य लक्षण हैं। **—डिजरायली**

प्रसादसौम्यानि सतां सुहृज्जने पतंति चक्षूंषि न दारुणः शराः। **—कालिदास (शकुन्तला)**

सज्जन अपने मित्रों पर कृपा की दृष्टि डालते हैं, शरों की वर्षा नहीं करते।

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं कूर्मो बिभर्ति धरणी खलु पृष्ठभागे।
अंभोनिधिर्वहति दुर्वहवाड़वाग्निमंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति॥ **—अज्ञात**

आज तक भगवान् शंकर कालकूट विष का परित्याग नहीं करते, कच्छपरूप भगवान् विष्णु अपनी पीठ पर पृथ्वी धारण किये ही हैं और समुद्र भी असह्य बड़वानल को धारण कर रहा है। वस्तुतः सज्जन लोग अंगीकार किये हुए वचन और कर्म का सदा पालन ही करते हैं।

परिचरितव्यः सन्तो यद्यपि कथयन्ति नो सदुपदेशम् ।
यास्तेषां स्वैरकथास्ता एव भवन्ति शास्त्राणि ।। —भर्तृहरि

सज्जनों की उपासना करनी चाहिए; चाहे वे उपदेश न भी करते हों, क्योंकि जो उनके निजी वार्तालाप हैं वही सदुपदेश हो जाते हैं।

सज्जन के साथ यदि कोई अपकार करता है तो वे अपनी सज्जनता को नहीं त्यागते, जैसे चन्दन के वृक्ष को काटने पर कुल्हाड़ी भी महकने लगती है। —**अज्ञात**

He makes light of favours while he does them and seems to be receiving when he is conferring. **—C. Newman**

सज्जन दूसरों पर उपकार बहुत विनम्रता से करता है और ऐसा प्रतीत होता है कि वह उपकार पा रहा है जबकि वह कर रहा है। **—सी० न्यूमैन**

त्यजन्ति शूर्पवद्दोषान् गुणान् गृह्णन्ति साधवः ।
दोषग्राही गुणत्यागी, चालनीवद्धि दुर्जनः ।। **—अज्ञात**

सज्जनों का स्वभाव सूप के समान होता है जो दोषरूप कंकड़ आदि को दूर कर देता है और गुणरूप धान्य को अपने पास रख लेता है। दुर्जनों का स्वभाव चलनी के समान होता है जो दोषरूप चोकर आदि अपने पास रख लेती है और गुणरूप आटे आदि को अलग गिरा देती है।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णास्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणन् पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ।।
—भर्तृहरि (नीति)

मन वचन और शरीर में पुण्यामृत से परिपूर्ण, उपकारों से तीनों लोकों को तृप्त करने वाले और दूसरों के अणु मात्र गुण को पर्वत के बराबर मान कर अपने हृदय में प्रसन्न होने वाले सज्जन कितने हैं? अर्थात् इन गुणों से सम्पन्न सज्जन संसार में इने गिने ही हैं।

विप्रियमप्याकर्ण्य ब्रूते प्रियमेव सर्वदा सुजनः ।
क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरम् ।। **—अज्ञात**

जिस प्रकार बादल समुद्र का खारा पानी पीकर भी मीठा जल ही बरसाता है उसी प्रकार सज्जन किसी की कटु वाणी सुन कर भी सदा मधुर वाणी ही बोलता है।

सन्तोऽसत्सु न रमन्ते, हंसः प्रेतवने न रमते। —**कौटिल्य**

सज्जन असज्जनों के साथ नहीं रहते, हंस श्मशान में नहीं रहता।

दुर्जन प्राणी मिट्टी के घड़े के सदृश अनायास फूट जाते हैं, और बड़ी कठिनाई से जोड़े जा सकते हैं, परन्तु सज्जन प्राणी सोने के घट के समान हैं जो सहज में टूटते नहीं तथा टूटने पर सरलता से जोड़े जा सकते हैं। —**हितोपदेश**

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥ —**रहीम**

उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

उदय होते समय सूर्य लाल होता है और अस्त होते समय भी; सम्पत्ति के समय तथा विपत्ति के समय महान् पुरुषों में एकरूपता देखी जाती है (उनमें विकार नहीं होता)।

आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव। —**कालिदास (रघुवंश)**

बादलों के समान सज्जन पुरुष भी दान करने के लिए ही किसी वस्तु को ग्रहण करते हैं।

भला काम करने का स्वभाव ऐसा साधन है जिसको शत्रु छीन नहीं सकता और चुरा भी नहीं सकता। —**मा० ओरिलियस**

Repose and cheerfulness are the badge of the gentleman.

—**Emerson**

शान्ति और प्रसन्नता सज्जन पुरुष के लक्षण हैं। —**एमर्सन**

अंजलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम्।
अहो सुमनसां प्रीतिर्वामदक्षिणयोः समा॥ —**अज्ञात**

जिस प्रकार अंजलि में रखे हुऐ पुष्प दोनों हाथों को समान रूप से सुगंधित करते हैं, उसी प्रकार सज्जन दोनों के प्रति कृपालु ही रहते हैं।

असज्जनः सज्जनसङ्गिसङ्गात् करोति दुःसाध्यमपीह लोके।
पुष्पाश्रया शम्भुजटाधिरूढ़ा पिपीलिका चुम्बति चन्द्रबिम्बम्॥

असज्जन भी सज्जनों की संगति से इस संसार में दुःसाध्य काम कर डालते हैं। फूलों के सहारे चींटी शंकर की जटा पर बैठ कर चन्द्रमा का चुम्बन लेने पहुँच जाती है। —**अज्ञात**

केषा न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेष। —कालिदास (मेघदूत)

सज्जनों से की हुई प्रार्थना किनकी सफल नहीं होती ?

सज्जन पुरुष कष्टों को कोमल कुसुमों के स्पर्श की भाँति हर्षोत्फुल्ल होकर सहन किया करते हैं। —अज्ञात

याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। —कालिदास (मेघदूत)

सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी, नीच से सफल याचना भी अच्छी नहीं।

It is almost a definition of a gentleman to say he is one who never inflicts pain. —**C. Newman**

सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी व्यक्ति को पीड़ित नहीं करता। —न्यूमैन

सज्जनता

राजकीय ठाट-बाट की अपेक्षा सुजनता की दरिद्रता अधिक मीठी है। —रस्किन

Gentlemanliness, being another word for intense humanity. —**Ruskin**

सज्जनता उत्कृष्ट मानवता के लिए दूसरा शब्द है। —रस्किन

भवंति नम्रास्तरवः फलोद्‌गमैर्नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बितो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥
—कालिदास (शकुन्तला)

फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं, सम्पत्ति के समय सज्जन नम्र होते हैं—परोपकारियों का स्वभाव ही ऐसा है।

सत्य और न्याय का समर्थन मनुष्य की सज्जनता और सभ्यता का एक अंग है। —प्रेमचन्द

सतीत्व

राजभक्त को राजा, जौहरी को उत्तम हीरा, प्यासे को शीतल जल और रोगी को संजीवनी रस जैसे प्यारे और आदर के पदार्थ होते हैं, स्त्रियों के लिए सतीत्व उससे कहीं अधिक प्यारी और आदर की वस्तु है। —अज्ञात

Chastity is a wealth that comes from abundance of love.

—R. N. Tagore

सतीत्व वह सम्पत्ति है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होती है। **—रवीन्द्र**

Chastity is not a hot house growth. It cannot be super imposed. It can not be protected by the surrounding wall of the purdah. It must grow from within, and to be worth anything, it must be capable of withstanding every on slaught temptation. **—Mahatma Gandhi**

सतीत्व घर की चहारदीवारी में नहीं उपजता। यह ऊपर से लादा नहीं जा सकता। परदे की दीवारें इसकी रक्षा नहीं कर सकतीं। यह अन्तःकरण से उत्पन्न होता है और इसका मूल्य तभी कुछ है, जब इसमें सभी प्रलोभनों पर विजय पाने की क्षमता होती है। **—महात्मा गांधी**

जैसे बिना जल के मीन और बिना आहार के मनुष्य नहीं रह सकता, वैसे ही बिना सतीत्व के पतिव्रत धर्म का अंकुर हृदयभूमि में नहीं जम सकता।

—अज्ञात

जैसे सोने का खरा-खोटापन अग्नि की ज्वलन्त शिखा में प्रकट होता है, स्त्री का सतीत्व भी वैधव्य की कठोर यातना में पूर्ण रूप से प्रमाणित होता है।

—चण्डी प्रसाद हृदयेश

जैसे अकेले चन्द्रमा से आकाश में शोभा होती है, सहस्रों तारागणों के उदय होते हुए भी बिना चन्द्रमा के वैसी शोभा नहीं होती। इसी प्रकार और सब गुणों के होते हुए भी सतीत्वरूपी रत्न न होने से वे सारे गुण स्त्रियों को वैसी शोभा नहीं दे सकते। **—अज्ञात**

सत्कार (दे० 'मान')

आवत ही हर्ष नहीं, नयनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह॥ **—तुलसी**

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥ **—रहीम**

सत्ता

सत्ता कभी लुप्त भले ही हो जाय, किन्तु उसका नाश नहीं होता। गृह का रुप न रहेगा तो ईंटें रहेंगी जिनके मिलने पर गृह बने थे। वह रूप भी परिवर्तित हुआ तो मिट्टी हुई, राख हुई, परमाणु हुए। उस चेतन के अस्तित्व की सत्ता कहीं नहीं जाती; और न उसका चेतनमय स्वभाव उससे भिन्न होता है।

—जयशंकर प्रसाद

The highest duty is to respect authority. **—Pope**

सत्ता का सम्मान ही सर्वोच्च कर्त्तव्य है। —पोप

Power gradually extirpates from the mind every human and gentle virtue. **—Burke**

सत्ता धीरे-धीरे सभी मानवीय और अच्छे गुणों का नाश कर देती है।—बर्क

निरंकुश सत्ता एक स्वप्न है। —क० मा० मुन्शी

सत्पुरुष (दे० 'सज्जन')

पुष्प, चन्दन, तगर या चमेली किसी की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती। किन्तु सन्तों का यश वायु के विपरीत भी फैलता है। सत्पुरुष सभी दिशाओं को अपनी सुगन्ध से वासित कर देते हैं। —भगवान् बुद्ध

सत्पुरुषों की मनोवृत्ति सर्वदा धर्म की ओर ही रहती है। सत्पुरुष ही भूत और भविष्य के आधार हैं। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

सत्य

सत्यमेव जयते नानृतम्। —मुंडकोपनिषद्

सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं।

सत्य से बढ़ कर धर्म नहीं है। सत्य स्वयं परब्रह्म परमात्मा है।

—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

सत्य ही सर्वोत्तम नीति है। —महात्मा गांधी

सत्य अनंत रूप में असत्य की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। —विवेकानन्द

God is truth and light his shadow **—Plato**

ईश्वर सत्य है और प्रकाश उसकी छाया । **—प्लेटो**

सत्य एक है उसकी उपासना करने वाले उसे अलग अलग नामों से पुकारते हैं । **—विनोबा**

सत्य सहस्रों अश्वमेघों से भी श्रेष्ठ है । **—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)**

परमेश्वर सत्य है; यह कहने के बजाय 'सत्य ही परमेश्वर है' यह कहना अधिक उपयुक्त है । **—महात्मा गांधी**

धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ।। **—तुलसी**

Time is precious but 'truth' is more precious than time.

—Disraeli

समय मूल्यवान है, परन्तु 'सत्य' समय की अपेक्षा अधिक मूल्यवान् है ।

—डिजरायली

सत्य मूल सब सुकृत सुहाई । वेद पुराण विदित मुनि भाई ।।

—तुलसी (मानस, अयोध्या)

The greatest homage we can pay to truth is to use it.

—Emerson

सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यह है कि हम उसको आचरण में लायें ।

—एमर्सन

सत्य की कभी हार नहीं होती । **—प्रेमचंद**

My way of joking is to tell the truth. Its the funniest joke in the world. **—G. B. Shaw**

सत्य को कह देना ही मेरे मजाक करने का तरीका है । संसार में यह सबसे विचित्र मजाक है । **—जार्ज बर्नार्ड शा**

नास्ति सत्य समं तपः । **—वेदव्यास (महा०शान्ति०)**

सत्य के समान दूसरा तप नहीं है ।

सत्य तो अमूर्त है, इसलिए सब लोग अपने को ठीक लगें, ऐसे सत्य की मूर्ति की कल्पना कर लें । **—महात्मा गांधी**

सत्य की सहायता से ही ऋषिगण देवयान मार्ग से परमात्मा के परम धाम तक पहुँचते हैं। —उपनिषद्

Truth never grows old. **—Proverb**

सत्य कभी वृद्ध नहीं होता। —कहावत

विलास के प्रेमी सत्य का पालन नहीं करते। —प्रेमचन्द

One of the sublimest things in the world is plain truth.

—Bulwar

सरल सत्य संसार की सर्वोत्कृष्ट वस्तुओं में से एक है। —बुल्वर

न्याय से बढ़ कर कोई रक्षक नहीं, विचार से बढ़ कर कोई राजा नहीं, पदार्थ से बढ़ कर कोई खड्ग नहीं और सत्य से बढ़ कर कोई सत्य नहीं। —सुकरात

सारे वेदों को पढ़ ले और सारे तीर्थों में स्नान कर ले फिर भी सत्य उनसे बढ़ कर है। —वेंदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

Truth is soul of God and light his body.

—Pythagoras

सत्य ईश्वर की आत्मा है और प्रकाश उसका शरीर है। —पाइथागोरस

Truth's best ornament is nakedness. **—Proverb**

सत्य का सर्वोत्कृष्ट अलंकार नग्नता है। —कहावत

'Tis, strange, but true ; for truth is always, strange, stranger than fiction. **—Byron**

यह अनोखी बात है परन्तु सत्य है कि सत्य सदैव अनोखा होता है, कहानी से भी ज्यादा अनोखा। —बायरन

सत्यं हि परमं बलम्। —वेदव्यास (महा०)

सत्य ही परम बल है।

जो सत्य जानता है ; मन से, वचन से और काया से सत्य का आचरण करता है, वह परमेश्वर को पहचानता है। इससे वह त्रिकालदर्शी हो जाता है। उसे इसी देह में मुक्ति प्राप्त हो जाती है। —महात्मा गांधी

सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यादपि हित वदेत्। —वेदव्यास

सत्य बोलना श्रेय का प्रधान साधन है, सत्य के साथ-साथ जो हितकर हो वही बात कहे।

सत्यं वक्ष्यामि नानृतम्। —अथर्ववेद

असत्य नहीं, सत्य ही बोला करो।

Truth is as impossible to be soiled by any outward touch as the sun beam. —**Milton**

जिस प्रकार सूर्य की किरणें किसी पदार्थ से अपवित्र नहीं की जा सकतीं उसी प्रकार सत्य को भी बाह्य स्पर्श से अपवित्र करना असम्भव है। —**मिल्टन**

He who seeks truth should be of no country. —**Voltaire**

जो सत्य की खोज में रहता है उसे किसी एक देश का न होना चाहिए। —**वाल्टेयर**

सत्य के ऊपर और कोई ईश्वर नहीं है, सत्य ही सर्वप्रथम खोजने की वस्तु है। —**महात्मा गांधी**

If you shut your door to all errors, truth will be shut out. —**R. N. Tagore**

यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बन्द कर दोगे, तो सत्य भी बाहर रह जायगा। —**रवीन्द्र**

सत्य से बढ़ कर संसार में दूसरा धर्म नहीं है तथा मिथ्या-भाषण से बढ़ कर दूसरा पाप नहीं है, अतएव सत्य की अर्चना करो, असत्य मत बोलो। —**वेदव्यास**

मैं सत्य के आदर्श को अहिंसा के सिद्धान्त से अधिक समझता हूँ। सत्य बिना अहिंसा का प्रयोग निष्फल है। —**महात्मा गांधी**

सत्य और तैल सदैव ऊपर रहते हैं। —**कहावत**

Truth is God's daughter. —**Proverb**

सत्य ईशकन्या है। —**कहावत**

साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है ता हिरदे गुरु आप॥ —**कबीर**

सत्य का स्थान हृदय में है, मुँह में नहीं। —**शरत्चन्द्र (बत्ता)**

सृष्टि में एकमात्र सत्य की सत्ता है। —**महात्मा गांधी**

The stream of truth flows through its channels of mistakes.
—R. N. Tagore

सत्य का स्रोत भलों से होकर बहता है। **—रवीन्द्र**

सत्य अविनश्वर ब्रह्म है, सत्य अविनश्वर तप है। **—वेदव्यास** (महा०)

असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है। **—हरिभाऊ उपाध्याय**

सत्य वचन मनुष्य के परलोक बनाने में परम सहायक होता है। **—वाल्मीकि**

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥ **—चाणक्य**

सत्य से पृथ्वी स्थिर है, सत्य से सूर्य तपता है, सत्य ही से वायु बहता है, सब सत्य से ही स्थिर हैं।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्॥ **—मनुस्मृति**

सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए किन्तु जो अप्रिय लगे ऐसी बात सच्ची हो तो भी न बोलनी चाहिए।

Every violation of truth is a stab at the health of human society. **—Emerson**

सत्य का प्रत्येक उल्लंघन मानव समाज के स्वास्थ्य में छुरी भोंकने के समान है। **—एमर्सन**

Truths and roses have thorns about them. **—Proverb**

सत्य और गुलाब के पुष्प के चारों ओर काँटे होते हैं। **—कहावत**

Truth raises against itself the storm that scatters its seeds broadcast. **—R. N. Tagore**

सत्य अपने विरुद्ध एक आँधी पैदा कर देता है। और यही आँधी उसके बीजों को दूर-दूर तक फैला देती है। **—रवीन्द्र**

सत्य या ज्ञान पर किसी का मालिकाना अधिकार नहीं है। दुनिया का सम्पूर्ण धर्म, जगत् का सम्पूर्ण सत्य तुम्हारा है। **—स्वामी रामतीर्थ**

साँचे साप न लागई, साँचे काल न खाय।
साँचे को साँचा मिलै, साँचे माहि समाय॥ —कबीर

सत्य महान् धर्म है। इतर धर्म क्षुद्र हैं और उसी के अंग हैं। वह तप से भी उच्च है, क्योंकि वह दंभ-विहीन है। शुद्ध बुद्धि की आकाशवाणी उसी का अनाहत गान करती है। वह अन्तरात्मा की सत्ता है। उसको दृढ़ कर लेने पर ही अन्य सब धर्म आचरित होते हैं। **—जयशंकर प्रसाद**

While you live, tell the truth and shame the devil.

—Shakespeare

जब तक जीवित रहो सत्य बोलो और शैतान को लज्जित करो।

—शेक्सपियर

The greatest friend of truth is time; her greatest enemy is prejudice; and her constant companion is humility. **—Colton**

सत्य का सबसे बड़ा मित्र समय है, इसका सबसे बड़ा शत्रु पक्षपात, और इसका अंचल साथी नम्रता है। **—कोल्टन**

सत्य किसी की स्वीकृति की अपेक्षा नहीं रखता। वह तो है ही, नित्य है ही—कोई मानें या न मानें। **—हनुमान प्रसाद पोद्दार (राधा-माधव-चिन्तन परिशिष्ट)**

जो दूसरों का सहारा ढूंढ़ता है वह सत्य स्वरूप भगवान् की सेवा नहीं कर सकता। **—स्वामी विवेकानन्द**

सत्य वस्तुतः अन्त तक सत्य ही बना रहता है। **—शेक्सपियर**

सत्य हमारे जीवन का नियम है। **—महात्मा गांधी**

सत्य से अमरत्व प्राप्त होता है। **—वेदव्यास(महा०, शांतिपर्व)**

अपने सत्य से अलग जब शत्रु का सत्य देखा जाता है तभी माता वसुन्धरा पर युद्ध के बादल बरसते हैं। **—अज्ञात**

Truth makes the devil blush. **—Proverb**

सत्य शैतान को लज्जित करता है। **—कहावत**

सत्य गोपनीयता से घृणा करता है। —**महात्मा गांधी**

सत्य बोलने में ही क्षमा का गुण आता है। —**वेदव्यास (महा०, शांतिपर्व)**

Truth in her dress finds facts too tight. In fiction she moves with ease. —**R. N. Tagore**

घटनारूपी वस्त्र, सत्य के लिए, आवश्यकता से अधिक चुस्त जान पड़ता है। गल्प में वह सुखपूर्वक विचर सकता है। —**रवीन्द्र**

Truth is immortal; error is mortal. —**Mary Baker Eddy**

सत्य अमर है; त्रुटि नश्वर। —**मेरी बेकर एडी**

नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम् ॥ —**वेदव्यास**

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है, सत्य के समान कोई तप नहीं है। राग के समान कोई दुःख नहीं है और न त्याग के समान सुख।

सत्य किरणों की किरण, सूर्यों का सूर्य, चन्द्रमाओं का चन्द्र तथा नक्षत्रों का नक्षत्र है—सत्य सबका सारभूत तत्त्व है। —**डिकेन्स**

There are three parts in truth : first, the inquiry, which is the wooing of it; secondly, the knowledge of it, which is the presence of it, and thirdly, the belief, which is the enjoyment of it. —**Bacon**

सत्य के तीन भाग हैं—प्रथम, जिज्ञासा जो कि उसकी आराधना है, द्वितीय ज्ञान जो कि उसकी उपस्थिति है और तृतीय विश्वास जो कि उसका उपभोग है। —**बेकन**

Beauty is truth, truth beauty. —**Keats**

सौन्दर्य ही सत्य है, सत्य ही सौन्दर्य। —**कीट्स**

प्रत्येक प्राणी में सत्य की एक चिंगारी है तथा उसके बिना कोई जीवित नहीं रह सकता। —**सत्य साईं बाबा**

सत्येनार्कः प्रतपति सत्ये तिष्ठति मेदिनी।
सत्यं चोक्तं परो धर्मः स्वर्गः सत्ये प्रतिष्ठितः ॥ —**विश्वामित्र**

सत्य से ही सूर्य तप रहा है। सत्य पर ही पृथ्वी टिकी हुई है। सत्य-भाषण सबसे बड़ा धर्म है। सत्य पर ही स्वर्ग प्रतिष्ठित है।

He, who has the truth at his heart, need never fear the want of persuation on his tongue. —**Ruskin**

जिसके हृदय में सत्य है उसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं, भले ही उसकी वाणी में लुभाने का अभाव हो। —**रस्किन**

Truth is like a lighted lamp in that it cannot be hidden away in the darkness because it carries its own light.

—**E. Wilson**

सत्य एक जलते हुए दीपक की भाँति है जो अन्धकार में छिपाया नहीं जा सकता क्योंकि वह अपना प्रकाश स्वयं ले चलता है। —**एडवर्ड विल्सन**

सांच बिना सुमिरन नहीं, भय बिन भक्ति न होय।
पारस में परदा रहै, कंचन केहि विधि होय ॥ —**कबीर**

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्य-धर्माय दृष्टये ॥—**ईशावास्योपनिषद्**

सत्य का मुँह स्वर्णपात्र से ढंका हुआ है। हे ईश्वर, उस स्वर्णपात्र को तू उठा दे जिससे सत्य धर्म का दर्शन हो सके।

सत्यमार्ग

सुगा ऋतस्य पन्थाः। —**ऋग्वेद**

सत्य का मार्ग सुख से गमन करने योग्य, सरल है।

ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः। —**ऋग्वेद**

सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नहीं कर सकते ।

सत्य का, अहिंसा का मार्ग सीधा है, उतना ही संकरा भी है। तलवार की धार पर चलने के समान है । नट लोग जिस रस्सी पर एक निगाह रख कर चल सकते हैं, सत्य और अहिंसा की रस्सी उससे भी पतली है । —**महात्मा गांधी**

सत्यवादी

सत्यभाषी एक बार जो वचन कह देता है वह नवरूप हो जाता है । सैकड़ों वर्षों तक उस वचन से मनुष्यों का विष उतरता है, वशीकरण होता रहता है ।

—**अज्ञात**

तनु तिय तनय धामु धन धरनी । सत्य-संध कहुँ तृन सम बरनी ॥ —**तुलसी**

सच्चा आदमी एक मुलाकात में ही जीवन को बदल सकता है, आत्मा को जगा सकता है और अज्ञान को मिटाकर प्रकाश की ज्योति फैला सकता है ।

—**प्रेमचन्द**

भूमिः कीर्तिर्यशो लक्ष्मीः पुरुषं प्रार्थयन्ति हि ।
सत्यं समनुवर्तन्ते सत्यमेव भजेत्ततः ॥ —**वाल्मीकि**

भूमि, कीर्ति, यश और लक्ष्मी—ये सत्यवादी पुरुष को प्राप्त करना चाहते हैं और उसी का अनुसरण करते हैं; अतः सदा सत्य का ही सेवन करना चाहिए ।

सत्यवादी तो उसे कहेंगे जिसमें सत्य बोलना विधि-निषेध की सीमा पार कर स्वभाव ही बन चुका है । —**सत्य साईं बाबा**

आओ मैं टूटे हुए हृदय को जोड़ता हूं। भग्न अन्तःकरण की मरम्मत करता हूं। मैं उस सुनार के समान हूं जो टूटे हुए आभूषणों को फिर से जोड़ कर नया बना देता है । —**सत्य साईं बाबा**

मैंने कई बार कहा है कि मैं हर जगह हूं हर प्राणी में हूं। इसलिए किसी से घृणा, द्वेष और ईर्ष्या न करो। हर एक के साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार करो, मुझे पाने का यही सबसे सीधा और सरल मार्ग है । —**सत्य साईं बाबा**

याद रखो साईं पत्थर, ईंटों या धातु की बनाई हुई मूर्तियों में नहीं रहता। वह तो मानव के कोमल हृदय में निवास करता है। उस हृदय में जिसमें समस्त विश्व के लिये गहन सहानुभूति है, प्यार है। **—सत्य साईं बाबा**

सत्याग्रह

सत्याग्रह स्वयं आर्त्त हृदय की एक मूक और अचूक प्रार्थना है। **—महात्मा गांधी**

सत्याग्रह तो बल-प्रयोग के सर्वथा विपरीत होता है। हिंसा के सम्पूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गयी है। **—महात्मा गांधी**

सत्याग्रह ऐसी तलवार है जिसके सब ओर धार है। उसे काम में लाने वाला और जिस पर वह काम में लायी जाती है, दोनों सुखी होते हैं। खून न बहा कर भी वह बड़ी कारगर होती है। उस पर न तो कभी जंग लगता है और न कोई उसे चुरा ही सकता है। **—महात्मा गांधी**

सत्याग्रही

सत्याग्रही के लिए अविनयी होना तो दूध में जहर पड़ने के समान है। विनय सत्याग्रह का सबसे कठिन अंश है। विनय है विरोधी के प्रति भी मन में आदर रखना, सरल भाव से उसके हित की इच्छा करना, और उसी के अनुसार अपना बर्ताव रखना। **—महात्मा गांधी**

गर्व और सत्याग्रही के बीच तो समुद्र लहराता है। सत्याग्रही का बल संख्या में नहीं, आत्मा में है। दूसरे शब्दों में ईश्वर में है। **—महात्मा गांधी**

सत्याचरण

सत्याचरण व्रतधारी के लिए कोई युक्ति नहीं है। वह तो उसके शरीर से लगी हुई वस्तु है, उसका स्वभाव है। **—महात्मा गांधी**

सत्याचरण में रत होना ही मानवता की सबसे मूल्यवान् सेवा है। **—अज्ञात**

सत्संग

बिनु सतसंग विवेक न होई। रामकृपा बिनु सुलभ न सोई॥ **—तुलसी**

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग ॥ **—तुलसी**

जाहि बड़ाई चाहिए, तजै न उत्तम साथ।
ज्यों पलास, संग पान के, पहुँचे राजा हाथ ॥ **—अज्ञात**

सतसंगति दुर्लभ संसारा। निमिष दंड भरि एकउ बारा ॥
—तुलसी (मानस, उत्तर०)

कबिरा संगत साधु की ज्यों गंधी की बास।
जो कछु गंधी दे नहीं तौ भी बास सुबास ॥ **—कबीर**

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
—तुलसी (मानस, बाल०)

कबिरा संगत साधु की हरै और की व्याधि।
संगत बुरी असाधु की आठो पहर उपाधि ॥ **—कबीर**

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयनि दिक्षु तनोति कीर्तिं, सत्संगतिः कथय किन्न करोति पुंसाम् ॥
—भर्तृहरि

सत्संगति बुद्धि की जड़ता नष्ट करती है, वाणी को सत्य से सींचती है, मान बढ़ाती है, पाप मिटाती है, चित्त को प्रसन्नता देती है, संसार में यश फैलाती है। सत्संगति मनुष्य के लिए क्या नहीं करती ?

विद्वानों की सङ्गति में बैठकर मूर्ख भी उसी प्रकार विद्वान बन जाता है जैसे मटमैला पानी मैल को काटने वाले निर्मली के फल के संपर्क से स्वच्छ हो जाता है। **—कालिदास (मार्लविकाग्निमित्र २-७)**

निधानं सर्वरत्नानां, हेतुः कल्याण-संपदाम्।
सर्वस्या उन्नतेर्मूलं महतां संग उच्यते ॥ **—अज्ञात**

महान् पुरुषों का सत्संग समस्त उत्कृष्ट अमूल्य पदार्थों का आश्रय, कल्याण, संपत्तियों का हेतु और सारी उन्नति का मूल कहा जाता है।

कबिरा खांईं कोट की, पानी पिवै न कोय।
जाय मिलै जब गंग से, सब गंगोदक होय ॥ **—कबीर**

पूर्ण महात्मा और सज्जनों के साथ को ही सत्संग कहते हैं। सत्संग करे तो लोहे से सोना बन जाय। **—योगवाशिष्ठ**

तुलयाम लवेनापि, न स्वर्गं। नापुनर्भवम्।
भगवत्संगिसंगस्य, मर्त्यानां किमुताशिषः॥ **—व्यासदेव**

यदि भगवान् में आसक्त रहने वाले लोगों का क्षण भर भी संग प्राप्त हो, तो उससे स्वर्ग और मोक्ष तक की तुलना ही नहीं कर सकते, फिर अन्य अभिलषित पदार्थों की तो बात ही क्या है?

कांचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम्।
तथा सत्संनिधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम्॥ **—हितोपदेश**

सुवर्ण के संबंध से कांच भी सुन्दर रत्न की शोभा को प्राप्त करता है, इसी प्रकार मूर्ख भी सज्जन के संसर्ग से चतुर हो जाता है।

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

—हितोपदेश

गुण बुद्धिमानों में मिल जाने से गुण ही रहते हैं किन्तु मूर्खों में मिल जाने से वे ही गुण दोष बन जाते हैं, जैसे मीठे जल वाली नदियाँ समुद्र में मिल कर खारी बन जाती हैं।

सदाचार

सदाचार-सम्पन्नता ही बड़ी कीर्ति है।

—हरिभाऊ उपाध्याय (प्रियदर्शी अशोक)

जैसे चमक के बिना मोती किसी काम का नहीं होता, इसी प्रकार सदाचार के बिना मनुष्य किसी काम का नहीं होता। **—अज्ञात**

सदाचार जीवन के अभ्यास की अमूल्य वस्तु है। **—अज्ञात**

चन्दन या तगर, कमल या जूही इन सभी की सुगन्धों से सदाचार की सुगन्ध उत्तम है। **—धम्मपद**

जैसे लोहे का मोरचा उसी से उत्पन्न होकर उसी को खाता है, वैसे ही

सदाचार के उल्लंघन करने वाले मनुष्य के अपने ही कर्म उसे दुर्गति को प्राप्त कराते हैं। **—महात्मा बुद्ध (धम्मपद)**

यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थितः।
तं ब्राह्मणमहं मन्ये वृत्तेन हि भवेद् द्विजः॥ **—वेदव्यास**

जो शूद्र दम, सत्य और धर्म में परायण है उसे मैं ब्राह्मण मानता हूँ, क्योंकि सदाचार से ही द्विज बनता है।

एक सदाचारी मनुष्य बिना जबान हिलाये सैकड़ों मनुष्यों का सुधार कर सकता है। पर जिसका आचरण ठीक नहीं है उसके लाखों उपदेशों का कुछ फल नहीं होता। **—मौलाना रूमी**

न परः पापमादत्ते परेषां पाप-कर्मणाम्।
समयो रक्षितव्यस्तु सन्तश्चारित्र - भूषणः॥ **—वाल्मीकि**

श्रेष्ठ पुरुष दूसरे पापाचारी प्राणियों के पाप को नहीं ग्रहण करता, उन्हें अपराधी मान कर उनसे बदला लेना नहीं चाहता। इस उत्तम सदाचार की सदा रक्षा करनी चाहिए; क्योंकि सदाचार ही सत्पुरुषों का भूषण है।

सदाचारी

तगर और चन्दन से जो गन्ध फैलती है वह अल्पमात्र है और जो यह सदाचारियों की गन्ध है वह उत्तम गन्ध देवताओं में फैलती है। **—धम्मपद**

शत्रु भी सदाचारी की प्रशंसा करते हैं। **—अज्ञात**

सदाचारी मूर्ख आचारहीन बुद्धिमान् की अपेक्षा पूज्य होता है। **—अज्ञात**

सद्‌गुण

Virtue and happiness are mother and daughter. **—Proverb**
सदगुण और प्रसन्नता मां और बेटी हैं। **—कहावत**

The is the law of God that virtue only is firm and cannot be shaken by a tempest. **—Pythagoras**

यही दैवी नियम है कि केवल सद्‌गुण ही अचल है और यह तूफानों के द्वारा विचलित नहीं किया जा सकता। **—पाइथागोरस**

Virtue lies in discovering the best in your opponent and in appealing to it. **—Mabatma Gandhi**

अपने शत्रु में उत्तम बातों को खोजने और उसे अपनाने में ही सद्गुण है। **—महात्मा गांधी**

पुष्पों की सुगन्ध वायु के विपरीत नहीं जाती, किन्तु सद्गुणों की सुगन्ध सभी दिशाओं में व्याप्त हो जाती है। **—धम्मपद**

Even virtue is more fair when it appears in a beautiful person. **—Vergil**

सद्गुण में भी चार चाँद लग जाते हैं जब वह किसी सुन्दर व्यक्ति में होता है। **—वर्जिल**

Virtue maketh men on the earth famous, in their graves illustrious, in the heavens immortal. **—Chilo**

सद्गुण पृथ्वी पर मनुष्य को प्रसिद्धि प्रदान करता है, कब्र में प्रख्यात कर देता है और स्वर्ग में अमर बना देता है। **—चिलो**

The only reward of virtue is virtue. **—Emerson**

सद्गुण का पुरस्कार केवल सद्गुण ही है। **—एमर्सन**

Virtue is more persecuted by the wicked than encouraged by the good. **—Proverb**

अच्छे मनुष्यों द्वारा सद्गुण को जितना प्रोत्साहन नहीं मिला उससे कहीं अधिक वह दुष्टों द्वारा पीड़ित किया गया है। **—कहावत**

Honour is the reward of virtue. **—Cicero**

सम्मान सद्गुण का पुरस्कार है। **—सिसरो**

Virtue though momentarily shamed cannot be extinguished. **—Publius Syrus**

यद्यपि सद्गुण क्षण भर के लिए लज्जित किया जा सकता है, किन्तु उसे मिटाया नहीं जा सकता। **—पब्लियस साइरस**

सद्भावना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

इस संसार में सबके प्रति सद्भावना रखनी चाहिए। यह विचार रखना चाहिए कि सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी कल्याण की प्राप्ति करें और किसी को दुःख न हो। **—अज्ञात**

सन्मार्ग

सन्मार्ग पर चलते हुए अगर लोग बुरा कहें तो यह उससे अच्छा है कि कुमार्ग पर चलते हुए लोग तुम्हारी प्रशंसा करें। **—सादी**

जिस मार्ग पर तुम्हारे पूर्वज चले हों, उस सत्पथ पर चलो। उस सन्मार्ग के यात्री का कभी पतन नहीं होता। **—मनुस्मृति**

सफलता

सफलता की रेखाएँ उन मनुष्यों के कपाल में अंकित हैं—जिनके हृदय में नवीन आविष्कारों की आँधी हरहराया करती है, जो कर्मक्षेत्र में कमर कस कर खड़े होने की ताकत रखते हैं, जिनकी मानसिक शक्तियाँ तेजस्वी, अटल और प्रतापी होती हैं। **—अज्ञात**

Success is counted sweetest by those who never succeed.

—Emly Dickens

जिन्होंने जीवन में कभी सफलता नहीं पायी है उनके लिए सफलता का मूल्यांकन मधुरतम होता है। **—इमली डिकेन्स**

I believe that the true road to pre-eminent success in any line is to make yourself master of that line.

—Andrew Carnegie

मेरा विश्वास है कि किसी भी व्यवसाय में विशेष सफलता पाने का ठीक मार्ग उस व्यवसाय का अपने को पूर्ण ज्ञाता बना लेना है। **—एन्ड्रयू कारनेगी**

सफलता-प्राप्ति का साधन निर्भीकता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

सफलता पा लेने पर मनुष्य के सारे कलंक धुल जाते हैं।
—अमृतलाल नागर (अमृत और विष)

Success in life is a matter not so much of talent or opportunity as of concentration and perseverance. **—C. W. Wendte**

जीवन में सफलता पाना प्रतिभा और अवसर की अपेक्षा एकाग्रता और निरंतर प्रयास पर कहीं अधिक अवलम्बित है। —सी० डब्ल्यू० वेन्डेटी

Successful business consists in exclusive attention to the person speaking to you. **—C. W. Eliot**

जिस व्यक्ति से आप वार्तालाप कर रहे हैं उसमें पूर्ण ध्यान देने में ही सफल व्यवसाय (का गुर) निहित है। —इलियट

Success is the realization of the estimate you place upon yourself. **—Albert Hubbard**

आप अपना जो मूल्य आँकते हैं, सफलता उसी का साकार रूप है।
—एलबर्ट ह्यूबर्ड

किसी ध्येय की सफलता के लिए मनुष्य की पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है। —ब्राउन

Success treads on every right step. **—Emerson**

प्रत्येक ठीक कदम पर सफलता चलती है। —एमर्सन

Courage is the greatest of all elements of success.
—H. H. Brown

सफलता के लिए साहस सबसे बड़ी वस्तु है। —ब्राउन

As a rule the most successful man in life is the man who has the most information. **—Disraeli**

सिद्धान्ततः जीवन में वही सबसे अधिक सफल व्यक्ति है जो सबसे अधिक जानकार है। —डिजरायली

There is no secret about success. Success simply calls for hard work. **—H. C. Craik**

सफलता का कोई रहस्य नहीं है। वह केवल अति परिश्रम चाहती है।
—हेनरी सी० क्रेक

Successful minds work like a gimlet, to a single point.
—Bovee

सफल व्यक्ति बर्मी की तरह एक ही केन्द्र पर केन्द्रित रहते हैं। **—बोवी**

Success is the sole earthly judge of right and wrong.
—Hitler

इस पृथ्वी पर केवल सफलता ही अच्छे-बुरे का निर्णायक है। **—हिटलर**

The secret of success is constancy of purpose. **—Disraeli**

सफलता का रहस्य ध्येय की दृढ़ता में है। **—डिजरायली**

सफाई

Certainly this is a duty not a sin. Cleanliness is next to godliness. **—John Wesley**

वास्तव में यह पाप नहीं कर्तव्य है। स्वच्छता देवत्व के निकटतम है।
—जान वेजले

Cleanliness of body was ever esteemed to proceed from a due reverence to God, to society and to ourselves. **—Bacon**

शारीरिक स्वच्छता का सम्मान सदैव ईश्वर, समाज और अपने प्रति उचित सम्मान से हुआ है। **—बेकन**

न्हाए धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय॥ **—कबीर**

सबल

दुर्बल मनुष्य, जो सबल और शक्तिशाली पुरुषों का अपमान करता है वह मानो यमराज को अपने पास आने का इशारा करता है। **—संत तिरुवल्लुवर**

जलती हुई आग में पड़े हुए लोग चांहे भले ही बच जायँ, मगर उन लोगों

की रक्षा का कोई उपाय नहीं है जो शक्तिशाली लोगों के प्रति दुर्व्यवहार करते हैं। **—अज्ञात**

सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय ॥ **—वृन्द**

सभा

Society is no comfort to one not sociable. **—Shakespeare**

जो व्यक्ति मिलनसार नहीं उसके लिए सभा (समाज) सुखदायक नहीं है। **—शेक्सपियर**

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यं न तद्यच्छलमभ्युपैति ॥

वह सभा सभा नहीं जहाँ वृद्ध जन न हों, वे वृद्ध वृद्ध नहीं जो धर्म की बात न कहते हों, वह धर्म धर्म नहीं जिसमें सत्य न हो और वह सत्य सत्य नहीं जो छल-कपट की ओर प्रेरित करे। **—हितोपदेश**

सभासद

श्रुत्यध्ययनसम्पन्ना धर्मज्ञाः सत्यवादिनः।
राज्ञा सभासदः कार्या रिपौ मित्रे च ये समाः ॥ **—अज्ञात**

वेद के अध्ययन से सम्पन्न, धर्म को जानने वाले, सत्य बोलने वाले तथा मित्र और शत्रु में सम भाव रखने वाले, इस तरह के सभासद राजा को रखना चाहिए।

सभ्यता

सभ्यता एकान्तिक वस्तु नहीं है। उसका अर्थ हर एक जगह एक ही नहीं होता। पश्चिम की सभ्यता पूर्व की सभ्यता हो सकती है। **—महात्मा गांधी**

Nations like individuals live or die, but civilization cannot perish. **—Mazzini**

व्यक्ति की भाँति राष्ट्र भी जीवित रहते हैं और मरते हैं, किन्तु सभ्यता का कभी पतन नहीं होता। **—मेजिनी**

The true test of civilization is not the census nor the size of cities nor the crops, but the kind of man that country turns out. **—Emerson**

सभ्यता की वास्तविक परीक्षा देश की जनगणना या नगरों की रूपरेखा अथवा फसल से नहीं होती, वरन् किस प्रकार के व्यक्ति देश उत्पन्न करता है इससे होती है। **—एमर्सन**

Increased means and increased leisure are the two civilizers of man. **—Disraeli**

अधिक साधन और अधिक अवकाश मानव को सभ्य बनाने वाले हैं।
—डिजरायली

A sufficient measure of civilization is the influence of good women. **—Emerson**

सभ्यता का सही मूल्यांकन अच्छी नारियों का उस पर प्रभाव है। **—एमर्सन**

सभ्यता क्या है? वह तो पूरी राक्षसी है। जो सभ्यता गरीबों के मुंह का कौर, जन-साधारण का जीवन, मुट्ठी में करके उन्हें मरने को लाचार बना दे वह राक्षसी नहीं तो और क्या कहलायेगी? **—शरत्चन्द्र (जागरण)**

समदर्शी

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥
—भगवान श्रीकृष्ण (गीता ६—२६)

योग-युक्त आत्मा सबमें समभाव से देखने वाला योगी अपने को सब प्राणियों में और सब प्राणियों को अपने में देखता है।

सम-दृष्टि

घरों में पानी के पाइप लगे हैं, क्या वे बारिश की बूंद की योग्यता रखते हैं। बारिश की बूंद छोटी भले ही हो, पर वह सब जगह मिलती है, इसलिए उसकी योग्यता महान् है। **—आचार्य विनोबा**

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता ५-१८)

ज्ञानी लोग विद्वान् और विनयी ब्राह्मण में, गाय में, हाथी और कुत्ते के खाने वाले चाण्डाल में समदृष्टि रखते हैं ।

समदृष्टी तब जानिए, सीतल समता होय ।
सब जीवन की आत्मा, लखै एक सी सोय ।। **—कबीर**

संसार के दुखियों का दुःख दूर करने की अभिलाषा जिसमें जाग उठती है, उसी की सम-दृष्टि होती है । **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

समझ (दे० 'बुद्धि')

God has placed no limit to intellect. **—Bacon**

ईश्वर ने समझ की कोई सीमा नहीं रखी है । **—बेकन**

Intellect is brain force. **—Schiller**

समझ मस्तिष्क की शक्ति है । **—शिलर**

Intellect—the star light of the brain. **—N. P. Wills**

समझ मस्तिष्क का प्रकाश है । **—विल्स**

The human intellect delights in inventing specious arguments in order to support injustice itself. **—Mahatma Gandhi**

अन्याय का समर्थन करने के लिए मानवीय बुद्धि लम्बी-चौड़ी दलील खोज कर प्रसन्न होती है । **—महात्मा गांधी**

समझदारी

संघर्ष और उथल-पुथल के बिना जीवन बिलकुल नीरस बन कर रह जाता है । इसलिए जीवन में आने वाली विषमताओं को सह लेना ही समझदारी है ।

—संत विनोबा

समता

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योगउच्यते ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता २-४८)

हे धनञ्जय ! आसक्ति त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर तू कर्तव्य कर्मों को कर । समता का ही नाम योग है ।

समता ही सिद्धि की कसौटी है । **—अज्ञात**

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता १२-१८)

जो शत्रु-मित्र में और मान-अपमान में सम है, तथा सरदी-गरमी और सुख-दुःखादि द्वन्द्वों में सम है और आसक्ति से रहित है वह भक्तिमान् पुरुष मुझको प्रिय है ।

पूर्णतया समता आये बिना कोई भी सिद्ध योगी, सिद्ध भक्त या सिद्ध ज्ञानी नहीं समझा जा सकता । **—अज्ञात**

समय (दे० 'वक्त')

समय बदलने पर लोगों की आँखें भी बदल जाती हैं । **—जयशंकर प्रसाद**

का बरषा जब कृषी सुखाने । समय चूकि पुनि का पछिताने ।। **—तुलसी**

समय शुभ जीवन और लक्ष्मी का अक्षय भंडार है । **—अज्ञात**

समय फिरे रिपु होंहि पिरीते । **—तुलसी (मानस, अयोध्या०)**

समय की पाबन्दी सुशीलता का चिह्न है । **—सम्राट् लुई**

I wasted time and now doth time waste me.**—Shakespeare**

मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है ।

—शेक्सपियर

Time is the herald of truth. **—Cicero**

समय सत्य का पथ-प्रदर्शक है । **—सिसरो**

Time is the wealth of change but the clock in its parody makes it mere change and no wealth. **—R. N. Tagore**

समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नहीं। **—रवीन्द्र**

A stitch in time saves nine. **—Proverb**

समय पर थोड़ा-सा प्रयत्न भी आगे की बहुत-सी परेशानियों को बचाता है। **—कहावत**

As every thread of gold is valuable so is every moment of time. **—J. Mason**

सोने का प्रत्येक धागा मूल्यवान् होता है इसी प्रकार समय का प्रत्येक क्षण। **—मेसन**

Time and thinking tame the strongest grief. **—Proverb**

समय और विचार महान् शोक को भी निस्तेज कर देता है। **—कहावत**

(बीता हुआ) समय और कहे हुए शब्द कभी वापस नहीं बुलाये जा सकते। **—कहावत**

Time is money. **—Proverb**

समय ही धन है। **—कहावत**

To choose time is to save time. **—Bacon**

समय का उचित उपयोग करना समय को बचाना है। **—बेकन**

किसी भी विचारशील व्यक्ति के लिए जीवन की क्षणभंगुरता का अन्तिम अर्थ यह नहीं है कि वह उन क्षणों को बर्बाद करे। **—रस्किन**

समय सब से महान् है, परमात्मा से भी। भक्ति आदि साधनों से परमात्मा को तो बुलाया जा सकता है, किन्तु कोटि उपाय करने पर भी बीता हुआ समय नहीं बुलाया जा सकता। **—अज्ञात**

समरथ

समरथ कहँ नहिं दोष गुसाईं। रवि पावक सुर सरि की नाईं॥ **—तुलसी**

समस्या

ऐसी एक भी समस्या नहीं जिसे गीता हल न कर सके। —महात्मा गांधी

सम्राट

अहंकार के अभिशाप ही का नाम तो सम्राट है।

—डा० रामकुमार वर्मा (रात का रहस्य)

समाचार

News are as welcome as the morning air. —**Chapman**

समाचारों का प्रातःकालीन वायु के सदृश स्वागत होता है। —**चैपमैन**

समाचार-पत्र

I fear three hostile newspapers more than hundred thousand bayonets. —**Napoleon**

मैं लाखों संगीनों की अपेक्षा तीन विरोधी समाचार पत्रों से अधिक डरता हूँ। —**नेपोलियन**

Newspapers are the world's mirror. —**James Ellis**

समाचार पत्र संसार के दर्पण हैं। —**जेम्स एलिस**

In these times we fight for ideas and newspapers are our fortresses. —**Heine**

आजकल हम विचारों के लिए संघर्ष करते हैं और समाचार-पत्र हमारी क़िलेबन्दियाँ हैं। —**हेन**

Newspapers are the school masters of common people.

—**H.N. Beecher**

समाचार-पत्र साधारण जनता के शिक्षक हैं। —**बीचर**

The newspaper press is the people's university —**J. Parton**

समाचार-पत्र मुद्रणालय जनता के विश्वविद्यालय हैं। —**जे० पार्टन**

समाज

अगर हममें शक्कर का गुण है तो हम समाज में ऐसे विलीन हो जायेंगे जैसे समुद्र में नदी या सिन्धु में बिन्दु। सिन्धु में विलीन होने पर बिन्दु स्वयं ही सिन्धु हो जाता है, बिन्दु नहीं रहता। **—आचार्य विनोबा**

वही समाज सदा सुखी रह सकता है जिसने नैतिक गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् कर लिया है। **—रस्किन (विजय पथ)**

Society exists for the benefit of its members; not the members for the benefit of the society. **—Herbert Spencer**

समाज सदस्यों के लाभ के लिए होता है न कि सदस्य समाज के लाभ के लिए। **—हर्बर्ट स्पेन्सर**

बहवो यत्र नेतारः सर्वे पंडित-मानिनः।
सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति तद्वृन्दमवसीदति॥ **—अज्ञात**

जहाँ बहुत से नेता हैं, सभी अपने को पंडित मानने वाले अहंकारी हैं और सब अपनी बड़ाई चाहते हैं वह समाज नष्ट हो जाता है।

Society is composed of two great classes; those who have more dinners than appetite and those who have more appetite than dinners. **—Chamfort**

समाज में दो बड़ी श्रेणियाँ होती हैं, एक जिनके पास भूख से अधिक भोजन है और दूसरी वह जिनके पास भोजन से अधिक भूख है। **—कैम्फर्ट**

अच्छा समाज शरीर जैसा है। समाज में जो दुःखी हिस्सा है उनकी ओर सबको ध्यान देना उचित है। **—आचार्य विनोबा**

The most pleasant society is that in which an attitude of cheerful respect is maintained by its members towards one another. **—Goethe**

सबसे अधिक सुखी समाज वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति परस्पर हार्दिक सम्मान की भावना रखता है। **—गेटे**

तुम समाज के साथ ही ऊपर उठ सकते हो और समाज के साथ ही तुम्हें

नीचे गिरना होगा। यह तो नितान्त असम्भव है कि कोई व्यक्ति अपूर्ण समाज में पूर्ण बन सके। क्या हाथ अपने आपको शरीर से पृथक् रख कर बलशाली बन सकता है ? कदापि नहीं। **—स्वामी रामतीर्थ**

समाज की अनुचित मर्यादा को तोड़ना ही धर्म है। **—सेठ गोविन्ददास**

समाजवाद

शोषणमुक्त समाज की रचना करके वर्तमान समाज की प्रचलित दासता, विषमता और सहिष्णुता को सदा के लिए दूर करके समाजवाद, स्वतन्त्रता, समता और भ्रातृत्व की वास्तविक स्थापना करना चाहता है। **—आचार्य नरेन्द्रदेव**

दो ही स्थानों पर समाजवाद काम करता है। एक तो मधुमक्खियों के छत्ते में और दूसरा चीटियों के बिल में। **—अज्ञात**

समाजवाद मनुष्य को विवशता के क्षेत्र से हटा कर उसे स्वाधीनता के राज्य में ले जाना चाहता है। **—कार्ल मार्क्स**

धर्म के बोझ तले मानव दबा पड़ा है। समाजवाद धर्म की सच्ची मीमांसा कर धर्म की कैद से मनुष्य को नजात दिलाता है और इस तरह मानवता के गौरव को बढ़ाता है। **—आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीय और समाजवाद से)**

समाधि

खुली आंखों और खुले कानों से भी समाधि लगे वही समाधि सच्ची समाधि है। गोपियों की समाधि चेतन समाधि है। वे कान बंद करके या आँख मूंद के नहीं बैठतीं। वे तो खुले कान और खुली आँखों ही कृष्ण के ध्यान में तन्मय हो गयीं। **—रामचन्द्र डोंगरे**

समाधि में ही साक्षात्कार होता है। समाधि के एक क्षण की तुलना में पठन-पाठन और मनन का सहस्र वर्ष भी नहीं ठहरता। **—डा० सम्पूर्णानन्द**

देहाभिमाने गलिते ज्ञानेन परमात्मनः।
यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र समाधयः। **—चाणक्य**

परब्रह्म के ज्ञान से देह के अभिमान के नष्ट होने पर जहाँ-जहाँ मन जाता है तहाँ-तहाँ समाधि है।

देश-प्रेम के दीवानों की समाधियों में राग है—एकता, समानता और राष्ट्रीयता का। इन समाधियों में से एक ही सी ध्वनि उठती है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। बादलों के बीच दामिनी चमकती है केवल उनके इसी नीरवता से उठते हुए उद्गार सुनने को बूंदें गिरती हैं, उनके चरणों को मोतियों से धोकर सागर में ज्वार उठा देने को। **—बलभद्र प्रसाद गुप्त**

समाधीयते चित्तम् अस्मिन् इति समाधिः। **—शंकराचार्य**

जिसमें चित्त का समाधान किया जाये वह समाधि है।

तन की अचलता और मन की निश्चलता को समाधि कहते हैं। बुद्धि निश्चल अर्थात् अविवेक रहित और अचल अर्थात् विकल्प-रहित होकर जब आत्मा में टिकती है तो समाधि लग जाती है। **—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)**

समालोचक

जिसका हृदय सहानुभूति के भाव से परिपूर्ण है उसे ही आलोचना करने का अधिकार है। **—लिंकन**

Critics are sentinels in the grand army of letters, stationed at the corners of newspapers and reviews, to challenge every new author. **—Longfellow**

समालोचक साहित्य के भव्य भवन के प्रहरी होते हैं जो समाचारपत्रों तथा मासिक पत्रिकाओं के स्तंभों में नियुक्त होते हैं जो प्रवेश चाहने वाले प्रत्येक नये लेखक की जाँच-पड़ताल करते हैं। **—लांगफेलो**

Critics are the men who have failed in literature and art. **–Disraeli**

समालोचक वे व्यक्ति हैं जो साहित्य और कला में असफल रहे हैं। **—डिजरायली**

The severest critics are always those who have either never attempted, or who have failed in original composition. **–Hazlitt**

सबसे कटु आलोचक सदैव वे व्यक्ति रहे हैं, जिन्होंने कभी लिखने का प्रयास नहीं किया अथवा वे व्यक्ति जो मौलिक लेख लिखने में असफल रहे हैं। **—हैजलिट**

It is much easier to be critical than to be correct.

—Disraeli

ठीक-ठीक रचना करने की अपेक्षा समालोचक होना ज्यादा आसान है।

—डिजरायली

समालोचना

Silence is sometimes the severest criticism.

—Charles Buxton

कभी-कभी मौन रह जाना सबसे कटु आलोचना है। **—चार्ल्स बक्सटन**

अपने कर्त्तव्यपालन में हमें जनता की राय से स्वतंत्र रहना चाहिए।

—महात्मा गांधी

Neither praise or blame is the object of true criticism—Justly to discriminate, firmly to establish, wisely to prescribe, and honestly to award—these are the true aims and duties of criticism. **—Simms**

वास्तविक समालोचना का ध्येय प्रशंसा या निंदा नहीं है, ठीक-ठीक मूल्यांकन करना, दृढ़ता से साबित करना, बुद्धिमानी से स्वीकृत करना और ईमानदारी से पुरस्कृत करना—यही समालोचना का ध्येय और उचित कर्त्तव्य है। **—सिम्स**

The most noble criticism is that in which the critic is not the antagonist so much as the rival of the author.

—Disraeli

सबसे अच्छी समालोचना वह है जिसमें समालोचक लेखक का बैरी नहीं वरन् प्रतिद्वन्द्वी हो। **—डिजरायली**

समूह

The multitude is always in the wrong. **—Dillon**

समूह सदैव गलती पर होता है। **—डिलन**

It has been very truly said that the mob has many heads, but no brains. **—Rivarol**

यह बहुत ठीक ही कहा गया है कि समूह के अनेक सिर होते हैं लेकिन मस्तिष्क एक भी नहीं होता । —**रीवारोल**

सम्बन्धी

The worst hatred is that of relatives. —**Tacitus**

सबसे निकृष्ट घृणा अपने सम्बन्धी की होती है । —**टेसीटस**

Dreadful, indeed are the feuds of relatives, and difficult the reconciliation. —**Euripides**

सम्बन्धियों का झगड़ा वास्तव में बड़ा भयानक होता है और उनमें सन्धि कराना बड़ा कठिन कार्य है । —**यूरोपिडीज**

सम्मति

Good counsel has no price. —**Mazzine**

अच्छी सम्मति अमूल्य होती है । —**मैजिनी**

अच्छी सम्मति स्वीकार करना अपनी योग्यता बढ़ाना ही है । —**गेटे**

Give every man thine ear, but few thy voice.
—**Shakespeare**

सब की बात ध्यान से सुनो परन्तु अपनी सम्मति केवल थोड़े ही मनुष्यों को दो । —**शेक्सपियर**

Never give advice unless asked. —**German Proverb**

बिना पूछे सम्मति मत दो । —**जर्मन कहावत**

Never advise any one to go to war or to marry.
—**Spanish Proverb**

युद्ध में जाने की या विवाह करने की सलाह किसी को भी मत दो ।
—**स्पेनिश कहावत**

Many receive advice, only the wise profit by it. —**Syrus**

सम्मति बहुत से लोग लेते हैं, पर केवल बुद्धिमान् ही उससे लाभ उठाते हैं।
—साइरस

सम्पत्ति

सम्पत्ति नहीं सम्पत्ति, दुःख है नहीं दुःख का सहना।
हरि-सुमरण है सम्पत्ति, दुःख है हरि को भूले रहना॥
—दीनानाथ दिनेश (गीता ज्ञान)

सम्मान

प्रख्यात मृतक पुरुषों का सर्वश्रेष्ठ सम्मान हम उनका अनुकरण करके ही करते हैं। —महात्मा गांधी

Honour lies in honest toil. **—Grover Cleveland**

सम्मान सच्चे परिश्रम में है। —ग्रो० क्लीवलैन्ड

The way to gain a good reputation, is to endeavour to be what you desire to appear. **—Socrates**

अच्छा सम्मान पाने का मार्ग यह है कि जो तुम प्रतीत होने की कामना करते हो वैसा बनने का प्रयास करो। —सुकरात

Better to die ten thousand deaths than wound my honour. **—Addison**

मैं अपने सम्मान पर आघात पहुँचने की अपेक्षा दस सहस्र बार मरना अधिक अच्छा समझता हूँ। —एडीसन

Life every man holds dear but the brave man holds honour far more precious-dear than life. **—Shakespeare**

जीवन हर मनुष्य को प्रिय है। किन्तु शूरवीर को अपना सम्मान, जीवन से भी अधिक मूल्यवान् और प्रिय है। —शेक्सपियर

इस दुनिया में सम्मान वही पाता है जो यथाशक्ति दान देकर दुःखियों का दुःख हरता है। —अज्ञात

सम्मान की इच्छा करने वाले को सम्मान नहीं मिलता, वह मिलता उसे ही है जो उसकी चिन्ता बिना किये ही अपने कर्त्तव्य-पथ पर डटा रहता है। —अज्ञात

सरकार

सरकार का कर्त्तव्य सबकी पूरी रक्षा करना है। **—विनोबा**

जिस सरकार में औरतों की इज्जत की रखवाली नहीं होती वह बहुत दिनों तक नहीं टिकती। **—अज्ञात**

The aggregate happiness of society which is best promoted by the practice of a virtuous policy, is or ought to be, the end of all Government. **—Washington**

सभी सरकारों का ध्येय समाज का सामूहिक सुख है, या होना चाहिए और इसकी पूर्ति अच्छी नीति के परिपालन से अच्छी तरह की जा सकती है। **—वाशिंगटन**

That is the most perfect Government under which a wrong to the humblest is an affront to all. **—Solon**

वही पूर्ण (आदर्श) सरकार है जिसमें एक तुच्छ व्यक्ति के साथ किया गया अन्याय सभी का अपमान समझा जाता है। **—सोलन**

सरस

प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तरात्मा।

सरस हृदय जन बहुधा मृदुल स्वभाव के होते हैं। **—कालिदास (मेघदूत)**

सरस्वती

सरस्वती से श्रेष्ठतर कोई वैद्य नहीं और उसकी साधना से बढ़ कर कोई दवा नहीं। **—जापान के शाही कलाभवन के तोरणद्वार पर अंकित**

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं, विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति, क्षयमायाति संचयात्॥

हे सरस्वती देवी, विद्यारूपी यह आपका अपूर्व कोष है जो व्यय करने से तो बढ़ता है और संचय करने से नष्ट होता है। **—अज्ञात**

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते। **—ऋग्वेद**

देव-पद के अभिलाषी सरस्वती का आवाहन करते हैं।

सर्जन

He is a good surgeon who can amputate a limb, but he is a better surgeon who can save a limb. **—Sir A. Cooper**

वह अच्छा सर्जन है जो किसी अंग को काट सकता है परन्तु वह सर्जन उससे भी अच्छा है जो उस अंग को बचा सकता है। **—सर ए० कूपर**

सर्वश्रेष्ठ

सर्वश्रेष्ठ केवल परमात्मा है। **—अज्ञात**

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है। **—मीरा**

The noblest mind the best contentment has. **—H. Spencer**

सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है जिसे पूर्ण संतोष है। **—एच० स्पेन्सर**

ससुराल

असारे खलु संसारे सारं श्वशुरमन्दिरम्।
हरो हिमालये शेते हरिः शेते महोदधौ॥ **—अज्ञात**

इस असार संसार में श्वशुर का मन्दिर (ससुराल) सार है देखो, महादेव जी हिमालय में रहते हैं और श्री हरि क्षीरसागर में शयन करते हैं। दोनों अपनी ससुराल में रहते हैं।

सह-अस्तित्व

The alternative to co-existence is co-destruction.
—Jawahar Lal Nehru

सह-अस्तित्व का विकल्प पूर्ण विनाश है। **—जवाहर लाल नेहरू**

The logical consequence of co-existence is international co-operation. **—Indira Gandhi**

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग ही सह-अस्तित्व का स्वाभाविक परिणाम है।
—भारतरत्न इन्दिरा गाँधी

सहनशीलता

मनुष्य कटु उक्तियों को किसी प्रकार सहन कर लेता है; परन्तु जब उसके ग्रन्थों और धर्मनेताओं पर आक्रमण होता है तब उसके सहनशीलता की प्रायः समाप्ति हो जाती है। —हरिऔध

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह।
धरती ही पर परत सब, शीत, घाम अरु मेह॥ —रहीम

सहानुभूति (वें० 'समवेदना', 'हमदर्दी')

किसी का रुपया वापस दिया जा सकता है परन्तु सहानुभूति के दो शब्द वह ऋण हैं जिसे चुकाना मनुष्य की शक्ति के बाहर है। —सुदर्शन

संकट में मनुष्य को कोई हमदर्दी दिखाता है तो चाहे बाह्य संकट से निवृत्ति न भी हो तो भी उसके दिल को तसल्ली हो जाती है। —आचार्य विनोबा

सहानुभूति या दया पाने की क्षुधा प्रत्येक मानव-हृदय में गुप्त रूप में किन्तु मजबूती के साथ छिपी रहती है। —अज्ञात

दुःखी मनुष्य जब स्नेह और सहानुभूति का शब्द सुनता है, तब आँसुओं की झड़ी लग जाती है। —सुदर्शन

सहानुभूति और संवेदना दुःखी हृदय को और भी व्याकुल बना देती है। —अज्ञात

प्रेम के उपरान्त सहानुभूति मानव-हृदय की पवित्रतम भावना है। —बर्क

सहानुभूति सहृदयता की निशानी है। —अज्ञात

सहायता

किसी की कुछ सहायता करना, उधार देने की एक वैज्ञानिक पद्धति है। —अज्ञात

Light is the task where many share the toil. —Homer

वह काम हल्का है, जिसमें बहुत-से लोग हाथ बँटाते हैं। —होमर

Help thyself and God will help thee. —H. Spencer

अपनी सहायता स्वयं करो तो ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा। —एच० स्पेन्सर

जब हम अपने पैर की धूल से भी अधिक अपने को नम्र समझते हैं तो ईश्वर हमारी सहायता करता है। केवल दुर्बल और असहायों पर ही दैवी कृपा होती है।
—महात्मा गांधी

ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। **—कहावत**

सहारा

तिनके का सहारा पाने वाले की आशाएँ बहुत लम्बी हो उठती हैं। **—अज्ञात**

When a person is down in the world, an ounce of help is better than a pound of preaching. **—Bulwer**

इस संसार में किसी दुःखी व्यक्ति के लिए थोड़ी-सी भी सहायता ढेरों उपदेश से कहीं अधिक अच्छी है। **—बुलवर**

सान्त्वना

दुखियारों को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नहीं होते। **—प्रेमचन्द**

The dew of compassion is a tear. **—Byron**

अश्रु सान्त्वना का ओसकण है। **—बायरन**

सात्त्विक

क्या तुम्हें मालूम है कि सात्त्विक प्रकृति का मनुष्य कैसे ध्यान करता है? वह आधी रात को अपने बिस्तर पर मसहरी के अन्दर ध्यान करता है, ताकि और लोग उसे न देख सकें। **—रामकृष्ण परमहंस**

साथी

तेरा साथी अगर जल्दी करता है तो वह तेरा साथी नहीं है। **—सादी**

जब तुम्हें अवसर मिले तो अपने से अधिक अच्छों का साथ करो; यही ठीक और वास्तविक अभियान है। **—चेस्टरफील्ड**

When one associates with the wise it is but one step from companionship to slavery. **—Quarles**

जब कोई व्यक्ति किसी बुद्धिमान् का साथ करता है तो यह मित्रता से दासता की ओर केवल एक कदम है। **—क्वार्ल्स**

No man can be prudent of his time, who is not prudent in the choice of his company. **—Jeremy Taylor**

जो व्यक्ति अपने साथियों के चुनाव में विवेकी नहीं है वह अपने समय का सदुपयोग नहीं कर सकता। **—जर्मी टेलर**

जो अन्त तक साथ निभाये ऐसा साथी पत्नी के सिवा दूसरा नहीं। **—प्रेमचन्द**

साधक

नाव जल में रहे तो कुछ हर्ज नहीं परन्तु नाव में जल नहीं जाना चाहिए। इसी प्रकार साधक चाहे संसार में रहे परन्तु साधक के मन में संसार नहीं रहना चाहिए। **—रामकृष्ण परमहंस**

साधक के लिए सबसे बड़ा प्रतिबन्ध कीर्ति की चाह है। **—अज्ञात**

साधन

अभ्यास की दृष्टि रही तो साधन काम आते हैं। अभ्यास की दृष्टि न रही तो उत्तम साधन भी निकम्मे हो जाते हैं। **—विनोबा**

पाप कर्म से दूर रहना, निरंतर पुण्य में तत्पर रहना, अच्छी मनोवृत्ति रखना और शुभ आचरण करना—यह सबसे बड़ा कल्याण का साधन है।

—वेदव्यास (महा०, शा०)

उत्तम साध्य के लिए उत्तम साधन भी होना चाहिए। सुगन्ध की प्राप्ति चन्दनादि सुगन्धित द्रव्यों से ही सम्भव है। मिट्टी का तेल जला कर हवन की सुगन्ध नहीं पैदा की जा सकती। **—अज्ञात**

साधना

साधना से आत्म-बल मिलता है। साधना से उस सत्य की झाँकी मिलती है जो ज्ञान की पराकाष्ठा है। **—दीनानाथ दिनेश** (गीता के सप्तस्वर)

करने से अभ्यास, कठिनता
दूर सभी हो जाती।

चाहे जितनी जटिल कला हो
शीघ्र समझ में आती ।।
सोये प्राण जाग उठते हैं
जड़ चेतन बन जाते ।
बुद्धिहीन भी साध साधना
बुद्धिमान — पद पाते ।।

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (गुरु दक्षिणा)

साधना से महाभाव, विशुद्ध बुद्धि, सात्विक बल और दैवी प्रेरणा पाकर मनुष्य दुखों और बाधाओं को पार कर जाता है। दैवी दया का अनुभव साधना से होता है। **—दीनानाथ दिनेश (गीता के सप्तस्वर)**

रुकना न तुम, जब तक
तुम्हारे श्वास का लवलेश है।
हिम्मत न हारो ऐ हृदय
यह साधना का देश है ।।

—शिवमंगल सिंह 'सुमन' (प्रलय-सृजन)

साधु

कष्ट पड़ने पर भी साधु पुरुष मलिन नहीं होते, जैसे सोने को ज्यों-ज्यों तपाया जाय त्यों-त्यों चमकता है। **—अज्ञात**

कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि ।
संगत बुरी असाधु की, आठो पहर उपाधि ।। **—कबीर**

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः ।
कालेन फलते तीर्थं सद्यः साधुसमागमः ।। **—चाणक्य**

साधुओं का दर्शन ही पुण्य है इस कारण कि साधु तीर्थरूप हैं, तीर्थ समय से फल देता है, पर साधुओं की संगति शीघ्र ही फल देती है।

सब बन तौ चंदन नहीं, सूरा का दल नाहिं ।
सब समुद्र मोती नहीं, यों साधू जग मांहि ।। **—कबीर**

सिंहन के लँहड़े नहीं, हंसन की नहिं पांत ।
लालन की नहिं बोरियाँ, साधु न चलें जमात ।। **—कबीर**

मनसो यत्सुखं नित्यं स्वर्गोऽपि नरकोपमः ।
तस्मात्परसुखेनैव साधवः सुखिनः सदा ॥ **—पद्म पुराण**

जहाँ सदा अपने मन को ही सुख मिलता है, वह स्वर्ग भी नरक के समान है । अतः साधु पुरुष सदा दूसरों के सुख से ही सुखी होते हैं ।

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥ **—चाणक्य**

प्रत्येक पर्वत पर माणिक्य नहीं होता और प्रत्येक हाथी में मुक्ता नहीं मिलती, सर्वत्र साधु नहीं मिलते और सब वनों में चन्दन नहीं होता ।

साध्य

साध्य के लिए साधन होते हैं, साधन के लिए साध्य नहीं । **—विनोबा**

साध्य कितने भी पवित्र क्यों न हों, साधन की पवित्रता के बिना उनकी उपलब्धि सम्भव नहीं । **—कमलापति त्रिपाठी (बापू और मानवता)**

साम्राज्य

साम्राज्य में एक हठ, घमण्ड और अकड़ होती है जिस पर वह सैकड़ों गुलामों का कत्लेआम कर सकता है । **—सुभाषचन्द्र बोस**

सल्तनत किसी आदमी की जायदाद नहीं, बल्कि एक ऐसा दरख्त है जिसकी हर शाख और पत्ती एक-सा खूराक पाती है । **—प्रेमचन्द**

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद की वृकोदर-वृत्ति की इमारत हिंसा के ही पाये पर रची जा सकती है । **—पतंजलि**

सावधान

The cautious seldom err. **—Confucius**

सावधान मनुष्य क्वचित् ही गलती करते हैं । **—कन्फ्यूशियस**

दूसरे की मुसीबत से सावधान रहो जिससे कि दूसरे लोग तुमसे सबक न ले सकें । **—सादी**

When clouds are seen wise men put on their cloaks

—Shakespeare

जब बादल दिखाई पड़ते हैं तो बुद्धिमान मनुष्य जामा पहन लेते हैं ।

—शेक्सपियर

It is well to learn caution by the misfortune of others.

—Publius Syrus

दूसरे की मुसीबत से सावधान होना अच्छा है । **—पब्लियस साइरस**

Trust not him that hath once broken faith. He, who betrays thee once, will betray thee again. **—Shakespeare**

उस पर विश्वास नहीं करो जिसने तुम्हें एक बार धोखा दिया है । जिसने तुम्हें एक बार धोखा दिया वह तुम्हें फिर धोखा देगा । **—शेक्सपियर**

सावधानी

Caution is the eldest child of wisdom. **—Victor Hugo**

सावधानी, बुद्धिमानी की सबसे बड़ी सन्तान है । **—विक्टर ह्यूगो**

Of all forms of caution, caution in love is perhaps not fatal to true happiness. **—B. Russell**

सभी तरह की सावधानी में, प्रेम में सावधानी, कदाचित सच्चे सुख के लिए घातक नहीं है । **—बी० रसल**

सार

नारायण या जगत में, यह दो वस्तु सार ।
सबसों मीठो बोलिबो, करिबो पर उपकार ।।

—नारायण स्वामी

साहस

सच्चे साहस में न तो अधीरता है और न जल्दबाजी ।

—माताजी (अरविन्दाश्रम)

To see what is right, and not to do it is want of courage.
—Confucius

उचित को जानना और उस पर अमल न करना साहस का अभाव है ।
—कन्फ्यूशस

Courage is the first of human qualities because it is the quality which guarantees all the others. **—Churchill**

मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है क्योंकि यह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है । —चर्चिल

The greatest test of courage on the earth is to bear defeat without losing heart. **—R. G. Ingersoll**

बिना निराश हुए पराजय को सह लेना पृथ्वी पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है । —आर० जी० इन्गरसोल

अपने दोषों को स्वीकार करना एक उत्कृष्टतम साहस है ।
—माताजी (अरविन्दाश्रम)

A great deal of talent is lost to the world for want of a little courage. Everyday sends to their grave obscure men whose timidity prevented them from making a first effort.
—Sydney Smith

थोड़े से साहस के अभाव में काफी प्रतिभा संसार से खो जाती है । प्रत्येक दिन ऐसे अपरिचित व्यक्तियों को कब्र में भेजता है जिनकी कायरता ने उनको प्रथम प्रयास से वंचित रखा है । —सिडनी स्मिथ

Courage consists not in hazarding without fear but being resolutely minded in a just cause. **—Plutarch**

बिना भय के, अपने को संकट में डालना साहस नहीं है वरन् उचित ध्येय में दृढ़-निश्चयी होना है । —प्लूटार्क

Courage in danger is half the battle won. **—Plautus**

संकट में साहस का होना आधी सफलता प्राप्त कर लेना है । —प्लाउटस

A man of courage is also full of faith. **—Cicero**

साहसी व्यक्ति विश्वासी भी होता है। —**सिसरो**

बिना साहस के तुम किसी और गुण को आचरण में नहीं ला सकते।
—**भारतरत्न इन्दिरा गाँधी**

साहसी

साहसी लोग इस बात की खोज नहीं करते कि शत्रु कितने हैं, परन्तु वे तो यह खोजते हैं कि वे कहाँ हैं। —**अज्ञात**

No man can be brave who considers pain the greatest evil of life. —**Cicero**

कोई भी ऐसा व्यक्ति साहसी नहीं हो सकता जो पीड़ा को जीवन की सबसे बड़ी बुराई समझता है। —**सिसरो**

साहित्य

ज्ञान-राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।—**महावीर प्रसाद द्विवेदी**

सबसे जीवित रचना वह है जिसे पढ़ने से प्रतीत हो कि लेखक ने अन्तर से सब कुछ फल की तरह प्रस्फुटित किया है। —**शरत्चन्द्र (पत्रावली)**

जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शान्ति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य-प्रेम न जाग्रत हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।
—**प्रेमचन्द**

साहित्य के अन्तर्गत वह सारा वाङ्मय लिया जा सकता है जिसमें अर्थ-बोध के अतिरिक्त भावोन्मेष अथवा चमत्कारपूर्ण अनुरंजन हो तथा जिसमें ऐसे वाङ्मय की विचारात्मक समीक्षा या व्याख्या हो। —**रामचन्द्र शुक्ल**

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है॥ —**अज्ञात**

सच्चे साहित्य का निर्माण तो एकान्त-चिन्तन और एकान्त-साधना में होता है। —**अनंत गोपाल शेवड़े**

The decline of literature indicates the decline of a nation ; the two keep pace in their downward tendency. **—Goethe**

साहित्य का पतन राष्ट्र के पतन का द्योतक है ; पतन की ओर वे परस्पर एक दूसरे का साथ देते हैं। **—गेटे**

प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है। **—रामचन्द्र शुक्ल**

साहित्य की सरिता जब जनता के हर्ष विषाद से तरंगित होती है तभी गंगा के तुल्य उसमें सब अवगाहन करते हैं, अन्यथा वह कर्मनाशा के तुल्य त्याज्य है। **—अज्ञात**

साहित्य-संगीत-कला-विहीनः साक्षात्पशुः पुच्छ-विषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद् भागधेयं परमं पशूनाम्॥
—भर्तृहरि (नीति)

साहित्य, संगीत और कला से रहित पुरुष बिना पूँछ और सींग के साक्षात् पशु ही है। वह बिना तृण खाये हुए जो जीता है, यह पशुओं का परम सौभाग्य है।

समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य का नाश कभी नहीं हो सकता। **—अज्ञात**

साहित्य का अध्ययन युवकों का पालन-पोषण करता है, वृद्धों का मनोरंजन करता है, उन्नति का शृंगार करता है, विपत्ति में धीरज देता है, घर में प्रमुदित करता है और बाहर विनीत बनाता है। **—सिसरो**

साहित्य के साधकों ने इस अनुपम उद्यान को सदैव अपने हृदय के रस से सींचा है। यही कारण है कि इसका परिमल हमारे मुरझाते हुए हृदय को हरा-भरा कर देता है। **—अज्ञात**

राजनीति क्षणभंगुर है, चंचल है, परन्तु साहित्य चिरस्थायी है, मंगलमय है, उसके आधार-भूत मूल्यों की क्षति नहीं होती। **—अनन्त गोपाल शेवड़े**

साहित्यकार

साहित्यकार की मृत्यु नश्वर शरीर की मृत्यु से नहीं हो जाती। उनके यशः कार्य को जरामरणज भय नहीं। **—मन्मथनाथ गुप्त**

सच्चा साहित्यकार तो अपनी अन्तरप्रेरणा को छोड़ कर और किसी देवता की पूजा नहीं करता । वह तो इस विश्वास से चलता है कि मेरे हृदय में भगवान् का वास है, मैं यदि उसकी अभ्यर्थना करूँगा आराधना करूँगा, तो उसी की वाणी मेरी जबान या कलम पर उतरेगी । **—अनंत गोपाल शेवड़े**

साहित्यकार एक दीपक के समान है, जो जल कर केवल दूसरों को ही प्रकाश प्रदान करता है । **—अज्ञात**

राजनीतिज्ञ का महत्व देश काल से सीमित है किन्तु साहित्यकार के हाथ में तो संसार का भूत, वर्तमान तथा भविष्य सब ही कुछ है । **—डा० धीरेन्द्र वर्मा**

सिद्धान्त

Principle is a passion for truth and right. **—Hazlitt**

सिद्धान्त सत्य और न्याय के लिए उत्कण्ठा का नाम है । **—हैजलिट**

Important principles may and must be flexible. **—Lincoln**

महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त लचीले हो सकते हैं और होने भी चाहिए । **—लिंकन**

Principles become modified in practice by facts. **—Cooper**

वास्तविक तथ्यों के कारण सिद्धान्तों में व्यावहारिक दृष्टि से परिवर्तन हो जाता है । **—कूपर**

सिद्धान्त-विहीन जीवन का कोई मूल्य नहीं है । **—अज्ञात**

सिद्धि

विधातुः सर्वलोकस्याभिप्रायोऽप्येष दृश्यते ।
यत्कार्य-सिद्धितः पूर्वं कष्टस्वीकरणं मतम् ॥ **—अज्ञात**

समस्त संसार की सृष्टि करने वाले प्रजापति का अभिप्राय भी यही दीखता है कि किसी भी कार्य की सिद्धि से पहले कष्ट या दुःख उठाना ही चाहिए ।

योगाभ्यास आत्मा का विषय है इसलिए सिद्धियाँ शरीर को प्राप्त नहीं होती बल्कि आत्मा को होती हैं। **—स्वामी दयानन्द सरस्वती**

बिना कर्म किसी ने सिद्धि नहीं पायी। **—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)**

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धि लभते नरः। **—गीता १८-४५**

अपने-अपने कर्म में लगा हुआ मनुष्य सिद्धि को पाता है।

जिसके द्वारा प्राणियों की प्रवृत्ति होती है और जिसके द्वारा समस्त व्याप्त है उसे जो पुरुष स्वकर्म द्वारा भजता है वह सिद्धि पाता है। **—गीता १८-४६**

सीख (दे० 'नसीहत', 'शिक्षा')

हमारे जीवन का प्रत्येक अगला दिन पिछले दिन से कुछ ऐसे ढंग का हो, जिसमें हमने कुछ सीखा हो। **—रवीन्द्र**

सीख वाको दीजिए, जाको सीख सोहाय।
सीख न दीजै बाँदरा, आपन हानि कराय॥ **—अज्ञात**

Every man I meet is my superior in some way. In that, I learn of him. **—Emerson**

जिन-जिन व्यक्तियों से मैं मिलता हूँ वे किसी न किसी रूप में मुझसे श्रेष्ठ होते हैं, और इस तरह मैं उनसे कुछ सीख पाता हूँ। **—एमर्सन**

विनयं राजपुत्रेभ्यः पण्डितेभ्यः सुभाषितम्।
अनृतं द्यूतकारेभ्यः स्त्रीभ्यः शिक्षेत्तु कैतवम॥ **—चाणक्य**

विनयी होना राजपुत्रों से सीखना चाहिए, पण्डितों से सुभाषित, जुआ खेलने वालों से झूठ बोलना और प्रपंच करना स्त्रियों से सीखना चाहिए।

Advice is seldom welcome. Those, who need it most, like it least. **—Johnson**

सीख का कदाचित् ही स्वागत होता है। जिनको इनकी अधिक आवश्यकता है वे ही इसको सबसे कम पसन्द करते हैं। **—जानसन**

सीख

कलित कुसुम से हँसना सीखा,
कलियों से मुसकाना ।
वारिद से परहित में मरना,
लहरों से टकराना ।।
सेवा-भाव भूमि से सीखा,
शिखरों से दृढ़ रहना ।
निर्झर से जीवन-प्रवाह में,
बाधा सहते बहना ।।

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (गुरु दक्षिणा)

Advice is like snow, the softer it falls the longer it dwells upon, and the deeper it sinks into the mind. **—Coleridge**

सीख हिम के सदृश है, जब धीरे-धीरे गिरती है तब अधिक देर तक टिकती है और मस्तिष्क में गहरायी तक पहुँचती है । **—कालरेज**

सुकर्म

A good action is never lost, it is a treasure laid up and guarded for the doer's need. **—Caldezon**

सुकर्म कभी नष्ट नहीं होता; यह निधि कर्त्ता की आवश्यकता के लिए सुरक्षित रक्खी रहती है । **—काल्ड्रेयन**

मनुष्य के मर जाने के बाद भी उसके सुकर्म जीवित रहते हैं । **—अज्ञात**

सुख

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति । भूमव सुखं भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य: ।
—छान्दोग्य उपनिषद्

जो पूर्ण है वह सुख है, अल्प में सुख नहीं, पूर्ण ही सुख है, पूर्ण को ही जानना चाहिए ।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। —तुलसी

दुनिया के सुख केवल निर्जीव शव जैसे हैं। —स्वामी रामतीर्थ

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्तो वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। —कालिदास

किसी को सुख अथवा एकमात्र दुःख नहीं मिलता—दुःख और सुख रथ के पहिये की भांति कभी ऊपर और कभी नीचे रहा करते हैं।

अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥ —हितोप०

हे राजा ! नित्य धन का लाभ, आरोग्यता, प्रियतमा और मधुरभाषिणी स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र और धन का लाभ करने वाली विद्या—ये संसार में छः सुख हैं।

सुख संसार की किसी भी वस्तु में नहीं है, इसलिए वह किसी भी बड़े से बड़े वैभव द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता। सुख तो मन की एक स्थिति है जो आत्मसाधन द्वारा प्राप्त होती है। —अज्ञात

जेते सुख संसार के, इकट्ठे किए बटोर।
कन भोरे कांकर घन, देखा फटक पछोर॥ —मलूक दास

जीवन में सबसे महान् सुख किसी वस्तु को त्याग कर चले जाने में है। सबसे महान् सुख किसी वस्तु की प्राप्ति में नहीं वरन् उसके त्याग में है।
—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

यदि मनःस्थिति बिगड़ी हुई हो तो दूसरे अवसरों पर सुखकारक प्रतीत होने वाले पदार्थ भी सुख नहीं दे सकते। —वेद

सच्चा सुख स्वार्थनाश में है और उसे अपने आप के अतिरिक्त अन्य कोई सुखी नहीं बना सकता। —विवेकानन्द

सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता, अन्तर से मिलता है। —महात्मा गांधी

The secret of happiness is renunciation.

—**Andrew Carnegie**

सुख का रहस्य त्याग में है। —एण्ड्रू कारनेगी

सुख, जो कुछ **तुम** त्याग कर सकते हो उस पर आधारित है, जो कुछ तुम पा सकते हो उस पर नहीं। —महात्मा गांधी

Virtue alone is happiness below. **—Shakespeare**

केवल सद्‌गुण ही इस पृथ्वी पर सुख है। **—शेक्सपियर**

राग के समान अग्नि नहीं है, द्वेष के समान मल नहीं, स्कन्धों के समान दुःख नहीं, शान्ति से बढ़ कर सुख नहीं। **—धम्मपद**

The happiness of a man in this life does not consist in the absence but in the mastery of his passions. **—Tennyson**

इस जीवन में मनुष्य का सुख वासनाओं के अभाव में नहीं है वरन् उन पर शासन करने में है। **—टेनीसन**

निरोग होना परम लाभ है, सन्तोष परम धन है, विश्वास सबसे बड़ा बन्धु है, निर्वाण परम सुख है। **—धम्मपद**

विषयानुप्रमुञ्जानैः सुख-प्राप्तिधिया नरैः ।
सुखस्य कारणं स्वान्तम् इत्येतवधार्यताम् ॥ **—अज्ञात**

मनुष्य सुख-प्राप्ति के विचार से विषयों का उपभोग करते हैं। उनको समझ लेना चाहिए कि वास्तव में सुख का कारण मन ही है।

In the pursuit itself of a mighty purpose there is joy and happiness and a measure of achievement **—Jawaharlal Nehru**

एक महान् उद्देश्य के लिए प्रयत्न में स्वतः ही आनन्द है, सुख है और किसी अंश तक प्राप्ति की मात्रा भी है। **—जवाहरलाल नेहरू**

No thoroughly occupied man was ever yet very miserable. **—L. E. Landon**

जो व्यक्ति अत्यधिक व्यस्त रहता है वह आज तक कभी बहुत दुःखी नहीं हुआ।

—एल० ई० लन्डन

This is the true joy in life, the being used for a purpose recognised by yourself as a mighty one; the being thoroughly worn out before you are thrown on the scrap heap; the being a force of nature, instead of a feverish, selfish little clod of ailments and grievances, complaining that the world will not devote itself to making you happy. **—G. B. Shaw**

यही जीवन का सच्चा सुख है—ऐसे उद्देश्य में जिसे तुम स्वयं ही महान् समझते हो, काम आ जाना; इसके पहले कि तुम घूरे पर रद्दी की तरह उठा कर फेंक दिये जाओ, काम करते-करते पूर्णरूप से घिस जाना। प्रकृति की एक शक्ति बन जाना कहीं अच्छा है बजाय इसके कि तुम रोग और आपत्तियों की एक ज्वरपीड़ित, स्वार्थपूरित, क्षुद्र पीड़ा बने हुए रोते फिरो कि दुनिया तुमको सुखी बनाने की ओर कुछ ध्यान नहीं देती।

—जार्ज बर्नार्ड शा

विषदिग्धस्य भक्तस्य दन्तस्य चलितस्य च।
अमात्यस्य च दुष्टस्य मूलादुद्धरणं सुखम्॥ —हितोपदेश

विष मिले हुए भोजन, हिले हुए दाँत और बुरी सलाह देने वाले मंत्री का समूल विनाश कर देना ही सुखदायी होता है।

सुख-भोग की लालसा, आत्मसम्मान का सर्वनाश कर देती है।

—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

सुखी (दे० "प्रसन्न")

हर्ष के साथ शोक और भय इस प्रकार लगे हुए हैं जिस प्रकार प्रकाश के संग छाया। सच्चा सुखी वही है जिसकी दृष्टि में दोनों समान हैं। —धम्मपद

जीवन में सुखी वही हो पाता है जिसे शान्ति का मार्ग मिल गया है। —अज्ञात

लोभमूलानि पापानि व्याधयो रसमूलकाः।
स्नेहमूलानि दुःखानि त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भव॥ —अज्ञात

लोभ के कारण पाप होते हैं, रस के कारण रोग होते हैं और स्नेह के कारण दुःख होते हैं। अतः लोभ, रस और स्नेह का त्याग करके सुखी हो जाओ।

संत जगत में सो सुखी, मैं मेरी कौ त्याग।
नारायण गोविंद पद दृढ़ राखत, अनुराग॥

—नारायण स्वामी

सुखी जीवन

The way to have a happy life is to be busy doing what you like all the time, having no time left to consider whether you are happy or not. **—G. B. Shaw**

सुखी जीवन व्यतीत करने का उपाय यह है कि मनुष्य तन्मय होकर मनोनुकूल कार्य में अपने को लगा रखे और इस बात को सोचने के लिए भी कुछ समय न दे कि वह सुखी है या नहीं। **—जार्ज बर्नार्ड शा**

तुलसी या जग आय कै पाँच रतन हैं सार।
संतमिलन, अरु हरि भजन, दया, दीन, उपकार।।

—तुलसी

सुदिन

भले दिन मनुष्य के चरित्र पर सदैव के लिए अपना चिह्न छोड़ जाते हैं। **—प्रेमचन्द**

सुदिन सबके लिए आते हैं, किन्तु टिकते उसी के पास हैं जो उनको पहचान कर आदर देता है। **—अज्ञात**

घूरे के भी दिन फिरते हैं। **—अज्ञात**

सुधार

Reform must come from within, not from without; you can not legislate for virtue. **—J. C. Gibbons**

सुधार आन्तरिक होना चाहिए, बाह्य नहीं। तुम सद्‌गुणों के लिए नियम नहीं बना सकते। **—गिबन**

Reform like charity must begin at home. **—Carlyle**

सुधार दानशीलता की भाँति घर से प्रारम्भ होना चाहिए। **—कारलाइल**

कोई भी सुधार सम्भव नहीं है जब तक कुछ शिक्षित और धनी व्यक्ति स्वेच्छा से निर्धनता का स्तर नहीं अपना लेते। **—महात्मा गांधी**

To reform a man you must begin with his grand-mother.

—Victor Hugo

यदि किसी व्यक्ति का सुधार करना चाहते हो तो उसकी दादी से शुरू करो। —विक्टर ह्यूगो

Necessity reforms the poor, and satiety the rich.

—Tacitus

आवश्यकता निर्धन का सुधार करती है, सन्तुष्टता धनी का। —टेसीटस

He who reforms himself has done more towards reforming the public than a crowd of noisy, inpotent patriots.

—Lavater

जो व्यक्ति अपना सुधार स्वयं कर लेता है वह लम्बी-चौड़ी बातें करने वाले निर्बल देशभक्तों के समूह से कहीं अधिक जनता का सुधार करता है। —लेवेटर

सुधारक

उपहास और विरोध तो सुधारक के पुरस्कार हैं। —प्रेमचन्द

सुधारक चाहे कितना भी श्रेष्ठ पंक्ति का क्यों न हो, जब तक जनता उसे परख नहीं लेगी, उसकी बात नहीं सुनेगी। —विनोबा

जो सुधारक अपने संदेश के अस्वीकार होने पर क्रोधित हो जाता है उसे सावधानी, प्रतीक्षा और प्रार्थना सीखने के लिए वन में चला जाना चाहिए।

—महात्मा गांधी

सच्चा सुधारक न केवल पाप से घृणा करेगा वरन् उस स्थान को अच्छाइयों से भरने का उत्साहपूर्वक प्रयत्न करेगा। —सी० सिमन्स

सुन्दर

जो अहित करने वाली चीज है वह थोड़ी देर के लिए सुन्दर बनाने पर भी असुन्दर है, क्योंकि वह अकल्याणकारी हैं। सुन्दर वही हो सकता है जो कल्याणकारी हो। —भगवतीचरण वर्मा

यदि सुन्दर दिखाई देना है तो तुम्हें भड़कीले कपड़े नहीं पहनना चाहिए बल्कि अपने गुणों को बढ़ाना चाहिए। —महात्मा गांधी

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥ —कालिदास

सुन्दर शरीर पर सभी कुछ शोभा देने लगता है।

सुन्दर स्त्रियाँ गाना और रोना दोनों अच्छी तरह जानती हैं।

—जयशंकर प्रसाद

मैंने चमकीली आँख, सुन्दर रूप, खूबसूरत शक्ल देखी, लेकिन एक भी ऐसी आत्मा न मिली जो मेरी आत्मा से बोलती। **—एमर्सन**

सुन्दरता (दे० 'खूबसूरती', 'सौंदर्य')

नेत्रों का सुन्दरता से घना सम्बन्ध है। **—प्रेमचन्द**

सुन्दरता चलती है तो साथ ही देखने वाली आँख, सुनने वाले कान और अनुभव करने वाले हृदय चलते हैं। **—सुदर्शन**

हाजते मश्शाता नेस्त रूम दिलाराम रा। **—सादी**

सुन्दरता बिना श्रृंगार के ही मन को मोहती है।

A thing of beauty is a joy forever. Its loveliness increases; it will never pass into nothingness. **—Keats**

सुन्दर वस्तु चिर-आनन्ददायिनी है। उसकी माधुरी नित्य बढ़ती जाती है, उसका कभी ह्रास नहीं होने पाता। **—कीट्स**

अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

Beauty draws us with a single hair. **—Pope**

सुन्दरता एक बाल के द्वारा हमको अपनी ओर खींच लेती है। **—पोप**

क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। **—माघ**

क्षण प्रति क्षण जो नवीन दिखाई पड़े वही सुन्दरता का उत्कृष्ट नमूना है।

हे सौन्दर्य, तू अपने को प्रेम के भीतर ढूंढ़, दर्पण की मिथ्या प्रशंसा में नहीं। **—रवीन्द्र**

If virtue accompanies beauty, it is the heart's paradise if vice be associated with it is the soul's purgatory. It is the wise man's bonfire, and the fool's furnace. **—Quarles**

यदि सुन्दरता के साथ सद्‌गुण है, तो वह हृदय का स्वर्ग है, यदि उसके साथ दुर्गुण है तो वह आत्मा का नरक है। वह बुद्धिमान् की होली और मूर्ख की भट्ठी है। —क्वार्ल्स

बिना सद्‌गुण के सुन्दरता अभिशाप है। —कहावत

Beauty provoketh thieves sooner than gold. —**Proverb**

स्वर्ण से भी शीघ्र सुन्दरता चोरों को आकर्षित करती है। —कहावत

What is lovely never dies,
But passes into other loveliness. —**T. B. Aldrich**

जो सुन्दर है उसका कभी ह्रास नहीं होता, वरन् वह अन्य सुन्दर वस्तुओं में प्रवेश कर जाता है। —टी० बी० एल्ड्रिच

सुपात्र

सुपात्र-दानाच्च भवेद्धनाढ्यो धन-प्रभावेण करोति पुण्यम्।
पुण्य-प्रभावात्सुरलोकवासी पुनर्धनाढ्यः पुनरेव योगी॥
—अज्ञात

सुपात्र को दान देने से आदमी धनी होता है, धन के प्रभाव से वह पुण्य प्राप्त करता है और पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग मिलता है। उसके बाद जन्म-जन्मान्तर में भी आदमी धनी और भोगी होता है।

सुपुत्र

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चंद्रेण शर्बरी॥ —चाणक्य

विद्यायुक्त, भले, एक भी सुपुत्र से सारा कुल ऐसे आनन्दित हो जाता है जैसे चन्द्रमा से रात्रि।

एक ही सुपुत्र के कारण सिंहनी वन की महारानी होती है किन्तु दस नालायक पुत्रों के होते हुए भी गदही भार ढोते-ढोते मर जाती है। —अज्ञात

एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।
वासितं स्याद् वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा॥ —चाणक्य

एक भी अच्छे वृक्ष से, जिसमें सुन्दर फूल और गन्ध है, सारा वन इस प्रकार सुवासित हो जाता है जैसे सुपुत्र से कुल।

किं जातैर्बहुभिः पुत्रैः शोकसंतापकारकैः।
वरमेकः कुलालंबी यत्र विश्राम्यते कुलम्॥ —**अज्ञात**

शोक-संताप उत्पन्न करने वाले बहुत पुत्रों से कुल को क्या? सहारा देने वाला एक ही पुत्र श्रेष्ठ है जिससे कुल विश्राम पाता है।

एकोऽपि गुणवान्पुत्रो निर्गुणैश्च शतैर्वरः।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च ताराः सहस्रशः॥ —**चाणक्य**

एक भी गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, सैकड़ों गुणरहितों से क्या? एक ही चन्द्रमा अंधकार नष्ट कर देता है, सहस्र तारे नहीं।

सुप्रसिद्धि

Passion for fame; a passion which is the instinct of all great souls. —**Burke**

प्रसिद्धि की अभिलाषा; वह अभिलाषा है जो प्रत्येक महान् व्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। —**बर्क**

प्रसिद्धि की तृष्णा यदि महान् व्यक्तियों की आखिरी कमजोरी है तो छोटे मनुष्यों की पहली कमजोरी है। —**रस्किन**

सुभार्या (दे० "भार्या")

सुभार्या स्वर्ग की सबसे बड़ी विभूति है जो मनुष्य के चरित्र को उज्ज्वल और पूर्ण बना देती है जो आत्मोन्नति का मूल-मंत्र है। —**प्रेमचन्द**

मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति सुभार्या है। —**बर्टन**

सा भार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता।
सा भार्या या पतिप्रीता सा भार्या सत्यवादिनी॥ —**चाणक्य**

वही भार्या है जो पवित्र और चतुर है, वही भार्या है जो पतिव्रता है, वही भार्या है जिस पर पति की प्रीति है, वही भार्या है जो सत्य बोलती है।

सुमति

जहाँ सुमति तहं संपति नाना।
जहाँ कुमति तहं विपति निदाना ।।

—तुलसी (मानस, सुन्दर० ४०–६)

सुलभ

सुलभं वस्तु सर्वस्य न यात्यादरणीयताम् ।
स्वदारपरिहारेण परदारार्थिनो जनाः ।। —अज्ञात

जो वस्तु आसानी से लोगों को मिलती रहती है वे उसका आदर नहीं किया करते। लोग अपनी सुलभ सुन्दर पत्नी को छोड़कर दूसरे की औरतों के पीछे घूमा करते हैं।

सुशीलता

छिन्नोऽपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्धं,
वृद्धोऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम् ।
यन्त्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षुः,
क्षीणोऽपि न त्यजति शीलगुणान्कुलीनः ।। —चाणक्य

काटा हुआ चन्दन का वृक्ष गन्ध को नहीं छोड़ देता, बूढ़ा गजपति भी क्रीड़ा को नहीं छोड़ देता, कोल्हू में पेरी हुई ईख मधुरता नहीं छोड़ देती, दरिद्र भी कुलीन सुशीलता आदि गुणों को नहीं छोड़ देता।

सूक्तियाँ

जीवन भर के कितने अनुभवों का अमृत सूक्ति के एक बिन्दु में रहता है।

—डा० रामकुमार वर्मा

सूक्तियाँ साहित्य-गगन में देदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र के समान हैं। इनकी आभा देश और काल की संकुचित सीमा पार करके सर्वदा एक समान और एक रस रहने वाली है।

—रामप्रताप त्रिपाठी

यदि वाङ्मय को हम हरितिमा-पुंज का रूपक दें तो सूक्तियों को हमें सुवासित पुष्प की संज्ञा देनी पड़ेगी। पुष्प जैसी हमारी घ्राण तथा चाक्षुष शक्तियों को आह्लादित करता है वैसे ही सूक्तियाँ हमारे मन तथा मस्तिष्क को पुलकायमान करती हैं। **—प्रिंसिपल हृदयनारायण सिंह**

The wisdom of the wise and the experience of ages may be preserved by quotation **—Disraeli**

ज्ञानियों का ज्ञान और युगों के अनुभव सूक्तियों द्वारा सुरक्षित रहते हैं। **—डिजरायली**

विधाता की इस मानव-सृष्टि में सूक्तियाँ कल्पतरु के समान हैं। इनकी सुविस्तृत सघन छाया में जीवनपथ की थकान को ही दूर करने की शक्ति नहीं है प्रत्युत भविष्य की दुर्गम यात्रा को सुखपूर्वक समाप्त करने का इनमें अक्षय तथा दैवी सम्बल भी रहता है। **—रामप्रताप त्रिपाठी**

विषादप्यमृतं ग्राह्यं बालादपि सुभाषितम्।
अमित्रादपि सदवृत्तमेध्यादपि काञ्चनम्॥

—मनु (मनुस्मृति २-२३९)

विष से भी अमृत को, बालक से भी सूक्ति को, वैरी से भी सुन्दर आचरण को और अशुद्ध जगह से भी सुवर्ण को ले लेना चाहिये।

यथापि रुचिरं पुष्पं वण्णवन्तं सगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा सफला होति कुब्बतों॥

—धम्मपद

जैसे रुचिर और वर्णयुक्त गन्धसहित फूल होता है, वैसे ही (कथनानुसार) आचरण करने वाले की सुभाषित वाणी सफल होती है।

Quotation is the highest compliment you can pay to an author **—Dr. Johnson**

सूक्तियाँ सर्वोच्च अभिनन्दन हैं जो तुम किसी लेखक को समर्पित कर सकते हो। **—डा० जानसन**

महान व्यक्तियों की सूक्तियां अपूर्व आनन्द को देनेवाली, श्रेष्ठ पद पर पहुंचानेवाली और अनर्थ-मूल मोह को दूर करने वाली होती हैं। **—योगवाशिष्ठ**

सत्पुरुषों की सूक्तियाँ दूसरों को जगाने के लिए, सत्यासत्य के विवेक के लिए, लोक कल्याण के लिए, जगत में शांति के लिए, और जीवन में वास्तविक तत्त्व के उपदेश के लिए प्रवृत्त हुआ करती हैं। —ज्ञानार्णव

संसार कटुवृक्षस्य द्वे फले ह्यमृतोपमे।
सुभाषित रसास्वादः संगतिः सुजने जने ॥ —अज्ञात

संसार रूपी कटुवृक्ष के अमृत समान दो ही फल हैं। एक तो सुभाषित रस का आस्वाद, दूसरा सज्जनों की संगति।

सूक्तियों से जीवन की सच्ची परिस्थितियों का मार्मिक अनुभव मिलता है। —अज्ञात

Next to the originator of a good sentence is the first quoter of it. —**Emerson**

किसी सुन्दर वाक्य के निर्माण करने वाले के बाद उसकी बारी आती है जो उसका सर्वप्रथम प्रयोग करता है। —**एमर्सन**

सूक्तियों में आत्म-अनुभूतियाँ भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त होती हैं, जिनको बात बात में हम प्रमाणस्वरूप प्रयोग करते हैं। —**अज्ञात**

प्रत्येक सूक्ति भाषा के विस्तार और उसे चिरस्थायी बनाने में सहयोग देती है। —**डा० जानसन**

सूक्तियों में मनीषियों के चिन्तन, अनुभूति, परीक्षण और कल्पना के तत्त्व, सारभूत सत्य निहित होते हैं। उनके द्वारा जीवन-यात्रा में हमें स्फूर्ति, प्रोत्साहन, मानसिक बल प्राप्त होता है। वे जीवन के अंधकारपूर्ण क्षणों में प्रकाश-किरण का काम करती हैं। —**प्रिंसिपल हृदयनारायण सिंह**

सूर्य

ज्योगेव दृशेम सूर्य्यम् —**अथर्ववेद** (१-३१-४)

हम सूर्य को बहुत काल तक देखते रहें।

सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा। —**कालिदास**

जब सूर्य दीप्तिमान हो तब लोगों की आँखों के सामने अंधेरा कैसे छा सकता है।

सब जीवधारी उत्पत्ति के लिए सूर्य के ऋणी हैं। —**स्वामी रामतीर्थ**

सूर्य प्रतिदिन प्रातः आकर हमें उठाता है और कर्त्तव्यपथ का संकेत करता है । —अज्ञात

सविता अपामीवां वाद्यते । —ऋग्वेद संहिता

सूर्य बीमारियों को भगाता है ।

सूर्य-रश्मियाँ

एते वा उत्पवितारो यत्सूर्यस्य रश्मयः

—शतपथ-ब्राह्मण

सूर्य की रश्मियाँ गंदगी को दूर करके पवित्र करती हैं ।

सूर्योदय

सूर्योदय में जो नाटक भरा है, सौंदर्य भरा है और जो लीला भरी है वह और कहीं देखने को नहीं मिल सकती । —महात्मा गांधी

सृष्टि

जगत की सृष्टि का कारण बुद्धिगम्य नहीं है, यह तो स्वयं आत्मा के अनुभव का विषय है । बुद्धि इस गुत्थी को नहीं सुलझा सकती । —अरविंद घोष

सृष्टि एक व्यापार है, कार्य है । —जयशंकर प्रसाद

सृष्टि पाप और पुण्य, जड़ और चेतन दोनों के योग से होती है, केवल पुण्य या केवल चैतन्य से कभी सृष्टि का कारखाना चल नहीं सकता । —निराला

ईश्वर की सृष्टिरूपी अनोखे चमन में जवानी का सुहावना फूल न खिलता तो कवि लोग बैठे-बैठे ऊंघा करते । —अज्ञात

सेनापति

सेनापति वही है जो सिपाही की सेवा को अधिकार की वस्तु न समझकर श्रद्धा की वस्तु समझता है । —डा० रामकुमार वर्मा

सेवक

सेवक वही है जो विपत्ति में साथ रहे, जैसे शरीर की छाया धूप में शरीर के साथ रहती है । —अज्ञात

समदरसी मोहिं कह सब कोऊ ।
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ ।।

—तुलसी (मानस, किष्किन्धा०)

सब तें सेवक-धरम कठोरा । **—तुलसी (मानस, अयोध्या०)**

सब के प्रिय सेवक यह नीती ।
मोरे अधिक दास पर प्रीती ।। **—तुलसी (मानस, उत्तर०)**

जिसने सेवा को कुत्ते की वृत्ति का कहा उसने ठीक उदाहरण नहीं दिया, कारण कहाँ तो स्वच्छन्द विचरण करने वाला कुत्ता और कहाँ सेवक जिसने अपने जीवन को भी बेच दिया । **—अज्ञात**

प्रणमत्युन्नतिहेतोः जीवितहेतोर्विमुञ्चति प्राणान् ।
दुःखीयति सुखहेतोः को मूढः सेवकादन्यः ।। **—अज्ञात**

ऊंचा उठने के लिए मालिक के यहाँ प्रणिपात करता है, जीने के लिए अपने प्राण तक को छोड़ने को तैयार रहता है, सुख-प्राप्ति के लिए दुःखी रहता है, इसलिए कहा गया है कि सेवक से बढ़कर और दूसरा कौन मूर्ख हो सकता है ।

अपने सेवक से बहुत हिलमिल न जाओ, प्रारम्भ में मेल-जोल बढ़ा सकता है परन्तु अन्त में तिरस्कार को जन्म देगा । **—फुलर**

सेवक एक ऐसे लोभी की भांति हैं जिसे बड़ी से बड़ी धनराशि प्राप्त होने पर भी तृप्ति का अनुभव नहीं होता ।

—पं० रामकिंकर जी उपाध्याय (मानस मुक्तावली)

सेवा

जिनके विद्या, कुल और कर्म—ये तीनों शुद्ध हों उन साधु पुरुषों की सेवा में रहे । उनके साथ बैठना-उठना शास्त्रों के स्वाध्याय से भी श्रेष्ठ है ।

गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है । **—सरदार वल्लभभाई पटेल**

सेवा धरम कठिन जग जाना । —तुलसी (मानस, अयोध्या०)

जिसे मेरी सेवा करनी है वह पीड़ितों की सेवा करे । —गौतम बुद्ध

सेवामार्ग भक्तिमार्ग से भी ऊंचा है । —सुदर्शन

वीर-पूजा जैसे वीर बनकर ही हो सकती है वैसे ही गरीबों की सेवा गरीब बनकर ही हो सकेगी । —विनोबा

सेवा से शत्रु भी मित्र हो जाता है । —अज्ञात

सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है । —प्रेमचन्द

सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है । सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है, और यही जीवन का लक्ष्य है । —स्वामी शिवानन्द

त्याग और सेवा ही भारत का जातीय आदर्श है । इसी भाव को पुनः जगा देना चाहिए । बाकी आप ही आप ठीक हो जायगा । —स्वामी विवेकानन्द

लाखों गूंगों के हृदय में ईश्वर विराजमान है । मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता ।...मैं इन लाखों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूं । —महात्मा गांधी

बन्धुभाव से की हुई सेवा की अपेक्षा आत्मभाव से की हुई सेवा उत्तम है । —अज्ञात

जो लोग सेवाभाव रखते हैं और स्वार्थ-सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाते उनके परिवार को आड़ देने वालों की कमी नहीं रहती । —प्रेमचन्द

सेवा के लिए पैसे की जरूरत नहीं होती, जरूरत है अपना संकुचित जीवन छोड़ने की, गरीबों से एकरूप होने की । —विनोबा

धन-सम्पत्ति, शारीरिक सुख और मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा आदि को न चाहते हुए, ममता, आसक्ति और अहंकार से रहित होकर मन, वाणी, शरीर और धन के द्वारा सम्पूर्ण प्राणियों के हित में रत होकर उन्हें सुख पहुंचाने की चेष्टा करना सेवा-साधन कहलाता है । —अज्ञात

अपनी और संसार की सर्वोत्तम सेवा इसी में है, तुम सदा पवित्र विचार रखो । —अज्ञात

सेवक

सेवक वही है जो विपत्ति में साथ रहे, जैसे शरीर की छाया धूप में शरीर के साथ रहती है। **—अज्ञात**

समदरसी मोहिं कह सब कोऊ।
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ ॥

—तुलसी (मानस, किष्किन्धा०)

सब तें सेवक-धरम कठोरा। **—तुलसी (मानस, अयोध्या०)**

सब के प्रिय सेवक यह नीती।
मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥ **—तुलसी (मानस, उत्तर०)**

जिसने सेवा को कुत्ते की वृत्ति का कहा उसने ठीक उदाहरण नहीं दिया, कारण कहाँ तो स्वच्छन्द विचरण करने वाला कुत्ता और कहाँ सेवक जिसने अपने जीवन को भी बेच दिया। **—अज्ञात**

प्रणमत्युन्नतिहेतोः जीवितहेतोर्विमुञ्चति प्राणान्।
दुःखीयति सुखहेतोः को मूढः सेवकादन्यः ॥ **—अज्ञात**

ऊंचा उठने के लिए मालिक के यहाँ प्रणिपात करता है, जीने के लिए अपने प्राण तक को छोड़ने को तैयार रहता है, सुख-प्राप्ति के लिए दुःखी रहता है, इसलिए कहा गया है कि सेवक से बढ़कर और दूसरा कौन मूर्ख हो सकता है।

अपने सेवक से बहुत हिलमिल न जाओ, प्रारम्भ में मेल-जोल बढ़ा सकता है परन्तु अन्त में तिरस्कार को जन्म देगा। **—फुलर**

सेवक एक ऐसे लोभी की भांति हैं जिसे बड़ी से बड़ी धनराशि प्राप्त होने पर भी तृप्ति का अनुभव नहीं होता।

—पं० रामकिंकर जी उपाध्याय (मानस मुक्तावली)

सेवा

जिनके विद्या, कुल और कर्म—ये तीनों शुद्ध हों उन साधु पुरुषों की सेवा में रहे। उनके साथ बैठना-उठना शास्त्रों के स्वाध्याय से भी श्रेष्ठ है।

गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। **—सरदार वल्लभभाई पटेल**

सेवा धरम कठिन जग जाना। —तुलसी (मानस, अयोध्या०)

जिसे मेरी सेवा करनी है वह पीड़ितों की सेवा करे। —गौतम बुद्ध

सेवामार्ग भक्तिमार्ग से भी ऊंचा है। —सुदर्शन

वीर-पूजा जैसे वीर बनकर ही हो सकती है वैसे ही गरीबों की सेवा गरीब बनकर ही हो सकेगी। —विनोबा

सेवा से शत्रु भी मित्र हो जाता है। —अज्ञात

सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। —प्रेमचन्द

सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है। सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है, और यही जीवन का लक्ष्य है। —स्वामी शिवानन्द

त्याग और सेवा ही भारत का जातीय आदर्श है। इसी भाव को पुनः जगा देना चाहिए। बाकी आप ही आप ठीक हो जायगा। —स्वामी विवेकानन्द

लाखों गूंगों के हृदय में ईश्वर विराजमान है। मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता।...मैं इन लाखों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूं। —महात्मा गांधी

बन्धुभाव से की हुई सेवा की अपेक्षा आत्मभाव से की हुई सेवा उत्तम है। —अज्ञात

जो लोग सेवाभाव रखते हैं और स्वार्थ-सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाते उनके परिवार को आड़ देने वालों की कमी नहीं रहती। —प्रेमचन्द

सेवा के लिए पैसे की जरूरत नहीं होती, जरूरत है अपना संकुचित जीवन छोड़ने की, गरीबों से एकरूप होने की। —विनोबा

धन-सम्पत्ति, शारीरिक सुख और मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा आदि को न चाहते हुए, ममता, आसक्ति और अहंकार से रहित होकर मन, वाणी, शरीर और धन के द्वारा सम्पूर्ण प्राणियों के हित में रत होकर उन्हें सुख पहुंचाने की चेष्टा करना सेवा-साधन कहलाता है। —अज्ञात

अपनी और संसार की सर्वोत्तम सेवा इसी में है, तुम सदा पवित्र विचार रखो। —अज्ञात

सेवा का जो परमादर्श हमारे शास्त्रग्रन्थों में निर्दिष्ट है वह देह के प्रति अहं-बोध, मन के प्रति अहं-बोध आदि क्षुद्र भावों के रहते हुए हो नहीं सकता।
—गोपीनाथ कविराज (भाई जी पावन स्मरण)

जहाँ रूप, यौवन, संपत्ति और प्रभुता तथा स्वाभाविक सौजन्य प्रेम का बीज बोने में अकृतकार्य रहते हैं, वहाँ प्रायः उपकार का जादू चल जाता है। कोई हृदय ऐसा बज्र और कठोर नहीं हो सकता जो सत्य सेवा से द्रवीभूत न हो जाय।
—प्रेमचन्द

सेवा उसकी करो जिसे सेवा की जरूरत है। जिसे सेवा की जरूरत नहीं उसकी सेवा करना ढोंग है, दम्भ है। **—महात्मा गांधी**

सेवा करने की योग्यता रखना दंड नहीं, ईश्वर का आशीर्वाद है। **—अज्ञात**

निष्ठावंत और निष्काम सेवा ज्यादा दिन एकाकी नहीं रहने पाती।**—विनोबा**

उत्तम देश, काल और पात्र के प्राप्त होने पर जो न्यायानुकूल सेवा की जाती है वही सेवा महत्त्वपूर्ण होती है। **—अज्ञात**

प्रेम करने की योग्यता सब में है, किन्तु सेवा करने की शक्ति किसी को ही मिलती है। **—अज्ञात**

सेवा में वृत्ति जितनी निरहंकार रहेगी उतनी सेवा की कीमत बढ़ेगी।
—विनोबा

सेवा ही वास्तविक संन्यास है। संन्यासी केवल अपनी मुक्ति का इच्छुक होता है, सेवा-व्रतधारी अपने को परमार्थ की वेदी पर बलि देता है। **—प्रेमचन्द**

फल की सेवा मूल्यवान् है, पुष्प की सेवा मधुर है, परन्तु विनीत भक्तिभाव से छाया करने वाली पत्तियों की सेवा के सदृश मेरी सेवा हो। **—रवीन्द्र**

यथा खनन् खनित्रेण भूतले वारि विन्दति।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति॥ **—चाणक्य**

जैसे कुदारी से खोद कर मनुष्य पाताल के जल को पाता है, वैसे ही गुरुगत विद्या सेवा से प्राप्त होती है।

जब मनुष्य सम्पूर्णरूपेण निरहंकार होकर अपने को श्री भगवान के यन्त्ररूप में अनुभव करता है और एकमात्र भगवत्सत्ता ही सर्वत्र विराजित है—इस प्रकार

के बोध में सर्वदा जागरूक रह सकता है, केवल उसी समय यथार्थरूप में सेवा और कल्याण-कर्म में अपने को लगाने का अधिकार पाता है।

—गोपीनाथ कविराज (भाईजी : पावन स्मरण)

सैनिक

सैनिक केवल एक यंत्र है जिसकी गति का निर्णय उसके नायक को है। सैनिक जीवन और मृत्यु में कोई अन्तर नहीं समझ सकता। —**डा० रामकुमार वर्मा**

सैनिक केवल इसलिए जीवित है कि नायक की आज्ञा से मृत्यु प्राप्त कर सके। इससे अधिक सैनिक का कोई अधिकार नहीं है। —**डा० रामकुमार वर्मा**

सैनिक, सच्चा सैनिक, युद्ध का तपा सैनिक, सचमुच ही स्थितप्रज्ञ योगी होता है।

—**मेजर रणजीत सिंह (जब हमने लाहौर पर गोले बरसाये, धर्मयुग २५ जनवरी, १९८१)**

सौन्दर्य (दे० 'खूबसूरती' 'सुन्दरता')

True beauty consists in purity of heart.

—**Mahatma Gandhi**

वास्तविक सौन्दर्य हृदय की पवित्रता में है।

—**महात्मा गांधी ("आत्मकथा" से)**

Beauty is truth, truth beauty. —**Keats**

सौन्दर्य ही सत्य है और सत्य ही सौन्दर्य। —**कीट्स**

सौन्दर्य, जीवन-सुधा है। मालूम नहीं क्यों इसका असर इतना प्राणघातक होता है। —**प्रेमचन्द (हार की जीत)**

Beauty is power, a smile is its sword. —**Charls Reade**

सौन्दर्य शक्ति है और मुस्कान उसकी कृपाण। —**चार्ल्स रीड**

सौन्दर्य सौन्दर्य को आकर्षित करता है। —**ले हन्ट**

सौन्दर्य वह चीज है जिसकी परिभाषा नहीं हो सकती, व्याख्या या निरूपण नहीं हो सकता, जो सृजनात्मिका कला को अमर आनन्द का स्रोत बना देता है, और जो नैतिक अच्छाई से सर्वथा जुदा वस्तु है। —अज्ञात

Truth and goodness and beauty are but different faces of the same all. **—Emerson**

सत्य, अच्छाई और सौन्दर्य उसी एक (परमात्मा) के विभिन्न रूप हैं। —एमर्सन

सौन्दर्य सत्य की मुस्कान है जब वह अपनी ही आकृति एक उत्तम दर्पण में देखता है। —रवीन्द्र

Men move from beautiful things to beautiful ideas; from beautiful ideas to beautiful life; from beautiful life to absolute beauty. **—Plato**

मनुष्यों की गति सुन्दर वस्तुओं से सुन्दर मनोभावों की ओर, सुन्दर मनोभावों से सुन्दर जीवन की ओर, सुन्दर जीवन से पूर्ण सौन्दर्य की ओर होती है। —प्लेटो

The beauty seen is partly in him who sees it. **—Bovee**

सौन्दर्य को देखने वाले में भी अंशतः सौन्दर्य होता है। —बोवी

दुनिया का सारा सौन्दर्य स्वस्थ शरीर में है। —भगवती चरण वर्मा

Rare is the union of beauty and purity. **—Juvenal**

सौन्दर्य और पवित्रता का संयोग कदाचित् ही होता है। —जुवेनल

ज्ञानी के लिए सत्य है, भावुक हृदय के लिए सौन्दर्य है। —शिलर

When beauty fires the blood, how love exalts the mind. **—Dryden**

जब सौन्दर्य रक्त में उबाल पैदा करता है तब प्रेम मस्तिष्क को बहुत ऊँचा उठा देता है। —ड्राइडेन

If eyes were made for seeing,
Then beauty is its own excuse for being. **—Emerson**

यदि आँखें देखने के लिए बनायी गयी हैं, तो सौन्दर्य अपने अस्तित्व के लिए स्वयं बहाना है। —एमर्सन

सौन्दर्य ही सकल विश्व का एकमात्र सत्य है। —अज्ञात

Personal beauty is a greater recommendation than any letter of introduction. **—Aristotle**

किसी परिचय-पत्र की अपेक्षा व्यक्तिगत सौन्दर्य स्वयं एक बड़ी सिफारिश है। —अरस्तू

Beauty is the lover's gift. **—Congreve**

सौन्दर्य प्रेमी का उपहार है। —कानग्रेव

How goodness heightens beauty. **—Hannah More**

अच्छाई सौन्दर्य को कितना ऊँचा उठा देती है। —हन्नामोर

The best part of beauty is that which no picture can express. **—Bacon**

सौन्दर्य का सर्वोत्तम भाग वह है जिसको कोई चित्र चित्रित न कर सके। —बेकन

Beauty is often worse than wine; intoxicating both the holder and the beholder. **—Zimmerman**

सौन्दर्य प्रायः मदिरा से भी अधिक बुरा है क्योंकि यह सौन्दर्यवान और दर्शक दोनों को मदमत्त बना देता है। —जमीरमन

पुरुष ! स्वामी बन कर सौन्दर्य की सराहना कर, सेवक बन कर आत्म-समर्पण न कर। —डा० रामकुमार वर्मा

Beauty is an allpervading presence. **—Channing**

सौन्दर्य की सर्वव्यापी सत्ता है। —चैनिंग

सौन्दर्य का आदर्श सादगी और शांति है। —गेटे

सौभाग्य

सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है, जो अपने कर्त्तव्य-पथ पर अविचल रहते हैं। —प्रेमचन्द

सच्चा सौभाग्य, सच्ची समृद्धि तो आत्मिक-वैभव, आत्मिक-पूर्णता का आत्मिक ज्ञान ही है। —स्वेट् मार्डेन (दिव्य जीवन)

उत्काम महते सौभगाय। —यजुर्वेद

महान सौभाग्य के लिये पुरुषार्थ कर।

सौभाग्य वीर से डरता है और केवल कायर को भयभीत करता है।

—सेनेका

A pound of pluck is worth a ton of luck. **—J. A. Garfield**

रत्तीभर साहस मनों सौभाग्य से अच्छा है। —जे० ए० गारफील्ड

स्त्री (दे० 'नारी', 'भार्या,' 'सुभार्या')

सुयोग्य पत्नी परिवार की शोभा तथा गृह की लक्ष्मी है। —मनु

स्त्रियों की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। —अरस्तू

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

—मैथिलीशरण गुप्त (यशोधरा)

स्त्री पृथ्वी की भांति धैर्यवान् है, शांति-सम्पन्न है, सहिष्णु है। —प्रेमचन्द

The society of women is the foundation of good manners.

—Goethe

स्त्रियों की संगति अच्छे स्वभाव की आधार-शिला है। —गेटे

There is a woman at the beginning of all great things.

—Lamartine

सम्पूर्ण महान् कार्य के प्रारम्भ में किसी स्त्री का हाथ रहा है। —लामार्टिन

Earth's noblest thing, a woman perfected.

—Lowell

साध्वी स्त्री संसार की सर्वोत्तम वस्तु है। —लावेल

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। —मनु

जिस घर में स्त्रियों की पूजा होती है उस घर में अवश्यमेव देवता रमते हैं।

"Virtuous wife, where thou dost meet
Both pleasures more refined and sweet;
The fairest garden in her looks
And in her mind the wisest books". **—Cowley**

सद्‌गुणी स्त्री जहाँ कहीं भी मिलती है वहाँ आपको आनन्द मिलता है। उसकी चितवन में बहुत सुन्दर उद्यान है और उसका मन सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी पुस्तक है। **—काउले**

स्त्री जगत् की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। वह पुरुष शक्ति के लिए जीवन-सुधा है।...त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है। **—आचार्य चतुरसेन शास्त्री**

जायेदस्तम् । **—ऋग्वेद**

स्त्री का ही नाम घर है।

नारी की झांई परत, अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति, नित नारी को संग ॥ **—कबीर**

बिन गृहिणी घर भूत का डेरा। **—तुलसी**

सौन्दर्यवती स्त्री नयनाभिराम होती है, बुद्धिमती स्त्री हृदय को प्रसन्न करती है। एक अनमोल रत्न है तो दूसरी रत्न-राशि। **—नेपोलियन**

स्त्रियों की मानहानि साक्षात् लक्ष्मी और सरस्वती की मानहानि है। **—निराला**

जिस घर में सद्‌गुण सम्पन्ना नारी सुखपूर्वक निवास करती है, उस घर में लक्ष्मी निवास करती है, सैकड़ों देवता भी उस घर को नहीं छोड़ते। **—महर्षि गर्ग**

A woman is "a necessary evil, a natural temptation, a desirable calamity, a domestic peril, a deadly fascination and a painted ill". **—St. Chrysostom**

स्त्री एक अनिवार्य आपत्ति, स्वाभाविक मोह, वांछनीय विपदा, घरेलू खतरा, प्राणघातक आकर्षण, बाहर से मीठी और भीतर से विषरस भरे कनक घट के समान है। **—सेन्ट क्रिसोस्टम**

पुरुष शस्त्र से काम लेता है, स्त्री कौशल से। —**प्रेमचन्द**

A wife is a gift bestowed upon man to reconcile him to the loss of paradise. —**Goethe**

स्त्री एक ईश्वरीय उपहार है जिसे स्वर्ग के खो जाने पर ईश्वर ने मनुष्य को उसकी क्षति-पूर्ति के लिए दिया है। —**गेटे**

स्त्री प्रकृति की सुन्दर भूलों में है। —**कांउले**

स्त्री की चितवन में हमारे कानून की अपेक्षा अधिक बल है और उसके अश्रुओं में हमारे तर्क की अपेक्षा अधिक शक्ति है। —**सेवाइल**

स्त्री सब कुछ कर सकती है, मगर अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती। —**सुदर्शन**

स्त्री एक मधुर सरिता है, जहाँ मनुष्य अपनी चिन्ताओं और दुःखों से त्राण पाते हैं। —**अज्ञात**

Men at most differ as heaven and earth, but women, worst and best, as heaven and hell. —**Tennyson**

पुरुषों में अधिकांशतः स्वर्ग और पृथ्वी का, परन्तु उत्तम और निकृष्ट स्त्री में स्वर्ग और नरक का अन्तर होता है। —**टेनीसन**

मेरे मत में स्त्री को घर छोड़कर घर की रक्षा के निमित्त कन्धे पर बन्दूक धरने के लिए आह्वान करने अथवा उसके लिए उसे प्रोत्साहित करने में स्त्री और पुरुष दोनों का ही पतन है। —**महात्मा गांधी**

तुम अजस्र वर्षा सुहाग की, और स्नेह की मधु रजनी।
चिर अतृप्त जीवन यदि था, तो उसमें सन्तोष बनी।।
नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में।
पीयूष स्रोत में बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।
—**जयशंकर प्रसाद**

स्त्री का हृदय नवनीत-सा स्निग्ध होता है, वह सहज ही पिघल जाता है, उसके हृदय में सदा एक प्रेमसागर लहराता है। फिर भी वह प्रेम की प्यासी रहती है। —**अज्ञात**

स्त्री, जिस समय तू अपने गृहकार्य में लीन रहती है उस समय तेरे शरीर से ऐसी मधुर रागिनी निकलती है जैसी छोटे-छोटे पत्थरों के टुकड़ों के साथ, पर्वत स्रोत के क्रीड़ा करने से निकलती है। **—रवीन्द्र**

स्त्री काँटेदार झाड़ी को फल बनाती है, दरिद्र से दरिद्र मनुष्य के घर को भी सुशील स्त्री स्वर्ग बना देती है। **—गोल्डस्मिथ**

यह लौकिक रीति पुरुष के अत्याचार का बहुत निर्बल बहाना है कि स्त्री का सद्गुण सच्चरित्रता और आज्ञाकारिता है। **—डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्**

नारि-बिवस नर सकल गोसाईं। नाचहिं नर मर्कट की नाईं ॥ **—तुलसी**

जो पुरुष रोग से पीड़ित हो, विपत्ति में फँसा हुआ हो, उसके लिए भी स्त्री के समान कोई दूसरी औषधि नहीं है। **—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

स्त्री को पराजित करना हो तो उसकी प्रशंसा करो। **—वृन्दावन लाल वर्मा**

A woman is like your shadow, follow her, she flies, fly from her, she follows. **—Chamfort**

स्त्री तुम्हारी छाया के सदृश है, उसका पीछा करो, वह भागेगी; उससे भागो, वह आपका पीछा करेगी। **—कैम्फोर्ट**

प्यार के खातिर स्त्री सब कुछ करने को तैयार हो जाती है, परन्तु प्रतिकार के लिए उससे भी अधिक भयानक कर्म कर बैठती है। **—सुदर्शन**

स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व का घमंड होता है। **—प्रेमचन्द**

बाहुवीर्यबलं राज्ञो ब्राह्मणो ब्रह्मविद्बली।
रूपयौवनमाधुर्यं स्त्रीणां बलमुत्तमम् ॥ **—चाणक्य**

राजा का बाहुवीर्य बल है, ब्राह्मण, ब्रह्मज्ञानी और वेदपाठी बली होता है, स्त्रियों की सुन्दरता, तरुणता और मधुरता उनका उत्तम बल है।

स्त्री-जाति में हर उम्र में मातृत्व का अंश रहता है; और वही अंश उनमें सहिष्णुता, क्षमा और स्नेह को प्रेरित करता है, दुःख को कम करने की शक्ति लाता है, और इसी से उनका दिग्विजय इतना सरल हो जाता है।

—क० मा० मुन्शी

There is no worse evil than a bad woman and nothing has ever been produced better than a good one. **—Euripides**

एक निकृष्ट स्त्री से बढ़ कर कोई बुराई नहीं और अच्छी स्त्री की अपेक्षा आज तक कोई अच्छाई उत्पन्न नहीं हुई। **—यूरीपिडीज**

वह सेवा को अपना अधिकार समझती है, इसलिए देवी है; वह त्याग करना जानती है, इसलिए साम्राज्ञी है; विश्व उसके वात्सल्यमय आँचल में स्थान पा सकता है, इसलिए जगन्माता है। **—अज्ञात**

पुरुष का स्त्री के समान न कोई बन्धु है, न धर्म-साधन में वैसा कोई सहायक। **—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

Frailty, the name is woman. **—Shakespeare**

दुर्बलता ! तेरा ही नाम स्त्री है। **—शेक्सपियर**

स्त्री प्रकृति की कन्या है। उसकी ओर कोप दृष्टि से कभी मत देखो, उसका हृदय कोमल होता है, उस पर विश्वास करो। **—वेदव्यास (महाभारत)**

In revenge and in love, woman is more barbarous than man. **—Nietzsche**

बदला लेने में और प्रेम में स्त्री पुरुष से अधिक निर्दयी होती है। **—नीत्शे**

A beautiful and chaste woman is the perfect workmanship of God, the true glory of angles, the rare miracle of earth and sole wonder of the world. **—Hermes**

सुन्दर और सच्चरित्र स्त्री ईश्वर की उत्कृष्ट कारीगरी, देवताओं की वास्तविक शोभा, पृथ्वी का अपूर्व चमत्कार तथा संसार का एकमात्र आश्चर्य है। **—हरमीज**

स्त्री के हृदय में करुणा अमृत बन कर बहा करती है।**—डा० रामकुमार वर्मा**

प्रत्येक स्त्री का यह कर्त्तव्य है कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो सके विवाह कर ले जब कि पुरुष का यह कर्त्तव्य है कि जहाँ तक सँम्भव हो उससे दूर रहे। **—जार्ज बर्नार्ड शा**

काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धारि ।
तिन्ह महं अति दारुन दुखद, मायारूपी नारि ।। —**तुलसी**

सुशीला रमणी ईश्वर का सबसे उत्तम प्रकाश है, जो इस संसार की शोभा बढ़ा रहा है । —**रवीन्द्र**

स्त्रियाँ पूजा करने योग्य, बड़े भाग्यशाली, पुण्यात्मा, गृह का प्रकाश तथा साक्षात् लक्ष्मी होती हैं—इससे स्त्रियों की विशेष रक्षा करनी चाहिए । —**विदुर**

'Tis beauty that doth oft make women proud, 'tis virtue, that doth make them most admired, 'tis modesty that make them seem devine. —**Shakespeare**

सौन्दर्य स्त्रियों को प्राय: अभिमानी बनाता है, सद्गुण उनको अति प्रशंसनीय बनाता है और विनय से वे देवतुल्य हो जाती हैं । —**शेक्सपियर**

आभूषण के बिना पति ही स्त्री का परम आभूषण है, पति से रहित भूषण आदि से स्त्री शोभायमान नहीं होती । —**हितोपदेश**

किसी स्त्री के स्त्रीत्व को भंग करने से पूर्व मर जाना ही एक उत्तम कार्य है, किसी स्त्री को पाप कर्म से बचा लेना सबसे बड़ा कार्य है । —**महात्मा गांधी**

Woman and wine intoxicate the young and old.—**Proverb**

स्त्री और मदिरा, नवयुवकों एवं वृद्धों को मदमत्त बना देती है । —**कहावत**

A woman either loves or hates, she knows no medium.

—**Syrus**

स्त्री प्रेम करती है अथवा घृणा, वह इनके बीच की स्थिति नहीं जानती ।

—**साइरस**

जिमि स्वतन्त्र भए बिगरहिं नारी । —**तुलसी**

भर्तुः शुश्रूषया नारी लभते स्वर्गमुत्तमम् ।
अपि या निर्नमस्कारा निवृत्ता देवपूजनात् ।। —**वाल्मीकि**

देवताओं की पूजा और वन्दना से दूर रहने पर भी जो स्त्री अपने स्वामी की सेवा में लगी रहती है, वह उस सेवा के प्रभाव से उत्तम स्वर्गलोक को प्राप्त होती है ।

स्त्री क्या है ? साक्षात् त्याग की मूर्ति । जब कोई स्त्री किसी काम में जी जान से लग जाती है तो वह पहाड़ को भी हिला देती है । **—महात्मा गांधी**

स्त्रियों का जीवन ऐसा होता है कि वे अपने स्वभाव की भयंकरता को छिपा सकती हैं और बाहर से अपनी तीखी वाणी को मधुर भी बना सकती है ।

—रवीन्द्र

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा ।
धर्मानुकूला, क्षमया धरित्री, भार्य्या च षाड्गुण्यवती च दुर्लभा ।। **—अज्ञात**

कार्य में मन्त्री के समान सलाह देने वाली, सेवादि में दासी के समान काम करने वाली, भोजन कराने में माता के समान पथ्य भोजन कराने वाली, शयन के समय रम्भा के समान सुख देने वाली और धर्म के अनुकूल तथा क्षमादि गुण धारण में पृथ्वी के सदृश ऐसे छः गुणों से युक्त स्त्री दुर्लभ होती है ।

All the reasonings of men are not worth one sentiment of women. **—Voltaire**

पुरुष के सारे तर्क स्त्री के एक भाव की तुलना नहीं कर सकते ।

—वाल्टेयर

'The woman's cause is man's, they rise or sink
Together, dwarfed or godlike, bond or free'.

—Tennyson

स्त्री और पुरुष का ध्येय परस्पर एक है, वे साथ ही साथ उन्नति करते हैं या पतन की ओर जाते हैं, छोटे या देवतुल्य बनते हैं, पराधीन या स्वतंत्र होते हैं । **—टेनीसन**

स्त्री सब कुछ सह सकती है, दारुण से दारुण दुःख, बड़े से बड़ा संकट । अगर नहीं सह सकती तो अपने यौवन-काल की उमंगों का कुचला जाना ।

—प्रेमचन्द

स्त्री सहनशक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, धैर्य का अवतार है ।

—महात्मा गांधी

सन्देह का भार पुरुष ढोता है, स्त्री विश्वास चाहती है।

—लक्ष्मी नारायण मिश्र

स्त्री गालियाँ सह लेती हैं, मार भी सह लेती हैं, पर मैके की निन्दा उससे नहीं सही जाती। **—सुदर्शन**

The test of civilization is the estimate of woman.

—G. W. Curtis

स्त्री के सम्मान से सभ्यता का परिचय मिलता है। **—जी० डब्लू० करटिस**

स्त्रियों की कोमलता पुरुषों की काव्य-कल्पना है। उन्हें शारीरिक सामर्थ्य चाहे न हो, पर उनमें वह धैर्य और साहस है जिस पर काल की दुश्चिन्ताओं का जरा भी असर नहीं होता। **—प्रेमचन्द**

स्त्री बल को जीत सकती है, परन्तु प्रेम और वह भी पति का प्रेम—इससे संग्राम करने की हिम्मत दुनिया के किसी नारी-हृदय में न होगी। यहाँ आकर नारी बेबस हो जाती है। **—सुदर्शन**

तारे आकाश की कविता हैं, तो स्त्रियाँ पृथ्वी की संगीत-माधुरी। **—अज्ञात**

स्त्री के आँसू

नारी का अश्रुजल अपनी एक-एक बूंद में एक-एक बाढ़ लिये रहता है।

—जयशंकर प्रसाद (जनमेजय का नागयज्ञ)

Woman, thou hast encircled the world's heart with the depth of thy tears as the sea has the earth. **—R. N. Tagore**

स्त्री ! तूने अपने अथाह अश्रुओं से संसार के हृदय को उसी प्रकार घेर रखा है, जिस प्रकार समुद्र पृथ्वी को। **—रवीन्द्र**

हम स्त्री की लाल आँखें देख सकते हैं, पर उसकी सजल आँखें नहीं देख सकते। **—सुदर्शन**

Beauty's tears are lovelier than her smiles. **—Campbell**

सुन्दरी के आँसू उसकी मुसकान की अपेक्षा अधिक प्यारे लगते हैं।

—कैम्पबेल

स्त्री रत्न

स्त्री रत्न दुष्कुलादपि ।

—मनुस्मृति

नीच कुल से स्त्री रत्न को ग्रहण करना चाहिये ।

स्थितप्रज्ञ

स्थितप्रज्ञ के श्लोक गाने वाले को शान्तिपूर्वक काम करने की आदत डालनी ही चाहिए । **—महात्मा गांधी**

जिस मनुष्य के चित्त में किसी तरह की कामना उठती ही नहीं और स्वयं आनन्दमय हो जाता है; जिसके चित्त को कड़ी से कडी विपत्ति में भी दुःख नहीं पहुंचता, जो सुख या अभ्युदय में अपने को परम सुखी नहीं मानता है; जिसके पास से भय, प्रीति और क्रोध दूर हट गये हैं, वह मनुष्य स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।

—भगवान् कृष्ण

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता) २-५५

जब मनुष्य मन में उठती हुई सभी कामनाओं का त्याग करता है और आत्मा द्वारा ही आत्मा में सन्तुष्ट रहता है तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है ।

स्थिर बुद्धि

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। **—गीता २-५८**

कछुआ जैसे सब ओर से अंग समेट लेता है वैसे ही जब यह पुरुष इन्द्रियों को उनके विषयों से समेट लेता है, तब उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है ।

दुःख में जो दुःखी न हो, सुख की इच्छा न रखे और जो राग, भय और क्रोध से रहित हो वह स्थिर बुद्धि मुनि कहलाता है ।

जो पुरुष सर्वत्र स्नेह-रहित होकर शुभ या अशुभ की प्राप्ति में न हर्षित होता है न शोक करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है । **—गीता—२-५६,५७**

स्नान

न जलाप्लुतदेहस्य स्नानमित्यभिधीयते ।
स स्नातो यो दमस्नाः शुचिः शुद्धमनोमलः ।। **—महर्षि अगस्त्य**

जल में शरीर को डुबो लेना ही स्नान नहीं कहलाता । जिसने दमरूपी तीर्थ में स्नान किया है—मन-इन्द्रियों को वश में कर रखा है, उसी ने वास्तव में स्नान किया है । जिसने मन का मल धो डाला है, वही शुद्ध है ।

स्नेह के कारण ही विषयों की सत्ता का अनुभव होता है और फिर उनमें राग हो जाता है । **—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)**

स्नेह

स्नेह एक ऐसा चिकना और परिव्यापक भाव है कि उसमें व्यक्तित्व नहीं रहते । स्नेह अपने स्नेह पात्र को कभी 'याद' नहीं करता क्योंकि वह उसे कभी भूलता नहीं । **—अज्ञेय ('शेखर' से)**

स्नेह के कारण ही मनुष्य विषयों में फँसता है और अनेकों प्रकार के दुःख भोगने लगता है । **—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)**

स्पर्धा

स्पर्धा ही जीवन है । उसमें पीछे रहना जीवन की प्रगति को रोकना है ।
—निराला

स्मरण, स्मृति

यादें हमारे जीवन को हरा-भरा रखने के लिए, हमारे साथ प्रभु का पक्षपात है । यादें पंख हैं जो उड़ने का पुरुषार्थ देती हैं । **—माखनलाल चतुर्वेदी**

गोताखोर-सा मन आग्रहपूर्वक स्मृति सिंधु में विवश गोते लगाकर जाने कब की कहां की यादों के खोखले सीप बटोरा करता है ।
—अमृत लाल नागर (खंजन नयन)

स्मृति जब अपनी सहज लय में होती है तब ध्यान में सजीवता भी आ जाती है । **—अमृत लाल नागर (खंजन नयन)**

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुःख काहे को होय ॥ —कबीर

Memory is the treasurer of the mind.

स्मृति मस्तिष्क का खजांची है। —कहावत

Memory, the priestess kills the present, and offers its heart to the shrine of the dead past. **—R. N. Tagore**

स्मृति वह पुजारिन है जो वर्तमान को समाप्त कर अपना हृदय मृतक भूत की मूर्ति पर अर्पित कर देती है। —रवीन्द्र

सुमिरन सुरत लगाइ के मुख तें कछु न बोल।
बाहर के पट देइ के अंतर के पट खोल॥ —कबीर

The true art of memory is the art of attention.

—S. Johnson

स्मरण की सच्ची कला ध्यान की कला है। —सैमुएल जानसन

स्वकर्म

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विंदति मानवः॥ —गीता १८।४६

जिस परमात्मा से सम्पूर्ण प्राणियों की प्रवृत्ति होती है और जिस परमेश्वर से यह सब संसार व्याप्त है उस परमेश्वर को जो कोई स्वकर्म से जपता है वह मोक्ष पाता है।

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)—१८।४८

अपने स्वाभाविक कर्म में कुछ दोष हो तो भी उसे न छोड़ना चाहिए, सब ही कर्म दोषयुक्त हैं, जैसे अग्नि धुएँ से व्याप्त है।

स्वच्छता

दरिद्रता धीरतया विराजते
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते । —चाणक्य

दरिद्रता भी धीरता से शोभित होती है, स्वच्छता से कुवस्त्र भी अच्छा लगता है ।

स्वच्छता फटे पुराने वस्त्रों में भी सौन्दर्य ला देती है । —अज्ञात

स्वतन्त्र

Man is born free, and yet he is everywhere in chains.

—Rousseau

मनुष्य जन्म से स्वतन्त्र है, लेकिन वह सब जगह जंजीरों से जकड़ा हुआ है ।
—रूसो

परमात्मा अनादि है, स्वतन्त्र और स्वयंदर्शी है, अतः मानव-मात्र स्वतन्त्र स्वयंद्रष्टा है और इसीलिए स्वतन्त्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है ।

—विपिनचन्द्र पाल

स्वतन्त्र वही हो सकता है जो अपना काम आप कर लेता है । **—विनोबा**

It is better to rule in hell than be governed in heaven.

—Milton

स्वर्ग में दास बनने की अपेक्षा नरक में शासन करना कहीं अच्छा है ।
—मिल्टन

No man is free who is not master of himself. **—Epictetus**

वह व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है जो स्वयं अपना स्वामी नहीं है । **—इपिक्टेटस**

स्वतन्त्रता

स्वतन्त्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है । **—लोकमान्य तिलक**

स्वतन्त्रता जन्म-सिद्ध हक नहीं, कर्म-सिद्ध हक है । **—विनोबा**

Liberty is not a personal affair only but a social contract. It is an accommodation of interest. **—A. G. Gardner**

स्वतन्त्रता एक व्यक्तिगत मामला ही नहीं है, बल्कि एक सामाजिक ठेका है। यह स्वार्थों की सुविधा है। —ए० जी० गार्डनर

Eternal vigilance is the price of liberty. **—J. P. Curran**

स्वतन्त्रता का मूल्य निरन्तर सावधानी है। **—जे० पी० कुरन**

Those who deny freedom to others deserve it not for themselves and under a just God cannot long retain it. **—Lincoln**

जो दूसरे को स्वतन्त्रता से वंचित रखते हैं वे स्वयं उसके अधिकारी नहीं हैं और न्यायप्रिय ईश्वर के शासन में उसको बहुत दिनों तक नहीं रख सकते।

—लिंकन

The tree of liberty grows only when watered by the blood of tyrants. **—Barere**

स्वतन्त्रता का वृक्ष केवल अत्याचारियों के रक्त से सींचने पर पनपता है।

—बरेरे

स्वागत स्वतंत्रते, स्वागत, जिन्दगी और आत्मा की अमरता के बाद ईश्वर की सर्वोत्तम देन है। **—टॉमसन**

स्वतन्त्रता राष्ट्रों का शाश्वत यौवन है। **—अज्ञात**

We hold these truths to be self-evident, that all men are created equal, that they are endowed by their creator with certain unalienable rights, that among these are life, liberty, and the pursuit of happiness.

—The Declaration of American Independence

हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं कि सब मनुष्य समान उत्पन्न हुए है, उनके स्रष्टा ने उन्हें कुछ अनपहरणीय अधिकारों से सम्पन्न किया है और इनमें जीवन, स्वतन्त्रता और सुख-प्राप्ति के प्रयत्न भी हैं।

—अमेरिकन स्वतंत्रता की घोषणा १७७६

मुझे स्वतन्त्रता दो अथवा मृत्यु। **—पेट्रिक हेनरी**

Liberty too must be limited in order to be possessed.

—Burke

सुरक्षा के लिए स्वतन्त्रता को भी सीमित होना चाहिए। —बर्क

When liberty is gone, life grows insipid and has lost its relish. **—Addison**

जब स्वतन्त्रता चली जाती है तब जीवन निस्तेज हो जाता है, उसमें कोई उत्साह नहीं रहता। **—एडीसन**

The god who gave us life, gave us liberty at the same time. **—Jefferson**

जिस ईश्वर ने हमको जीवन दिया है, उसने उसी समय हमें स्वतन्त्रता भी दी है। **—जेफरसन**

स्वतन्त्रता के विजय-नाद एक दिन में नहीं प्राप्त किये जाते क्योंकि स्वतंत्रता की देवी बड़ी कठिनाई से सन्तुष्ट और तृप्त होती है। वह भक्तों की कठोर एवं दीर्घकालव्यापी तपस्या चाहती है और परीक्षा लेती है। **—सुरेन्द्रनाथ बनर्जी**

What light is to the eyes, what air is to the lungs, what love is to the heart, liberty is to the soul of man.

—R. G. Ingersoll

नेत्रों के लिए जैसे प्रकाश है, फेफड़ों के लिए जैसे वायु है, हृदय के लिए जैसे प्यार है, उसी प्रकार मनुष्य की आत्मा के लिए स्वतन्त्रता है।

—आर० जी० इन्गरसोल

स्वदेशप्रेम

जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं। **—मैथिलीशरण गुप्त**

जो जन्म भूमि-जननी के भी,
संकट में आता है न काम।
जीवित रहकर भी वह मृतवत,
कोई लेता उसका न नाम।।

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

Breathes there the man with soul so dead
Who never to himself hath said
'This is my own my native land' **—Walter Scott**

क्या कोई मनुष्य ऐसा मृत-चित्त है जिसने कभी अपने मन में ऐसा न कहा हो कि यह मेरा अपना प्यारा देश है। **—वाल्टर स्काट**

देश-प्रेम के दो शब्दों के सामंजस्य में वशीकरण मंत्र है, जादू का सम्मिश्रण है। यह वह कसौटी है जिस पर देश-भक्तों की परख होती है।

—बलभद्र प्रसाद गुप्त 'रसिक'

देश-प्रेम की सत्ता, जहाँ एक ओर संघर्ष तथा संकट-काल में प्रलयाग्नि का सा काम करती है वहाँ दूसरी ही ओर इसका स्पर्श हिमानी शिखर-सा शीतल भी है। **—बलभद्र प्रसाद गुप्त 'रसिक'**

स्वदेशाभिमान

यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो सीखो एक मछली से, जो स्वदेश (पानी) के लिए तड़प-तड़प कर जान दे देती है। **—सुभाषचन्द्र बोस**

जिसको न निज गौरव तथा,
निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु है निरा,
और मृतक समान है। **—मैथिलीशरण गुप्त**

स्वदेशी

स्वदेशी का व्रत तो सदा ही पालना है द्वेष या वैर भाव से नहीं, बल्कि अपने प्यारे देश के प्रति कर्त्तव्यबुद्धि से प्रेरित होकर पालना है। **—महात्मा गांधी**

स्वधर्म

श्रेयान्स्वधर्मो निगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।। **—गीता ३-३५**

परधर्म अति उत्तम हो तो भी उससे अपना निर्गुण धर्म ही अच्छा है, क्योंकि अपने स्वाभाविक धर्म के करने से पाप नहीं लगता।

अपने धर्म में मर जाना भी कल्याणकारी होता है, किन्तु पर धर्म भयावह होता है। **—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)**

स्वभाव

अन्दर की वस्तु को बाहर की, भाव की वस्तु को भाषा की, निज की वस्तु को विश्व की और क्षणिक वस्तु को चिरस्थायी बना देने की आकांक्षा मानव स्वभाव है। **—अज्ञात**

मनुष्यों का यह स्वभाव है कि वह दूसरों को अपने से अधिक सुखी समझते हैं। और स्वयं वैसा ही होना चाहते हैं। **—सुकरात**

स्वभाव मिलने पर ही मन मिलता है। जैसे दूध दही से ही जमता है कांजी से फट जाता है। **—अज्ञात**

मनुष्य की सच्ची प्रकृति ईश्वरत्त्व है। **—रामतीर्थ**

प्राणीमात्र अपने स्वभाव का अनुसरण करते हैं। **—श्रीकृष्ण (गीता)**

आत्मा का स्वभाव सुख-दुःख से अछूते रहना है। उस स्वभाव तक मनुष्य को पहुँचना है। **—महात्मा गांधी**

मानव-स्वभाव निम्न व पतित होने की अपेक्षा उच्च व दिव्य है।
—रस्किन (विजयपथ)

कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहि बीच ।
नल-बल जल ऊँचो चढ़ै, अन्त नीच को नीच ।। **—बिहारी**

रहिमन लाख भली करौ, अगुनी अगुन न जाय ।
राग सुनत पय पियत हूँ, साँप सहज धरि खाय ।। **—रहीम**

मनुष्य-स्वभाव, आदर्शों और सिद्धान्तों से भी प्रबल है। **—अज्ञात**

उपभोक्तुं न जानाति श्रियं प्राप्यापि मानवः ।
आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया ॥ —अज्ञात

गर्दन तक पानी में खड़ा रहकर भी कुत्ता जैसे जीभ से पानी चाटता है वैसे ही प्रभूत सम्पत्ति पाकर भी मनुष्य उसका ढंग से उपभोग करना नहीं जानता ।

न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणं न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः ।
स्वभाव एवात्र तथातिरिच्यते यथा प्रकृत्या मधुरं गवां पयः ॥ —हितो०

दुरात्मा वेदाध्ययन करता है या धर्मशास्त्र पढ़ता है, यह कोई कारण नहीं है । स्वभाव ही सर्वोपरि होता है। जैसे गाय का दूध स्वभाव से ही मधुर होता है ।

मेरी इन्द्रियों का स्वभाव ही ऐसा हो गया है कि जो न देखना चाहिये उसकी तरफ आँख ही नहीं जाती, जो सुनने योग्य नहीं है उसे कान सुनते ही नहीं । —सन्त ज्ञानेश्वर

स्त्रियाँ, राजा और लताएँ—इनका प्रायः ऐसा स्वभाव होता है कि जो भी बगल में मिलता है उसी से लिपट जाती हैं । —पंचतंत्र

मनुष्य का स्वभाव ही है । तनिक-सा दोष देखते ही, कुछ क्षण पूर्व की सभी बातें भूलते उसे कितनी देर लगती है । —शरत्चन्द्र (श्रीकान्त)

स्वराज्य

यतेमहि स्वराज्ये—हम स्वराज्य के लिए सदा प्रयत्न करें । —ऋग्वेद

स्वराज्य चित्त की वृत्ति मात्र है । ज्यों ही पराधीनता का आतंक दिल से निकल गया बस स्वराज्य मिल गया । भय ही पराधीनता है, निर्भयता ही स्वराज्य है । —प्रेमचन्द

जैसे माता बच्चे को उठाने के लिए नीचे झुकती है, उसी तरह हमें भी नीचे झुकना चाहिए और नीचे वालों को ऊपर उठाना चाहिएं । तभी विषमता मिटेगी और तभी सच्चा स्वराज्य आयेगा । —विनोबा

स्वराज्य गणेशजी की वह मूर्ति है जिसका निर्माण हमें मिट्टी में से करना है । —विनोबा

स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है । —लोकमान्य तिलक

Every man, and every body of men on earth, possess the right of self-government. **—Thomas Jefferson**

इस भूतल पर प्रत्येक मनुष्य को और मनुष्यों के वर्ग को, स्वशासन का अधिकार है। **—टामस जैफर्सन**

स्वर्ग

यदि स्वर्ग कोई स्थान है तो प्रेम ही वहाँ जाने का मार्ग है। **—टालस्टाय**

जहाँ दुःख का लेश भी नहीं है उस स्वर्ग को दुःख-पथ से ही पहुँचने का मार्ग है। **—काउपर**

दो प्रकार के व्यक्ति संसार में स्वर्ग के ऊपर भी स्थित होते हैं—एक तो जो शक्तिशाली होकर क्षमा करता है और दूसरा जो दरिद्र होकर भी कुछ दान करता है। **—वेदव्यास (महाभारत, उद्योग पर्व)**

वह स्वर्ग तो नरक है जहाँ प्रियजन से विच्छेद है।
—जयशंकर प्रसाद (आकाशद्वीप-स्वर्ग के खंडहर में)

स्वर्ग मनुष्य के जीवन में है। वह ठोस नहीं है, तरल है जो मन्दाकिनी की तरह मानव के प्राणों से कल-कल ध्वनि करता है। वह प्रेम में है, दया में है, सहानुभूति में है। **—डा० राम कुमार वर्मा**

Heaven means to be one with God. **—Confucius**

ईश्वर से एकता स्थापित करना ही स्वर्ग है। **—कन्फ्यूशस**

जो परोपकार में रत है, ईश्वर में जिसको विश्वास है और सत्य का जो अनुसरण करता है उसको भू-मंडल ही स्वर्ग है। **—बेकन**

जहाँ हमारी सुन्दर कल्पना आदर्श का नीड़ बनकर विश्राम करती है वही स्वर्ग है। वही बिहार का, वही प्रेम करने का स्थल स्वर्ग है और वह इसी लोक में मिलता है। **—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)**

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven. **—Milton**

मन अपने भीतर ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकता है। —मिल्टन

दान, पश्चात्ताप, सन्तोष, संयम, दीनता, सत्य और दया ये स्वर्ग के सात द्वार हैं।

स्वर्ग और पृथ्वी सब हमारे ही अन्दर है। हम पृथ्वी से तो परिचित हैं, पर अपने अन्दर के स्वर्ग से बिल्कुल अपरिचित हैं। —महात्मा गाँधी

सदा प्रसन्नं मुखमिष्टवाणी, सुशीलता च स्वजनेषु सख्यम्।
सतां प्रसंगः खलसंगत्यागश्चि ह्वानि देहे त्रिदिवस्थितानाम्॥ —अज्ञात

सदा प्रसन्नमुख रहना, प्रिय बोलना, सुशीलता, आत्मीय जनों से प्रेम, सज्जनों का संग और नीचों की उपेक्षा—ये स्वर्ग में रहने वालों के लक्षण हैं।

यस्य पुत्रौ वशीभूतो भार्य्या छन्दानुगामिगी।
विभवे यश्च सन्तुष्टस्तस्य स्वर्गमिहैव हि॥ —वेदव्यास

जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, पत्नी अनुरूप हो और मन में धन की तृष्णा न हो, वह इस जीवन में ही स्वर्ग पा लेता है।

तेरा स्वर्ग तेरी माँ के पैरों के तले है। —हजरत मोहम्मद

स्वर्ण

A mask of gold hides all deformities. —**Dekkar**

सोने का घूंघट सारी कुरूपता को ढक देता है। —डैकर

It is much better to have your gold in the hand than in the heart. —**Fuller**

सोने को हृदय की अपेक्षा हाथ में रखना कहीं अच्छा है। —फुलर

Gold is no balm to a wounded spirit. —**Proverb**

स्वर्ण घायल आत्मा के लिए लेप नहीं है। —कहावत

अग्निदाहे न मे दुःखं छेदे न निकषे न वा।
यत्तदेव महद्दुःखं गुञ्जया सह तोलनम्॥ —अज्ञात

स्वर्ण कहता है—मुझे न तो आग में तपाने से दुःख होता है, न काटने-पीटने से, न कसौटी पर कसने से, मेरे लिए जो महान् दुःख का कारण है वह है घुंघची के साथ मुझे तोलना।

पक्षी के पंख को स्वर्ण से आभूषित कर दो तो वह आकाश में फिर कभी न उड़ सकेगा। —रवीन्द्र

स्वागत

जो पथ स्वदेश-सेवा का हैं अपनाते।
उनका गुण मानव मुक्त-कण्ठ से गाते॥
बनते जो मातृ-भूमि के परम पुजारी।
सच्चे स्वागत के होते वे अधिकारी॥

—बिनोद चन्द्र पाण्डेय 'बिनोद' (अमर सुभाष)

स्वाद (दे० 'भूख')

स्वाद तो भूख में है। सूखी रोटी भूखे को जितनी स्वादिष्ट लगेगी उतना भरपेट खाये हुए को लड्डू भी नहीं लगेगा। —महात्मा गाँधी

स्वाधीनता

बंधे बैल और छुटे साँड़ में बड़ा अन्तर है। एक रातिब पाकर भी दुर्बल है, दूसरा घास-पात ही खाकर मस्त हो रहा है। स्वाधीनता बड़ी पोषक वस्तु है।

—प्रेमचन्द (प्रेम पचीसी)

पराधीनता की विजय से स्वाधीनता की पराजय सहस्रगुना अच्छी है।

—अज्ञात

स्वाधीनता ही स्वाधीनता का अन्त नहीं है। धर्म, शान्ति, काव्य-आनन्द—यह और भी बड़े हैं। इनके चरम विकास के लिए स्वाधीनता चाहिए, नहीं तो उसका मूल्य ही क्या है? —शरत्चन्द्र (अधिकार)

स्वाभिमान

स्वाभिमान एक सात्विक सुगन्धित कमल पुष्प है जिसके चारों ओर सद्गुणों के भ्रमर सदैव गुंजित रहते हैं। —अ ात

स्वामी

स्वामी की आँखें उसके दोनों हाथों की अपेक्षा अधिक काम करती हैं। —अज्ञात

Masters are mostly the greatest servants in the house. —**Proverb**

स्वामी बहुधा घर के सबसे बड़े सेवक होते हैं। —**कहावत**

Masters should be sometimes blind and sometimes deaf. —**Proverb**

स्वामी को कभी-कभी अन्धा और कभी बहरा होना चाहिए। —**कहावत**

स्वार्थ

सुर नर मुनि सब की यह रीती।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती॥
—**तुलसी (मानस–किष्किन्धा०)**

स्वार्थ में मनुष्य बावला हो जाता है। —**प्रेमचन्द**

स्वार्थ की अनुकूलता और प्रतिकूलता से ही मित्र और शत्रु बना करते हैं।
—**वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)**

स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं।
सेवें पक्षी सरस तरु, निरस भये उड़ जाहिं॥ —**तुलसी**

कौन किसी के साथ निस्वार्थ सलूक करता है। भिक्षा तक तो लोग स्वार्थ ही के लिए देते हैं। —**प्रेमचन्द**

जेहिं ते कछु निज स्वारथ होई।
तेहिं पर ममता कर सब कोई॥
—**तुलसी (मानस, उत्तर० ६४ख-४)**

अगर मूर्ख, लोभ और मोह के पंजे में फंस जायं तो वे क्षम्य हैं; परन्तु विद्या और सभ्यता के उपासकों की स्वार्थान्धता अत्यन्त लज्जाजनक है।
—**प्रेमचन्द**

स्वार्थी

स्वार्थी मनुष्य ही बलिदान करता है। वह आत्म-समर्पण कर देता है अपने स्वार्थ के लिए, अपने ध्येय के लिए। —**अज्ञात**

स्वार्थी और कपटी लोग सरल प्रकृति के उद्योगी व्यक्तियों के श्रमफल का अपहरण कर सकते हैं, परन्तु उनमें जो नवनिर्माण करने की शक्ति होती है उसे वे नहीं चुरा सकते। —**अज्ञात**

स्वावलम्बन

'स्वावलम्बन' आत्मनिर्भर सफलता का अन्तिम साधन है।

—**स्वामी विवेकानन्द**

स्वास्थ्य

त्रय उपस्तम्भा आहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति। —**महर्षि चरक**

स्वास्थ्यरूपी घर को स्थिर रखने के लिए उसके तीनों पाये—आहार, स्वप्न (निद्रा), ब्रह्मचर्य ठीक-ठीक रखने चाहिए। —**अज्ञात**

Health lies in labour and there is no royal road to it but through toil. —**Wendell Phillips**

स्वास्थ्य का निवास परिश्रम में है और श्रम के अतिरिक्त वहाँ तक पहुंचने का कोई दूसरा राजमार्ग नहीं है। —**वेन्डेल फिलिप्स**

जल्दी सोना और प्रातः उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनवान् और बुद्धिमान् बनाता है। —**कहावत**

Good health and good sense are two of life's greatest blessings. —**P. Syrus**

अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

—**पी० साइरस**

सम्भवस्वायो वपुषः परमारोग्याय। —**राजशेखर (काव्यमीमांसा)**

उचित निद्रा से शरीर रोग-रहित रहता है।

हंसना

Always laugh when you can; it is a cheap medicine. Merriment is a philosophy not well understood. It is the sunny side of existence. —**Byron**

यदि सम्भव हो, सदा मुस्कुराते रहो। यह एक सस्ती दवा है। आनन्द जीवन का अनबुझ दर्शनशास्त्र है। यह हमारे अस्तित्व का उज्जवल भाग है। **—बायरन**

Beware of him who hates the laugh of a child. **—Lavater**

उससे सावधान रहो जो बालक की हँसी से घृणा करता है। **—लवेटर**

Man is the only creature endowed with the power of the laughter. **—Greville**

मानव ही केवल एक ऐसा प्राणी है जिसमें हंसने की शक्ति है। **—ग्रेवाइल**

ठट्ठा मार कर हंसने से मनुष्य का पाचन तीव्र होकर उसका स्वास्थ्य बढ़ता है। **—अज्ञात**

Laugh and the world laughs with you,
Weep and you weep alóne ;
For the sad old earth must borrow its mirth,
But has trouble enough of its own.

—E. W. Wilcox (Solitude)

हंसो और संसार तुम्हारे साथ हंसेगा, रोओ और तुम्हें अकेले रोना पड़ेगा। दुःखी वृद्ध पृथ्वी को प्रसन्नता उधार लेनी है; किन्तु उसके पास अपनी व्यथा काफी है। **—एला बीलर विलकाक्स**

हँसमुख

To be freeminded and cheerfully disposed at hours of meals, and of sleep, and of exercise, is one of the best precepts of long lasting. **—Bacon**

भोजन, निद्रा और व्यायाम में चिन्तारहित तथा हंसमुख स्वभाव दीर्घ आयु का सर्वोत्तम नुसखा है। **—बेकन**

A cheerful look makes a dish a feast. **—Herbert**

हंसमुख चेहरे से दिया गया जलपान भी स्वादिष्ट भोजन हो जाता है। **—हर्बर्ट**

हंसमुख मनुष्य वह फुहारा है जिसके शीतल छींटे मन को ठंडा करते हैं। **—अज्ञात**

हंसी (दे० 'प्रसन्नता', 'मुसकान')

जब जिन्दगी के कगारों की हरियाली सूख गयी हो, पक्षियों का कलरव मौन हो गया हो, सूरज के चेहरे पर ग्रहण की छाया गहरी होती जा रही हो, परखे हुए मित्र और आत्मीय जन काँटों के रास्ते पर मुझे अकेला छोड़ कर चल दिये हों और आसमान की सारी नाराजी मेरी तकदीर पर बरसने वाली हो, तो हे मेरे प्रभु, तुम मेरे साथ इतना अनुग्रह करना कि मेरे होठों पर हंसी की एक उजली रेखा खिंच जाये। **—योन नागोची**

मनुष्य बराबर वालों की हंसी नहीं सह सकता; क्योंकि उनकी हंसी में ईर्ष्या, व्यंग और जलन होती है। **—प्रेमचन्द**

A good laugh is sunshine in a house. **—Thackeray**

अच्छी हंसी गृह की प्रकाश किरण है। **—थैकरे**

हंसी जीवन का एक अंग है, इसलिए इसको गम्भीर साहित्य से भी अलग न करना चाहिए। **—लिनयूटांग**

हंसी छूत की बीमारी है, आपको हंसी आयी नहीं कि दूसरे को जबरदस्ती दाँत निकालने पड़ेंगे, भले ही उसकी दाँत निकालने की इच्छा हो या न हो।

—प्रेमलता 'दीप'

हमारे भीतर का विषाद और अवसाद हंसी के तेज झोकों से रुई के कतरों की भाँति उड़ कर नष्ट हो जाता है। **—डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय**

हमें हंसी तभी आती है जब हम किसी वस्तु और उसके मनोभाव में यकायक कोई असम्बद्धता अथवा असंगति देख लेते हैं। **—शोपेनहावर**

The burden of self is lightened when I laugh at my self.

—R. N. Tagore

जब मैं स्वयं पर हंसता हूं तो मेरा अपना बोझ हलका हो जाता है।**—रवीन्द्र**

हंसी मन की गाँठें बड़ी आसानी से खोल देती है—मेरे मन की ही नहीं, तुम्हारे मन की भी ! **—महात्मा गांधी**

Laughter is one of the most divine gifts bestowed on mankind. **—Anonymous**

हंसी मानव-जाति को दिये गये सर्वोत्तम दिव्य उपहारों में से एक है।

—अज्ञात

हंसी की सुन्दर पृष्ठभूमि पर जवानी के प्रसून खिलते हैं। जवानी को तरोताजा रखने के लिए आप खूब हंसिए। **—जार्ज बर्नार्ड शा**

यौवन का आनन्द हंसने में है। हंसी ही यौवन का सुन्दर श्रृंगार है, और जो व्यक्ति यौवन का श्रृंगार नहीं कर सकता उसके पास यह हर्गिज नहीं ठहर सकता। **—केरीबोर**

उल्लास और हंसी का ही नाम जवानी है। **—अज्ञात**

हंसी प्रकृति की सबसे बड़ी नियामत है। **—डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय**

No man who has once heartily and wholly laughed can be altogether and irreclaimably depraved. **—Carlyle**

कोई भी व्यक्ति जिसने अच्छी तरह दिल खोल कर एक बार हंसा है, बिलकुल ऐसा दुराचारी नहीं हो सकता जिसका पुनः सुधार न हो सके। **—कार्लाइल**

मुझे विश्वास है कि हर बार जब कोई मनुष्य मुस्कराता है या इससे अधिक हंसता है तो वह अपने जीवन में वृद्धि करता है। **—स्टर्न**

हंसी हमारे जीवन की सफलता की चाभी है। **—अज्ञात**

जवानी का मूल्य केवल हंसी के सिक्के में चुकाया जा सकता है। जिसके पास यह अमूल्य सिक्का है—उसकी जवानी हमेशा सेवा करती रहेगी। **—उमेश जोशी**

हत्या

For murder, though it have no tongue, will speak with most miraculous organ. **—Shakespeare**

हत्या के जीभ नहीं होती तो क्या, समय पर वह सिर पर चढ़ कर बोलती है। **—शेक्सपियर**

मानव रक्त का प्रवाह संगीत का प्रवाह नहीं, रस का प्रवाह नहीं—एक बीभत्स दृश्य है जिसे देख कर आँखें मुंह फेर लेती हैं, हृदय सिर झुका लेता है। **—प्रेमचन्द**

One murder makes a villain; millions, a hero; numbers sanctify the crime. **—Porteus**

एक हत्या से मनुष्य हत्यारा हो जाता है, लाखों की हत्या से वीर; अधिक संख्या पाप को धो देती है। —पोर्टियस

हमदर्दी (दे० 'सहानुभूति')

दुखियारों को हमदर्दी के दो आँसू भी कम प्यारे नहीं होते। —प्रेमचन्द

हया (दे० 'लज्जा')

पर्दा कपड़े का नहीं होता, हया दूसरी चीज है। —प्रेमचन्द

तुमको बख्शा है खुदा ने जो हया का जेवर।
मोल उसका नहीं कारूँ का खजाना हर्गिज ॥
—पं० बृजनारायण चकबस्त

हरिनाम महिमा

प्रमादादपि संस्पृष्टो, यथानलकणो दहेत्।
तथौष्ठपुट-संस्पृष्टं हरिनाम हरेदघम् ॥ —स्कंधपुराण

जैसे आग की चिनगारी भूल से भी छू जाय तो वह जला ही देती है; उसी प्रकार होंठों से श्री हरिनाम का स्पर्श होते ही वह समस्त पापों को हर लेता है।

हरिः सर्वेषु भूतेषु भगवानास्त ईश्वरः।
इति भूतानि मनसा कामैस्तैः साधुः मानयेत् ॥
—श्रीमद्भागवत ७-७-३२

समस्त भूत-प्राणियों में सर्वेश्वर भगवान श्री हरि विराजमान हैं, यो अपने मन में समझते हुए उन सबको इच्छानुसार वस्तुएं देकर भली भाँति सम्मानित करना चाहिये।

हरिनाम

उहां कबहूं न जाइए, जहां न हरि का नाम।
दीगम्बर के गांव में, धोबी का क्या काम ॥ —मलूकदास

आठ पहर हरिनाम में, लगा रहे जो कोय।
कह मलूक ता दास को, आवागमन न होय ॥ —मलूकदास

हरि प्रेम

कबहुं हंसै रोवै कबहुं, नाचत करि गुणगान ।
नारायण तन सुधि नहीं, लग्यो प्रेम को बान ।।

—नारायण स्वामी

नारायण जा के दृगन, सुंदर श्याम समाय ।
फूल पात फल डार में, ताकौं वही दिखाय ।।

—नारायण स्वामी

हरि भक्त

जिनको मन हरि पद कमल, निसि दिन भ्रमर समान ।
नारायण तिनसों मिलैं, कबहुं न होवे हानि ।।

—नारायण स्वामी

हरि भक्ति

उज्जवल पहिने कापड़ा, पान सुपारी खाय ।
कबीर हरि की भक्ति बिन, बांधा यमपुर जाय ।। —कबीर

नारायण हरि भक्ति की, प्रथम यही पहिचान ।
आप अमानी ह्वै रहैं देत और को मान ।।

—नारायण स्वामी

कपट गाँठ मन में नहीं, सब सों सरल सुभाव ।
नारायण ता भक्त की, लगी किनारे नाव ।।

—नारायण स्वामी

हरि मिलन

नारायण अति कठिन है, हरि मिलिबै की बाट ।
या मारग तब पग धरे, प्रथम शीश दै काट ।।

—नारायण स्वामी

हरि लगन

नारायण हरि लगन में, यह पांचों न सुहात ।
विषय भोग, निद्रा, हंसी, जगतप्रीत, बहु बात ।।

—नारायण स्वामी

लगन लगन सबही कहैं, लगन कहावै सोय ।
नारायण जा लगन में, तन मन दीजै खोय ।।

—नारायण स्वामी

हरि

आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, नक्षत्र, समस्त जीव, दिशा, वृक्ष आदि नदियाँ, समुद्र तथा अन्यान्य जितने भी भूत समुदाय हैं, वे सब श्री हरि के शरीर हैं—ऐसा मानकर अनन्य भाव से सबको प्रणाम करे ।

—श्रीमद्भागवत ११-२-४१

हर्ष

The most profound joy has more of gravity than of gaiety in it. **—Montaigne**

पूर्ण हर्ष में आनन्द की अपेक्षा गंभीरता अधिक है । **—मानटेन**

Great joy, especially after a sudden change of circumstances is apt to be silent, and dwells rather in the heart than on the tongue. **—Fielding**

अधिक हर्ष, मुख्यतः परिस्थिति में एकाएक परिवर्तन होने पर, शांत होता है और जिह्वा की अपेक्षा हृदय में निवास करता है । **—फील्डिंग**

हलवाहा

हल चलाने वाले अपने शरीर का हवन किया करते हैं । खेत उनकी हवनशाला है । उनके हवनकुंड की ज्वाला की किरणें चावल के लम्बे और सफेद दानों के रूप में निकलती हैं । गेहूँ के लाल-लाल दाने इस अग्नि की चिनगारियों की डालियाँ-सी हैं । **—पूर्णसिंह**

हाथ

अयं मे हस्तो भगवान् । **—अथर्ववेद**

यह मेरा हाथ ही ऐश्वर्य का घर है ।

कृत्यं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः । —अथर्ववेद (७-५२-८)

मेरे दाहिने हाथ में कर्म-पुरुषार्थ है और सफलता बाँये हाथ में रखी हुई है ।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर । —अथर्ववेद (३-२४-५)

सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो, और हजारों हाथों से बाँटो ।

हानि

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ । —तुलसी

Wise men never sit and wail their loss, but cheerily seek how to redress their harms. **—Shakespeare**

बुद्धिमान् मनुष्य अपनी हानि पर कभी नहीं रोते, अपितु प्रसन्नतापूर्वक क्षतिपूर्ति का उपाय करते हैं । —शेक्सपियर

My loss may shine yet goodlier than your gain,
When time and God give judgment. **—Swimburne**

जब समय और ईश्वर न्याय करेगा मेरी हानि तुम्हारे लाभ की अपेक्षा कहीं अधिक चमकेगी । —स्विमबर्न

हार (दे० 'पराजय')

निर्लज्ज हार कर भी नहीं हारता, मर कर भी नहीं मरता ।
—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

जितनी बार हमारा पतन हो उतनी बार उठने में गौरव है ।
—महात्मा गांधी

हार मौत से भी बुरी है । —सुदर्शन

What is defeat ? Nothing but education, nothing but the first step to something better. **—Wendell Phillips**

हार क्या है ? शिक्षा के अतिरिक्त कुछ नहीं, एक अच्छी स्थिति के लिए केवल पहला कदम है । —वेन्डेल फिलिप्स

They never fail who die in a great cause. **—Byron**

यावत्स्वस्थो ह्ययं देहो यावन्मृत्युश्च दूरतः ।
तावदात्महितं कुर्यात्प्राणान्ते किं करिष्यति ।। —चाणक्य

जब तक देह निरोग है और जब तक मृत्यु दूर है, तभी तक ही पुण्यादि करके अपना हित करना उचित है, मृत्यु हो जाने पर कोई क्या करेगा।

हिन्दी

हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

—महर्षि दयानन्द

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी-प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत-बन्धु हैं। **—योगिराज अरविन्द**

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। **—महात्मा गांधी**

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा-पद की अधिकारिणी है। **—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस**

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं मान सकता। **—आचार्य विनोबा भावे**

राष्ट्रभाषा के प्रचार को मैं राष्ट्रीयता का अंग मानता हूँ।

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

हिन्दी स्वयं अपनी ताकत से बढ़ेगी। **—पं०नेहरू**

हिन्दी का प्रचार राष्ट्रीयता का प्रचार है। **—राजर्षि टंडन**

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। **—महात्मा गांधी**

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

—सुमित्रानन्दन पंत

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न उर को शूल।।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना नहीं है, वह तो है ही।

—कन्हैयालाल मा० मुंशी

हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है। —डा० अमरनाथ झा

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

—मैथिलीशरण गुप्त

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगावें। हम यही समझें कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है। —विनोबा

हिन्दू

वर्णाश्रम धर्मानुकूल आचार-विचार के द्वारा जीवन व्यतीत करने वाला ही हिन्दू माना जा सकता है।

—जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णों में उत्पन्न होकर वेद-शास्त्रों को अपना धर्म-ग्रन्थ मानने वाला ही हिन्दू है।

—जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

यूनानियों ने व्याकरण में जो सफलता प्राप्त की, वह संसार भर के सबसे बड़े वैयाकरण पाणिनि के आगे कुछ भी नहीं थी। —प्रो० मैक्समूलर

यूरोप के प्रथम दार्शनिक प्लेटो और पाइथैगोरस दोनों ने दर्शनशास्त्र का ज्ञान भारतीय गुरुओं से प्राप्त किया। —मॉनियर विलियम्स

पाश्चात्य दर्शनशास्त्र के आदि गुरु आर्य ऋषि हैं, इसमें सन्देह नहीं।

—प्रसिद्ध इतिहासज्ञ लैथब्रिज

हिन्दू चिकित्सक शल्य-क्रिया (शस्त्र-चिकित्सा) में सिद्धहस्त थे। उन्हीं से यूनानियों ने भी वैद्यक का ज्ञान प्राप्त किया। —डा० हण्टर

शल्य-चिकित्सा (शस्त्र-चिकित्सा) में हिन्दुओं ने जो उन्नति की थी, वह उतनी ही आश्चर्यजनक थी जितनी रसायनशास्त्र में की हुई उन्नति। —एलफिंस्टन

सारी आर्य जाति ही वैज्ञानिकों की जाति थी। —प्रोफेसर मैक्समूलर

बीजगणित और रेखागणित का आविष्कार और ज्योतिष के साथ उनका प्रथम प्रयोग हिन्दुओं के ही द्वारा हुआ था। —मॉनियर विलियम्स

हिमालय का 'हि' और सिन्धु (समुद्र) का इन्धु लेकर 'हिन्धू' शब्द बना है। उसी का अपभ्रंश हिन्दू शब्द है। हिमालय से समुद्र तक के स्थान का हिन्दुस्तान और उसमें बसने वाली जाति का नाम हिन्दू है।

—जयदयाल गोयनदका

हिन्दू लोग धार्मिक प्रसन्न, न्यायप्रिय, सत्यभक्त, कृतज्ञ और प्रभुभक्ति से युक्त होते हैं। —डा० सैमुएल जॉनसन

जिस (भारतीय) सभ्यता को अपने उच्च वर्ग के लोगों के अत्यन्त विशाल वैभव-विलास पर गर्व था, उसमें ताले-चाभी को लोग जानते ही नहीं थे। क्या कहीं पर हिन्दुओं की ईमानदारी के एक जरा से अंश के बराबर भी ईमानदारी की कल्पना की जा सकती है। —मेगस्थनीज

हिन्दूओं के चरित्र की निष्कपटता तथा ईमानदारी उनकी मुख्य पहचान है। वे कभी अनीतियुक्त वचन नहीं बोलते। —श्री क्रिडिल

हिन्दू अनुकूल आचरण करने वाले तथा सबके प्रति दयालु होते हैं। उनका संसार में किसी से भी बैर नहीं है। —अबुलफजल

ध्यान की प्रणाली को उन्हीं लोगों ने जन्म दिया है। उनमें स्वच्छता एवं शुचिता के गुण वर्तमान हैं। उन लोगों में विवेक है तथा वे वीर हैं। ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद एवं अन्य विद्याओं में हिन्दू लोग आगे बढ़े हुए हैं। प्रतिमा-निर्माण, चित्रलेखन, वास्तु-कलाओं को उन्होंने पूर्णता तक पहुँचा दिया है। —अल्जहीज

यदि हम पक्षपात रहित होकर भलीभाँति परीक्षा करें, तो हमको स्वीकार करना होगा कि सारे संसार में साहित्य, धर्म और सभ्यता का प्रसार हिन्दुओं ने किया हैं। —श्री डी० ओ० ब्राउन (डेली ट्रिब्यून २०-२-१८८४)

हिन्दू-धर्म

मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मों का अध्ययन किया है, परन्तु मुझे उन सबमें हिन्दू-धर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखाई देता है।...मेरा विश्वास है कि इसके सामने एक दिन समस्त जगत् को सिर झुकाना पड़ेगा। —रोम्यां रोला

हिन्दू-संस्कृति

जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त सनातन परम्परा से चली आती हुई अध्यात्म प्रधान धर्ममय सुसंस्कृत विचार और आचार प्रणाली का नाम ही हिन्दू-संस्कृति है।

हिन्दू-संस्कृति सबसे प्राचीन और अपरिवर्तनीय सनातन भारतीय आर्य-संस्कृति है।

इस संस्कृति में मनुष्य-जीवन का प्रधान और एकमात्र लक्ष्य है—मोक्ष-ज्ञान या भगवत्प्राप्ति।

—कल्याण (हिन्दू संस्कृति अंक १९५० और देखो-भारतीय संस्कृति)

व्यावहारिक अनेकता में तात्विक एकता और प्रकृतिजनित जगत् की विषमता में परमात्मा की नित्य समता देखना हिन्दू-संस्कृति की विशेषता है।

—कल्याण (हिन्दू-संस्कृति अंक १९५०)

हिमालय

हे हिमालय ! ऐ फसीले किश्वरे हिन्दोस्तां,
चूमता है तेरी पेशानी को झुककर आस्मां।
तुझमें कुछ पैदा नहीं देरीना रोज़ी के निशां,
तू जवां है गर्दिशे-शामो-सहर के दर्मियां॥

—डा॰ इकबाल

सिद्धयोगी-सा समाधि-निमग्न है यह,
भूमि से उठ गगन से संलग्न है यह।

—मैथिलीशरण गुप्त

हिम शैल से निकलने वाली और समुद्र में मिलने वाली नदियां हमारे लिए उत्तम औषधि प्रदान करें। **—अथर्ववेद ६-२४-१**

मेरे नगपति मेरे विशाल।
साकार दिव्य गौरव विराट।
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल।
मेरी जननी के हिम-किरीट।
मेरे भारत के दिव्य भाल।
मेरे नगपति मेरे विशाल॥

—दिनकर

अम्बर में सिर पाताल चरन।
मन इसका गंगा का बचपन
तन वरन-वरन, मुख निरावरन।
इसकी छाया में जो भी है वह मस्तक नहीं झुकाता है।
गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है॥

—गोपाल सिंह नेपाली

पूर्व से पश्चिम तक विस्तीर्ण उन्नतभाल हिमालय न केवल हमारा प्रहरी ही रहा है, अपितु उसने हमारे संपूर्ण राष्ट्र जीवन को भी प्रभावित किया है। मानव की गरिमा बढ़ाने वाला उच्च तत्वज्ञान, जिसने ईश्वर तत्व का साक्षात्कार किया, इसी हिमालय की कन्दराओं में बैठकर हमारे ऋषियों ने प्राप्त किया था।

—स्व० पं० गोविन्द वल्लभ पंत

हिमालय भारतीय संस्कृति और परम्परा का अविभाज्य अंग है। इतिहास के प्रत्येक कालखंड में भारतीय शान्ति, शक्ति और प्रेरणा प्राप्त करने के लिये इस पर्वतराज की शरण में गए हैं। दार्शनिक, विद्वान, लेखक और आत्म तत्व की खोज में लगे ऋषि-महर्षि सभी ने अपने को सांसारिक मायाजाल से ऊपर उठाने के लिये वाल्मीकि और व्यास के युग से लेकर आज तक हिमालय की प्राकृतिक शोभा का रसास्वादन किया है। **—स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद**

हिमालय भारत की संस्कृति का अभिन्न अंग है। बद्रीनाथ और गंगोत्री जैसे पवित्र स्थानों में भारतीय श्रद्धा केन्द्रित है। वेद महाभारत और रामायण काल से ही भारतीय कथाएँ हिमालय की चर्चा से भरी पड़ी हैं। हिमालय भारत का ताज है। अपने देश के इस सिरमौर को हटाने की किसी भी कार्यवाही को हम कैसे सहन कर सकते हैं। **—जवाहर लाल नेहरू**

(१०-११-५६ आगरे में भाषण)

हिमालय और भारतीय संस्कृति

हिमालय हमारे देश की अत्यन्त ऊंची चोटियों का ही नाम नहीं है, हिमालय मानों हमारी संस्कृति का ही दूसरा नाम है। वहां की पवित्र जल-धाराओं ने और उसके पर्वत-शिखरों ने हमारी सीमाओं को ही नहीं घेर रखा है अपितु वे जलधारायें इतनी पूज्य मानी जाती हैं, कि उनका जल लेकर कन्या-

कुमारी के शिव पर चढ़ाया जाता है, और इस भू-भाग की एकता का अनुष्ठान इस रूप में सदियों से साधा जाता रहा है। यही हमारी सांस्कृतिक व्याप्ति है, यही हमारी सांस्कृतिक परम्परा है और यही हमारी सांस्कृतिक सम्बद्धता है, जिसे हमने अब तक सुरक्षित रखा है। **—माखन लाल चतुर्वेदी**

(पान्चजन्य हिमालय अंक से)

हुस्न (दे० 'सुन्दरता,' 'सौन्दर्य')

हुस्न को क्या खुदनुमा जब कोई माइल ही न हो।
शमअ को जलने से क्या मतलब, जो महफिल ही न हो॥

—डा० इकबाल

हृदय

पहाड़ों में भी हरियाली होती है, पाषाण हृदयों में भी रस रहता है।

—प्रेमचन्द

भग्न हृदयों के लिए संसार सूना है। **—प्रेमचन्द**

If a good face is a letter of recommendation, a good heart a letter of credit. **—Bulwer**

यदि सुन्दर मुख सिफारिश पत्र है तो सुन्दर हृदय विश्वास-पत्र। **—बुलवर**

मानव-हृदय एक रहस्यमय वस्तु है। **—प्रेमचन्द (वरदान)**

हृदय की कोई भाषा नहीं है; हृदय हृदय से बातचीत करता है।

—महात्मा गांधी

A good heart is worth gold. **—Shakespeare**

सुन्दर हृदय का मूल्य स्वर्ण के सदृश है। **—शेक्सपियर**

तीर्थानां हृदयं तीर्थं शुचीनां हृदय शुचिः। **—वेदव्यास**

तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय है, पवित्र वस्तुओं में अति पवित्र भी विशुद्ध हृदय ही है।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। **—गीता १८-६१**

हे अर्जुन ! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय-देश में रहता है।

मनुष्य का हृदय एक अथाह सागर है, जहाँ कमल के फूलों के साथ रक्त की प्यासी जोंकें भी उत्पन्न होती रहती हैं। —सुदर्शन

हाथ-हाथ का अनुसरण करते हैं, नेत्र-नेत्र पर ठहरते हैं और इस प्रकार हमारे हृदय का कार्य प्रारम्भ होता है। —रवीन्द्र

हृदय की आँख हमारे चर्मचक्षु से भी अधिक प्रबल है। —अज्ञात

Hearts are stronger than swords. **—Wendell Phillips**

हृदय कृपाण से अधिक शक्तिशाली होता है। —वेन्डेल फिलिप

The heart of a wise man should resemble a mirror, which reflects every object without being sullied by any.

—Confucius

ज्ञानी पुरुष का हृदय दर्पण के सदृश होना चाहिए जो किसी वस्तु को बिना दूषित किये हुए परावर्तित कर देता है। —कन्फ्यूशस

मनुष्य का हृदय अभिलाषाओं का क्रीडास्थल और कामनाओं का आवास है।

—प्रेमचन्द

येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।
नित्योत्सवस्तदा तेषां नित्यश्रीर्नित्यमंगलम्॥ —रामानुजाचार्य

जिनके हृदय में मंगलमय भगवान् विष्णु का आवास है उनके यहाँ सर्वदा उत्सव, सर्वदा मंगल और सर्वदा लक्ष्मी का निवास रहता है।

निर्मल जन की हृदय-भूमि है,
पावन भावन वृन्दावन।
सदा किया करते हैं क्रीड़ा,
उसमें यशुदा के नन्दन॥
माया काल न व्यापे उसमें,
तीन लोक से है न्यारा।
सुख की बंशी बजे चैन से,
छूटे कर्मों का बन्धन॥

—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)

स य एषोऽन्तर्हृदय आकाशः ।
तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः । अमृतो हिरण्मयः ।।

—तै० शिक्षा० ६

हृदय-देश में जो आकाश है उसमें विशुद्ध प्रकाश-स्वरूप मनोमय अमृत पुरुष रहता है ।

हृदय ही परमेश्वर के पाने का स्थान है । शुद्ध हृदय में परमेश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन मिलता है । **—दीनानाथ दिनेश (गीताज्ञान)**

हृदयहीन

मनुष्य कितना ही हृदयहीन हो, उसके हृदय के किसी न किसी कोने में पराग की भाँति रस छिपा रहता है ।···जिस तरह पानी और पत्थर में आग छिपी रहती है उसी तरह मनुष्य के हृदय में भी—चाहे वह कैसा ही क्रूर और कठोर क्यों न हो, उत्कृष्ट और कोमल भाव छिपे रहते हैं । **—प्रेमचन्द**

केवल बुद्धि की वृद्धि होने से मनुष्य बहुधा हृदयशून्य हो जाता है । दया, प्रेम, शान्ति आदि हृदय के सात्त्विक गुण हैं । वे बुद्धि के प्रखर तेज से झुलस सकते हैं । **—स्वामी विवेकानन्द**

होनहार (दे० 'भावी')

जैसे हो भवितव्यता तैसी मिलै सहाय ।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय ।। **—तुलसी**

तब हुआ फल के विषय में इस प्रकार विचार ।
मुक्त है सर्वत्र ही भवितव्यता का द्वार ।।

—मैथिलीशरण गुप्त (शकुन्तला)

विधि का लिखा को मेटन हारा । **—तुलसी**

होइहि सोइ जो रामरचि राखा । को करि तर्क बढ़ावै साखा ।।

—तुलसी

होनहार कितना प्रबल, कितना निष्ठुर और कितना निर्मम है ।

—प्रेमचन्द

तादृशी जायते बुद्धिर्व्यवसायोऽपि तादृशः ।
सहायास्तादृशा एव यादृशी भवितव्यता ॥ **—चाणक्य**

वैसी ही बुद्धि और वैसा ही उपाय होता है और वैसे ही सहायक मिलते हैं जैसा होनहार होता है ।

करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्ततः ।
फलं पुनस्तदेवास्य यद्विधेर्मनसि स्थितम् ॥ **—हितोपदेश**

नीति जानने वाले इधर-उधर अपना प्रयास करें, किन्तु फल वही होगा जो विधाता के मन में है ।

भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र
—कालिदास (अभिज्ञान शाकुंतल)

भावी को सर्वत्र द्वार खुला मिलता है ।

परिशिष्ट

अंत:करण

मेरे लिए मेरा अंतःकरण ही ईश्वर का शब्द है और मुख्य अधिकारी है जिसके सामने मैं नमता हूँ। **—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन**

मेरा अनुमान है कि अपने जीवन में अब तक अपने और अपने अंत:करण के बीच कभी तीसरे पक्ष को दखल नहीं देने दिया है, और भविष्य में भी ऐसी संभावना नहीं होगी कि मैं ऐसा करने दूं।

—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन (विधान सभा, उ० प्र० में, १९३८)

अनुभूति

राधा-माधव वसि रहे हिय महँ नित्य ललाम।
मुख निरतत नित नव मधुर राधा-माधव-नाम॥
राधा - माधव - प्रेम - रस - सुधा दिव्य सुमहान।
स्व सुख - वासना - रहित चित करत निरंतर पान॥

—नित्यलीला लीन हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी (ब्रज-रस की लहरें)

हटते नहीं एक पल भी वे मुझे छोड़ कर प्रियतम श्याम।
सोते - जगते, खाते - पीते, हरदम रहते पास ललाम॥
नित्य दिखाते रहते अपनी अति पवित्र लीला सुखधाम।
बाहर - भीतर, तन में - मन में देते रहते सुख अविराम॥

—नित्यलीला लीन हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी (ब्रज-रस की लहरें)

अभिलाषा

देखा करूँ तुम्हारी लीला, गाया करूँ तुम्हारा नाम।
सुना करूँ नित मुरली की धुन, वचन तुम्हारे परम ललाम॥
नेत्र - मधुप नित करें तुम्हारे, वदन-कमल-मधु-रस का पान।
पूर्ण समर्पित हो जायें इन्द्रिय-तन, मन-मति, जीवन-प्रान॥

—नित्यलीला लीन हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी (ब्रज-रस की लहरें)

मैं देखूं नित श्याम को, मुझको नित घनश्याम।
उनमें मैं नित ही रहूँ, वे मुझमें सुखधाम॥
विलग - अलग की कल्पना रही न किंचित शेष।
नित्य मिलन सुखमय, नहीं लव वियोग- संलेश॥

—नित्यलीला लीन हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी (ब्रज-रस की लहरें)

अयोध्या माहात्म्य

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि।
सरजू सरि कलि कलुष नसावनि॥

—तुलसी (रा० च० मा०-बाल०)

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि॥
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा॥
अति प्रिय मोहि इहाँ के वासी। मम धामदा पुरी सुख रासी॥
हरषे सब कपि सुनि प्रभुवानी। धन्य अवध जो राम बखानी॥

—भगवान श्रीराम (रा० च० मा०—उत्तर०)

अवतार

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥
असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।

—तुलसी (रा० च० मा०—बाल० १२१)

आकर्षणमय अनुराग

सिन्धु से मिलने को क्यों विकल,
नदी का बढ़ता अथक प्रवाह?
ललित लतिकाओं में क्यों भरी,
द्रुमों से आलिंगन की चाह?

मस्त मलयानिल को क्यों सदा,
लुटाता अपनी सुरभि पराग ?
निहित सबमें अनन्त अभिराम,
एक आकर्षणमय अनुराग।

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (भाव-सुरभि)

आदमी

आदमी न हिन्दू होता है
न मुसलमां होता है,
बस फकत एक इन्सां होता है
बीते हुए चन्द लमहों की दास्तां होता है।

—अज्ञात

आरती

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे ॥

—स्कन्दपुराण

पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।

नीराजनं च यः पश्येद देवदेवस्य चक्रिणः।
सप्त जन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम् ॥

—हरि भक्ति विलास

जो देवदेव चक्रधारी श्रीविष्णु भगवान की आरती (सदा) देखता है, वह सात जन्मों तक ब्राह्मण होकर अन्त में परमपद को प्राप्त होता है।

पंच नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालया।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीय धौतवाससा ॥
चूताश्वत्थदिपत्रैश्च चतुर्थे परिकीर्तितम।
पंचमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि ॥ **—अज्ञात**

आरती के पाँच अंग

प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तों से और पांचवें साष्टांग दण्डवत से आरती करे।

आदौ चतुः पादतले च विष्णो -
द्वौ नाभिदेशे मुखबिम्ब एकम् ।
सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारा -
नारात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात् ॥ —अज्ञात

आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार घुमाये, दो बार नाभिदेश में, एक बार मुखमण्डल पर और सात बार समस्त अङ्गों पर घुमाये । —(आरती–संग्रह गीताप्रेस)

ईश्वर

Nature is too thin a screen; the glory of the omnipresent God bursts through everywhere. —**Emerson**

प्रकृति का परदा अत्यन्त झीना और महीन है। सर्वत्र विद्यमान प्रभु की सत्ता इस परदे के तार-तार से झाँक रही है। —एमर्सन

उत्तर काशी

उत्तर काशी : (हरिद्वार) पतली-सी रेखा और दो फुट गहराई की निर्मल स्फटिक जैसी भागीरथी चारों ओर हिमालय की छटा, देवदार के दृश्य और चारों ओर शांत वातावरण। —किशोरी दास बाजपेई (नवनीत से)

ऋतुराज

गगन को छूने चलीं जल निधि तरंगें।
उमड़ती किसमें नहीं यौवन उमंगें ?
तितलियां पहने नवल रंगीन सारी,
नृत्य निज किसको दिखाती हृदयहारी ?
की धरा ने भी सुसज्जित हरित काया।
ले मधुर मधु-साज मधु-ऋतुराज आया ॥

—विनोद चन्द पाण्डेय 'विनोद' (भाव सुरभि)

कन्याकुमारी

कन्याकुमारी : (त्रिवेन्द्रम) बाँयीं ओर विशुद्ध मरकत जैसे—महोदधि का हरित जल, दाहिनी ओर अरब सागर की दुग्धफेनिल लहरें और सामने अंतरिक्ष तक रहस्यमय गहन नील भारत महासागर / ऊंची-ऊंची उताल तरंगें, तरंगों पर दो-दो हाँथ ऊंची पानी के धुएं की मोर-पंखी अद्भुत छटा ।

—अमृत लाल नागर (नवनीत से)

यहाँ के सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य तो एकदम अद्भुत, अन्यतम और अमर है ।

—उदयशंकर भट्ट (नवनीत से)

कमल

समुत्पत्तिः स्वच्छे सरसि हरिहस्ते निवसनं,
निवासः पद्मायाः सुरहृदयहारी परिमलः
गुणैरेतैरन्यैरपि च ललितस्याम्बुज तव,
द्विजोत्तंसे हंसे यदि रतिरतीवोन्नतिरियम् ॥ **—अज्ञात**

हे पंकज, सुन्दर स्वच्छ सरोवर में तुम्हारा जन्म हुआ, सदा तुम भगवान श्री हरि के हाथ में रहते हो और लक्ष्मी तुममें निवास करती हैं । हृदय लुभानेवाला सुगन्ध तुम्हें स्वभावतः प्राप्त है ही इतने सब ललित गुणों के कारण आकर्षित नीरक्षीर विवेकी पक्षिश्रेष्ठ हंस का प्रेम भी तुम्हें यदि प्राप्त हुआ तो वास्तव में तुम्हारे यश का विस्तार दिनोंदिन हो रहा समझो ।

अयि दलदरविन्द स्यन्दमानं मरन्दं,
तव किमपि लिहन्तो मंजु गुंजंतु भृंगाः ।
दिशि दिशि निरपेक्षस्तावकीनं विवृण्वन्,
परिमलमयमन्यो बान्धवो गन्धवाहः ॥ **—अज्ञात**

अरी अधखिली कमल की कली, तेरे बहते हुए मधु को चख-चख कर ये भौंरे तो मधुर स्वर से तेरा कुछ गुणगान कर ही रहे हैं पर तेरे मधुर सुगन्ध को दिग्दिगन्त में बिखेर कर तेरा यशोविस्तार करने वाला यह गन्धवाह, पवन, **तेरा एक और निस्वार्थ बन्धु पैदा हो गया है ।**

लक्ष्मी स्वयं निवसति त्वयि लोकधात्री,
मित्रेण चपि विहितो स्ति दृढ़ोनुरागः ।
बन्दीव गायतिगुणांस्तव चंचरीकः,
कः पुंडरीक तव साम्यमुरीकरोति ॥

—बल्लभ देव (सुभाषितावलि)

हे पुंडरीक, जगन्माता लक्ष्मी स्वयं तुममें निवास करती हैं और भगवान् सूर्य का भी तुम पर दृढ़ अनुराग है। बन्दीजन के समान भ्रमर नित्य तुम्हारा गुणगान किया करता है। भला तुम्हारे जैसा सौभाग्य और किसका हो सकता है।

कल्पना

जिस प्रकार सृष्टि ब्रह्मा के चिन्तन में निवास करती है, उसी प्रकार कल्पना की सृष्टि कवि की आकांक्षाओं से पोषित होती है।

—डा० राम कुमार वर्मा (भाव-सुरभि में 'परिचय के दो शब्द' से)

कश्मीर

कश्मीर : यहाँ सभी दर्शनीय है। कवि कल्हण ने ठीक कहा है—"यहाँ जैसी विद्या, ऊंचे-ऊंचे गृह, केशर, हिममिश्रित शीत जल और घर-घर द्राक्षा—ये तो स्वर्ग में भी दुर्लभ हैं।"

—नरदेव शास्त्री (नवनीत से)

यहाँ (कश्मीर में) पहलगाँव स्थान बरफ से सफेद हुए पर्वतों के बीच हीरे का कटोरा-सा। पूर्णिमा की रात में उसका दृश्य बड़ा ही मनोहर।

—राम नरेश त्रिपाठी (नवनीत से)

हिम-मंडित प्रदेश, संगीत से भरी नदी, भोले-भाले सुन्दर शिशु तथा नर-नारियाँ, गुदगुदी से भरा समीर, बिना औषध का अस्पताल।

—बेढब बनारसी (नवनीत से)

सोनमर्ग की सुन्दर हिमाच्छादित पर्वत मालाएं दुग्धोज्ज्वल जल-प्रपात, सर्पिली घाटी भोजपत्रों की कतारें और तपोवन जैसा वातावरण।

—कवि नीरज (नवनीत से)

कस्तूरी

कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूंढै बन माहि।

—कबीर

काशी माहात्म्य

मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानिकर।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न।।

—तुलसी (रा० च० मा० किष्किन्धा)

कृपासिन्धु की चरण-वन्दना

चरण-कमल वंदौं हरि-राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई।।
बहिरौ सुनै गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार वंदौं तिहिं पाई।।

—सूरदास (सूरसागर-१)

कृष्णमय

कृष्ण उठत, कृष्ण चलत, कृष्ण शाम-भोर है।
कृष्ण बुद्धि, कृष्ण चित्त, कृष्ण मन विभोर है।।
कृष्ण रात्रि, कृष्ण दिवस, कृष्ण स्वप्न-शयन है।
कृष्ण काल, कृष्ण कला, कृष्ण मास-अयन है।।
कृष्ण शब्द, कृष्ण अर्थ, कृष्ण ही परमार्थ है।
कृष्ण कर्म, कृष्ण भाग्य, कृष्ण ही पुरुपार्थ है।।
कृष्ण स्नेह, कृष्ण राग, कृष्ण ही अनुराग है।
कृष्ण कली, कृष्ण कुसुम, कृष्ण ही पराग है।।
कृष्ण भोग, कृष्ण त्याग, कृष्ण तत्वज्ञान है।
कृष्ण भक्ति, कृष्ण प्रेम, कृष्ण ही विज्ञान है।।
कृष्ण स्वर्ग, कृष्ण मोक्ष, कृष्ण परम साध्य है।
कृष्ण जीव, कृष्ण ब्रह्म, कृष्ण ही आराध्य है।।

—नित्यलीला लीन हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी

केदारनाथ की स्तुति

शीश सोहे पतित पावन, त्रिपथगा भागीरथी ।
चन्द्रशेखर भाल लोचन, भव विमोचन महारथी ।।
वर अभय दो हाथ सोहे, मन विमोहें वेष से ।
हैं दिगम्बर निहत शम्बर, व्याप्त अम्बर केश से ।।
पास भैरव अरु भवानी, सुत षड़ानन गणपतिम् ।
पंचांग कौ हम भजें, नित केदार के पशुपतिम् ।।
केदार के माहात्म्य को कह, को सके कबीरा ।
शेष शारदा नारदादिक थकहिं सब ही नर सुरा ।।

—(श्री बद्री केदार - यात्रा गाइड से)

कैलास और मानसरोवर

कैलास और मानसरोवर हिन्दुओं के पवित्रतम तीर्थों में से हैं। इनके सन्निध्य में कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म सम्प्रदाय का हो, आस्तिक हो या नास्तिक, अनजाने में ही उस ईश्वर तत्त्व का अनुभव करने लगता है, जो इस सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है। साधकों का तो कहना ही क्या ? वह तो यहाँ अपने आप समाधिस्थ हो जाता है। **—स्वामी प्रणवानन्द**

मानसरोवर शान्ति और शुचिता का धाम है। कैलास से इसकी छवि जैसी निखर उठती है उसका वर्णन करने के लिए किसी भी भाषा में शब्द नहीं मिल सकेंगे। एक स्वर्गिक अनुपमेय तस्वीर आँखों के सामने नाच उठती है। मानो हम कोई स्वर्णिम स्वप्न देख रहे हों।

—स्नेन हेडिन (पाञ्चजन्य हिमालय अंक से)

गणेश—वन्दना

गाइये गनपति जग-वंदन । संकर-सुवन-भवानी-नंदन ।।
सिद्धि-सदन गज-वदन विनायक । कृपासिंधु सुन्दर सब लायक ।।
मोदकप्रिय मुद-मंगल-दाता । विद्या-वारिधि बुद्धि-विधाता ।।
माँगत तुलसिदास कर जोरे । बसहिं राम-सिय मानस मोरे ।।

—तुलसी (विनय पत्रिका)

गायत्री मन्त्र

ओ३म भू-र्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरे भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात । —यजुर्वेद ३६/३; ऋग्वेद ३/६२/१०

अर्थ—(ओ३म) सर्वत्र व्यापक और सब का रक्षक परमात्मा । (भूः) प्राण स्वरूप । (भुवः) दुःख नाशक । (स्वः) सुख स्वरूप आनन्द-स्वरूप । (देवस्य) दिव्य । (सवितुः) सब के उत्पादक तेजस्वी प्रकाशवान । (तत्) उस । (वरेण्यम) वरण करने योग्य । (भर्गः) पाप को भून डालने वाले का (धीमहि) हम ध्यान करते हैं तथा धारण करते हैं (यः) जो परमात्मा (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) सन्मार्ग में प्रेरणा देता है ।

"हे प्राण पवित्रता और आनन्द के देने वाले प्रभु ! जो आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं, हम आप के उस पूजनीय, पापविनाशक विज्ञान स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियमें को प्रकाशित करता है । हे पिता ! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो । आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करते रहें ।"

—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत अनुवाद

गायत्री-मंत्रार्थ-गायन

ओम् हो रक्षक हमारे सब गुणों की खान हो ।
अज अमर अद्वैत अव्यय विश्वविद्विद्वान हो ॥
भूः सदा सब प्राणियों के प्राण के भी प्राण हो ।
आप हे भगवान प्राणीमात्र के कल्याण हो ॥
भुवः सब दुःख दूर करते, आप कृपा-निधान हो ।
स्वः सदा सुखरूप सुखमय सुखद सुखधि महान हो ॥
तत वही सुप्रसिद्ध ब्रह्मन् ! वेद-वर्णित सार हो ।
देव सवितुः सर्व उत्पादक हो पालन हार हो ॥
शुभ वेरण्यं वरण करने योग्य भगवन् आप हो ।
शुद्ध भर्गः मल रहित भजनीय हो निष्पाप हो ॥
दिव्य गुण देवस्य दिव्य-स्वरूप देव अनूप के ।
धीमहि धारें हृदय में दिव्य गुण गुण रूप के ॥

धियो यो नः वह हमारी बुद्धियों का हित करे।
'अमर' प्रचोदयात नित्य सन्मार्ग में प्रेरित करे।।

—पद्यार्थ लेखक अमर सिंह

गीता

गीता का जो सकाम पाठ करते हैं उनको तो मनोवांक्षित फल प्राप्त होता है और जो निष्काम पाठ करते हैं उनका अंतःकरण शुद्ध होकर उनको परमानन्द की प्राप्ति होती है। **—परमहंस स्वामी आनन्दगिरि**

गीता शास्त्रों का दोहन है। गीता मेरे लिए केवल बाइबिल नहीं है, केवल कुरान नहीं है, मेरे लिए वह माता हो गयी है। जो इस माता की शरण लेता है, उसे वह ज्ञानामृत से तृप्त करती है। **—महात्मा गाँधी**

भारतवर्ष के धर्म में गीता, बुद्धि की प्रखरता, आचार की उत्कृष्टता एवं धार्मिक उत्साह का एक अपूर्व मिश्रण है। **—डा० मेकनिकल**

जो संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है, उसके सम्बन्ध में भला मैं क्या लिखूं। ···वह तो ईश्वरों के भी ईश्वर-परम महेश्वर का दिव्य संगीत है।

—जॉर्ज सिडनीअरंडेल, प्रधान, थियासोफिकल सोसाइटी

हिन्दू-धर्म के भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में बाँधने वाला यह एक अनुपम ग्रन्थ है। विश्व के भावी सार्वभौम धर्म का सूत्र ग्रन्थ बनने के लिए भी गीता ही सर्वथा उपयुक्त है। भारत के गौरवपूर्ण प्राचीन काल के इस अमूल्य रत्न से मानवजाति के और भी गौरवपूर्ण समुज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अनुपम सहायता मिलेगी। **—डा० एफ० टी० ब्रूक्स**

प्राचीन युग की सभी स्मरणीय वस्तुओं में भगवद्गीता से श्रेष्ठ कोई भी वस्तु नहीं है। भगवद्गीता में इतना उत्तम और सर्वव्यापी ज्ञान है कि उसके लिखने वाले देवता को हुए अगणित वर्ष हो जाने पर भी उसके समान दूसरा एक भी ग्रन्थ अभी तक नहीं लिखा गया। ···गीता के साथ तुलना करने पर जगत का आधुनिक समस्त ज्ञान मुझे तुच्छ लगता है। विचार करने से इस ग्रन्थ का महत्त्व मुझे इतना अधिक जान पड़ता है कि यह तत्वज्ञान किसी और ही युग में लिखा हुआ होना चाहिए। ···मैं नित्य प्रातःकाल अपने हृदय और बुद्धि को गीतारूपी पवित्र जलाशय में स्नान करवाता हूँ।

—अमेरिका के सुप्रसिद्ध संत महात्मा थोरो
(कल्याण का गीता तत्त्वांक १९३९ से)

If I venture to offer a translation of the wonderful poem after so many superior scholars, it is in grateful recognition of the help derived from their labours and because English literature would certainly be incomplete without possessing in popular form a poetical and philosophical work so dear to India." **—Sir Edwin Arnold in Preface to Song Celestial**

इतने उच्चकोटि के विद्वानों के पश्चात जो मैं इस आश्चर्यजनक काव्य के अनुवाद करने का साहस कर रहा हूं, वह केवल उन विद्वानों के परिश्रम से उठाये हुए लाभ की स्मृति में है और इसका दूसरा कारण यह भी है कि भारतवर्ष के इस सर्वप्रिय काव्यमय दार्शनिक ग्रन्थ के बिना अंग्रेजी साहित्य निश्चय ही अपूर्ण रहेगा। **—सर एडविन आरनल्ड (कल्याण का गीता तत्त्वांक १९३९ से)**

इस ग्रन्थ में श्रीकृष्ण, जो भगवान विष्णु के पूर्णावतार थे, साक्षात् सामने आकर अपने मोक्ष के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। वे भगवान सर्वज्ञ एवं सर्व शक्ति सम्पन्न हैं तथा विश्व के शाश्वत नियन्ता भी हैं, जो लोग उनमें श्रद्धा रखकर उनकी उपासना करते हैं, उन्हें वे कृपापूर्वक मुक्तिरूपी फल प्रदान कर देते हैं।

—हैल्मूट फाँन ग्लाजेनप्प (कल्याण का गीता तत्त्वांक १९३९ से)

गीता उस दिव्य सन्देश का इतिहास है, जो सदा-सर्वदा से आर्यजाति का जीवन-प्राण रहा है। **—डा० सर सुब्रह्मण्यं अय्यर, के०सी०आई०ई०, एल-एल०डी० (कल्याण का गीता तत्त्वांक १९३९ से)**

गुरु वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

गोमुख

गोमुख (गंगोत्री) : पंद्रह-सोलह मील लम्बे ग्लेशियर के नीचे बहती हुई गंगा पहली बार यहाँ दिखाई देती है। यह भव्य और दिव्य स्थान चौदह हजार पाँच सौ फुट की ऊंचाई पर है। **—यशपाल जैन (नवनीत से)**

यह स्थान (गोमुख) गंगोत्री से १८ मील दूर है, चारों ओर उत्तुंग हिम-शिखर, पग-पग पर हिम धाराएं, क्षण-क्षण रजत स्वर्ण, प्लाटिनम का रूप लेते झरने। **—विष्णु प्रभाकर (नवनीत से)**

चित्रकूट माहात्म्य

चित्रकूट-कानन-छबि को कवि बरनै पार ।
जहँ सिय-लषन-सहित नित रघुबर करहिं विहार ।।
तुलसीदास चाँचरि मिस कहे राम-गुन-ग्राम ।
गावहिं सुनहिं नारि नर पावहिं सब अभिराम ।।

—तुलसी (गीतावली)

देखत चित्रकूट-वन मन अति होत हुलास ।
सीताराम लषन-प्रिय, तापस - बृंद - निवास ।।
सरित सोहावनि पावनि, पाप-हरनि पय नाम ।
सिद्धि-साधु-सुर-सेवित देत सकल मन-काम ।।

—तुलसी (गीतावली)

चित्रकूट

चित्रकूट : (प्रयाग के निकट) रामगिरी, मंदाकिनी, भरतकूप, कामद-नाथ महादेव आदि के दर्शन से प्राकृतिक सौंदर्य की अद्भुत झांकी अनिर्वचनीय रमणीयता । **—शिवपूजन सहाय (नवनीत)**

जवाहर लाल नेहरू

In bravery, he is not to be surpassed. Who can axcel him in the love of the country ? He is rash and impetuous, say some. This quality is an additional qualification at the present moment. And if he has the dash and rashness of a warrior, he has also the prudence of a statesman. He is pure as crystal, he is truthful beyond suspecion. He is a knight sans peur sans reproche. The nation is safe in his hands. **—Gandhiji 3. 10. 29**

बहादुरी में कोई उनसे बढ़ नहीं सकता । देश-प्रेम में उनसे आगे कौन जा सकता है ? कुछ लोग कहते हैं कि वह जल्दबाज और अधीर हैं । यह तो इस समय एक विशिष्ट गुण है । फिर जहाँ उनके जीवन में एक वीर योद्धा की तेजी और अधीरता है, वहाँ एक राजनीतिज्ञ का विवेक भी तो है । वह स्फटिक मणि की भाँति पवित्र हैं । उन की सत्यशीलता सन्देह से परे है । वह अहिंसक और अनिन्दनीय योद्धा हैं । राष्ट्र उनके हाथ में सुरक्षित है । **—महात्मा गाँधी**

पं० जवाहर लाल नेहरू मेरे न्यायोचित उत्तराधिकारी हैं। मुझको विश्वास है कि मेरी मृत्यु के पश्चात् वह सब काम संभालेंगे जो मैं आज कर रहा हूँ।

—गाँधी जी १७-१-४२

क्या जवाहर लाल है सुन लो जवाने-हाल से।
दो कदम हर काम में आगे है मोती लाल से॥

—विस्मिल इलाहाबादी

जौहरी परखें जरा जौहर जवाहर लाल के॥

—विस्मिल इलाहाबादी

झरना

चढ़कर, गिरकर फिर उठकर, कहता तू अमर कहानी।
गिरि के अंचल में करता कूजित कल्याणी वाणी॥
क्या तूने ही नारद को सिखलाया ता ना ना ना।
क्या तुझ से ही माधव ने सीखा था मुरली बजाना॥

—माखन लाल चतुर्वेदी

मैं भू-मण्डल की कृति से हूँ कुभी पाक बनाता।
तू स्वर्ग गंगा बन कर के सुरलोक यहीं पर लाता॥
तू हृदय वेध बज्रों के, ले अपनी सेना शीतल।
प्रियतम प्रदेश चल देता भर श्याम भाव से ही-तल॥
पर पक्षी दल ने तेरे गीतों का गान किया है।
हरि ने तेरी वाणी को अमरत्व प्रदान किया है॥

—माखन लाल चतुर्वेदी

तीर्थ-माहात्म्य

जिसके हाथ, पैर और मन भलीभाँति संयम में रहें तथा जिसमें विद्या, तपस्या और उत्तम कीर्ति हो वही तीर्थ के पूर्ण फल का भागी होता है।

—अग्नि पुराण

जो प्रतिग्रह छोड़ चुका है, नियमित भोजन करता और इन्द्रियों को काबू में रखता है, वह पापरहित तीर्थयात्री सब यज्ञों का फल पाता है।

—अग्नि पुराण

अश्रद्धालु, पापी, संशयात्मा, नास्तिक, कुतर्की—ये पाँच प्रकार के पुरुष किसी तीर्थ से कोई लाभ नहीं उठा सकते।

—वायु पुराण

तुलसीदास

कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।

—महाकवि हरिऔध

कहना है कठिन विचारते सचाई जब,
तुलसी के मानस - प्रसार - परिणाम की,
तुलसी की महिमा बढ़ाई राम नाम ने कि
तुलसी ने महिमा बढ़ाई राम नाम की।

—श्याम सुन्दर (कवि)

दार्जिलिंग

दार्जिलिंग : चतुर्दिक—विशेषकर पूर्वोत्तर दिशा में हिमाच्छादित शृंगों पर प्रातः-सायंकालीन सूर्य की रश्मियों का अनुपम विविधरंगी सौंदर्य।

—राजबहादुर सिंह (नवनीत से)

देश सेवा

मैं देश-सेवा का व्रत मलीन नहीं करना चाहता, समस्त परिवार नष्ट हो जाय, फिर भी मैं लोक-सेवा के विक्रय के लिए तैयार नहीं हूँ।

—राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन

धर्म

"धर्म मनुष्य के भीतर निहित देवत्व का विकास है।" "धर्म न तो पुस्तकों में है, न धार्मिक सिद्धान्तों में। वह केवल अनुभूति में निवास करता है।"

—विवेकानन्द

नर

यह तो नर ही है, एक साथ जो शीतल और ज्वालित भी है,
मन्दिर में साधक-व्रती, पुष्प-वन में कन्दर्प ललित भी है,
योगी अनन्त, चिन्मय, अरूप को रूपायित करने वाला,
भोगी ज्वलन्त, रमणी-मुख पर चुम्बन अधीर धरने वाला।

—रामधारी सिंह 'दिनकर' (उर्वशी)

नरेन्द्रनाथ और रामकृष्ण परमहंस

नरेन्द्रनाथ जब रामकृष्ण की शरण गये तब, असल में, नवीन भारत ही प्राचीन भारत की शरण गया था, अथवा यूरोप भारत के सामने आया था। रामकृष्ण और नरेन्द्रनाथ का मिलन श्रद्धा और बुद्धि का मिलन था, रहस्यवाद और बुद्धिवाद का मिलन था। —रामधारी सिंह 'दिनकर'

नरेन्द्रनाथ (विवेकानन्द)

जिस एक शक्ति के उत्कर्ष के कारण केशव (ब्रह्मसमाजियों के सिरमौर केशवचन्द सेन) जगद्विख्यात हुआ है, वैसी अठारह शक्तियों का नरेन्द्र (विवेकानन्द) में पूर्ण उत्कर्ष है। **—परमहंस रामकृष्ण**

नारी

नारी ही वह महासेतु
जिस पर अदृश्य से चलकर,
नये मनुज, नव प्राण
दृश्य जग में आते रहते हैं।
नारी है वह कोष्ठ,
देव, दानव मनुष्य से छिपकर
महाशून्य, चुपचाप जहाँ,
आकार ग्रहण करता है।

—रामधारी सिंह 'दिनकर' (उर्वशी)

नैमिषारण्य

पुराण प्रतिपादित संस्कृति की जननी नैमिषारण्य तपोभूमि की पृष्ठभूमि में इतिहास की अनेक कड़ियाँ जुड़ी हैं। यहीं महर्षि वेदव्यास ने पुराणों की रचना की। (८८०००) अटठासी हजार ऋषियों की तपस्थली इस पावन भूमि में महर्षि दधीचि ने वृत्तासुर वध हेतु सुरों को अपनी अस्थियों का दान दिया। घर-घर में होने वाली सत्यनारायण की कथा 'एकदा नैमिषारण्ये' से ही प्रारम्भ होती है।

तीरथ वर **नैमिष** विख्याता।
अति पुनीत साधक सिधि दाता॥

—तुलसी (रा० च० मा०)

यस्त्यजेन्नैमिषे प्राणान् उपवास परायणः॥
मोदते सर्वलोकेषु एवमाहुर्मनीषिणः॥

—महर्षि वेदव्यास (महाभारत)

नैमिषारण्य में जो व्यक्ति उपवास परायण होकर प्राण त्याग करता है वह सभी लोकों में मुदित होता है।

पार्वती

पार्वती भारतीय नारी का आदर्श है, सतीत्व की मर्यादा है, तपस्या का मूर्तिमान विग्रह है और पतिव्रत की विजयध्वजा है।—**डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी**

पार्वतीजी एवं शिवजी की वन्दना

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां बिना न पश्यन्ति सिद्धां स्वान्तः स्थमीश्वरम ।।

—**तुलसी (रा० च० मा० बाल०)**

श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वती जी और श्री शंकर जी की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके बिना, सिद्धजन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते ।

पुराण की महिमा

पुराण भारत का सच्चा इतिहास है। पुराणों से ही भारतीय जीवन का आदर्श, भारत की सभ्यता, संस्कृति तथा भारत के विद्या-वैभव के उत्कर्ष का वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो सकता है ।

—**जगदगुरू श्री शंकराचार्य श्रीमद् ब्रह्मानन्द सरस्वती**

पुराण इस अकाट्य सत्य के द्योतक हैं कि भारत आदि-जगदगुरू था और भारतीय ही प्राचीन काल में आधि-भौतिक, आधि - दैविक और आध्यात्मिक उन्नति की पराकाष्ठा को पहुँचे थे ।

—**जगदगुरू श्री शंकराचार्य श्रीमद् ब्रह्मानन्द सरस्वती**
(कल्याण का संक्षिप्त वराहपुराणांक)

पुरी

पुरी : (कलकत्ता और भुवनेश्वर के निकट) निर्बाध सागर के क्षण-क्षण नये होते रूप और लहरों के तेवर, विशेषकर रात को ग्यारह के बाद।.........

—**राजेन्द्र यादव (नवनीत से)**

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुर बाला के, गहनों में गूंथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में, बिध प्यारी को ललचाऊँ ।।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊं।
चाह नहीं देवों के सिर पर, चढ़ भाग्य पर इठलाऊँ ।।
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक ।।

—**माखन लाल चतुर्वेदी**

प्रयाग माहात्म्य

सेवहिं सुकृती साधु सुचि पावहिं सब मनकाम।
बंदी वेद पुरान गन कहहिं विमल गुन ग्राम॥
को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ।
कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥

—तुलसी (रा० च० मा० अयोध्या)

प्रयाग से बढ़कर पवित्र तीर्थ तीनों लोकों मे नहीं है।
प्रयाग अपने प्रभाव के कारण सब तीर्थों से बढ़कर है।

प्रयाग तीर्थ के नाम को सुनने, कीर्तन करने तथा उसे मस्तक झुकाने से भी मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है।

—पद्म पुराण—स्वर्ग खण्ड

जो उत्तम व्रत का पालन करते हुए वहाँ संगम में स्नान करता है, उसे महान पुण्य की प्राप्ति होती है क्योंकि प्रयाग देवताओं की भी यज्ञ भूमि है। वहाँ थोड़े से दान का भी महान फल होता है।

—पद्म पुराण—स्वर्ग खण्ड

जो सत्यवादी, क्रोधजयी, अहिंसा धर्म में स्थित, धर्मानुगामी, तत्त्वज्ञ तथा गौ और ब्राह्मणों के हित में तत्पर होकर गंगा-यमुना के बीच में स्नान करता है, वह सारे पापों से छूट जाता है तथा मन चीते समस्त भोगों को पूर्णरूप से प्राप्त कर लेता है।

—पद्म पुराण—स्वर्ग खण्ड

बद्रीनाथ की स्तुति

पवन मन्द सुगन्ध शीतल, हेम मन्दिर शोभितम्।
निकट गंगा बहत निर्मल, श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम्॥
शेष सुमिरन करत निशदिन, धरत ध्यान महेश्वरम्।
वेद ब्रह्मा करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम्॥
इन्द्र, चन्द्र, कुबेर, दिनकर, धूप दीप निवेदितम्।
सिद्ध मुनिजन्न करत जय जय, श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम्॥

यक्ष किन्नर करत कौतुक, गान गन्धर्व प्रकाशितम् ।
श्री लक्ष्मी कमला चंवर डोलें, श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ।।
शक्ति, गौरि, गणेश, शारद, नारद मुनि उच्चारणम् ।
योग ध्यान अपार लीला, श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ।।

—(आरती-संग्रह गीता-प्रेस)

बधू-प्रतिष्ठा

पूषा त्वेतो नयतु हस्तगृह्या
ऽश्विना त्वा प्र वहता रथेन ।
गृहान गच्छ गृहपत्नी यथासो
वशिनी त्वं विदयम् आ वदासि ।।

—ऋग्वेद १०-८५-२६

पूषा तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुम्हारी मार्गदर्शक बने। दोनों अश्विनी कुमार अपने रथ में तुम्हें ले जायें। तुम अपने घर जाकर गृहस्वामिनी बनो। उस घर में तुम्हारा शासन होगा।

ब्रजवाणी—महिमा

हमारे ब्रजवानी ही वेद।
भाव भरी या मधुबानी कौ, नाँई मिल्यौ रसभेद ।।
जा बानी में मचलि कन्हैया, कहै मैहैरि सों रोइ।
"ना मैया अब ही मंगाइ दै, चंद—खिलौना मोइ" ।।
जा बानी में जसुमति रानी, हरि सों कहत रिसाइ।
"दारी कौ इत-उत भाजै है, दीनो मोइ थकाइ" ।।
जा बानी की ललित कुंज में कविता करति विहार।
जावै 'हरि' वा ब्रज-बानी पै, बलि बलि सौ-सौ बार ।।

—वियोगी हरि (श्रीकृष्ण जन्मस्थान स्मारिका १९८२ से)

ब्रजवासी

ब्रजवासी पटतर कोउ नाहिं।
ब्रह्म-सनक-सिव ध्यान न आवै, इन की जूंठन लै लै खाहि॥
हलधर कहत छाक जेवत संग, मीठो लगत सराहत जाइ॥
'सूरदास' प्रभु विश्वम्भर हरि, सौ ग्वालन के कौर अघाइ॥

—सूरदास (सूरसागर १०८७)

चौरासी ब्रजकोस निरंतर खेलत हैं बलमोहन। **—सूरदास**

भगवान श्रीकृष्ण की वंदना

वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम॥

जो वसुदेव जी के पुत्र दिव्य रूपधारी, कंस और चाणूर का कचूमर निकालने वाले और देवकी जी के लिए परम आनन्द स्वरूप हैं, उन जगद्गुरु भगवान श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूं।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम्॥

जिनकी कृपा गूंगे को वक्ता बना देती है और लँगड़े से पर्वत लँघा देती है (अत्यन्त असमर्थ को भी समर्थ बना देती है) उन परमानन्द स्वरूप लक्ष्मी पति भगवान श्रीकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

भारतवर्ष

हमारा प्यारा भारतवर्ष।
जगत से न्यारा भारतवर्ष।
हिमालय मुकुट शीश शृंगार।
हृदय गंगा यमुना का हार।
नील सागर पद रहा पखार।
नयन का तारा भारतवर्ष।
हमारा प्यारा भारतवर्ष।

—सोहन लाल द्विवेदी (भारत को चमका देंगे)

भावना

जिस प्रकार गोपेश्वरी राधा ने विविध कुंजों के अलग-अलग सुगन्ध भरे फूल चुनकर एक मनोहारिणी माला गूंथी और उसे गोपेश्वर कृष्ण के गले में पहिना दी, उसी प्रकार भावना नें भी जीवन के विविध क्षेत्रों से सौंदर्य के पुष्पों का चयन कर काव्य के गले में माला पहिना दी।

—डा० राम कुमार वर्मा (भाव-सुरभि में परिचय के दो शब्द' से)

भावना इच्छा की तेजस्विनी शक्ति है जो अशिव में भी शिव और असौंदर्य में भी सौंदर्य देखने का प्रयत्न करती है।

—डा० राम कुमार वर्मा (भाव-सुरभि में 'परिचय के दो शब्द' से)

मथुरा माहात्म्य

मथुरा भगवान यत्र नित्यं संनिहितो हरिः।

—श्रीमद्भागवत १०-१-२८

मथुरा में भगवान श्री हरि सर्वदा विराजमान रहते हैं।

न विद्यते च पाताले नान्तरिक्षे न मानुषे।
समानं मथुराया हि प्रियं मम वसुंधरे ॥

वसुंधरे ! मथुरा के समान मेरे लिए दूसरा कोई भी तीर्थ आकाश, पाताल एवं मर्त्य—इन तीनों लोकों में कहीं भी प्रिय प्रतीत नहीं होता।

—वराहपुराण

सूर्योदये तमो नश्येद्यथा बज्रभयान्नगाः।
तार्क्ष्यं दृष्ट्वा यथा सर्पो मेघा वातहता यथा ॥
तत्वज्ञानाद्यथा दुःखं हरि दृष्टवा यथा गजाः।
तथा पायानि नश्यन्ति मथुरादर्शनात् सुत ॥

—श्री स्कन्दपुराण, वैष्णव खण्ड

हे सुत ! जिस प्रकार सूर्य के उदय होने पर अंधकार नष्ट होता है, बज्र के आघात से पर्वत नष्ट हो जाते हैं, गरुड़ को देखकर सर्प भाग जाते हैं, वायु के

थपेड़ों से मेघ नष्ट हो जाते हैं, तत्वज्ञान से दुःख नष्ट हो जाते हैं और सिंह को देखकर हाथी पलायन कर जाते हैं, वैसे ही मथुरा के दर्शन करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

न तत्पुण्यैर्न तद्दानैर्न तपोभिर्न तज्जयैः ।
न लभ्यं विविधैर्यज्ञैर्लभ्यं मदनुभावतः ।।

—वराहपुराण

इस मथुरा मण्डल का आवास न पुण्यों से, न दानों से, न जपतप और न विविध यज्ञों से ही लभ्य है, वह तो केवल मेरे अनुग्रह से ही प्राप्तव्य है।

अहो मधुपुरी धन्या वैकुंठाच्च गरीयसी ।
बिनाकृष्णप्रसादेन क्षणमेकं न निष्टति ।।

—वराहपुराण

यह मधुपुरी धन्य है और वैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ है; क्योंकि वैकुण्ठ में तो मनुष्य अपने पुरुषार्थ से पहुंच सकता है, पर यहाँ श्रीकृष्ण की कृपा के बिना एक क्षण भी उसकी स्थिति नहीं रह सकती।

मथुरायाः परं क्षेत्रं त्रैलोक्ये नहि विद्यते ।
यस्यां वसाम्यहं देवि मथुरायां तु सर्वदा ।।

—वराहपुराण १६६-११

भगवान श्रीहरि का नित्य संनिध्य मथुरा को ही प्राप्त है। इसीलिये इस की उपमा तीन लोक में कहीं है ही नहीं। (इसी से यह पुरी तीन लोक से न्यारी है।)

मथुरा में विधि पूर्वक निवास करने वाला मानस निःसंदेह आवागमन से मुक्त हो जाता है।

—वराहपुराण अध्याय १५२

यथा तृणसमूहं तु ज्वलयन्ति स्फुलिङ्गकाः ।
तथा महान्ति पापानि दहते मथुरा पुरो ।।

—श्री स्कन्दपुराण, वैष्णव-खण्ड

जैसे छोटी-छोटी चिन्गारियाँ घास-फूस के बड़े भारी ढेर को भी जला डालती हैं, उसी प्रकार से मथुरापुरी बड़े-बड़े पापों को भस्म कर देती है।

पादौ च धिक यौ न गतौ मधोर्वनं
दृशो च धिक ये न कदापि पश्यतः ।
कर्णौ च धिक यो श्रृणुतो न मैथिल
वाचं च धिक या न करोत्यलं मनाक ।।

—गर्ग संहिता, मथुरा-खण्ड

उन पैरों को धिक्कार है, जो कभी मधुबन में नहीं गये । उन नेत्रों को धिक्कार है, जो कभी मथुरा का दर्शन नहीं कर सके । मिथिलेश्वर ! उन कानों को धिक्कार है, जो मथुरा का नाम नहीं सुन पाते और उस वाणी को भी धिक्कार है, जो कभी थोड़ा-सा भी मथुरा का नाम नहीं ले सकी ।

यन्नाम पापं विनिहन्ति तत्क्षणं
भवत्यलं यां गृणतोऽपि मुक्तयः ।
वीथीषु वीथीषु च मुक्ति रस्या-
स्तस्मादिमां श्रेष्ठतमां विदुर्बुधाः ।।

—गर्ग संहिता, मथुरा-खण्ड

जिस मथुरा का नाम तत्काल पापों का नाश कर देता है जिसका नामोच्चारण करने वाले को सब प्रकार की मुक्तियाँ सुलभ हैं तथा जिसकी गली-गली में मुक्ति मिलती है उस मथुरा को इन्हीं विशेषताओं के कारण विद्वान पुरुष श्रेष्ठतम मानते हैं ।

शृण्वन्ति माहात्म्यमिदं मधौःपुरः
कृष्णैकचित्ता नियताश्च यत्र ये ।
व्रजन्ति ते तत्र परिक्रमात् फलं
वंदेह राजेन्द्र न चात्र संशयः ।।

—गर्ग संहिता, मथुरा-खण्ड

वैदेह राजेन्द्र : जो लोग एकमात्र भगवान श्रीकृष्ण में चित्त लगाकर संयम और नियमपूर्वक जहाँ कहीं भी रहते हुए मधुपुरी के इस माहात्म्य को सुनते हैं वे मथुरा की परिक्रमा के फल को प्राप्त करते हैं—इसमें संदेह नहीं है ।

मथुरा की तात्त्विक महिमा

मथ्यते तु जगत्सर्वं ब्रह्मज्ञानेन येन वा ।
तत्सारभूतं यद्यस्यां मथुरा सा निगद्यते ॥

—अथर्ववेदीय गोपाल तापनी-उपनिषद

जिस ब्रह्मज्ञान (एवं भक्ति योग) से समस्त जगत मथा जाता है अर्थात् ज्ञानी (और भक्तों) का जहाँ संसार लय हो जाता है, वह सारभूत ज्ञान (और भक्ति) जिसमें सदा विद्यमान रहते हैं वह (पुरी) मथुरा कहलाती है।

समस्त विश्व का मथा हुआ जो सारभूत 'ज्ञान-नवनीत' (मक्खन) अर्थात् 'ब्रह्मज्ञान' है—वही मथुरा है।

—कल्याण का संक्षिप्त वराहपुराणाङ्क १६७७

मथुरा-महिमा

जै जै जै श्री मथुरा सुखकारी ।
चक्र सुदर्शन ऊपर राजति, केशव जू की प्यारी ॥
तीरथ सकल मधुपुरी-सेवत, सुर, नर, मुनि जन आवें ।
सदा प्रीति-हित कान्ह विराजें, नारदादि गुन गावें ॥
अखिल भुवन की सोभा मथुरा, महिमा कही न जाई ।
धनि-धनि मथुरापुरी-सिरोमनि, निज मुख करी बड़ाई ॥
मथुरा-सरन सदा मोहि राखौ, विनती करों सो दीजै ।
'सूरदास' द्वारे ह्वै गावें, कृष्ण-चरन-रति कीजै ॥

—सूरदास

महात्मा गांधी

दैवी शक्ति के इस महान पुरुष (गाँधी जी) ने अपने जीवन काल में करोड़ों व्यक्तियों के हृदय में इतना स्थान कर लिया था कि हम सभी कुछ अल्पांश में वैसे ही बन गये थे जैसे वे स्वयं थे। लाखों व्यक्तियों के हृदय मन्दिरों में वे बसे हुए हैं और वे अनन्तकाल तक बसे रहेंगे।

—जवाहर लाल नेहरू

'सुख-भोग खोजने आते सब तुम करने आये सत्य-खोज'

—कविवर सुमित्रानन्दन पन्त

गांधी जी अतीत युगों के सभी महान पुरुषों में महान हैं। राष्ट्रीय नेता के रूप में वह अल्फ्रेड, वालेस, वाशिंगटन, कौसियस्की, लफाइती की कोटि में आते हैं। गुलामों के त्राता के रूप में वह क्लार्कसन, विल्वरफोर्स, गैरिजन, लिंकन आदि की भांति महान हैं। ईसाई धर्म-ग्रन्थों में जिसे अप्रतिरोध और इससे भी सुन्दर शब्द अमोघ प्रेम कहा गया है उसकी शिक्षा देने वाले के रूप में वह सन्त फ्रांसिस थोरो और टालस्टाय की श्रेणी में आते हैं, युग युगान्तरों के महान धार्मिक पैगम्बरों के रूप में वह लाओजे, बुद्ध, जर्थुस्त और ईसा के समकक्ष हैं। सर्वश्रेष्ठ रूप में वह मानव हैं।

—जान हेन्स होम्स

जिस यज्ञ में महात्माजी ने इतनी विराट और महान पूर्णाहुति दी, जिसमें हमने प्रेम और सत्य की इतनी अमूल्य निधि बलि कर दी, उस यज्ञ में देश की सम्पूर्ण साम्प्रदायिकता दग्ध हो जाये, समस्त संकीर्णता और स्वार्थान्धिता नष्ट हो जाय, भारत के शाश्वत आदर्श की जय हो। महासंत महात्माजी का यह आत्म बलिदान सार्थक हो।

—आचार्य क्षिति मोहन सेन

मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि महात्माजी के बलिदान से भारतीय संस्कृति का तेज और भी अधिक दीप्त हुआ है। उनका जीवन भारतवर्ष को बन्धन मुक्त बना गया। उनकी मृत्यु सारे संसार को भय मुक्त करेगी। मनुष्यता ने नारायण को अपना सबसे उत्तम अर्घ्य भेंट किया है, उसका कल्याण हो।

शुभमस्तु सर्व जगतां परहित निरतां भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु शान्ति सर्वो लोकः सुखी भवतु ॥

—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी
(आजकल के बापू अंक से)

महामृत्युञ्जय-मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॥

—ऋग्वेद ७-५९-१२; यजुर्वेद ३-६०

अर्थ (ॐ) सर्वव्यापक, सब का रक्षक एवं सर्वप्रकाशक परमात्मा। (**त्र्यम्बकं**) तीन आंखों वाले, तीनों लोकों में व्याप्ति से तथा तीनों कालों का

द्रष्टा होने से परमात्मा त्र्यम्बक है। **(सुगन्धिम्)** जो आत्मतेज से सब तत्वों को सुगन्धमय बनाता है और उन वस्तुओं को अपना सुगन्धमय स्वरूप देकर उन्हें सहसा विकृत नहीं होने देता। **(पुष्टिवर्द्धनम्)** परमात्मा पुष्टिवर्द्धक है। वह सब तत्वों को बढ़ाता है, उन्हें सूक्ष्मावस्था से स्थूलावस्था में लाकर उन्हें विविध रूपों में परिगत कर देता है। सब का पालन - पोषण करता है। **(यजामहे)** हम (जापक) त्र्यम्बक् परमात्मा से आत्मसमर्पण द्वारा अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं। **(मृत्योर्बन्धनात उर्वारुकमिव मुक्षीय)** उर्वारुक कहते हैं पूर्ण पका हुआ फल। हम मृत्यु के बन्धन से उसी प्रकार बन्धम मुक्त हो जाये जिस प्रकार पूर्ण पका हुआ फल बेल से स्वयं अलग हो जाता है। (अमृतात् मा मुक्षीय) अमर और प्रकाशमय परमात्मा से हम कभी पृथक न हो।

हम तीन नेत्र वाले परमात्मा से उपासना तथा आत्मसमर्पण के द्वारा संगत होते हैं जिन्होंने काम, क्रोध और लोभ को अपने तीसरे नेत्र से भस्म कर दिया है। वह परमात्मा अपने आत्मतेज से हमारे जीवन से दुर्गन्धि (दुर्गुण, दुष्कर्म, दुर्विचार) का निराकरण करके हमारे जीवन में सुदिव्यता का सम्पादन करे और हमारे जीवन को सुगन्धिमय बनाये। वह हमें मृत्यु के बन्धन से उसी प्रकार मुक्त करे जिस प्रकार पका हुआ फल स्वयमेव बेल से अलग हो जाता है। वह परमात्मा हमें अमरता प्रदान करे।

"हम तीन नेत्र वाले भगवान शिव को भजते हैं जो सुगन्धमय हैं और सभी प्राणियों का पालन-पोषण करते हैं वह मुझे अमरता प्रदान करने के लिये, मृत्यु के बन्धन से उसी प्रकार मुक्त करें जैसे पका हुआ फल स्वयं बेल से ब्रन्धन मुक्त हो जाता है।" **—स्वामी शिवानन्द सरस्वती कृत अनुवाद**

अरिष्ट-निवारण, रोग निवारण, मरणासन्न व्यक्ति के त्राण के लिये, मारकेश की दशा में ग्रहों उपग्रहों के कुप्रभाव के शमन के लिये, सुख-समृद्धि, सुस्वास्थ्य तथा सब विघ्नबाधाओं पर सदा सर्वदा विजय प्राप्त के लिये इस महामंन्त्र के जप का विधान है।

महर्षि वेदव्यास वंदना

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे
फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र ।
येन त्वया भारततैलपूर्णः
प्रज्वालितो ज्ञानमय प्रदीपः ।।

खिले हुए कमल-पुष्प की पंखुड़ियों की भाँति बड़े-बड़े नेत्रों वाले विशाल बुद्धि भगवान व्यासदेव ! आपको सादर प्रणाम है; क्योंकि आपने (हृदय मन्दिर का अज्ञानान्धकार दूर करने के लिये) महाभारतरूपी तैल से पूर्ण यह गीताज्ञान-रूपी दीपक जलाया है।

महामना मालवीय

महामना मालवीयजी ही एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो साबरमती के संत (गांधी जी) के साथ खड़े किये जा सकते हैं। वे सिर से पैर तक हृदय ही हृदय हैं। **—सी० वाई० चिन्तामणि (लीडर के महान सम्पादक)**

विनय, शुचिता, राष्ट्रप्रेम तथा भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट निष्ठा के जिस महान आदर्श के प्रति महामना मालवीय का जीवन समर्पित था उस आदर्श को हमें जीवन में आत्मसात करने का प्रयत्न करना चाहिये। **—डा० राधाकृष्णन्**

वे हिन्दुत्व की साकार मूर्ति थे। उनके रूप में हिन्दूधर्म सजीव हो उठा था। **—स्वातन्त्र्य वीर सावरकर**

मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि विभिन्न मतों के बीच केवल मालवीय जी ही भारतीय एकता की मूर्ति बने खड़े हुए हैं। **—डा० एनी वेसेन्ट**

मैं मालवीय जी का पुजारी हूं। यौवन काल के आरम्भ से आज तक उनकी देश भक्ति का प्रवाह अविच्छिन्न चलता आया है। मैं उनको सर्वश्रेष्ठ हिन्दू मानता हूं, जो आचार में बड़े नियमित होते हुए भी विचारों में बहुत उदार हैं। वे किसी से द्वेष कर ही नहीं सकते। उनके विशाल हृदय में शत्रु को भी स्थान है। **—गांधी जी**

अपने समय का सबसे महान हिन्दू और युगों-युगों के समस्त महान हिन्दुओं में अति महान, पं० मालवीय जी का जीवन हिन्दू धर्म के उन महान सार्वभौमिक आदर्शों का प्रतिबिम्ब था जिसमें जाति और वर्ग की असमानता नहीं स्वीकार की जाती। **—सरोजनी नायडू**

मालवीयजी का नाम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साथ ऐसी दृढ़ता के साथ जुड़ गया है कि आगे की पीढ़ियों की स्मृति में वह चिरस्थायी रहेगा।

—पं० सुन्दरलाल

मारिशस

(भारतीय संस्कृति की छाप)

सारे जग को छोड़ पीछे,
आई कहां से जननी मेरी मेरी पालिका,
..............आई है उस पार से ही,
सपनों के संसार से, हिमालय की गोद से,
गंगा की जलधार से ....

—मातृ भूमि, मारिशस

मुक्ति

किसने कहा तुम्हें, जो नारी,
नर को जान चुकी है,
उसके लिए अलभ्य ज्ञान,
हो गया परम सत्ता का,
और पुरुष जो अलिंगन में
बांध चुका रमणी को
देश काल को भेद गगन में
उठने योग्य नहीं है ?

—रामधारी सिंह 'दिनकर' (उर्वशी)

मोक्ष

ब्रह्मेशविष्णवाख्यशरीरभेद-
विश्वं सृजत्यत्ति च पाति यश्च ।
जमादिदेवं परम वरेण्य-
माधाय चेतस्युपयाति मुक्तिम् ।।

—स्कन्दपुराण-उत्तरखण्ड

जो ब्रह्मा, रुद्र और विष्णु नामक भिन्न-भिन्न रूप धारण करके विश्व की सृष्टि संहार और पालन करते हैं, उन आदि देव परमोत्कृष्ट परमात्मा श्री रामचन्द्र जी को अपने हृदय मन्दिर में स्थापित करके मनुष्य मोक्ष का भागी होता है ।

मोक्षदायिका सप्त पुरियां

काशी काञ्चो च मायाख्या त्वयोध्या द्वारवत्यपि ।
मथुरावन्तिक, चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदा ॥

—स्कन्दपुराण, काशी० ६-६८

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

—नारदपुराण, २७-३५ गरुड़पुराण उत्तर० २८-३

अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, काञ्ची, पुरी और द्वारका—यह सात पुरियां मोक्षदायक हैं।

मोतीलाल नेहरू

बाँकपन के साथ थी हर आन मोतीलाल की
थी समुन्दर पार भी क्या शान मोतीलाल की
दौलते दुनिया रही मेहमान मोतीलाल की
देश सेवा के लिए थी जान मोतीलाल की
यूँ तो दुनिया के समुन्दर में कमी होती नहीं
लाखों मोती हैं मगर, उस आब का मोती नहीं

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

यमुना-माहात्म्य

स्वर्गभोगेऽतिरागो वै येषां मनसि वर्त्तते ।
यमुनायां विशेषेण स्नानदानेन सत्तम ॥

—पद्म पुराण-स्वर्गखण्ड

हे राजसतम् ! जिनके मन में स्वर्ग भोगने की उत्कट अभिलाषा है, उन्हें यमुना में विशेष रूप से स्नान एवं उस पर दान करना चाहिए।

आयुरारोग्यसम्पत्तों रूपयौवनता गुणे ।
येषां मनोरथस्तेस्तु न त्याज्यं यमुनाजलम ॥

—पद्म पुराण-स्वर्गखण्ड

जिन की कामना आयु, आरोग्य एवं रूप-यौवन आदि गुणों की है, उन्हें यमुना-जल का परित्याग कदापि नहीं करना चाहिए ।

दारिद्रयपापदौर्भाग्य पङ्क प्रक्षालनाय वै ।
ऋते वै यामुनं तोयं न चान्योऽस्ति युधिष्ठिर ॥

—पद्म पुराण-स्वर्गखण्ड

हे युधिष्ठिर ! दारिद्रय, दुःख एवं दुर्भाग्य के कीचड़ को धोने के लिए यमुना-जल के सिवा और कोई भी उपाय नहीं है ।

पक्षद्वये यथा चन्द्रः क्षीयते वर्द्धते तथा ।
पातकं नश्यते तत्र स्नानात् पुण्यं विवर्द्धते ॥

—पद्म पुराण-स्वर्गखण्ड

जिस प्रकार कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा क्षीण एवं वृद्धि को प्राप्त होता है, इसी तरह यमुना जल में स्नान करने से पाप नष्ट होता है एवं पुण्य बढ़ता है ।

न समं विद्यते किंचित् तेजः सौरेण तेजसा ।
तद्वन्न यमुनास्नानसमानाः क्रतुजाः क्रियाः ॥

—पद्म पुराण-स्वर्गखण्ड

जिस प्रकार सूर्य के तेज के समान कोई तेज नहीं है उसी प्रकार यमुना-स्नान के समान कोई यज्ञादि कर्म नहीं है ।

कामधेनुर्यथा कामं चिन्तामणि विचिन्तितम् ।
ददाति यमुनास्नानं तद्वत् सर्व मनोरथम् ॥

—पद्म पुराण-स्वर्गखण्ड

जैसे कामधेनु एवं चिन्तामणि मनोगत कामनाओं को पूर्ण कर देती हैं, वैसे हीं यमुना - स्नान सब मनोरथों को पूर्ण कर देता है ।

नैश्वर्यं गगने यद्वच्चान्द्रेऽमायां तु मण्डले ।
तद्वन्त भाति सत्कर्म यमुनामज्जनं बिना ॥

—पद्म पुराण-स्वर्गखण्ड

जिस प्रकार अमावस्या का आकाश मण्डल चन्द्रमा के बिना शोभा नहीं पाता, उसी प्रकार यमुना में स्नान के बिना किया हुआ अच्छा कर्म भी शोभा नहीं पाता ।

व्रतैर्दानैस्तपोभिश्च न तथा प्रीयते हरिः ।
तत्र मज्जनमात्रेण यथा प्रोणाति केशवः ॥

—पद्म पुराण-स्वर्ग-खण्ड

व्रत, दान और तपस्याओं से भगवान श्रीहरि उतने प्रसन्न नहीं होते, जितने भगवान केशव मथुरा में यमुना-जल में स्नान करने से प्रसन्न होते हैं।

रक्त

रक्त बुद्धि से अधिक बली है
और अधिक ज्ञानी भी,
क्योंकि बुद्धि सोचती और
शोणित अनुभव करता है।
पढ़ो रक्त की भाषा को
विश्वास करो इस लिपि का,
यह भाषा, यह लिपि मानस को
कभी न भरमायेगी ।

—रामधारी सिंह 'दिनकर' (उर्वशी)

राजर्षि टण्डन

राजर्षि टण्डन देश की संस्कृति के वट वृक्ष बन गये हैं।

—डा० शिवमंगल सिंह सुमन (राजर्षि टंडन की जन्म शती समापन समारोह के अवसर पर उ० प्र० हिन्दी संस्थान में, १-८-८२)

राजर्षि टंडन का तपस्या, त्याग और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत व्यक्तित्व आज भी प्रेरणा देने में सक्षम है। **—श्रीपति मिश्र, मुख्य मंत्री, उ० प्र०**

मेरा अपना दृढ़ मत है यदि टंडन जी की आकृति को लोग मन में बसा लें तो ५० प्रतिशत बुराइयों से बच सकते हैं।

—श्रीपति मिश्र, मुख्य मंत्री, उ० प्र०

राजर्षि टंडन आजीवन योद्धा रहे। उनका अस्त्र था नैतिकता और लक्ष्य था सत्य। **—अमृत प्रभात २५-७-८२**

रानीखेत

रानीखेत : निसर्गरम्य फल-पुष्पों से भरा हुआ स्थान ।

—मामा वरेरकर (नवनीत से)

ऊँचे-नीचे पर्वत, बड़े-बड़े खड्ड, ऊँचे-ऊँचे वृक्ष, सघन हरियाली, दूरवर्ती हिमाच्छादित पर्वत श्रेणी ।

—वृंदावन लाल वर्मा (नवनीत से)

रामकृष्ण परमहंस

श्री रामकृष्ण ईश्वर की सजीव मूर्ति थे । उनके वाक्य किसी निरे विद्वान के ही कथन नहीं हैं, वरन् वे उनके जीवन-ग्रंथ के पृष्ठ हैं । —महात्मा गांधी

परमहंस रामकृष्ण ने सभी धर्मों के मूल तत्व को अपने जीवन में साकार करके मानो, सारे विश्व को यह सन्देश दिया कि "धर्म को शास्त्रार्थ का विषय मत बनाओ । हो सके तो उसकी सीधी अनुभूति के लिए प्रयास करो । सभी धर्म एक ही ईश्वर की ओर ले जाने वाले अनेक मार्ग हैं ।"

—रामधारी सिंह 'दिनकर'
(सरस्वती अक्टूबर १९५५)

हिन्दुत्व ने रामकृष्ण में अपना जीवित रूप प्रकट किया और आलोचकों से यह कहा कि जिसे तुम बुद्धि से नहीं समझ सकते उसे आंखों से देख लो ।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

भारतीय जनता की पांच हजार वर्ष पुरानी धर्मसाधना-रूपी लता पर रामकृष्ण सबसे नवीन पुष्प बन कर चमके ।......रामकृष्ण के रूप में भारत की सनातन परम्परा ही देह धर कर खड़ी हो गई थी ।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'
(सरस्वती अक्टूबर १९५५)

रामकृष्ण और विवेकानन्द

रामकृष्ण और विवेकानन्द, ये दोनों एक ही जीवन के दो अंश, एक ही सत्य के दो पक्ष हैं । रामकृष्ण अनुभूति थे, विवेकानन्द उसकी व्याख्या बनकर आये । रामकृष्ण दर्शन थे, विवेकानन्द ने उनके क्रिया-पक्ष का आख्यान किया । स्वामी निर्वेदानन्द ने रामकृष्ण को हिन्दू-धर्म की गंगा कहा है जो वैय-

त्तिक समाधि के कमंडलु में बन्द थी। विवेकानन्द इस गंगा के भगीरथ हुए और उन्होंने रामकृष्ण रूपी देवसरिता को कमंडलु से निकालकर सारे विश्व में फैला दिया।

—रामधारी सिंह 'दिनकर' (सरस्वती नवम्बर १९५५)

रामेश्वर

जे रामेश्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं॥
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि। सो साजुज्य मुक्ति बर पाइहि॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि। भगति मोरि तेहि संकर देइहि॥
ममकृत सेतु जो दरसनु करिही। सो बिनु श्रम भवसागर तरिही॥

—भगवान श्रीराम (रा० च० मा० लंका० में)

वाराणसी

यह नगरी (वाराणसी) देश की सांस्कृतिक राजधानी है और विद्या की राजधानी है। यहाँ कबीर, तुलसी, भारतेन्दु, प्रसाद, प्रेमचन्द, आचार्य शुक्ल जैसे युग निर्माता साहित्यकार हुए हैं।

—आज सम्पादकीय २४-८-८२

विवेकानन्द

Rooted in the past and full of pride in India's heritage Vivekanand was yet modern in his approach to life's problems and was a kind of bridge between her past and her present.

Jawahar Lal Nehru (The Discovery of India)

प्राचीन भारतीय संस्कृति में पले तथा भारतवर्ष की प्राचीन परम्परा के अभिमानी स्वामी विवेकानन्द मानवी जीवन की समस्याओं को समझने में नितान्त आधुनिक थे और उनका जीवन भारतवर्ष की प्राचीन तथा वर्तमान संस्कृति का सुन्दर समन्वय था।

—पं० जवाहर लाल नेहरू

यदि आप भारत को समझना चाहते हैं तो विवेकानन्द के विचारों का अध्ययन कीजिये।

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

विवेकानन्द वह सेतु हैं जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं। विवेकानन्द वह समुद्र हैं जिसमें धर्म और राजनीति, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता तथा उपनिषद और विज्ञान, सब के सब समाहित होते हैं।

—रामधारी सिंह 'दिनकर' (सरस्वती नवम्बर १६५५)

भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रीयता पहले उत्पन्न हुई राजनीतिक राष्ट्रीयता बाद में जन्मी है और इस सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के पिता स्वामी विवेकानन्द थे।

—रामधारी सिंह दिनकर (सरस्वती नवम्बर १६५५)

पश्चिमी जगत में विवेकानन्द को जो सफलता मिली, वही इस बात का प्रमाण है कि भारत केवल मृत्यु से बचने को नहीं जागा है, वरन् विश्व-विजय करके दम लेगा।

—महर्षि अरविन्द

विश्व

विश्व है आस का ? नहीं संकल्प का है,
हर प्रलय का कोण काया-कल्प का है।

—माखन लाल चतुर्वेदी

विश्व—विभूतियाँ

गुजरात ने संसार को जो दो महापुरुष प्रदान किए हैं, उनम एक महर्षि दयानन्द और एक महात्मा गांधी हैं। वे दोनों ही महापुरुष गुजरात में जन्मे थे। दोनों ने ही मानवता की सेवा में अपना सर्वस्व लगा दिया। इसलिए वे भारत ही नहीं, विश्व की विभूति हैं।

—सरदार पटेल

वृन्दावन—माहात्म्य

वृन्दावन ही भगवान का सब से प्रियतम धाम है। वह गुह्य से भी गुह्य, उत्तम से भी उत्तम और दुर्लभ से भी दुर्लभ है। तीनों लोकों में अत्यन्त गुप्त स्थान है।

—पद्म पुराण—पातालखण्ड

श्री वृन्दावन बहुत ही सुन्दर और पूर्णानन्दमय रस का आश्रय है। वहां की भूमि चिन्तामणि है, और जल रस से भरा हुआ अमृत है। वहां के पेड़ कल्प वृक्ष हैं, जिनके नीचे झुंड की झुंड कामधेनु गौएं निवास करती हैं।

—पद्मपुराण-पातालखण्ड

वृन्दावन की प्रत्येक स्त्री लक्ष्मी और हरेक पुरुष विष्णु है क्योंकि वे लक्ष्मी और विष्णु के दशांश से प्रकट हुए हैं। उन वृन्दावन में सदा श्याम तेज विराजमान रहता है, जिसकी नित्य निरन्तर किशोरावस्था बनी रहती है।

—पद्मपुराण-पातालखण्ड

भगवान श्रीकृष्ण की चरण-रज का स्पर्श होने के कारण वृन्दावन इस भूतल पर नित्यधाम के नाम से प्रसिद्ध है। वह सहस्र-दल-कमल का केन्द्र-स्थान है। उसके स्पर्श मात्र से यह पृथ्वी तीनों लोकों में धन्य समझी जाती है।

—पद्मपुराण-पातालखण्ड

वाल्मीकीय रामायण माहात्म्यम्

धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं च द्विजोत्तमाः ।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या रामायण परामृतम् ॥

—स्कन्दपुराण-उत्तरखण्ड

विप्रवरो ! रामायण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन तथा परम अमृत रूप है। अतः सदा भक्ति भाव से उसका श्रवण करना चाहिये।

दुर्लभैव कथा लोके श्री मद्रामायणोद्भवा ।
कोटिजन्मसमुत्थेन पुण्येनैव तु लभ्यते ॥

—स्कन्द पुराण-उत्तरखण्ड

संसार में श्री रामायण की कथा परम दुर्लभ ही है। जब करोड़ों जन्मों के पुण्यों का उदय होता है, तभी उसकी प्राप्ति होती है।

गौतमशापतः प्राप्तः सौदासो राक्षसीं तनुम।
रामायणप्रभावेण विमुक्ति प्राप्तवान् पुनः ॥

—स्कन्दपुराण-उत्तरखण्ड

सौदास ने महर्षि गौतम के शाप से राक्षस-शरीर प्राप्त किया था। वे रामायण के प्रभाव से ही पुनः उस पाप से छुटकारा पा सके थे।

यन्नामस्मरणादेव महापातककोटिभिः ।
विमुक्तः सर्वपापेभ्यो नरोयति परां गतिम् ॥

—स्कन्दपुराण-उत्तरखण्ड

रामायण के नाम का स्मरण करने से ही मनुष्य करोड़ों महापातकों तथा समस्त पापों से मुक्त हो परमगति को प्राप्त होता है ।

रामायणेति यन्नाम सकृदप्युच्यते यदा ।
तदैव पापनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

—स्कन्दपुराण-उत्तरखण्ड

मनुष्य 'रामायण' इस नाम का जब एक बार भी उच्चारण करता है, तभी वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है और अन्त में भगवान विष्णु के लोक में चला जाता है ।

नास्ति गंगासमं तीर्थं नास्ति मातृसमो गुरुः ।
नास्ति विष्णुसमो देवो नास्ति रामायणात् परम् ॥

—स्कन्दपुराण-उत्तरखण्ड

गंगा के समान तीर्थ, माता के तुल्य गुरू, भगवान विष्णु के सदृश देवता तथा रामायण से बढ़कर कोई उत्तम वस्तु नहीं है ।

नास्ति वेदसमं शास्त्रं नास्ति शान्ति समं सुखम् ।
नास्ति शान्तिपरं ज्योतिर्नास्ति रामायणात् परम् ॥

—स्कन्दपुराण-उत्तरखण्ड

वेद के समान शास्त्र, शान्ति के समान सुख, शान्ति से बढ़कर ज्योति तथा रामायण से उत्कृष्ट कोई काव्य नहीं है ।

नास्ति क्षमासमं सारं नास्ति कीर्ति समं धनम् ।
नास्ति ज्ञानसमो लाभो नास्ति रामायणात् परम् ॥

क्षमा के सदृश बल, कीर्ति के समान धन, ज्ञान के सदृश लाभ तथा रामायण से बढ़कर कोई उत्तम ग्रन्थ नहीं है।

—स्कन्दपुराण-उत्तरखण्ड

वाल्मीकि मुनि वंदना

वंदउं मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित॥

—तुलसी (रा० मा० बाल०)

मैं उन वाल्मीकि मुनि के चरणकमलों की वन्दना करता हूं, जिन्होंने रामायण की रचना की है जो खर (राक्षस) सहित होने पर भी [खर (कठोर) से विपरीत] बड़ी कोमल और सुन्दर है तथा जो दूषण (राक्षस) सहित होने पर भी दूषण अर्थात् दोष से रहित है।

विडम्बना

किसी का आना लगता भार,
किसी को लेते स्वयं पुकार।
किसी के लिए नहीं दो बोल,
किसी का है स्वागत सत्कार॥
किसी की देखा करते राह,
किसी की नहीं तनिक परवाह।
किसी से मिलना लगता बुरा,
किसी से मिलने की है चाह॥

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (भाव सुरभि)

लोकमान्य तिलक

तिलक स्वदेशी अथवा स्वराज्य आन्दोलन को भारतीय धर्म और संस्कृति से सम्बन्धित कर देना चाहते थे। वे भारत की भावी महत्ता को उसके अतीत की महत्ता पर आधारित करना चाहते थे। **—महर्षि अरविन्द**

श्रीकृष्ण – स्वरूप – माधुरी

नित नूतन गुन—रूप—रस दिव्य बढ़त बिनु पार।
राधा—जीवन मुरलिधर सुंदर स्याम उदार॥

—नित्य लीला लीन हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी (ब्रज-रस की लहरें)

श्री राधा वन्दना

वंदौं श्री राधाचरन पावन परम उदार ।
भय–विषाद–अग्यान–हर प्रेम भक्ति दातार ।।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी (श्रीराधा-माधव-चिन्तन परिशिष्ट)

करौ कृपा श्रीराधिका, विनवौं बारम्बार ।
बनी रहै स्मृति मधुर सुचि मंगलमय सुखसार ।।
श्रद्धा नित बढ़ती रहै, बढ़ै नित्य विश्वास ।
अर्पण हों अवशेष अब जीवन के सब श्वास ।।

—हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी (श्रीराधा-माधव-चिन्तन परिशिष्ट)

श्री राधा–स्वरूप–माधुरी

रूप—सील—सौंदर्य—निधि महाभाव रसखान ।
स्याम-सुखी स्यामा अतुल राधा परम सुजान ।।

—नित्य लीला लीन हनुमान प्रसाद पोद्दार भाईजी (ब्रज-रस की लहरें)

श्री सीता

सीता रामायण की नायिका, भारतीय चेतना की प्रतीक है ।

—सिस्टर निवेदिता

सीता······वह लोगों के दिलों की रानी है । उसका राज्य भौतिक राज्यों से बहुत भिन्न है क्योंकि वह नारीत्व का आदर्श है, और करोड़ों के दिलों में दुःख–सुख और प्यार की दुनिया में नारी की कलंकहीन प्रतिष्ठा और गौरव के साथ वह बसी है और राज्य करती है । **—सिस्टर निवेदिता**

सीता······अयोध्या की रानी, प्यार का ताज पहने,
करुणा से लिपटी, नारीत्व की अनुपम प्रतिमा ।

—सिस्टर निवेदिता

श्री सीता-तत्त्व

इच्छाज्ञान क्रिया शक्तित्रयं यद्भावसाधनम् ।
तदब्रह्मसत्तासामान्यं सीतातत्त्वमुपास्महे ।।

—सीतोपनिषद

इच्छा, ज्ञान और क्रिया—इस शक्ति-त्रय के स्वरूप ज्ञान से जो भाव विमल बुद्धि-दर्पण में प्रतिफलित होता है वह ब्रह्मसत्ता सामान्य—वह अखण्ड सच्चिदानन्दमय ब्रह्मभाव ही 'सीतातत्त्व' है ।

श्री सीता जी श्रीराम की नित्य सन्निधि के कारण जगदानन्द कारिणी हैं । समस्त शरीरधारियों की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने वाली हैं ।

—सीतोपनिषद

सीता ! अहा: किसी अवस्था में भी जिनका चित्त सर्वाभिराम राम-रूप को छोड़कर अन्य किसी रूप में गमन नहीं करता, जिनके चरित्र का स्मरण करने पर पातिव्रत्य की विमल छवि नेत्रों के सामने नाचने लगती है; पृथ्वी के अन्य किसी देश में, किसी काल में, कोई कवि जिनके आदर्श चरित्र की पूर्ण छवि अपनी कल्पनारूपी तूलिका द्वारा अंकित करने में समर्थ न हो सका; जिनके मातृ भाव की उपमा नहीं; जिनके पातिव्रत्य की तुलना नहीं, जिनके धैर्य की सीमा नहीं; जिनकी कोमलता का दृष्टान्त नहीं; जिनकी विमल तेजस्विता अनुपमेय है; शरणागत भक्तों पर जिनका प्रेम, दुखियों पर जिनकी करुणा अतुलनीय है, जिनका सुस्निग्ध सोममय हृदय देखकर अग्नि को भी शीतल होना पड़ा था; जिनके समान तपस्विनी कोई त्रिलोक में भी नहीं है ।

—शिवराम किंकर योगत्रयानन्द स्वामी (कल्याण श्रीरामांक)

सरस्वती - वंदना

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे त्वां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।

—अज्ञात

श्वेत, ब्रह्मविचार की साररूप श्रेष्ठ, आद्या, जगत में व्यापक, वीणा और पुस्तक धारण करने वाली, अभयप्रदायिनी, जड़ता-अज्ञानान्धकार की नाशक, हाथ में स्फटिक मणिमाला धारण करने वाली, कमल-आसन पर विराजमान, बुद्धिदात्री परम भगवती सरस्वती देवी ! तुम्हारा वन्दन है ।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

—अज्ञात

कुन्द इन्दु हिम जैसे पहने, श्वेत वस्त्र अति उज्ज्वल हार।
है वर वीणा- दंड करों में, श्वेत कमल पर नित्य विहार॥
जिनका वंदन करते सुर नर, ब्रह्मा विष्णु महेश दिनेश।
रक्षा करें सदैव शारदा, मुझ में रहे न जड़ता शेष॥

—पद्यानुवादक दीनानाथ दिनेश

वर दे, वीणावादिनी वर दे,
प्रिय स्वतन्त्र - रव अमिय-मंत्र नव
भारत में भर दे!
काट अन्ध उर के बन्धन - स्तर,
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष भेद, तम हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!
नव गति, नव लय, ताल छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद- मन्द्र-रव
नव नभ के नव विहगवृन्द को,
नव पर, नव स्वर दे।
वर दे, वीणावादिनी वर दे।

—सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

सरस्वती और लक्ष्मी का संगम

जो लक्ष्मी और सरस्वती सदा एक दूसरे से पीठ फेरे रहती हैं और जिनको मिलकर रहना बड़ा कठिन है, वे दोनों, सज्जनों के कल्याण के लिये एक साथ रहने लगें।

—कालिदास (विक्रमोर्वशीय ५/२४)

सर्वकल्याण कामना

सब की आपत्तियाँ दूर हो जायं, सब फूलें फलें, सब के मनोरथ पूरे हों और चारों ओर आनन्द ही आनन्द फैल जाय।

—कालिदास (विक्रमोर्वशीय५/२५)

सत्य

सूर्य सत्य से प्रकाशित है, पृथ्वी सत्य से स्थित है, सत्य ही महान धर्म है और सत्य से ही सृष्टि की स्थापना है।

—मार्कण्डेय पुराण

शुभ विचार

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

—ऋग्वेद १-८९-१

प्रत्येक दिशा से शुभ एवं सुन्दर विचार हमें प्राप्त हों।

सुभाष

श्री सुभाष के साथ मेरा सम्बन्ध सदा अच्छा और प्रिय रहा। लेकिन उनकी सैनिक योग्यता, संघटन - शक्ति का पूरा परिचय मुझे तब मिला जब वे भारत से बाहर चले गये।

—महात्मा गांधी

स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार के नाम पर श्री सुभाष चन्द बसु ने जो घोषणा की थी वह उस घोषणा के समान ही थी जो अमेरिका ने की थी।

—भूला भाई देसाई

सुभाष बाबू भारत की व्यथित आत्मा के, देश की स्वतन्त्र होने की उत्कट अभिलाषा के प्रतीक थे। यही उनकी लोकप्रियता का रहस्य था।

—डा० सम्पूर्णानन्द

जब तक शशि, सविता, तारागण चमकेंगे अम्बर में।
नेताजी भी अमर रहेंगे, भारत के घर - घर में॥

—विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (अमर सुभाष)

सूरदास

सूरदास जैसा वात्सल्य - स्नेह का भावुक चित्रकार 'न भूतो न भविष्यति - न हुआ है, न होगा'। सूर ने यदि वात्सल्य को अपनाया तो वात्सल्य ने भी सूर को अपना एकमात्र आश्रय स्थान मान लिया। सूर का दूसरा नाम 'वात्सल्य' है और वात्सल्य का दूसरा नाम 'सूर'।

—वियोगी हरि (श्रीकृष्ण - जन्म स्थान स्मारिका १९८२ से)

सूर का वात्सल्य - वर्णन तो इतना प्रगल्भ और काव्याङ्गपूर्ण है कि अन्यान्य कवियों की सरस सूक्तियां भी सूर की जूठी जान पड़ती हैं।

—वियोगी हरि (श्रीकृष्ण - जन्म स्थान स्मारिका १९८२ से)

सूर्य - वंदना

दीनदयालु दिवाकर देवा। क्रर मुनि मनुज सुरासर सेवा॥
हिम-तम-करि केहरि करमाली। दहन दोष दुख दुरित रुजाली॥
कोक - कोकनद-लोक प्रकासी। तेज - प्रताप - रूप - रस - रासी॥
सारथि पंगु, दिव्यरथ - गामी। हरि - शंकर-विधि मूरति स्वामी॥
वेद - पुरान - प्रगट जस जागे। तुलसी राम - भगति वर माँगे॥

—तुलसी (विनय पत्रिका)

सौन्दर्य

सौन्दर्य तो जैसे - प्रकृति का स्वभाव है। पुष्प राशि, निर्झरिणी, पर्वत-माला, चन्द्र की कला, उषा और संध्या की अन्तर रूपिणी लालिमा, पक्षियों का कलरव इन सब में सौन्दर्य अपने चिर नवीन अनुभावों में वर्त्तमान है।

—डा० राम कुमार वर्मा (भाव - सुरभि में "परिचय के दो शब्द" से)

हंस

हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जत्यपः।

हंस दूध निकाल लेता है और उसमें मिले हुए पानी को छोड़ देता है।

—कालिदास

जल तजि हंस चुगे मुक्ताहल ।

—सूरदास

न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये वको यथा ।

—अज्ञात

हंस की सभा में बगुले शोभा नहीं पाते ।

हंसना

चाहे चमके किरण सुनहली,
चाहे हो काली बरसात ।
हंसूं हमेशा हृदय खोलकर,
हंसूं खुशी से दिन रात ॥

—सोहन लाल द्विवेदी

हनुमान प्रसाद पोद्दार, भाई जी

भाईजी भारतीय संस्कृति के मूर्तिमान स्वरूप थे, उनका जीवन धर्म की व्याख्या था, सबको मान देने वाले किन्तु स्वयं अमानी थे, सारा उत्तर-दायित्व संभालते हुए भी अपना किसी प्रकार का अधिकार नहीं मानते थे ।

—चिम्मन लाल गोस्वामी

—भगवती प्रसाद सिंह (भाईजी : पावन स्मरण)

अपने इष्ट भगवान श्रीकृष्ण की भांति भाई जी का जीवन सभी दृष्टियों से आदर्श एवं पूर्ण था ।

—चिम्मन लाल गोस्वामी, भगवती प्रसाद सिंह

पूज्य श्री भाई जी योगी थे, ज्ञानी थे, भक्त थे, रसिक थे, भावसिद्ध थे, वे गो-सेवक थे, परम नीतिज्ञ थे ।

—कुंज बिहारी पालड़ीवाल
(मन्त्री श्री राधा माधव सेवा-संस्थान)

'हनुमान प्रसाद पोद्दार' एक नाम मात्र नहीं, वस्तुतः एक महान आदर्श का प्रतीक है । सेवा, लोक-कल्याण और देश-प्रेम ये विविध गुण उनमें मूर्त होकर विकसित हुये थे ।

—महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज
(भाईजी : पावन स्मरण)

धर्मशील भाई जी तो अमर हैं ही ।

—श्री शंकराचार्य स्वामी श्री विद्यातीर्थ जी महाराज

अनासक्त कर्मयोगी श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार भारतीय चिन्तन परम्परा की अमूल्य निधि थे । **—श्री शंकराचार्य स्वामी श्री शान्तानन्द जी महाराज**

मैं दावे के साथ कहता हूं और सत्य कहता हूं कि वे (भाई जी) यहां से उड़कर किसी परलोक में नहीं गये हैं हमारे हृदय में, हमारे साथ, हमारे नित्य के व्यवहार में वे हमें अपरोक्ष हैं और हमें इसका किंचित भी आभास नहीं होता कि वे अब यहां उसी रूप में नहीं हैं ।

—स्वामी अखण्डानन्द जी सरस्वती
(भाईजी : पावन स्मरण)

हित - कामना

माता ! मेरे बधिकों का काली - मर्दन कल्याण करें ।
किसी समय उनके हृदय में मानवता का भाव भरें ।।

—माखन लाल चतुर्वेदी

हिन्दी

हिन्दी की ज्योति प्रज्ज्वलित रखिये ।

—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती और उसे दृढ़ करती है ।

—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

"भारत में संस्कृत माँ है, हिन्दी बहूरानी और अंग्रेजी नौकरानी" ।

—डा० कामिल बुल्के

हिन्दू - समाज

हिन्दू - समाज अमृत का पुत्र है, मृत्युंजयी है और हर पराजय को विजय में बदलने की शक्ति रखता है ।

—अटलबिहारी बाजपेयी (श्रीकृष्ण - जन्मस्थान - स्मारिका १९८२ से)

होनहार

क़िस्मत से ही लाचार हूँ ऐ 'जौक' वगर्ना।
हर फ़न मैं हूं मैं ताक़ मुझे क्या नहीं आता ॥ —जौक

हुनरबर चो बखतश न बाशद बकाम।
बजाये रबद केश न दानन्द नाम ॥ —शेख सादी

जब भाग्य अनुकूल नहीं होता, तब हुनरमन्द जहां जाता है, वहीं उसको कोई नहीं पूछता अथवा वह जाता ही ऐसी जगह है, जहां उसका कोई नाम तक नहीं लेता।

मामा जिसके हरि स्वयं पिता धनंजय ख्यात।
वह अभिमन्यु रण में मरे भाग्य वली है तात ॥

—अज्ञात

भाग्यं फलति सर्वत्र, न च विद्या न च पौरुषम्।
समुद्र मथनाल्लेभे हरिर्लक्ष्मी हरो विषम् ॥ —अज्ञात

सब जगह भाग्य फलता है, विद्या और पौरुष नहीं फलते। हरि और हर दोनों ने मिलकर समुद्र मथा, पर हरि को लक्ष्मी मिली और महादेव को विष।

भाग्य सर्वत्र फलत है, न च विद्या पौरुष सरल।
हरि हर सागर मथ्यों, हर को मिल्यो गरल ॥
हर को मिल्यो गरल, हरी ने लक्ष्मी पाई।
षट भाग दो सम्पन्न, भाग की कही न जाई ॥
कह गिरधर कविराइ, कोऊ मिल खेलें फाग।
कोउ हमेशा रोवें, आयो अपने भाग ॥

—गिरधर कविराय

सूक्तिसागर की नामानुक्रमणिका संक्षिप्त परिचय सहित

अ

आ

ऐ

ओ

क

छ

ज

थ

फ

ब

भ

२५, २७, ३६, ३६, ४६, ५३, ६०, ६६, ६२, ६३, १०१, १३८, १७१, १८६, २२५, २३१, २५४, २८५, ३२८, ३४२, ३६०, ३६५, ३८०, ४०२, ४५७, ४६६, ४८४, ४६०, ४६३, ५१२, ५१३, ५३८, ५५४, ६१७, ६३०, ६३१, ६३३, ६४३, ६६६, ६६१, ७१६, ७३६, ७७१, ७८०, ७८६

२. यजुर्वेद के दो पाठ हैं। एक शुक्ल यजुर्वेद और दूसरा कृष्ण यजुर्वेद है—६६, ७६, ११४, ३०८, ३१०, ३५६, ४८४, ५०६, ५१२, ५२६, ५५०, ६१६, ६२२, ६३६, ७२३

३. सामवेद—यह गायन का वेद है। संगीत में रागादि भेद से सबसे अधिक शाखायें इसी की हुई हैं—६४, ५५७

४. अथर्ववेद—

११, ३३, ६६, १२३, १२७, २३१, २४६, २८४, ३०८, ३८१, ४१५, ४१७, ४४१, ४४२, ४५४, ४८३, ४८४, ५०३, ५१२, ५३६, ५३८, ६११, ६६५, ७१५, ७५०, ७५१, ७५७, ७८५

आयुर्वेद—यह अथर्ववेद का उपवेद है—११०

वेदव्यास, महर्षि—प्राचीन भारतीय महर्षि, वेदविद्या के महासिन्धु, अठारह पुराणों एवं महाभारत के अमर रचयिता, त्रिकालदर्शी, मन्त्रों के द्रष्टा, महाकवि, ७, १६, २७, ३३ ३४, ३७, ४०, ५३, ७७, ८१, १०६, १११, १२६, १३१, १३२, १३३, १५०, १५६, १६७, १७३, १७५, १७६, १७७, १७८, १८५, १८६, १६४, २१०, २१२, २३०, २५३, २५६, २५७, २६४, २६५, २७०, २७२, २७६, २८४, २६४, २६६, २६७, २६८, ३०७, ३०८, ३०६, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१७, ३१८, ३१६, ३२०, ३३२, ३४०, ३४६, ३४८, ३४६, ३६७, ३६८, ३७५, ३७६, ३७७, ३७६, ३८२, ३८३ ३८५, ४०५, ४०६, ४२५, ४३४, ४३५, ४३६, ४३६, ४४६, ४५८, ४८०, ४८८, ४६२, ५०८, ५०६, ५२२, ५२६, ५२७, ५३५, ५३७, ५४५, ५४६, ५५०, ५५७, ५६८, ५८१, ५८७, ५८८, ५६२, ५६७, ६०४, ६०६, ६०७, ६०६, ६१३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६४०, ६६२, ६६३, ६६४, ६६६, ६६७, ६६८, ६६५, ७२६, ७२७, ७३२, ७४०, ७४१, ७४३, ७५६, ७७७

स

ह

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१	२५	Does	Doer
२३	१५		पद्यानुवादक स्वामी
	...		विद्यानन्द विदेह
३६	१९	एता	इतना
३८	१६	Sopthocles	Sophocles
५१	१६	Subhas	Subhash
५८	२१	दीनानाथ भार्गव दिनेश	ईश उप०— ३ पद्यानुवादक दीनानाथ दिनेश
९५	११	...	पद्यानुवादक दीनानाथ दिनेश
१०८	४	हमारी युग की	हमारे युग-युगों की
१०९	१२	it	is
१०९	२०	Prometham	Promethean
११७	१३	Strengthous	Strengthens
१२६	२०	Interprefer	Interpreters
१२७	५	Greastes	Greatest
१२७	११	H. A. Oover Steat	H. A. Overstreet
१२९	१२	Sherlay	Shirley
१३४	१८	Michele Enzilo	Michael Angelo
१७६	१५	क्षमा-याचना पृष्ठ १७६	१७७ पर क्षमाशील के ऊपर होना चाहिए
		प्रभूजी...न धरो	प्रभूजी...न धरो
१८२	१५	Heli Burton	Hali burton
१८२	१८	Poscal	Pascal
१८३	१४	Zimmer man	Zimmermann
१८४	२१	Dove nent	Dovenant

१८८	१४	Is it Self	In itself
१८८	२०	Bryuare	Bruyere
१६२	२३	E. P. Whiple	E. P. Whipple
१६३	१३	Bartholine	Bartholini
२०४	१३	La Rocherou cauld	La Rochefoucauld
२०८	३	महात्मा गांधी	महात्मा गांधी
२१५	१६	Fraderick	Erederick
२१६	१७	Bertal	Bartal
२३७	१६	Pythogorus	Pythagorus
२४०	७	Be a nobler line be	By a nobler line by
२४२	११	जीवन	
२४३	८	Seneco	Seneca
२४५	१६	जीवन	
२४६	१६	Plutar	Plutarch
२४६	१८	प्लूटर	प्ल्यूटार्क
२५२	१२	La Rovchefoucauld	La Rochefoucauld
२५६	१७	Rooseau	Rousseau
२६३	१३	तत्व (दे० दार्शनिक)	तत्व
३०६	११	Thourau	Thoreau
३१५	५	जीवन से आनन्द को	जीवन में आनन्द
३२३	१	Receive	Deceive
३२५	१७	उड़ाने ले जाता है	उड़ाने में सहायक होता है।
३३०	१६	सर टी० मूर	सर टी० मोर
३३२	१४	प्रेमचन्द	प्रेमचन्द
३३४	२	J. Hawis	J. Hawes
३४३	६	निराशा स्वर्ग	निराशा नरक
३४४	१८	John Seldess	John Selden
३४४	१६	जान सलडेस	जान सेमडेन

३५१	४	Subhas	Subhash
३८६	१६	As Purse	As Thy Purse
३९०	२६	प्यार में खांसी	प्यार और खांसी
३९६	२३	And	it
४०७	१८	Turgenieve	Turgenev
४१६	१२	इपिक्टस	इपिक्टेटस
४३२	२५	Hezlitt	Hazlitt
४५४	१	Caricature	Corrective
४५४	१६	पल है न	पले है, वह सुधारक वस्तु प्राप्त कर सकते हैं जिससे हम न
४६७	७	Ritcher	Richter
४६६	२	ग्राइमवेन	ड्राइवेन
४६८	१८	Thackerey	Thackeray
४६८	२२	Stanilaus	Stanislas
४६९	१५	ऋतायत	ऋतायते
४७१	१६	अज्ञात	सुदर्शन (पुष्प-लता)
४७८	१२	Machiavalli	Machiavelli
४८९	४	सो माया सब	सो सब माया
५.१२	२१	कर	करें
५१४	२३	Pollak	Pollok
११५	४	Bonffers	Boufflers
५१९	८	LaRoche Faucould	La Rochefoucauld
५२०	३	La Rochecaucauld	La Rochefoucauld
५२४	१२	Wila Rogers	Will Rogers
५२४	२२	By	Of

५३१	१४	A. Einstien	A Einstein,
५३२	२२	St Gregary	St Gregory
५३८	१६	Thrown	Throw
५४०	१६	St Gregary	St Gregory
५४०	२५	Hangs To Show	Hangs out to show
५४३	८	Nrs Jamson	Mrs Jameson
५४३	१५	Cowbry	Cowley
५४९	१७	Futurety	Futurity
५५३	१३	Hezlitt	Hazlitt
५६१	४	अज्ञात	सुदर्शन (पुष्प-लता)
५८२	१८	Scho pén houer	Schopenhauer
५६७	१४	D Sigur	De Segur
५६८	८	Saeri fices	Sacrifices
५६८	१०	Palay	Paley
६०१	२४	Gasperin	Gasparin
६०१	२६	Zaroaster	Zoroaster
६०२	१३	Greauille	Greville
६०२	११	Patrarok	Patrarch
६०३	१२	Demosthenis	Demosthenes
६०३	१७	Philips	Phillips
६१६	२२	Hibban	Hibben
६२६	१	शास्त्र	शस्त्र
६३७	२१	Soath	Soothe
६३८	२३	Aver back	Auerback
६४५	२	W Seekar	W. Secker

६५०	२	Hezlitt	Hazlitt
६५१	२४	Baran	Baron
६५२	१६	Valtoure	Voltaire
६५५	५	A non jmous	Anonymous
६७६	१८	Emly Dickens	Emily Dickenson
६७६	२०	इमली डिकेन्स	इमली डिंकिन्सन
६७७	१२	Albert	Elbert
६८४	२१	H. N. Beecher	H. W. Beecher
७०४	१४	कालरेज	कोलरिज
७२८	१७	Calderon	Caldezon
७२८	८६	Make Them Seem Devine	Makes them seem divine

समाप्त

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

साहित्य सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
हलायुध कोश	सम्पा० जयशंकर जोशी	२२०.००
वृहत् मुहावरा कोश भाग-१	सम्पा. प्रतिभा अग्रवाल	१४०.००
वृहत् मुहावरा कोश भाग-२	सम्पा. प्रतिभा अग्रवाल	१८४.००
वृहत् मुहावरा कोश भाग-३	सम्पा. प्रतिभा अग्रवाल	१५०.००
साहित्यिक ब्रजभाषा कोश (तीन भाग)	सम्पा० डॉ० विद्यानिवास मिश्र	५६५.००
हिन्दू धर्मकोश	डॉ. राजबली पाण्डेय	१७०.००
सूक्ति सागर	संक० रमाशंकर गुप्त	२३०.००
भारतीय इतिहास कोश	अनु. सच्चिदानन्द भट्टाचार्य	१३५.००
अवधी वृहत् लोकोक्ति कोश	सं० कमला शुक्ला	३००.००
अवधी कोश	सम्पा० प्रो० सरयू प्रसाद अग्रवाल	३००.००

सम्पर्क सूत्र

निदेशक

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

६, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ - २२६००१

मूल्य ₹ २३०.००

ISBN : 978-93-82175-01-8